प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय, मंत्री
सस्ता साहित्य-मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : दिसंबर १९४८

मूल्य
अजिल्द २॥) : सजिल्द ३)

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

प्रकाशककी ओरसे

पूज्य गाधीजी आगा खा-महलके कारावाससे मुक्त होनेके बादसे सध्याकी प्रार्थना-सभामे नियमित-रूपसे प्रवचन किया करते थे। यह परपरा उनके महानिर्वाणके एक दिन पहलेतक, यानी २९ जनवरी १९४८ तक, बराबर चलती रही।

इस पुस्तकमे दिल्लीकी प्रार्थना-सभाओमे, १ अप्रैल १९४७ से २९ जनवरी १९४८ तक, किये गए प्रवचनोका सग्रह किया गया है।

ये गाधीजीके अतिम उद्गार है और जिन समस्याओपर हुए है उनमे बहुत-सी आज भी मौजूद है। इन प्रवचनोमे गाधीजीने सक्षेपमे सर्वसाधारणके समझने-योग्य भाषामे बहुत कामकी बाते कही है। और बहुत जगह तो अपनी हार्दिक वेदना जनताके सामने रख दी है। गाधीजीके अन्य लेखो और भाषणोसे इनका एक अलग और महत्त्वका स्थान है।

इसलिए 'गाधी-साहित्य'के पहले दो भागोमे (लगभग १००० पृष्ठोमे) हम ये प्रवचन प्रकाशित कर रहे है।

इनमेसे अधिकाश प्रवचन गाधीजीकी भाषामे ही है। श्री प्रभुदास गाधीने तथा 'हिन्दुस्तान'के उप-सपादकोने समय-समय पर 'हिन्दुस्तान'के लिए उनकी रिर्पोट ली थी। गाधीजीके बादके प्रवचनोके रेकार्ड 'आल इडिया रेडियो'ने लिये थे। उनमेसे कुछ प्रवचन 'भाइयो और बहनो'के नामसे चार छोटी-छोटी पुस्तिकाओमे सरकारकी ओरसे छपे है। इस सग्रहमे उन सबकी हमने मदद ली है। इसके लिए हम इन सबके विशेष कृतज्ञ है।

प्रार्थना-प्रवचन

: १ :

१ अप्रैल १९४७

वायसराय-भवनसे देरसे लौटनेके कारण कल गाधीजी शामकी प्रार्थनामे शामिल नही हो सके थे। आज एशियाई सम्मेलनसे समयपर लौटे और प्रार्थना ठीक समयपर आरभ हुई, लेकिन कुरानकी आयत शुरू होते ही कुछ शोर हुआ और प्रार्थना रोकनी पडी। इससे पहले प्रार्थनामे ऐसा कभी नही हुआ था।

गाधीजीकी प्रार्थनामे छ चीजे होती है (१) बौद्धधर्मका जापानी भाषाका मत्र, (२) सस्कृतमे भगवद्गीताके श्लोक। (३) अरबी भाषामे कुरानसे एक कलमा। (४) फारसी भाषामे जरथुश्त धर्मका मत्र। (५) हिंदी या हिंदुस्तानी या किसी भी प्रातीय भाषामे भजन और (६) राम-नाम या नारायण नामकी धुन।

आज पहली दो चीजोके बाद कुमारी मनु गाधीके मुहसे ज्यो ही कुरानके कलमेका पहला शब्द निकला कि प्रार्थनामेसे एक युवक खडा होकर शोर मचाने लगा, "बस-बस, बद कीजिए, बहुत हो गया। अब हम यह नही बोलने देगे। बहुत सुन लिया।" प्रार्थनासभाके और लोगोके उसे बैठनेको कहनेपर भी वह नही बैठा। आगे बढता हुआ बिलकुल गाधीजीके मचके पास आकर खड़ा हो गया और कहने लगा, "आप यहासे चले जाइए। यह हिंदू-मदिर है। यहा मुसलमानोकी प्रार्थना हम नही होने देगे। आपने बहुत बार यह कह लिया, पर हमारी मा-बहिनोकी हत्यापर हत्या 'हो रही है। हम अब यह सब सहन नही कर सकते।"

जब उसने गांधीजीको चले जानेके लिए कहा तो गांधीजीने उससे कहा "आप जा सकते हैं। आपको प्रार्थना न करनी हो तो दूसरोंको करने दें। यह जगह आपकी नहीं है। यह ठीक तरीका नहीं है।"

परन्तु पच्चीस-छब्बीस वर्षकी उम्रका वह लडका चुप नहीं हुआ। तब लोग उसे देखकर "चुप हो जाओ" "बैठ जाओ" की आवाज लगाने लगे। इसपर गांधीजी माईक्रोफोन नीचे रखकर आसनसे उठकर मचके बिलकुल किनारे जा खडे हुए। वह लडका वहीं गांधीजीके बिलकुल पास आ गया। लोग उसे पीछेकी ओर खींच रहे थे और वह डटा हुआ अपनी बात और भी आवेशसे दोहराता जा रहा था।

गांधीजीने लोगोंसे उस लडकेको छोड देने और शान्तिसे बैठ जानेके लिए कहा। इधर मचपरसे एक महिला गांधीजी की सहायतार्थ उनके और उस लडकेके बीच खडी हो गई। गांधीजीने उनको भी हट जानेके लिए कहा। बोले "मेरे और इसके बीच कोई न आवे।" इतने परिश्रमसे गांधीजी थकसे गये। उनकी आवाज धीमी पड गई। उन्होंने अपने मनके विक्षोभको जो कि प्रार्थनामें विघ्न आनेके कारण उनके चेहरेपर उभर रहा था, सावधानीसे दबा लिया और बहुत ही शान्तिसे इस मामलेको निपटानेका प्रयत्न करने लगे। लेकिन उस लडकेने तो गांधीजीके साथ बहस ही छेड दी। यह देखकर लोगोंको धीरज न रहा और सबने मिलकर उसे प्रार्थना-सभासे बाहर कर दिया।

यह देखकर गांधीजीने कहा "यह आपने ठीक नहीं किया। उस लडकेको आपने जबरदस्तीसे निकाल दिया। ऐसा नहीं करना चाहिए था। अब वह यही कहेगा कि मैंने विजय पाई है। वह गुस्सेमें था। प्रार्थना नहीं करना चाहता था पर मैं जानता हूं कि आप सब तो प्रार्थना सुनना चाहते हैं। मैं किसीका विरोध करके प्रार्थना नहीं करना चाहता। अब बाकीकी प्रार्थना मैं छोड देना चाहता हूं। जो प्रार्थना मैं करता हूं वह आप सब जानते हैं। नोआखाली जानेसे पहले भी आपने प्रार्थना सुनी है। उसमें हम मुसलमानी प्रार्थनाके बाद पारसी प्रार्थना है। बादमें एक लडकी आपको मधुर भजन सुनाती और फिर रामधुन होती। मैं अब रामधुन भी छोडता हूं पारसी प्रार्थना भी छोडता हूं। 'औज़ अबिल्ला'

अरबी भाषामे कुरानके एक मत्रका पहला शब्द है। इसे कहनेसे, आप यह समझते है कि हिंदू धर्मका अपमान होता है, पर मै एक सच्चा सनातनी हिंदू हू। मेरा हिंदू धर्म बताता है कि मै हिंदू प्रार्थनाके साथ-साथ मुसलमान प्रार्थना भी करू, पारसी प्रार्थना भी करू, ईसाई प्रार्थना भी करू। सभी प्रार्थनाए करनेमे मेरा हिंदूपन है, क्योकि वही अच्छा हिंदू है जो अच्छा मुसलमान भी है और अच्छा पारसी भी है। वह लडका जो कह रहा था कि यह हिंदू-मदिर है, यहा ऐसी प्रार्थना नही की जा सकती, सो यह वहशियाना बात है। यह मदिर तो भगियोका मदिर है। अगर चाहे तो एक अकेला भगी मुझे यहासे उठाकर फेक दे सकता है। लेकिन वे मुझसे प्रेम करते है, वे जानते है कि मै हिंदू ही हू। उधर जुगलकिशोर बिडला मेरा भाई है। पैसेमे वह बडा है; पर वह मुझे अपना बडा मानता है। उसने मुझे एक अच्छा हिंदू समझकर यहा टिकाया है। उसने जो बडा भारी मदिर बनवाया है उसमे भी वह मुझे ले जाता है। इतनेपर भी वह लडका अगर कहता है कि तुम यहांसे चले जाओ, तुम यहा प्रार्थना नही कर सकते तो यह घमड है। लेकिन आप लोगोको उसे प्रेमसे जीतना चाहिए था। आपने तो उसे जबर-दस्ती निकाल दिया। ऐसी जबरदस्तीसे प्रार्थना करनेमे क्या फायदा ? वह लडका तो गुस्सेमे था और गुस्सेके मारे वह वहशियाना बात कर रहा था। ऐसी ही बातोसे तो पजाबमे यह सब कुछ हो गया। यह गुस्सा ही तो दीवानेपनका आरम्भ है।

अभी इस लडकीने जो श्लोक सुनाए उनमे यह बात बताई गई है कि जब आदमी विषयोका ध्यान करता है—विषय माने एक ही बात नही, पर पाचो इंद्रियोके स्वादोका ध्यान धरता है—तो वह काममे फसता है। फिर वह क्रोध करता है और तब उसे सम्मोह यानी दीवाना-पन घेर लेता है। ऐसी ही दीवानेपनसे देहातियोने बिहारमे ऐसी बात कर डाली कि मेरा सिर झुक गया। नोआखालीमे भी ऐसे ही दीवाने-पनसे लोगोने ज्यादतिया की, पर बिहारमे नोआखालीसे ज्यादा जगलीपन हुआ और पजाबमे बिहारसे भी ज्यादा। अगर आप लोग सच्चे हिंदू है तो ऐसा नही करना चाहिए। कही कोई सभा हो रही हो और वहा कही

जानेवाली बात हम नही सुनना चाहते हो तो हमे उठकर चले जाना चाहिए। चीखने-चिल्लानेकी जरूरत नही है। फिर यह तो धर्मकी बात है। धर्म-चर्चाकी बात छोडो, यह तो प्रार्थना भी नही करने देना चाहता! इस तरह एक लडकेको प्रार्थनामे दखल नही देना चाहिए। ऐसी बातोसे कुछ फायदा नही निकल सकता।

पजाबमे जो लोग मर गए उनमेसे एक भी वापस आनेवाला नही है। अतमे तो हम सबको भी वहीपर जाना है। यह ठीक है कि उनको कत्ल किया गया और वे मर गए, पर दूसरा कोई हैजेसे मर जाता है या और किसी तरहसे मरता है। जो पैदा होगा वह मरेगा ही। पैदा होनेमे तो किसी अशमे मनुष्यका हाथ है भी, पर मरनेमे सिवाय ईश्वरके किसीका हाथ नही होता। मौत किसी भी तरह टाली नही जा सकती। वह तो हमारी साथी है, हमारी मित्र है। अगर मरनेवाले बहादुरीसे मरे है तो उन्होने कुछ खोया नही, कमाया है। लेकिन जिन लोगोने हत्या की उनका क्या करना चाहिए, यह बडा सवाल है। बात ठीक है कि आदमीसे भूल हो जाती है। इसान तो भूलोकी पोटली है, लेकिन हमे उन भूलोको धोना चाहिए। खुदा हमारे कामको नही भूलेगा। जब हम उसके यहा जायेगे, वह हमारा हृदय देखेगा। वह हमारे हृदयको जानता है। अगर हमारा हृदय बदल गया तो वह सब भूलोको माफ कर देगा।

पजाबमे बहुतसे मित्र है, जो अपनेको मेरे भक्त भी बताते है। पर मै कौन हू कि वे मेरे भक्त कहलाए! उन सब मित्रोका आग्रह है कि जब मै दिल्ली तक आ गया हू तो कम-से-कम एक रातको पजाब भी जाऊ, जिससे वहा लोगोको कुछ तसल्ली मिले। हवाई जहाजसे जानेमे तो कुछ ही घटे लगेगे। लेकिन मै किसीके कहनेपर कैसे जाऊ? मै तो ईश्वरके कहनेपर, ईश्वर नही तो अपने हृदयके कहनेपर ही वहा जाऊगा। नोआखाली मै किसीके बुलानेपर नही गया था। मैने यहासे जाते समय ही कहा था कि मेरा हृदय मुझे वहा जानेको कह रहा है। बिहारमे भी बहुत समय तक लोग मुझे बुलाते रहे, पर मै किसीके बुलानेपर वहा नही गया। जब डाक्टर महमूद साहबने लिखा कि तुम आ जाओ तभी हमारा दिल साफ हो सकेगा तो मै बिहार चला गया।

बिहार ऐसा सूबा है, जहा हिंदू-मुसलमान एक साथ मिलकर रह सकते है। वहा भी औरत-बच्चोपर कम अत्याचार नही हुआ। क्रोधमे भरकर लोगोने मासूम बच्चोको मार डाला और औरतोको मारकर कुओमे डाल दिया। यह मै हवाई बाते नही करता, ये सब सिद्ध हो सकने-वाली बाते है। तब मुसलमान जरूर कहेगे कि हम यहा नही रहनेवाले है, परतु जब उनको यह भरोसा हो जाय कि अब हमारे साथ दुबारा ऐसा बर्ताव नही होगा तो वे लौटकर आ जावेगे । इस बातको बिहारके मुसलमान करीब-करीब समझ ही गए थे, यहातक कि मुझे विश्वास हो गया था कि हम भरोसा दिला सके तो आसनसोल और सिध गए हुए मुसलमान भी वापस आ जावेगे। उनके आनेकी नौबत भी आ गई थी, पर क्या अब पजाबका बदला बिहार लेने जाय ? फिर मद्रास लेगा ? और यह बात कहा पहुचेगी ? इस तरह क्या जगली बन जायेगे ? काग्रेसने अग्रेजोके साथ अहिंसाकी लडाई लडी। अब क्या हम अपने भाइयोकी हिंसा करने बैठ जाय ? ठीक है कि वे अत्याचार करते है, पर क्या हम भी वैसा ही करे ? अग्रेजोने कौन-सा अत्याचार नही किया था ?

लेकिन अब अग्रेज तो जा रहे है। वायसरायने मुझसे कहा कि आज-तक हम लोग कहीसे नही हटे है, पर यहासे हम अहिसाकी लडाईकी वजहसे जा रहे है। आप शायद कहेगे कि उनको तो जाना ही था, इसलिए ये बनावटी बाते कर रहे है। पर अगर कोई आदमी शराफतसे हमारे पास आता है तो हम क्यो उसकी शराफतको शैतानियत बतावे ? जबतक बुरा अनुभव नही होता तबतक शराफतको मान लेना ही मै सीखा हू। क्या हम इस मौकेपर, जब कि वे जा रहे है, ऐसा नजारा पेश करेगे कि 'आप तो जा रहे है, पर हमे गोरे सिपाही तो चाहिए ही।' पजाबमे आज उन्हीकी वजहसे हमारा रक्षण है। लेकिन वह क्या रक्षण है ? मै चाहता हू कि मुट्ठी भर आदमी रह जाए तो भी अपना रक्षण करे। मरनेसे न डरे। मारेगे तो आखिर हमारे मुसलमान भाई ही तो मारेगे न ? क्या धर्म-परिवर्तनसे भाई भाई न रहेगा ? और वे जैसा करते है वैसा हम नही करते क्या ? बिहारमे हमने औरतोके साथ क्या नही किया ! हिंदुओने किया, याने मैने किया। यह शरमिदा होनेकी बात है। क्या मै

एक गालीके वदलेमे दो गालिया दू ? पर ऐसी ही बाते हिंदू और मुसलमान दोनो छिप-छिपकर करते है और फिर ऐसा पागलपन उनके दिमागपर सवार हो जाता है।

यह वादशाह खान मेरे पास बैठे है। इन्हे कौन हटा सकता है ? मैने उस लडकेके कारण कितनी प्रार्थना छोड दी ? कारण, मै सबको वताना चाहता हू, सवसे कहना चाहता हू कि मै अच्छा पारसी हू, अच्छा मुसलमान हू, तभी अच्छा हिंदू भी हू। अलग-अलग धर्मको गालिया देना क्या धर्म हो सकता है ? मेरे सामने अलग-अलग धर्म जैसा कुछ नही है।

ये लोग जो एशियाके सभी मुल्कोंसे[1] यहा वात करने आए है, जवाहरलालसे कितने प्रेमसे वाते करते है ? सब उसपर फिदा है। ईश्वरकी कृपासे हमारे पास ऐसा जवाहर पडा है, जो सारी दुनियाको अपनाना चाहता है । क्या उसको सुशोभित करनेके लिए भी हमे शातिसे नही रहना चाहिए ?

अव मै थोडी वाइसरायकी वात भी वता दू। कल मै उनके पास दो घटेसे ज्यादा रहा और आपकी प्रार्थनामे न आ सका। यह अच्छा हुआ, जो इस लडकीने प्रार्थना शुरू करा दी, क्योकि मै कह गया था। आज दो घटेतक वाइसरायने वाते की। उन्होने कहा कि मै सचमुच कोशिश कर रहा हू। उन्होंने यकीन दिलाया कि 'मै आखिरी वाइसराय हू। मै तो हिंदुस्तान आना नही चाहता था, समुद्रमें ही रहना चाहता था पर जव मजबूर कर दिया गया तव आया हू।'

मजदूर सरकारने भारत छोडना तय किया तब इनको भेज दिया, क्योंकि यह राजाके खानदानके है। अग्रेज लोग भली तरहसे भारत छोडना चाहते है। वे कहते है कि हिंदू क्या, मुसलमान क्या, अगर एक पारसी भी हिंदुस्तान लेनेको तैयार है तो वे प्रेमसे उसे देनेको तैयार है। इस तरह जो आदमी शराफतसे मेरे पास आता है उसकी वात मै क्यो न सुनू ? अग्रेजोने अवतक हमारा काफी विगाडा है, परतु इसने (लॉर्ड माउटवैटनने) तो कुछ नही विगाडा । वह तो कहता है कि यदि

---

[1] एशियाई कान्फ्रेंस (२३ मार्च '४७से २ अप्रैल '४७ तक)के अवसरपर।

हो सके तो मै आजहीसे खिदमतगार बनना चाहता हू। लेकिन जब आप लडते-भिडते है तब उसका भाग जाना अच्छा नही। आखिर वह बहादुर कौमका है। उसे भागनेकी क्या जरूरत ? वह सोच रहा है कि किस तरह यहासे जाऊ ? वह काफी कोशिश कर रहा है। वह शराफतसे चलता है। यदि हम भी शराफतसे चलेगे तो दुनियामे जो कभी नही हुआ वह होनेवाला है। अगर कोई शराफत न करे, वहशियाना काम करे, तो भी उसको कैसे अपनाया जाय, यह जो सीखना चाहे मुझसे सीखे।

वाइसरायने मुझे शुक्र तक बाध रखा है। जवाहर भी मुझे कैदी बनाना चाहते है। तीन दिन बाद मै सब बाते बता दूगा। छिपाना कुछ नही है, पर होना क्या है ! मेरे कहनेके मुताबिक तो कुछ होगा नही। होगा वही जो काग्रेस करेगी। मेरी आज चलती कहा है ? मेरी चलती तो पजाब न हुआ होता, न बिहार होता, न नोआखाली। आज कोई मेरी मानता नही। मै बहुत छोटा आदमी हू। हा, एक दिन मै हिंदुस्तानमे बडा आदमी था। तब सब मेरी मानते थे, आज तो न काग्रेस मेरी मानती है, न हिंदू और न मुसलमान। काग्रेस आज है कहा ? वह तो तितर-बितर हो गई है। मेरा तो अरण्य-रोदन चल रहा है। आज सब मुझे छोड सकते है। ईश्वर मुझे नही छोडेगा। वह अपने भक्तकी परख कर लेता है। अग्रेजीमे कहा है कि वह 'हाउड ऑव दी हेवन' है, वह धर्मका कुत्ता है, यानी धर्मको ढूढ लेता है। वही मेरी बात सुनेगा तो काफी है। वह ईश्वर जब आपके हृदयमे आ जायेगा तो आप वही करेगे जो वह करायेगा। इसलिए हमे विचारशील प्राणी रहना चाहिए। थोडी-सी बातपर बकवास शुरू नही कर देनी चाहिए।"

: २ :

२ अप्रैल १९४७

"भाइयो और बहनो,

कलकी तरह प्रार्थनाके बीचमे आज भी कोई झगड़ा करनेवाले हो तो

अभीसे वे अपना इरादा मुझे बता दे, ताकि मै शुरूसे ही प्रार्थना स्थगित कर दू। किसीका विरोध करके मै प्रार्थना करना नही चाहता।" प्रार्थना-स्थानपर बैठनेपर गाधीजीने पूछा।

दो व्यक्ति खडे हुए और बोले, "आपको यदि प्रार्थना करनी ही है तो हिंदू-मदिरसे बाहर आकर बैठे और इस दूसरे मैदानमे अपनी प्रार्थना करे।"

गाधीजी—यह मदिर भगियोका है। मै भी भगी हू। ट्रस्टी लोग आकर रोकेगे तब अलग बात है। आप मुझे नही रोक सकते। अगर आप लोग करने देगे तो प्रार्थना यही करूगा।

युवक—यह मदिर पब्लिकका है। हमने देख लिया कि पजाबमे क्या हुआ। हम आपको यहा प्रार्थना हरगिज नही करने देगे।

गाधीजी—मै बहस नही चाहता। मै बडे अदबसे कहना चाहता हू कि आप लोग भगियोकी तरफसे नही बोल सकते। मै भगी बना हुआ हू। मैने पाखाना उठाया है। अगर मै कहूगा तो आप लोगोमे-से कोई भी पाखाना उठानेका काम करनेवाला नही है, फिर भी आप रोकेगे तो मै रुक जाऊगा। प्रार्थना नही करूगा।

लोगोने चिल्लाकर कहा—हम प्रार्थना सुनेगे। हमे प्रार्थना चाहिए।

गाधीजी—इन हजारो आदमियोके बीच केवल आप दो ही जने बाधा डाल रहे है। यह आपके लिए शोभाकी बात नही है। मै जानता हू कि आप गुस्सेमे भर गए है। आप शात हो जायेगे तो अपने आप समझ जायेगे और तभी मै यहा प्रार्थना करूगा।

युवक (चीखते हुए)—आप मस्जिदमे जाकर गीताके श्लोक बोलिए। क्या वे बोलने देगे? हमने पजाबमे सब कुछ देख लिया।

गाधीजी—चीखनेकी जरूरत नही है। इस तरह आप हिंदू धर्मकी रक्षा नही कर रहे है, बल्कि उसे मारनेकी कोशिश कर रहे है। मै किसीसे डरकर प्रार्थना मुल्तवी नही कर रहा हू। कोई मुझे बीचमे रोकेगा तो प्रार्थना शुरू करनेके बाद मै रुकनेवाला नही हू, चाहे कत्ल भी क्यो न हो जाऊ। और उस समय भी आप देखेगे कि मेरी आखिरी सास

छूटती होगी तब भी मेरे मुहसे 'राम-रहीम' 'कृष्ण-करीम'[1]का जाप चलता होगा। मैने बता दिया कि मै भगी हू, ईसाई हू, मुसलमान हू और हिदू तो हू ही। मेरे साथ यहा बादशाह खान भी तो है, मुझको आप कैसे रोक सकते है ? लेकिन आप रोके। एक बच्चा भी मुझे रोक सकता है।

युवक—आप पजाब जाइए।

गाधीजी—मै वहा जाकर क्या करूगा ? मुझमे तो जितनी शक्ति है वह पजाब, बिहार और नोआखालीकी सेवामे यहा रहते हुए खर्च कर ही रहा हू।

कई लोग उस युवकको हटाने लगे कि हम प्रार्थना सुनेगे।

गाधीजी—आप लोग इसे धक्का न दे। शातिसे काम ले।

युवक—हम लोगोको आप चार मिनट दीजिए, हम आपसे बाते करेगे।

गाधीजी—मेरे पास समय नही है और बहसकी जरूरत भी नही है। अदबसे मै इतना ही कहूगा कि आप मुझे 'हा' या 'ना' कह दे।

युवक—हम आपको प्रार्थना नही करने देगे।

गाधीजी—सब लोग शातिसे बैठे रहे। मै जा रहा हू। इन भाइयोको कोई न छेडे। ये भले ही अपनी विजय मान ले, पर यह क्या विजय है ? कोई पीछे छुरा भोक दे तो उसमे क्या बहादुरी है ! मै इतना ही कहूगा कि यह हिदू-धर्मका कत्ल हो रहा है। आप लोग सोचिए और समझिए। कल भी आकर मै यही प्रश्न करूगा और आप प्रार्थना करनेको मना करेगे तो मै चला जाऊगा।

---

[1]नोआखालीसे लौटनेपर गांधीजीने "भज मन प्यारे सीताराम" की जगह "भज मन प्यारे राम-रहीम, भज मन प्यारे कृष्ण-करीम" की धुन शुरू की थी।

: ३ :

३ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

कल तो दो-तीन ही आदमी थे जो प्रार्थनामे रुकावट डालना चाहते थे, पर आज बात और बढ गई है। मेरे पास लिखा हुआ पत्र आया है जो किसी मेहतर यूनियनके प्रेसिडेटका है। उसमे लिखा है कि मुझको यहा रहना ही नही चाहिए। अब आप देखिए कि मेरे जैसे बूढे आदमी-पर कैसी गुजर रही है। लेकिन यहाकी यूनियनके प्रेसिडेट तो और ही कोई भाई हैं। मै भी तो मेहतर ही हू और यहा जो मेरे मेहतर भाई है वे मेरी सुनते है। मै उनके साथ फैसला करके यहा रहा हू और रहूगा। फिर यहाके कर्ता-धर्ता तो जुगलकिशोर बिडला है। उन्होने मुझे यहा टिकाया है। जब टिकानेवाले जानेको नही कहते तो फिर मेरे जानेकी क्या जरूरत ?

मै आज भी पूछूगा कि मै प्रार्थना करू या न करू ? पर यह पूछनेसे पहले मै एक बात और पूछूगा कि आप कलकी मेरी बात समझे है या नही ? अगर समझे है तो आपको पता लग गया होगा कि मैने प्रार्थना क्यो रोक दी। अगर कोई कहे कि आप प्रार्थना न करे या करे तो कुरानकी न करे तो क्या मै अपनी जीभ कटवाकर प्रार्थना करूगा ? मेरा सिर भले चला जाय, पर मै प्रार्थना छोडनेवाला नही हू। जो इस तरह प्रार्थना रोकते है वे हिदू धर्मको बढाते नही है, काटते है। ऐसा करनेवाले कल दो-तीन ही थे, आज ज्यादा है।

आज जो बात मैने सुनी वह मुझे खटक रही है—मै चाहता हू वह वात सही न हो—वह यह कि ये जो अडचन डालनेवाले लोग है वे एक बडे सघके है।

परतु जो लोग रोज सबेरे यहा कवायद-व्यायाम करते है[1] और

---

[1] वाल्मीकि-मंदिरके पासके अहातेमें नित्य प्रातःकाल राष्ट्रीय स्वयसेवक सघके सैकड़ो युवक व्यायाम आदि करते है ।

जो उनके मेम्बर है वे तो मुझसे मुहब्बत रखते है। अगर वे सब मुझे यहा रहने देना नही चाहते तो मेरा यहा रहना फिजूल हो जाता है। मुझे यहा रहना ही नही चाहिए, लेकिन उनके नेतासे मेरी बात हुई। उन्होने कहा कि हम किसीका कुछ बिगाडना नही चाहते। हमने किसीसे दुश्मनी करनेके लिए सघ नही बनाया है। यह सही है कि हम लोगोने आपकी अहिसाको स्वीकार नही किया है, फिर भी हम सब काग्रेसकी कैदमे रहने-वाले है। काग्रेस जबतक अहिसाका हुक्म करेगी हम शातिसे रहेगे। इस तरह उन्होने बडी मुहब्बतसे मीठी बाते की।

इतनेपर भी अगर आप मुझे रोक देते है तो फिर कलसे आप यहा न आए। मै इस तरहकी प्रार्थना करना नही चाहता। मै और ही किस्मका बना हुआ हू। मै हिदू हू तो मुसलमान भी हू और सिक्ख तो करीब-करीब हिदू ही है। मैने ग्रथ साहबको देखा है। उसमे काफी हिस्से ज्यो-के-त्यो हिदू धर्मके है—उसी धर्मके, जिस धर्मका मै पालन करने-वाला हू। इसलिए आपसे अदबके साथ मेरी विनती है कि एक बच्चेके कहनेपर भी अगर मै प्रार्थना रोक देता हू तो आप शात रहिए। यदि आपको झगडा करके ईश्वरका नाम लेना है तो वह नाम तो ईश्वरका होगा, पर काम शैतानका होगा। और मै कभी शैतानका काम नही कर सकता। मै ईश्वरका ही भक्त हू।

आप इसे बुजदिली न समझे। जब आप बडी तादादमे होते और सब कहते कि प्रार्थना मत करो तो मै जरूर करता। तब मै कहता कि आप मेरा गला काटिए, मै प्रार्थना करता हू, पर यहा आप सबके बीचमे दो-पाच आदमी मुझे रोकना चाहते है। आप उन्हे दबा ले और मुझसे कहे कि प्रार्थना करो तो वह शैतानी होगी। और शैतानके साथ मेरी निभती नही। जो खुदाका यानी ईश्वरका दुश्मन है वह राक्षस है। उस राक्षसके साथ मेरी बन नही सकती। मेरा लड़नेका तरीका तो राम-जैसा है। राम-रावण-युद्ध जब चल रहा था तब विभीषणने रामसे पूछा कि आप बिना रथके है, आप कैसे लडेगे ? तब रामने सच्चाई, शौर्य आदि गुणोके आधारपर कैसे लडाई लडी जाती है यह बताया। राम ईश्वरका भक्त था, इसलिए बात भी वैसी ही करता था। उसको

मैने भगवान नही माना है, भक्त ही माना है । फिर भक्तमेसे वह भगवान बन गया । तुलसीदासने भी रामको अशरीरी बताया है । वह अशरीरी सबके शरीरमे भरा है । उसीको हम भजते है । मै उस रामका पुजारी हू । रावणकी पूजा मै कैसे कर सकता हू ? चाहे आप मुझे मार डाले, आप मुझपर थूके, मै मरते दम तक 'राम-रहीम,' 'कृष्ण-करीम' कहता रहूगा। और फिर उस वक्त भी जब आप मुझपर हाथ चलाते होगे तो मै आपको दोष न दूगा। मै ईश्वरसे भी यह नही कहूगा कि यह तू मेरे ऊपर क्या कर रहा है ? मै उसका भक्त हू । मै उसका किया स्वीकार लूगा।

लेकिन आज एक बच्चा कहेगा कि आप प्रार्थना न करे तो मै न करूगा । मै चला जाऊगा । आप शातिसे बैठे रहे, बहस न करे । शाति भी प्रार्थना ही है, क्योकि मेरी प्रार्थना जगतको दिखानेके लिए नही है । मेरी प्रार्थना मनकी शातिके लिए है, दिलकी सफाईके लिए है । इस समय क्रोधभरे दिलसे प्रार्थना करनेमे दिलकी स्वच्छता नही हो सकती । इसलिए शातिको ही प्रार्थना समझे।

अगर सब मिलकर मुझे दबाते है, प्रार्थना करनेसे रोकते है, और ऐसे मौकेपर मारके डरसे मै प्रार्थना न करू तो वह धर्म न होगा, अधर्म होगा। उससे दिलकी सफाई न होगी। फिर मै नोआखालीके हिंदुओके पास किस मुहसे जाकर कहूगा कि आप डरिए मत, राम-नाम लेते रहिए। इसलिए मैने कहा कि आप मेरा यह शातिका तरीका समझे। सब मिलकर अगर रोकते है तो मै प्रार्थना क्या कर सकता हू, पर राम धुन लेता रहूगा, 'राम-रहीम, राम-रहीम' और लडकेके कहने-पर चला जाऊगा।

अब मै पूछता हू, मुझे 'हा' या 'न' मे उत्तर दे। बहस न करे। मै प्रार्थना करू ?

करीब तीस आदमी खडे हो गए और हवामे हाथ हिलाते हुए बोले--मत कीजिए प्रार्थना। हम नही चाहते आपकी प्रार्थना।

गाधीजी--अच्छा, तो सब मुखालिफ है ?

करीब सौ-दो-सौ लोगोकी आवाज आई---नही, सब मुखालिफ नही है। आप जरूर प्रार्थना कीजिए।

गाधीजी---नही, ये बहुत हाथ है। मै हार गया और आप जीत गए। कल और भी लोग हाथ उठाइए। इस वक्त भी आपकी तादाद बहुत काफी है। मै अब प्रार्थना कर सकता हू, पर इस समय मै आपके हाथो मरना नही चाहता। मुझे अभी काम करनेके लिए जिदा रहना है।

लोग---सब नही है, थोडे है।

गाधीजी---ठीक है, ज्यादाके आनेकी जरूरत नही है। इतने भी चाहे तो मुझे मार सकते है।

इसके बाद दोनो तरफकी आवाजे बढी और बहुत शोर होने लगा। गाधीजी मचके किनारे खडे होकर कहने लगे

"सुनिए, ऐसा गुस्सा मत कीजिए। आप हिदू है। हिंदूको चाहिए कि वह खामोशीसे सोचे, खूब विचारे और समझकर बोले। आप घर लौट जाइए और सोचिए कि पजाबका जख्म कैसे मिट सकता है। मै भी शक्तिभर सोच रहा हू, पर गुस्सा करनेसे तो वह जख्म भरनेवाला नही है।"

इतना कहकर गाधीजीने भाषण समाप्त किया, पर भीड़मेसे आवाज आई, "एक प्रश्नका उत्तर देते जाइए। आपने नोआखालीमे रामधुन कैसे बद कर दी थी?[1] आप यहा भी बद कीजिए। अपनी कोठरीमे बैठे प्रार्थना कीजिए।"

गाधीजी---मै यहापर कुछ जवाब नही देना चाहता। आप अब जाए और बाहर जाकर भी न लडे।

गाधीजी इसके बाद जाने लगे। इस बीच पुलिसने व्यवस्था कायम करनेका प्रयत्न किया। इसपर सभामे गडबड शुरू हो गई। तब

---

[1] नोआखालीमें किसी भी प्रार्थनामें रामधुन बंद नहीं हुई थी। हां, रामधुन होनेपर कुछ मुसलमान भाई उठकर चले गए थे। प्रार्थना नहीं रुकी थी।

गाधीजी फिर मचके किनारेपर आए । लोगोने उनसे कहा कि आप प्रार्थना कीजिए। शोर मचानेवालोको हम शात किए देते है । सब बैठ जायेगे । आपके साथ हम सब मरनेको तैयार है। आप प्रार्थना न छोडे ।

गाधीजीने कहा—आप मरे तो मेरी शर्तसे मरे, अपनी शर्तसे नही। मरनेका इल्म मै जीवनभर सिखाता आया हू और सीख रहा हू। मरना हो तो इस तरह गुस्सेमे खौलते हुए नही मरना चाहिए। ठडी ताकतसे मरना चाहिए। इस समय ये लोग गलतफहमीमे है। वे समझते है कि गाधी ही यह सब कुछ बिगाडता फिरता है। इसलिए इस वक्त तो शातिको ही मेरी प्रार्थना समझिए। मै जानता हू कि पजाबके कारण सबका खून उबल रहा है। क्या मेरा खून नही उबल रहा है? मेरे दिलमे भी तो आग धधक रही है। मै पजाबकी समस्या सही-सही समझता हू । पजाबी सब मेरे भाई है । वे इस समय गुस्सेमे है । उन्हे शात होना चाहिए। बिहार भी गुस्सेसे भर गया था। उसका गुस्सा मैने रोका है । इस समय गुस्सेको रोककर ही हम आगे बढ सकते है ।

उन दो-चार आदमियोको पुलिस हटा ले गई है। उनको हटाने-के बाद मै कैसे प्रार्थना कर सकता हू? वे सब यहा फिर आवे, शातिसे बैठे और तब हम सब मिलकर प्रार्थना करे।

और इस समय जो चल रहा है उसे रोकनेकी बात सोचनेमे ही तो मै शक्ति खपा रहा हू। क्या मै वाइसरायके पास खाना खानेके लिए जाता हू? हम दोनो मिलकर इसमेसे रास्ता निकाल रहे है। इस सारी गडबडको रोकनेके लिए मुझसे ज्यादा वह परेशान है और उन्हे परेशान होना भी चाहिए। आखिर मै फिर कहता हू, आप शात हो जाइए। शाति ही प्रार्थना है। उनको जबरन रोका जाय, यह मुझे नही सुहाता ।

इतना कहकर गाधीजी जाने लगे तो तीसरी बार लोगोने फिर उन्हे रोका और कहा, "आप उन थोडेसे आदमियोकी बात क्यो सुनते है, जो बेकार रोडा अटका रहे है? असलमे उन लोगोने कुछ भुगता भी नही है। हम लोग है, जिन्होने पजाबमे भुगता है, जिनके ऊपर सितम

ढाया गया है। हम तो आपको नही रोकते। हम आपसे विनती करते है कि आप प्रार्थना कीजिए। थोडी-सी ही सही।"

गाधीजी—आपकी बात तो सही है, पर उन लोगोको समझनेका मौका देना चाहिए।

लोगोने कहा—आप हमारे सवालका जवाब देगे ?

गाधीजी बोले—आप सोचे तो सही, मै बुड्ढा आदमी हू। क्या मै खडे-खडे बात करने लायक हू ? वाइसराय तकसे मै माफी चाहता हू कि मुझे खडे रहकर बोलनेको वह न कहे। मुझमे इतनी ताकत कहा है ? पर ईश्वर मुझे बुलवाता है। वह शक्ति दे देता है। आजकल मुझे खूनका दबाव भी रहता है। तब भी वह मेरी गाडी खीचे ले जा रहा है। कल अगर कोई मुखालिफ नही होगा तो मै और बाते करूगा।

जो इस मुखालिफतकी जडमे है वे मुझे मिले तो सही। अगर वे यही चाहेगे कि मै यहा न रहू तो मै चला जाऊगा। मुझे तो अपने यहा रहनेके लिए बहुत लोग बुला रहे है, पर मै भगी हू और भगीखानेमे पडा हू। मुझे तो यहा इतनी जगह भी मिल गई है। उनके पास छोटे घुल्लक (दरबे) है। मुझसे वह बर्दाश्त नही होता। मुझे सफाई चाहिए। ईश्वर ताकत दे देगा तो मै उन घुल्लकोमे ही रहने लगूगा।

ईश्वर सबका भला करे और भारतको आजादी दे !

: ४ :

४ अप्रैल १९४७

"भाइयो और बहनो,

क्या आज भी आप लोगोको वही करना है जो आपने कल या परसो किया था, या आज शान्ति रहेगी ?"

चारो ओरसे आवाजे आई—आज शाति है। आज कुछ न होगा। आप प्रार्थना कीजिए।

गाधीजीने दुबारा पूछा—आप लोगोने अपनी आवाजमे एक-दोकी आवाजको दबा तो नही दिया ? एक भी आदमी ऐसा तो नही है, जो विरोध करना चाहता हो ?

मान्ने एक हाथ ऊपर उठा था। गाधीजीने कहा—ठीक है। तब आज भी प्रार्थना नही होगी। एक आदमी भी जबतक समझता नही है या यहासे उठकर अपने आप चला नही जाता तबतक मै प्रार्थना नही करूगा। अगर सिपाही लोग उसे पकडकर ले जाये तो वह तो कोई बात नही हुई। बहुतसे आदमियोको मिलकर इस तरह थोडेसे आदमियोको दबाना नही चाहिए। थोडे आदमी भी अगर खिलाफ रहते है तो उन्हे समझाना चाहिए। जहा कोई बात उन्हे पसद नही वहासे उन्हे उठ जाना चाहिए। उन्हे रुकावट नही डालनी चाहिए। अगर यह बात इस एक आदमीकी समझमे आती है तो वह उठकर चला जाय तब मै प्रार्थना कर लूगा या वह शान्तिसे प्रार्थनामे बैठे।

एक पडितजी उठकर गाधीजीके पास आए और बहुत शाति और विनयके साथ बोले "आज आप प्रार्थना करके ही जाइए। आप हमारे महान् नेता है। आपकी प्रार्थना इतने दिनोसे रुक रही है, यह इस दिल्लीकी बहुत बडी बदनामी है। मै आपसे केवल एक मिनट चाहता हू।

गाधीजीने उनको बोलनेकी इजाजत दे दी। पडितजीने लोगोको समझाया और शान्ति रखनेकी अपील की। इसके बाद उन्होने गांधीजीसे प्रार्थना शुरु करनेके लिए अनुरोध किया। सब लोग शान्त रहे।

गाधीजीने फिर पूछा—अब आप सब शान्त है ? वह भाई चला गया जो प्रार्थना नही चाहता था ? मै सबसे कहूगा कि उस भाईको हमारी ओरसे डराना या धमकाना नही चाहिए। अगर सिपाही उसे ले जाता है तो उस बेचारेका क्या होगा ! वह अपनेको कैसा भी समझे, मै तो उसको बेचारा ही कहूगा। अगर उसकी रक्षा मै नही करूगा तो और कौन करेगा ? एक आदमी अगर अपनेको हिंदू बनाता है या अपनेको मुसलमान बनाता है और मुझे प्रार्थनासे रोकना चाहता है तो उसपर आक्रमण क्या करना !

वह कहता है कि आप इस मदिरमे प्रार्थना मत कीजिए। लेकिन मदिर तो मेहतरोका है। मेहतर भाई मेरे पास आकर रोते है कि हमारे मदिरमे आकर ये दूसरे लोग ऐसी वाधा क्यो डालते है? इन छोटे भाइयोको मै क्या दिलासा दू? मै उनका वड़ा भाई हूं। मै आला भगी हू। मै वाहरकी सफाई करता हू, वाहरके पाखाने उठाता हू, लेकिन हमारे सबके दिलमे भी मैला भरा हुआ है। असली भगीको भीतरकी भी सफाई करनी होती है, जो मै कर रहा हू। अगर इस मैलेको हमने अपने दिलसे नही निकाला, अगर ऊच-नीचकी यह वात हममेंसे नही हटी तो हिदू धर्म वचनेवाला नही है। आजतक यह बचा हुआ है, क्योकि यह बहुत वडा धर्म है। वह मरते-मरते भी टिका है। फिर भी अगर हमने ऊच-नीचका भाव न छोडा तो यह वडा होनेपर भी कमजोर हो जावेगा। मेरी इस बातका डा० मुजेने समर्थन भी किया है। उन्होने चिट्ठी लिखी है कि मे आपकी और वाते तो मानता नही हू—मै तलवारकी तालीम मानता हू—पर छुआछूत और ऊच-नीचके इस भेदको मिटानेमे पूरा-पूरा आपके साथ हू।

इसलिए जो मेरी प्रार्थनाका विरोध करते है, वे हिदू धर्मको मार रहे है। उन्हे समझना चाहिए कि मै जितना हिदू हू, उतना ही पारसी हू, ईसाई हू, मुसलमान भी हू। 'अोज़ अबिल्ला'का अर्थ भी कितना सुदर है। मैने तो यजुर्वेद नही पढा है, लेकिन एक भाईने लिखा है कि इनमे सारी बाते वे ही है जो यजुर्वेदमे है। फिर आप लोग इसका विरोध क्यो करे? धर्मकी बाते अरबीमे हो, संस्कृतमे हो या चीनी भाषामे हो, सब अच्छी ही है। इसलिए मै उस भाईसे पूछूगा कि वे इसे समझ गए है या नही?

अगर वे हिंदू नही है, गैर मजहब है, तो प्रार्थनामे न आवे। मुसलमान थोडे ही आते है। मुसलमान भी मुझसे कहते है कि तुमको क्या हक है कि तुम कुरानकी आयत बोलो। फिर भी नोआखालीमे उन्होने मुझे नही रोका। क्या वे रोक नही सकते थे?

लेकिन हिदू धर्ममे किसीको शिकायत नही हो सकती। हमारे यहा १०८ उपनिषद् है। उनमे एक उपनिषद्का नाम 'अल्लोपनिषद्' है।

यही तो हिंदू-धर्मकी खूबी है कि वह बाहरसे आनेवालोको अपना लेता है। लेकिन उसमे जो कमी है वह है अस्पृश्यता या ऊच-नीचका भेद। यह जहर उसमे फैल गया है। उसके निकल जानेसे ही वह बचेगा। ये लोग तलवारसे हिंदू धर्मको बचानेकी बात करते है। ये तलवार लेकर कवायद करते है। यह सब क्यो? मारनेके लिए? इस तरह हिंदू-धर्म बढनेवाला नही है।

सत्यसे ही धर्म बढता है और यह बात तो मैने हिंदू-धर्मसे ही सीखी है। 'सत्यान्नास्ति परो धर्म' और 'अहिंसा परमो धर्म' भी हिंदू-धर्मने सिखाया है। भगवान पतजलि है जिन्होने अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि पाच व्रतोको हिंदू-धर्ममे विज्ञानका स्थान दिया। और धर्मोमे भी ये बाते है, लेकिन इनका विज्ञान हिंदू-धर्मने ही रचा है।

(इसके बाद गाधीजीने दक्षिण भारतके हरिजन सत नन्दनार और अवाईमाईकी कहानी सुनाते हुए बताया कि अवाईमाईके पैर किसी देवमदिरके सामने थे। तब कोई हिंदू उससे झगडने लगे। अवाईमाईने उससे कहा कि भैया, जिधर भगवान नही है उधर मेरे पैर कर दो। जहा-जहा पैरोको घुमाया गया, वहा तो भगवान थे ही।)

पत्थरकी मूर्ति पूजाका एक तरीका ही तो है और दिलमे भगवान है तो फिर चाहे पैर किधर भी हो। पैरोसे आदमी पूजा भी कर सकता है और लात भी मार सकता है। अगर कही ज्वालामुखी-सी आग धधक रही हो तो वह पानीसे बुझ नही सकती। उसे मै पत्थरसे दबाऊ और उसके ऊपर खडा होकर लाखो आदमियोकी जान बचा लू तो वह पत्थरसे और पैरोसे ईश्वरकी पूजा ही तो हुई। पूजा पैरसे हो सकती है, हाथसे हो सकती है और जिह्वासे हो सकती है। पूजाका तरीका कुछ भी हो, पूजा सच्ची होनी चाहिए।

इसलिए अगर वह भाई यहा है तो मै उससे विनय करना चाहता हू कि वह आरामसे प्रार्थना करने दे।

इतना मै बता देना चाहता हू कि उन बालकोपर मुझे जरा भी रोष नही है। उनपर गुस्सा क्या करू? गीता गुस्सा करना नही

सिखाती। और मै तो दक्षिण अफ्रिकासे ही प्रार्थनामे गीताके श्लोक बोलता आया हू। मैने वहीसे गीताकी इस भलाईकी सीखको अपना लिया है और उसे लेकर यहा आया हू। जो इसका विरोध करते है वे समझते नही है कि हिंदू-धर्म क्या चीज है। न समझकर हैवानका काम करते है और भगवानको भूल जाते है।

इसके बाद सब चुप हो गए और गाधीजीने शातिपूर्वक प्रार्थना की। आजका भजन था 'हरि तुम हरो जनकी पीर', और रामधुन

रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥
ईश्वर अल्ला तेरे नाम। सबको सन्मति दे भगवान॥
शातिविधायक राजाराम। पतितपावन सीताराम॥
रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥

प्रार्थना समाप्त हो जानेके बाद गाधीजीने कहा--

मै ईश्वरका बडा अनुग्रह मानता हू कि आज चौथे रोज उसने शातिके साथ हमे प्रार्थना करने दी। और यह भी कहता हू कि पिछले तीन दिन प्रार्थना नही हुई, ऐसा कोई न माने। जब आप यहा आए, मै यहा आया और हम सब शात रहे तो वह प्रार्थना ही थी, क्योकि हमारे दिलोमे प्रार्थना थी।

फिर जिन भाइयोने दखल देनेकी कोशिश की उनका भी मुझपर उपकार हुआ है। मै उनका धन्यवाद मानता हू, क्योकि मुझे अपना दिल देखनेका मौका मिला। इस तरह प्रार्थनाके बारेमे अपना अतर जाचनेका मौका मुझे पहले नही मिला था। मुझे अपने भीतर यह टटोलना पडा कि मै कहा हूं। मेरे अदर उन लोगोपर रोष तो नही है। मेरी प्रार्थनामे कही दूसरी बात तो नही है। भगवान तो तरह-तरहसे अपने भक्तकी परीक्षा लेना चाहता है। और आखिर वह हरिजनकी पीडा हरता है, जैसा कि अभीके भजनमे आपने सुना। इसपरसे हमे यह शिक्षा लेनी है कि हमपर जो कुछ बीतता है वह भगवानकी नियामत ही होती है। भगवानकी कृपा है, जो मै आज इस परीक्षामे उत्तीर्ण हुआ हू।

उस भाईको भी, जो शास्त्रीजीके कहनेपर समझ गया, धन्यवाद।

भगवानने और कठिन कसौटीमे मुझे बचा लिया है। एक बार प्रार्थना शुरू कर देनेके बाद अगर चार ही आदमी मुझसे कहते कि प्रार्थना मत करो तो मै उनसे कहता, 'आप मेरा गला काट सकते है, मै 'राम-रहीम, राम-रहीम' करता रहूगा और उस समय भी अपने दिलमे रोष न लाकर, अभी जैसे धुनमे कहा गया है, दिलमे सोचूगा—'भगवान इन्हे सन्मति दे।'

आपको नोआखालीकी एक बात बता दू। वहा बडे कष्टसे राम-धुन शुरू हुई। मै जो यात्रा करता था उसमे प्रारभमे रामधुन होती थी और जहा पहुच जाते थे वहा ग्राम-प्रवेशके समय भी रामधुन होती थी। हम वहा लोगोको बताते थे कि राम, रहीम, खुदा, ईश्वर सभी भगवानके नाम है, बल्कि उसके तो दस करोड नाम है।

और 'औज अबिल्ला'का अगर मै अर्थ सुनाऊ तो आपको पता तक नही चलेगा कि यह अरबीसे लिया गया है। तो क्या मै अरबीमे प्रार्थना करू, यह गुनाह हो जायेगा? आप लोग हिंदू-धर्मको इस तरह निकम्मा न बनाइए। यह धर्म बहुत बडा धर्म है, बहुत पुराना धर्म है। लोकमान्य तिलकने इसे १० हजार वर्ष पुराना धर्म बताया है, पर मेरी समझमे यह लाख बरससे भी ज्यादा पुराना है। यह अनादि है। वेदमे जो बाते बताई है वे धर्मका निचोड है और धर्म मनुष्य प्राणीके धर्मके साथ-साथ पैदा हुआ है। इसलिए वेद अनादि है। और ये बाते जब मनुष्योने जानी तबसे कठस्थ रखी। बहुत दिनो बाद ये लिखी गई, क्योंकि मनुष्यने लिखना बादमे सीखा। उन लिखी हुई बातोमेसे भी बहुत-सी गायब हो गई है। बाइबिलका भी इस तरहसे बहुत सारा हिस्सा विस्मृत हो गया है। कुरानका भी ऐसा ही हुआ है। बाइबिलके जानने-वाले कई लोग कहते है कि उसमे काफी क्षेपक है। इस तरह शास्त्र अनन्त है। शास्त्रोका यानी वेदका निचोड इतना ही है कि ईश्वर है और वह एक ही है। कुरानका और बाइबिलका भी यही निचोड है। कोई यह न कहे कि बाइबिलमे तीन भगवान बताए है। वहा भी भगवान एक ही है।

मै वाइसरायके पास बार-बार जाता हू। वहा काफी समय दे रहा हू, पर वह समय व्यर्थ नही जाता। वहा बिहार, पजाब, नोआखाली सभी जगहका काम कर रहा हू। मेरे सामने मेरा छोटे-से-छोटा काम भी बडे-से-बडेके बराबर ही होता है। मेरी दृष्टिसे अणु-परमाणुमे जो है, वही ब्रह्माडभरमे है—'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'। इसी सूत्रका मै माननेवाला हू। पजाब और बिहार या नोआखालीको छोडकर मै हिदुस्तानका कुछ काम नही कर सकता। मेरे लिए हिदुस्तान उन्ही-जैसी जगहोमे है।

आज बहुत-सी बाते आपको समझाई गई है। यह अच्छा लगा है। आपकी शातिके लिए धन्यवाद।

: ५ :

५ अप्रैल १९४७

"भाइयो और बहनो,

"दु खकी बात तो है, लेकिन अभी दो-चार दिनतक मुझे पूछना ही पडेगा कि कुरानकी आयत पढनेके बारेमे किसीकी ओरसे शिकायत तो न होगी ? अगर होगी तो उसमे न आपका फायदा है, न धर्मका। जैसे अनेक नाम होनेपर भी ईश्वर एक ही है, वैसे ही अनेक नाम होते हुए धर्म एक ही है, क्योकि सारे धर्म ईश्वरसे आए है। अगर वे ईश्वरसे नही आए है तो वे निकम्मे है। जो धर्म ईश्वरका नही है वह शैतानका है और वह किसी कामका नही हो सकता। इसलिए आप समझ ले कि जैसा तीन दिनसे होता रहा है वैसा ही चलेगा तो धर्मका नाश हो जायगा।

"अगर मै हिदू हू तो कुरान क्यो नही पढ सकता ? जेन्दावस्ता क्यो नही पढ सकता ? और हिदूकी प्रार्थनामे भी तो भेद कम नही है ! कोई कहेगा, वेद नही उपनिषद् कहो, उपनिषद् नही गीता कहो, यजुर्वेद नही अथर्ववेद कहो। यानी सभी अपने-अपने ढगकी प्रार्थना करनेके

हकदार है। यदि आप मुझे रोकना चाहे तो मैं आज भी खुद हार मानकर आपको जितानेको तैयार हूं। यदि आपमेंसे कोई चाहे तो मुझे वह जहरका प्याला दे सकते हैं। कोई देगा तो मै उसे खुशी-खुशी पीना चाहूंगा और आप भी उसे सहन कीजिए। आपको पीना नहीं है, पर आप उसके साक्षी बने। आप गुस्सा न करे और अपने दिलमे समझे कि यह बुड्ढा जो गम खा रहा है वह ठीक ही कर रहा है।

"आप लोग इतनी संख्यामे आए है, यह अच्छी बात है, पर आपमेंसे एक आदमी भी 'औऊ अबिल्ला' का पाठ न चाहेगा तो मैं प्रार्थना छोड दूंगा और आपको शातिसे लौट जाना होगा।"

लोगोंके विश्वास दिलानेपर सारी प्रार्थना शातिपूर्वक हुई। अनतर गांधीजीने प्रवचन करते हुए कहा :

आप लोगोंने जो इतनी शाति रखी इसके लिए आपको धन्य-वाद है। पहले इतनी शाति नहीं हुआ करती थी। इससे साफ है कि पिछले तीन दिन जो हुआ उससे हमने धर्म नहीं खोया है। यदि आदमी शातिसे न रहे, कभी अपने विचारोंको भीतरसे न देखे, जीवनभर दौड-धूपमें ही रहे और हर वक्त गरम बना रहे तो वह उस शक्तिको पैदा नहीं कर सकता, जिसे शौकतअली साहब 'ठडी ताकत' कहा करते थे। मुहम्मदअली साहब भी कहते थे कि हमे अग्रेजोसे लडकर स्वराज्य लेना है और हमारी लडाई होगी तकलीकी तोपोसे और कुकडियोंके गोलोसे। वह तो जितना विद्वान था, उतना ही कल्पनाए दौड़ानेवाला था।

और यह सब आपकी दिल्लीकी ही बात है। उन दिनों मैं सेंट स्टीफेंस कालेजमें रुद्र साहबके घर टिका हुआ था। आजकल तो वह कालेज कहीं बडे मकानोमे चला गया है, पर उस पुराने कालेजमे ही पहली बार मैं मौ० अबुलकलाम आजादसे मिला था। प्रो० अब्दुल बारी भी वहींपर मिले थे। और भी कई बडे-बडे मौलानाओंसे मेरी मुलाकात हुई और वहींपर यह बात काफी बहस-मुबाहिसेके बाद तय हुई कि खिलाफतके मामलेमे काग्रेस तभी साथ दे सकती है जब खिला-फतका सारा काम अमनसे होगा। सबने ईश्वरको हाजिर-नाजिर

करके यह ठहराया था कि खिलाफतका कोई काम बगैर अमनके न होगा। वहा ईश्वर यानी खुदाकी कसम लेनेकी बात थी । ईश्वर और खुदामे भेद न था । उस दिन जो यह काम किया गया उसका ही यह अच्छा नतीजा आज हम पाने जा रहे है ।

यह बात मैने इसलिए बताई कि कलसे राष्ट्रीय सप्ताह शुरू हो रहा है। कलके ही दिन हिदुस्तानने अपने आपको पहचाना। हिदुस्तानने तव जाना कि वह इस दिल्ली या बबई या लाहौरमे नही है, बल्कि सात लाख देहातोमे बसा हुआ है । अगर कल कोई जबरदस्त भूकप हो जाता है और सारे शहरोकी तमाम आबादी नेस्तनाबूद हो जाती है तब भी हिंदुस्तान नही मरेगा । शहरोकी कुल मिलाकर दो करोडकी आबादीके खतम हो जानेके बाद भी अडतीस करोड देहाती, जो सात लाख गावोमे है, बने ही रहेगे । पटनामे इतना भारी भूकप हुआ तब भी बिहारके बडे-बडे शहरोको ही हानि हुई, छोटे-छोटे देहात बच ही गये। हा, गीताके ग्यारहवे अध्यायमे बताया हुआ विराट् ईश्वर सबको निगलना चाहे तब तो कोई भी न बच सकेगा । फिर भी यह स्पष्ट है कि हिंदुस्तानका जीवन देहातोके जरिये ही है ।

ये सात लाख देहात सन् १६१६ के अप्रैलकी छठी तारीखको अचानक जाग्रत हो उठे थे । जब पाच अप्रैलको मैने ऐलान निकाला था तब मुझे सपनेमे भी खयाल नही था कि हिंदुस्तान इतना जग उठेगा। उस दिन मै आपके आजके मिनिस्टर राजगोपालाचार्यजीके यहा सेलम-मे था। दिनभर मै सोचता रहा कि सत्याग्रह शुरू कैसे किया जाय। श्रीविजयराघवाचार्य--जो आज इस दुनियामे नही रहे है--और दूसरे लोग भी वही मिले। मुझे जब विचार आया, मैने महादेवसे--वह भी आज उठ गया है--कहा कि राजाजीको बुलाओ। राजाजी सहमत हुए और हमने अपील निकाल दी। इतनेपरसे ही हिंदुस्तान इतना जग उठा कि मै तो हैरान हो गया। उन दिनो काग्रेसके पास न स्वयसेवक दल थे, न सदेशवाहक; फिर भी मानो बिजली दौड गई ।

हमने छठी अप्रैलको उपवास और प्रार्थना करनेके लिए कहा था। हिंदुओका उपवास तो छत्तीस घटेका होता है, पर मुसलमान २४ घटेका

रोजा ही कर सकते है । हिंदू भी २४ घटेका प्रदोष करते है। हमने भी यही २४ घटेका उपवास ठहराया ताकि हिंदू-मुसलमान दोनो ही कर सके । इसमे अन्न, दूध, सब्जी कुछ नही लिया जाना चाहिए । भरपेट पानी पी सकते है । मेरे-जैसे बूढे व कमजोर फल ले सकेगे, ऐसा मैने उस दिन कहा था । पर आप कल जब फाका करे तब पेट भरनेवाले केले-जैसे फल न ले। ऐसा करना तो मेरी माता जैसे मुझे फलाहार करवाती थी और दिनभर कूटूकी पूरी और गुलाबजामुन आदि खिलाती थी वैसी ही चीज हो जायगी । मै अपनी माकी तरह आपका लाड करना नही चाहता। जो निरा उपवास बर्दाश्त न कर सके वे फलका रस ले सकते है ।

छठी अप्रैलका खास सदेश है हिंदू-मुस्लिम ऐक्य, खादी और देहातका काम, पर आज इसे कौन करेगा ? आज हिंदू-मुस्लिम ऐक्य है तो मेरे हृदयमे है । चर्खा भी मेरे ही पास पडा है । अगर आप लोग भी इसे अपनाना चाहे तो कल अपनाइए । ऐसा करनेके लिए आपको पुरानी बाते भूल जानी चाहिए । भले ही पजाबमे मुसलमानोने और बिहारमे हिदुओने कितना भी आक्रमण किया, दोनो ही इस बातको भूल जाए और भाई-भाई बननेकी बात सोचे । अगर ऐसा नही करेगे तो क्या आप यह प्रार्थना करेगे कि हे भगवान, हमको वैसा ही दीवाना बना दो जैसा बिहार या पजाबमे लोग बन गए थे ? क्या ऐसा करके आप अपनेको और धर्मको बचा लेगे ? इसीलिए आप उपवास तभी करे जब आपके दिलमे सन् १९१९ की बात कायम हो, और वह तभी कायम हो सकेगी जब आप अमन और शाति धारण करेगे ।

शाति कैसे आएगी ? आप रोज एक घटा चर्खा कातिए और आपको शाति न मिले तो मुझसे कहिए। भावनगरकी कौसिलके प्रमुख और भारत-मत्रीकी कौसिलके मेंबर पट्टणी साहबको जब सैकडो नुस्खोसे नींद नही आती थी तो रातको एक घटा चर्खा कातनेपर आ जाती थी ।

शातिसे ही हिंदू-मुस्लिम एकता कायम हो सकेगी । मै जानता हू कि यह बडा कठिन काम है । हमारे दिलमे ज्वालामुखी दहक रहा हो तब भी ठडा रहनेमे हमारी अहिंसाकी परीक्षा है ।

और शांति रखनेसे अगर सब मर भी जायगे तो क्या बिगडेगा? अगर मुसलमान मुझे मार भी डालेगा तो मेरा भाई ही तो होगा। अगर हमने शांति नही रखी और जबरन देशको एक बना रखा तो वह पाकिस्तान हमारे मनमे भर जायेगा। और जब पाकिस्तान हमारे दिलमे रहेगा और हम किसी भी तरह अपने भाइयोके साथ अमनसे रहनेको तैयार न होगे तो मै आगाह करता हू कि हिंदुस्तान आजाद रह ही नही सकेगा।

हा, पाकिस्तान एक तरह अमृतमय हो सकता है। लेकिन उसके लिए पिस्तौल, भाला, तलवार क्यो होनी चाहिए ? इस तरह जबर-दस्तीका पाकिस्तान तो जहरीला होगा। ऐसा जहर हम सबको क्यो खिलाए ? दूसरोके दिलोमे जहर पैदा न करू, अपने दिलमे भी जहर न रखू, और सबसे लडाई ले लू और लडते-लडते मारे जानेपर भी परवा न करू तब वह पाकिस्तान अमृतमय होगा और वैसा ही अमृतमय हिदुस्तान होगा। अमृतमय हिदुस्तान वह है जो केवल हिदूका नही है, पर साथमे मुसलमान, पारसी, ईसाई और सिखका भी उतना ही है जितना हिदुओका। और अमृतमय पाकिस्तान भी वही है जिसमे सभी कौमो-के लिए जगह हो और किसीके बारेमे वहा जहर न हो। चूकि मै ऐसे ही हिंदुस्तान और पाकिस्तानका माननेवाला हू, इसलिए जब गायत्री और गीता पढना चाहूगा तब 'ओज अबिल्ला' भी बोलूगा। आज एड्रूज साहबकी सातवी पुण्य-तिथि है। उनके गुणोको हमे याद करना चाहिए। उनका जीवन बहुत सादा था। हम दोनो घने मित्र रहे है। उनकी चमडी गोरी थी, लेकिन वह इतने सादे थे और देहा-तियोसे मिलते-जुलते थे कि वह अग्रेज है, ऐसा पहिचानना कठिन हो जाता था। उनको कपडे पहननेका भी शऊर न था। मोटेसे बदनपर ढीली-ढाली धोती किसी तरह लपेट लेते थे। उनको ऊपरके दिखावेसे काम न था। उनका दिल सोनेका था।

: ६ :

६ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मैं यह भजन[1] और धुन[2] सुन रहा था तब नोआखाली-यात्राके समयका सारा दृश्य मेरी आखोके सामने ताजा हो आया। वहा-पर यही मडली और यही भाई-बहन थे जो प्रातःकाल यात्रा शुरू होने-पर पहले आध मीलतक चलते थे।

मुझे जो कहना है वह तो एक ही बात है कि हमे अपनी भलाई नही छोडनी चाहिए। अगर सब-के-सब मुसलमान मिलकर हमे कह दे कि हम हिंदुओंके साथ किसी भी किस्मका वास्ता नही रखना चाहते, उनसे अलग रहना चाहते है तो क्या हमे गुस्सेमे भरकर मारकाट शुरू कर देनी चाहिए? अगर हमने ऐसा किया तो चारो ओर ऐसी आग फैल जायगी कि हम सब उसमे भस्म हो जायगे, कोई भी नही बचेगा। अधाधुध लूट-खसोट और आग जलानेसे देशभरमे बरबादी ही फैलेगी। मै तो कहगा कि बाकायदा जो योद्धा लोग लडते है उससे भी विनाश ही होता है, हाथ कुछ भी नही आता।

हमारे महाभारतमे जो बात कही गई है वह सिर्फ हिंदुओके कामकी ही नही है, दुनियाभरके कामकी है। यह कथा पाडव-कौरवकी है। पाडव रामके पुजारी यानी भलाईके पूजनेवाले रहे और कौरव

---

[1] बले बले बले सबे शत वीणा वेणु रबे,
भारत आबार जगत सभाय, श्रेष्ठ आसन लबे।
धर्मे महान् होबे कर्मे महान् होबे।
नब दिन मणि उदिबे आबार॥

"सैकडो बंसरीकी मधुर ध्वनिसे आज सब मिलकर बोलो कि विश्व-सभामें इस बार भारत उच्च आसन ग्रहण करेगा। वह धर्मसे और कर्मसे महान् बनेगा। इसके प्रागणमें नया सूर्य जगमगाएगा।"

[2] भज मन प्यारे राम रहीम, भज मन प्यारे कृष्ण करीम।

रावणके पुजारी यानी बुराईको अपनानेवाले रहे, वैसे तो दोनो एक ही खानदानके भाई-भाई थे। आपसमे लडते है और अहिंसा छोडकर हिसाका रास्ता लेते है। नतीजा यह कि रावणके पुजारी कौरव तो मारे ही गए, पर पाडवोने भी जीतकर हार ही पाई। युद्धकी कथा सुननेभरको इने-गिने लोग वच पाए और आखिर उनका जीवन भी इतना किरकिरा हो गया कि उन्हे हिमालयमे जाकर स्वर्गा-रोहण करना पडा। आज हमारे देशमे जो चल रहा है, वह सब ऐसा ही है।

आजसे राष्ट्रीय सप्ताहका आरभ हुआ है। मै मानता हू कि आप लोगोने चौवीस घटेका व्रत रखा होगा और प्रार्थनामय दिन बिताया होगा।

आज तीसरे पहर तीन बजेसे चार बजेतक यहा चर्खा-कताई भी की गई, जिसमे राष्ट्रपति,[1] उनकी पत्नी, पडित जवाहरलाल नेहरू, आचार्य जुगलकिशोर और दूसरे भी बहुतसे थे, जिनके नाम मै कहातक गिनाऊ! इस तरह कताई-यज्ञ पूरी शक्तिसे और खूबसूरतीसे पूरा हुआ और अब यहासे जानेके बाद आपका उपवास भी खत्म हो जायगा, परतु कितना अच्छा हो यदि राम-रहीमके शब्द तथा उक्त भजनका सदेश सदाके लिए सबके दिलोपर अकित हो जाय! लेकिन यह सब आज तो हिंदुस्तानके लिए स्वप्नवत् हो गया है। मेरे पास तार और खत बरस रहे है, जिनमे गालिया भरी रहती है। इससे पता चलता है कि कुछ लोग मेरे विचारोको कितना गलत समझते है। कुछ यह समझते है कि मै अपनेको इतना बडा समझता हू कि लोगोके पत्रोके उत्तर नही देता तथा कुछ मुझपर यह आरोप लगाते है कि पजाव जब जल रहा है तब मै दिल्लीमे मौज उडा रहा हू। ये लोग कैसे समझ सकते है कि मै जहा कहीपर भी हू उन्हीके लिए दिन-रात काम कर रहा हू। यह ठीक है कि मै उनके आसू न पोछ सका। केवल भगवान ही ऐसा कर सकता है।

---

[1] आचार्य कृपलानी।

ख्वाजा अब्दुलमजीद आज मुझसे मीठा झगडा करनेके लिए आए थे। वह अलीगढ यूनिवर्सिटीके ट्रस्टी है। उनके पास काफी बडी जायदाद है, फिर भी उनका मन तो फकीर है। मै जब वहा जाता था उन्हीके यहा खाना खाता था। उस जमानेमे स्वामी सत्यदेव—परि-व्राजक—मेरे साथ रहते थे। उन्होने हिमालयकी यात्रा की थी। ईश्वरने आज उनकी आखे छीन ली है। उस समय वह बहुत काम करनेवाले थे। उन्होने मुझसे कहा, "मै तेरे साथ भ्रमण करूगा, पर तू मुसलमानके साथ खाता है, तो मै तो नही खाऊगा।" यह सुनकर ख्वाजा साहबने कहा, "अगर उनका धर्म ऐसा कहता है तो मै उनके लिए अलग इतजाम करूगा।" ख्वाजा साहबके दिलमे यह नही आया कि यह स्वामी गाधीके साथ आया है तो क्यो नही मेरे यहा खाया। पुराने दिन फिर वापस आएगे जब हिंदू-मुसलमानोके दिलोमें एकता थी। ख्वाजा साहब अब भी राष्ट्रीय मुसलमानोके प्रेसीडेट है। दूसरे भी जो राष्ट्रीय भावनावाले मुसलमान लडके उन दिनोमे अली-गढसे निकले थे वे आज जामियाके अच्छे-अच्छे विद्यार्थी और काम करनेवाले बने हुए है। ए सब सहाराके रेगिस्तानमे द्वीपसमान है। ख्वाजा साहब ऐसे है कि उनको कोई मार डालेगा तो भी उनके मुह मे बद्दुआ न निकलेगी। ऐसे लोग भले थोडे ही हो, पर हमे तो अपना-पन कायम रखना ही चाहिए। बदमाशको देखकर हमे भी बुराईपर नही उतर आना चाहिए। लेकिन बिहारमे हमने यह भूल की। वहा हिदुओने राष्ट्रवादी मुसलमानोकी हत्या की और मुसलमानोके हिदू मित्रोकी हत्या दूसरे मुसलमानोने की।

हमे शातिपूर्वक यह विचारना चाहिए कि हम कहा बहे जा रहे है? हिदुओको मुसलमानोके विरुद्ध क्रोध नही करना चाहिए, चाहे मुसलमान उन्हे मिटानेका विचार ही क्यो न रखते हो। अगर मुसलमान सभीको मार डाले तो हम बहादुरीसे मर जाए। इस दुनियामे भले उन्हीका राज हो जाय हम नई दुनियाके बसनेवाले हो जाएगे। कम-से-कम मरनेसे हमे बिलकुल नही डरना चाहिए। जन्म और मरण तो हमारे नसीबमे लिखा हुआ है फिर उसमे हर्ष-शोक क्यो करे। अगर हम

हँसते-हँसते मरेंगे तो सचमुच एक नए जीवनमे प्रवेश करेंगे—एक नए हिदुस्तानका निर्माण करेगे। गीताके दूसरे अध्यायके अंतिम श्लोकोमे बताया गया है कि भगवानसे डरनेवाले व्यक्तिको कैसे रहना चाहिए। मै आपसे उन श्लोकोको पढने, उनका अर्थ समझने तथा मनन करनेकी प्रार्थना करता हू, तभी आप समझेगे कि उनके क्या सिद्धात थे और आज उनमे कितनी कमी आ गई है। आजादी हमारे करीब आ गई है तब हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपनेसे पूछे कि क्या हम उसे पाने तथा रखनेके योग्य भी है? इस सप्ताहमे जबतक मै यहा रहूगा तबतक चाहता हू कि आप लोगोको वह खूराक दे दू जिससे हम उस लायक बने। अगर झगडते ही रहे तो आजादी आकर भी हाथमे नही रहेगी।

: ७ :

सोमवार ७ अप्रैल १९४७

(आज मौनवार होनेके कारण प्रार्थना-सभामे गाधीजीका लिखित सदेश सुनाया जानेवाला था, किंतु सयोगवश प्रार्थना आध घटे बाद शुरू हुई। तबतक महात्माजीका मौन समाप्त हो गया था। इसलिए सदेश सुनाए जानेके बजाय उन्होने नीचे लिखा भाषण दिया)

भाइयो और बहनो,

मेरे पास बराबर ऐसे पत्र आ रहे है जिनमे मुझपर यह इलजाम लगाया जाता है कि मै जिन्ना साहबका गुलाम और पाचवे दस्तेवाला बन गया हू। कोई पत्र-लेखक कहता है, मै कम्यूनिस्ट बन गया हू। लेकिन मै इन बौछारोसे नही घबराता। आप लोग हर रोज गीताके जो श्लोक सुनते है वे हमेशा मेरे साथ रहते है और इन बातोके सहनेकी शक्ति देते है। अगर मुझपर इलजाम लगानेवाले इन श्लोकोका मतलब समझते तो ऐसी बात न करते। मै सनातनी हिंदू हू, इसलिए ईसाई, बौद्ध और मुसलमान होनेका दावा करता हू। कुछ मुसलमान भाई भी यह महसूस करते है कि मुझे कुरानकी अरबी

आयतें पढनेका अधिकार नही है। वे समझते है कि कलमा पढकर मै मुसलमानोंको धोखेमे डालता हू। ऐसे लोग यह नही जानते कि मजहब भाषा और लिपिकी सीमासे बाहर है। मै कोई कारण नही देखता कि मै कलमा क्यों नही पढ सकता और मुहम्मदको रसूल यानी अपना पैगंबर क्यो नही मान सकता। मै तो हर मजहबके पैगबर और सतोंमे विश्वास रखनेवाला हू। मै ईश्वरसे प्रार्थना करूगा कि मुझपर इलजाम लगानेवालोपर मुझे गुस्सा न आए। इतना ही नही, बल्कि मै उनके हाथो मरनेके लिए भी तैयार रहू। मेरा विश्वास है कि अगर मै अपने यकीनपर मजबूतीसे कायम रहा तो मै सिर्फ हिंदू-धर्मकी ही नही, इस्लामकी भी सेवा करूगा।

आज रावलपिंडीका एक हिंदू वहाकी घटनाओका दुखजनक विवरण सुनाने आया था। महज हिंदू होनेके कारण उसके ५८ साथी मार डाले गए थे और वह खुद तथा उसका एक लडका बच गया है। रावलपिंडीके आस-पासके गाव तो भस्म कर दिए गए है। यह कितने दुखकी बात है कि जिस रावलपिंडीके बारेमे मुझे याद है कि किस तरह वहाके हिंदू, मुसलमान और सिख मेरा और अलीबधुओका सत्कार करनेमें आपसमे एक-दूसरेसे होड लगाते थे, वही आज किसी भी गैरमुसलमानके लिए खतरेकी जगह बन गया है। पजाबके हिंदुओंके दिलोमे गुस्सेकी आग जल रही है। सिख कहते है कि वे गुरु गोविदसिंहके चेले है, जिन्होने उन्हे तलवारका इस्तेमाल सिखाया है। लेकिन मै हिंदुओ और सिखोसे बार-बार यही कहूगा कि वे बदला न ले। मै यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि बदला लेनेकी भावना छोडकर अगर सब हिंदू और सिख अपने मुसलमान भाइयोंके हाथो बिना गुस्सा लाये बिना मर भी जाय तो वे सिर्फ हिंदू और सिख धर्मकी ही नही, इस्लाम और दुनियाकी भी रक्षा करेगे।

तीस सालसे मै आपको अहिंसा और सत्यका उपदेश देता आया हू। मैने दक्षिण अफ्रिकामें बीस सालतक इसी तरह किया था। मेरा विश्वास है कि दक्षिण अफ्रिकाके हिंदुस्तानियोंने मेरी बात मानकर फायदा ही उठाया है और वहा भी जो सत्य और अहिंसाके रास्तेपर

चले है उन्होने कुछ गवाया नही है । ठीक है कि हमारे सत्याग्रहियोने अपना सब कुछ लुटा दिया । लेकिन उसमे क्या हुआ ? रत्नको उन्होने हाथमे कर लिया और निकम्मी चीज फेक दी । अगर मै पजाब गया तो मै वहा क्या करूगा इसकी मेरे दिलमे हिचकिचाहट हो रही है । वहा क्या मै बदला लेने जाऊ ? बदला लेनेकी बात मीठी तो लगती है, लेकिन ईश्वर कहता है बदला लेनेका काम मेरा है। मुझसे काफी लोग कहते है कि यहा आओ तो सही । मै उनसे कहता हू कि मै वहा बदला लेनेकी बातका प्रचार करनेवाला नही हू । ऐसा करना तो हिंदू, सिख और मुसलमान सबकी कुसेवा करना होगा ।

मै मुसलमानोसे भी कहना चाहता हू कि हिंदू और सिखोके साथ लडकर पाकिस्तान लेनेकी बात निरा पागलपन है । पाकिस्तानमे तो अमनसे रहनेकी बात है । कायदे आजमने कहा है कि हमारे यहा हरदम इन्साफ होगा । आज वहा क्यो इन्साफ नही दीखता ? शायद वह पूछेगे कि बिहारमे भी क्या हुआ ? पर बिहारके प्रधान मत्री तो आज रो रहे है । वह कहेगे, आपकी काग्रेस कहा गई थी ? उसने क्या किया ? यह सवाल बडा है । काग्रेसका राज्य हिंदू-मुसलमान दोनोपर चलना चाहिए । लेकिन आज ऐसा नही है । मै ऐसे पाकिस्तानकी कल्पना ही नही कर सकता जहा कोई गैरमुसलमान शाति और सुरक्षाके साथ न रह सके । न ऐसे हिदुस्तानका ही खयाल कर सकता हू जहा मुसलमान खतरेमे हो । मै बिहार गया और वहाके हिदुओके गुस्सेको ठडा करने और मुसलमानोमे हिदुओके प्रति विश्वास पैदा करनेकी कोशिश की । खुशीकी बात है कि बहुतसे हिदुओने अफसोस जाहिर किया और आगे वैसा न होने देनेका विश्वास दिलाया । उसी तरह मै मुस्लिम नेताओसे अपील करूगा कि जिन प्रातोमे उनकी आबादी ज्यादा है, वहाके अपने मुस्लिम भाइयोसे वे कहे कि वे अपने यहासे गैरमुसलमानोको मिटानेकी कोशिश न करे ।

पजाबके हिंदुओ और सिखोने कितनी ही उत्तेजक भाषाका प्रयोग क्यो न किया हो, फिर भी जिन इलाकोमे मुसलमान ज्यादा तादादमे थे वहा उन्होने गैरमुसलमानोके साथ जो बेरहमी और पाशविकता की उसकी कोई वजह न थी ।

पिछले दो दिनोसे नोआखालीसे फिर बुरी खबरे आ रही है, लेकिन सब कुछ होनेपर भी पुलिस या फौजकी मदद मागना गलती और कायरता है। जो लोग गडबड मचनेपर रोते है, वे गुलाम है और जो फौजकी सहायता चाहते है वे गुलाम बने रहेगे। लोग न तो गृह-युद्धमे पडेगे, न गुलाम रहना ही पसद करेगे। मुझसे सतीश बाबू व प्यारेलालजीने पत्र लिखकर पूछा है कि घास-फूसके झोपड़ोके दरवाजे बद करके, जिसमे दस-बीस आदमी हो, जला दिया जाय तो वे क्या करे ? हरेन बाबूने चौमुहानीसे ऐसी ही बात लिखी है और बताया है कि आश्रित लोग जाना चाहते है पर समझानेपर रुक गए है। मैंने बगालके प्रधान मन्त्रीको तार दिया है कि यह खतरनाक बात है। लोगोको मैंने सदेश भेजा है कि जिनमे साहस हो, हिम्मत हो, वे जल जाएं, मिट जाए। अगर अपनेमे इतनी मजबूती वे महसूस नही करते तो वे वहासे हिजरत करे। बडे-बडे लोगोने हिजरत की है। मुहम्मद साहबने भी की है। कुछ भी करें, जिन अग्रेजोको यहा से हम भगाना चाहते है उनकी फौजोको लोग हरगिज न बुलावे। पिछली लडाईमे इग्लैडके और जापानके कितने आदमी मर गए, पर उसकी वे शिकायत नही करते। ये बहादुर जातिया है। हमको अग्रेजोका राज अच्छा लगे, यह हमारे लिए शर्मनाक बात है।

जो भूमि अमर हिमालयसे घिरी हुई है और गगाकी स्वास्थ्यप्रद धाराओसे सिचित होती है क्या वह हिसासे अपना नाश कर लेगी ? मै अन्त करणसे आशा करता हू कि बडी-बडी फौजे रखनेका खयाल हम अपने दिलसे निकाल डालेगे। इन फौजोसे हमारा कुछ भी भला नहीं होनेवाला है और उनके रहते हमारी आजादीकी कोई कीमत न होगी।

: ८ :

८ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

मै देखता हू कि अब आपने इतनी शाति अपनाली है कि

रोज-रोज धन्यवाद देनेकी आवश्यकता नही रहती । आज मै अपनी दुर्दशापर ही बोलना चाहता हू और मुझे उम्मीद है कि आपके कानो-तक इसका एक-एक शब्द पहुचेगा तथा इसकी एक-एक बात आपके हृदयका भेदन करेगी, यानी हृदयकी गहराईमे पहुचकर वह अपना असर डालेगी ।

कल अखबारमे आपने सतीश बाबू और हरेन बाबूके तार देखे ही होगे । आज सतीश बाबूने प्रत्युत्तरमे जो तार भेजा है उसमे वह लिखते है कि जीवनसिंहजी, प्यारेलालजी और दूसरे जो आपके साथी यहा आकर काम कर रहे है उन सबने मरते दमतक यहीपर बने रहनेका निश्चय किया है और सभी यह बात मजूर करते है कि आपका कहना सही है। यहाके हिंदू ऐसा कर सकते है जैसा आपने लिखा है । खतरा तो पूरा है, मारे जानेका डर बढता जा रहा है । वे रोते है, इतनेपर भी वे मजबूतीके साथ शात और तैयार हो रहे है। अब डरके मारे भाग जाना वे पसद नही करते । वे सोचते है कि अगर मौत आने ही वाली है तो उसे ईश्वरका प्रसाद समझकर मजूर कर लेना ही अच्छा है । यह खुशीसे मरनेकी बात है, मारकर मरनेकी बात नही है । यह सब आजतक किए गए कामका नतीजा है ।

मैने उन लोगोसे पुछवाया था कि आप यह तो नही चाहते कि मै यहाका काम छोडकर आपके पास चला आऊ ? मुझे दूसरे जरूरी काम है । मुझे बिहार जाना है । फिर पजाब भी पडा है । उन लोगोने मुझे लिखा है कि 'तुम यहा आनेका जरा भी खयाल न करो ।'

वे सारे लोग अलग-अलग जगह फैले हुए है । सतीश बाबू एक ओर है तो हरेन बाबू दूसरी ओर चौमुहानीमे बडा भारी काम कर रहे है । अम्तुस्सलाम, प्यारेलाल, कनु और आभा-जैसे हरेकने एक-एक गाव चुन लिया है । मुझे भरोसा है कि सभी लोग मेरी उम्मीदके मुताबिक भलीभाति काम करेगे । मेरी वह उम्मीद क्या है ? मेरी उम्मीद तो है कि भगवानसे सबको सुमति मिलेगी, जैसा कि यह लडकी रामधुनमे सुनाती है, 'सबको सन्मति दे भगवान' । मै यह उम्मीद

करता ही रहूगा कि वे समझ लेगे कि जबरदस्ती और मारपीटसे कुछ भी हासिल होनेवाला नही है। अगर किसीने मारपीटकर कुछ ले लिया या दूसरेसे कुछ करवा लिया तो वह टिकनेवाली बात नही होगी । ऐसा तो चोर-डाकू करते है । दूसरे लोग डाका डाले तो क्या हम भी डाकू बन जायगे ? नही, हम उनके रास्तेपर नही चलेगे । वे हमे मारना चाहते है तो हम मर जायगे।

हमारे बीच इस तरह मरनेवाले बहादुर लोग मौजूद है, यह देखकर अच्छा लगता है । उनकी बहादुरीसे उनका और देशका भला होगा। वे मरते-मरते भी मारनेवालोकी शिकायत नही करेगे । न उन्हे सजा दिलवानेकी बात सोचेगे । मारनेवाले सजामेसे छूटनेवाले नही है । ईश्वर उन्हे सजा देगा, हम सजा देनेवाले कौन होते है ? हम ईश्वरसे भी नही कहेगे कि हे भगवान, उन्हे सजा दे, क्योकि ईश्वर तो दयावान है। हम तो उससे अपने लिए और दुश्मनके लिए भी रहम ही मागेगे और अततक सबका, मारनेवालोका भी भला चाहनेकी कोशिश करते हुए मरेगे । इतनेपर भी भगवान जो करेगा उसमे दया ही भरी होगी ।

लेकिन ऐसोमेसे कोई वहा मर जाय तो क्या मै यह कहूगा, 'हाय क्या हुआ ?' मै ऐसा नहीं कहूगा। मै तो कहूगा, अच्छा ही किया जो उन्होने इतनी बडी सेवा की । मुसलमानोकी भी सेवा की है और ऐसा करके ईश्वरका काम किया है ।

लेकिन जो मरनेको तैयार हो जाते है, बहादुर बनते है, उनसे मौत हट जाती है । हम उम्मीद करे कि उन्हे मरना नही पडेगा । वहा सुहरावर्दी साहब है, छोटे-मोटे अफसर है। जो डाके डालनेवाले भी है उनको ईश्वर सुमति देगा और डाका डालनेवाले भी चेत जायगे तथा दूसरोको मजबूर करनेकी बात छोड देगे। मै तो यहातक उम्मीद करता हू कि वहाके सब मुसलमान भाई इकट्ठे होकर अपने हिंदू भाइयोकी रखवाली अपने जिम्मे ले लेगे और जगह-जगहसे मुसलमान भाइयोके मिलकर तार मेरे पास आयगे कि 'आप फिकर न करे, हमारे यहा खतरेकी कोई बात नही है।' और तब मै नाचूंगा।

एक भाईने पूछा है कि 'मै क्यो कहता हू कि मै हिंदू हूं, इसलिए मुसलमान हू ?' यह तो साफ बात है। यह मैंने गीतासे सीखा है। गीतामे बताया है :

यो मा पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याह न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ।।

यानी जो मुझे हर जगह देखता है, उसका मै नाश नही करता और वह मेरा नाश नही करता। गोया कुरानमे, जेंदावस्तामे, बाइबलमे, सबमे राम है और ईसाई, पारसी, सिख, मुसलमान जिस गॉडको, जिस हुरमसको और जिस खुदाको भजते है वह ईश्वर ही है और मै इस धर्मका माननेवाला सच्चा हिंदू हू, इसीलिए मै मुसलमान हू और ईसाई भी हू। यह सिर्फ दिमागकी या कहनेकी बात नही है। यह हकीकत है। ईशोपनिषद्‌मे भी ऐसा ही लिखा है कि 'मै सब चीजमे हू और सारा मुझमे ही है।' और फिर लिखा है कि 'वह दौडता भी है, वह स्थिर भी है।' ईश्वरके बारेमे इस प्रकार कई तरहकी बाते गीता-उपनिषद्‌मे कही गई हैं।

दूसरे पत्रमे कहा है कि 'अगर आप अपनेको खिदमतगार कहते है और राम और रहीम एक ही है तो दोमेसे एकको क्यो नही चुन लेते ? इस बातका खुलासा दीजिए।' मै खिदमतगार हू, इसलिए यह खुलासा देता हू। विष्णुके सहस्र नाम है। पर ईश्वरके केवल हजार ही नाम नही है, एक लाख भी है। मै तो कहता हू कि ईश्वरके चालीस करोड नाम है। इसलिए क्या वजह है कि मै केवल राम ही कहू या रहीम ही कहू ? और फिर किसीने पूछा है, क्या मै मुसलमानोकी खुशामदके लिए ऐसा कहता हू ?

तो मेरा उत्तर है—नही। मैने कोई सोच-समझकर प्रार्थना नही बनाई है। अब्बास तैयबजीकी लड़की रेहाना, जो पक्की मुसलमान भी है और हिंदू भी है, उसने मुझसे कहा, 'ओज अबिल्ला' सिखा दू ? मैने कहा, ठीक है, सिखा दे, चाहे तो मुझे मुसलमान भी बना दे। तो वह बोली, नही, आप मेरे पिता है, मै आपकी लड़की हू। आप अच्छे हिंदू है, आपको मुसलमान बनानेकी कोई जरूरत नही। पर उसने मुझे यह 'ओज

अविल्दा' सिखा दिया और वह नवमे चल रहा है। उसी तरह मेरे उपवासके बाद डा० गिल्डरने एक पारसी मत्र सिखा दिया। वह भी चल रहा है। मैं तो राम-नामका भूखा हूं। उसे हजार तरीकेसे कहूंगा और कोई मजबूर करने आयगे कि फला नाम लो, फला मत लो तो एक भी नाम न लूंगा।"

(इसके बाद गाधीजीने कुछ लिखित प्रश्नोके उत्तर दिए।)

प्रश्न—आपने कहा, जिनमे मरनेकी ताकत नही है और मरना नही चाहते वे हिजरत करें। तो वे कहा जाय ?

उत्तर—वे मुट्ठीभर आदमी इतने लबे-चौडे भारत देशमे कही भी समा सकते है। अव्वल तो पजाबमें ही वे अपने लिए जगह कर सकते है, पर यदि नही कर सकते तो इतना बडा देश पड़ा है, वे जगह ढूढ ले। मुझे यह बतानेकी आवश्यकता नही है। इतना ध्यान रखें कि किसीसे भिक्षा न मागे, हाथ न फैलावे, बल्कि अपने-अपने बूतेपर सब कुछ करे।

(अग्रेजीमें लिखकर भेजे कुछ पत्रोपर व्यग्य करते हुए गाधीजीने यह भी कहा कि मैं जो अग्रेजी ठीक-ठीक नही जानता और जिसकी 'ऊजड गावमे अरड पेड' जैसी हालत है, उसे ही इसमे गलती मिलती है तो अग्रेजीदा कितनी गलती बता देंगे ? अग्रेजी व टाइपराइटरकी क्या जरूरत थी ?)

प्रश्न—अपनी प्रार्थनामें पुलिस बुलाते हुए आपको शरम नही आती ?

उत्तर—शरम तो बहुत आती है और जब-जब पुलिसने प्रार्थनामे अमन करनेकी कोशिश की है तब-तब मैंने प्रार्थना रोकी है। फिर मैंने सरदार पटेलसे याचना तो नही की कि आप मेरी रक्षाके लिए पुलिस भेज दे। इसपर भी पुलिस आती है तो मुमकिन है वह भी राम नाम व प्रार्थनामे दो-एक भली बाते सीख जायगी। उसका द्वेष क्यो ?

प्रश्न—हिंदू-धर्ममें आप अहिंसा कहासे ले आए ? अहिंसासे तो आप हिंदुओंको बुजदिल बना रहे हैं।

उत्तर—मेरी वजहसे कोई बुजदिल हुआ है, ऐसा मेरे ख्वाबमे भी नही है। वह छोटी लडकी आभा जो पहले कुछ डरती थी वह भी मेरे

पास रहकर बहादुर बन गई है । मैंने उसे कह दिया, तेरा पति तेरे साथ नहीं जायगा। वह अब अकेली ही खतरेकी सब जगहपर चली जाती है। तो क्या वह बुजदिल है ? वह निहत्थी जाती है । यह भी नही कहती कि मुझे खजर दिलवाओ तब जाऊगी। उस बेचारीके पास तो सब्जी काटनेकी छुरी भी मुश्किलसे रहती है । मैंने यह कभी नही कहा कि आप लोग खतरेकी सीटी सुनते ही सब भाग निकले । हमे मरना है, और मारकर नही मरना है । अहिसा हिंदू-धर्मका असली सार है। आपकी गीताने अहिसा सिखाई है। मै तो कहता हू कि मुसलमान धर्मका सार भी अहिसा है और ईसाई धर्म भी अहिंसा सिखाता है ।

: ६ :

६ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

सुचेतादेवीने आज जो भजन सुनाया है वह आप लोगोने पिछली बार, जब मै यहा था तब भी, सुना था। उसके शब्द जितने सुदर है उतने ही मीठे स्वरसे वह गाया गया है। आज भी जब मै उसे सुन रहा था मुझे वह वैसा ही ताजा और नया-सा लग रहा था। क्या ही अच्छा हो, यदि हमारा देश ऐसा ही बन जाय और हम कह सके कि यहापर शोक नही है, आह नही है। लेकिन हम जानते है कि आज देश ऐसा नही है । एक-एक करके हरेक आदमी अगर इस भजनके मुताबिक अच्छा बन जाय तो देश भी ऐसा हो जायगा । समुद्रकी क्या ताकत है ? एक-एक बूदसे ही तो वह बना है। इसी तरह देश भी एक-एक आदमीसे बनता है। आज हम लोग ऐसे नही है कि इस भजनको सच्चे दिलसे गा सके । ऐसा देश ढूढने चले तो वह कौन-सा होगा ? वह देश है हमारा शरीर और उस देशका निवासी है हमारे शरीरमे रहनेवाला आत्मा। आत्माके जो गुण होने चाहिए वह इस भजनमे बताए है। हमे चाहिए कि उन गुणोको अपनाए। अगर हम लोग ऐसे बन जाय तो फिर हमारे देशका

नाम चाहे हिंदुस्तान रहे या पाकिस्तान, वह सुंदर ही होगा, भले ही फिर उसमें ११ प्रांत हों या २१, या चाहे जितने। सबको ऐसा होना चाहिए कि हर कोई आराममें रह सके, कोई मुफलिस न रहे, न कोई किसीपर आक्रमण कर सके।

अपने देशको ऐसा बनानेके लिए आपको जिंदा रहना है, हम सबको जिंदा रहना है, मुझको भी जिंदा रहना है। लेकिन आज जो हो रहा है वह उससे उलटा ही हो रहा है। मेरे पास जो ढेरों चिट्ठिया आ रही हैं उनमें गालिया भी रहती हैं और स्तुति भी होती है। हमें चाहिए कि जो गालिया मिलती हैं और जो स्तुति होती है उन सभीको कृष्णार्पण करके हम बरी हो जाय।

मैं समझता हूं कि इन चिट्ठियोंके लिखनेवालोंमेंसे कुछ लोग इस मजमेमें होंगे ही। मुझे यह अच्छा लगता है कि वे मेरी बात सुनते हैं, क्योंकि सुननेसे वे समझेंगे और मुल्कको फायदा पहुचायगे।

हम अभी तो आजादी पा रहे हैं। अभी हमने वह पाई नहीं है। अगर हम ठीक-ठीक काम करें तो आज ही वाइसराय चले जाय या सब कारबार हमें सौंपकर वह बैठे रहें अथवा हम जो काम बतावें वह अपने इतमीनानके लिए करते रहें। वह खाली बैठनेवाले आदमी नहीं हैं। बादशाही खानदानके हैं, बड़े चतुर हैं। उनकी बीबी भी चतुर है। उनसे हम काम ले सकते हैं। लेकिन आज जो हालत है उसमें नहीं ले सकते। वहां तो वह चौदह महीने तक बैठे रहेंगे और हिंदुस्तानको प्रमाणपत्र देंगे कि वह कैसा अच्छा या बुरा है। हिंदुस्तानको ही देखनेके लिए एशियाई कान्फ्रेंसमें एशियाके लोग आए थे, लेकिन वे यह खयाल लेकर गए कि यहां हिंदू-मुसलमान लड़ रहे हैं। वे क्यों लड़ रहे हैं, यह किसीको पता नहीं। कम-से-कम मुझे तो पता नहीं है कि क्यों लड़ रहे हैं।

क्या पाकिस्तानके लिए लड़ रहे हैं? वे कहते हैं कि हम पाकिस्तान लेकर रहेंगे। क्या वे हमें मजबूर करके लेंगे? जबरदस्तीसे तो [illegible] एक इंच जमीन भी नहीं ले सकते। समझा-बुझाकर तो सारा हिंदुस्तान भले ही ले लें। मुझे तो यह अच्छा लगेगा

कि हमारे आजाद हिंदुस्तानके पहले प्रेसीडेंट जिन्ना साहब बने और वह अपनी केबिनेट बनावे । लेकिन इसमे एक ही शर्त होगी कि वह खुदाको हाजिर-नाजिर समझे यानी हिंदू, मुसलमान, पारसी सबको एक समझे ।

चिट्ठिया भेजनेवालोमे एक आदमी लिखता है, 'तुम्हे 'मुहम्मद गाधी' क्यो न कहा जाय ?' और फिर बडी खूबसूरत गालिया दी है, जिन्हे यहा दुहरानेकी जरूरत नही है । गाली देनेवालेको जवाब न दिया जाय तो वह एक, दो, तीन या अधिक बार गाली देकर थक जायगा । थककर या तो चुप हो जायगा, या और गुस्सेमे आकर मार डालेगा । पर मारनेके बाद फिर क्या होगा ? हमारा कुछ नही बिगडेगा । कोई कहे कि फिर हमारे बीबी-बच्चोकी रखवाली कौन करेगा ? तो उसे समझना चाहिए कि उनकी रखवाली करनेवाला तो ईश्वर बैठा है । फिर हम परेशान क्यो हो ?

बगाल-विभाजनके आदोलनको शात करनेका सबसे अच्छा तरीका उस बारेमे हिंदुओके साथ दलील करके उन्हे समझाना होगा और अभीसे उन्हे यह बताना होगा कि वह उनसे कोई बात जबरदस्ती नही कराना चाहते । अपने सर्वथा निष्पक्ष व्यवहारसे यह सिद्ध करना होगा कि पाकिस्तानमे हिंदुओको निष्पक्षता और न्यायके बारेमे किसी तरहकी आशका नही रखनी चाहिए । मुसलमानोके साथ केवल मुसलमान होनेके कारण ही पक्षपात न किया जायगा और सरकारी नौकरीके लिए आदमी चुनते समय केवल उसकी योग्यताका ही ध्यान रखा जायगा । अगर सुहरावर्दी साहब ऐसा करे तो समूचा बगाल एक आजाद सूबा बन जाय । फिर उसके दो या चार टुकडे करनेकी बात न होगी । अल्प मतवालोकी खुशामद करके उनके दिलको इस तरह जीत लेना चाहिए—हिंदुओके साथ उन्हे इस तरह पेश आना चाहिए—कि वे यही कहे कि 'हमारे प्रधान तो सुहरावर्दी ही होगे । हमारा भरोसा उन्हीपर है ।'

लेकिन अभी वैसा नही है । मेरे पास आज ही सुशीलाका, जो पहले राजकोटमे स्कूल चलाती थी, खत आया है । उसने वहाके हालात

वताए है कि वह जहा काम करती है वहा इतना खौफ रहा कि कोई हिंदू औरत अकेली तो क्या, मिलकर भी वहा जा नही सकती थी। जव वह खुद चली गई तव वे औरते उसके पीछे-पीछे वहापर जा सकी।

मै यह कहे विना नही रह सकता कि अगर हिंदुस्तानियोमे सच्ची वहादुरी हो तो पाकिस्तान लेनेके लिए आज जो जोर-जवरदस्ती हो रही है वह अपने मकसदमे नाकाम हुए विना नही रह सकती। मै हिम्मतसे कहूगा कि जवरदस्ती और डर दिखलाकर पाकिस्तान लेनेकी वात खाली सपना देखना है।

: १० :

१० अप्रैल १९४७

भाइयो और वहनो,

भजन[1] जितना मीठा है, उसका अर्थ भी वैसा ही वुलद है और आज आप लोगोपर और हम सवपर वह लागू होता है। हमपर कितनी ही मुसीवतें और कठिनाइया क्यो न आए हमे उनसे निराश नही होना चाहिए, घवराना नही चाहिए, यह इस सारे भजनका निचोड है। जो दिया जलाया जाता है वह गुल हो जाता है और अधेरा छा जाता है तो भी हमे उसे सहन करना है। जो दिया वुझ गया, जो जिंदगी चली गई, वह लौटकर तो आनेवाली है ही नही। हिंदू-मुसलमान जानवर वन जाते है पर उन्हे याद रखना चाहिए कि वे झुकी हुई कमरवाले जानवर नही है, सीधी कमरवाले मनुष्य है। इसलिए घोर विपत्तिमे भी उन्हे धर्म और श्रद्धा नही छोडनी चाहिए।

आज भी मेरे पास काफी खत आए है। एक सज्जनने लिखा है कि

---

[1] यदि तोर डाक सुने केउना आसे तवे एकला चलोरे,
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलोरे।

हिंदू-मुसलमान दोनो हैवान बने हुए है । दोनो लडते है । क्या इसमेसे कोई रास्ता नही है ? रास्ता तो है । दोमेसे एक जानवर न बने यही इसमेसे निकलनेका सीधा रास्ता है । पर पत्र-लेखकने एक बात और कही है कि 'तीसरे लोग क्या करते है, यह बडा सवाल है । वाइसराय साहब हिंदुस्तानकी सत्ता हिदुस्तानियोको सौपने आए है । माना कि वह सच्चे दिलसे आए है, अंग्रेजोने अपने बादशाहके कटुबके बडे योद्धाको यहा फैली हुई अपनी सत्ताको समेट लेनेके लिए ही भेजा है और उनको यहा भेजनेवाले ब्रिटिश मिनिस्टर लोग भी दिलके सच्चे है । फिर भी सवाल यह है कि जो अंग्रेज व्यापारी इतने बरसोसे हमे चूस-चूसकर खाते रहे है वे ठीक तरहसे रहेगे या अपनी कारगुजारियोको चलता रखेगे ? आजतक हमारा कुल व्यापार उनके हाथोमे रहा है। अब आगे वे क्या करेगे ?' यह प्रश्न सही पूछा गया है । हिंदू-मुसलमान मिलकर उन्हे रखना चाहे तब वे दोस्तकी तरह रहेगे या उनके न चाहनेपर भी जबरदस्ती हमपर वे अंग्रेज व्यापारी लदे रहेगे । दूसरी तरफ सिविल सर्विसका जोर है । उसने तो हम लोगोपर इतना काबू जमाया है कि हम यह जान नही पाते कि हमे कभी आजादी मिल भी सकेगी या नही । यह तो ईश्वरकी दया है कि हमारे हाथ दो-एक ऐसी तरकीबे आ गई और हालात ऐसे बन गए कि अंग्रेज जानेको कहते है । लेकिन अभी तो सिविल सर्विस भी है, उनके सोल्जर (योद्धा) भी है । उनका खाना-दाना यहा बना रहेगा तो वे क्यो जायगे ?

ऐसा तो न होगा कि वाइसराय साहबकी दी हुई चीज यूही वापस छीन ली जाय ? ऐसी शकापर मुझे यही कहना है कि अभी जो हालत है उसमे हम कुछ भी नही कह सकते । अभी स्वराज्यका अरुणोदय ही हुआ है, सूरज चमका नही है । हमे पता नही कि उस सूरजमे गरमी कितनी है । इस समय तो हम थरथर काप रहे है । हमारे दिलोमे सदेह भरा हुआ है । सूरज चमकेगा तभी हमे उसकी सही गरमीका पता चलेगा ।

इस बारेमे मै आप लोगोसे तो कुछ नही कहना चाहता; लेकिन उन अंग्रेज लोगोसे, व्यापारी, सिविलियन और सोल्जर सभी लोगोसे

कहना चाहता हू कि अगर आपको अंग्रेजोका नाम कायम रखना है तो आप यहासे अब रवाना हो। आजतक आप हमारे कधोपर बैठे रहे, यह अच्छा नही किया, लेकिन अब आप उतरनेको तैयार हो जाय तो अच्छा होगा।

उन लोगोमे यही काम करानेके लिए माउटबेटन साहब यहा आ गए है और वह अकेले नही है। इग्लैडवालोकी सारी ताकत अपने साथ लेकर वह आए है। ऐसा करनेमे उन्हे कुछ नुकसान भी उठाना पडेगा, पर इसके लिए वह तैयार है। इसका कुछ सबूत भी उन्होने दिया है। हमने कहा कि सिविल सर्विस जानी चाहिए तो वह सिविल सर्विस जा रही है और उन्हीके सिरपर जा रही है। यानी उनको पेंशन आदि ब्रिटेन ही देगा।

इधर माउटबेटन साहबने गवर्नरोको और उनके सब सेक्रेटरियोको भी बुलाया है—यही बात समझानेके लिए बुलाया गया है। उधर चर्चिल और उनकी पार्टी भी मोर्चा लिए बिना न मानेगी। इतनेपर भी वाइसराय साहबका कहना है कि हम ब्रिटिश प्रजाके नामसे यहा आए है और उसीकी रायसे अब हमे यहासे लौट जाना है। वाइसराय साहबके इस काममे गवर्नरोको, अंग्रेज व्यापारियोको और सिविल सर्विसवालोको सहयोग देना चाहिए। उन सबको यहासे चला जाना चाहिए। यहा रहना चाहे, वे खुशीसे रहे। पर आजतक जो किया उससे उलटा करे, यानी हमें चूसनेके बदले हमे फूलने-फलनेमे मदद दे। ऐसा करेगे तो उनकी नामवरी हो जायगी।

लेकिन सब जगहसे बात आ रही है कि जितना दगा-फसाद हो गया है उसमें उनकी शरारत भरी थी। इस बातकी माउटबेटन साहबको भी बू आ रही है। उनके दिलमे शक हो गया है कि लोगोकी यह बात कही सही न निकल जाय। अब यहाके अंग्रेजोको यह देखना है कि हिंदू-मुसलमान जो बात मानते थे कि इन दगोमे अंग्रेजोका ही हाथ है वह सही साबित न हो। अगर वह बात सही है तो इतिहास किसीका लिहाज रखनेवाला नही है। भावी इतिहास कहेगा कि वे लुटेरे लोग थे।

परतु वे कह सकते है कि जो हुआ सो हुआ । अब हमने नया पन्ना खोल दिया है । माउटबेटन साहब तो अच्छा करना चाहते है ही, पर उनकी कामयाबी अग्रेज व्यापारी, अग्रेज सोल्जर और अग्रेज सिविलियनके हाथोमे ही है । उन सभीकी नेकनीयत न होगी तो वाइसरायका किया-कराया खतम हो जानेवाला है । इसलिए हमको प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर उन लोगोको सुमति दे । हिंदुस्तान छोड जानेमे उन्हे चाहे कितनी ही परेशानी क्यो न हो उनके सामने अपने भविष्यके बारेमे अधेरा ही क्यो न छाया हुआ हो, फिर भी मै उनको कहना चाहता हू कि उनकी उन्नति इसीमे है कि वे यहासे जानेकी बात पक्की कर ले ।

इसके बाद हमारा झगडा निपटानेमे वे हमे मदद दे सकते है । ऐसा करनेमे वे सफल भी हो जायगे । फिर उनको बडा यश मिलेगा । मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है कि वे यहासे दुश्मनकी तरह न जाकर दोस्तकी तरह भलाईके साथ जाय और हमारे दिलोमे उनकी दोस्ती बनी रहे ।

: ११ :

११ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

आपको खबर देते हुए मुझे सकोच होता है कि आज मैने एकाएक बिहार जानेका निश्चय कर लिया है। आप जानते है कि मेरा क्षेत्र नोआखाली और बिहार है । इनको मैने चुना है, ऐसा नही है। नोआखाली तो मै दैवयोगसे यानी ईश्वरकी पुकार सुनकर चला गया। उसी सिलसिलेमे मेरा बिहार जाना भी हुआ । नोआखालीमे मै जितने दिन रहा, उसमे मैने काफी काम कर लिया । वहा जो हिंदू आतकसे विह्वल हो गए थे उन्हे कुछ शाति मिली। पर जिस तरह वहा हिंदुओके लिए काम हुआ उसी तरह मुसलमानोके लिए भी हुआ । आज उसकी

कीमत न सही, पर आगे चलकर जब हवा बदलेगी तब वहा किए गए कामका मूल्य देशकी समझमे आएगा । वैसे तो आज भी वहा की गई कोशिशोका फायदा नजर आता है । आज भी वहा नेक मुसलमान अपने हिंदू पडोसीको फिरसे भाई समझने लगे है, पर अभी ऐसे लोगोकी तादाद इतनी नही बढी है जितनी बढनी चाहिए। फिर भी वहा जो काम हो रहा है उससे भविष्यमे बहुत लाभ होनेवाला है, इसमे शक नही।

इस समय मेरा काम उतना नोआखालीमे नही है जितना बिहारमे है । बिहारसे एक मुसलमान भाईका तार आया है कि आप लबे अरसे तक बिहारसे बाहर रहे, अब आपको यहा लौट आना चाहिए । आप आएगे तभी हमारे दिलको तसल्ली मिलेगी । यह ठीक है कि मैने बिहार जानेका निश्चय इस तारके कारण नही किया है, पर अब मेरा दिल वही लगा हुआ है, क्योकि मैने तो वहा कहा है कि करूगा या मरूगा ।

करूगासे मतलब यह है कि बिहारके हिंदू-मुसलमान साथ मिलकर भाई-भाईकी तरह रहने लगे । बिहारके बाहर चाहे सब जगह अगार ही क्यो न बरस रहे हो तब भी वहा हिदुओ और मुसलमानोको मिलकर अमनके साथ रहना है । बिहारमे कई देहात मौजूद है जहा बाहरकी आगका असर नही पहुचा है । बिहारमे ही नही, ऐसे नोआखालीमे भी है और पजाबमे जहा इतना दगा मच गया है वहा भी ऐसे गाव पडे है जहा सब मिलकर शातिसे और एक-दूसरेके भरोसेपर रह रहे है । ऐसे देहात सारे हिदुस्तानमे मिल जायगे ।

आप पूछ सकते है कि कल-परसो तो तुमने पजाब जानेकी बात की थी, उसे एक ओर रखकर अब बिहार क्यो जाना चाहते हो ? और वाइसरायसे बात करनेके लिए जो इधर आए थे सो वह बात क्या पूरी हो गई ? अगर वाइसरायसे बाते हो भी गई है तो आखिर उसका क्या अजाम आता है, यह देखनेके लिए तो रुक जाओ । पर मै अजामके लिए क्यो रुकू ? अजाम लाना मेरे हाथकी बात तो है नही । इन बातोका निर्णय करनेवाले दूसरे है । मुझसे वाइसरायकी जो बाते होनी थी वे हो चुकी। मैने कहा था कि मै यहा दिल्लीमे दो आदमियोका कैदी हू, एक वाइसरायका और दूसरे पडित जवाहरलाल नेहरूका।

मेरे पास राजेद्र बाबू आए थे। उनसे मैंने बातचीत कर ली है और नेहरूजीके पास भी सदेशा भेज दिया है। सबने मिलकर मुझे इजाजत दे दी तब मैंने बिहार जानेका निश्चय किया ।

विहार जाना मेरा स्वधर्म है। मै गीताका सेवक हू। गीता सिखाती है कि स्वधर्मका पालन करो और अपने ही क्षेत्रमे बने रहो। गीताने साफ-साफ कहा है कि स्वधर्ममे और स्वक्षेत्रमे मरना अच्छा है, परधर्ममे जाना भयावह है। इसीलिए दिल्ली-जैसे परक्षेत्रमे रहना भयावह हो जाता है ।

अगर पजाब जानेके लिए ईश्वरकी आवाज आती तो मै जरूर ही चला जाता। आप पूछेगे कि क्या ईश्वर तुमसे कहनेको आता है ? वैसा कोई ईश्वर मेरे पास नही आता। लेकिन भीतरसे आवाज तो आती है ही। जो कोई ईश्वरका भक्त बन जाता है वह अपने भीतर बैठकर ईश्वरकी आवाज सुन लेता है। पजाबके बारेमे मुझे वैसी आवाज नही सुनाई दी।

पर इतना मै कहूगा कि पजाब जानेकी बातपर मैंने काफी गौर किया और इस नतीजेपर आया कि आज वहा जानेसे कोई खास मतलब पूरा होनेवाला नही है, क्योकि वहा हमारा राज नही है। अगर वहा लीगका भी राज होता तो वह हमारा ही राज कहा जाता, क्योकि अगर लीगवाले आते है तो वे वोटके जरिये आते है और तब वह हमारा राज हो जाता है। लोगोके वोटसे जो राज आयगा वह लोगोका ही राज कहलायगा। वह राज सुख देनेवाला हो या दु:खदायी हो यह देखना हमारा काम है।

फर्ज कीजिए कि हमारी कमनसीबीसे हमारे देशमे एक हिंदू राज्य हो गया और दूसरा मुसलमानोका पाकिस्तान बन गया। अगर दोनो ही ऐसे बन जाय कि वहा दूसरी कौमवाले सुख-शातिसे न रह सके, तो वह हिंदू राज्य नरक हो जायगा और वैसा पाकिस्तान नापाकिस्तान हो जायगा। सच्चा पाकिस्तान वही है, जहापर अदल इन्साफ—सही-सही न्याय—हो, जहा मारपीटके सहारे कुछ भी करवानेकी बात न हो और जो कुछ करना-धरना है या पाना है वह दूसरोके हृदयपर असर डालकर ही करने-करवानेकी बात है। परतु आज हमने अपना यह आदर्श भुला दिया है।

पर मैं पंजाब जाऊं या न जाऊं, वहांका काम तो करूंगा ही। जो वहां जाकर मुझे कहना है वह यहां पंजाबसे बाहर रहकर भी मैं सुना सकता हूं। और मेरे सिखानेकी तो एक ही बात है जो मैं दोहराते हुए थकनेवाला नहीं हूं। वह बात यह है कि एक-एक हिंदू व एक-एक सिख यह निश्चय कर ले कि वह मर जायगा पर मारेगा नहीं। मास्टर तारासिंह कहते हैं, 'हम मारेंगे।' उनका यह कहना मेरी समझसे ठीक नहीं है। उन्हें तो यही कहना चाहिए कि हम जो चाहते हैं वह आप नहीं देंगे तो हम चाहे मुट्ठीभर आदमी ही क्यों न हों, मर मिटेंगे, पर लेकर ही रहेंगे। मारनेकी बात उन्हें नहीं करनी चाहिए। इतनी बात सुनानेके लिए मुझे पंजाबतक जानेकी जरूरत नहीं है।

बिहारको भी मैं बाहरसे सुना सकता था, पर मैं अनुभव करता हूं कि वहां कुछ लोगोंको समझाना जरूरी है। नोआखालीमें भी मैं इसी वजहसे घूमा। लोगोंने कहा, 'तुम्हें मार डालेंगे।' पर मैं कहता हूं आप सब-के-सब रक्षा करेंगे तो भी मुझे मौतसे बचा नहीं सकेंगे। डाक्टर हकीम भी बैठे रह जायेंगे। आज जो भजन गाया गया उसमें हकीम लुकमानने भी हाथ मलकर निराश हो कहा कि जिंदगीकी बहार चंद रोजकी ही है। तो फिर हम मौतसे क्यों भागें ? हमें बहादुरीके साथ मरना चाहिए। इस तरह हमें चलना चाहिए कि हमपर हाथ चलानेवालोंपर दुनिया लानत बरसावे। सारी दुनिया उन लोगोंसे कहे कि आप जालिम होकर पाकिस्तान लेना चाहते हैं सो कैसे ले सकते हैं ?

सत्याग्रहका रहस्य ही यह है कि सत्याग्रही समूची दुनियाका मत अपनी ओर कर लेता है। मैंने शुरूसे कहा था कि हमें अमेरिका या इंग्लैंडमें प्रचारक लोगोंके भेजनेकी आवश्यकता नहीं है, यहीं बैठे-बैठे हमारी सचाई चमकेगी और सारी दुनिया देखने आयगी। दक्षिण अफ्रीकामें भी मैंने इसी प्रकार दुनियाकी हमदर्दी कमाई थी और अंग्रेज तथा अमेरिकनों तकने मेरी बातको सही बताया था।

: १२ :

१२ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

कलका दिन राष्ट्रीय सप्ताहका आखरी दिन है। छ अप्रैलका दिन जाग्रतिका दिन था। उस दिन हमने देखा कि सारा हिंदुस्तान एक हो गया था। शहर तो एक होते ही है, क्योकि एकताके बिना उनका व्यापार नही चल सकता, पर हिंदुस्तानके सभी देहात एक है, यह अनुभव हमे उसी दिन हुआ।

देहातका एक होना बहुत बडी बात है। छ. अप्रैलके दिन लोगोसे मैंने उपवास रखनेको कहा और सारे देशने वह बात मान ली। मै कौन चीज था ? पर वह ईश्वरकी पुकार थी। तभी मद्रासमे लेकर पंजाबतक, और पजाबसे लेकर आसामके डिब्रूगढतक सभी देहात हिल उठे। हिंदुस्तान उस रोज जाग उठा। कलकी १३ अप्रैलकी तारीख हिंदुस्तानके कत्लकी तारीख है। उस दिन हिंदू, मुसलमान, सिख सभी एक साथ जलियावाला बागमे कत्ल हुए। वह कोई बगीचा नही था। चारो ओर दीवारोसे घिरा हुआ एक अहाता था। उस घेरेमेसे भागनेके लिए गुंजाइश न थी। एक छोटा-सा रास्ता था। वहापर निहत्थे लोगोको कत्ल किया गया और कम-से-कम दो हजार—शायद पाच हजार—आदमी मारे गए। उस जगह हिंदू-मुसलमान-सिख सबके खून आपसमे मिल गए। कोई नही बता सका कि वहापर कितनी मात्रामे किसका खून बहा था। शीशीमे भरकर अगर किसीका खून भेजा जाय तो बडे-बडे डाक्टर भी उसे जाचकर नही बता सकते कि वह खून हिंदूका है, सिखका है या मुसलमानका। मतलब यह कि जलियावाला बागमे सभी हिंदुस्तानी एक साथ शहीद हुए।

आप यह न कहे कि वे वहा मरनेके इरादेसे तो गए नही थे फिर उन्हे शहीद क्यो कहा जाय ? सच है कि वे मरनेके लिए नही गए थे, पर वे सब निर्दोष थे। बेगुनाह लोगोका मारा जाना बडी भारी बात होती है। वह भुला देनेकी बात नही है। हमारा काम है कि हम उन्हे

याद रखें। वह काड इतना भीषण था कि उससे सारा देश बेचैन हो गया। उसीको देखकर गुरुदेव---रवीन्द्रनाथ ठाकुर---ने सरकारको पत्र लिखा और वह हमारे साथ आ गए। इसलिए कल आपको तेरह अप्रैलका दिन मनाना है। कल मै यहा आपके साथ शरीक नही रहूगा। यह मुझे अच्छा नही लगता, पर अब मैने बिहार जानेका निश्चय कर लिया है।

यह सवाल हो सकता है कि एक दिनके लिए क्यो न रुक जाऊ ? लेकिन मै बिहार भी अपनी मौज-शौकके लिए तो नही जा रहा हू। वहा जाकर भी हिंदुस्तानकी, जो बन पडेगी, सेवा करूगा। उपवास तो रेलगाडीमे भी हो सकेगा। इसलिए मै आज जाऊगा। आप कल उपवास करे और तेरह अप्रैल उसी तरह मनावे जिस तरह पिछले इतवारको ६ अप्रैलका दिन आपने मनाया था।

अगर आप लोगोने इन सात दिनोकी सारी बाते ठीक तरह समझ-ली है तो आप जितने आदमी यहा आते रहे है इतने ही कल निश्चय कर ले कि हम मर जायगे, पर मारेगे नही। ऐसा हम क्यो कहे कि मारकर मरेगे ? ऐसा भी क्यो कहे कि हमारे हाथमे तलवार या बदूक होगी तभी हममे मरनेकी हिम्मत आयगी। बदूकके सहारे मै नही डरूगा और उसके बिना डर जाऊगा, ऐसा कहनेमे हमारी कौन-सी शोभा है ? हम लाठी, तलवार, बदूक सब छोडे और ईश्वरको अपने साथ लेकर चल दे। फिर सब जगह निडर होकर घूमे और यह ऐलान कर दे कि हम हिंदू-मुसलमान कभी भी आपसमे नही लडेगे।

लेकिन आज तो हम बुरी तरहसे लड रहे है। विदेशी लोग जो मिलने आते है उनके सामने मै शरमिंदा हो जाता हू। फिर भी उन्हे तो मै जवाव दे देता हू कि दीवाने वननेवाले चद लोग ही है, चालीस-के-चालीस करोड दीवाने नही वने है और मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन वह आयगा जव हिंदुस्तानके सव लोग यह निश्चय कर लेगे कि हम अपनी वात वुद्धिके वलसे हासिल करेगे, तलवारके वलसे नही। हिंदुस्तान अगर सच्ची आजादी चाहता है तो सभीको यह सवक सीख लेना चाहिए।

दूसरी बात मुझे यह बतानी है कि कोई कितना ही चीखे, हमारे अखबार दुरुस्त होते ही नही है । आज एक अखबारने तो यहातक लिख दिया है कि गाधी इसलिए जा रहा है कि वर्किग कमेटीके साथ उसका झगडा हो गया है और वर्किग कमेटीके साथ अब उसकी बनती नही है । और यह किसी छोटे-मोटे मामूली अखबारने नही लिखा है । वह बडा प्रतिष्ठित और काफी बिकनेवाला अखबार है । इसे देखकर मुझे शरम आती है कि हमारे देशके अखबार कितने गिर गए है ।

अपने जानेका कारण मैने यहा कल दिया था और वह शुद्ध सत्य ही बताया था। फिर भी अखबारवालेने जो यह लिखा है वह बिलकुल निकम्मी बात है। मै जा तो रहा हू, पर हममे झगडा थोडे ही हो गया है ! हम तो एक-दूसरेसे पूरी मुहब्बत करते है। अभी मौलाना साहब आए थे, राजाजी थे, सरदार थे, नेहरूजी थे और कृपलानी भी थे। सभी लोग आपसमें बडे प्रेमसे बातें कर रहे थे । सिर्फ राजेंद्र बाबू यहा नही आए थे, तो क्या उनका मुझसे झगडा हो गया था इसलिए वह नही आए ? कैसी वाहियात बातें है ये सब ! हा, ऐसा कह सकते है कि हमारे बीच मतभेद है। पर मतभेद कब नही थे ? मतभेद तो सदा रहे है। बाप-बेटेके बीच भी मतभेद रहता है, पर यहा तो अखबारवालेका मतभेदपर इशारा नही है । वह तो साफ लिखता है कि हम आपसमे झगड पडे है !

अगर झगडा होनेके कारण मै जाता तो वाइसरायसे जानेकी इजाजत लेने क्यो जाता ? नेहरूजी और कृपलानीजीकी इजाजत क्यो मागता ? यो ही बिना कहे-सुने न चला जाता !

इतना ही नही, सरदारने तो अभी मुझसे पूछा कि लौटकर कब आओगे ? तो मैने उत्तर दिया, "जब आप हुक्म देगे।" झगडेकी बात होती तो क्या मै ऐसी बात कहता ? मै जब बागी बन जाता हू, बडा पक्का बन सकता हू और बडा ही खूबसूरत बागी बनता हू । मै किसीकी सुनूगा नहीं तो किसीको मारूगा भी नही, न किसीको सताऊगा ।

लेकिन लोगोको इस तरह घबराहटमे डालकर अपने अखबारकी बिक्री बढाना, यह उनका पेशा है । पापी पेटको भरनेके लिए ऐसा करना बडी बुरी बात है। मै भी पुराना अखबारनवीस हू और मैने उस अफ्रीका-

४

के जगलमे अच्छी-खासी अखबारनवीसी की है, जहापर हिंदुस्तानियोको कोई पूछनेवाला भी न था। अगर ये लोग अपना पेट पालनेके लिए अखबारके पन्ने भरते है और उससे हिंदुस्तानका विगाड होता है तो उन्हें चाहिए कि वे अखबारका काम छोड दे और कोई दूसरा काम गुजारेके लिए ढूढ ले । अखबारोको अग्रेजीमे राज्यकी चौथी शक्ति बताया गया है । इनसे बहुत-सी बातें विगाडी या बनाई जा सकती है। यदि अखबार दुरुस्त नही रहेगे तो फिर हिंदुस्तानकी आजादी किस कामकी रहेगी ?

हम लोग भी ऐसे हो गए है कि सवेरे उठते ही कुरानके बिना हमे चलेगा, गीता-रामायणके बिना भी चल जाएगा, लेकिन अखबारके बिना हमारा काम बिलकुल ही नही चलेगा । बडे-बडे लोग भी अखबारके गुलाम बन गए है। अगर सवेरे अखबार न मिला तो 'हाय-तोबा' मच जाती है । अखबारवालोने भी हवाई बाते कर-करके सबको गुलाम बना डाला है, लेकिन वे सारी बाते करीब-करीब निकम्मी ही होती है।

मैं कहूगा कि ऐसे निकम्मे अखबारोको आप फेक दे । कुछ खबर सुननी हो तो दूसरोसे जान-पूछ ले । अखबार न पढेगे तो आपका कोई नुकसान होनेवाला नही है । अगर पढना ही चाहे तो सोच-समझकर ऐसे अखवार चुन ले जो हिंदुस्तानकी सेवाके लिए चलाए जा रहे हो, जो हिंदू-मुसलमानोको मिल-जुलकर रहना सिखाते हो । फिर ऐसे अखबारवालोको भी इतनी धाधलीमे पडनेकी जरूरत नही रहेगी कि उन्हे रातभर जागते रहना पडे और दिनमे भी चैन न ले सके । और ऐसी वेबुनियाद खवरे छापनेकी दौड भी नही लगानी पडेगी ।

भले अखवारवालोको चाहिए कि अगर वे कुछ वात सुन ले कि गाधी-नेहरूके या कृपलानी और आजादके बीच झगडा हो गया है तो उसे छापनेसे पहले गाधीसे या नेहरूसे पूछ ले । अगर ऐसा वह पूछने आते तो हम उन्हे डाट वताकर कहते कि ऐसी बेकारकी वात क्यो करते हो ?

आज एक मुसलमान भाईने अच्छा पत्र भेजा है और एक हिंदूने भी वढिया वात लिख भेजी है । मुसलमान भाईने लिखा है कि सातवलेकरजी-ने ईशोपनिषद्के मत्रका जो अर्थ दिया है वह वडी वुलद चीज है । उसी

तरहका अर्थ 'अोज अबिल्ला' का भी है । दोनोमे कोई अतर नही है, कोई अरबी है तो कोई सस्कृत भाषाका है ।

हिंदू भाईने पूछा है कि आप कुरानको धर्मपुस्तक मानते है तो मुसलमान क्यो गीता और उपनिषद् आदिको धर्मपुस्तक नही मानते ? वे क्यों मस्जिदमे उन्हे नही पढते ?

उत्तर सीधा है । सच्चे हिंदूके नाते मै कुरानको धर्मग्रथ समझता हू, क्योकि कुरानमे खुदाकी तारीफ लिखी है । लेकिन यह कौन-सा न्याय है कि मै मुसलमानसे भी बलपूर्वक मनवाने जाऊ कि हमारे सस्कृत ग्रथों-को तुम भी धर्मग्रथ मानो ? यह तो कोई भलमनसाहत नही हुई ।

आशा है, हम फिर मिलेगे । जब जवाहरलाल, कृपलानीजी या वाइसराय बुलायगे तब आ जाऊगा । बिहारसे और नोआखालीसे भी मै आपका और पजाबका काम करता रहूगा । जिस लगनसे आप इतने दिन प्रार्थनामे आते रहे है, इसी लगनसे आप हरदम प्रार्थना करते रहे ।

: १३ :

१ मई १९४७[1]

भाइयो और बहनो ,

यहासे गए मुझे बीस ही दिन हुए है । जब मै गया था तभी मुझे शुबहा था कि शायद जल्दी लौटकर आना पडे । लेकिन मेरा स्थान बिहार और नोआखालीमे था और मै पंद्रह दिनके लिए भी यहा रुक नही सकता था । इस वजहसे मै बिहार चला गया । मैने कहा था कि मै जवाहरलालका कैदी हू और उनके बुलानेपर आ जाऊगा । उनका और कृपलानीका हुक्म मिलनेपर मै यहा आ गया हूं ।

यह जानकर आप खुश होगे कि जब मै यहासे विहार गया तब लोगोने मुझे बड़ी शाति दी । रास्तेभर किसीने नही सताया । मै

---

[1] १३ अप्रैलसे ३० अप्रैल तक गांधीजी बिहार-प्रवासमें रहे ।

आरामसे सोया, थका नही और काम भी कर सका । लौटनेमे ऐसा नही हुआ। लोगोने जगह-जगह शोर मचाया । उन्होने यह नही सोचा कि मुझ-जैसे जईफ आदमीको शाति देनी चाहिए, उसकी नीदमे खलल नही डालना चाहिए । सो न सकनेके कारण आज मै थका-थका-सा रहा। फिर भी दिनमे मैने काम तो किया ही, क्योकि काम ही मेरा जीवन है । बिना काम किए मै जी ही नही सकता, पर कम काम हुआ । लेकिन जो बात मुझे सहन नही होती वह है लोगोकी चिल्लाहट और किस्म-किस्मके नारे । आप लोगोके द्वारा मै सभी लोगोको सुनाना चाहता हू कि आगे वे ऐसा शोरगुल न करे, नारे न लगावे । स्टेशनोपर लोग जमा हो जाय तो भली ही बात है, क्योकि आयगे तो दो-चार पैसे हरिजन-चदेके दे जायगे । लेकिन उन्हे अशाति नही दिखानी चाहिए ।

मै आपको बताना चाहूगा कि मैने बिहार जाकर क्या किया ? वहा काफी काम हुआ है । जनरल शाहनवाज एक छोटी-सी जगहपर बैठ गए है । उनको अपने काममे अब फतह मिलने लगी है । जो मुसलमान लोग दु खके मारे आसनसोल चले गए थे वे अब वापस आ गए है । आसनसोलमे उन्होने बहुत ज्यादा दु ख पाया और समझ गए कि आराम तो अपनी जगहपर ही मिल सकता है । उनके बाल-बच्चे बिलकुल ही सूख गए थे, उनकी हड्डी-पसली निकल आई थी, उनकी किसी किस्मकी परवरिश वहा नही हो पाई थी । अब उन्हे दूध दिया जाता है । ताजा दूध तो मिलना अब असभव हो गया है, क्योकि हमारा सारा गोधन नष्ट हो चुका है । इसलिए उन बच्चोको सूखा दूध दिया जा रहा है । सुखाए हुए दूधमे विटामिन नही रहते और वह जीवन-तत्त्व नही मिलता, जो ताजे दूधमे मिलता है । लेकिन दूधमे जो अपना एक पोषक गुण है वह सूखे दूधमे भी ज्यो-का-त्यो कायम रहता है । आसनसोलसे लौटे हुए बच्चोको वह सूखा दूध दिए जानेके बाद अब वे तदुरुस्त हो रहे है, उनकी पसलिया भर आई है ।

दूसरा सवाल था बडोके राशनका । जब इतने आदमी लौटकर आ गए तब उनके खानेका इतजाम कैसे हो ? जहा उन्हे सताया गया

था वहा खुद तो वे बाजारमे राशन लेनेके लिए जाते डरते थे। सरकारने उनके पास राशन भेजनेकी व्यवस्था की, पर उनके हिंदू-पडोसियोने कहा, यह हमारे मेहमान है। इनका राशन हम पहुचायगे। सरकारी लोगोको इसके लिए परेशान होनेकी जरूरत नही है।

एक दूसरी जगहकी बात है। वहा बहुतसे मुसलमान मारे गए थे। जो बचे थे वे वहा लौटकर जानेमे झिझकते थे। उनकी झिझक मिटानेके लिए उनके साथ आजाद हिद फौजके कुछ भाइयोको भेजा गया। उनको जाते देखकर हिदुओने उन आजाद हिद फौजके सिपाहियोसे कहा कि आप क्यो जा रहे है। हम लोग है इनकी सेवा करने-के लिए। हम मर जायगे तब भी इनकी हिफाजत करेगे। आजाद हिद फौजके लोगोने कहा कि हमे जनरल साहबका हुकम है। हम नही लौट सकते। तब हिंदुओने कहा, 'हम लोग हमेशा पागल थोडे रहेगे? हम उस बार तो पागल ही हो गए थे। दस हजार आदमी मिलकर एक हजारको मार डाले इसमे बहादुरी ही कौन-सी है! अब हम कभी ऐसा नही करेगे।'

इस प्रकार हिंदुओने मुसलमानोका डर मिटा दिया और उन्हे अपनी जगहपर जानेका प्रोत्साहन दिया। नतीजा यह हुआ कि उन्ही मुसलमान भाइयोने खुद उन सिपाहियोको लौटा दिया। मुझे भरोसा है कि अगर बिहार सच्चा उतरता है तो हिदुस्तानभरमे जगह-जगह जो बाते हो रही है वे सब शात हो जायगी। मेरा कहना यही है कि हम सभीको बहादुर होना है, लेकिन मैने सुना है कि अब तो दिल्लीमे भी कायरताके काम हो रहे है। लुक-छिपकर रोज-ब-रोज कुछ हो रहा है। उधर डेराइस्माइलखामे भी बहुत बुरी बाते हो रही है। अभीतक वे बद नही हुई।

लोग पूछते है, तुम लोगोने जो दस्तखत[1] किए थे वे कहा गए?

---

[1] आपसी मारकाट बंद करने और मेलके साथ शांतिपूर्वक रहने-के लिए हिंदू और मुसलमानोके नाम एक अपील निकाली गई थी जिसपर गांधीजी और जिन्ना, दोनोने हस्ताक्षर किए थे।

शाति क्यो नही होती ? जो दस्तखत मैंने दिए यह कोई जिन्ना साहब-से मिलकर और उनसे वातचीत करके नही दिए । वाइसरायने आग्रह किया कि तुम दस्तखत दे दो । मैंने उनसे कहा कि मैं कौन हू देनेवाला ? काग्रेसका तो मै चवन्नीका मेम्वरतक नही हू । मेरे दस्तखतसे फायदा क्या होगा ? मैं तो विलकुल छोटा आदमी हू । हा, कायदे आजम बडे आदमी है, उनके दस्तखतका वडा असर होगा, लेकिन वाइसरायने मुझसे कहा कि तुम्हारे दस्तखत जिन्ना साहब चाहते है । इसके बिना वह दस्तखतके लिए तैयार नही होते । तुम दस्तखत कर दोगे तो हमे पता तो चल जायगा कि आखिर जिन्ना साहव करना क्या चाहते है । मैंने तब दस्तखत कर दिए । इसके बादकी वाते मैं छोड देता हू ।

मेरे लिए यह दस्तखत नई वात नही है । जिंदगीभर मैंने यही काम किया है और कर रहा हू । लेकिन जिन्ना साहवके दस्तखत भारी वात है । अगर उनकी कैदमे सारे मुसलमान है तो उन सव मुसलमानोको जिन्ना साहवकी वात माननी चाहिए, क्योकि उन्होने मुसलमानोकी ओरसे दस्तखत किए है । मैंने हिंदूकी हैसियतसे दस्तखत कहा दिए है ? मेरी कैदमे कोई नही है । मैं किसी भी पार्टीका नही हू । मैं सभीका हू । अगर विहारमे हिंदू फिर पागल वनेगे तो मैं फाका करके मर जाऊगा । उसी तरह अगर नोआखालीमे मुसलमान दीवाने होगे तो वहा भी मुझे मरना है । मैंने वह हक हासिल कर लिया है । मै जितना हिंदूका हू, उससे कम मुसलमानोका नही हू । सिख, पारसी, ईसाईका भी मैं उतना ही हू । भले ही लोग मेरी न सुने, पर जो मैं कहूगा सबकी ओरसे कहूगा और सवके लिए कहूगा ।

लेकिन जिन्ना साहव तो वहुत वडी सस्थाके प्रेसीडेट है । उनके दस्तखत हो जानेपर फिर क्या वात है जो मुसलमानोके हाथसे एक भी हिंदू मारा जाता है ? हिंदुओसे मैं कहूगा कि मुसलमान मारते है तो मर मिटो । अगर कोई मेरे कलेजेमे खजर भोक दे और मरते-मरते मै यह मनाऊ कि मेरा लडका उसका वदला ले तो मैं निरा पापी हू । मुझे विना रोषके मरना चाहिए । पर मुसलमान छुरा मारेगा ही क्यो, जव उने ऐसा न करनेको कहा गया है ?

पर बात यह है कि सियासी[1] मामलेमे जबरदस्ती नही चलेगी, यह अभी उन्हे समझना है। लोग पूछते है कि जब हम दोनोने लिख दिया, दस्तखत कर दिए कि मत मारो तब असर क्यो नही होता ? अब भी मुसलमान शात क्यो नही होते ? डेराइस्माइलखा व सीमाप्रात-मे यह सब क्या हो रहा है ? डा० खानने और बादशाह खानने उसे रोकनेका प्रयत्न किया, पर वहाके लोग कहते है कि हम तो लीगवाले है ।

लीगी होकर भी सीमाप्रातमे लोग अगर जिन्ना साहबकी बात नही मानते तो मैं कहूगा कि जिन्ना साहबका यह परम धर्म है कि और सब छोडकर सबसे पहले उन लोगोको शात करनेका काम करे। अगर वे ऐसा नही करते तो क्यो नही करते ? क्या इस तरह पाकिस्तान लेगे ? अगर उन्हे पाकिस्तान लेना है तो शातिसे ले। तलवारके जोरसे अगर कोई आदमी कुछ ले लेता है तो उससे बडी दूसरी तलवारसे वह छीन लिया जाता है। जबरदस्तीसे पाकिस्तान लेनेकी जिन्ना साहबकी बात कामयाब नही हो सकती ।

परतु मै वाइसरायसे भी पूछना चाहता हू कि आपने जब हम दोनोके दस्तखत ले लिए तो आप फिर अब क्यो कुछ नही कर पाते ? आप मेरा टेंटुआ क्यो नही पकडते ? जिन्नाका टेंटुआ क्यो नही पकडते ? इसपर भी अगर हिंदू-मुसलमान लडते रहते है, सिख लडते है तो अग्रेजोको अलग हो जाना चाहिए ।

लेकिन अग्रेज बने रहते है तो आप क्या करेगे ? आप कहेगे कि हम तलवार लेगे, पर तलवारसे डरकर अग्रेज कुछ देनेवाले नही है। अब भी वे आजादी देनेकी जो बात कर रहे है सो तलवारके कारण नही कर रहे है । उनका कहना है कि हिदुस्तानने दुनियाको नया रास्ता बताया है । यही हमारी आजादीकी वजह है । वैसे तो दुनियामे तलवारका बदला तलवारसे लेनेवाले बहुत होते है । बदला क्या, वे तो एकके बदले-मे दसको काटनेकी बात करते है । मै कहूगा, दस नही एकके बदले सौ भी काटो, फिर भी शाति न होगी । मारकर मरनेमे कोई बहादुरी नही है। वह झूठी है । न मारकर मरनेवाला ही सच्चा शहीद है ।

---

[1] राजनैतिक।

आप पूछेगे, तब क्या सभी हिंदू, सभी सिख मर जाय ? मैं कहूगा, हा । ऐसी शहादत कभी बेकार नही जानेवाली है ।

मेरी इस बातपर आप चाहे मुझे धन्यवाद दें, चाहे गालिया दे, मैं तो अपने दिलकी ही बात आपसे कहूगा । जब आप शातिसे सुन रहे है तब दिलका दर्द ही आपके सामने रखूगा और कहूगा कि आप बहादुर बने, डरे नही । हमको डराकर कोई लेना चाहेगा तो हम कुछ भी, एक कौडी भी नही देगे । समझाकर लेने आवे तो करोड भी दे देगे । अगर आप ऐसी बहादुरी नही अपनाते और हिंदू, मुसलमान, सिख सभी पागल हो जाते है तो अग्रेज हिंदुस्तानके लिए कुछ भी करें, कुछ भी दे, वह हमारे हाथमे रहनेवाला नही है । हमे जो कुछ हासिल करना है वह समझा-बुझाकर हासिल करना है । इतना इल्म अगर हमने सीख लिया तब तो हमारी खैरियत है, नही तो हिंदुस्तानका खातमा है, इसमे मुझे जरा भी शका नही है ।

: १४ :

२ मई १९४७

आज कुरानकी आयतका एक हिस्सा बोला जा चुका था तब एक नौजवानने नारा लगाया—'बद करो, बद करो, हिंदू-धर्मकी जय. बद करो, हिंदू-धर्मकी जय।' सुनकर गाधीजीने प्रार्थना रोक दी और कहा—"ठीक है, आज उसीके मनकी होने दो ।" गाधीजीने उसे शात होनेको कहा, लेकिन वह चिल्लाता रहा। इसी बीच पुलिसवाले उसे पकड़कर ले गए। यह गाधीजीको ठीक न लगा। उन्होने कहा—पुलिस-वालोतक अगर मेरी बात पहुच पाती है तो मै कहूगा कि कृपा करके वे इस भाईको छोड दे और यहा आने दे । प्रार्थनामे अमन रखनेके लिए पुलिस बीचमे आए, यह मुझे बिलकुल नही सुहाता । रोज पुलिस यहा हिफाजतिया [unclear] रखी रहे और उसके बलपर मै प्रार्थना करू तो वह तो प्रार्थना नही हुई । मै तो तभी प्रार्थना कर सकता हू जब सभी लोग अपनी

खुशीसे उसे करने दे। आपने देखा कि इस जवानने प्रार्थना बद करनेको कहा तो मैंने बद कर दी। कल भी अगर वह बद करनेको कहेगा तो मैं बद कर दूगा, लेकिन उसने जो कहा 'हिंदू-धर्मकी जय' तो धर्मकी जय इस तरह नही हो सकती। उसे समझना चाहिए कि इससे धर्म डूब रहा है। दूसरोको प्रार्थना न करने देनेसे धर्म-रक्षा कैसे हो जायगी? पर इसमें उसका दोष नही है, हवा ही ऐसी चली है। आजकल सब चीज उलटी निगाहसे देखी जाती है, कोई सीधी बात तो समझता ही नही। इसलिए अगर कोई मुझे प्रार्थनासे रोकता है तो मैं गम खा लूगा।

परतु मुझे इस बातका ज्यादा दर्द है कि उसने बीचमे शोर मचाया। अगर शुरूसे ही वह कह देता तो मै पहले ही रुक जाता। इसमे पुलिसको बीचमे आनेकी क्या बात थी? इतनी पुलिस यहा प्रार्थनामें शाति रखनेके लिए रहती है, इससे मै शर्मिदा होता हू। मेरे धर्मकी रक्षा पुलिस कैसे कर सकती है? मै खुद करूगा तभी मेरे धर्मकी रक्षा होगी। बल्कि 'मै धर्म-रक्षा करूगा' ऐसा कहना भी घमड है। मेरे धर्मकी रक्षा ईश्वर करेगा। आज मेरे दिलमे प्रार्थना है तो ईश्वर मेरी रक्षा करेगा ही। बाहरकी प्रार्थना न हुई तो क्या हुआ?

लेकिन आप लोग क्या कर सकते है? आप तो शातिसे बैठे है। ईश्वरका ध्यान करने, अपनेको कुछ अच्छा बनानेके लिए आप यहा आए है। एकके कारण आप सबको भुगतना पडता है। पर उस एकको इतने सब मिलकर दबा दे और फिर प्रार्थना करे तो उससे ईश्वरका दर्शन होनेवाला नही है। वह तो अपना ही दर्शन होगा।

मै चाहता था कि वह लडका शात रहकर मेरी बात सुनता। मै उसे समझाता। अगर वह आज न समझता तो कल समझता। कल न सही, परसो समझता। कुछ भी हो, हमे यह याद रखना है कि धर्मका पालन जोर-जबरदस्तीसे नही हो सकता। धर्मका पालन करनेके लिए मरना होगा। ससारमे ऐसा कोई धर्म पैदा नहीं हुआ जिसमे मरना न पडा हो। मरनेका इल्म सीखनेके बाद ही धर्ममे ताकत पैदा होती है। धर्मके वृक्षको मरनेवाले ही सीचते है। धर्म उन लोगोके कारण बढता है जो ईश्वरका नाम लेते है, ईश्वरका काम करते है, ईश्वरका स्तवन करते है,

उपवास और व्रत करते है और ईश्वरसे आरजू करते रहते है कि हे भगवन, हमे रास्ता नही दीखता, तू ही दिखा । तब लोग कहते है कि वह तो भक्त है और उसके पीछे चलते है । धर्म इसी तरह बनता है । मारकर कोई धर्म नही पनपा, मरकर ही धर्म पनपा है। यही धर्मकी जड है । सिख धर्म ऐसे ही बढा है ।

पैगबर मोहम्मद साहबने भी बिना डरके हिजरत की और हजारों दुश्मनोके हाथो उनको और हजरत अलीको उनकी श्रद्धाके कारण खुदाने बचाया, गोया मौतके मुहमे खेलकर ही मोहम्मद साहबने इस्लामकी जड मजबूत की ।

ईसाइयोका इतिहास भी ऐसा ही है । बौद्ध धर्मको भी अगर हम हिंदू-धर्मसे अलग माने तो वह भी तभी बढा जब कई लोग उसके लिए मरे। जितने धर्म है उनमे एक भी मैने ऐसा नही पाया जिसमे शुरूमे कुरबानी न हुई हो । जब धर्म बन जाता है तब बादमे उसमे बहुत सारे लोग आ जाते है और गलत अभिमान पैदा हो जाता है। अब तो हिंदू-धर्मवाले भी मार-काटपर उतर आए है, जब कि हिंदू-धर्मम कभी खून-खराबी करना नही सिखाया गया है ।

आज तो धर्मके नामसे सभी भयभीत हो उठे है। लोगोको न जाने इतना भयभीत क्यो किया जाता है ? हिंदू क्या, सिख क्या, सारा पजाब व्याकुल हो उठा है । उधरसे बगालकी चीख सुनाई देती है । लोग कहते है—पजाब व बगालके दो टुकडे करो । अगर टुकडे करने ही है तो वे वाइसरायके पास क्यो जाते है ? मेरे पास क्यो नही आते ? आप लोगोके पास क्यो नही आते ? पाकिस्तान दिया जा रहा है तो क्या वह हिंदुओको और सिखोको मटियामेट कर देनेके लिए है ?

जिन्ना साहबने तो कहा है कि पाकिस्तानमे अल्प मतवाले हिंदू और सिख पूरे सुरक्षित होगे, उन्हे परेशान नही किया जायगा, पर आज ऐसा क्यो नही है ? पजाब व बगालमे जो हो रहा है उसीमे तो मै उनके पाकिस्तानकी झलक देखूगा न ? अगर सचमुचमे पाकिस्तान ऐसा नही है तो जिन्ना साहब जैसा कहते है वैसा करके क्यो नही बताते ?

मुस्लिम बहुमतवाली जगहोमे सिख और हिंदू-जातिके एक-एक आदमीकी हिफाजत क्यो नही होती ?

सिंध, जहा हिंदू केवल पच्चीस ही फी सदी है, वहा उन्हे क्यो इतना डरना पड रहा है ? क्या पाकिस्तानका मतलब यह है कि उसमे सिवा मुसलमानके सभी हिंदू, सभी सिख, सभी ईसाई और दूसरे धर्मवालोको गुलाम बनकर रहना है ? ऐसा हो तो वह पाकिस्तान नही है । और हिंदुस्तान भी तभी सही हिंदुस्तान कहा जा सकता है जब उसके हिंदू बहुमतवाले इलाकोमे मुसलमानके मासूम बच्चे तकको जरा भी आच न आवे ।

जिन्ना साहब पूछ सकते है कि हिंदुओने क्या किया ? बिहारमे हिंदुओने भी तो ऐसा ही किया है ? ठीक है कि उन्होने गलती की, पर आज बिहारके हिंदू पछता रहे है । प्रधान मन्त्रीतक कहते है कि मैने गुनाह किया है । अगर सभी जगह ऐसा हो तो मै समझूगा कि कुछ बना । लेकिन आज तो सबने अपने धर्मका पालन छोड दिया है और दूसरा कोई पालन करता है तो कहते है कि हम उसे मारेगे । यह ठीक बात नही है । मुसलमान भाइयोको भी अपने कम तादाद पडोसियोसे कह देना चाहिए कि सभी अपने धर्मका पालन करें, हम बीचमे न आयगे ।

आखिर हमारे हाथमे एक चीज आ रही है, उसे क्यो छोड़े ? लेकिन सभी उसे छोडनेकी कोशिश कर रहे है । हिंदू , मुसलमान, सिख, ईसाई सभीको आपसके झगडोके इस पापसे छूटना चाहिए और छूटनेका एक ही तरीका है । वह यह कि हम ईश्वरसे डरे । फिर हथियारकी माग नही होगी, तब कोई नही कहेगा कि हमे मिलिटरी चाहिए, राइफल चाहिए, बदूक चाहिए । पर आज तो सब जगहसे आवाज आ रही है कि हमे सिखो-जैसी कृपाण चाहिए । वह भी छोटी है, इसलिए बडी चाहिए । यह सब किसको मारनेके लिए ? अगर सबके घरमे ऐसे हथियार रहेगे तो आप उसके बीच मुझे न पायगे ।

मेरे पास तो एक ही उपाय है, जिससे हम अग्रेजोकी उस बड़ी ताकतको भी बिलकुल मिटा दे सकते है, जो इस समय जमी पडी है । वह तरीका है—'ना' कहना, असहयोग करना । शातिपूर्ण असहयोगसे वे

उखड जायगे । यह चीज बडी ही बुलद है । इसको अपनानेके बाद फिर हमे फौजी तालीम लेनी नही पडेगी ।

: १५ :

३ मई १९४७

"भाइयो और बहनो,

"रोजकी तरह आपको शात हो जाना चाहिए। आप प्रार्थनाके लिए आते है, इसलिए आनेके बाद शात ही बैठे रहें। बाते तो हरदम होती ही रहती है। प्रार्थनासे लौटकर जाय तब बाते कर सकते है। इससे पहले मौन रहनेमे ही प्रार्थनाका महत्त्व है।"

प्रार्थनामे कुरानकी आयतके पाठको एकने फिर टोका। गाधी-जीने प्रार्थना रोक दी और बोले—ऐसा मालूम होता है कि बाकी प्रार्थना तो ठीक करने दी जाती है और सिर्फ कुरानकी आयतवाली प्रार्थना ही नही करने दी जाती। इसलिए कलसे 'अोज अबिल्ला' से ही मै प्रार्थना शुरू करूगा। अबतक तो प्रार्थना बौद्ध मत्रसे शुरू होती थी। यह जापानी भाषाका मत्र है। सेवाग्राममे मेरे पास एक जापानी साधु रहते थे। वे नित्य प्रात काल एक घटेतक आश्रमकी प्रदक्षिणा करते हुए अपने डिमडिमकी आवाजके साथ वडी बुलद आवाजसे और मधुरतासे इस मत्रका घोप करते थे। उस जापानी भाईकी इच्छा उसे प्रार्थनामे सुनानेकी हुई तो मैने उसकी वात मान ली और प्रार्थनामे सबसे पहले यह मत्र कहा जाने लगा। पर कलसे मै 'अोज अबिल्ला' से प्रार्थना शुरु करूगा और उसमे किसीने नही रोका तो आगे प्रार्थना होगी, अन्यथा आप लोग मौन रहकर दिलमे प्रार्थना करेगे और शातिसे लौट जाएगे ।

इतना मै आपसे कहूगा कि आप लौटे तब सभी धर्मोकी प्रार्थना अपने दिलमे लेकर जाए । आप इतना समझ ले कि सभी मजहब अच्छे है। विश्वास रखे कि जितने भी धर्म है, सब-के-सब ऊचे है । धर्ममे कसर

नही है। कसर है तो उनके आदमियोमे है। हरेक धर्ममे कुछ-न-कुछ गदे आदमी पैदा हो गए है। ऐसी बात नही है कि किसी एक धर्मने ही गदे आदमियोका ठेका ले रखा हो। इसीलिए हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम उन गदे आदमियोकी ओर न देखकर उनके धर्मकी अच्छाईको देखे। हरेक धर्ममे जो रत्नकी-सी बात हाथ आवे उसको ले ले और अपने धर्मकी अच्छाईको बढाते चले।

अब जो बात मैंने आज कहनेको सोची थी वह भी कह दू। आजकल हमारी हालत बडी ही नाजुक है। हमारा हिंदुस्तान इतना बड़ा मुल्क है कि सारी दुनिया हमारी ओर देख रही है। जवाहरलालने जो एशियाई कान्फ्रेस बुलाई उसमे आपने देखा कि सबकी निगाह हिंदुस्तानकी ओर लगी थी। शहरियार साधारण आदमी नही है। वह काफी बडा आदमी है। लेकिन उसकी भी नजर आप लोगोपर यानी हिंदुस्तानपर ही है। उधर अरबवाले भी हमको ही देखते है कि अगर हिंदुस्तानमे कुछ होगा तभी एशियाके मुल्क कुछ कर पायगे। जापान तो कुछ न कर सका। इसमे शक नही कि जापानने बहुत ही बहादुरी दिखाई। कला भी बहुत बताई, पर आज वह कहा है? वह एशियाकी नाक नही बन पाया है। उसकी हालत पिछड गई है। उसे देखकर दिलमे खेद होता है।

हम तो अभी आजादी लेकर भी नही बैठ पाए है। इसपर भी दुनिया हमारी बात देखना चाहती है; क्योकि हमने लड़ाई ही ऐसी ली कि आजतक आजादीके लिए ऐसी लडाई और किसीने नही ली। धर्मके नामसे तो ऐसी लडाइया लडी गई है, पर आजादीके नामपर तो ऐसी लडाई पहली यही है। सन् १६१६ के अप्रैलकी छठी तारीखको हम लोगोने ऐसा कदम उठाया कि अब आजादी करीब-करीब हमारे हाथोमे आ गई है और सबको उम्मीद बध गई है कि अगर हिंदुस्तान आजाद होता है तो सारा एशिया आजाद होता है और फिर अफ्रीका भी। इसका मतलब होगा कि सारी दुनियाने नया जन्म पा लिया।

एशियाई कान्फ्रेसके प्रतिनिधि यहासे यही सबक लेकर गए है। वे जब यहा आए तब यहाका सारा वातावरण साफ नही था, पर उन्होने

तो हमारे यहाका मैल नही देखा। आजादी देखी। समझनेवाले समझते है कि जब नदीमे बाढका पानी आता है तब वह गदला होता है। वैसे ही हमारे यहा स्वतन्त्रताकी बाढका पानी आता है तब वह गदला होता है। हमारे यहा स्वतन्त्रताकी बाढ आई है तो कुछ बदअमनी हो सकती है, पर अब हमारा काम है कि जैसे बादमे गगाका पानी निखर जाता है वैसे ही हम भी अपनी आजादीको गगाजलकी-सी स्वच्छ और पवित्र बनावे।

यह कैसे होगा? अधर्मको धर्म माननेसे हिंदुस्तानकी रक्षा होनेवाली नही है, न धर्मकी आजादी ही उस तरहसे मिल पायगी। लेकिन आज हो क्या रहा है? डेराइस्माइलखामे क्या हुआ? हजारामे क्या हुआ? सारे सीमाप्रातमे यह कैसा ऊधम है? तलवार लाओ, भाले लाओ, बदूक लाओ। जाहिरा तौरसे भी लाओ और खुफिया तौरसे भी लाओ। बमके गोले भी चुपके-चुपके बनाओ। क्यो कहा जा रहा है कि मार-पीट करेंगे, धमकाकर और डराकर मनमाना करायगे?

इन सबमे हम न अपनी रक्षा कर सकेंगे, न औरोकी। न भारत आजाद हो सकेगा, न एशिया। और दुनिया भी आजादीसे वचित रह जायगी।

इसलिए हम सब प्रार्थना करे और शुद्ध भावसे समझे कि सब मजहब एक है। हम एक-एक अच्छे बनेंगे तो भी बहुत बडा काम हो जायगा।

दूसरी बात मुझे बतानी है अखबारोके बारेमे। एक अखबारने हमारे वजीरोके साथ वाइसराय साहबकी क्या बाते हुई यह बताया है। वर्किंग कमेटीमे क्या हुआ इसका बयान भी उसमे आया है। वह छोटा अखबार नहीं है। हमारे दुश्मनके रूपमे वह नही चलता। वह तो काग्रेसके हितमे चलता है। उस अखबारने अनुमान लगाया है कि वाइसरायने क्या तजवीजे सोची है? वे इस तरह अनुमान करे यह भारी गलतीकी बात है। वाइसरायको खुदको ही कहने देना था कि उसने क्या करना विचारा है। वर्किंग कमेटीके कामकी भी अटकल क्यो लगाई जाय? वर्किंग कमेटीकी तरफसे जो बयान दे दिया जाय उसीको प्रकाशित किया जाना चाहिए और कुछ नहीं होना चाहिए।

मै जानता हू कि बहुतसे अखबारनवीस ऐसे होते है जो थोडा इधर पूछते है, थोडा उधर पूछते है और बात गढ लेते है। लेकिन मैं कहूगा कि वे लोग उच्छिष्ट भोजन खाते है। उच्छिष्ट भोजन करना अखबारनवीसका धर्म नही है।

अग्रेजोने अपने एक अच्छे आदमीको यहा भेज दिया है। वह इग्लैडकी नाक रखनेके लिए आया है। जिस खूबीसे उसे भेजा गया है उसी खूबी और नीयतसे वह काम कर रहा है।

फिर क्या हक है कि उसकी बात बिना उससे पूछे जाहिर की जाय ! क्या हक है किसीको कि वह मीठी-मीठी बाते करता हुआ सबको फुसलाता फिरे और कुछ बात उससे निकाल ले, कुछ मुझसे निकाल ले और अखबारमे छाप दे ?

मै भी तो पिछले पचास वर्षोसे अखबारनवीस रहा हू । मै जानता हू कि अखबारोमे क्या चलता है। इग्लैड और अमरीकाके अखबारोमें क्या-क्या चल रहा है, इसका भी मुझे पता है । पर हम इग्लैड-अमरीकाकी गदगीका अनुकरण क्यो करे ! अगर दूसरोकी गदी बातोका हम अनुकरण करेगे तो मर जायगे ।

मै नही कहता कि इसने गलत ही लिखा है। उसमे जो-जो बाते है कुछ सही है, कुछ गैर सही है। खिचडी पकाकर दे दी है। ऐसी अखबारनवीसी मै बिलकुल पसद नही करता।

आप लोगोके मार्फत मै सभी अखबारनवीसोको सुनाना चाहता हू कि इस तरह पैसे पैदा करनेकी वे कोशिश न करें। सीधे ढगसे अगर पेट नही भरता तो भले ही वह फूट जाए, पर वे ऐसी बात क्यो करे कि हिंदुस्तानका पेट फूटे ! और इसने तो शीर्षक भी ऐसा दे दिया है जो किसीके ख्वाबमे भी नही आया है ।

अच्छा हो कि हम लोग इग्लैड-अमरीकाकी गदी बातको छोडकर अच्छी बातको ग्रहण करे ।

इस सिलसिलेमे आज जवाहरलाल मेरे पास अपना दुःख बता रहे थे। किसे-किसे वे अपना दुःख कहे ! मै भी उन्हे क्या दिलासा दू ?

हमने धर्मका युद्ध किया है। धर्मसे ही हम आजादी पानेवाले है। अखबार-नवीस भी उसमे हमे मदद दे, यही प्रार्थना है।

: १६ :

४ मई १९४७

"भाइयो और बहनो,

"आज प्रार्थना कुरानसे ही शुरू की जायगी, पर इससे पहले मै पूछूगा कि कोई ऐसा भी है जो इतने सारे मजमेको प्रार्थना न करने देना चाहता हो! अगर प्रार्थना शुरू होनेपर कोई रोकेगा तो वह रुक जायगी, पर वह बहुत असभ्यता होगी। इसलिए आप कोई रोकना चाहे तो शुरूसे ही रोक सकते है। आपमे है कोई ऐसा?"

सभाके बीचमेसे एक आदमी बोला, "मै हू।"

"क्यो?" गाधीजीने पूछा।

"मदिरमे कुरानका पाठ नही हो सकता।"

"इतने बडे मजमेको क्या आप रोकना चाहते है?"

"जी हा।"

गाधीजीने लोगोको सबोधित करते हुए कहा—"आप लोग सुने, मै इससे बात करूगा। देखू तो सही, उसके मनकी क्या दशा है?"

फिर उस आदमीको सबोधित करते हुए गाधीजी बोले, "आपको गुस्सा करनेकी जरूरत नही है। आप शातिसे मुझे समझाइए कि जब मै रोज इस मदिरमे प्रार्थना करता हू तो आज क्यो न करू?"

"मदिर पब्लिकका है। पब्लिकके मदिरमे आप न करें।"

"है तो मदिर पब्लिकका, लेकिन मदिरके पुजारी या ट्रस्टी तो मुझे रोक नही रहे है। फिर आप भगवानका नाम लेनेवाले इतने आदमियोको क्यो रोकना चाहते है? यह मेरी समझमे नही आता।"

"क्योकि मै भी पब्लिकका आदमी हू।"

"खैर, तो आप प्रार्थना नही करने देगे?"

"नही ।"

"अच्छा, तो प्रार्थना बद करता हू । लेकिन मै आप लोगोको यह बात बताना चाहता हू कि धर्ममे सभ्यताका और अहिसाका क्या स्थान है। आप लोग रोज ही मेरी प्रार्थना रोकते रहे तो उसमे तौहीन मेरी नही है, आपकी है। तरीका तो यह होना चाहिए कि एक आदमी अगर इतने आदमीकी बात सुनना नही चाहता है तो वह बाहर चला जाय। इतनी बडी सभामे कैसे हो सकता है कि एक आदमी उसे रोक दे! यह और कही नही हो सकता, मेरे पास यानी अहिंसा जगतमे ही हो सकता है। मदिर सबका है, इसका मतलब यह नही होता कि एक आदमी जैसा चाहे रोडा अटकाता फिरे। ऐसा हो तब तो मदिरका सारा काम ही रुक जाय। मै अकेला होता और वह रोकता तो बात और थी, पर यहा इतने लोगोमे वह चीखता रहे और मैं प्रार्थना करू तो आप गुस्सेमे आ जायगे । उसको गाली देगे और पुलिससे उसे पकडवा देगे । इसमे हमारी कौन-सी शोभा होगी। ऐसा होनेपर दुनिया हमे क्या कहेगी !

"इसलिए मै प्रार्थना रोक रहा हू । पर 'ओज अबिल्ला' तो वे नही रोक सकते। वह तो मेरे मनमे है ही। हम आज उसे न कहेगे, केवल दो मिनिट मौन बैठेगे और उसमे आप यही प्रार्थना करेगे। ठीक है कि 'ओज अबिल्ला' आपको कठाग्र नही है, पर मौन रहते हुए राम-रहीम दोनो एक ही है, ऐसा आप मनमे समझे। यानी हिंदू-धर्म और मुसलमान-धर्म दोनो महान् है। दोनो धर्मोमे कोई भेद नही है। मेरी समझमे यह बात ही नही आती कि दो धर्म आपसमे एक दूसरेको दुश्मन क्यो माने और किस वजहसे माने। इसलिए मै चाहता हू कि शातिमे आपका यही मत्र हो कि 'तू ईश्वर है, तेरे हजार नाम है।' मैने बताया था कि हमारे धर्ममे विष्णुसहस्रनामका बडा चलन है; बल्कि मै तो मानता हू कि दुनियामे जितने आदमी है उतने ईश्वरके नाम है। ईश्वर, भगवान, खुदा, गॉड, होरमसजी कुछ भी कह लो उसीके नाम है। और इन सब नामोसे भी वह ज्यादा है । इतने बडे ईश्वरको, जिसे कोई पहचान नही सकता, उसका नाम लेनेसे रोकनेकी बात कोई कैसे कर सकता है? ऐसा करना तो निरा अविवेक है, असभ्यता है, हिंसा है।

"मौनके साथ आप आख मूदकर बैठ सके तो और भी अच्छा। इतनी देरमे, अगर उस भाईको समझ आ जाएगी और वह रोकना नही चाहेगा तो और प्रार्थना करेंगे, नही तो मुझे जो बाते बतानी है बताऊगा।"

इसके बाद सारी जनता गाधीजीके साथ आख बद करके दो मिनिट-तक मौन बैठी रही। वातावरण अत्यत शात और पवित्र था।

दो मिनिट समाप्त होनेपर गाधीजीने कहा—

आज मुझको वाइसरायके पास जाना पडा था, यह आप जानते ही है। डेढ घटेतक हम बैठे और हमारे बीचमे बहुत अच्छी-अच्छी और कामकी बाते हुई। सभी वाते मै यहा नही सुना सकता, पर एक बात बताऊगा।

वाइसरायने मुझे कहा कि तुम मेरी ओरसे लोगोको कह दो या तुम्हारा निजका विश्वास हो तो अपनी ही ओरसे कह दो कि 'मै ब्रिटिश हकूमतको यहासे ले जाने और इस मुल्कमे ब्रिटिशका राज खत्म करने आया हू। एक दिनमे तो इतनी बडी हकूमत समेटी नही जा सकती। इतनी बडी फौज चुटकी बजाते-बजाते हटाई नही जा सकती। लेकिन यह भरोसा रखो कि ३० जून (सन् १९४८) के बाद हम यहा बिलकुल रहनेवाले नही है। मै इस कामको करनेके लिए यहा आया हू। और जितना वन पडता है, उसे कर रहा हू।

लेकिन तुम लोगोके अखबारोमे कैसी-कैसी बाते आती है, इसे देखकर मै हैरान हो जाता हू। मेरा काम रुक जाता है। एक तो तुम लोग आपसमे लडते हो और फिर उसमे अग्रेजोका दोष ढूढते हो और उन्हे बदनाम करते हो। माना कि अग्रेजी सल्तनतने आजसे पहले भूल की है, पर अब तुम्हारे झगडोमे अग्रेजोका कितना हिस्सा था इस बातको तुम लोग भूल जाओ। अग्रेजोने 'ऐसा किया, वैसा किया' ऐसी बात रटते रहनेपर कुछ भी सही काम वननेका नही है। ऐसी बाते मत कहो। आगेके काममे पिछली वातोकी चर्चा छोडो।

पर तुम्हारे अखवार ऐसा ही करते है और उनकी इन हरकतोसे तो सारी वात विगड जाती है। मैने तो किसीसे कोई बात ऐसी नही कही थी, जिससे अखवारवाले कुछ जान ले। मेरे पासके रहनेवालोमेसे भी किसीने ऐसी वात नही कही है।

हिंदुस्तानके लोगोको थोडी-सी तो सभ्यता रखनी चाहिए। अपने अखवारोमे सुर्खिया भी वे ऐसी दे देते है कि वे बातको वहुत तोड-मरोड देती है। यह किस आधारपर लिख दिया है कि सीमाप्रातमे खान-साहवका अमल वद हो जायगा और फिर राष्ट्रवादी अखबार ऐसा लिखते है तो मुसलमान अखबार उसमे भी वढ-वढकर सुर्खिया देते है।

इस तरह तो आपसी जहर और भी वढ जायगा। मै यहा जहर बढानेके लिए नही आया हू। आप लोग हिंदू, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई सव मिल-जुलकर रहने लगोगे तो उसमे हम ब्रिटेनवालोका नाम अच्छा ही कहलाएगा कि जब छोडा तब सबको एक करके, मिलाकर छोडा।

वाइसरायने यह भी कहा—"मै वता देना चाहता हू कि हिंदुस्तानके लोग अगर आजादी चाहते है तो उन्हे कुछ खामोशीसे रहना चाहिए। ऐसा करना हम नही चाहते कि हम चले जाय और आप लोग आपसमे लडते रहे। इसलिए सब बात सुलझानेकी मै भरसक कोशिश करता हू, नतीजा कुछ भी हो। तीस जून '४८ को हमे जाना ही है, इसमे कोई शक नही है, उस बातको ध्यानमे रखकर मै चलता हू।

"मेरा एतवार करोगे तो मै कहना चाहता हू कि मै अपने अंतः-करणको पूछ-पूछकर हरेक काम करता हू। यह ठीक है कि मै जहाजी बेडेका कमाडर हू और हिसा-शक्तिपर विश्वास करता हू, पर जैसे आप ईश्वरको मानते है वैसे मै भी अपनी शक्तिभर ईश्वरको मानता हू और मै वही करता हू, जो मेरी अन्तरात्मा मुझे सही वताती है। खुदाने मुझे जैसी अकल दे रखी है उसीके मुताविक चलनेवाला मै हू। इसके अलावा मै दूसरी तरहसे ब्रिटिशकी सेवा कर भी नही सकता।

"मै अपनी पूरी कोशिश करूगा कि तुम सब लोग मिल-जुलकर काम करो। मै ऐसी कोई बात करना नही चाहता जिससे अल्पसंख्यकोके साथ अन्याय हो जाय। वरना लोग कहेगे कि हमने मुसलमान, पारसी, सिख आदिको दबाकर वहुसख्यक हिंदुओको सव कुछ दे दिया।

"हमारे जानेके बाद तुम लडना चाहोगे तो बीच-विचाव करने कौन आयगा? अभी तो मै खामोशीसे समाधानका प्रयत्न कर रहा हू, पर जब मेरा धीरज खतम हो जायगा तव मै चुप न रहूगा। अव तो रक्षा-सदस्य

भी आपका ही है। लेकिन उससे भी बात बनती दीख न पडेगी तो अभी यहाका कमाडर तो अग्रेज है। गोरी फौज भी छोटी नही है और उनके सिखाए आदमी भी है। इन सबको लेकर मै अपने धर्मका पालन करूगा, लेकिन वैसे ही आप लोग मेरी बात मान ले तो मेरा काम कुछ आसान हो सकता है।"

सो वाइसराय साहबका काम कठिन ही है, पर अग्रेज लोग कठिन बातसे भागनेवाले नही होते।

आप लोगोको यह कहनेकी बात नही थी, पर मुझे लगा कि हम इतने सब मिले है तो आज यही कह दू और आप लोगोकी मारफत अखबारवालोसे भी कह दू।

कल ही मैने आप लोगोसे कहा था कि जबतक हमने माउटबैटन साहबका विश्वास खोया नही है तबतक उनके बारेमे हमे कुछ भी इधर-उधरकी बात कहनी नही चाहिए। हम ठीक चलेगे फिर भी अगर वह कुछ न करेगे तो हम अग्रेजोसे कह सकेगे कि आपके वाइसराय एकके बाद एक आते तो है आजादी देनेके लिए, पर वे हमे दबाते ही चले जाते है।

यह सब हमे असभ्य भाषामे कहनेकी जरूरत नही है। हरेक बात मीठी भाषामे कही जा सकती है। अगर हम असभ्यता बरतते है तो अपना ही गला काट लेते है।

अगर हम आपसमे भी लडते ही रहते है तो उनका जाना कठिन हो जाता है। उनके हाथमे डिफेंस तो है, पर उससे तो वे बाहरके हमलावरोको रोक सकते है। जब हम आपसमे लडे तब वे किस तरह हमे रोके? वे तो कहेगे हिंदू मुसलमानोको बुरे बताते है और मुसलमान हिंदुओको। उसमे वे क्या करे? उनको तो जाना है। हम लडते ही रहेगे और ३० जून आ जायगी और उनसे कुछ हो नही सकेगा तो हम कहेगे अब आपका अधिकार नही, आप जाइएगा।

अगर वे रह जाते है तो फिर वे हिंदूको भी और मुसलमानको भी दोनोको मार-मारकर झगडा करनेसे रोक सकते है और उन्होने यह करके दिखाया भी। एक अग्रेजके मारे जानेपर हजार-हजार आदमीको मौतके घाट उतार दिया गया है। पर जाते समय वे ऐसा नही कर सकते।

इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि उनके यहासे जानेका काम हम अपने विश्वाससे आसान करे। उनकी मुसीबत बढावे नही।

पर आज क्या है। खाना नही मिलता, कपडा नही मिलता, मुझे और आपको तो मिल जाता है, पर करोडो ऐसे लोग मुल्कभर मे पडे है जिन्हे कुछ भी खाना नही मिलता, न कपडा मिलता है। आज मदरासके वजीर आए थे। उन्होने बताया कि वहा बाढ आ गई है और फसल मारी गई है। खानेकी किल्लत है। अगर हम आपसमे न लडते तो गरीबोको खाना पहुचा सकते थे। खाना-पीना देनेके लिए हिंदू-मुसलमान नही देखे जाते--मुल्कके सभी लोगोको वह देना होता है।

पर आज तो सबका एक ही काम हो गया है--बस, काटो और मारो, वह भी वहशियाना तरीकेसे। जो हिंदू मिले उसे मुसलमान मारे, जो मुसलमान मिले उसे हिंदू।

अगर हम ऐसे जगली बन जाए और कहे कि अग्रेजोके जानेके बाद हम अच्छे बन जायगे तो यह सारा गलत खयाल है।

एक बात और बताता हू। जनरल शाहनवाज आज आए थे। बिहारसे मेरे चले जानेपर भी वे वहापर काम करते है। वेतन नही लेते। फिर भी बाकायदा पद्रह दिनकी छुट्टी लेकर घर जा रहे है। उन्होने बताया कि बिहारमे जो मुसलमान लौटकर नही आते थे और जिन्हे हिंदू पहले डराते थे वे भी अब लौट आए है, क्योकि समझानेपर हिंदू अपना धर्म समझ गए और उन्होने मुसलमानोके स्वागतके लिए लगातार दो दिनतक परिश्रम करके उनका रास्ता साफ किया और जो झोपडियां ढह गई थी उनके बनानेमे भी योग दिया। दूसरे देहातोमे भी ऐसा ही अच्छा काम हुआ है।

अगर ऐसा ही चलता रहेगा तो बिहारके भागे हुए सभी मुसलमान लौट आयगे। उन्हे पैसेकी मदद तो सरकार देती है, पर हिंदुओको चाहिए कि उन्हे डरानेवालो, रोडा अटकानेवालोको वे समझावें। तब यह काम बन जायगा।

सार यह कि आजकल जो 'काटो-काटो' की पुकार मची है उसके

बीच भी अच्छे आदमी पडे है। हरेक मुसलमान, हरेक सिख, हरेक हिदू खराब नही है।

जिस तरह बिहारमे अमन हुआ है इसी तरह डेराइस्माइलखामे और सीमाप्रातमे भी शाति होनी ही है।

अगर जिन्ना साहबने जो लिखा है, सही लिखा है, तो उन्हे वहाकी हुल्लडबाजीको रोकना ही है। फौजके रोकनेसे वह हुल्लडबाजी रुकनेवाली नही है। लोगोको समझानेपर ही वह रुक सकती है। नही रुकती तो उसका मतलब है या तो लोग जिन्ना साहबकी मानते नही, या जिन्ना साहब उसे रोकना नही चाहते।

लेकिन हम जिन्ना साहबके बारेमे उल्टी बाते क्यो सोचे ? जरा काम होता नही दीखता तो दिलमे शक पैदा हो ही जाता है। अगर मै किसी बातपर दस्तखत करू और उससे उल्टा ही काम कर बैठू तो वह शककी बात हो ही जायगी। इस तरह यहा भी शक हो जाता है। लेकिन हमे आखिरतक देखना होगा कि जिन्ना साहब क्या करते है।

: १७ :

६ मई १९४७

प्रार्थनाके समयतक गाधीजी जिन्ना साहबके यहासे लौटकर नही आ सके थे। उनके आदेशानुसार ठीक साढे छ बजे प्रार्थना शुरू की गई और जनतासे पूछा गया कि आज कुरानकी आयत बोली जाय या नही ? इसपर सिर्फ एक आवाज आई कि 'नही।' तब दो मिनिटतक मौन प्रार्थना हुई। तत्पश्चात् गाधीजीका कलका लिखा हुआ यह सदेश सुनाया गया, जो वर्षाके कारण कल नही पढा जा सका था

मै पापात्मा शैतानके हाथोमे--अपनेको--बचानेके लिए परमात्माकी शरण लेता हू।

हे प्रभो ! तुम्हारे नामको ही स्मरण करके मै सारे कामोको आरभ करता हू। तुम दयाके सागर हो। तुम कृपामय हो, तुम अखिल विश्वके

स्रष्टा हो, तुम ही मालिक हो। मै तुम्हारी ही मदद मागता हू। आखिरी न्याय देनेवाले तुम्ही हो। तुम मुझे सीधा रास्ता दिखाओ, उन्हीका चलनेका रास्ता दिखाओ जो तुम्हारी कृपादृष्टि पानेके काबिल हो गए हैं; जो तुम्हारी अप्रसन्नताके योग्य ठहरे, जो गलत रास्तेसे चले है, उनका रास्ता मुझे मत दिखाओ।

ईश्वर एक है, वह सनातन है, वह निरालब है, वह अज है, अद्वितीय है, वह सारी सृष्टिको पैदा करता है, उसे किसीने पैदा नही किया है।

यह कुरानशरीफकी आयतोका तरजुमा है जो कि प्रार्थनामे पढी जाती है। उसे पढनेकी शिकायत कोई कैसे कर सकता है, समझमे नही आता है। मै तो कहूगा कि इस प्रार्थनाको हम हृदयमे अकित करे तो वह बेहतर ही हो सकता है।

इससे अधिक आज नही कहूगा।

: १८ :

७ मई १९४७

प्रार्थना-सभामे आते ही गाधीजीने सबसे पहले श्रीमती उमादेवीके बारेमे पूछा कि क्या वे आई है ? वे वहा थी। बापूजीके कहनेसे उन्हे मच-पर उनके पास बैठाया गया। श्रीमती विभावरी बाई देशपाडेको भी गाधीजीने अपने पास बुलाया और कहा कि इन दोनो बहनोने कुरान-शरीफकी आयते पढनेका विरोध किया है। बीस आदमियोकी सहीवाले एक पत्रका कि दो-एक आदमियोके विरोध करनेपर सारी प्रार्थना रोकी नही जानी चाहिए उल्लेख करते हुए गाधीजीने कहा––ऐसा कहनेवाले बीस ही आदमी थोडे है ! मै तो समझता हू कि आप सब लोग (दो तीन हजारके करीब) जो विरोध नही करते और खामोशीके साथ रोज यहा बैठते है उन सभीके मनकी बात यही है, जो इन बीस आदमियोके दस्तखत वाली चिट्ठीमे लिखी हुई है।

लेकिन मै आपसे कहूगा कि आपको धैर्य रखना चाहिए । धर्मका पालन धैर्यसे ही किया जा सकता है। हिंदू-धर्मने सहिष्णुताको बडे महत्त्वका स्थान दिया है । शकराचार्य महाराजने तो धीरज रखनेकी बात यहातक बताई है कि 'एक तिनकेकी नोकपर बिदु-बिदु करके समूचे महासागरका सारे-का-सारा जल निकालकर उसे दूसरे गढेमे भर देनेमे जो धैर्य चाहिए उससे बढकर धैर्य मोक्ष पानेके लिए हमे धारण करना चाहिए।' अब आप कल्पना कीजिए कि तिनकेसे नही सही, लोटा भर-भरकर ही अगर एक आदमी समुद्र खाली करने बैठता है, और दूसरी ओर उतना बडा गढा उस पानीको भरनेके लिए उसे मिल भी जाता है और वह आदमी सैकडो-हजारो वर्षतक जिंदा भी रहता है तो शायद उस अपार जलराशिको वह सोख सकता है, लेकिन फिर भी जो नया पानी समुद्रमे आएगा उसका क्या होगा ? फिर समुद्र सोखनेमे उसके पास कितना धैर्य चाहिए ? अर्थात् शकराचार्यजीने मुमुक्षुके लिए असीम धीरज बनाए रखनेकी बात कही है। उनका कहना यह है कि हमारा एक पैर तो हिन-हिनाते घोडेकी रकाबमे फसा हो, दूसरेसे हम जीनपर उछाल मारने ही वाले हो और गुरुजीसे कहे कि 'गुरुजी, ब्रह्म क्या है, जरा बता तो दीजिए' तो वह ब्रह्म नही जाना जा सकता। यहा हम सब जो आए है, जिज्ञासु बनकर आए है, यानी हम लोग मुमुक्षु है । पर क्या इतना धैर्य धारण करनेकी शक्ति हमारे पास है ? अगर नही है तो भी प्रार्थनाभरके लिए तो हम धैर्य धारण करे। इसमे हमारी क्या अच्छाई होगी कि एक ओर तो बालक चीखता रहे और दूसरी ओर हम प्रार्थना करे ! ईश्वरको तो मनकी प्रार्थना चाहिए। मुहकी बातको ही मान लेने-जैसा वह भोला नही है। प्रार्थनाका मतलब यह नही है कि जिह्वासे जो उच्चारा जाय उसे ही प्रार्थना कहा जाय ! और उस उच्चारका आग्रह भी हम तब क्यो रखे, जब हमपर किसी प्रकारका खतरा न हो। क्या हम इतने आदमी एक बालकको दबाकर, उसे डरा-धमकाकर धर्मका पालन करेगे ? धर्मका पालन तो बालककी बातको सह लेनेमे ही होगा। मुझे इस बातकी खुशी है कि आपने इतनी बडी भारी सख्यामे होते हुए भी शाति रखकर धर्मका पालन किया है और अज्ञान बालककी बातको सहन किया है।

परतु आज तो बालककी बात नही, एक बहनकी बात है । मै देखता हू कि वह मेरी स्वीकृत लडकीसे भी कुछ छोटी है । वह एक मत्री महाशयकी धर्मपत्नी है । उसने जो चिट्ठी[1] भेजी है, उसीकी चर्चा मै आज पहले करूगा ।

इस चिट्ठीमे जो लिखा है उसमे हिंदू-धर्मका ज्ञान नही है, कोरा अज्ञान भरा है । इस तरह धर्मको बचानेकी जो चेष्टा की है वह वास्तवमे धर्मके पतनकी ही चेष्टा है । मै सभी हिंदू और सभी सिख भाइयोसे कहना चाहता हू कि वे ऐसे गलत रास्तेको न अपनावे । मै एक-एक करके इस बहनके प्रश्नोका उत्तर दूगा ।

(१) मदिरमे कुरान पढनेसे वह अपवित्र हो जाता है, यह कहना ठीक नही है । मदिरमें ईश्वरकी स्तुति करना, अधर्म कैसे हो सकता है ? कल यहापर हिंदीमे 'आोज अबिल्ला' का अर्थ सुनाया तो किसीने उसका विरोध तो नही किया ! क्या गीताका अनुवाद कोई अरबीमें सुनावे तो वह अधर्म हो जायगा ? ऐसा कोई कहता है तो वह अज्ञानी है । सीमा-प्रातमे एक नियम बना था कि कुरानका तरजुमा नही किया जा सकता, किंतु वहा अब डा० खानसाहब प्रधान मत्री है, जो समझदार है । उन्होने

---

[1] श्रीयुत महात्माजी, मै आपको यह सूचित कर देना चाहती हूं कि अन्तरात्माकी प्रेरणासे मैं आपके साथ प्रार्थनामें कुरान पढ़नेका निम्न कारणोसे विरोध करूंगी : (१) मदिरमें कुरान पढ़नेसे उसकी पवित्रता और मर्यादा नष्ट होती है । (२) कुरानको धर्मग्रंथ माननेवालोंने बंगाल, पंजाब आदिमें राक्षसी अत्याचार किए हैं, उसे देखते हुए कुरान पढ़ना-पढ़ाना हिंदुओके लिए मैं महान् पाप समझती हूं । (३) किसी मस्जिदमें गीता या रामायण पढ़नेका साहस आजतक आपने किया है, ऐसा मालूम नहीं देता ।

हिंदूधर्मसेविका
उमादेवी
धर्मपत्नी संचालक दैनिक राजस्थान समाचार
और मंत्री अखिल भा० देशी राज्य हिंदू महासभा ।

कहा कि कुरानका तरजुमा करनेसे तो उसका फैलाव होगा। उसे ज्यादा लोग पढेगे और समझेगे। यहा इसी मदिरमे खानसाहब नमाज पढते है तो क्या यह मदिर अपवित्र हो गया ? नमाजमे तो कुरानकी आयते बोली जाती है तो क्या उनका बोलना पाप कहाएगा ?

(२) यदि आप कहे कि मुसलमानोने पाप किया है, तो हिंदुओने कौन-सा कम पाप किया है ? बिहारमे जो हिदुओने किया वह आप लोगोको जानना चाहिए । वहा उन्होने औरतोको मार डाला, बच्चोको मार डाला, उनके मकान जला दिए और उन्हे अपने घरोसे भगा दिया। इसपरसे अगर कोई मुसलमान आवे और कहे कि भगवद्‌गीता पढने-वालोने पाप किया है तो वह कितनी गलत बात होगी। थोडे अशतक मै यह सुननेको तैयार हो जाऊगा कि मुसलमानोने अत्याचार किए है, पाप किया है । लेकिन मेरी समझमे यह नही आता कि कुरानको पढने-वाला पापात्मा है, इसलिए वह चीज भी पापमय है। इस तरहसे तो गीता, उपनिषद्, वेद आदि सब-के-सब धर्मग्रथ पापके ग्रथ साबित हो जाते है। गीतामेसे भी अलग-अलग अर्थ निकलते है। मै जो अर्थ करता हू उससे कई लोग बिलकुल ही दूसरा अर्थ लगाते है। मुझे गीतामे अहिसाकी ही बात दीखती है और दूसरे कहते है कि गीताने आततायीको मारनेका उपदेश दिया है। मै क्या उनके मुह बद करने जाऊ ? मै उनकी बात सुन लेता हू और मुझे जो सही लगता है, करता हू ।

(३) मैने मस्जिदमे गीता नही पढी है, वहा मै ऐसा नही करता, यह कहनेका मतलब तो यही हुआ न कि मै बुजदिल हू ? मान लिया कि मै बुजदिल हू और मस्जिदमे मुसलमानोके सामने अपनी प्रार्थना करनेसे डरता हू । लेकिन अगर मै एक जगह बुजदिल हू तो हर जगह क्या बुजदिल बनू ? क्या आप चाहते है कि मै यहा भी बुजदिल बनू ?

पर आपको यह मालूम होना चाहिए कि मै कई जगह मुसलमानोके घरमे ठहरता हू । वहा बडे आरामसे और बिना सकोचके नियमित प्रार्थना करता हू। और वहा, नोआखालीमे, जब मै घूम रहा था तो खास मस्जिद तो नही, पर बिलकुल ही मस्जिदके पास मैने अनेक बार प्रार्थना की है । एक बार तो मस्जिदके अहातेमे ही—मस्जिदके अदरके

मकानमे भी--मैंने प्रार्थना की है । वहा तो मेरे साथ पूरा साज-बाज रहता था। ढोलकी भी बजती थी और तालियोके साथ रामधुन भी होती थी। मस्जिदके अहातेमे जब प्रार्थना हुई तब मेरे पास ढोलक तो नही थी, परतु वहा भी तालियोके साथ रामधुन हुई थी । मै वहाके मुसलमान भाइयोसे कहता था कि जैसे आप रहीमका नाम लेते है वैसे ही मै यहा रामनाम लूगा। रहीमका नाम जो कहते है उन्हे रामनाम लेनेवालो-को रोकना नही चाहिए और उन्होने मुझे रामनाम लेनेसे रोका नही था ।

आप अत्याचारकी बात करते है। नोआखालीमे काफी अत्याचार हुए है, पर मै कहूगा कि नोआखालीमे मुसलमानोने इतने अत्याचार नही किए है जितने बिहारमे हिदुओके हाथो हुए है। मै इस बातका गवाह हू । मै नोआखाली भी गया हू और बिहारमे भी घूमा हू ।

मुसलमानोके पास जाकर मै प्रार्थना नही कर सकता, ऐसा जो कहे वह गाधीको नही जानता। यह बेचारी उमादेवी क्या जानती है कि गाधी किस मसालेका बना है। मै अपने लिए नही, इसकी बातपर लज्जित होता हू। उस मत्री महाशयके लिए लज्जित होता हू कि वह हिदू-धर्मसभाके मत्री होकर ऐसे घोर अज्ञानको अपनाए हुए है! जब समुदरमे आग लगेगी तो उसे कौन बुझायगा ?

पर सही बात तो यह है कि इनका विरोध उस प्रार्थनासे नही है, अरबी भाषासे है। कल जब आपको कुरानकी आयतका अनुवाद सुनाया गया था तब आपमेसे किसीको वह चुभा नही था। (फिर अनुवाद सुनाकर) लीजिए, मै सारी प्रार्थना (अोज अबिल्ला) पढ गया और वह इन बहनको भी चुभी नही। इसमे उन्हे कोई पाप नही दीखता। अगर दीखता तो वे मुझे क्यो पढने देती, रोक न लेती कि "चुप हो जाओ, हम यह सुनना नही चाहती।"

वह मुझे रोकेगी भी कैसे! ईश्वरकी मै और प्रार्थना कर ही क्या सकता हू? क्या वह यह चाहती है कि मै ईश्वरको 'अज' कहकर न पुकारू? उसको अमर न मानू? उसको निरालम्ब भी न कहू? या यह न कहू कि तू ही मालिक है? फिर मै प्रार्थनामे कहूगा ही क्या? तब वही बात जो हम प्रार्थनामे कहना चाहते है वह अगर अरबीमे कही

जाती है, तो वह पाप हो जाता है, ऐसा कहना कितने अज्ञानकी बात है। हमे इस घोर अधेरेमेसे बचना ही होगा।

तो हम ईश्वरसे प्रार्थना करे कि हे भगवान, तू हमे अधेरेसे बचा ले। हमारे हिंदू-धर्मने तो प्रार्थनाके शब्द भी ऐसे ही रखे है कि 'तू मुझे अधेरेसे उजालेमे ले चल' (तमसो मा ज्योतिर्गमय)। ऐसे अनुपम धर्मको हम न समझे और उसे पत्थर समझकर फेंक दे, यह मुझे बहुत बुरा लगता है। और यह बात दिलमे तब और भी ज्यादा चुभती है जब एक धर्मसेवककी पत्नी इस तरहसे धर्मको बिगाडनेपर तुल जाती है। हमारे यहा तो पतिका धर्म बहुत ऊचा माना गया है। पत्नीके विचारोको गलत रास्ते बहने न देना उसका कर्त्तव्य है। इन महाशयने तो अपनी पत्नीको भारी असहिष्णुताकी तालीम दी है। फिर धर्म कैसे टिक सकता है ?

अगर हम लोग ऐसे ही बने रहेगे तो हिदू-धर्म तो टिकनेवाला है ही नही, हिदुस्तान भी नही टिक सकेगा। अग्रेज इसे छोडकर चले जायगे तो भी हम हिंदुस्तानको नही बचा सकेगे। आजाद हिंदुस्तानमे तो हमे भाई-भाई बनकर रहना है। आजके दुश्मन कल दोस्त बनेगे। तब क्या आप अपने मुसलमान पडोसीको यह कहेगे कि 'कुरान मत पढो ?' क्या ऐसा कहनेमे ही हिदू-धर्मका दरजा बढ जायगा ?

इसलिए मै आपसे मौन प्रार्थना करनेके लिए कहता हू। यदि इतने सारे आदमी शात बैठकर प्रार्थना करते है, एक-दो व्यक्तिपर गुस्सा नही लाते तो हमारी शुद्धि हो जाती है, हम पवित्र बन जाते है।

आप लोगोको मालूम ही है कि कल मै जिन्ना साहबसे मिलने गया था। उनके साथ मेरी जो बाते हुई वह सब-की-सब तो बताई नही जा सकती। हम लोगोने आपसमे निर्णय कर लिया है कि हमारी बाते सिर्फ हमारे बीच ही रहेगी, और कही नही कही जायगी। फिर भी बादशाह खानको, पडित जवाहरलालको और जो हमारे नेता है, उनको तो मैने उन बातोका सार बता दिया है। यहा भी मै उसका थोडा-सा उल्लेख करूगा। हम दोनोने एक ही दस्तावेजपर दस्तखत किए है। उसमे दो बाते है। पहली यह कि राजनैतिक उद्देश्यकी पूर्तिके

लिए हम किसीको जोर-जबरदस्तीसे मजबूर नही करेगे । हरेक पक्ष अपनी बात एक-दूसरेको समझानेकी कोशिश करेगा और डराने-धमकानेका सहारा कभी भी नही लिया जायगा।

दूसरी बात लोगोको मार-काट और अत्याचारोसे रोकनेकी है। कल अखबारमे जिन्ना साहबके यहासे जो विज्ञप्ति निकली है उससे आप समझ गए होगे कि हमारे बीचमे राजनैतिक मतभेद पूरा है। जिन्ना साहब पाकिस्तान चाहते है। काग्रेसवालोने भी तय कर लिया है कि पाकिस्तानकी माग पूरी की जाय, लेकिन उसमे पजाबका हिंदू व सिखोका इलाका और बगालमे हिंदू-इलाका पाकिस्तानमे नही दिया जा सकता। केवल मुसलमानोका हिस्सा ही हिंदुस्तानसे अलग हो सकता है। लेकिन मै तो पाकिस्तान किसी भी तरह मजूर नही कर सकता। देशके टुकड़े होनेकी बात बर्दाश्त ही नही होती। ऐसी तो बहुत-सी बाते होती रहती है जिन्हे मै बर्दाश्त नही कर सकता, फिर भी वे रुकती नही, होती ही है। पर यहा बर्दाश्त न हो सकनेका मतलब यह है कि मै उसमे शरीक नही होना चाहता, यानी मै इस बातमे उनके वशमे आनेवाला नही हू। अगर वे पाकिस्तान बनाना चाहे तो वे अपने और भाइयोसे सुलझ ले। मै किसी एक पक्षका प्रतिनिधि बनकर बात नही कर सकता। मै सबका प्रतिनिधि हू। सारे हिंदुस्तानमे जितने हिंदू है, जितने मुसलमान है, जितने सिख और पारसी है, जैन और ईसाई है, उन सबका ट्रस्टी बनने-का मेरा प्रयत्न है। अगर ट्रस्टी नही बन सका हू या बनने लायक नही हू तो भी मै चाहता हू कि मै ट्रस्टी बनू। इसलिए मै पाकिस्तान बनानेमे हाथ नही बटा सकता। जिन्ना साहब जो करना चाहते है उसको पूरी तौरसे खतरनाक चीज समझते हुए यह कैसे हो सकता है कि मै उन्हे पाकिस्तानकी स्वीकृतिके दस्तखत दे दू। यह बात मैने धीरजके साथ उनको सुना दी। हम आपसमे लडे नही। माधुर्यसे ही हमने आपसमे बाते की।

मैने जिन्ना साहबसे अदबके साथ कह दिया कि हिंसाके बलपर वे पाकिस्तान नही ले सकते। वे मुझको पाकिस्तान देनेके लिए मजबूर नही कर सकते। मजबूर तो मुझे सिवाय ईश्वरके कोई कही भी नही कर

सकता। अगर समझा-बुझाकर वे लेना चाहे तो पाकिस्तान ही क्यो, सारा हिंदुस्तान भी ले सकते है।

शातिकी दरखास्तमे मै उनका साझीदार बना हू और इसको कार-आमद करनेके लिए मैने जिन्ना साहबसे कहा है कि 'मुझसे जितना काम आप लेना चाहे ले सकते है। जरूरत पडेगी तो इस बातके लिए हजार दफे भी मै आपके साथ चला आऊगा।'

मै आपको यह भी बता दू कि जिन्नाके पास जानेसे सभीने मुझे रोका था। सबने मुझसे कहा कि जिन्नाके पास जाकर उससे लाओगे क्या ? मै कहा कुछ लेनेके लिए उसके पास गया था ? मै तो उसके दिलकी बात जानने गया था। अगर मै वहासे कुछ लाया नही हू तो मैने वहा जाकर कुछ गवाया भी नही है। मेरा तो उनसे मित्रताका दावा है। आखिर वे भी तो हिदुस्तानके ही है। मुझे सारी जिदगी हर हालतमे उनके साथ बसर करनी है। मै कैसे उनके पास जानेसे इन्कार कर दू ?

हमे मिलकर ही रहना होगा। मिलकर रहनेके लिए भी किसीके ऊपर आपको बल-प्रयोग नही करना चाहिए। मै तो कहूगा कि वे लोग पाकिस्तान चाहते है तो वे हमे समझावे। औरोको भी वे समझावे कि पाकिस्तानमे सबका फायदा है तो जरूर ही उनकी बात मान सकता हू। लेकिन मजबूर करके वे मुझसे लेना चाहे तो मै 'हा' नही कह सकता।

आप पूछेगे कि हिदुस्तानका बटवारा क्यो नही होना चाहिए ? उसमे हानि क्या है ? तो मै बता सकता हू। मेरा दिमाग खाली नही है। उस बारेमे बहुत कुछ बाते मेरे दिमागमे है। पर वे बाते आप पढ-सुन ले। आज मै बहुत काफी समय आप लोगोको दे चुका।

अब मै कलकत्ता जा रहा हू। मै नही जानता कि वहा जाकर मै क्या कर पाऊगा, कितनी देर वहा रहूगा और कब लौटूगा। यहा मैने कह रखा है कि जब भी जवाहरलालजी, कृपलानीजी या वाइसराय भी, मुझे बुलवा भेजेगे, मै आ जाऊगा और मुझे आशा है कि आपके दर्शन मुझे फिर मिलेगे।

तबतक अच्छा हो कि आप समझ ले कि मुझे प्रार्थनासे रोकनेमे कोई फायदा नही हो सकता। मुझे तो खामोश रहनेका फायदा मिल जाता

है। आप जो लोग अपने गुस्सेको दबाकर शात रहे है उनको भी कम फायदा नही मिला है, पर रोडा अटकानेवाले घाटेमे ही है। आप लोगोको चाहिए कि आप उन्हे समझावे। आपको याद होगा कि उस बार जब प्रार्थनामे गडबड हुई थी हिदू महासभाके मत्रीने उन लोगोको समझाकर शात किया था, उसी तरह अब भी इन्हे समझावे। दबाकर नही, मारपीट-कर नही, पर खामोशीके साथ समझावे कि गाधी जो प्रार्थना करेगा उसमे धर्म ही है, अधर्म नही। अगर न समझे तो मुझे धीरज है। मै मौन ही प्रार्थना कर लूगा। इस मदिरमे भी अपने अकेलेमे वह प्रार्थना करूगा ही। परसोके दिन जब बारिश थी तब यह प्रार्थना भलीभाति हुई। वही यह मदिर था और वे ही हिदूभाई थे, पर आज फिर विरोध हो गया। यह है हमारी हालत, जो बिलकुल ही गई-गुजरी है।

इसलिए मेरी विनती है कि आप लोग अहिसक दृष्टिसे चेष्टा करके इन लोगोको इतना समझा दे कि वे मुझसे कहे कि खुले दिलसे हमारे साथ आप यहापर प्रार्थना कर सकते है। चाहे अरबीमे करे, फारसीमे करे या सस्कृतमे करे।

अब आप दो मिनट शाति रखकर मौन प्रार्थना करे। आखे भी बद हो तो अच्छा।

: १६ :

२५ मई १९४७[1]

भाइयो और बहनो,

आप जानते है कि प्रार्थनामे शाति रखनी चाहिए। आप लोगोने यहापर शातिका जो स्वाद चखाया है वह आपके जरिए‌से लोग सब जगह अपना रहे हैं। आपको यह जानकर खुशी होगी कि इस बार बगालमे बहुत बडी-बडी प्रार्थना-सभाए भी शातिसे हुईं। वैसे मै

---

[1] ८ मईसे २४ मईतक गांधीजी बंगाल और बिहार-प्रवासमें रहे।

जव प्रवास करता हू, लोग जमा हो जाते है और प्रेमके वश होकर जोरोसे नारे लगाते है, मानो चीखते है। मै इस प्रेमको समझ तो सकता हूं, पर अब मेरा शरीर इस शोर-गुलको बर्दाश्त नही कर सकता। मै आपको धन्यवाद देता हू कि आपने पिछली प्रार्थना-सभाओमे गडबडी होने-पर भी शाति बनाए रखी और औरोके लिए अच्छा उदाहरण पेश किया। जैसे बगालकी प्रार्थना-सभामे शाति रही वैसे ही बिहारमे भी रही। वहा तो बहुत अधिक लोग जमा हो जाते थे। ऐसी भारी गरमीमे मै हर जगह जा सकू ऐसा अब मेरा शरीर नही रहा है। इसलिए बिहारमे रोजाना घटा-डेढ घटा रेल या मोटरमे यात्रा करके मै अलग-अलग जगह चला जाया करता था और वहा प्रार्थना होती थी। एक जगह एक नदीके किनारे[१] करीब एक लाखसे भी ज्यादा लोग जमा हो गए थे। हर बार नए-नए आदमी वहा चले आ रहे थे और जय-ध्वनि करते रहते थे।

इसलिए इतना कोलाहल हो गया कि मै प्रार्थना न कर सका। लेकिन इस एक जगहके अलावा बिहारमे नियमसे मेरी प्रार्थना होती रही। बिहारकी सभा बगालसे भी बडी हुआ करती थी। वहाके लोग मुझे जानते है, लेकिन फिर भी मुझे देखने चले आते है। हम चालीस करोड लोग कहातक एक व्यक्तिको जरा देर देख-सुनकर याद रख सकते है? लोग मुझे देखनेकी हरदम इच्छा रखते है कि देखे तो सही कि गाधी कैसा है? आया उसके पूछ है, सीग है, या क्या है? और इस तरह अनगिनत आदमी वहा जमा हो जाते थे। यद्यपि वहा इतने थोडे मुसलमान है कि हिंदू शोर कर सकते थे कि हम अरबीमे प्रार्थना सुनना नही चाहते, पर वहा इतने बडे मजमेमे एक भी आदमीने ऐसा नही कहा। कहता भी क्यो? ऐसी कौन-सी वजह है जो मै कुरान न कह सकू।

आप भी यहा शाति रख रहे है, लेकिन आप शातिके साथ अशाति भी पैदा कर देते है। यहाकी ही तरह बगालकी सभामे भी एक लडकेने प्रार्थना रोकनेकी जुर्रत की, पर मैने सोचा कि यह तो अहिसाके नामपर हिंसा होने जा रही है। मैने उसकी वातपर ध्यान न दिया। वह समझ

---

[१] पटनासे छः मील दूर दानापुर नामक स्थानपर।

गया और शात हो गया। यह अच्छी बात थी कि वहा पुलिसने बीचमे दखल नही दिया था। वहा खादी-प्रतिष्ठानमे ही प्रार्थना हुआ करती थी और बहुत आदमी होनेपर भी हमेशा शाति रहती थी।

यहा प्रार्थनामे रुकावट डालनेका सिलसिला चला है। अब बहनोने चिट्ठी लिखना शुरू किया है। आज एक बहनका पत्र मराठीमे आया है। उसमे वह लिखती है कि आप मदिरमे कुरानका पाठ करे यह मुझे मान्य नही है, यानी वह कहना चाहती है कि आप लोगोको सबको यह मान्य नही है, क्योकि कुरान बोलनेवालोने हजारो स्त्रियो और वे गुनाहोपर अत्याचार किया है।

लेकिन अब मै इस रुकावटके कारण प्रार्थना छोड देनेवाला नही हू। अहिसा कोई चीज नही है जो किसी कामको पूरा होने ही न दे। अहिसाके नामपर हिसाका खेल होता रहे और मै उसे देखता रहू, यह मुझसे नही हो सकेगा। इसलिए अब अगर वह बहन कोलाहल मचायगी तो भी मेरी प्रार्थना चलेगी ही। मै उस बहन और उसके पति महाशयसे, यदि वे यहा हो, तो कहता हू कि ऐसी अविनय हमे शोभा नही देती। एकके कारण हजारोको हम तकलीफ दे! उनको प्रार्थना मान्य नही है तो उन्हे यहा आना नही चाहिए। फिर भी अगर वह बहन शोर मचायगी तो उसे भी कोई हाथ न लगायगा। वह निडर रहे। पुलिस भी अगर यहा हो तो वह भी उसे न पकडे। अगर उसकी या उसके दो-तीन साथियोकी आवाजे आती रहेगी तो उसको मै सहन कर लूगा और प्रार्थना करूगा। आप लोगोने भी बहुत सहन किया। मुझे उम्मीद है कि आप लोगोमे इस बहन-की-सी मान्यतावाले न होगे। अगर आप सब ऐसी मान्यतावाले हो तो फिर मै कहूगा कि प्रार्थना मेरे साथके ये लडके नही करेगे, मै खुद करूगा और आप सब मिलकर मुझ अकेलेको मार डाले। मै हँसते-हँसते राम-राम करते मरूगा। जब आप इतने सारे हो तब मै अकेला आपको मार तो नही सकता और न पुलिस ही आपको ऐसा करनेसे रोक सकती है। लेकिन मुझे आशा है कि इस बहनको छोडकर और कोई नही है जो कुरानके खिलाफ हो। मै आपसे कहूगा कि आप उस बहनकी चीख-पुकार-पर ध्यान न दे। कोई उसे छुए तक नही। प्रार्थना शातिपूर्वक होने दे।

(इसके बाद प्रार्थना हुई। सारी प्रार्थना होनेके बाद गाधीजीने

कहा.) मै उस बहनको मुबारकबाद देता हू कि उसने इतनी बातपर सतोष कर लिया कि मैने उसका पत्र आप लोगोको सुना दिया। कल भी यही सिलसिला चलेगा। विरोध करनेवालोकी बात सुना दी जायगी, पर प्रार्थना होगी ही। लेकिन मै आशा करता हू कि कल ऐसा कोई न होगा जो प्रार्थनामे बाधा डालना चाहता हो।

मै आपसे कहना चाहता हू कि बिहारमे हिदुओने कम गुनाह नही किया, यह आप समझ ले। वहापर नोआखालीका बदला ही नही, उससे ज्यादा किया गया। और फिर यह सिलसिला ऐसा चला कि डेराइस्मा-इलखा तक पहुच गया। बिहारके हिंदुओने जो अत्याचार किए उसपरसे मुसलमान अगर कहने लगे कि हम तुलसीदासजीकी रामायण नही पढने देगे, गीता, उपनिषद् या वेद भी नही पढने देगे, अगर आप उसे बोलना चाहे तो अरबीहीमे बोले तो क्या वह ठीक बात होगी? ऐसा कहनेवाले मुसलमानोसे मै पूछूगा कि गीता और रामायणने आपका क्या बिगाडा है और वेद जो प्राचीन-से-प्राचीन ग्रथ है, उसने क्या गुनाह किया है? रामचद्रजीने उसको क्या नुकसान पहुचाया है? यही बात कुरान और मुहम्मद साहबके लिए भी है कि उन्होने हमारा क्या बिगाडा है? इसलिए आप समझेगे कि चूकि मै रामायण तथा गीता पढना चाहता हू इसी वास्ते कुरान भी पढना जरूरी समझता हू।

अब आप यह सुनना चाहेगे कि मैने कलकत्ता और पटनामे क्या किया? कलकत्तामे क्या हुआ यह मै अभी पूरा नही बता सकता। वहा मै सुहरावर्दी साहबसे मिला और उनसे बाते की। अब देखना होगा कि उन बातोका नतीजा क्या आता है। जो कुछ हो, लोगोने इतना महसूस किया कि मेरे वहा जानेसे उन्हे कुछ तसल्ली मिली है। वहा शरत् बाबू भी कोशिश कर रहे है। पर अभीतक वहा मार-काट बद नही हुई है।

बिहारमे भी सुधार अधिक नही है, शरणार्थी लोग अपने घरोपर लौट रहे है, पर अभी न हिदू, न मुसलमान एक दूसरेके लिए बेखौफ हुए है। वे अबतक यह नही कह सकते है कि अब हमे डर नही है या अब हम कुछ ज्यादती करेगे ही नही। फिर भी वहाकी फिजा सुधर ही रही है, इसमे कोई शक नही।

अब सवाल यह है कि मै यहा क्यो आया ? सच बात यह है कि मै नही जानता कि क्यो आया ? लेकिन एक बात साफ है। मैने जब बरसो-तक काग्रेसकी सेवा की है तब वे लोग मुझे एक सेवकके नाते याद कर लेते है। वे मेरी बात सुनना चाहते है, फिर चाहे वे उसे माने या न माने।

लेकिन इतना मै आपको कह देना चाहता हू कि लदनकी तरफ देखनेका जो रवैया चल पडा है वह ठीक नही है। हमारी आजादी लदनसे आनेवाली नही है। हिंदुस्तानकी आजादीका कोहेनूर औरोके हाथोसे मिलनेवाला नही है। अपने ही हाथोसे वह लिया जा सकता है।

मै उस कोहेनूरकी बात नही करता हू जो लदन टावरमे रखा हुआ है, मै अपने देशके स्वतत्रतारूपी कोहेनूरकी बात करता हू। वह कोहेनूर हमारे पास आ रहा है। अब जी चाहे तो उसे हम फेक दे, या जी चाहे तो उसे अपनाकर अपने पास रख ले। जैसा भी कुछ करना हो वह हमारे अपने ही हाथकी बात है, दूसरेके हाथकी नही।

फिर हम माउटबेटन साहबकी ओर क्यो देखे ? क्या इस ताकमे रहे कि वे इग्लैडसे हमारे लिए क्या लायगे ? लेकिन हमारे अखबार तो उन्ही बातोसे भरे रहते है कि माउटबेटन साहब लदनसे यह लानेवाले है, वह लानेवाले है। हम अपने ही बलको क्यो न देखे।

दूसरे अल्पसख्यकोका क्या होगा ? मान लिया कि हिंदू, सिख आदि इग्लैडकी ओर नही झाकना चाहते, पर मुसलमान उन्हीकी ओर देख रहे है तो क्या फिर हिंदू-सिख भी उस ओर देखने लग जाय ? यदि वे देखे और उनकी कुछ सुनवाई माउटबेटन साहब कर भी ले तो दूसरे हिदुस्तानियोका क्या होगा ? पारसी, जो सख्यामे बहुत थोडे है, उनकी बात सुननेकी माउटबेटनको क्या पडी है ? और हिदुस्तानमे दूसरे भी कितने लोग है, जिन्हे न वाइसराय पूछते है, न दूसरे कोई।

इस हालतमे मेरा धर्म मुझको पालन करना है। यानी हिदुस्तानका धर्म हिदुस्तानको पालन करना है और इस तरह अपनी आजादी लेनी है।

आज हममे बाज लोग दीवाने बन गए है। सच्चा बननेके लिए ही आप और हम प्रार्थनामे आते है। सच्चा वननेके लिए चाहिए कि हम एकमात्र ईश्वरके ही गुलाम बने। और किसीके गुलाम

न बने। फिर आजादी हमारी अपनी ही है। क्या हम भी दीवाने बन जाय ? और जबतक वह चद दीवाने ठीक न हो जाय तबतक क्या आप यह चाहेगे कि माउटबेटन उनपर अपना अकुश रखे और यहा बने रहे ?

मै यह पसद नही करता। मैने दूसरी ही बात सिखाई है। मै यहा सन् सोलहमे आया और तबसे मैने कहा है कि हर कोई अपनेको देखे। अगर हम ऐसा करेगे तो इग्लैड ही क्या, अमरीका और रूस—तीनो मिलकर भी हमे मिटा नही सकते। हमारे जन्म-सिद्ध अधिकारकी जो चीज है वह हमसे कोई छीन नही सकता। आजादी हमारी है और हम सच्चे बनेगे तो उसे हमारे पास आना ही है।

: २० :

सोमवार, २६ मई १९४७

(लिखित प्रवचन)

मैने आजका भाषण लिख डाला। उसके बाद करीब पाच बजे कल-वाली बहनका खत आया है कि मैने वचनका भग करके कल प्रार्थना करवाई। मुझे ऐसा खयाल तक नही है। मैने विनय किया, विरोधियोकी रक्षाके लिए सयमका पाठ दिया। आपने उसे स्वीकार किया। अब भी ऐसे विरोधके कारण प्रार्थना बद करे तो विनय अविनय होगी और उदारता कृपणताका रूप लेगी। अहिंसाका यह लक्षण कभी नही है। इसलिए वह बहन माफ करे। प्रार्थना होगी।

मैने कल आपसे जो कहा था, आज वही चीज फिर दोहराता हू। सामूहिक प्रार्थना हमारा खास फर्ज है। इसे झटसे छोडा नही जा सकता। अगर सामूहिक प्रार्थनाके बारेमे कोई विरोध उठाता है और उसका ऐसा करना अपराध ही है—तथा उसपर हमला होनेका खतरा पैदा हो जाता है तो मूक प्रार्थना अच्छी है। आप लोग तो मेरी विनय सुनकर बराबर पूरी तरह शात रहे और उन विरोधियोको आपने नही सताया,

पर जब मैंने देखा कि हमारे इस सयमका दुरुपयोग होने लगा है तब मैंने दूसरा रास्ता अख्तियार किया। और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि विरोध उठानेवाली बहन भी शात रही। उनके मनमे कुछ भी हो, मै आशा करता हू कि शाति जारी रहेगी। इतनी सभ्यता तो हममे होनी चाहिए। आगेके लिए भी मै आपसे यह कहूगा कि अगर कोई विरोध करे तो आप अपनी प्रार्थना जारी रखे और साथ-ही-साथ विरोध करनेवालेकी ओर उदार रहे, रोष न करे।

मैंने कल आपसे कहा था कि हमे यह शोभा नही देता कि हम लदनकी ओर ताकते रहे। अग्रेज लोग हमे आजादी नही दे सकते। वे तो हमारे कधोसे उतर सकते है। ऐसा करनेका उन्होने वचन तो दिया ही है। आजादीको सम्हालना और उसे रूप-रेखा देना हमारा काम है। यह हम कैसे कर सकते है ? मै समझता हू, जबतक हिदुस्तानमे अग्रेजी राज है तबतक हम ठीक तरह नही सोच सकते। हिदुस्तानके नकशेको बदलना ब्रिटिश सरकारका काम नही है। उसका काम तो यह है कि वह अपनी निश्चित की हुई तारीखके दिन या उसके पहले चली जाय। हो सके तो हिदुस्तानको अच्छी तरह अपना कारबार चलाते हुए छोडकर जाए, मगर अराजकताका खतरा हो तो भी उसे तो चला ही जाना है।

एक और कारण भी है कि आज हिदुस्तानकी शकलमे किसी किस्मका फेर-फार न किया जाय। कायदे आजमने और मैंने एक अपील निकाली है कि राजनैतिक मकसद हासिल करनेके लिए हिंसाका इस्तेमाल न किया जाय। अगर उस अपीलके बावजूद लोग पागल बनकर बडी किस्मकी हिसा करते रहे और ब्रिटिश सत्ता उसके सामने झुक जाय, यह समझकर कि एक दफा पागलपन निकल जानेपर सब ठीक हो जायगा तो वह यहा खूनी विरासत छोड जायगी और सिर्फ हिदुस्तान ही नही, सारी दुनिया उसे गुनहगार मानेगी। मै हरेक देशप्रेमीसे और ब्रिटिश सत्तासे भी, अनुरोध करूगा कि कितनी भी हिंसा हो तब भी वह कैबिनेट मिशनके पिछले सालके १६ मईके दस्तावेजपर कायम रहकर हिदुस्तानको छोड दे। आज ब्रिटिश सत्ताकी मौजूदगीमे खून,

बलात्कार, आग और उससे भी बुरी बातें देखकर हम नीचे गिरते जा रहे हैं। जब अंग्रेजी सत्ता चली जायगी तब मेरी उम्मीद है कि हममें साफ विचार करनेकी ताकत आवेगी और तब हम जैसा ठीक समझते होंगे एक हिंदुस्तान रखेंगे या उसके दो या ज्यादा टुकड़े करेंगे। और अगर हम तब भी लड़ते ही रहेंगे तो भी मुझे यकीन है कि हम आजकी तरह नीचे नहीं गिरेंगे, हालांकि हिंसाके साथ कुछ-न-कुछ गिरावट तो होती ही है। मैं तो निराशामें भी आशा रखता हूं कि आजाद हिंदुस्तान दुनियाको हिंसाका और एक नया पाठ नहीं पढ़ायगा। वह पहले ही बुरी तरह बेजार है।

: २१ :

२८ मई १९४७

भाइयो और बहनो,

उस महाराष्ट्रीय बहनका लंबा खत आज भी आया है। इसमें उसने शिकायत की है कि स्वयंसेवकोंने उसे रोककर उचित नहीं किया। उसने यह भी लिखा था कि कुरानमें गैर-मुस्लिमोंको मारनेकी बात लिखी है, इसलिए उसे नहीं पढ़ना चाहिए। कुरान मैंने पढ़ा है और उसमें कहीं भी ऐसा नहीं लिखा है, बल्कि उसमें तो लिखा है कि गैर-मुस्लिमोंसे भी मुहब्बत करो। उसके पढ़नेवाले इस बातको न मानें तो कुरानका क्या दोष? हमारे यहां भी तुलसी-रामायण, गीता, वेदमें जो लिखा है उसका पालन कौन करता है?

मैं धर्मके नामपर अधर्म करना नहीं चाहता। मैं एक-एक शब्द ईश्वरसे डरकर मुंहसे निकालता हूं। मुझे उस बहनके लिए दर्द हो रहा है कि वह जो बात जानती नहीं वह क्यों लिख रही है? क्यों वह दूसरेके कहनेसे मान लेती है कि कुरानमें यह लिखा है, वह लिखा है? किंतु आप [illegible] रहें। उसके विरोध करनेपर भी प्रार्थनामें ध्यान दें। अगर आप सब उसकी [illegible] रहेंगे तो मैं अकेला ही मनमें ईश्वरकी प्रार्थना करूंगा।

उस पत्रमे दूसरी शिकायत यह थी कि पुरुष स्वयसेवकोने उसको हाथ लगाकर हटाया था। इसपर मेरा कहना यह है कि मेरी दृष्टिसे इसमे कोई हर्जकी बात नही है। स्वयसेवकोका धर्म है कि गडबडी मचानेवालेको, फिर वह स्त्री हो या पुरुष, 'रोके । हा, स्त्रीपर वे हाथ न चलावे, मारे नही। ठडे दिमागसे समझावे। जब मनमे किसी किस्मका विकारका भाव न हो तब स्त्रीको छू देनेभरसे कोई पाप नही हो जाता। मै भी लडकियोंके कधोपर हाथ रखकर चलता हू, तो क्या मै गुनाह करता हू ? मेरी तो ये सब बेटी-जैसी है। अगर मेरे मनमे मैला विचार पैदा हो तो वह जरूर पाप कहलायगा। स्वयसेवक भी जब सभाकी व्यवस्था करे तो हरेकको अपनी माता या बहन समझकर सभामे आनेवाली बहनोसे बरताव करे । जैसे पुत्र अपनी माताको छुए, वैसे वह भी छू सकता है, यह उसका कर्त्तव्य है ।

(इसके बाद प्रार्थना शुरू हुई। तब उस बहनने कहा, "बद करो प्रार्थना, बद करो।" सुनकर गाधीजी मुस्करा दिए और प्रार्थना चलाते रहनेका आदेश दिया।)

प्रार्थनाके बाद गाधीजीने कहा—आज समय तो काफी हो गया है, अत मुझे जो कहना है जल्दी ही पूरा करूगा ।

आप तो जानते है कि मै बिहारमे काम करता हू । वहा मुसलमान बहुत कम है। मुश्किलसे चौदह फी-सदी होगे । उधर नोआखालीमे हिदुओकी तादाद इसी तरह कम है। नोआखालीके कामके सिलसिलेमे मै बिहार चला गया।

बिहारमे जो भाई काम कर रहे है उनकी तरफसे टेलिफोन आया है कि अभी वहा जूनकी बात चल पड़ी है। इसी तरह पहले भी जब विधान-परिषद् होनेवाली थी तब नौ तारीखके बारेमे डर पैदा हो गया था और हर जगहसे पत्र आते थे कि हम क्या करे। नोआखालीमे तो यहा-तक धमकी दी जा रही थी कि पिछले (नवम्बरके) दगेमे कई हिदुओको जिदा ही छोड दिया गया था, पर अबकी बार तो सारे-के-सारे हिदुओ-को मुसलमान बना दिया जायगा। तब मैने उनसे पूछा था कि आप चाहे तो मै वहा पहुच जाऊगा और वहापर अधिक क्या कर सकूगा, अपनी

अकेली जान ही दे सकता हू। पर उन लोगोने मुझे नही बुलाया और अगर आफत आए तो उसे झेलनेको वे तैयार हो गए। असलमे मै तो मानता ही नही कि सारे-के-सारे हिदुओको मुसलमान बनानेकी बात कभी भी कामयाब हो सकती है।

उसी तरह बिहारमे भी मुसलमानोको डरनेकी कोई बात नही. दो जूनकी हम फिक्र क्यो करे ? हम क्यो सोचे कि वाइसराय लदनसे क्या ला रहे है ? माना कि वाइसराय साहब हमारे लिए वहासे लड्डू ला रहे है तो भी मै तो कह चुका कि वह हमारे किस कामका है ? हमारे कामकी चीज तो वही होगी, जो हमने अपने आप पैदा की होगी।

मै पूछता हू, बिहारके मुसलमान क्यो डरे ? हिदुओको भी, जो राम-राम रटते है, उन्हे अपने रामकी कुछ परवाह होगी कि न होगी ?

इसी प्रकार सिधके हिदुओको डरनेका क्या कारण है ? क्यो डरे ? वहासे मेरे पास खत आया है कि हिदू डर रहे है। डर छोडकर वे 'राम-राम' क्यो नही करते ? वहाके लोग मुझे बुलाते है। मै कई बरससे सिध नही गया हू, पर सिधी भाइयोसे मेरी इतनी घनिष्ठता रही है कि एक बार मै अपनेको सिधी कहा करता था। दक्षिण अफ्रीकामे भी मेरे साथ सिंधी लोग थे। सिधी, मारवाडी, पजाबी सभीने मेरा साथ दिया है। उनमे ऐसे भी थे जो शराबतक पीते थे और दूसरी चीज भी खाते थे। उन चीजोको छोडनेमे वे अपनी मजबूरी महसूस करते हुए भी अपनेको हिदू बताते थे। उन सबसे मेरी दोस्ती थी। उनमेसे एक भाई लिखते है कि क्या तुम मुझे व सिधको भूल गए ? पर मै कैसे भूल सकता हू।

सब जगह लोग डर रहे है कि दो जूनको क्या होगा। कहा जा रहा है कि मुसलमान भाई बहुत-बहुत तैयारिया कर रहे है। लेकिन वे क्या तैयारी कर रहे है ? क्या हैवान बननेकी तैयारी कर रहे है ? क्या वे मस्जिदमे जाकर इबादत नही करते कि खुदा सबको इन्सान बनाए ? हिदू भी कोई ऐसी खबर नही लिख भेजते कि वे एकातमे बैठकर ईश्वरसे कहेगे कि वह हिंदुस्तानसे अग्रेजोको चले जानेकी सुबुद्धि दे और सभी मुसलमान भाई जिन्हे पागलपन छू गया है उन्हे सयाना बनाए।

पजाबमे भी वे डरते है, क्योकि वे तादादमे कम है । वहा हिंदुओके साथ सिख भी है। सिख क्यो डरे? दोनो ओर ऐसी बात क्यो हो कि न जाने कौन पहले तलवार उठायगा ।

बिहारमे अगर हिंदू लोग मुसलमानोको मारेंगे तो वे मेरा कत्ल करेंगे। मै तो कहता हू कि बिहारके मुसलमान मेरे सहोदर भाई है। वे मुझको देखकर खुश होते है। उनको यह यकीन हो गया है कि यह एक शख्स तो हमारा अपना ही है। उनको अगर कोई मारता है तो वह मुझे मारता है। अगर उनकी बहन-बेटीका अपमान करता है तो वह मेरा अपमान करता है। यह बात मै इस मचपरसे बिहारके सभी हिंदुओको सुना देना चाहता हू ।

और मुसलमानोको वहा डरनेका क्या कारण है? दो अच्छे मुसलमान सेवक उनकी सेवा कर रहे है। फिर वहाके मत्रिमडलमें श्रीकृष्ण सिनहा है, जो पूरे सजग है।

आजकल एक अफवाह यह चल पडी है कि गाधी बिहारमे रहकर हिंदुओको कटवाना चाहता है, पर मै बुलद आवाजसे कहता हूं कि सब-के-सब मुसलमान पागल बन जाय तब भी हिंदू पागल न बने।

सिख भाई तो अपने लिए कहते है कि एक सिख सवा लाखके बराबर होता है और पाच सिख छ लाखके बराबर। उनका ऐसा कहना मुझे अच्छा लगता है। ग्रथ साहब और गुरु जैसे उनके है, वैसे मेरे भी है। मैं जब अपनेको मुसलमान बताता हू तब अपनेको सिख बतानेमे मुझे लज्जा किस बातकी? और सिखोने तो ननकाना साहबमे सत्याग्रह और शूर-वीरताका बडा काम किया है। लेकिन आज वे तलवारकी ओर देख रहे है।

वे यह नही समझते कि कभी तलवारका जमाना था तो भी अब वह चला गया है। वे नही जानते कि आज तलवारके भरोसे वे किसीको जिंदा नही रख सकते। यह एटमबमका युग है ।

गुरु गोविंदसिहने जब तलवारकी बात सिखाई तबकी बात आज नही चल सकती। हा, उनकी सीख आज भी कामकी है कि एक सिख सवा लाखके बराबर है। लेकिन वह ऐसा तब होगा जब वह अपने भाईके लिए और सारे हिंदुस्तानके लिए मरेगा।

ऐसी बहादुर औरतें भी हुई हैं। एक जगह सब मर्द मारे गए और उनकी मदद मिलनेकी आशा नही रही तब वे चुपचाप तावे होनेके बजाय खुद मर गई। यह सच्ची बात है। करीब पचहत्तर बहनें इस तरह मर मिटी। उन्होने अपने हाथसे अपने बाल-बच्चोको पहले कत्ल किया, क्योकि वे नही चाहती थी कि दूसरे लोग उनके बालकोको सताए।

मै कहूगा कि मुसलमान हो या हिंदू, जिसने इस तरह किया है, उसका ही धर्म जिंदा रहा है। सिखोसे भी मै कहूगा कि जब आप एक-एक सवा लाखके बराबर है तब ईश्वरका ध्यान करके 'सतश्री अकाल' का नारा लगाते हुए आप मर जाय। इससे ज्यादा और बहादुरी क्या हो सकती है?

मुझको भले कोई बुजदिल कहे, मै बुजदिल हू यह तो ईश्वर ही जानता है। पर बुजदिल आदमी भी अगर बहादुरीकी बात सिखाता है तो वह सीखनी चाहिए। मै किसीको बुजदिल बनाना नही चाहता। न मैने किसीको बुजदिल बनाया है और न मै बुजदिल हू।

: २२ :

२८ मई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज किसी बहन या भाईने उपद्रव नही मचाया और न विरोध ही किया, यह मुझे अच्छा लगा। मुझे तो यकीन है कि दीवानापन रोज नही चल सकता। यही बात हिंदू-मुस्लिम झगडेके लिए भी है। मेरे पास खत चले ही आ रहे है। कुछ भले खत भी आते है। कई मुसलमान भले है जो लिखते है कि हिंदू और मुसलमानका धर्म अलग हुआ तो क्या हुआ? इस कारण उनके दिल तो अलग नही होने चाहिए। कुछ हिंदू भी ऐसे है जो मुझे धकमिया देते है कि कुरानसे बोलना आप बद नही करेंगे तो हम आपको देख लेंगे। आपके यहा

काली झडिया लेकर हम आएगे[1]। और आकर वे करेगे क्या ? हवा ही ऐसी है कि न कुछ सुनना, न कुछ देखना, बस चीखते रहना। वे भी उसी तरह प्रार्थनामे दखल देगे। लेकिन ऐसा होगा तो भी जबतक आप लोग शातिसे साथ दे रहे है, हमारा प्रार्थनाका सिलसिला चलता ही रहेगा और अगर आप सभी लोग काली झडिया लेकर आवेगे तो फिर मै अकेला प्रार्थना करूगा। आप मुझे पीटेगे तो भी मै राम-राम करता रहूगा। अगर मै आपसे बचनेके लिए पुलिस रखू, तलवार-बदूक चलाऊं तो भी अखीरमे तो मुझे मरना ही है। तो फिर मै राम-राम करते ही मरू तो क्या बुरा है। जब मै इस तरह मर जाऊगा तब आप पछतायगे। आप अपनेसे ही कहेगे कि हमने क्या कर डाला, इसको मारकर कुछ पाया तो नही, पर यदि मै पुलिस रखू या आपको पीटू तो आप मुझे मारकर यही कहेगे, अच्छा हुआ जो इसे मार डाला। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप तो जिस तरह आए है उसी तरह शात रहेगे।

आज मै आपको कुछ प्रश्नोके उत्तर दूगा। सबके उत्तर तो आज नही दे सकता। कल एक भाईने पूछा था कि अगर कुत्ता पागल हो जाय तो क्या किया जाय ? क्या उसे मारा न जाय ? यह अजीब प्रश्न है। पूछना तो यह चाहिए था कि इन्सान पागल हो जाय तो क्या किया जाय ? पर बात तो यह है कि अगर हमारे दिलमे राम है तो कुत्ता भी हमारे सामने पागल नही बन सकता। लेकिन एक बार मेरे एक भाईने मेरे पास आकर कहा, 'कुत्ता पागल हुआ है। काटता फिरता है, उसको क्या किया जाय ?' मैने कहा कि मेरी जिम्मेदारीपर उसे मार दिया जाय, पर वह थी कुत्तेकी बात। इन्सानके पागल होनेपर वह बात नही चलती। मुझे याद है, जब मै दस वर्षका था, मेरा भाई दीवाना बन गया था। बादमे वह अच्छा हो गया। अब तो वह नही रहा, पर मुझे उसका स्मरण आज भी उतना ही ताजा है। पागलपनमे वह सबको

---

[1] गुजरातके पाकिस्तानविरोधी मोर्चेवालोंने गांधीजीको चेतावनी दी है कि यदि आठ दिनमें आप अपना मुस्लिमपरस्तीका रवैया नही बदलेंगे तो हम आपके दिल्ली-निवासस्थानपर काली झडियां लेकर आवेंगे।

मारनेको दौडता था, लेकिन मै उसे क्या करता? मारता? या मेरी मा या पिताजी उसे मारते ? घरवालोमेसे किसीने उसे नही मारा। वैद्यराजको बुलाया गया और उनसे कहा गया कि उसको बिना मारे जो कुछ इलाज किया जा सकता है वह किया जाय। वह मेरा सगा भाई था। लेकिन अब मेरे पास वह भेद नही रहा। आप सब मेरे लिए सहोदर भाईके समान ही है। अगर आप सब पागल बन जायं और मेरे पास फौज मौजूद हो तो क्या मै आप सबपर गोली चलवा दू? दुश्मन भी अगर पागल बन जाय तो उसपर गोली नही चलाई जा सकती। जो पागल बनेगा उसे पागलखानेमे भेजना होगा। आपको मालूम होना चाहिए कि हिंदुस्तानमे बहुतसे पागलखाने है। मैने अपनी आखो ऐसे पागल देखे है जो सचमुच गोलीसे मार देनेके लायक होते है, पर हम उनको डाक्टरके हाथमे छोडते है।

मेरे एक नजदीकी मित्र थे जो मेरे भाईके बराबर थे। उनका लडका पागल हो गया। वह दूसरोका खून करनेतक हावी हो जाता था। उसके लिए मैने नही कहा कि उसे गोली मार दो। मै चाहता तो उसे मरवा सकता था, क्योकि महात्मा कहा जाता था। हमारे यहा महात्मा कहलानेवालेको सब कुछ करनेका अधिकार है। वह खून करे, व्यभिचार करे, चाहे जो करे, उसे माफ हो जाता है। उसे पूछनेवाला कौन होता है? लेकिन मुझे तो ईश्वरका डर था। मैने सोचा, ईश्वर तो तुम्हे पूछेगा ही। सच बात तो यह है कि आज कोई महात्मा तो हमारे बीच है ही नही, सभी अल्पात्मा ही है।

खैर, मैने उस लडकेको डाक्टरके यहा भिजवा दिया। वहासे भी वह भाग आया। अभीतक उसका पागलपन गया नही है। उसके बाल-बच्चे भी है। सभी घरवाले उसे बर्दाश्त करते हैं। मेरे मित्रके उस लडकेकी तरह ही हमे इस सब पागलपनका उपाय सोचना चाहिए।

आज हमारा खून खौल रहा है। चारो ओरसे बाते आ रही है कि न जाने २ जूनको क्या होगा? पहले चार-पाच जगह दगा हुआ, अब सभी जगह हिंदुओका खून करनेकी चर्चा है और हिंदू कहेगे कि जब मुसलमान मारते है तो हम भी क्यो न मारे? और फिर खूनका दरिया

बहा देगे ! यह पागलपन नही तो क्या है ? मुझे भरोसा है कि आप लोग जो इतनी शातिसे यहा बैठे है ऐसे पागल नही बनेगे । जो पागल बने है और हमे मारना चाहते है उन्हे हम मारने देगे । हम मर जायगे तो उनका पागलपन अच्छा हो जायगा ? आजकल जो पागलपन फैला है वह ऐसा नही है, जो बातको समझे नही । अगर सच्चा पागल भी छुरी हाथमे लिए आता है तो हम खतरा उठाते है, उससे डरते नही है । इसी तरह मुसलमान भी अगर तलवार उठाकर आते है और पाकिस्तान मागते है तो मै कहूगा--'तलवारके जोरसे पाकिस्तान नही ले सकते । पहले मेरे टुकडे कीजिए और बादमे हिंदुस्तानके ?' यदि सब इसी प्रकार कहेगे तो ईश्वर उनकी तलवारके टुकडे कर डालेगे।

मै तो मिस्कीन आदमी हू, लेकिन ऐन मौकेपर आप मेरी बहादुरी देखेगे । उस समय मै किसीकी लाठीके मुकाबले लाठी नही चलाऊगा । मै चाहता हू कि पागलके सामने हम पागल न बने । हम समझदार रहे तो सामनेवालेका पागलपन चला जायगा। उनका पाकिस्तान भी चला जायगा । अगर पाकिस्तान सच्चा होगा तो वह सारा हिंदुस्तान ही होगा ।

अगर हम पागल बनेगे तो अग्रेज पूछेगे कि क्या अहिंसा हमारे ही लिए थी ? आपसमे आप तलवार खीचते है। कहा गई वह अहिसा ? फिर कहेगे कि अहिसावालोसे हम अग्रेज अच्छे थे, जो मारा तो सही, पर अमन रखा। उनको तो राज चलाना है। इसलिए ऐसी बात कहेगे। लेकिन मै उनसे कहूगा कि वे ऐसा न कहे। उन्हे तो जाना ही है और हमारी अहिसाकी लडाईके कारण जाना है । यहा करोडो लोगोने अहिंसाकी बहादुरी बताई। आपने अग्रेजी झडेको सिर नही झुकाया, आप जेल गए, आपने अपने घर बरबाद होने दिए । तब जाकर आज हम आजाद हो रहे है। पर अब उस बहादुरीके जरिएसे हम आजाद होनेकी बात नही करते । आज हम ऐसा काम करने लग गए है कि हिंदुस्तान-पर सब हँसे और थूके ।

ऐसा हम हरगिज नही करेगे। आप किसीको मारेगे नही, मर जायगे तभी आप सच्ची आजादी पायगे ।

माउटबेटन आ रहे है। वे क्या लायगे, यह सोचकर सब डर रहे

है। अगर वह हिंदुओंको कुछ देते हैं तो मुसलमान पागल क्यों बने ? और मुसलमानोंको दे तो हिंदू क्यों डरे ? हम उनकी ओर न देखें, २ उनको न देखें, अपनी ओर ही देखें।

अगर वे कुछ न देंगे तो क्या सब पागल बन जायंगे ? ऐसे पागल कि बुड्ढों, बच्चों और औरतों सभीको काट डालें !

दूसरा प्रश्न यह है कि अंतरिम सरकारके अंदर जो लोग हैं वे अंग्रेजोंके नचाए क्यों नाचते हैं? क्या हिंदमें तीन ही कौमें हैं—हिंदू, मुस्लिम और सिख ? वे पारसीको क्यों नहीं बुलाते ? क्या इसलिए नहीं बुलाते कि उनके पास तलवार नहीं है? पारसीको भी बुला लें तो ईसाइयोंने क्या गुनाह किया है ? फिर यहूदियोंको क्यों नहीं बुलाते ? प्रश्नकर्त्ताका लिखना ठीक ही है। मुझे भी इस बातका दर्द होता है ! कांग्रेस तो सबके लिए है। कांग्रेसका सभी लोग साथ देते हैं। फिर कांग्रेस बुजदिल क्यों बनती है ? कांग्रेस कोई अकेले हिंदुओंकी नहीं है। सच है कि उसमें बहुत बड़ी संख्यामें हिंदू हैं, पर दूसरे भी तो हैं। यदि हिंदू, मुसलमान और सिख आपसमें फैसला कर लेंगे तो क्या पारसियोंको दबा देंगे ? यहूदी और दूसरे भी जो लोग हैं वे मर जायंगे ? उन सबका समाधान हो जानेपर औरोंका क्या करेंगे ? उनको छोड़ देंगे ? फिर वे सब कहेंगे कि हमने जो पहले कांग्रेसका साथ दिया तो क्या इस दिनके लिए ? क्या कारण है, जो वाइसराय केवल अंतरिम सरकारके चंद आदमियोंसे ही सारी बातें करें ? क्या इसलिए कि जवाहरलाल बहुत बड़े आदमी हैं ? या सरदार बारडोलीके बहादुर हैं, राजेंद्र बाबू बहुत पढे हुए हैं और राजाजी बड़े बुद्धिमान हैं ?

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि कांग्रेसमें वे ही नहीं हैं आप सब हैं। जिन्होंने कांग्रेसको मदद दी और उसके लिए काम किया वे सब हैं। जो लोग डेपुटेशनमें नहीं जाते जो बोलते नहीं हैं वे सब लोग भी इसमें हैं। अगर तीनों कौमें मिलकर कुछ तय कर लें और दूसरोंकी परवा न करें तो वह बड़ी बुरी हालत होगी और बाकी लोगोंकी हमपर आह पड़ेगी। इसलिए हम समझें कि जितना हम करें वह सब जातियोंके लिए करें।

जब मुसलमान भी इस बातको समझ जायंगे तब सब काम अच्छा

हो जायगा। और तब हमारा—मेरा व जिन्ना साहबका—दस्तावेज ठीक मान लिया जायगा कि राजनैतिक मकसदके लिए हिसा नही करनी चाहिए।

: २३ :

२६ मई १९४७

भाइयो और बहनो,

जबतक प्रार्थना समाप्त न हो जाय और मै अपनी बात कहना खतम न कर लू तबतक आप मौन रहे। मै चाहता हूं कि मै जबतक यहा मौजूद हू और जिदा हू तबतक आप लोग जो रोज भक्ति-भावसे यहा आते है—जो केवल तमाशा देखने आते है उनकी बात जाने दीजिए—प्रभुका नाम लेनेमे मेरा साथ दे। और बादमे भी मेरी बात शातिसे सुने। आज जो मै कहनेवाला हूं, बड़ी कामकी बात है।

प्रार्थना समाप्त हो जानेपर गाधीजीने कहा—

आजके और २ जूनके बीच थोड़े ही दिन रह गए है। इन दिनो मैं रोज एक ही विषयके किसी-न-किसी पहलूपर बोलूगा जो आप लोगोके दिलोमे सबसे ज्यादा समाया हुआ है। आप लोगोने शाति और सयम रखकर मुझे अपनी ओर खीच लिया है और अपना दिल खोलकर रख देनेको वाध्य किया है। कितना अच्छा हो कि जो लोग अपनेको इस देशकी सतान मानते है वे ठीक तरहसे सोचे और बहादुरीसे चले। यह मुश्किल काम जरूर है, जब कि अखबारोमे पागलपनसे भरी हुई आग और मार-पीटकी भयकर खबरे छपती रहती है।

मै इस बातकी कोई चिता नही करता कि २ जूनको क्या होनेवाला है। या माउटबेटन साहब आकर क्या सुनायगे। मेरी ऐसी आदत ही नही है कि सरकार क्या कहेगी इसकी चितामे रहू। १९१५ मे मैं यहा आया, तबसे लेकर आजतक मैने ऐसा ही किया है।

मेरा जन्म तो यहीका है। २२ वर्षकी उम्रमे मै यहासे चला गया।

मानो मै वनवासमे रहा और बीस बरसतक दक्षिण अफ्रीकामे रहनेके बाद यानी अपनी असली जवानी बिताकर मै यहा लौटा। इस बीच मैने वहा कोई पैसे इकट्ठे नही किए। मैने शुरूमे ही समझ लिया था कि भगवानने मुझे ऐसा ही बनाया है कि पैसोकी ओर मै न जाऊ। पर उसकी खिदमत करू, ईश्वरने मुझसे कहा कि तू दूसरा काम करेगा तो सफल नही होगा। सेवाका तरीका गीताने मुझे यह बताया कि यह समझ कि मेरे पास जो है वह मेरा नही है, 'तेरा है' (ईश्वरका है)। तब प्रश्न यह सामने आया कि वह 'तू' (ईश्वर) कहापर है ? जवाब मिला कि ससारके सारे व्यक्तियोमे। यानी जो मनुष्य-जातिकी सेवा करता है वह ईश्वरकी सेवा करता है।

तब हम ईशोपनिषद्के उस मन्त्रपर आ जाते है जिसमे कहा है— 'सारा जगत ईश्वरसे ही भरा है।'

जब मै त्रावनकोरमे था तब रोजाना इस मन्त्रका अर्थ सुनाता था। उसमे आगे कहा है—'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्यस्विद्धनम्। यानी सब कुछ छोडकर काम कर, किसीका कुछ भी लेनेका लालच मत कर।

बात तो यह सादी है, बच्चा भी उसे समझ सकता है, पर वह उसका भेद नही समझ सकता। हम बडे है, हमे चाहिए कि उसका भेद समझे। इसलिए मैने आपको यह बडी बात सुना दी। इसका भेद अगर हम समझ ले तो फिर हम किसके लिए लडे ?

यह तो बडी बात हो गई, अब जो मै सुनाना चाहता हू उस बातपर आऊ। आज मैने थोडा कष्ट किया है। मेरे पास इतना समय कहा कि रोज मै अपने भाषणको अग्रेजीमे लिख दिया करू और हमारे अखबार जो अग्रेजीमे चलते है उन्हे तो मेरा भाषण छापना चाहिए ही, परतु हमारे अखबारनवीस उसे अग्रेजीमे किस प्रकार दे! वे बेचारे अग्रेजी पूरी तरह कहा समझ पाते है ? वैसे तो वे लोग बी० ए०, एम० ए० होते है, लेकिन इतनी अग्रेजी नही जानते कि मै जो हिंदुस्तानीमे कहता हू उसका सही मतलब अग्रेजीमे समझा सके! क्योकि वह भाषा उनकी नही है, दूसरोकी है। यहा तो मै हिंदुस्तानीमे कहूगा;

क्योकि वह तो करीब-करीब मेरी भी और आप सबकी पूरी तौरसे मातृभाषा है। इसलिए उसमे मै जो कुछ कहूगा यह आप सही-सही समझ सकते है। यह (डा० सुशीला नैयर) मेरे भाषणको अंग्रेजीमे कर तो लेती है, क्योकि वह खासा अंग्रेजी जानती है, फिर भी उसमे कमी रह जाती है। इसलिए आज मैने थोडा समय निकालकर अंग्रेजीमे लिख रखा है। यहा मै उसीको ध्यानमे रखते हुए बात कहूगा। परतु अखबारोमे वही छपेगा जो मैने लिख रखा है।

तो शुरूमे मै उस खतकी बात बता देना चाहता हू, जिसमे मुझे प्रार्थना चालू रखनेके बारेमे कोसा गया है और लिखा है कि झूठा है, ठीक तरहसे जवाब भी नही देता। ऐसा जो लिखते है वे बालक है। उम्रमे भले ही सयाने हो गए हो, पर बुद्धिमे बालक ही रहे है।

उनको मेरी यह बात चुभती है कि मै यही क्यो कहता हूं कि 'मरो', 'मरो'। ऐसा क्यो नही कहता कि पहले 'मारो-काटो और फिर मरो'। वे चाहते है कि मै हिंदुओसे तलवारका बदला तलवारसे और आगका बदला आगसे लेनेको कहू। लेकिन मै अपने सारे जीवनके विरुद्ध नही जा सकता और मानव-कानूनकी जगह पाशविक कानूनकी हिमायत करनेका अपराधी नही बन सकता। जब कोई मुझे मारने आवेगा तब मै यह कहते-कहते मरूगा कि ईश्वर तेरा भला करे। इसके बदले उनका आग्रह है कि मै पहले मारनेको कहू और 'बादमे मरना पडे तो मरनेको कहू। अगर मै ऐसा कहनेको तैयार नही हू तो वे मुझे कहते है कि 'तुम अपनी बहादुरी अपनी जेबमे रखो!' और यहासे जगलमे भाग जाओ। पर वे ऐसा क्यो कहते है? इसलिए कि मुसलमान सबको मारते है। तो क्या इसी बातपर हिंदू भी मारनेको उतारू हो जाए और फिर दोनो दीवाने बन जाय? क्या मुसलमान बिगड जाय तो हम भी बिगडे? कहा जाता है कि सब मुसलमान खराब है, गदे (दिलके) है। और यह भी बताते है कि सब हिंदू फरिश्ते है। लेकिन मै इस बातको नही मान सकता।

एक मुसलमान महिलाका खत मेरे पास आया है। उसमे लिखा है कि जब आप 'ओज अबिल्ला' की ईश्वरकी स्तुति करते है तो उसे

उर्दू नज्ममें क्यों नहीं करते ? मेरा उत्तर यह है कि जब मैं नज्म पढने लगूगा तब उसपर खफा होकर मुसलमान पूछेंगे कि अरबीका तरजुमा करनेवाले तुम कौन होते हो ? और वे पीटने आयगे तब मै क्या कहूगा ?

सही बात यह है कि जो चीज जिस भाषामे कही गई और जिसपर तप किया गया उसी भाषामे उसका माधुर्य होता है। विशपोंने अंग्रेजी-बाइबिलकी भाषाको बहुत परिश्रमसे मधुर बनाया है और लेटिनमे भी अंग्रेजीमे वह किस तरह मीठी हो गई है। अंग्रेजी सीखना चाहनेवालेको बाइबिल तो सीखनी ही चाहिए। मै अंग्रेजी भाषाका द्वेषी नही, उसका प्रशसक हू। पर गलत जगह जाकर वह गदी हो जाती है। सो मैं 'ओज अबिल्ला' की भाषाका माधुर्य छोडनेको तैयार नही, क्योंकि हमारे पास ऐसे कवि नही हैं जो वैसी ही मधुरतासे उसका अनुवाद कर सके।

आज मैं अहिंसाके शाश्वत नियमकी बात नही कहूगा। हाला कि उसपर मेरा दृढ विश्वास है। यदि सारा हिंदुस्तान उसे सोच-समझकर अपना ले तो वह बेशक सारी दुनियाका नेता बन जायगा। यहा तो मैं केवल यह कहना चाहता हू कि कोई आदमी विवेकके अलावा और किसी चीजके आगे न झुके।

लेकिन आजकल तो हमने विवेक बिलकुल ही भुला दिया है। विवेक तभी कायम रह सकता है जब हममें बहादुरी हो। आज जो चल रहा है वह बहादुरी नही है। इन्सानियत भी नही है। हम बिलकुल जानवर-जैसे बन गये है। हमारे अखबार रोज-रोज हमें सुनाते है कि यहा हिंदुओंने बरबादी कर डाली और वहा मुसलमानोंने। क्या हिंदू और क्या मुसलमान, दोनों ही बुरा काम करते हैं। यह मैं माननेको तैयार हू कि मुसलमान ज्यादा बरबादी कर रहे है, पर जब दोनों ही बुराई करते है तब किसने ज्यादा बुराई की और किसने कम, यह जानना बेकार है। दोनों गलतीपर है।

खबर आई है कि हमारे नजदीक ही गुडगावमे कई गाव जल गए है। किसने किसके मकान जलाए है, इसका पता चलानेकी कोशिशमे मैं हू, पर सही पता लगना कठिन है। लोग कहेंगे कि जब इतने करीबमे

यह सब हो रहा है तब यहा बैठा मै लबी-चौडी बाते कैसे सुना रहा हू ? जब आप लोग यहा आ गए है और हमारी बदकिस्मतीसे गुडगावमे यह हो रहा है तब अपने मनकी बात मै आपसे कहूगा ही। और मेरा यही कहना है कि हमारे चारो ओर अगार जलते रहे तो भी हमे तो शात ही रहना है और चित्त स्थिर रखते हुए हमे भी इस अगारमे जलना है। हम क्यो दहशतके मारे यह कहते फिरे कि दूसरी जूनको यह होनेवाला है, वह होनेवाला है ? जो बहादुर होगे उनके लिए उस दिन कुछ भी होनेवाला नही है। यह यकीन रखिए। सबको एक बार मरना ही है। कोई अमर तो पैदा हुआ नही है। तो फिर हम यही निश्चय क्यो न कर ले कि हम बहादुरीसे मरेगे और मरते दमतक अपनी ओरसे बुराई नही करेगे ? जान-बूझकर किसीको मारेगे नही। एक बार मनमे ऐसा निश्चय कर लेगे तब आप स्थिरचित्त रहेगे और किसीकी ओर नही ताकेगे। जो डरा-धमकाकर पाकिस्तान लेना चाहेगे उनसे कह देगे कि इस तरह रत्तीभर भी पाकिस्तान मिलनेवाला नही है। आप इन्साफपर रहेगे, हमारी बुद्धिको समझा देगे, दुनियाको समझा देगे तो आप पूरा-का-पूरा हिदुस्तान ले जा सकते है। जबर्दस्तीसे तो हम पाकिस्तान कभी नही देगे।

और अग्रेजोसे क्या कहू ! अगर वे मिशन-योजनासे हटते है तो वे दगाबाज है। हम दगाबाज न बनेगे और न बनने देगे। हमारा और उनका सबध १६ मईकी घोषणासे है। उसीके आधारपर विधान-परिषद् बनी है। उसके मुताबिक हम चलेगे। इसके अलावा हम कुछ नही जानते। दूसरा कुछ तभी हो सकता है जब हम खामोश हो जाय, लडाई-दगा न रहे और हम शात होकर बैठे। पर हम दबेगे नही।

इन चार दिनोमे इतना पाठ आप सीख ले तो सब कुछ मिलनेवाला है। भले ही वे सारे हथियार जो बटोरे है आजमा ले। जब हम इतनी बडी सल्तनतके मुकाबलेमे डट गए और उनके इतने सारे हथियारोसे नही डरे, उसके झडेके सामने सिर नही झुकाया तो अब हम क्यो लडखडाए ? जब कि आजादी मिलने ही वाली है, हम यह सोचनेकी गलती न करे कि अगर हम न झुके—चाहे यह झुकना पाशविक शक्तिके आगे ही क्यो

न हो तो आजादी हमारे हाथोसे निकल जायगी। अगर हम ऐसा सोचेगे तो हमारा नाश निश्चित है।

मै लदनमे आनेवाले तारोमे विश्वास नही करता। मै यह आशा नही छोडूगा कि ब्रिटेन गत वर्षके १६ मईके केबिनट मिशनके वक्तव्यकी इबारत और भावनासे बाल-बराबर भी नही हटेगा, जबतक कि भारतकी पार्टिया अपने आप कोई फर्क करनेको रजामद न हो जाए। इस कामके लिए दोनोको एक जगह मिलना होगा और मानने लायक हल निकालना पडेगा।

यहाके अग्रेज अफसरोके लिए कहा जाता है कि वे बदमाश है। इन दगोमे उनका हाथ है, वे ही हमे लडाते है। लेकिन जबतक यह गभीर आरोप ठीक-ठीक साबित नही हो जाता तबतक हमे उनपर इल्जाम नही लगाना चाहिए। मै तो कहूगा कि अगर हम लडना नही चाहते तो लडाई कैसे होगी? मै अगर यहा बैठी हुई अपनी लडकीसे लडना न चाहू तो मुझे कौन लडा सकता है?

और माउटबेटन साहबका काम आसान नही है। वे बडे सेनापति है, बहादुर है, पर अपनी उस बहादुरीको वे यहा नही बता सकते। यहापर वे अपनी सेना लेकर नही आए है। यहा वे फौजी वर्दीमे नही आए है, सिविलियन बनकर आए है और उनका कहना है कि मै अग्रेजोसे हिदुस्तान छुडवा देनेके लिए आया हू। अब हमे देखना है कि वे किस तरह जाते है। माउटबेटन साहबको अपने गवर्नर-जनरलके पदको शोभित करना है। उन्हे अपनी सारी चतुराई और सच्ची राजनीतिज्ञता बतानी है। अगर वे जरा भी चूक जायगे, जरा भी सुस्ती कर जायगे तो ठीक न होगा। इसलिए हम और आप सब मिलकर प्रार्थना करे कि भगवान उनको सन्मति दे और इतनी बात वे जान ले कि सोलह मईकी बातसे बालभर भी फरक जबर्दस्तीसे वे नही कर सकते। अगर करते है तो वह दगा होगा और दगा किसीका सगा नही होता। दगेका अत भलाईमे कभी आ नही सकता।

: २४ :

३० मई १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लदनकी ओर न देखे, न वाइसरायकी ओर देखे। इसका मतलब यह नही कि इग्लैडमे जितने अग्रेज है, सब-के-सब बुरे है। उनमे बहुत-से भले भी है। माउटबेटन साहब भी भले है। पर वे सब अपने घरमें भले है। जब यहा आकर दखल देते है तो वे बुरे बन जाते है। अब वह पुरानी बात नही रही कि जब अग्रेजोकी हिफाजतका वादा जरूरी समझा जाता था। सिविल सर्विसमे जो अग्रेज लोग है उन्हे अब अपने यहा नौकर रखनेके लिए हम मजबूर नही है। अगर सिविलयन रहना चाहे तो रहे और अग्रेज व्यापारी भी रहना चाहे तो वे भी रहे, लेकिन उनको बचानेके लिए यहा एक भी अग्रेज सिपाही नही रह सकेगा। हिदुस्तानियोकी खिदमत और उनकी मुहब्बतके जरिए ही वे रह सकते है। अगर कोई पागलपनमे उन्हे नुकसान पहुचाए तो उसकी जिम्मेदारी हमपर नही होगी। अग्रेजोके हिदुस्तानसे पूरी तरहसे चले जानेमे कुछ देर लग सकती है। उन्होने इसके लिए १९४८ के जूनकी ३० तारीख कायम की है। उस दिनको आजसे पूरे बारह महीने बाकी रहे है। अगर वे इससे पहले जा सके तो उन्हे जाना है। लेकिन उसके बाद तो वे एक दिन भी नही टिक सकते। यह तो प्रामिसरी नोट की-सी बात है। अगर प्रामिसरी नोटमे इतवारके दिन रुपया देनेका वचन दिया है तो उसे सोमवारपर नही टाला जा सकता। इसी तरह अग्रेज भी ३० जूनके बाद यहा नही रह सकते। अग्रेज-प्रजाने उन्हे जो आदेश दिया है उसका उन्हे पालन करना है। आखिर वाइसराय उसी अग्रेज-प्रजाके नौकर है। इस दूसरी या तीसरी जूनको वह हमे बतायगे कि वह क्या करना चाहते है और किस तरह यहासे जायगे। यह उनका कर्तव्य है और उसे पूरा करना उनका काम है। हमको अपना धर्म खुद देखना है।

फिर मै सोचता हू, मै कौन हू ? मै किसका नुमाइदा हू ? बरसो

बीते, मै काग्रेससे बाहर निकल आया हू। चवन्नीका मेम्बर भी नही हू। पर काग्रेसका खादिम हू। मैने उसकी बरसोतक सेवा की है और कर रहा हू। इसी तरह मै मुस्लिम लीगका भी खादिम हू और राजाओका भी खादिम हू। सबका खादिम हू, पर नुमाइदा किसीका नही हू। हा, एकका मै नुमाइदा जरूर हू। मै कायदे आजमका नुमाइदा हू, क्योकि उनके साथ मैने शाति-अपीलपर दस्तखत किए है। हम दोनोने मिलकर कहा है कि हिंसासे कोई राजनैतिक बात हम नही ले सकते। यह बहुत बडी बात है। उस अपीलपर दूसरे लोगोकी सही भी लेनेकी बात थी, लेकिन जिन्ना साहबने कहा कि मुझे तो अकेले गाधीजीकी ही सही चाहिए। इस तरह मै जिन्ना साहबका नुमाइदा बन गया। उनके अलावा मै किसीका नुमाइदा नही हू।

लेकिन मैने अपीलपर हिंदूकी हैसियतसे दस्तखत नही किए, किंतु हिंदू मै जन्मसे अवश्य हू, कोई मुझे हिंदू मिटा नही सकता। मै मुसलमान भी हू, क्योकि मै अच्छा हिंदू हू और इसी तरह पारसी और ईसाई भी हू। सब धर्मोकी जडमे एक ही ईश्वरका नाम है। सबके धर्म-शास्त्र एक-सी बात कहते है।

मैने कुरान देखा है और जैसा कि उस बहनने लिखा था, मै नही मानता कि कुरानमे काफिरोको कत्ल करनेकी बात लिखी है। मैने बादशाह खान और अब्दुस्समदखा साहबसे, जिन्होने आज बढिया तरीकेसे आयत पढी है, पूछा तो वे भी नही कहते कि कुरानमे गैर-मुस्लिमको कत्ल करनेके लिए लिखा है। बिहारके मुसलमानोमेसे किसीने नही कहा कि क्योकि आप अविश्वासी है, इसलिए हम आपको कत्ल करेगे और नोआखालीके मौलवियोने भी ऐसा नही कहा, बल्कि उन्होने राम-धुनको ढोलकके साथ होने दिया। कुरानमे जो लिखा है उसका मतलब इतना ही है कि खुदा काफिरसे पूछेगा। खुदा तो सबसे पूछेगा। मुसलमानसे भी पूछेगा। वह लफ्जको नही पूछेगा, कामोको पूछेगा। बाकी जो गदा देखना चाहे, हर जगह गदा देख सकते है। ऐसी कोई चीज नही जिसमे अच्छा व बुरा न मिला हो। हमारी मनुस्मृतिमे भी लिखा है कि अछूतोके कानमे सीसा डालो। पर मै कहूगा कि हिंदू-धर्मशास्त्रोकी यह

असली शिक्षा नही है। तुलसीदासजीने सब शास्त्रोका निचोड बता दिया कि दया धर्मका मूल है। कोई भी धर्म यह नही सिखाता कि हम किसीका खून करे। हमको तो तुलसीदासजीके इस दोहेपर अमल करना चाहिए—

जड चेतन गुन दोषमय, विश्व कीन्ह करतार।
सत हस गुन गर्हाहि पय, परिहरि वारि विकार॥

हमे तो मुसलमानोसे कह देना होगा कि इस तरह पाकिस्तान नही लिया जा सकता। तबतक पाकिस्तान मिलनेवाला नही है जबतक कि यह जलाना-मारना बद नही होगा। इसी प्रकार हिंदू भी मुसलमानोको जबर्दस्ती पाकिस्तानका नाम लेनेसे नही रोक सकते। पर मै पूछता हू कि ख्वामख्वाह आप क्यो पाकिस्तानके नामपर लडते है? पाकिस्तान कौन-सा भूत है? सच्चा पाकिस्तान तो वह है, जहा बच्चा-बच्चा सुरक्षित हो। चाहे पाकिस्तान हो चाहे हिंदुस्तान हो उसमे प्रत्येक धर्म और कर्मवाले सकुशल रहने चाहिए। फिर वे चाहे ब्राह्मण, बनिया या पडित हो अथवा अलग-अलग धर्मके हो। इसलिए मै जिन्ना साहबसे कहूगा कि आइए, हम सारे हिंदुस्तानमे घूमे और जोर-जबर्दस्तीको बंद कराएं।

मै अपने साक्षी जिन्ना साहबसे कहता हू और सारी दुनियासे कहता हू कि हम तबतक पाकिस्तानकी बात भी नही सुनना चाहते जबतक यह तशद्दुद चलता है। जब यह बद हो जायगा तब हम बैठेगे और ठहरायगे कि हमे पाकिस्तान रखना है या हिंदुस्तान। इस तरह जब भाई-भाई होकर बैठेगे तब हम रोशनी करेगे और जलेबी बाटेगे। दोस्तीसे ही पाकिस्तान बन सकता है और दोस्तीसे ही हिंदुस्तान कायम रह सकता है। अगर हम लडते रहे तो हिंदुस्तान तबाह हो जानेवाला है।

गत वर्षका १६ मईका निवेदन समझौतेकी जड (बुनियाद) है। उसका एक भी कामा हटाया नही जा सकता। अंग्रेजोको इससे बाहर कुछ भी करनेका हक नही है और न हम ही इससे ज्यादा कुछ माग सकते है। हमको यह साफ कह देना चाहिए कि चाहे हम सब मर जाय या सारा हिंदुस्तान जल जाय—राख हो जाय, परतु जबर्दस्ती पाकिस्तान मिलनेवाला नही है।

: २५ :

३१ मई १९४७

गाधीजी मचपर आए तो लोगोको शात करते हुए उन्होने कहा कि प्रार्थनाके समय आख बद और कान खुले रहने चाहिए।

कुरानकी आयतके पाठपर एक हैटधारी युवकने विरोध किया, लेकिन फिर भी प्रार्थना चलती रही। लोगोने काफी शाति रखी। प्रार्थनाके वाद गाधीजीने कहा—

वह भाई जो अग्रेजी टोप लगाकर बोलता था कि 'जिन्नाको गिरफ्तार करो' क्या जिन्नाको गिरफ्तार करना चाहता है? वैसा करनेकी आपके पास ताकत हो सकती है और मै भी वैसी ही ताकत रखता हू, लेकिन मेरा तरीका दूसरा है। मै जबसे दक्षिण अफ्रीकासे आया हू, आपको वह तरीका सिखा रहा हू। वैसा मै कोई ऐसा भारी शिक्षक तो नही हू, पर एक पागल भी अपनी वात तो वता ही सकता है। आज चौवन वरसोसे मै यही वात वताता रहा हू कि हमे अपने शत्रुको कैद कर लेना है। आप जिन्नाको शत्रु समझते है, लेकिन मै तो किसीको शत्रु मानता ही नही। मैने तो कहा है कि मै उनका नुमाइदा वना हुआ हू और जो मै कहता हू वह सच्चाईसे ही कहता हू। तव फिर मै उनको शत्रु कैसे मान सकता हू? अग्रेज भी मेरे दुश्मन वन गए थे, लेकिन मै उनका दुश्मन नही वना। मै तो उनका दोस्त वना, उनका प्रतिनिधि वना और मैने उन्हे उनकी भलाईकी ही वात सुनाई।

आदमी दो तरहसे अपने दुश्मनको कैद करते है। एक सख्तीसे और दूसरे मुहब्बतसे। मैने आपको मुहब्बतसे कैद कर रखा है। जव मै आपको शात रहनेके लिए कहता हू तव आप शात हो जाते है। आपको कैद किया है यह भाषा-प्रयोग थोडा विनोदमे है, पर भाव आप समझ गए होगे। तो मेरा कहना यही है कि कभी-न-कभी हम जिन्ना साहवको जरूर कैद कर लेगे। पुलिस उन्हे क्या कैद करेगी? पुलिस उन्हे नही पकड सकती। मुझको भी पुलिस गिरफ्तार नही कर सकती और न खान साहवको ही पकड सकती है। हा, सल्तनत चाहे तो उन्हे पकड

सकती है, लेकिन सल्तनतके पकडनेपर भी जिन्ना साहब ठीक तरह कैद नही होगे। सही तौरपर गिरफ्तार तो वे तब होगे जब मै उन्हें कैद करके यहापर लाकर खडा कर दूगा।

एक शख्स मीर आलम था। सरहदी गाधीके मुल्कका। जैसे ये पहाडके-से है, वह उनसे भी ऊचा था। पहले वह मेरा मित्र था। पर पठान तो भोले ही होते है। इसी कारण वे बादशाह है। उसको किसीने बहका दिया कि गाधीने पद्रह हजार पौड जनरल स्मटससे ले लिए है और कौमको बेच डाला है। बस, एक दिन वह मीर आलम मेरा दुश्मन बनकर आया। उसके हाथमे बडी-सी लाठी थी और उसपर सीसेकी मूठ लगी थी। उसने ठीक मेरी गरदनपर वह लाठी मारी। मै गिर पडा। नीचे पत्थरका फर्श था। मेरे दात टूट गए। ईश्वरको मजूर था, इसलिए मै बच गया। मीर आलमको दो-तीन अग्रेजोने, जो उस रास्तेसे जा रहे थे, पकड लिया, लेकिन मैने उसे यह कहकर छुडवा दिया कि "वह बेचारा दूसरेके धोखेमे आ गया कि मै लालची हू और इसपर फौजी पठानका खून खौल उठे और वह मारनेको उतारू हो जाय तो कोई आश्चर्यकी बात नही है।" इस तरहसे मीर आलमको मैने कैद कर लिया। वह मेरा पक्का दोस्त बन गया।

अगर ईश्वरको मजूर होगा तो एक दिन जिन्ना साहब भी यहा आकर बैठेगे और कहेगे कि मै आपका दुश्मन न हू और न था। मै पाकिस्तान तो मागता हू, पर मेरा पाकिस्तान आला दरजेका होगा। वह सबके भलेके लिए होगा। तब हम सब मिलकर रोशनी करेगे और मिठाइया बाटेगे।

यह मै बुजदिली या खुशामदकी बात नही कह रहा हू। मै बहादुर बननेकी ही बात कह रहा हू। सिखोकी तरह हमे एक-एकको सवा लाखके बराबरका बहादुर बनना है। मै बता चुका कि प्रत्येक सिख सवा लाखके बराबर क्योकर होता है। कृपाणके जरिएसे नही, कृपाण तो उसके पास इसलिए होती है, जिससे वह बता सके कि वह कभी भी उसके मातहत नही होगा। सवा लाख मिलकर मारे या कोई अकेला मारे, तो भी वह हाथ नही उठायेगा। कौन कहेगा कि इस तरह मरनेवाला बुजदिल है। सभी उसे सच्चा बहादुर बतायगे।

मैंने कल कहा था कि सारा हिंदुस्तान जल जायगा तो भी हम ताकतके जोरसे पाकिस्तान नही होने देगे। बुद्धिके जरिए, हमारे दिलोपर असर डालकर, समझा-बुझाकर आप कहेगे और हम समझ जायगे कि आप तो सीधी-सी बात करते है, आपके दिलमे कोई छल-फरेब नही है तो पाकिस्तान मान लेगे, लेकिन उस समय आप हमें विश्वास दिलायगे कि पाकिस्तानमे किसीको भी मुसलमानोसे डरनेकी बात नही रहेगी। आपने जब खुदाको हाजिर-नाजिर समझकर दस्तखत किए है और यह एलान कर दिया है कि राजकीय उद्देश्यकी पूर्तिके लिए हिंसा नही होनी चाहिए तब पाकिस्तानके लिए जोर-जबर्दस्ती कैसे उचित हो सकती है?

हम हिंदुस्तानमे बिरलाका राज नही चाहते और भोपालके नवावका भी राज नही चाहते। बिरला कहते है कि हम राज करना नही चाहते। उसी तरह नवाब भोपाल भी अपनेको रैयतके दोस्त बताते है। वे भी रिआयाके खिलाफ होकर राज नही चाहते। तो फिर राज आयगा किसके हाथमे? वह आप लोगोके हाथमे आयगा। आपके हाथोमे भी नही, मिस्कीनोके हाथमे हिंदुस्तानका राज होगा।

हिंदुस्तानमे कई बिरला है। उनकी ताकत क्या है? वे पैसे देते है और मजूरसे मजूरी कराते है। जब मजूर कह दे कि हम काम नही करेंगे तब धनवानोके करोडो रुपये उनकी जेबमे रह जानेवाले है। अगर वे जमीनवाले है तो भी खुद तो जोतनेवाले नही है। जब उन्हे जोतनेवाला कोई न मिलेगा तो उनकी बडी-बडी जमीने बेकार हो जायगी। इसी तरह नवाव भोपालकी बरछी, भाले और घुडसवार सभी निकम्मे हो जानेवाले है। मार-मारकर वे कितनोको मारेगे? अपनी रिआयाको मारकर किसपर राज करेंगे? वे तभी अपनी प्रजापर राज कर सकेंगे जब वे प्रजाके ट्रस्टी बन जायगे।

इसके विपरीत अगर कोई कहता है कि नवाब भोपाल मुसलमान है, इसलिए वह मुसलमानका राज कहलाएगा और काश्मीरमे मुट्ठीभर पडितोका राज रहेगा तो यह तनिक भी चलनेवाला नहीं है।

हैदराबादके निजामकी बात लीजिए। कहते है कि मौका पाकर वह सारे हिदुस्तानको सर कर लेनेवाले है, लेकिन कौन सर करेगे ? वहाकी सारी रिआया तो हिदू पडी है।

अग्रेज अगर सोचते है कि वह हिंदुस्तानसे हटकर हैदराबाद, भोपाल, राजकोट या इधर-उधर अड्डे जमायगे तो यह दगेकी बात होगी। मुझपर ऐसी कोई छाप नही है। मै तो मानता हू कि अग्रेजोके जानेकी बात पूरी ईमानदारीकी है। जब उनको भारत छोडना है तब उनकी सार्वभौमिकता भी खत्म होती है, फिर छोटे-मोटे अड्डे उनके क्या काम आनेवाले है ? और जब अग्रेज नही रहेगे तब राजा लोग रिआयाके साथ बैठनेवाले है।

एक बार मालवीयजी बम्बई पधारे थे। मै उनके साथ था। वहा कुछ महाराजाओके पास हम दोनो गए। राजाओने हमे ऊपर आसनपर बिठाया और वे हमारे घुटनोके पास नीचे बैठे। उस समय अग्रेजी सल्तनत पूरे जोरमे थी। अब जब वह जबरदस्त सल्तनत हट जाती है तब राजा लोग तुरत ही समझ जानेवाले है कि जनताको जब मानेगे तभी हम कायम रह सकेगे। और जनताको माननेका तरीका यही है कि वे विधान-परिषद्मे आवे। अगर वे जिद पकडते है कि हम विधान-परिषद्मे नही आते तो फिर वे राजा नही रह सकते।

हिदुस्तानमे कोई मुसलमान राजा यह नही कह सकता कि वह सब हिदुओको मार डालेगा। अगर कोई ऐसा कहता है तो मै उससे पूछूगा कि अबतक वह क्यो हिदुओका राजा बनकर रहा, क्यो हिदू प्रजाका अन्न खाया ? इसी प्रकार कोई राजा मुसलमान है, इसी आधार-पर यह कहनेका हकदार नहीं हो जाता कि वह पाकिस्तानमे जा मिलेगा और न हिदू राजा हिदू होनेके कारण यह कह सकता है कि वह काग्रेस-का साथ देगा। प्रजा जहा कहे वही उसे जाना होगा।

अतमे गाधीजीने आध्रनिवासी हरिजन युवक चक्रैयाकी दु खद मृत्युका समाचार सुनाते हुए कहा—वह सेवाग्रामका आश्रमवासी था। नई तालीमके तरीकेपर सीखा था। बडा परिश्रमी और दस्तकार था। झूठ, फरेब, क्रोध-जैसे दोष उसमे नही थे। दैववश उसके दिमागमे कुछ

रोग पैदा हो गया। खुद निसर्गोपचारमें ही विश्वास करता था, पर दोस्तोंने और डाक्टरोंने उसका आपरेशन करनेका आग्रह किया। इस रोगमें उसकी आंखोंका तेज जाता रहा था। फिर भी उसने आपरेशन-मेजपर जानेसे पहले मुझे बड़ी कोशिशसे पत्र लिखा था कि प्राकृतिक चिकित्सा मुझे प्रिय है, पर आपरेशनका प्रयोग करानेके लिए भी मैं तैयार हूं और मौत आएगी तो राम-नाम लेता हुआ मरूंगा। आखिर बंबईके अस्पतालमें आपरेशन किया गया और आपरेशन-मेजपर ही उसके प्राण छूट गए।

उसके जानेपर रोना आता है; पर मैं रो नहीं सकता; क्योंकि मैं रोऊं तो किसके लिए रोऊं और किसके लिए न रोऊं? भारतमाताको अगर बच्चे चाहिए तो वकील तुलसीदासजी, ऐसे ही चाहिए जो या तो दाता हों, या शूर। चकैया दाता था, क्योंकि वह निःस्वार्थ सेवक और परम सतोषी था और शूर भी था, क्योंकि उसने अपने हाथसे मृत्युको अपना लिया। वह हरिजन था, पर उसके दिलमें हरिजन-सवर्ण, हिंदू-मुसलमान-जैसे भेद न थे। वह सबको इन्सान मानता था और स्वयं सच्चा इन्सान था।

आज मैंने नवाब भोपाल और हरिजन बालक चकैयाकी बात एक साथ आपको सुना दी। भारतमें दोनोंके लिए स्थान है। नवाब भोपाल ट्रस्टी बनकर ही रहें और चकैया-जैसे करोड़ों युवक निकल आवें तभी भारत सुखसे रहेगा।

: २६ :

७ जून १९४७

आज भी प्रार्थनामें कुरानकी आयतके समय एक पंडितने बाधा डाली। लेकिन प्रार्थना चलती रही। श्रोताओंमेंसे दो जवानोंने उस व्यक्तिका हाथ खींचकर उसे नीचे बिठा देने और चुप करनेकी कोशिश की तो सभामें कुछ खलबली मच गई। जब पुलिस उसे ले जानेके लिए आई तब गांधीजीने कहा, 'पुलिस भाई! आप उसे न ले जायें। वहीं बैठा रहने

दे और वह ज्यादा गडबडी न मचावे, इतना भर देखते रहे ।" इसपर सिपाही उन पडितजीकी बगलमे शातिसे बैठ गया। गाधीजीकी इस सहानुभूतिका प्रभाव उन पडितजीपर भी अच्छा पडा। जब गाधीजीने कहा—"कुरानकी आयत तो खतम हो गई। अब भजन हम तभी कहेगे जब यह पडितजी इजाजत दे देगे, वरना अब भजन बद रहेगा।" पडितजीने मुस्कराते हुए और अपनी कुहनी बताते हुए गाधीजीसे कहा—"देखिए, खीचातानीमे मुझे यह खून निकल आया है । यही आपकी अहिसा है ?"

गाधीजीने कुछ विनोदमे कहा—"खैर, खून निकलनेकी बात जाने दीजिए। आप यह बताइए कि मै प्रार्थना आगे चलाऊ या बद कर दू ? आप कहेगे तो भजन चलेगा, नही तो आज न होगा।"

तब प्रसन्नतापूर्वक पडितजीने भजन सुननेकी इच्छा प्रदर्शित की। गाधीजीने पडितजीको समझाते हुए कहा, "आपके पास ही हिंदूधर्म नही है। मै भी हिदू हू और पूरा सनातनी हू। लेकिन हम गीता ही क्यो कहे, कुरान क्यो नही। मोती तो जहासे मिले वहासे ले लेने चाहिए। राज अब हमारे हाथमे आ रहा है। उसे हमे देनेके लिए वाइसराय परेशान है। तब क्या आप इस तरह झगडेगे और अपनी अज्ञानता दिखायगे ? आपको विनय सीखना चाहिए। बादशाह खानसे आप विनय सीख सकते है। आज प्रार्थनाके लिए जब मनु उन्हे लिवाने गई तब उन्होने कहा, 'मुझे वहापर देखकर किसी हिंदूके दिलमे चोट पहुचेगी । इसीलिए मै वहा नही आऊगा।' तब मैने कहला भेजा कि 'आप तो पहाड-जैसे है। मै बनिया होकर भी नही डरता तो आपको क्या डर। और अब वे यहा आ गए है तो मुझसे भी अधिक बकरी-जैसा गरीब होकर बैठ गए है । हमे भी ऐसा विनयी होना चाहिए । माना कि कुरानमे कुछ ओछी बाते लिखी है, पर कौन ग्रथ ऐसा है जिसमे ऐसी बाते नही है ? मै तो सैकडो मुसलमान मित्रोमे रहा हू, किसीने मुझे यह नही कहा कि तू मुसलमान नही है, इसलिए तुझको हम बुरा मानते है। एक मुसलमान मित्रने[1] —जो अब मौजूद नही रहे, और जो नामके जौहरी थे तथा गुणमे भी वे

---

[1] दक्षिण अफ्रिकाके सौदागर उमर झवेरी।

वैसे ही थे—मुझसे कहा था कि "तू हम लोगोमे डरा कर, क्योकि हममे सभी अच्छे नही होते है।" पर मैने उनसे कहा कि मै किसीकी बुराई क्यो देखू? मुझे तो आपके समान भले मित्र मिल गए इसीपर सतोष है। और वे अकेले नही थे। ऐसे काफी नाम मेरे पास है। एकको तो मैने अपना ही लडका बनाया था, वह सबकी खिदमत करनेवाला था, पर ईश्वरने उसे उठा लिया।[1] जब ऐसे-ऐसे अच्छे आदमी मुसलमानोमे है तब मै कहता हू कि अगर थोडेसे मुसलमान पागल बन जाते है तो भी हिंदूको पागल नही बनना चाहिए। आजतक अग्रेजोने तलवारके जोरसे हमे शात रखा तो क्या उनके जानेपर हम लडने लगेगे? इसमे हमारी कोई शोभा नही है।"

भजन और धुन अच्छी तरह हो जानेके बाद गाधीजीने लोगोको तथा पडितजीको शात रहनेके लिए धन्यवाद दिया और कहा—अगर लोग जरा-सी समझदारीसे चले तो स्वराज्य उनके हाथोमे आ चुका है; क्योकि हमारी सरकारके उप-प्रधान जवाहरलालजी है। वाइसराय प्रधान है सही, पर उन्हे अब शातिसे बैठना है। आपके असली बादशाह जवाहरलाल है। वे ऐसे बादशाह है जो हिंदुस्तानको तो अपनी सेवा देना चाहते ही है, पर उसके मार्फत सारी दुनियाको अपनी सेवा देना चाहते है। उन्होने सभी देशोके लोगोसे परिचय किया है और उनके राजदूतोका सत्कार करनेमे वह बडे कुशल है। लेकिन वह अकेले कहातक कर सकते है?

वह बेताजके बादशाह आपके खिदमतगार है। तो क्या वह बदूकसे आपकी बदअमनीको दबा देगे? अगर आज एकको दबायगे तो कल दूसरेको इसी तरह दबाना पडेगा। फिर वह स्वराज्य तो नही हुआ। पचायती राज भी नही हुआ। जब आप लोग अनुशासनसे रहेगे तभी जवाहरलालकी बादशाहत चलेगी और हमारा स्वराज्य सुखरूप होगा।

खुद जवाहरलालजी भी किस तरह अनुशासनमे रहते है इसका उदाहरण सुनिए। पिछले वर्ष जब वह काश्मीर चले गए थे तब वेवल साहबको उनकी जरूरत पड गई, मौलाना साहबने उन्हे बुलाना

---

[1] वीर बालक हुसैनमियां।

चाहा और मेरे समझानेपर वह वहाका सघर्ष छोडकर राष्ट्रपतिका हुक्म मानकर यहा चले आए थे।

आज भी जवाहरलालका चित्त काश्मीरमे है, जहा प्रजाके नेता शेख अब्दुल्ला सीख़चोमे बद पडे है। मैने जवाहरलालसे कहा है कि तुम्हारी आवश्यकता यहापर ज्यादा है। इसलिए जरूरत हुई तो मै काश्मीर जाऊगा और तुम्हारा काम करूगा। तुम यही रहो। मैने यह भी उनसे कहा कि यद्यपि मै वचनसे बिहार और नोआखालीमे ही करने या मरनेके लिए बधा हू, परतु काश्मीरमे भी मुसलमान भाइयोका ही सवाल है, इसलिए वहा जा सकता हू। वहा जाकर काश्मीरके राजासे मित्रता करूगा और मुसलमानोकी भलाईका काम करूगा। लेकिन जवाहरलालने अभी इस बातकी 'हा' नही भरी है।

सार यह कि अब जब हमारे हाथमे स्वराज्य आ गया है तब हममेसे प्रत्येकको अनुशासनसे, विनयसे और समझदारीसे चलना चाहिए, तभी हिंदुस्तानकी आजादी शोभा देगी।

जैसे कल मैने आप लोगोको राजाओकी बात कही थी वैसे आज मै व्यापारियोके बारेमे कहना चाहता हू। कल मैने कहा था कि हिंदुस्तानमे न बिरलाका राज होगा, न नवाब भोपालका; न निजामका राज होगा, न काश्मीरके महाराजाका, राजा लोग केवल हिंदुस्तानकी रैयतके खिदमतगार होगे।

ऐसा नही हो सकता कि हिंदुस्तानकी रैयत एक जगह तो आजाद हो जाय और दूसरी जगह ग़ुलाम बनी रहे। जब आजादी होगी तो वह सभीके लिए होगी।

अब आजादी तो आ ही रही है, क्योकि अगर अग्रेज शरीफ है और मै समझता हू कि वे है, तो उन्हे चले जाना है। वाइसराय लार्ड माउट-बेटन साहब तो यह कह रहे है कि हमे जल्दी-से-जल्दी यहासे चला जाना है और वे अपना वचन पालेगे ही।

जब वे जा रहे है तब हिंदुस्तानमे हमारा ही राज हो जाता है। फिर क्या जब अपना राज हो जायगा तो हम आपसमे झगडा करेगे? क्या राजा लोग हमको दबायगे? नही, वे सभी जनताके ट्रस्टी बन जायगे। यानी

वे सब चकैया-जैसे जनताके सेवक बनेंगे तभी वे हमारे राजा रह सकेंगे ।

इसी तरह हमारे ऊपर व्यापारियोंका राज भी नहीं होना चाहिए। हमें तो राज चाहिए भगियोंका। भगी हमारेमें सबसे ऊचे हैं, क्योंकि उनकी सेवा सबसे बडी है। तभी तो मैं खुद भगी बन गया हू। भगियोंके राजसे मेरा मतलब यह है कि एक मेहतरको आपने अपना अमात्य बना दिया तो फिर आपको उसकी बात उसी तरह माननी है जिस तरह अग्रेजोंने अपनी सत्रह बरसकी रानी विक्टोरियाका राज माना था और छोटे-बडे सभीने अपना-अपना कर्त्तव्य पाला था । अग्रेज लोग कर्त्तव्य-पालन किस तरह करते हैं, इसका मैं गवाह हू ।

मैं कई बार लदन गया हू । एक बार तो वहा तीन बरसतक रहा, पर तब मैं लडका था । बादमें दो-तीन बार मैं लदन हो आया हू । वहापर लोग इतने समझदार हैं और कायदेके पाबद हैं कि पुलिसको हाथमें कभी बदूक नहीं लेनी पडती । केवल एक छोटा-सा डडा वे अपने हाथमें रखते हैं । लोग जानते हैं कि वे हमारे खिदमतगार हैं, इसलिए उनके कहनेके मुताबिक चलते हैं । पुलिस भी लोगोंका काम पूरी कोशिशसे कर देती है । वहापर रिश्वत नहीं चलती । कोई देने जाय तो भी पुलिस लेती नहीं ।

हमारे हिंदुस्तानकी पुलिसको भी अब ऐसा ही बनना है । उन्हें चाहिए कि वे बिलकुल रिश्वत न लें । अगर उनका पेट नहीं भरता तो वे सरदार साहबसे अपनी तनख्वाह बढानेके लिए कहें, बलदेवसिंहसे कहें, नेहरूजीसे कहें । जब बडे-बडे अफसर और प्रधान लोग हजारों पाते हैं, तब सिपाहीको क्यों पाच ही दस रुपये दिये जाय ? वे लोग इतजाम करेंगे । पर रिश्वत लेनी छोडनी चाहिए ।

व्यापारियोंके लिए भी मुझे यही कहना है । वे सब एक हो जायं और मिलकर कह दें कि हम सबको सच्चा बनिया और सच्चा मारवाडी बनना है । सच्चा बनिया वह है जो सच्ची तोल तोलता है । हमारे यहा जितने बनिए, जितने मारवाडी और जितने व्यापारी हैं उन सबको इकट्ठे होकर निश्चय करना है कि हममेंसे कोई चोरबाजार नहीं करेगा, कोई रिश्वत नहीं लेगा और न देगा ।

इतनी बात वे कर लेते है तो फिर राजेंद्र बाबूको जो मजबूरी महसूस होती है और सबको खाना खिलानेमे उनके रास्तेमे जो कठिनाइया पैदा हो जाती है वे जाती रहेगी। मेरे पास एक खत आया है कि 'आपने नमक-कर उठवा तो दिया, पर नमक अब पहलेसे भी ज्यादा महगा हो गया।' ऐसा क्यो होता है ? मै कहूगा कि नमक-कर उठ जानेपर तो हमे नमक करीब-करीब मुफ्तमे मिल जाना चाहिए। इसके लिए व्यापारियोको अपना व्यापार भूलकर हिंदुस्तानके लिए ही व्यापार करना होगा। उन्हे चाहिए कि वे चोरबाजार बिलकुल भुला दे। जब ऐसा होगा तभी अतरिम सरकारके वजीर अपना-अपना काम कर सकेगे और राजाजी, राजेंद्र बाबू, जवाहरलालजी, मथाई, भाभा और लीगके चारो वजीर तभी आपकी हर तरहकी सेवा कर सकेगे । अगर इसके बाद भी हिंदुस्तानको खाना-पीना नही मिलता, मुल्ककी खुशहाली नही बढती तो फिर आप लोग उन्हे निकाल बाहर कीजिए ।

लेकिन आप उन्हे कैसे निकालेगे ? क्या आप वाइसरायके हाथो उन्हे निकलवायगे ? नही, वाइसरायसे तो आप आरामसे बैठनेके लिए कहेगे। आप खुद अपने वजीरोको कैद करेगे । जैसा कि कल मैने जिन्ना साहबको कैद करनेका तरीका बताया था। और तब आप उनसे अपने मनका काम करवा लेगे।

मैने जवाहरलालजीसे सुना है कि लदनमे लोग भूखो मर रहे है। यह सुनकर मुझे दु ख हुआ। चाहे अंग्रेजोने हमारे साथ कितना ही गुनाह किया हो, तो भी उन्हे खाना तो मिलना ही चाहिए।

हमारा मुल्क बहुत बडा है। हमारे व्यापारी ठीकसे चले और उनमे अक्ल हो तो हम कहेगे कि जबतक हिंदुस्तान जिंदा है तबतक दुनिया कैसे भूखो मरेगी ? हम उसे खाना देगे । मै तो बनिया हू, तिजारत जानता हू। यदि सब बनिए और व्यापारी मुझे मदद दे, अतरिम सरकार भी मदद दे और सब मुसलमान मदद दे तो मै सबको खाना दे सकता हू। मै इस बातको माननेके लिए कतई तैयार नही हू कि हमारे मुल्कमे अन्नकी पैदावार कम है। अगर आप काफी मेहनत करे, अक्लसे काम ले और ईश्वरकी कृपासे ठीक वर्षा हो जाय तो यहा भरपूर खाना मिल

सकता है, लेकिन अकेले हाथसे तो ताली नही बजती। मुझे सबकी मदद मिले तभी ताली बज सकती है और इतनी जोरकी बज सकती है कि आप सभी प्रसन्न होगे और दुनिया भी प्रसन्न होगी।

अगर आजाद हिंदुस्तानमे सभी अपने धर्मका पालन करे तो सारा हिंदुस्तान खुश हो सकता है, यह मै निश्चयपूर्वक आपसे कहता हू।"

: २७ :

सोमवार, २ जून १९४७

(लिखित सदेश)

राजनैतिक क्षेत्रमे क्या हुआ या क्या हो रहा है यह मै आपको बता नही सकता। लेकिन तीन-चार दिनसे जो मै कहता आया हू, वही आज आपको याद दिलाना चाहता हू, यानी आम जनताको फिक्र नही करनी चाहिए कि वाइसराय विलायतसे क्या लाए है। हमे तो इस बातपर ही सोच-विचार करना है कि जैसा भी मौका सामने आवेगा, उसके बारेमे हमारा धर्म क्या होना चाहिए। यह बात तो देशको साफ कर देनी चाहिए कि वह जबर्दस्तीसे कोई चीज कबूल नही करेगा।

इन तीन-चार दिनोसे जिस सोच-विचारका सिलसिला हमने चलाया है उसको लेते हुए अब हमारे सामने सवाल आता है कि हमारे डाक्टर और वैज्ञानिक देशके लिए क्या कर रहे है। वे लोग विदेशी मुल्कोमे तो नई-नई बाते और इलाजके नये तरीके सीखनेके शौकसे जाते है। मै तो उनसे कहूगा कि उन्हे अपना ध्यान हमारे मुल्कके सात लाख देहातोकी ओर देना चाहिए। फिर तो उन्हे फौरन पता चलेगा कि हमारे सब डाक्टर और डाक्टरनिया वही कामपर जुट सकते है। लेकिन पश्चिमके तरीकेसे वे नही जुट सकेगे, बल्कि हमारे अपने तरीके से देहातमे जुट सकेगे। तब उन्हे बहुतसे देशी इलाजोका भी पता चलेगा, जिन्हे वे अच्छी तरह काममे ला सकेगे। हमारे देशमे इतनी जडी-बूटिया है कि

हिंदुस्तानको बाहरसे दवाइया मगानेकी जरूरत है ही नही। लेकिन दवासे ज्यादा फायदेमद तो यह होगा कि वे हमारी जनताको सही जीवन जीनेका ठीक तरीका बता दे। और वैज्ञानिकोसे मै क्या कहू। क्या वे ज्यादा खुराक पैदा करनेकी ओर ध्यान दे रहे है ? और वह भी नकली खादके जरिए नही, बल्कि जमीनको बाकायदा अच्छी तरह जोत-बोकर और कुदरती खाद देकर। नोआखालीमे मैने देखा कि वहाके लोग एक जगली फूल (जलकुभी) जो नदियोका पानी रोक देता है, उसका भी उपयोग कर लेते है। ऐसे काम हमारे डाक्टर तब करेगे जबकि वे अपने लिए नही, बल्कि देशके लिए जीना सीखेगे।

कल मैने जवाहरलालजीके अमूल्य कामके बारेमे जिक्र किया था। मैने उन्हे हिंदुस्तानका बेताजका बादशाह कहा था। आज जब अग्रेज अपनी ताकत यहासे उठा रहे है तब जवाहरलालकी जगह कोई दूसरा ले नही सकता। जिसने विलायतके मशहूर स्कूल हैरो और केंब्रिजके विद्यापीठमे तालीम पाई है और जो वहा बैरिस्टर भी बने है उनकी आज अग्रेजोके साथ बातचीत करनेके लिए बहुत जरूरत है। लेकिन अब वह समय जल्दी ही आ रहा है कि जब हिंदुस्तानको अपनी रिपब्लिक-का पहला प्रधान चुनना होगा। चक्रैया जिंदा होता तो मै उसका नाम आप लोगोके सामने रखता। अगर कोई बहादुर मेहतर लडकी हो, बिना स्वार्थकी हो और शुद्ध हो तो मै तहेदिलसे चाहूगा कि ऐसी कन्या हमारी पहली प्रेसीडेट बने। यह कोई बेकारका ख्वाब नही है। ऐसी लडकिया जरूर मिल सकेगी अगर हम उन्हे ढूढनेकी कोशिश करे। क्या मैने गुलनार, मौलाना मोहम्मद अली साहबकी लडकीको नही चुना था ? लेकिन उस बेवकूफ लडकीने तो श्वैब कुरैशी साहबसे शादी कर ली। वह एक वक्त तो फकीर थी और जब अली भाई जेलमे थे तब मुझसे मिली थी। अब गुलनार तो कई होशियार बच्चोकी मा है, लेकिन वह मेरी वारिस अब नही बन सकती।

हमारे भविष्यके प्रेसीडेटको अग्रेजी जाननेकी आवश्यकता नही होगी। उनकी मददके लिए ऐसे लोग जरूर होगे जो सियासतमे होशि-यार होगे और विदेशी भाषाए भी जानते होगे। लेकिन यह सब स्वप्न

तो तभी पूरे हो सकते है जबकि हम एक दूसरेको मारनेसे बाज आए और पूरा-पूरा ध्यान देहातकी तरफ दे।

: २८ :

३ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

हमारी समझसे यदि लीगने तारीफके लायक काम नही किया है तो हम कहे कि उसने तारीफके लायक काम नही किया। इसी तरह अगर कांग्रेसने तारीफके लायक काम नहीं किया है तो हम कांग्रेस-वालोसे भी कहे कि आपका काम तारीफके लायक नही है। जब ऐसा होगा तभी वह पचायती राज बनेगा। अगर एक गिरोह अपने मनसे चलता रहे तो वह पचका राज नही हुआ।

जनतत्र वह है जिसमे रास्ते चलनेवाला जो बोले वह भी सुना जाय। जब हम जनतत्र कायम कर रहे है तब हमारा राज्य वाइसरायके घरमे नही है और वह जवाहरलालके घरमे भी नही है। मैंने तो जवाहर-लालको बेताजका बादशाह कहा है। और हम तो गरीब है। ऐसे गरीब कि हम पैदल चलेगे, मोटरमे नही बैठेगे। अगर कोई मोटरमे बिठाने आवे तो भी हम कहेगे, 'आपकी मोटर आपको मुबारिक हो, हम तो पैदल ही जानेवाले है। भूख ज्यादा लगेगी तो एक रोटी ज्यादा खा लेगे।' पचायती राजमे इस तरह रास्ते चलनेवालोका ही राज होता है। हरदम जो मोटरपर ही चलता रहता है वह तो बिगड जाता है। महलोमे रहनेवाला आदमी राज्य नही चला सकता। इसीलिए मैने कहा कि अग्रेज जो दुनियाके बादशाह बने हुए है वे हमारे लिए कुछ भी सोचे तो उनसे हमारा काम नही बनता। अगर हिंदुस्तानका बादशाह भी कुछ सोचे और हमारी समझमे वह ठीक नही है तो हम कहे कि वह ठीक नही है।

कल मैने कहा था कि चोरबाजारके लिए बनिए गुनहगार है। सामान्य ताजिर और मुझमे फर्क इतना ही है कि मै सारे हिंदुस्तानकी भलाई

करना हू और दूसरे ताजिर अपना घर भरते है। जैसे राजेद्र बाबू सारे हिदुस्तानको खाना खिलानेकी फिकर करते है उसी तरह मै भी करता हू ।

मुझसे कहा गया है कि आजकलका व्यापार बनियोके हाथमे तो बहुत कम रह गया है। बहुत थोडे ही बनिए चोरबाजार कर सकते है। यह सारी अधाधुदी सरकारी सेक्रेटेरियटकी वजहसे है, क्योकि सारा काम सरकार करती है । खाना देना राजेद्र बाबूके हाथमे है जो बिहारके बादशाह है और कपडा देना राजाजीके हाथमे है जो मद्रासके लोकप्रिय मत्री रह चुके है। फिर भी लोगोको चीजे नही पहुचती, क्योकि सिविल सर्विसमे बडा भ्रष्टाचार चल रहा है। अगर राजेद्र बाबू और राजाजीके अगल-बगलमे बदमाश सेवक है और उन लोगोकी देखभाल नही कर पाते तो उस बुराईमे राजाजी और राजेद्र बाबूका भी ऐब माना जायगा । मै नही जानता कि सरकारी नौकरोको ऐसा बताना कहातक गलत है, लेकिन इतना जरूर कहूगा कि हममेसे कोई चोरबाजारका काम न करे। सरकारी अफसर अगर ऐसा करते है कि जिनपर उनकी मेहरबानी होती है उन्हे उनके घरके आदमियोकी सख्यामे दुगुने-तिगुने राशन टिकट दे देते है तो वह कार्ड लेनेवाला और देनेवाला दोनो ही बदमाश है। हो सकता है कि आजतक ऐसा जो चला है वह बहुत कुछ अग्रेजोके रोब और डरके मारे चला है, लेकिन अब भी यह सिलसिला जारी रहता है तो फिर भगवान ही हिदुस्तानका भला कर सकता है। पर अब वह नही होना चाहिए। आज ऐसी बात नही रही कि साहब बहादुरने जो हुक्म दिया, वह जैसा भी हो हमे पालना ही है। अब हमपर विदेशी मालिक नही है। राजेद्र बाबू ऐसा हुक्म नही दे सकते। उनके पास पुलिस है ही नही जो जबरदस्ती हुक्म मनवा सके । राजाजी या नेहरूजी या सरदार भी अपना हुक्म इस तरह नही मनवा सकते। सरदार बलदेवसिंहके पास फौज है सही, पर वे भी यह नही कह सकते कि मै सारी फौज तुम लोगोपर छोड दूगा और तुम्हे दबा दूगा। अग्रेज अफसरको आप निकाल नही सकते थे, आप इन्हे निकाल सकते है। वे आपको खुश करके ही आपपर राज कर सकते है ।

मै आप लोगोको यह बताना चाहता हू कि आजसे आपका पचायती राज शुरू हो गया है। पूरा राज हाथ आनेमे अब बारह महीने है तबतक भगवान ही जाने क्या होना है, क्या नही। पर आपको पचायती ढगको आजसे ही अपनाना है। हममे कोई देशका नुकसान करके अपना पेट न पाले।

जो सिविल सर्विसवाले है—चाहे वे गोरे हो या काले, हिंदू हो या मुसलमान, सेक्रेटेरियटमे काम करनेवाले हो या पुलिसमे बडे अफसर हो—जिस-जिसको मेरी आवाज पहुचती है उनसे मै कहूगा कि अब आपका फर्ज दस गुना बढ गया है। आप लोग सब अब साफ और सुथरे बन जाय। तभी स्वराज्यका यह सारा काम आसान हो जायगा और आजादीका सबको अनुभव मिलेगा।

: २६ :

४ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोग जानते ही है कि मै इस समय सीधा वाइसरायसे मिलकर आ रहा हू। इसका मतलब यह नही कि मै उनसे कोई चीज लेनेके लिए गया था, न उन्होंने ही मुझे कुछ देनेके लिए बुलाया था बल्कि हमारी जो बात चल रही थी वह पूरी भी नही हो पाई थी। फिर भी मैंने माउटबेटन साहबसे इजाजत ले ली और कहा, 'जहातक बन पडे और जहातक इन्सानके काबूकी बात है, मै प्रार्थनाका समय चूकना नही चाहता।' उन्होंने मेरी इस बातकी कद्र की और कहा कि हमारी बाते बादमे हो जायगी।

मैने आपसे कहा था कि हम मजबूर होकर पाकिस्तानके लिए एक इच भी जगह देनेवाले नही है। यानी हिंसासे, धौंस खाकर नही देगे। बल्कि अगर शान्तिसे वे अपनी बात हमे समझा दे और वह हमारी बुद्धिको जचेगी तभी हमे पाकिस्तान देना है।

मै यह नही कह सकता कि यह सारा बुद्धिका ही प्रयोग हुआ है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी कहती है कि 'हमने डरके मारे कुछ नही दिया है। इतने सारे लोग मर रहे है या मकान, जायदाद जल रही है, यह देखकर हम डरे नही है। हिंसाके सामने हम लाचार हो गए, ऐसी बात हरगिज नही है। हमे आप डरपोक न समझे। लेकिन जब हमने देखा कि मुस्लिम लीगको हम और किसी भी तरीकेसे मना ही नही सकते, तब हमने यह रास्ता पसद किया है। क्योकि एक बार मुस्लिम लीग कुछ भी बात मान लेती है तो हमारा काम सरल हो जाता है। सार यह कि हमने डरकर नही, परिस्थितिको देखकर पाकिस्तान व हिदुस्तानका बटवारा मान लिया है।

हम किसीको मजबूर नही करना चाहते। बहुत-बहुत कोशिशे की। बहुत समझाया, पर वे लोग विधान-परिषद्मे आए ही नही और लीग-वाले यही कहते रहे कि वहा आनेमे हमे हिंदू-बहुमतका डर लगता है।

ऐसी हालतमे वाइसराय क्या करे? वे कहते है कि हमे हर हालतमे १९४८ की जूनमे हिंदुस्तान छोड जाना है। आप उन्हे रोके तो भी वे उससे ज्यादा रुकना नही चाहते। वे कहते है कि हमे हिंदुस्तानको पूरी आजादी देनी ही चाहिए। ऐसा वे क्यो कह रहे है, यह अलग बात है। आप कहेगे कि अब वे दुनियामे ऊँची ताकत नही रहे है, इसलिए वे मजबूर हो गए है। हम तो चाहेगे कि वे आज भी फर्स्ट क्लास पावर (अव्वल दर्जे-की ताकत) बने रहे। ठीक है कि उन्होने डेढ सौ बरसतक हमको सताया है और यह भी मुझे याद है कि आज ३२ बरससे हम उनके साथ लड रहे है। पर यह सब जानते हुए भी मै कभी अपने दुश्मनको दुश्मन नही बनाता। मै तो तब भी ईश्वरसे कहूगा कि 'हे ईश्वर, तू उनका भला कर, और ईश्वर जो न्याय होगा सो करेगा।'

उसकी अमोघ शक्तिके बारेमे इस समय अधिक नही कहूगा। इतना हम समझ ले कि हरेक इन्सान भूलोसे भरा पडा है। हिंदू, सिख, मुसलमान सभी। ऐसा कह सकते है कि मुसलमानोने बडी गलती की है, पर हम अपनेको अच्छे किस आधारपर कहे? न्याय करना ईश्वरपर ही छोडे।

इतना मै कहूगा कि उनका पाकिस्तान मागना गलत चीज थी, पर वे दूसरा कुछ सोच ही नही पाते । वे कहते है कि हम वहा रह ही नही सकते जहा ज्यादा हिंदू हो । इसमे उनका नुकसान है और मै ईश्वरसे मागता हू कि जल्द-से-जल्द वह उन्हें इस नुकसानसे बचा ले । जब मेरा भाई, मेरा सहधर्मी या विधर्मी भी मेरा नुकसान करना चाहे तो मै खुद उसमे सहयोग नही दे सकता । वह भले ही उसे नुकसान न माने, पर जब मै उसे नुकसान समझता हू तो उसमे मै उसका साथ कैसे दूगा ? ऐसा करूगा तो मै चक्कीके दोनो पाटोके बीच पिस जानेवाला हू । मै अपना पाट अलग ही क्यो न रखू ?

रही अग्रेजोकी बात। इसका मै आपको इतमीनान दिलाता हू । वाइसरायके भाषणको देखते हुए नही, पर अपनी निजी बातचीतके आधारपर कहना चाहता हू कि इस निर्णयके पीछे वाइसरायका कोई हाथ नही है । सब नेताओने मिलकर इस निश्चयको किया है । नेता लोग कहते है कि हम लोगोने सात-सात बरसतक कहा, हिदुस्तान एक है। केबिनेट मिशनने भी अच्छा निर्णय दिया, लेकिन लीग मुकर गई और यह रास्ता लेना पडा। उन्हे फिर हिदुस्तानमे वापिस आना ही है। पाकिस्तान बन गया तो भी आपसमे लेन-देन चलेगा ही, आना-जाना भी रहेगा। हम उम्मीद रखे कि हमारा सहयोग बना रहेगा।

लेकिन अब यह फैसला हो गया तो क्या मै यह कहू कि हम सब काग्रेससे बागी बन जाय ? या वाइसरायसे कहू कि आप बीचमे पडो ? वाइसराय तो कहते है कि मै यह चाहता नही था। जवाहरलाल काग्रेसकी ओरसे कहते है कि उन्हे भी यह बात पसद नही है, पर वे सब परिस्थितिके कारण लाचार बन गए है, तलवारके कारण नही, क्योकि हिंदू, सिख सभी कह रहे है कि हम अपने घरमे रहेगे, उनके यहा नही। हिंदू, सिखोके अमलमे रहनेको तैयार है, क्योकि सिख कभी तलवारके जोरसे नही कहते कि तुम्हे गुरुग्रथके सामने सिर झुकाना ही पडेगा ।

मैने मास्टर तारासिहसे भी, जो आज मिलने आए थे, कहा कि आप एक नही सवा लाख बन जाय, बिना मारे मरना सीख ले तो पजाबका सारा इतिहास बदल जायगा और हिदुस्तानका भी इतिहास बदलेगा।

सिख तादादमे जरा-से है, पर बहादुर है । इसलिए अंग्रेज उनसे डरते है। अगर सिख सच्चे बहादुर बने तो फिर खालसाका राज दुनियाभरमे हो जाय।

आपका दर्द भुलानेके लिए मैने यह सब बताया। आप दिलमे दर्द न माने कि हिंदुस्तानके दो हिस्से हो गए। आपने जब मागा है तब वह दिया गया है। काग्रेसने नही मागा था। मै तो यहा था ही नही, पर काग्रेस लोगोके मनकी बात जान लेती है। उसने जान लिया कि खालसा भी यही चाहते है और हिंदू भी। आपके हाथसे कुछ गया नही है। न सिखके हाथसे, न मुसलमानोके हाथसे ही कुछ गया है। वाइसरायने व्याख्यानमे तो कहा ही है और मुझे भी विश्वास दिलाया है कि 'आप सब मिलकर जब आवेगे तब हमारा यह फैसला खत्म हो जायगा। आप मिलकर जो कहेगे वही होगा। मेरा (वाइसरायका) काम इतना ही है कि जबतक सत्ता हस्तातरित होती है तबतक यहाके अंग्रेज लोग ईमानदारीसे काम करे और शातिसे चले जाय यह देखू। इग्लैडके लोग यह नही चाहते कि उनके जानेपर यहा अधाधुधी फैल जाय।'

मैने तो कह दिया था कि आप अराजकताकी फिक्र न करे। मै तो जुआ खेलनेवाला ठहरा। पर मेरी कौन सुने ? आप मेरी नही सुनते; मुसलमानोने मुझे छोड दिया और काग्रेससे भी मै अपनी बात पूरी-पूरी मनवा नही सकता। वैसे काग्रेसका गुलाम हू, क्योकि हिंदुस्तानका हू। मैने १६ मईकी बात मनवानेका पूरा प्रयत्न किया। पर अब जो हो गया है वही हम स्वीकार कर ले। इसमे यह खूबी भी है कि हम जब चाहे उसे मिटा सकते है।

अतमे मै इतना कहूगा कि आप वाइसरायको भूल जाय तो अच्छा है। मुझे यह बुरा लगता है कि हम आपसमे सीधी बात न करे और सारी बात वाइसरायकी मध्यस्थीसे चले। लीगवाले वाइसरायसे कहे, वाइसराय काग्रेससे कहे और काग्रेस फिर वाइसरायसे कहे, यह हमें शोभा नही देता। पर मुस्लिम लीग मानती ही नही तब क्या हो ? काग्रेस मान जाती है और सिख काग्रेसमे शामिल हो गए है। तब वाइसरायको दिन-रात जिन्ना साहबकी मिन्नत करनी पडी कि 'साहब, थोड़ा तो

नीचे उतरिए।' और ऐसा करके उन्होने यह रास्ता निकाला । इतना करते हुए भी वाइसराय कहते है कि 'मेरे दिलमे डर बना रहता है कि लीग क्या कहेगी, काग्रेस क्या कहेगी। लेकिन ईश्वरका नाम लेकर मै करता हू।' तो हम उनकी ईमानदारीमे विश्वास रखे जबतक कोई बुरा अनुभव नही हो।

लेकिन जिन्ना साहबसे मै कहता हू, मिन्नत करता हू कि अब तो आप हम सबसे सीधी बात करे । जो हुआ ठीक है, पर आगेकी सब कार्रवाई हम मिलकर करे। वाइसरायको अब आप भूल जाय और अब जो समझौते करने है उन्हे करनेके लिए आप हम लोगोको अपने पास बुला ले, ताकि हमारा सबका भला हो।

: ३० :

५ जून १९४७

बौद्ध विद्वान श्रीकौसबीकी मृत्युका समाचार देते हुए गाधीजीने कहा—शायद आपने उनका नाम नही सुना होगा। इसलिए शायद आप दुःख मनाना नही चाहेगे, वैसे किसी मृत्युपर हमे दुःख मानना चाहिए भी नही, लेकिन इन्सानका स्वभाव है कि वह अपने स्नेही या पूज्यके मरनेपर दुःख मनाता ही है । हम लोग ऐसे बने है कि जो अपने कामकी डुग्गी पिटवाता फिरता है और राज्य-कारणमे उछाले भरता है, उसको तो हम आसमानपर चढा देते है, लेकिन मूक काम करनेवालोको नही पूछते।

कौसबीजी ऐसे ही एक मूक कार्यकर्त्ता थे । उनका जन्म गावमे हुआ था। जन्मसे वह हिंदू थे, पर उनको ऐसा विश्वास बैठ गया था कि बौद्ध धर्ममे अहिसा, शील आदि जितने बढे-चढे है, उतने दूसरे धर्ममे, वेद-धर्ममे भी नही है । इसलिए उन्होने बौद्ध धर्म स्वीकार किया और बौद्ध शास्त्रोके अध्ययनमे लग गए और उसमे इतने बडे विद्वान् हो गए कि शायद ही हिंदुस्तानमे उनकी बराबरीका और कोई हो।

उन्होने गुजरात विद्यापीठ व काशी विद्यापीठमे पाली भाषा पढाई और अपनी अगाध विद्वत्ताका ज्ञान-दान किया था ।

उन्होने मेरे पास १०००) भेज दिए, जो किसीने उनको दिए थे। उन्होने मुझको लिखा था कि किसीको पाली पढनेके लिए लका भेज देना। लेकिन मैने उनसे पूछा कि क्या लका जाकर पढनेसे किसीको बौद्ध धर्म प्राप्त हो जायगा ? मैने तो दुनियामे बौद्धोसे कहा है कि आपको अगर बौद्ध धर्म जानना है तो आप उसके जन्म-स्थान भारतमे ही उसे पायेगे । जहापर वेद-धर्मसे वह निकला है, वही आपको उसे खोजना है और शकराचार्य-जैसे अद्वितीय विद्वान् जो प्रच्छन्न बुद्ध कहलाए उनके ग्रथोको भी आप समझेगे तब बौद्ध धर्मका गूढ रहस्य आप जान पायेगे ।

लेकिन कौसबीजीकी विद्वत्तासे मै अपनी तुलना नही कर सकता। मै तो इग्लैडमे भोज खाकर बना हुआ बैरिस्टर हू। मेरे पास सस्कृतका ज्ञान जरा-सा है । अगर आज मै महात्मा बना हू तो इसलिए नही कि अग्रेजीका बैरिस्टर हू, पर इसलिए कि मैने सेवा की है और वह सेवा सत्य और अहिसाके द्वारा की है। इस सत्य और अहिसाकी पूजामे जो थोडी-सी सफलता मुझे मिलती चली गई उसीके कारण आज मेरी थोडी-बहुत पूछ है ।

कौसबीजीकी समझमे यह समा गया कि अब यह शरीर अधिक काम करनेके योग्य नही रहा है तो उन्होने अनशन करके प्राण-त्याग करनेकी ठानी । टडनजीके कहनेपर मैने उनका अनशन उनकी (कौसबीजीकी) अनिच्छासे तुडवाया, पर उनका हाजमा बहुत खराब हो चुका था और कुछ भी खुराक ले ही नही सकते थे। तब दुबारा सेवाग्राममे चालीस दिनतक केवल जलपर ही रहकर उन्होने शरीरात किया । बीमारीमें नाममात्रकी सेवा और औषधि भी नही ली । जन्म-स्थान गोवामे जानेका मोह भी उन्होने तजा और अपने पुत्र आदिको अपने पास न आनेकी आज्ञा दी। मृत्युके बादके लिए कह गए कि 'मेरा कोई स्मारक न बनाया जाय।' शरीरको जलाने या दफनानेमे जो सस्ता पडे वह किया जाय और इस तरह उन्होने बुद्धका नाम रटते-रटते अतिम

गहरी निद्रा ली, जो हरेक जन्मनेवालेको कभी-न-कभी लेनी ही है। मृत्यु हरेकका परम मित्र है, वह अपने कर्मके मुताबिक आवेगा ही। भले ही कोई यह बता दे कि अमुकका जन्म अमुक समय होगा, पर मौत कब आवेगी यह कोई भी आजतक नही बता पाया है। चकैयाके किस्सेमे हमने यही देखा।

आपका मैने इसमे इतना समय लिया, इसलिए मै क्षमा चाहता हू।

कल रात मेरे पास तार आया कि 'आपने चार-पाच दिन इतनी लबी-लबी बाते बनाई कि हम एक इच भी पाकिस्तान मजबूरीसे देना नही चाहते—बुद्धिसे हृदयको जाग्रत करके भले ही जो चाहे सो लें, लेकिन वह तो बन गया। अब आप इसके खिलाफ अनशन क्यो नही करते?'

और वे पूछते है कि तब आपने ऐसी बाते क्यो कही थी और अब आप ठडे क्यो बने है? आप कांग्रेसके बागी क्यो नही बनते और उसके गुलाम क्यो बनते है? आप उसके खादिम कैसे रह सकते है? अब आप अनशन करके मर क्यो नही जाते?

ऐसा कहनेका उनका हक है। पर मुझको उस भाईपर गुस्सा करनेका हक नही है। गुस्सा करनेका मतलब है थोडा पागल होना। अग्रेजीमे कहा है—'ऐंगर इज शार्ट मेडनेस' और गीतामे भी कहा है—'क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः' तो मै गीता सीखा हुआ आदमी गुस्सा कैसे करू?

किसीके कहनेपर अनशन कैसे करू? मै मानता हू कि मेरे जीवनमें एक और उपवास लिखा है। आगाखां महलके उपवासके बादसे ही मेरे दिलमे यह बात जमी हुई है कि वह आखिरी उपवास नही था। एक और उपवास मुझे करना होगा, लेकिन वह किसीके कहनेपर मै नही करूगा। खुदा जब कहेगा, करूगा।

मैने कह दिया है कि मै जिन्ना साहबका साथी बन गया हू। वे चाहते है देशमे शाति हो और मै भी यह चाहता हू। फिर भी अगर जगह-जगह दगा चलता ही रहता है और सारा हिंदुस्तान डावाडोल हो जाता है और ईश्वर मुझसे कहता है—यानी मेरा दिल मुझसे कहता है कि अब

ससारसे तुझे उठ जाना है तो मै वैसा करूगा ही । श्रीजिन्नाने मुझसे दस्तखत लिए कि सियासी मामलोमे हिसा नही करनी है और माउट-बेटनने भी मुझपर अपना जादू चलाया और कृपलानी या नेहरूके दस्तखत न लेकर मेरे ही दस्तखत लिए। मैने जवाहरलालकी रायसे उन्हे दस्तखत दे दिए। तब हम इस बातके तीन हिस्सेदार बन गए है। हमारे दोनोके दस्तखत है इसलिए, और माउटबेटन—वाइसरायके नाते नही, पर माउटबेटनके नाते, क्योकि वे गवाहसे भी ज्यादा बन गए है।

मतलब यह है कि सारे हिदुस्तानको शात रहना है। अगर वह नही रहता तो क्या करना है, यह जिन्ना साहबको उनका खुदा बतायगा। मॉउटबेटन साहबको उनका गॉड बताएगा और मुझे मेरा परमात्मा बतायगा ।

लेकिन आपके द्वारा मै उन दोनोसे कहना चाहता हू कि वे जब कहेगे तब मै उनके साथ पैदल या सवारीमे, जैसे भी वे ले जाना चाहे मै जाऊगा। हवाई जहाजसे मै नही जा सकता। उसमे चलकर नीचे क्या दीखेगा ? मै कभी हवाई जहाजमे चला नही हू। हा, उसे नीचेसे देखता हू और एक मछली-सा वह दीखता है ।

गुडगाव अभीतक जल रहा है । आजकी खबर नही मिली है, पर वहा जाट और मेवोने आमने-सामने मोर्चा लगा रखा है । इतना अच्छा है कि वे ऐसा पागलपन नही चाहते कि बच्चो, औरतो और बुड्ढोको मारने लगे । वे सिपाहीकी तरह आपसमे टक्कर लेते है । पर वे लडे ही क्यो ? यह चलता है, इसमे मेरी भी शरम है, जिन्नाकी भी है और माउटबेटनके लिए भी शरमकी बात है । इसी तरह सरदार बलदेवसिह और जवाहरलालके लिए भी यह शरमकी बात है। यह अच्छा हुआ कि २ जूनको कोई खास बात न हुई और न ४ को ही हुई।

पर एक काम बन गया है सही। पाकिस्तान और हिदुस्तान बन गए और उनकी विधान-परिषद् बना दी गई है। क्या अब उन्हे मिटानेके लिए मै मरने बैठू ? इस तरह मै मरनेवाला नही हू ।

मेरे लिए ध्यान देनेको एक बहुत बड़ा काम पड़ा है। कहते हैं कि अब हिंदुस्तानका औद्योगीकरण होनेवाला है। मेरा औद्योगीकरण तो देहातोंमें होगा, यानी घर-घरमे चरखा चलेगा और गाव-गावमे कपडा तैयार होगा।

अगर वे कहते है कि एक बिरला-मिल है, उसकी हम हजार मिल बनायगे—बिरलाका नाम मैं इसलिए लेता हू कि वे मेरे दोस्त है, बाकी मेरा मतलब हरेक मिलवालेसे है—तो मै वह पसद नही करूगा। अगर भूकप हो जाय या अपने आप बिरला-मिल जल जाय तो मुझे हरज नही है। न मै उस नुकसानीके लिए बिरला-बधुके पास एक आसू गिराऊगा। हा, यदि कोई जान-बूझकर उनकी मिले नष्ट करने जाता हं तो मै उसे डाट लगा दूगा।

ऐसा मालूम होता है कि आज काग्रेसने यह तय कर लिया है कि वह हिंदुस्तानभरमे बहुत-सी मिले बना दे और कलपुर्जे बिछा दे। और वह चाहती है कि सारे हिंदुस्तानमे बहुत बडी फौज बन जाय। तो उसमे मेरा हाथ नही है। बिहारमे जो मार-काट हुई उसमे मेरा हाथ कहा था? और आज हिंदुस्तानमे कौन-सी ऐसी चीज हो रही है जिससे मुझे खुशी हो सके। तो भी मै पडा हू, क्योकि काग्रेस बहुत बडी सस्था हो गई है। उसके सामने मै उपवास नही कर सकता, लेकिन आज मै भट्ठीमे पडा हू और मेरे दिलमे अगार जल रहा है। फिर भी मै जिंदा क्यो हू, यह मेरा ईश्वर ही जानता है। जैसा भी हू, आखिर काग्रेसका खादिम ही हू। अगर काग्रेस पागलपनपर उतर आवे तो क्या मै भी पागलपन करू? क्या मै मरकर यह सिद्ध करने बैठू कि मेरी ही बात सच्ची है? मै तो काग्रेसकी, आपकी, मुसलमानोकी और अपने साथी जिन्ना साहबकी बुद्धिपर चोट करना चाहता हू और उनके हृदयपर कब्जा करना चाहता हू।

जिन्ना साहबसे कहूगा कि अब तो आपका 'पाकिस्तान जिंदाबाद' हो गया न! अब आप माउटबेटन साहबके पास क्यो जाते है? काग्रेसके पास क्यो नही जाते? आप बादशाह खानको और डा० खान साहबको क्यो नही बुलाते? उन्हे क्यो नही समझाते कि 'देखिए तो सही, यह

पाकिस्तान कैसा अच्छा गुलाबका फूल है ?

लेकिन पाकिस्तानके बारेमे मेरे पास शिकायतें आ रही है । आज ही एक खत मिला है, जिसमे लिखा है कि एक अग्रेज कपनी हथियार बनानेके लिए लाहौर जायगी । यह भी कहा जाता है कि मुस्लिम लीगने कामन-वेल्थमे रहना तय कर लिया है । वह औपनिवेशिक स्वराज्य ही कायम रखेगी ।

काग्रेसने औपनिवेशिक स्वराज्य स्वीकारकर कोई गुनाह नही किया है । उसने तो वह आरजी तौरपर तत्काल अग्रेजोको हटानेके लिए स्वीकार किया । पर विधान बनते ही वह मुकम्मिल आजादी ले लेगी । फिर मुस्लिम लीग क्या औपनिवेशिक पदपर ही बनी रहेगी ? हमारे दोनो विधान एक-से होने चाहिए । दोनोने कहा है कि हमे मुकम्मिल आजादी चाहिए । तब मुकम्मिल आजादीको ही लेनेका जिन्नाका भी धर्म हो जाता है । आपसमे लडकर इस धर्मका पालन नही किया जा सकता ।

जब कि सारे हिंदू मनाते-मनाते थक गए तब भी उन्होने न माना तो उनको पाकिस्तान दे दिया कि बादमे तो शाति मिलेगी ।

कोई कहे कि मैने ऐसा क्यो होने दिया । तो क्या मै ऐसा करू कि काग्रेस मुझसे पूछकर ही सब काम करे ? मै ऐसा दीवाना नही बना हू । और मै काग्रेसका बागी बनूगा, इसका मतलब सारे हिंदुस्तानका बागी बनूगा, क्योकि काग्रेस सारे देशकी है । ऐसा मै तभी करूगा जब मै देखूगा कि काग्रेस तो पूजीपतियोकी हो गई है ।

लेकिन अभी तो मेरी समझसे काग्रेस गरीबोका ही काम करती है । भले ही उसका रास्ता मुझसे अलग हो, भले ही उसका दिमाग हथियार, फौज, कारखानोमे लगा हो । मुझे तो उनको बुद्धिसे समझाना है, अनशनसे नही ।

अनशन भी राक्षसी हो सकता है । ईश्वर भी मुझे ऐसे राक्षसी अनशनसे बचाए, वह मुझे राक्षसी कार्य, राक्षसी उच्चार, राक्षसी विचार सभीमे बचाए रखे । अच्छा हो कि ऐसा मै करू, उससे पहले वह मुझे उठा ले । मै जब करूगा, सात्त्विक और दैवी अनशन ही करूगा ।

: ३१ :

६ जून १९४७

आज फिर एक वहनने प्रार्थनामे विरोध किया ।

गाधीजीने कहा, "म उसकी लवी चिट्ठी सुनानेमे समय नही खोऊगा । मेरा खयाल था कि अव लोग मुझे समझ गए है । पर देखता हू कि ऐसा हमारा शुभ नसीव नही है । धर्मके नामसे अधर्म हो रहा है, पर हमे अधर्म सहना ही होगा । अगर वह वहन वीचमे वोलने लगे तो आप उसे तग न करे । अव तो उसने आगे कदम वढाया है और मुझे लिखा है 'आप भाषण भी न करे ।' वह कुछ भी कहे, प्रार्थना वद न होगी और भाषण भी वद न होगा । ऐसा हर कोई आदमी करने लगे तो हिंदुस्तानका राज चलनेवाला नही है । आप लोग शात रहे ।"

प्रार्थना नियमपूर्वक हुई और वह महिला वीच-वीचमे चिल्लाती रही । प्रार्थनाके वाद गाधीजीने कहा—"मै देखता हू कि आपको गरमी सता रही है, लेकिन मै सुनाने और आप सुननेके लिए लाचार है, पर आप शात रहे, तभी सुना सकता हू । इसका मतलव यह नही कि आप कागज या रूमालसे थोडी वहुत हवा भी न ले । गरम ही सही, पर हवा मुझे भी मिल रही है । यह लडकी मेरे लिए पखा कर रही है, तो मै आपको क्यो रोकू ? अगर आप सभी पखा चलावे तो मै नही कहूगा कि पखा चलाना औरतका ही काम है । आप पखा ला सकते है । औरत भी तो मरद वन सकती है । वह मनको गिरावे नही तो वह अवला नही है, 'वेटर हाफ' है"[1] ।

भजनमे गोपीने कहा है, 'वसरी सुन वह वनमे जाना चाहती है',

---

[1] इसपर सारी सभामें आधी मिनटतक जोरकी हँसी हुई, क्योंकि गाधीजीके पीछे एक पुरुष पंखा कर रहा था, जिसे उन्होंने लडकी वता दिया था । गाधीजी खुद भी यह देखकर खिलखिलाकर हँसे और अपनी भूल सुधारी ।

लकिन यह भजन केवल औरतके ही लिए नही है । ईश्वरके सामने हम सभी गोपिया है । ईश्वर स्वय न नर है, न नारी है, उसके लिए न पक्ति-भेद है, न योनिभेद, वह 'नेति नेति' है । वह हृदयरूपी बनमे रहता है और उसकी बसी है अतरनाद । हमे निर्जन बनमे जानेकी आवश्यकता नही है । अपने अतरमे हमे ईश्वरका मधुर नाद सुनना है और जब हममेसे हरेक वह मधुर नाद सुनने लगेगा तब हिदुस्तानका भला होगा ।

आज ठीक मौकेसे यह भजन सुनाया गया है । वह बहन मुझसे कहती है, 'तुम बनमे चले जाओ, तुम्हीने जिन्नाको बिगाडा है । पर मै कौन होता हू उसे बिगाडनेवाला ? मै अगर कुछ आशा कर सकता हू तो उन्हे दुरुस्त ही कर सकता हू । लाठीसे नही, बल्कि प्रेमसे । लाठी या एटम बमसे तो विनाश हो सकता है । एटम बमने नाश ही किया है, किसीको अपनी ओर खीचा नही है । मनुष्यको अपनी ओर खीचनेवाला अगर जगतमे कोई असली चुबक है तो वह केवल प्रेम ही है; इसका मै साक्षी हू । वह कहती है, 'कुरान मत पढो, अब बात ही मत करो, जगलमे जाकर रहो ।' पर मै बनमें जाऊ तो भी आप मुझे खीच लेनेवाले है । इन्सान साथ-ही-साथ रहनेके लिए पैदा हुआ है । अगर मै यह कला सीख पाया होता कि बनमे बैठा रहू, वही आपको खीच सकू तो फिर मुझे न भाषण देने पडते, न कुछ कहना पड़ता । मै एकातमे बैठा मौन रखता और आप मेरे मनकी बात करते । पर अभी ईश्वरने मुझे इस योग्य नही बनाया ।

आप जानना चाहते होगे कि आज इतनी देर बैठकर मैने वाइसरायसे क्या बाते की और उनसे क्या लाया । वे क्या देते ? वे तो बेचारे है । उनको न कुछ लेना है, न देना है । वे तो कहते है कि मै 'ईश्वरसे प्रार्थना करता हू कि हिदुस्तानका हरेक आदमी—हिंदू, मुसलमान, सिख सब—इस बातपर विश्वास करे कि मै यहां लूटने या आपसमे फिसाद करानेके लिए नही आया हू । हो सके तो शाति कराकर, वरना जैसे भी हो, चले जानेके लिए ही आया हू । हम १५ अगस्तके बाद यहा नही रहेगे । अगर गवर्नर-जनरल रहेगे तो भी आपके कहनेपर । इस समय हमारे पास

औपनिवेशिक स्वराज्यसे अधिक कुछ नही है, जो हम दे सके। हमको आपने मार भगाया होता तो और बात थी, लेकिन मित्रताके साथ जानेमे यही तरीका श्रेष्ठ है।'

वाइसरायने यह भी बताया कि 'हम इसलिए मित्रतापूर्वक जाते हैं कि हिंदुस्तानने हमे मारकर फेकनेकी कोशिश नही की। सन् '४२ मे रेल, तार आदि काटे सही. पर वे थोडे आदमी थे, करोडोने ऐसा नही किया, लेकिन आपने शराफत बरती। आपने हमसे इतना ही कहा, 'आप चले जाओ'; क्योकि आपको यह बुरा लगा कि हमने हिंदमे जहर फैलाया है। लेकिन काग्रेसने हमे जहर नही दिया। उसने केवल असहयोग किया और हम समझ गए कि बिना मार्शल-लाके हम यहा नही रह सकते है, इसलिए हमने जाना स्वीकार किया।'

अगर हमारा असहयोग पूरा-पूरा होता तो आजसे बहुत पहले और कही अच्छे तरीकेपर अग्रेज चले गए होते। काग्रेसने विद्यार्थियोसे, नौकरोसे और सिपाहियोसे भी कहा था कि आप सब वहासे निकल आवे। लेकिन वे कमजोर रहे, उन्हे छोड़ नही सके। फिर भी आप लोगोने यह नही कहा कि 'हम उन्हे मार डालेगे। उन्हे जहर दे देगे।' हमारी इस शक्तिको अग्रेजोने परख लिया और इस कारण वे जा रहे हैं। लेकिन वाइसराय कहते है कि 'अब भी लोग हमपर भरोसा नही करते। एक अखबारवालेने लिखा है कि अग्रेज यहा सत्ता जमाने आए हैं और भारतके दो टुकडे करके जा रहे है, ताकि दोनो टुकडे लडे और एक-न-एक अग्रेजका दामन पकडे। तो उन्हे यहा रहना मिल जायगा।'

यह तो दगा होगा और मुझे आशा है कि अंग्रेज इस बार दगा न करेगे। अगर करे तो भी हम खुद बहादुर बने। बहादुर लोग धोखेसे क्यो डरेगे? जब वे मेरे साथ शराफतसे बात करते है तो मै क्यो शका करू। मुझसे वाइसरायने पूछा, 'तुझे तो मुझपर विश्वास है या तुझे भी नही है?' तब मैंने उनसे कहा कि 'मुझे विश्वास न होता तो मै आपके पास आता ही नही। मै सत्यवादी हू, शरीफ हू।'

वाइसरायसे ऐसी हमारी बाते चलती रही और यह जो पाकिस्तान तथा हिंदुस्तान बना दिया गया है उसके बारेमे मेरे दिलमे जो परेशानी है,

वह भी मैंने वाइसरायको सुना दी। तब उन्होने मुझे बताया कि यह अंग्रेजका किया हुआ नही है। कांग्रेस और लीगने मिलकर जो मांगा है वही दिया गया है। और हम तुरत ही इसलिए नही चले जा सकते कि एक छोटे घरके सामानके बटवारेमे उसकी फेहरिस्त बनानेमे कुछ देर लगती है, तो यह तो इतने बडे मुल्कके बटवारेकी बात है। फिर भी मैने उनसे कहा कि अब आप आराम करे। यह बटवारे आदिका काम हम आपसमे मिलकर कर ले, यही अच्छा है।

आप लोगोके मार्फत दो-चार दिनसे मिन्नत कर रहा हू और आज भी करता हू कि अब आपको जो चाहिए था मिल गया—चाहे कुछ कम मिला, पर वह क्या है यह तो बताइए ! उसका नाम-ही-नाम गुलाबका है, या उसमे खुशबू भी है ? सुघाइए तो सही और यह तो बताइए कि आपके यहा सिखोको और हिंदुओको जगह है या उन्हे गुलाम रहना है ? और सीमाप्रातमे जनमत लेकर आप क्या सीमाप्रातके भी दो टुकडे करना चाहते है ? और बलूचिस्तानके भी ?

क्या आप अब भी अपनी कार्रवाईसे नही बतायगे कि आजतक मुसलमानोने हिंदूको अपना दुश्मन माना, पर अब नही मानेंगे ? पठानका हिस्सा नही करेंगे ? बलूचका हिस्सा भी नही करेंगे और हिंदू-हिंदूका भी नही करेंगे ? हिंदुस्तान अखड रहेगा, पर भाई-भाईके तौरपर हम उसमे बटवारा कर लेंगे और अंग्रेजके बिना हमारी गाडी चलेगी।

मेरी इस बातपर वे मुझे गाली दे तो मुझे गम नही है। मुझे तो कल भी गाली मिली थी कि 'तू मर क्यो नही जाता।' पर वे खुलासा तो करे कि उनका मशा क्या है ? अब भी मेरे पास क्यो नही आते ? आपके पास क्यो नही आते ? कांग्रेसी या गैर कांग्रेसीको अपने पास क्यो नही बुलाते ? एक जमाना था जब कांग्रेस-लीगका समझौता उन्होने किया था। अब और पक्का और अटूट समझौता क्यो नही करते ?

हम सब मिलकर कोशिश करे कि दुश्मन न रहकर आपसमे दोस्त बने। यह काम अकेले वाइसराय नही कर सकते, अकेली कांग्रेस भी नही कर सकती। सब मिलकर ही दोस्त बन सकते है।

: ३२ :

७ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

मै विनयसे कहता हू कि प्रार्थनामे दखल देना बेहूदापन है । मै प्रार्थना तो रोक नही सकता, वह चलेगी ही । पर देखता हू कि रोज कोई-न-कोई शिकायत रहती ही है। इससे मेरा दिल बहुत दुखता है ।

कुरानकी आयत पढते समय आज फिर विघ्न डाला गया, लेकिन गाधीजी इस सारे समय आख बद करके प्रार्थना करते रहे ।

फिर उन्होने कहा--आज मुझे वही सिलसिला कायम रखना है, यानी वायुमडलमे मडराती बातपर ही मै कहना चाहता हू, क्योकि मुझपर बहुत काफी दबाव पड रहा है कि जबतक वाइसरायका ऐलान नही हुआ तबतक तो मै मुखालफत करता रहा और बार-बार मैने कहा कि हम जबरदस्ती कुछ भी मजूर करनेवाले नही है और अब मै चुप हो गया हू । मुझसे यह जो कहा जाता है, ठीक कहा जाता है । मै कबूल करता हू कि मुझे भी यह निर्णय अच्छा नही लगा है, लेकिन दुनियामे कई चीजे ऐसी होती रहती है, जो अपने मनकी नही होती, फिर भी हम उसे सहन करते है। इसी तरह इसको भी हमे सहन करना है ।

एक अखबारमे निकला है कि 'अब भी अखिल भारत-काग्रेस-कमेटीको हक है कि वह इसे नामजूर कर दे ।' मै भी मानता हू कि अखिल भारत-काग्रेस-समितिको ऐसा करनेका पूरा हक है कि वे इस बातको स्वीकार न करे, लेकिन जिसके प्रति आजतक हम वफादार रहे, जिस काग्रेसने दुनियामे नाम कमाया और जिसने काफी काम भी किया, उसकी मुखालफत एकदमसे नही करनी चाहिए ।

बहुतसे सनातनी छूआछूतके भूतको मानते है और उसके पालनमे धर्म समझते है। लेकिन हममे कौन सच्चा सनातनी है, इसका न्याय तो ईश्वर ही चुकाएगा। इसी तरह अगर काग्रेस भी अधर्मको धर्मका लिबास पहनाती है तो हमे काग्रेस बद कर देनी पडेगी । काग्रेसको तो कौन मार

सकता है, पर हम उसके सामने मर जायगे। आत्महत्या करके नही मरेगे, पर हम तबतक उसका मुकाबला करेगे और उसके आगे सिर नही झुकायगे जबतक हम उसे सही रास्तेपर नही लायगे या खुद मर नही जायगे। लेकिन ऐसा तब करेगे जब हम देखेगे कि काग्रेस जान-बूझकर गलती करती है। मेरी समझसे इस समय तो वह ऐसा नही कर रही है। न उसने पहले ऐसी गलतिया की है। यदि वह अधर्मको ही धर्म मानकर आजतक चलती तो वह वहातक नही पहुच पाती जहातक आज पहुची है।

यह कहना कि काग्रेस-कार्य-समितिको यह करनेसे पहले अखिल भारत-काग्रेस-समितिसे पूछना चाहिए था, ठीक नही है। कदम-कदमपर कार्य-समिति पूछने बैठे तो वह काम नही कर सकती। बादमे उसे हक है कि वह कार्य-समितिका विरोध करे और चाहे तो उसे अलग करके नई समिति बना ले।

जब मै काग्रेसमे बाकायदा काम करता था और काग्रेसके विधानको अमलमे लानेका मुझे अधिकार था तब भी एक पुरानी बहसमे मैने कहा था कि हम महासमितिके ३०० या १००० सदस्योको बार-बार इकट्ठा नही कर सकते। इस तरह काम करना कार्य-समितिके लिए अव्यावहारिक हो जायगा, पर बादमे महासमिति कार्य-समितिसे अवश्य जवाबतलब कर सकती है। दुबारा वह गलती न करे, इस हेतुसे उसे नालायक करार देकर हटा सकती है और नई समिति बना सकती है।

फर्ज कीजिए कि कार्य-समितिने अखिल भारत-काग्रेस-समितिके नाम कई लाख रुपयेकी हुडी निकाल दी और अखिल भारत-काग्रेस-समितिको वह पसद न आई। तो भी उसे वह हुडी सकारनी तो होगी ही; लेकिन दुबारा ऐसी गलती न हो, इसलिए वह उस कार्य-समितिको खत्म कर सकती है और नई चुन सकती है—बल्कि उसे ऐसा ही करना चाहिए।

यही कायदा इस पाकिस्तान-हिदुस्तानके मामलेमे लागू होता है। वह चीज हो गई है: पर अभी उसमे दुरुस्तीकी बहुत बडी गुजाइश है। हम चाहे तो हिंदुस्तान तथा पाकिस्तानको—या और

जो कोई नाम धरो वह—बिगाड भी सकते है और सुधार भी सकते है। यह सही है कि कांग्रेस लीगकी नुमाइदा नही है, पर कांग्रेसके लिए मेरे मनमे जो चित्र बना हुआ है उसके मुताबिक वह हिंदुस्तानभरके सभी व्यक्तियोकी प्रतिनिधि है। इसलिए कांग्रेस कभी यह नही कह सकती कि चूकि मुसलमानोने हमारा भारी नुकसान किया है, इस कारण हम भी उनका बुरा ही करेगे। ऐसा करनेपर कांग्रेस 'कांग्रेस' नही रह जाती। जब मै गोलमेजमे गया तब भी मैने यही कहा था कि वे हमारा बिगाडेगे तो भी मै उनका भला ही करूगा।

कांग्रेस पचायती राज कायम करना चाहती है। राजाओकी भी वह अहितैषी नही बनेगी। पर राजा तभी रह सकेगे जब वे औधके राजाकी तरह अपनी प्रजाके ट्रस्टी बनकर रहेगे। प्रजाकी सत्ताको माननेके कारण औध जैसा नन्हा राज्य चिरजीवी बन सकेगा; लेकिन उसके मुकाबलेमे करोडोकी सपत्तिवाला काश्मीरका राज्य अगर अपनी प्रजाकी बातको नही मानता है तो वह मिट जायगा। इन राजाओने अग्रेज बादशाहके बूते अबतक भले मनचाहा किया, पर अब उन्हे समझ लेना चाहिए कि उनकी सत्ताका मूल आधार प्रजा ही है। काश्मीरका नाम मैने इस वास्ते लिया कि आज वह हमारी दृष्टिके सामने है; पर यह बात सभी रजवाडोके लिए है।

मैने इतनी लबी बात इसलिए की कि कांग्रेस लोगोकी सस्था बनी रहे और लोग कांग्रेसकी मर्यादामे रहे। यानी कांग्रेसके प्रति विनय रखे और अनुशासनका पालन करे। अगर हम आपसमे लडने बैठेगे तो कांग्रेस मिट जानेवाली है। अगर आपको कार्य-समितिका काम पसद नही है तो अबकी अखिल भारत-कांग्रेस-समितिमे आप वैसा साफ-साफ बता दे। मै तो वहा आना नही चाहता। हुक्म होगा तो आऊगा, पर मेरे अकेलेकी आवाज सुनेगा कौन? आखिर पच आप है। आप विनयके साथ कांग्रेससे कह सकते है कि 'आपने जो किया है वह हमे पसद है या नापसद है।'

कांग्रेसका धर्म अब यह बन गया है कि पाकिस्तानका हिस्सा छोडकर जो उसके हाथमे रह जाता है उसे वह अच्छे-से-अच्छा बनावे और

पाकिस्तानवाले अपने हिस्सेको कांग्रेसवालोसे भी अच्छा बनावे। तो फिर दोनो मिल जाते है और हम सुखसे रह सकते है।

(अन्तमे गांधीजीने जिन्ना साहबके प्रति अपनी रोजकी अपील आज भी काफी विस्तारसे दोहराई और हिंदू-मुस्लिम-पारसी सभीको अपने पास बुलाकर समझौता करने, वाइसरायको परेशानीसे और कांग्रेस नेताओको बेकारकी दौड-धूपसे बचानेकी तथा ऐसा पाकिस्तान बनानेकी बात कही कि जिसमे भगवद्गीताका पाठ भी कुरानशरीफके बराबर ही किया जा सके और मंदिर तथा गुरुद्वारेकी भी मस्जिदके समान ही इज्जत की जाय, ताकि पाकिस्तानके आजतकके विरोधी भी अपनी भूलपर पछतावे और आला पाकिस्तानकी प्रशसा-ही-प्रशसा करे।)

: ३३ :

८ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आकाशसे गोले भी क्यो न बरसाए जाय और कैसा भी उपद्रव क्यो न हो, ईश्वरभजनके समय हमारी शाति भग नही होनी चाहिए। जैसे गोपी बसीका नाद बनमे सुनती है वैसे ही ईश्वरका भक्त अतर्नाद हृदयमे सुनता है। इसे अग्रेजीमे 'वॉइस आव साइलेंस' कहा गया है, यानी वह नाद तभी सुनाई देता है जब हम शात रहे।

आप लोगोको मैने कह तो दिया है कि प्रोफेसर कोसबीजी जो बडे विद्वान थे और पाली भाषामे अग्रगण्य माने जाते थे वे अभी-अभी सेवाग्राम आश्रममे चल बसे। उनके बारेमे वहाके सचालक बलवतसिहका पत्र है, जिसमे कहा गया है कि ऐसी मृत्यु आजतक मैने नही देखी। यह तो बिल्कुल ऐसी हुई जैसी कबीरजीने बताई है--

दास कबीर जतन सो ओढी,
ज्यो-की-त्यो धर दीनी चदरिया।

इस तरह हम सभी लोग मृत्युकी मैत्री साध ले तो हिंदुस्तानका भला ही होनेवाला है ।

मुझसे किसीने कहा कि 'आप पच बन जाइए और इन मेवो और जाटोका[1] झगडा निपटा दीजिए,' पर मै कैसे पच बनू ? एक तो मेरी जान-पहिचान उन लोगोमेसे किसीसे नही है । दूसरे पच वह हो सकता है जिसके हाथमें अपना फैसला मनवानेकी शक्ति हो । मेरे हाथमे न बदूक है, न मै अदालतकी शरण लूगा, लेकिन मुझे लगता है कि अब उनको शात हो जाना चाहिए । भला हो गया या बुरा, अब तो लीग-काग्रेसमे भी समझौता हो गया है और अब वहातक नही लडते रहना चाहिए, जहा-तक दोमेसे एक हार कबूल नही करता । मेव भी बहादुर है और जाट-अहीर भी ऐसे नही है कि अपने लिए किसीको यह कहने दे कि वे मार खा गए । यह अच्छा है कि वे बालक, बूढे और औरतोको नही मारते । हथियार भी दोनोने काफी बना लिए है । वीरतासे लडते है, परतु नुकसान होता ही है । झोपडी जल जानेसे गरीबको इतना ही दु ख होता है जितना राजाको महलके जलनेसे होता है । हमारे इतने नजदीक लडाई हो रही है, पर हम कुछ नही कर पाते. । वहा अधेरा-सा छा गया है, लेकिन आप लोगोमेसे जो उन्हे जानते-पहचानते है वे उनके पास मेरी आवाज पहुचा सके तो पहुचावे और लडाई बद करानेकी कोशिश करे ।

मुझसे कहा गया है कि बगालके मामलेको मै बिगाड रहा हू । मेरा दावा है कि मुझसे कोई काम बिगडता नही । बगाल, बिहार या नोआखालीका, किसीका भी काम मेरे हाथसे बिगडा नही है । मुझसे तो सुधार ही हो सकता है और हुआ है । अब पजाबकी तरह बगालके भी दो हिस्से होनेवाले है । बगालके हिस्सेमे मुसलमानोकी अक्सरियत है और दूसरे हिस्सेमे हिंदुओकी । बहुत सारे हिंदू चाहते है कि हमारा

---

[1] गुड़गांव जिलेके ।

हिस्सा तकसीम कर दिया जाय, क्योंकि कहातक अशांति बर्दाश्त की जाय। अपना घर बन जायगा तो उसमें शांतिसे तो रहा जा सकेगा। बंगालकी मुस्लिम लीगने इस बातको माननेसे इन्कार कर दिया है। लेकिन वहांकी लीगकी बातको मानता कौन है? नई योजनामें बंगालका बंटवारा निश्चित है।

अब मुझपर दोष लगाया जाता है कि मैं बंगालको तकसीम होने देना नहीं चाहता। ठीक है, मैं यह नहीं चाहता। पर मैं तो यह जरा भी पसंद नहीं करता कि सारे मुल्कके हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान-जैसे दो टुकडे किए जायं। मेरा साहस तो यहांतक है कि अगर मैं अकेला हिंदू रहूंगा तो भी मुसलमान अक्सरियतवालोंके बीच बना रहूंगा। अधिक-से-अधिक वे क्या करेंगे? मुझे मार डालेंगे, इतना ही न! लेकिन वे नहीं मारेंगे। एक आदमीकी वे रक्षा करेंगे। ईश्वर ही बचाएगा। अकेले आदमीकी रक्षा ईश्वर करता ही है। इसीलिए उसे 'निर्बलके बल राम' कहा जाता है। मुझे बिलकुल ही प्रिय नहीं है कि बंगालको तकसीम किया जाय। लेकिन मैं ऐसा आदमी नहीं हूं कि मैं यह कह दूं कि "हिंदू डरके मारे दब जायं और अपने जानमालकी हिफाजतके विचारसे अपनी इच्छाको छोड दें।" अगर वे मानते हैं कि अपने टुकडेमें वे आरामसे रह सकेंगे तो ऐसा कोई न समझे कि मैं उनके बीचमें दखल देनेवाला हूं।

परसों या नरसों मेरे पास शरत्‌बाबू आए थे। वे नहीं चाहते कि बंगालके हिस्से हों। वे कहते हैं, सारे प्रांतकी एक ही संस्कृति है, एक-सा खान-पान है, तो केवल धर्मके बहाने दो टुकडे क्यों किए जायं? पर शरत्‌बाबूकी बात वे जानें और मेरी मैं अपनी जानूं। लेकिन लोगोंको पूरा हक है कि वे अपने मनकी करें। बहुत आदमियोंकी रायके बीच मेरे एक आदमीकी राय रोडा नहीं बन सकती।

और मैं तो हमेशा ही अच्छी बातमें साथ देता हूं। अगर बुरा आदमी भी मुंहसे रामनाम निकालता है तो क्या मैं उसके साथ बैठकर रामनाम न लूं? मैं उसके साथ जरूर रामनाम लूंगा और शरीफ कहा जानेवाला आदमी शैतानका काम करे तो क्या मैं उसका साथ दूंगा? अगर ऐसा करूं तो फिर मैं गांधी नहीं। गांधीमें शैतानकी पूजा कभी नहीं होगी और

जो कोई भला काम है, प्रेमका काम है, उसमे मेरा हिस्सा है ।

मुझे पता चला है कि आज तो बगालका विभाजन रोकनेके लिए पैसे उड रहे है । पैसेसे कोई स्थायी चीज नही हो सकती। पैसेसे पाए गए वोट दमदार नही होते । ऐसे काममे मेरी शिरकत हरगिज नही हो सकती। जो काम गुडेपनसे किया जाता है उसमे फिर वह करनेवाले मा-बाप अथवा पत्नी या बेटे ही क्यो न हो——मै कभी भी साथ नही दे सकता ।

इसलिए मै शरत्‌बाबूसे कहूगा कि आपके दिलमे और मेरे दिलमे बगालका विभाजन न होने देनेकी बात है, पर अभी हम उस विभाजन न करनेकी बातको भूल जायं। बुरे साधनसे वह नही हो सकता। नापाक साधनसे ईश्वर नही पाया जा सकता और बुरी चीजको पानेका साधन साफ नही हो सकता।

: ३४ :

सोमवार, ९ जून १९४७

(लिखित सदेश)

मेरे पास कुछ खत आए है जिनमे कहा गया है कि अल्लोपनिषद्, जिसके बारेमे मैने आपको एक रोज बताया था, तो किसी धर्मशास्त्रके सग्रहमे नही है । मैने तो याददाश्तसे ही ऐसा कहा था। इसलिए मैने एक मित्रसे पूछा और मुझे उनसे यह जवाब मिला है कि जिस सग्रहका स्मरण मुझे था उसमे अल्लोपनिषद्‌का जिक्र है और उसमे कहा गया है कि उसमे ७ मत्र है। ये उपनिषद् अथर्ववेदके जमानेसे है। लेखकने और बहुत कुछ बताया है, जो ज्यादातर विद्यार्थियोके लिए है। इसलिए मै आपको खतका वह भाग नही सुनाता ।

इसके अलावा मेरे पास एक खत श्रीजयचद्र विद्यालकारका भी आया है । जयचद्रजीने लिखा है कि 'महाराणा कुभाने, जो राणा सागाके दादा थे, सर्वप्रथम आक्रमणकारी मुसलमानोका सगठित विरोध किया

और गुजरात तथा मालवाके मुस्लिम प्रदेशको जीतकर चित्तौडमे एक कीर्ति-स्तम्भ स्थापित किया। उस स्तम्भपर अनेक हिंदू देवी-देवताओके चित्रोके साथ ब्रह्मा, विष्णु, महेशके चित्रके बगलमे ही अल्लाका नाम भी खोदा हुआ है। महाराणा रणजीतसिह तथा छत्रपति शिवाजी-जैसे हिंदू-गौरवोकी इस्लामके प्रति श्रद्धा प्रसिद्ध ही है। जो हिंदू-धर्म-अभिमानी आपकी प्रार्थनामे कुरान पढनेपर आपत्ति करते है वे विजय-स्तभमे अल्लाके नामपर क्यो नही आपत्ति करते ?'

इसके बाद विद्यालकारजीने यह बताते हुए कि हिंदू-मुस्लिम-वैमनस्यका कारण गलत ढगका लिखा इतिहास है, मुझसे अनुरोध किया है कि मै ठीक ढगसे इतिहास पढानेकी ओर ध्यान दू, नही तो हिंदू-मुस्लिम-एकताके सारे प्रयत्न बालूकी भीतकी तरह ढह जायगे।

आजकल तो मेरे पास बहुत ऐसे खत आते रहते है, जिनमे मेरे ऊपर हमला होता है। एक मित्र लिखते है कि आप जो कहा करते थे कि हिदुस्तानका काटना तो समझो मेरे शरीरको काटना है, तो आज आपकी यह बात कितनी कमजोर पड गई है, और मुझे इस बटवारेका सख्त विरोध करनेको कहते है। मै तो अपना इसमे कोई भी दोष नही देखता। जब मैंने कहा था कि हिदुस्तानके दो भाग नही करने चाहिएं तो उस वक्त मुझे विश्वास था कि आम जनताकी राय मेरे पक्षमे है, लेकिन जब आम राय मेरे साथ न हो तो क्या मुझे अपनी राय जबरदस्ती लोगोके गले मढनी चाहिए ? मैंने यह भी जरूर कई बार कहा है कि असत्य और बुराईके साथ तो कभी समझौता नही करना चाहिए और आज मै दावेसे कह सकता हू कि अगर तमाम गैर मुस्लिम लोग मेरे साथ हो तो मै हिंदुस्तानके दो टुकडे न होने दूगा। लेकिन आज मुझे स्वीकार करना पडता है कि आम राय मेरे साथ नही और इस कारण मुझे पीछे हटकर बैठना चाहिए। जो सबक हम ३० सालसे सीखते आए है और जिसे आज हम भूल रहे है वह यह कि असत्य और हिसापर जीत केवल सत्य और अहिसासे ही हो सकती है। अधीरजको धीरजसे ही मारा जा सकता है और गरमीको सरदीसे। आज तो हम अपनी परछाई-

से भी डरने लगे हैं। जो मुझे पाकिस्तानका विरोध करनेके लिए कहते हैं उनमे और मेरेमे कोई समानता नही, सिवा इसके कि देशका बटवारा हम दोनोको नापसद है। मेरे और उनके विरोधमे बुनियादी फरक है। प्रेम और वैरका मेल किस तरहसे हो सकता है ?

एक दूसरे भाई लिखते हैं कि यह वाइसराय तो दूसरे वाइसरायोसे ज्यादा खतरनाक है। दूसरोने तो हमे नगी तलवार दिखाकर दबाया और इसने अपनी जबानसे काग्रेसको धोखा देकर फास लिया। मैं तो इस रायसे हरगिज सहमत नही हो सकता। लिखनेवालेने (मेरी रायमे) बिना जाने और बिना चाहे वाइसराय साहबकी काफी तारीफ की है और साथ-ही-साथ काग्रेसी मत्रियोकी अक्ल और काबिलियतकी निंदा। लेखक यह साफ सीधी बात क्यो नही पहचान सकते कि आम राय यानी वह लोग जो राय रखनेके लायक हैं, काग्रेसके नेताओके साथ हैं। नेता मूर्ख तो हैं नही, उन्हे भी देशका बटवारा निहायत बुरा लगता है, लेकिन वे मुल्कके नुमाइदे होकर आम रायके खिलाफ नही जा सकते। उनके हाथोमे जो शक्ति है सो लोगोके द्वारा ही है। लेखकके हाथमे सत्ता होती तो शायद हालत यह नही होती। और किसी भी हालतमे यह तो उचित नही कि वाइसराय साहबकी निंदा की जाय जब नेता हमारे चुने हुए हों या हमारे अपने लोग खुद मुल्कके साथ बेवफाई करे। यह कहावत कि 'यथा राजा तथा प्रजा', उतनी सत्य नही है जितनी यह बात कि 'यथा प्रजा तथा राजा।'

: ३५ :

१० जून १९४७

भाइयो और बहनो,

जो कुछ बगाल-विभाजनके बारेमे मैंने कहा है, उसमे मैंने किसी-पर इल्जाम नही लगाया है। मैंने जो बातें सुनी थी वही बताई हैं। बगालका हिस्सा न किया जाय, यह सारा-का-सारा एक बना रहे यह

किसको पसद न आयगा । पर झूठसे, फरेबसे या रिश्वतसे बगाल-को एक रखनेकी कोई बात करे तो मै उनका साथ नही दे सकता। अगर किसी बगालीने—ख्वाह वह हिंदू हो या मुसलमान—ऐसा नही किया है तो फिर कोई बात रह ही नही जाती। कोई व्यर्थमे मेरी बात अपने ऊपर क्यो ले ले ?

लेकिन लोगोको वहम जरूर है कि बगालमे गलत चीज हो रही है। जिन्होने मुझे खबर दी है उन्होने नाम और पते भी दिए है। पर उन्हे यहा खोलना मै ठीक नही समझता । अगर उन्होने मुझे झूठी खबर दी है तो यह बुरी बात है और उन्हे सजा मिलनी चाहिए । पर मै किसको सजा दू ? किसीको सजा देनेकी शक्ति मै नही रखता।

पर मेरे पास एक बुलद चीज है और वह है लोकमत । लोकमतमे बडी प्रचड शक्ति है । अभी हमारे यहा इस शब्दका अर्थ पूरे जोरसे प्रगट नही हुआ है, पर अग्रेजीमे उस शब्दका अर्थ बडा जोरदार है। अग्रेजीमे इसे 'पब्लिक ओपीनियन' कहते है और उसके सामने बादशाह भी कुछ नही कर सकता। चर्चिल जो इतना बडा बहादुर है और जो ऊचे खानदानका, बडा भारी वक्ता, बहुत ही विद्वान—मेरे-जैसा अनजान बिलकुल नही है, यह सब कुछ होते हुए भी अपनी गद्दी न सम्हाल सका । इसका मतलब यह है कि वहाका लोकमत बहुत जाग्रत है । इसलिए उसके सामने किसीकी नही चल सकती ।

आज हमारे यहाका लोकमत इस तरह जाग्रत नही है । अगर जाग्रत होता तो मेरे-जैसा निकम्मा व्यक्ति महात्मा न बन बैठता। और महात्मा बन जानेके बाद मै जो कुछ करू वह सहन न कर लिया जाता, जैसा कि आज हिंदुस्तानमे किसी महात्मा कहे जानेवालेको कोई पूछता ही नही—चाहे वह कुछ भी उलटा-सीधा करे ।

टाल्स्टाय एक बडा योद्धा था, पर जब उसने देखा कि लडाई अच्छी चीज नही है तब लडाईको मिटा देनेकी कोशिश करते-करते वह मर गया। उसने कहा है कि दुनियामे सबसे बडी शक्ति लोकमत है और वह सत्य और अहिंसासे पैदा हो सकता है ।

यही काम मै कर रहा हू, परतु यदि हमारे लोकमतमे सच्ची बहादुरी और सच्चाई नही आई तो उससे कुछ बननेवाला नही है ।

लेकिन आज तो ऐसा नही है । १५ अगस्तको जो औपनिवेशिक स्वराज्य आ रहा है, उसको हम नही चाहते, ऐसा मुझे लगता है । कारण यह कि हमारे यहा पूर्ण आजादीके लिए बरसोसे लोकमत बन गया है। देशको यह औपनिवेशिक स्वराज्यकी बात चुभती है । यह चुभना ठीक भी है और ठीक नही भी। ठीक इसलिए नही कि हम उसकी ताकत नही समझते । एक तो यह कि इसके जरिए अग्रेज दो ही महीनेमे यहांसे चले जाते है। दूसरे यह कि जब चाहे तब हम औपनिवेशिक दर्जेको हटा सकते है। अगर हम पागल ही रहे तो उसमे दूसरोका क्या दोष है ? खैर, लोकमतकी बातपर आऊ, अगर वह जाग्रत रहता है तो सबका अच्छा ही होनेवाला है। अगर लोकमत यह समझे कि 'रिश्वत नही खाई', 'बुरा काम नही किया' और इस हालतमे बगाल एक रहनेका तय करता है तो अच्छा ही है, लेकिन हम पुश्तोमे कायर रहे है, गुलाम रहे है, इसलिए हमारे यहा हमारे हाथसे गदी चीजे बन जाती है।

लेकिन अगर किसीने गदा काम नही किया और दूसरा कोई लाछन लगाता है तो जी क्यो दुखाया जाय ? मसलन कई ऐसे बडे-बडे ओहदेदार होते है जो नापाक नही होते, चोखे रहते है, फिर भी उनपर रिश्वतका इल्जाम लगाया जाता है, लेकिन वे इस बातसे परेशान नही होते । अगर कोई मुझे बदमाश बतावे और नापाक कहे तो क्या मै रोने बैठू ? किसीके कहनेपर मै क्या बदमाश साबित हो जाऊगा ? यह मै मानता हू कि कुछ लोगोका गलत शिकायत करना द्वेषभाव और बुजदिली कहाएगा । हमे किसीकी बुराई नही करनी चाहिए, भला ही देखना चाहिए । अगर आजाद बनना चाहते है तो औरोकी बुराई न देखे, भलाई देखे और उसका सिचन करे ।

गव मै ऐसा मानकर चलता हू कि हिदुस्तानके हिस्से हो गए है और सब कांग्रेसने मजबूरीसे कबूल किया है । लेकिन हिंदुस्तानके टुकडे हो जानेपर अगर हम खुश नही रह सकते तो हम रजीदा भी क्यो हो ? हमे अपने दिलके टुकडे नही होने देने चाहिए । हृदयको चूर-चूर होनेसे

बचाना चाहिए । वरना, जिन्ना साहबकी बात सही साबित हो जायगी कि हम दो राष्ट्र है । मैने कभी यह माना ही नही । जब कि हमारे उनके मा-बाप एक थे तो महज धर्म बदलनेसे क्या राष्ट्र बदल जायगा ? जब कि सिध, पजाब और शायद सीमाप्रात भी पाकिस्तानमे चले जायगे तो क्या वे अब हमारे नही रहे ? मै तो ब्रिटेन तकको गैर नही मानता तो पाकिस्तानको दूसरा राष्ट्र क्यो मानू ?

कहनेको तो मै हिंदका हू और हिंदमे बबई प्रातका और उसमें गुजरातका। गुजरातमे फिर काठियावाडका तथा उसमे भी छोटे-से देहात पोरबदरका। लेकिन पोरबदरका हू, इसीलिए सारे हिदका भी हू अर्थात् मै पजाबी भी हू और पजाबमे जाऊगा तो उसे अपना समझकर वहा रहूगा और मार डाला जाऊगा तो मर जाऊगा।

मुझे खुशी है कि जिन्ना साहबने कहा है कि पाकिस्तान शहनशाहका नही, जनताका रहेगा और अल्पमतको भी बराबरका माना जायगा। उनकी इस बातमे इतना इजाफा मै करना चाहूगा कि जैसा वे कहते है वैसा करे भी। अपने पैरोकारोको भी वे यह बात समझा दे और कह दे कि 'अब लडाईकी बात भूल जाओ ।'

हम भी अपने यहा अल्पमतको दबानेकी सोचेगे नही । मुट्ठीभर पारसियोका भी हमारे यहा साझा रहेगा। अगर हिदू-मुसलमान दोनों मिलकर पारसीसे कहे कि तुम 'शराब पीते हो, इसलिए निकम्मे हो, तुम्हे हम मार डालेगे' तो वह बुरा होगा। पारसी तो मेरे मित्र है और उन्हे मै कहता हू कि शराब नही छोडोगे तो अपनी मौत मरोगे, पर हम उन्हे नही मारेगे । इसी तरह पजाबमे सिख और हिदुओकी हिफाजत होनी चाहिए । मुसलमान उनसे मुहब्बतसे बरते और कहे कि आप आरामसे रहे, आप हमारे भाई है। अगर वे जबरदस्ती करने लगे तो हिदू-सिख मरनेसे न डरे और कहे कि मजबूरन न हम इस्लाम मजूर करेगे, न मजबूरन गोश्त खायगे । हिदुओको ऐसा नही समझना चाहिए कि एक नई प्रजा बन गए है जिसमे मुसलमान रह ही नही सकते । हम बहु-मतवाले हिदुस्तानमे है। बहुमतको जाग्रत करके हमे बहादुरीसे काम करना है । बहादुरी तलवारमे नही है । हम सच्चे बनेगे, ईश्वरके बदे

बनेंगे और जरूरत पडनेपर मरेंगे भी। जब ऐसा करेंगे तब हिंदुस्तान अलग और पाकिस्तान अलग, यह बात नही रह जायगी और ये कृत्रिम हिस्से निकम्मे बन जायगे। अगर हम लडाई करेंगे तो हमपर दो राष्ट्रका इलजाम सच्चा साबित होगा। इसलिए आप और मै ईश्वरसे प्रार्थना करे कि हिंदुस्तान और पाकिस्तान अलग तो हुए, पर अब हमारे दिल अलग-अलग न हो।

: ३६ :

११ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

यद्यपि बगालके जो टुकडे होनेवाले है उनके बारेमे मैंने दो दफा कह दिया है फिर भी तीसरी बार उस बारेमे कहना जरूरी हो गया है। एक शख्सका बहुत ही गुस्सेसे भरा हुआ कागज मेरे पास आया है। इतना गुस्सा करनेकी जरूरत ही क्या है? अभी मैंने बताया था कि गुस्सा करना पागलपन है। हमे अपनी बुद्धि शात रखकर सब बातोको समझना चाहिए।

वह पत्रमे आगे लिखते है कि मैंने बगालको बडा नुकसान पहुचाया है। पर मैंने कैसे नुकसान पहुचाया? और क्या नुकसान पहुचाया? मैंने तो जो बात हो रही थी वह सुना दी और मैंने इतना ही कहा था कि बगालके टुकडे मै नही चाहता, लेकिन इन्साफसे बाहर कुछ नही होना चाहिए। ख्वाह हिंदू हो, मुसलमान हो अथवा ईसाई—अगर वह बगाली है और अपनी मातृभाषाको कायम रखना चाहता है, अपने मुल्कको एक रखना चाहता है तो वह अच्छी बात है। लेकिन अच्छी बातके लिए साधन भी अच्छे ही बरतने चाहिए। टेढे रास्तेसे सीधी बातको नही पहुचा जा सकता। पूरबको जानेके लिए पच्छिमकी ओर नही चलना चाहिए। मै बगालियोसे कहूगा कि मै अपनी बातपर कायम हू। अगर बगालके टुकडे हो तो आप ही कर सकते है, न हो तो आप ही उसे

रोक सकते हैं। आप जो न चाहें वह न हो, इसीमें इन्साफ और सचाई है।

आज मेरे पास केम्बेलपुरके कुछ भाई आए। वे इस बातसे घबराए हुए हैं कि पाकिस्तानमें उनकी हालत क्या होगी ? उनपर कैसी बीतेगी और अब वे वहापर कैसे रहें ?

मैंने उन भाइयोंसे कहा कि आप अपने मनमें ऐसा समझ लें कि हम हिंदुस्तानमें ही पडे हैं। जब हमारा भूगोल एक है तब महज कह देने-भरसे पाकिस्तानवाला हिस्सा हिंदुस्तानमें नहीं मिट सकता और मेरी रायमें आप वहीं बने रहिए।

मेरे इस कथनपर उन लोगोंने पूछा—"तो हम सब मिलकर एक जगह रहें ?" मैंने उनसे ऐसा करनेसे भी मनाही की और उनसे कहा कि नोआखालीके हिंदुओं और बिहारके मुसलमानोंसे भी ऐसा करनेको मना किया है और यह भी कहा है कि हमें हथियार भी नहीं रखने चाहिए।

जहापर अल्पमतवाले थोडे-से आदमियोंका रक्षण सरकार नहीं कर सकती वहापर उस सरकारको बने रहनेका कोई हक नहीं रहता। अगर हिंदुस्तानकी सरकार चंद मुसलमानोंके जानो-मालकी हिफाजत नहीं कर सकती तो उस सरकारको उलट देना चाहिए और पाकिस्तानमें अगर थोडे हिंदू और सिखोंकी खैरियत नहीं रहती तो उसे भी खतम हो जाना चाहिए। जहापर बहुमतवाले अल्पमतवालोंको मार डालें, वह तो जालिम हुकूमत कहलायगी। उसे स्वराज्य नहीं कहा जा सकता।

तो फिर क्या हमने जो इतनी लडाई ली, इतना सत्याग्रह किया सब चूल्हेसे निकलकर भट्ठीमें पडनेके लिए ? लेकिन मेरी बातपर केम्बेलपुरवालोंने कहा, 'आप महात्मा हैं। आप महात्माकी-सी बातें करते हैं। हम लोग ताजिर हैं, वहा हमारा व्यापार चलता है, और हम बाल-बच्चेदार हैं। हम आपकी तरह कैसे कर सकते हैं ?' तब मैंने कहा कि मेरे पास दूसरी चीज नहीं है। मैं यही कहते-कहते बुड्ढा हो गया और अखीरतक यही कहूगा। अगर कोई कहता है कि हम बहादुर नहीं बन सकते, हम डरपोक ही रहेंगे तो यह बात ठीक है। लेकिन इन्सान डरपोक बननेके लिए थोडे ही पैदा हुआ है ? फिर यह कैसे कहा जायगा कि मनुष्य ईश्वरका तेज है—खुदाका नूर है। गाय-बैलमें ईश्वरका तेज है

ऐसा किसीने कहा है और हम मनुष्योमे ईश्वरका तेज है, वह क्या डरनेके और एक दूसरेका गला काटनेके लिए है ?

पाकिस्तानको देखकर सहम जानेकी कोई बात नही है। मै तो मिट्टीका पुतला, हड्डी-पसली जिसकी दीख रही है, ऐसा मामूली-सा आदमी हू, और बहादुर बननेकी बात कह रहा हू। लेकिन जिन्ना साहब तो इतना बडा काम कर रहे है। किसीके ख्वाबमे भी नही था कि कभी ऐसा बन पायगा, पर पाकिस्तान बन गया, जिन्ना साहबने उसे पा लिया। काग्रेसको मजबूर होकर वह मजूर करना पडा। पर मै सोचता हू कि काग्रेस उसपर दु ख क्यो माने ? मै भी क्यो बुजदिल बनू ? मै क्यो मान लू कि हमारे टुकडे हो गए है। जिसको ईश्वरने एक बना रखा है उसको दो कौन कर सकता है ?

और जिन्ना साहबने बाते भी ऐसी ही की है। उनसे जब पूछा जाता है कि क्या पजाबसे हिंदू, सिख भाग जाय तो वे कहते है, "हमारे यहा सब एक ही तराजूमे तोले जायगे। सबका अदल इन्साफ होगा, वे भागे क्यो ?"

बादशाह खान मेरे दोस्त है। मौलाना आजाद तथा जवाहरलालके महल छोडकर मेरी झोपडीमे आकर टिकते है। यहा गोश्त नही मागते। मेरे साथ ही रोटी-फल लेते है। वे पूरे फकीर है। उनके भाई डा० खान साहब बिना उनकी मददके काम नही चला सकते। हम उन्हे सीमात गाधी कहते है, पर वहा गाधीको ही कोई नही जानता तो सीमात गाधीको कौन जाने ? वहा तो यह बादशाह कहलाते है और जिस झोपडीमे जाइए वहा पठान अपने इस बादशाहपर लुग्ग हो जाते है।

ऐसे बादशाहके इलाकेमे जनमत-सग्रह करनेकी बात तय कर दी गई है और वह भी तब जब पठानका खून अभी ठडा नही हुआ है जिसका कि खून सदा गरम ही रहना आया है और बादशाहने अपनी जिदगी उस खूनको ठडा करनेमे खपा रखी है।

वहा मत लिया जायगा तब सब-के-सब न पाकिस्तानकी कहेगे न हिंदुस्तानकी। तब क्या आप पठानके दो टुकडे कर डालेगे ? इसलिए बादशाह खानसे कहता हू कि यदि जिन्ना साहब आश्वासन देकर भली

प्रकार समझा दे तो आप पाकिस्तानसे क्यो डरे ? सब पठान इकट्ठे होकर क्यो न रहे ?

और जिन्ना साहबने जब मेरे साथ अपील निकाली है—दस्तखत किए है कि लडाईमे कोई राजनैतिक काम नही किया जायगा तो फिर वे क्यो नही कह देते कि अब हम जनमत-सग्रह नही करेगे ? वाइसरायने तो वादा किया है कि तीनो पार्टी मिलकर जो तय करेगे वह मान लेगे । तो अब कायदे आजम सबको बुलाकर समझा दे कि पाकिस्तानमे एक बच्चे तकको तकलीफ नही होगी। काग्रेसवाले यहाकी बाते बतला दे कि हम सब भाई-भाई बनकर रहेगे और पाकिस्तानवाले भी यह बता दे कि वे जहर नही फैलावेगे ।

अगर आपसमे जहर फैल जायगा तो वह वहुत बुरी चीज होगी। अंग्रेज यहासे तो चले जायगे, पर बादमे मुसलमान और हिंदुओको कोसेगे कि हम तो पाकिस्तान बनाना ही चाहते थे, लेकिन जब दोनो विधान-परिषद्मे इकट्ठे बैठे ही नही और हमे तो जाना ही था इसलिए यह तीसरा रास्ता निकाला, फिर भी शाति नही हुई।

लेकिन मुझे दु ख है कि यद्यपि माउटबेटन बुरा करनेके लिए नही आए, पर उनके हाथसे बुरा हो जानेवाला है । ऐसा तो कभी होता नही कि कोई सारी दुनियाको खुश ही रख सके, फिर वह तो बहादुर सेनापति रहे है। वे पाकिस्तानवालोसे भी और काग्रेसवालोसे भी कह सकते है कि तुम्हारी यह बात ठीक नही है और लीगसे अब भी वे कह सकते है कि आप लोगोने जिस गेदके लिए जो जिद पकडी थी वह गेद आपको मिल गई । अब बताइए कि यह पाकिस्तान क्या चीज है ? उसमे कौन-सा सौदर्य है ? वे इतना तो कह दे कि अब हमारा पाकिस्तान बन गया, अब हम भाई-भाई बेनकर रहना चाहते है।

सारी दुनिया भी यह देखना चाहती है कि हम एक है। इब्न सऊद तकने कायदे आजमको तार दिया है कि आपको पाकिस्तान मिल गया। अब हमे आशा रखनी चाहिए कि दुनियामे शाति ही रहेगी। कायदे आजमने भी उत्तरमे लिखा है 'दुनियामे शाति ही रहेगी', पर वह कैसे रहेगी ? हिंदुस्तानमे अशाति होगी तो दुनियामे शाति कहासे आवेगी ?

मै फिर जिन्ना साहबसे कहूगा कि आपको दोस्ताना तौरसे सबको अपनी ओर खीचना है । सबको सतोष देना है, वरना दुनियाका बुरा हाल होनेवाला है। हिदुस्तानका बुरा होनेवाला है, मुसलमानका बुरा होगा और हिंदूका भी बुरा होगा। मै यह एक ही चीज कहूगा।

: ३७ :

१२ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोग देख रहे है कि मेरी दाहिनी ओर ख्वाजा साहब[1] बैठे हुए है। इनके बारेमे एक बार मै आपको पहले सुना चुका हू कि किस प्रकार मै स्वामी सत्यदेवके साथ इनके घर पहुचा था और सत्यदेवजी मुसलमानके हाथका पानीतक नही पी सकते थे। लेकिन तब भी ख्वाजा साहबने बुरा नही माना और उदार स्वागत किया। उस समय ये अलीगढ युनिवर्सिटीके ट्रस्टी थे । बादमे असहयोग आदोलनमे शरीक होनेके लिए इन्होने ट्रस्टीपन छोड दिया। जहातक मुझे याद है, जब मै वहा गया था तब वहा लीगकी मीटिंग हो रही थी। मैने वहा पूछा था कि यहा भी कोई सत्याग्रही मिलेगा या नही ? मौ० मुहम्मदअली और मौ० शौकतअली तब नजरबद थे और उनके कैद होनेके बारेमे वहा सब मायूस हो रहे थे। तब ख्वाजा साहबने मुझसे कहा था कि आपको ढाई सत्याग्रही मिल सकते है। उनमे एक तो थे श्वेब कुरेशी, जो काफी प्रख्यात और बहादुर जवान थे । दूसरे साहब भी जो वहा मौजूद थे, पक्के सत्याग्रही थे। एक बार लोगोने उन्हे मारा और उनके हाथमे दो जगह चोटे आई, तब भी वे शात रहे और ताकत होनेपर भी मार सहन की, लेकिन जवाबमे हमला नही किया। इन दोनोका

---

[1] अखिल भारतीय राष्ट्रीय मुस्लिम मजलिसके अध्यक्ष ख्वाजा अब्दुल मजीद।

परिचय करानेके बाद ख्वाजा साहबने कहा था कि आधा सत्याग्रही मैं हू। और तबसे ख्वाजा साहब मेरे सगे भाईकी तरह बनकर रहे है।

वे नही चाहते थे कि देशके हिस्से हो पर हिस्से हो ही गए। तो वे मेरे पास अपना दुख प्रगट करने आए है। मैंने उनसे कहा कि हम रोनेवाले नही है। और मैंने उन्हे हँसा दिया।

चोट तो सप्रू साहबको भी बहुत पहुची है कि यह क्या कर दिया गया। ठीक है कि यह लीगके मनकी चीज है, पर काग्रेसको यह बात पसद नही आई है। जब ऐसा है, यानी जिस बातपर दोनो राजी नही है वह बात कहातक चल सकती है? भले ही भूगोलके टुकडे हो गए हो, पर दिलोके टुकडे नही हुए तो हमे रोना नही है; क्योकि जबतक दिलोके टुकडे नही होते तबतक खैर ही है। फिर चाहे मुल्कके हिस्से पाकिस्तान-हिंदुस्तान कुछ भी हो। हम एक ही हो जानेवाले है। यह नही कि वे थककर और परेशान होकर हमे मिलने आयगे। पर हमारा बरताव ऐसा होगा कि चाहनेपर भी वे हमसे अलग रह नही सकेगे।

जवाहरलालके दिलमे यह बात बहुत खटकती है कि अब हम शेष हिस्सेको हिंदुस्तान कहे। उसका कहना ठीक ही है कि जब उनका पाकिस्तान बन गया तब भी हमारा हिंदुस्तान कैसे बन सकता है। इसका अर्थ तो यही होगा कि यह हिस्सा हिंदुओका हो गया। फिर ईसाई, यहूदी और बाकी मुसलमान क्या करें, यहासे हट जाय? पतजी ख्वाजा साहबको, जो युक्तप्रातके रहनेवाले है, और उनके पुराने मित्र है, कहेंगे कि आप युक्तप्रातसे हट जाइए?

अगर ऐसा हम करेंगे तो जिन्ना साहबकी बात सही साबित हो जायगी कि 'उनके दिल पहलेसे ही फटे हुए है।'

लेकिन इतिहास ऐसा नही बताता है। बडे इतिहासवेत्ता श्री-जयचद्रजीका पत्र मैंने आपको बताया था। वे कहते है कि जब हिंदू-मुसलमान आपसमे लडते थे तब भी धर्मके नामसे एक दूसरेको नही मारते थे। अपने बचपनमे भी हम लोग एक दूसरेको अलग अनुभव नही करते थे। पुराने जमानेमे जब जैनुल आब्दीन साहब हिंदुओके साथ काशीकी यात्राके लिए जाते थे तब रास्तेमे जो मदिर टूटे पाए जाते

थे, उनकी मरम्मत भी कराते थे। चित्तौडमे विजय-स्तभपर अल्लाका नाम मिलता है।

फिर आज हमारे दिल ऐसे क्यो बिगड जाय कि न साथ बैठ सके, न एक-दूसरेको अच्छी नजरसे देख सके ?

माना कि थोडे मुसलमान बिगड भी गए तो क्या हम भी बिगड जाय ? जवाहरलालजी ऐसा नही चाहते। कहते है, जबतक इसमे मुसलमान शामिल थे तबतक हमारे देशका नाम हिंदुस्तान बहुत अच्छा था, क्योकि उस समय यह अर्थ निकलता था कि जो हिंदुस्तानमे पैदा हुआ है उसका स्थान हिंदुस्तानमे है, चाहे फिर वह किसी धर्मका हो।

अब हिंदुस्तानका अर्थ लगाया जाता है कि वह हिंदुओका है। और हिंदू भी कौन ? सवर्ण। पर मैने कहा है कि सवर्ण तो—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सभी मिलाकर हमारे यहा थोडे है, बहुत बडी तादाद तो शूद्र और अछूतो तथा आरण्यकोकी है। उनकी बडी तादाद पर क्या थोडेसे सवर्ण राज करेगे ? ठीक है कि आज उनकी चलती है, पर अछूत, आरण्यक आदिको अलग करके सवर्ण लोग राज करेगे तो जिन्ना साहबकी बात ठीक ही साबित होगी कि 'थोडेसे ऊचे हिंदू बाकी सबको कुचलकर रखना चाहते है। तो क्या हम ऐसे पाजी बनेगे ?' तो जिन्ना साहबके दो भिन्न राष्ट्रके सिद्धातको स्वीकार करेगे ? यानी जब मेरा लडका मुसलमान बना तो वह अलग राष्ट्रका हो गया ? अगर हम अपने तीन-चौथाई भाइयोको जगली बनायगे और उन्हे छोडकर राज करेगे तो उसका अर्थ यही होगा कि सचमुच जैसा जिन्नाने कहा है वैसे हमारा हिंदुस्तान बन गया।

और तब पारसीस्तान, सिखोके सिखिस्तान, आरण्यकोके आरण्यकस्तान और अछूतोके अछूतस्तानकी उत्पत्ति हो जायगी और हिंदुस्तान हिंदुस्तान न रहकर उसके टुकडे-टुकडे हो जायगे।

अगर अंग्रेज हिंदुस्तानके ऐसे टुकडे करना चाहते है तो अंग्रेजोके लिए दुनियामे स्थान रहनेवाला नही है।

यानी जो बन गया है उसके लिए हमे रोना नही है। जवाहरलालने इसका नाम 'यूनियन आव इडियन रिपब्लिक' (भारतीय प्रजातत्र सघ)

दिया है। यानी सभी इसमे मिलकर रहेगे। अगर कोई भाग जाना चाहता है तो उसे हम रहनेको मजबूर नही करेगे, लेकिन जो रहेगे उन्हे भाई बनाकर ही रखगे। हम उन्हे इस तरह रखेगे कि वे महसूस करे कि हम भागेगे नही, क्योकि हम अलग टुकडेमे नही है। हम सघके वफादार रहेगे तथा सघकी सेवा करेगे।

आज किसीने मुझसे पूछा कि अब हिदुस्तानीका क्या काम? यह प्रश्न नही उठाना चाहिए। अगर हम यह सोचे कि उनके यहा उर्दू चले और हमारे यहा हिंदी तो हमपर वही भिन्नताका इल्जाम साबित हो जायगा। हिदुस्तानीका मतलब यही है कि आसान बोली बोली जाय और वही लिखी-पढी जाय। पहले तो वह हमारे यहा चलती भी थी, अब तो फारसीकी भरमारवाली उर्दू चलती है, वह जनता समझ नही सकती और हिदीमे जब ठूस-ठूसकर सस्कृत शब्द भरे जाते है तब वह भी जनताके कामकी नही होती। अगर हम ऐसी भाषामे बोले तो सप्रू साहब-जैसोको हमे अपने यहासे निकाल देना पडे। वे है तो हिंदू, पर उनकी मादरी जबान उर्दू है। मै उनसे सस्कृतभरी हिदीमे बाते करूगा तो वे शिकायत करेगे कि तू क्या बोल रहा है? इसलिए हिदुस्तानीका--हिंदुस्तानी सभाका--काम चालू रखकर उर्दूवालोसे भी हमे अपनी मुहब्बत साबित करनी चाहिए।

मै तो समझता हू, जो हो गया है उसमे ईश्वरकी मरजी है। वह हम दोनोकी परीक्षा लेना चाहता है कि पाकिस्तानवाले क्या करते है और हिदुस्तानवाले कितने उदार बनते है। हमे इस परीक्षामे सफल होना है। मै उम्मीद करता हू कि हममेसे कोई हिंदू ऐसा पागल बननेवाला नही है जो उनकी पाक चीजकी कम इज्जत करे और उनकी अलीगढ युनिवर्सिटी-को, मालवीयजीके हिदू-विश्वविद्यालयकी तरह बढिया तालीमगाह न माने। अगर हम इनकी पाक जगहोको ढा देगे तो हम खुद भी ढह जायगे।

इसी तरह पारसियोंकी अगियारी, यहूदियोके सीनेकाफ और दूसरे भी सब पूजास्थानोकी हिंदू-मदिरोके समान ही हमे रक्षा करनी चाहिए और हम यह भी कहे कि अछूतोका भी हमारे यहा इतना आदर किया जानेवाला है, जितना ऊची-से-ऊची जातिके सवर्ण लोगोका। सच्चा हिंदू-धर्म वही है जिसमे सब धर्मोका समावेश हो।

इसमे हमे सौ फीसदी सही उतरना है। 'जैसेको तैसा' वाला कायदा अमलमे नही लाना है। वह तो पुराना कायदा हो गया। अब नया जमाना तो यह आया है कि अगर कोई गाली देता है तो उसका जवाब हम मुहब्बतसे दे। झूठके सामने सचाईका प्रयोग करे और कोई बेहूदापन और नीचपन करे तो उसके साथ हम उदार भावसे बरते। यानी हर समय हर बातमे हमारी आख, कान, हाथ पाक रहे। तभी हमारी खैर है और तभी दुनिया जिंदा रहनेवाली है। इसमे मुझे कोई शक नही है।

ऐसा हम हरगिज न सोचे कि चलो, मुसलमानोको जगह दे दी, अब हम अपने यहा मनचाहा बरतेगे।

: ३८ :

१३ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मैने नोआखालीके देहातोमे पैदल यात्रा की तब वहापर लोग बहुत ही डरे हुए थे। और डरे हुए लोग रामका नाम नही ले सकते। फिर हमे ऐसे देहातोमे और खेतोकी मेडोपरसे होकर चलना पडा कि शायद ही कोई नोआखालीमे रहनेवाला स्त्री या पुरुष इस तरह चला हो। पर मै इस पैदल यात्रामेसे जो शिक्षा ले सका वह दूसरे तरीकेसे नही ले सकता था। हिंदू और मुसलमान दोनोके खेतोमेसे हमे गुजरना पडता था। इसलिए वहा चलते-चलते हम दोनो नाम[1] लेते थे।

जब यहा भी ईश्वर है, वहा भी ईश्वर है और ईश्वर तो एक ही हो सकता है तब दोनो अलग-अलग नाम ले और एक दूसरेके नाम बर्दाश्त न कर सके, यह तो पागलपन-सा ही दीखता है। तभी मैने कल कहा था कि क्या हिंदुस्तानमेसे—हालाकि अब हिंदुस्तान नाम तो हमे छोड़ना

[1] भज मन प्यारे राम रहीम, भज मन प्यारे कृष्ण करीम।

है—रहीमका नाम लेनेवालेको चला जाना होगा ? और वहा—पाकिस्तान कहे जानेवाले हिस्सेमे—रामका नाम त्याज्य रहेगा ? क्या वहा कोई कृष्ण कहेगा तो उसे निकाल दिया जायगा ? वहा कुछ भी हो, हमारे यहा यह नही हो सकता। हम कृष्णको और करीमको—दोनोको बराबर मानेगे और दुनियाको भी बतायगे कि हम पागल बननेवाले नही है।

एक भाईने मेरे पास इस आशयका एक बहुत सख्त पत्र भेजा है कि क्या तुम अब भी पागल ही रहोगे ? अब तो थोडे दिनोमे इस दुनियासे चले जाओगे तब भी कुछ सीखोगे नही ? यदि पुरुषोत्तमदास टडनने यह कहा कि 'सबको तलवार लेनी चाहिए, सिपाही बनना चाहिए और अपना बचाव करना चाहिए, तो तुमको इस बातमे चोट क्यो लगती है ? तुम तो गीताके पढनेवाले हो ? तुम्हे तो इन द्वन्द्वोसे परे हो जाना चाहिए और बात-बातमे चोट लगा लेने या खुश होनेकी झझट छोड देनी चाहिए। तुम उस कहानीवाले भोले साधु बाबा-जैसी बात करते हो जो पानीमे बहते हुए बिच्छूके डक लगानेपर भी उसे हाथसे पकडकर बचानेकी कोशिश करता था। अगर तुमसे अहिसाका गीत गाए बिना रहा नही जाता तो कम-से-कम जो दूसरे रास्तेसे जाते है उन्हे तो जाने दो। उनके बीचमे रोडा क्यो बनते हो ?

अगर मै स्थितप्रज्ञ रह सका तो अपनी एक सौ पच्चीस वर्षकी उम्रमें-से एक भी वर्ष कम जिंदा नही रहूगा। अगर हम सब स्थितप्रज्ञ बने तो हममेसे एक भी आदमीको १२५ वर्षसे जरा भी कम जीनेका कोई कारण नही है। वैसे भगवान चाहे तो भले मुझे आज ही उठा ले, पर अभी तुरत मै चलनेवाला नही हू। मुझे अभी रहना है और काम करना है। पुरुषोत्तमदास टडन मेरे पुराने साथी है। हम बरसोतक साथ-साथ काम करते आए है। मेरे-जैसे ही ईश्वरके वे भक्त है। जब मैने यह सुना कि वे ऐसी बात कर रहे है तब मुझे दुःख हुआ। मैने कहा कि आज तीस बरससे भी अधिक समयसे जो हमने सीखा है और जिसकी हमने लगनसे साधना की है, वह क्या इस तरह गवा दिया जायगा ? बचावके लिए तलवार पकडनेकी बात की जाती है, पर आजतक मुझे दुनियामें एक आदमी ऐसा नही मिला है, जिसने बचावसे आगे बढकर प्रहार न

किया हो। बचावके पेटमे ही वह पडा है। अब रही मेरे दिलपर चोट लगनेकी बात। अगर मै पूरा स्थितप्रज्ञ बन गया होता तो मुझे चोट न लगती। अब भी चोट न लगे ऐसी कोशिश मै कर रहा हू। कल जहा था वहासे आज कुछ-न-कुछ आगे ही बढता हू। अगर ऐसा नही हो तो रोज-रोज गीतामेंसे स्थितप्रज्ञके ये श्लोक बोलनेमे मै दभी ठहरता हू, पर ऐसा नही हो सकता कि इन श्लोकोके बोलने भरसे ही कोई एक ही दिनमे स्थितप्रज्ञ बन जाय।

मै राम-राम कहू और वह मेरे हृदयमे एक दिनमे नही आता तो क्या मै हार मान लू? मेरा एक पजाबका मित्र रामभजदत्त चौधरी था, जो अब तो (दुनियासे) चला गया है। कभी-कभी वह कविता बनाता था। जब जेलसे आया तब यह कविता बना लाया था और खुद तो गा नही सकता था इसलिए अपनी पत्नी सरलाजीसे कहता था कि यह भजन सुना दे। वह मीठे स्वरसे सुनाती—'कदी नही ओ हारणा, भावे साडी जान जावै।' और मैने अपनेसे कहा कि 'तुझे कभी नही हारना है।' रोज-रोज अगर स्थितप्रज्ञ गाता रहूगा तो कभी-न-कभी मेरे हृदयमे स्थितप्रज्ञता अवश्य समा जायगी। जब ऐसा बन जाऊगा तब टडनजीके या किसीके कुछ कहनेपर मुझे रोना या हँसना नही आयगा। रोना-हँसना दोनो ही ईश्वरको सुपुर्द कर दूगा और दु खी नही होऊगा।

बिच्छूको बचानेवाले बाबाजीकी मिसाल अच्छी ही है। उनसे जब किसी नास्तिकने कहा था कि 'बिच्छूके बचानेके फेरमे क्यो पडे हो, उसका तो स्वभाव ही डक मारनेका है। उसे मार ही क्यो नही डालते?' तब उस बाबाने जवाब दिया था, 'अगर बिच्छूका स्वभाव डक मारनेका है तो मनुष्यका स्वभाव भी तो बर्दाश्त करनेका है। बिच्छू जब अपना स्वभाव नही छोडता तो मै कैसे अपने स्वभावको छोडू? क्या बिच्छू डक मारता है तो मै भी बिच्छू बन जाऊ और उसे मार डालू?'

अखीरमे उस विद्वान दोस्तने मुझे सीख दी है कि तू जिद्दी आदमी है। अगर तू अहिसाकी अपनी हठ नही छोडता तो दूसरोको तो मत रोक? तो क्या मै दभी बन जाऊ? दुनियाको भी धोखा दू? दुनिया फिर यही कहे कि हिंदुस्तानमे एक नामधारी महात्मा पडा है जो अहिसा-

की तो बडी मीठी-मीठी बात करता है, पर उसके साथी मार-काट करते रहते है। यानी मै ऐसा बनू कि 'मुखमे राम और बगलमे छुरी।'

एक बडे दु खकी बात हो गई है। मै तो राजा-महाराजाओका दोस्त हू और उनका सेवक रहा हू। धनी लोगोका भी सेवक रहा हू। क्योकि मै मिस्कीन हू, भगी हू और उन राजाओ और श्रीमतोको भगीवासमे खीच लाता हू ताकि वे उनकी कुछ मदद करे। वे कब भगीवासको देखते! पर मै बडा मेहतर हू तब मेरे पास यहा वे चले आते है।

मैने अखबारोमे सर सी० पी० रामस्वामीका ऐलान देखा। वे बडे विद्वान व्यक्ति है। ऐनी बेसेटके शिष्य रहे है। जब मै हरिजन-यात्रामे था तब उनके निमंत्रणपर उनके यहा त्रावनकोरमे मेहमान बनकर गया था। लडने नही, पर मिलकर काम करनेको गया था। उनसे यह बात सुनकर अच्छी नही लगती। अगर अखबारमे गलती हो तो वे मुझे माफ करे, सही हो तो मेरी बातपर गौर करे। उन्होने कहा है कि पद्रह अगस्तसे जब हिंदुस्तान स्वतत्र होगा तब त्रावनकोर आजाद हो जायगा और उनकी वह आजादी ऐसी है कि आजसे ही त्रावनकोरकी स्टेट काग्रेसके लिए सभाबदी कर दी गई है। खबर यहा-तक है कि सी० पी० रामस्वामीने उन लोगोको त्रावनकोर छोडकर चले जानेके लिए कहा है जो त्रावनकोरकी स्वतत्रताकी मुखालफतमे हो। और यह आज्ञा वे सज्जन दे रहे है जो खुद त्रावनकोरके नही, बल्कि मद्रासके रहनेवाले है। वे किस तरह ऐसा कह सकते है!

ब्रिटिश राजमे आजतक त्रावनकोरको अग्रेज शाहशाहीको सलामी देनी पडती थी। तो अब हिदुस्तानके प्रजातत्र सघमे वह मनमानी कैसे कर सकता है? वह अब हमारा राज्य है यानी भारतके प्रजाकीय राज्यको उसे (त्रावनकोरको) अपना ही राज्य समझना चाहिए। मैने बताया है कि प्रजाकीय राजमे राजा और मेहतरकी कीमत एक-सी रहनेवाली है। मनुष्यके नाते दोनोकी कीमत एक ही रहेगी, पर दोनोकी बुद्धिमत्तामे भेद हो सकता है। अगर त्रावनकोरके महाराजाके पास बडी अकल है तो उन्हे उसे लोगोकी सेवामे लगाना चाहिए। अगर प्रजाको कुचलनेमे वे अपनी बुद्धि दौडाते है तो उनकी वह अकल फिजूलकी है।

अपनी सारी रैयतको कुचलकर और मार डालकर क्या त्रावनकोर नरेश निरी जमीनपर राज करेंगे?

सुना जाता है कि हैदराबाद भी वही करने जा रहा है। अभी उसने साफ नहीं बताया है, पर वे कह रहे हैं कि हम दोनोंको देखेंगे। न इधर जायगे, न उधर। लेकिन निजाम स्वतन्त्र होगा तो किससे होगा? वहा नब्बे प्रतिशत तो हिंदू है और उनमें कई बडे गण्य-मान्य व्यक्ति है। अगर निजाम व त्रावनकोर या दोनोंकी स्वतन्त्रता ऐसी नही है कि जिसमे वहाकी प्रजा अपनी आजादी महसूस करे तो वे समझे कि उनका राज्य नही रह सकता। आज समय बदल गया है। वे समयको पहचाने।

जो अग्रेज यहा अच्छा करने आए है वे ऐसा ही करके जायगे क्या? मै अग्रेजोको समझ नही पाता। लोग मुझे पागल बताते है कि तुम सब किसीपर विश्वास करते रहते हो—एक ओर मुझे इसलिए पागल बनाया जाता है कि मै अहिंसाकी जिद नही छोडता तो दूसरी ओर अग्रेजपर भरोसा करनेपर मुझे पागल बताया जाता है। वे कहते है, तुम क्यो माउटबेटनकी बात मानते हो? अगर वे सच्चे आदमी है तो क्या इतने कुशल सेनापति होकर भी इतनी छोटी-सी बात नही देख पाते कि करीब छ सौ राजाओंको—जो कलतक बिना किसीके बनाए एक तिनकातक नही तोड सकते थे—आज मनचाहा करने दिया जाय तो फिर आजादी एक उलझन ही हो जाती है। यह तो ईश्वरकी मेहर है कि काफी राजा लोगोंने कह दिया है कि हम भारतमें ही रहेगे।

अग्रेज कहते है कि 'हम जानेवाले है। दगा नही करेगे।' तो हम प्रार्थना करे कि अग्रेजोको और उनके बडे नुमाइदोको भगवान सन्मति दे। वे बहादुर बने और सत्यनिष्ठ रहे ताकि जब वे हिंदुस्तानसे चले जाय तो कोई उन्हे गाली न दे कि वे हिंदुस्तानसे गए तो बुरा करके गए।

मेरा मानस तो ऐसा बना है कि वे दो महीने भी न रुके, आज ही चले जाय। फिर बादमें हम आपसमे सब बात मिल-जुलकर ठीक कर लेंगे। और मै तो यह भी कहता हू कि अगर हमे आपसमे मरना-कटना है तो भी वह हम भुगत लेंगे, पर अग्रेज यहासे चले जाय।

और दोनो राजाओसे (ट्रावनकोर और निजामसे) मै कहूगा कि

आप रहे, लेकिन रैयतके सेवक बनकर रहे। अगर काग्रेस भी रैयतकी सेवक नही रहेगी तो वह भी टिक नही सकती।

राजा लोग यह न कहे कि काग्रेस कौन होती है पूछनेवाली! काग्रेसने राजाओकी काफी सेवा की है। मै जब पढता था तबकी बात है कि मैसूरकी राजगद्दीका कुछ किस्सा बिगड गया था और काग्रेसने मैसूरकी गद्दी दिलवा दी थी। काश्मीरमे भी कुछ ऐसा ही किस्सा हो गया था। तब काग्रेसने सहायता दी थी और बडौदाकी भी एक बार काफी मलामत होने लगी थी तब उस अपमानमेसे उसे (बडौदाको) छुडवानेके लिए काग्रेसने कम प्रयत्न नही किया था। काग्रेसने यह सोचा था कि राजाओको अपना ही समझा जाय। वे हमारा क्या बिगाडेगे? समय आनेपर हमारे सहयोगी बन जायगे। इसलिए काग्रेसने उनका विरोध नही किया। अब अगर राजा यह कहते है कि 'हम तो राजा है' तो यह ठीक बात नही है। उन्हे चाहिए कि वे विधान-परिषद्मे आवे, बल्कि अपनी प्रजाके प्रतिनिधियोको भेजे।

अगर वे ऐसा नही करते तो मालूम होता है कि हिंदुस्तानके नसीबमे झगडा-ही-झगडा लिखा है। अभी हिदू तथा मुसलमानका झगड़ा पूरा निपटा नही है कि वहा अब राजाओसे लडनेकी बात सामने आ रही है। फिर सिविल सर्विसवाले है। मै समझता हू कि सिविल सर्विस ठीक तरहसे सुलझकर रहेगी और किसी झगडेकी बायस नही बनेगी। लडाई ही बढनेवाली हो तो और भी बहुतसे छोटे-छोटे फिरके पडे है जो कहेगे कि हम इधरसे खायगे और हम उधरसे मुल्कका हिस्सा हडपेगे। लेकिन फिर हिदुस्तानका क्या होगा? इस तरह तो किसीके हाथमे कुछ रह जानेवाला नही है। सारा देश बरबाद हो जायगा।

मेरे नसीबमे जन्मसे लडाई पडी है। मै चाहता हू कि वह और न लडनी पडे। फिर भी दिलको यह बर्दाश्त नही होता कि छोटे फिरके आपसमे लडते रहे और हम पाई हुई आजादी खो बैठे।

अतमे मै कहूगा कि हम राम-रहीम और कृष्ण-करीम रटते रहे। राजा लोगोको हम गाली न दे, पर उनसे यह जरूर कहे कि आप प्रजाके

सेवक बनकर ही रह सकते है, स्वामी बनकर रहनेकी आपको कोई गुजाइश नही है।

: ३६ :

१४ जून १६४७

भाइयो और बहनो,

गजराजकी प्रार्थनाका यह भजन मुझे बहुत प्रिय है। गजेन्द्र-मोक्षकी कथा हमारे यहा बडे ऊचे प्रकारका साहित्य है। इतना शक्तिशाली होते हुए भी जब गजेद्र हार जाता है और देखता है कि अपने बलसे अब काम नही चल सकता, ग्राह उसे डुबा ही देगा, तब वह सोचता है कि अब भगवानकी शरण लेनी चाहिए।

हमारी भी ऐसी ही हालत है। इस समय हम समझ रहे है कि हम हार गए है। लेकिन हम हारे नही है। जो ईश्वरको अपने पास समझता है वह कभी नहीं हारता।

मनुष्यको ईश्वरने बनाया ही ऐसा है कि जब वह करीब-करीब डूबनेको होता है, जब उसका सब कुछ लुट जाता है तभी उसे ईश्वरको पुकारनेकी बात सूझती है। जब वह अमन-चैनसे होता है तब वह ईश्वरको नही पुकारता है। ईश्वरने ऐसा ही खेल रच रखा है।

कल मैने त्रावनकोरके दीवान सर सी० पी० रामस्वामीकी बात आप लोगोको सुनाई थी। आजकल तो तार और रेडियोका जमाना है। उनके कानोतक मेरी वह बात पहुच गई और उन्होने एक लबा-चौडा तार मेरे पास भेज दिया है। उन्होने बहुतसे खुलासे किए है, पर त्रावनकोर-काग्रेस-कमेटीको सभा करने और जुलूस निकालनेकी इजाजत नही दी है। उसके बारेमे वे कुछ नही बोले है। इसमे मुझे बुराई नजर आती है। यह लक्षण अच्छे नही है। वे कहते है कि त्रावनकोर तो सदासे आजाद रहा है।

बात ठीक है, हमारे देशमे पुराने जमानेमे सैकडो राजा होते थे, पर हम हिंदुस्तानको एक मानते थे । ऋषि-मुनियोने देशभरमे जगह-जगह तीर्थ-स्थानोकी रचना की और दूसरी भी ऐसी व्यवस्थाए कर दी कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक रूपसे सारे मुल्कको हम एक ही अनुभव करते थे ।

पर राजकीय क्षेत्रमे हमारा देश कभी एक नही रहा। चद्रगुप्त या अशोकके साम्राज्यमे हिंद एक हो गया था, पर तब भी एक छोटा-सा दक्षिणी कोना उसके साम्राज्यसे बाहर था। जब अग्रेज आए तभी पहली बार डिब्रूगढसे लेकर कराचीतक और कन्याकुमारीसे लेकर काश्मीरतक सारा देश एक हो गया। हमारे भलेके लिए नही, पर अपने राज्यकी भलाईके लिए अग्रेजोने ऐसा किया। इस अग्रेजी राजमे वह आजाद था, ऐसा त्रावनकोरका कहना गलत है। राजा लोग आजाद क्या थे, अग्रेजोके गुमाश्ते थे । पूरी तौरसे उनकी मातहतीमे दबे हुए थे । अब जब अग्रेजी राज जा रहा है और लोगोके हाथमे राज आ रहा है तब किसी भी राजाका यह कहना कि हम तो आजाद थे और आजाद रहेगे, बिलकुल गलत चीज है और वह जरा भी शोभाकी बात नही है। सर सी० पी० रामस्वामी तो मेरे दोस्त रहे है, सब बात सही, लेकिन मेरा लडका ही क्यो न हो, सही बात कहनेसे मै क्यो रुकू ? हिंदुस्तान जब आजाद होता है तब अगर वे यही कहते है कि त्रावनकोर आजाद है तो इसका मतलब यह है कि वे आजाद हिंदसे लडना चाहते है।

मै तो उनसे कहूगा कि आप तख्तपरसे नीचे उतरिए और त्रावन-कोरके लोगोके खादिम बनकर रहिए। जब अग्रेजोने आपसे एक बार राज्य छीन लिया और कुछ पैसे लेकर तथा अपनी रैयतको कुचलनेका आपको अधिकार देकर वह राज आपको लौटा दिया तो उसमे इतनी फख्रकी बात क्या थी ? फख्रकी बात तब है जब आप जनताको अपना मालिक माने । वैसे तो हिंदुस्तान गिरा नही है और अगर वह अपनी परेशानीमे पडा है तो यह शराफतकी बात नही है कि आप जो आदमी गिर पडा है उसको ऊपरसे लात धर दे । हिंदुस्तानके एक-चौथाई और तीन-चौथाई ऐसे दो टुकडे होते है तो उन टुकडोकी वातसे आपका कोई

संबंध नही। आप शरीफ बने और समझे। हिंदमे बेकार फसाद न बढावे।

रावलपिंडीके कुछ भाई आए है। उन्होने कुछ बाते सुनाई। सुचेता कृपलानीसे भी वहाके दु खभरे हाल मालूम हुए। पर एक बात जानकर बहुत दु ख हुआ। वह यह कि जबतक पाकिस्तानकी बात तय नही हुई थी तबतक तो हालात कुछ ठीक भी थे पर अब तो वहापर मुसलमान बडा त्रास दे रहे है। वहाके मुसलमान कह रहे है कि पाकिस्तान क्या है यह हम अब दिखा देगे, सबको मुसलमानोके गुलाम बनायगे।

यहा प्रार्थनामे मै इस बातकी चर्चा इसलिए कर रहा हू कि मेरी बात सभी मुसलमानोतक पहुच जाय। जिन्ना साहबतक तो पहुचेगी ही। अगर मै गलत कहता हू तो सब मुसलमान भाई मुझे डाटे और कहे कि ऐसी कोई बात नही है। पेशावरमे आकर देखो तो सही कि सब हिंदू, सिख, औरत, बच्चे कितने आरामसे है।

पर मेरे पास नाम पडे है। दो-चार मामूली आदमियोने ऐसा कहा हो तो समझा जा सकता है कि हर जगह कुछ गैर-जिम्मेदार आदमी होते ही है; लेकिन सारे मुसलमान अगर इस तरह सोचते और कहते हो तो यह बहुत बुरा है।

जिन्ना साहब तो कहते रहे है कि मुसलमानोकी अक्सरियतमे सब छोटी तादादवाले चैनसे रहेगे। इसके बदले यह क्या हो रहा है? पाकिस्तान बन जानेपर भी अगर ऐसा रहा झगडा बढता गया तो इसका यह मतलब हुआ कि हम बेवकूफ बनते रहेगे। यानी वे तो सब सरदार बनेगे और जो कोई विधर्मी होगा उसे उनके यहा गुलाम बनना होगा या नौकर बनकर रहना होगा, और यह कबूल करना पड़ेगा कि वह उनसे नीचा है। अगर यह सच है तो बहुत बुरी बात है। मै तो उनसे यह सुननेको अधीर हू कि पाकिस्तानमे सबको बढिया तरीकेसे रखा गया है और मंदिर भी अच्छी हालतमे है। जब ऐसा देखूगा तब उनके प्रति मेरा सिर झुकेगा। अगर ऐसा न होगा तो समझूगा कि जिन्ना साहब गलत बात कहते थे और माउंटबेटन साहबके लिए भी मेरे दिलमे शक पैदा हो जायगा कि इतने बडे सेनापति होते हुए भी वे समझ नही पाए और

उन्होने जल्दबाजी की। मार-काट होती थी तो होती रहती, पर वे यह कह सकते थे कि तलवारके सामने झुककर हम कुछ नही देगे ।

: ४० :

१५ जून १९४७

(लिखित सदेश)

मुझे अफसोस है कि आज मुझे मौन जरा जल्दी लेना पडा, क्योकि कल तीसरे पहर कार्य-समितिकी सभा होनेवाली है। इसलिए अपना सदेश लिखकर देता हू। दुनियाके कई मुल्कोसे मेरे पास चिट्ठिया आई है, जिनमे मुझसे एक सवाल पूछा गया है, जिसका जवाब मै आज आप लोगोके मार्फत देना चाहता हू। वह प्रश्न सक्षेपमे यह है—'आपके देशके राजनैतिक दल अपने सियासी मकसदको प्राप्त करनेके लिए हिंसाका प्रयोग क्यो करते है ? दिन-ब-दिन आपके यहा हिसा बढती ही जा रही है। क्या आप इसका कारण बता सकते है ? तीस सालतक आपने अग्रेजोके साथ अहिसात्मक लडाई की, उसका यह नतीजा क्यो ? क्या यह होते हुए, आप अभी भी जगतको अहिंसाका सदेश देगे ?'

इस सवालका जवाब देते हुए मुझे स्वीकार करना पडेगा कि मै तो दिवालिया हो गया हू, लेकिन अहिसाका दिवाला कभी नही निकल सकता। मै पहले भी कह चुका हू कि जिस अहिसाका हमने इस तीस सालमे उपयोग किया वह निर्बलकी अहिसा ही रही है। मेरा यह उत्तर सतोषजनक है या नही, यह तो आप लोग ही कह सकते है, पर इतना तो मुझे स्वीकार करना पडेगा कि आजकी बदली हुई हालतमे कमजोरोकी अहिंसाके लिए जगह नही है। सच तो यह है कि हिदुस्तानको आजतक वीरोकी अहिंसाके प्रयोग करनेका मौका ही नही मिला। अगर मै बराबर कहता रहू कि बहादुरोकी अहिसाके समान दुनियामे दूसरी कोई सच्ची शक्ति नही है तो उससे

कोई खास फायदा नही हो सकता। इस सत्यको साबित करनेके लिए तो बार-बार और विस्तारसे जीवनमे उसे प्रकट करनेकी जरूरत है। जहातक मुझसे बन पडता है मै तो अपने जीवनमे उसे प्रकट करनेकी कोशिश कर ही रहा हू, लेकिन शायद मेरी काबलियत कम हो, शायद मै शेखचिल्ली हू, तो फिर मै लोगोको अपने पीछे चलनेको क्यो कहू जब उसका कुछ नतीजा नही? यह सवाल पूछनेके लायक है और मेरा उत्तर तो सीधा है। मै किसीसे नही कहता कि वह मेरे पीछे चले। हर एकको अपनी अतरात्माकी आवाजका हुक्म मानना चाहिए। अंतरात्माकी आवाज न सुन सके तो जैसा ठीक समझे वैसा करना उचित होगा, लेकिन किसी भी सूरतमे दूसरोकी नकल नही करनी चाहिए।

एक दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न भी मुझसे यह पूछा गया कि अगर आपकी पक्की राय है कि हिदुस्तान गलत रास्तेपर जा रहा है तो फिर आप भूल करनेवालोके साथ वास्ता क्यो रखते है? अपने बूते आप अपनी काश्त खुद क्यो नही कर लेते और इस बातका विश्वास क्यो नही रखते कि अगर आपका रास्ता ठीक है तो आपके पुराने साथी लौटकर आपके पास आ जायगे? यह सवाल मुझे अच्छा लगता है। मै उसके खिलाफ बहस नही छेडूगा। इतना ही कहूगा कि मेरी श्रद्धा तथा मेरा ईमान ऐसा ही है जैसा पहलेसे था, यानी मेरी समझमे उनकी ताकत कम नही पडी है। यह मुमकिन है कि मेरा तरीका गलत रहा हो। मुश्किल या उलझनमे पुराने नमूने या कठिनाई और उलझनके समय पुराने उदाहरण और अनुभव काममे आते है, लेकिन इन्सानको यत्र बनके काम नही चलाना है।

इसलिए मै अपने सब सलाहकारोसे यह प्रार्थना करता हू कि वे मेरे साथ धीरज रखे और इससे भी ज्यादा यह कि वे मेरी इस श्रद्धामे हिस्सेदार हो कि इस दुखी जगतकी पीडा हटानेके लिए कठिन होने-पर भी सिवा अहिंसाके और कोई सीधा और साफ रास्ता नही है। मेरे-जैसे लाखो आदमी इस सत्यको भले इस जीवनमे सिद्ध न कर पाए, यह उनकी कमजोरी तथा नाकामयाबी होगी, न कि अहिसाकी।

एक और बात मै आपसे कहना चाहता हू। मेरा मौन होते हुए भी

त्रावनकोरके कुछ मित्र आज मुझसे मिलने आए थे। उन्होने मुझे यकीन दिलाया कि जो भी मैंने उस रियासतके बारेमे कहा उसमे जरा भी अत्युक्ति नही है। यह भी बताया कि जो जल्से किए गए, उनपर लाठी चार्ज हुए और कल लगभग ३५ व्यक्ति गिरफ्तार भी किए गए। वहा आम रायका गला घोटा जा रहा है। जो भी हो, मुझे जरा भी शक नही कि आजाद हिंदुस्तानमे एक रियासतका अपनी आजादीका ऐलान करना एक बेहूदा बात है। इसका मतलब तो यह भी हो सकता है कि उन्होने हिंदुस्तानके करोडो आजाद व्यक्तियोपर लडाईका ऐलान कर दिया है। यह कतई नासमझीकी बात है खासकर तब जब कि महाराजा साहबके साथ उनकी जनताका सहारा नही है। जबतक अंग्रेज सरकार उनके पीठके पीछे थी तबतक ऐसा करना मुमकिन था, लेकिन अब तो हालत बिलकुल बदल गई है।

: ४१ :

१६ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आज सबेरे जब मेरा मौन था तो श्रीपुरुषोत्तमदास टडन आए। मैंने आपको बताया था कि जब टडनजीने कहा कि हरेक स्त्री-पुरुषको शस्त्रधारी बनना चाहिए और स्वरक्षा करनी चाहिए तो यह सुनकर मुझे कैसा बुरा लगा था। एक पत्र-लेखकने मुझसे पूछा था कि गीता पढते रहनेपर भी इस तरह आपको बुरा कैसे लग सकता है? उस पत्रसे यह भी पता चलता था कि टडनजी 'शठ प्रति शाठ्य' का सिद्धात मानते है। तब टडनजीसे मैंने पूछा कि आप क्या मानते है? इसका खुलासा देते हुए टडनजीने बताया कि मै 'शठ प्रति शाठ्य' के सिद्धातको तो नही मानता हू, लेकिन स्वरक्षाके लिए शस्त्रधारी बनना जरूरी है, ऐसा मै मानता हू। गीताने भी यही सिखाया है।

तब मैंने टडनजीसे कहा कि इतना तो आप उस भाईको लिख

दीजिए कि आप 'शठ प्रति शाठ्य' के माननेवाले नही है ताकि वे भ्रममे न रहे। और स्वरक्षाके लिए हिसा करनेकी बात गीतामे कही है, यह मै नही मानता। मैने तो गीताका अलग ही अर्थ निकाला है। मेरी समझमे गीता ऐसा नही सिखाती है। गीतामे या दूसरे किसी सस्कृत ग्रथमे अगर ऐसी बात लिखी है तो मै उसे धर्मशास्त्र माननेको तैयार नही हू। महज सस्कृतमे कुछ लिख देनेसे कोई वाक्य शास्त्र-वाक्य नही बन जाता।

टडनजीने मुझसे कहा कि 'तूने तो उन बदरोको मारनेके लिए भी लिखा था, जो बेहद पीडा पहुचाते है और खेती उजाड देते है।' लेकिन मै तो (गाधीजी) किसी भी प्राणीको और यहातक कि चीटीतकको भी मारना पसद नही करता। फिर भी खेती-बाडीका सवाल अलग है और मनुष्य-मनुष्यका अलग है।

तब टडनजीने कहा कि "शठ प्रति शाठ्य" यानी एक दातके बदलेमे दो दात निकालनेकी बात हम न करे और एक दातके बदलेमे एक दात तथा एक थप्पडके वदलेमे एक थप्पडकी बात भी नही करेगे, परतु हाथमे शस्त्र नही लेगे, अपनी शक्ति नही दिखायगे तो स्वरक्षा किस तरह होगी?

इसके बारेमे मेरा यह जवाब है कि स्वरक्षा जरूर की जाय, पर मेरी स्वरक्षा कैसे होगी? कोई मेरे पास आता है और कहता है कि बोल, राम-नाम लेता है या नही? नही लेगा तो यह तलवार देख! तब मै कहूगा, यद्यपि मै हरदम राम-नाम लेता हू, लेकिन तलवारके वलपर मै हरगिज न लूगा, चाहे मारा क्यो न जाऊ? और इस तरह स्वरक्षाके लिए मै मरूगा। वैसे कलमा पढनेगे मेरा कोई धर्म जानेवाला नही है। क्या हो गया अगर मै ठेठ अरबीमे बोलू कि अल्लाह एक है और उसका रसूल एक ही मुहम्मद पैगम्बर है। ऐसा बोलनेमे कोई पाप नही और इतने भरसे वे मुझे मुसलमान माननेको तैयार है तो मै अपने लिए फख्रकी वात समझूगा। लेकिन जब तलवारके जोरसे कोई कलमा पढवाने आवेगा तव कभी भी कलमा न पढूगा। अपनी जान देकर मै स्वरक्षा करूगा। इस वहादुरीको सिद्ध करनेके लिए मै जिदा रहना चाहता हू। इसके अलावा और तरीकेसे मै जीना नही चाहता।

मैंने कहा है कि भौगोलिक दृष्टिसे हमारी भूमिके टुकडे भले हो जाय पर हमारे दिलोके टुकडे नही होने चाहिए, पर मेरी कौन सुने ? एक दिन था जब गाधीको सब मानते थे, क्योकि गाधीने अग्रेजोके साथ लडनेका रास्ता बताया था। और वे अग्रेज भी कितने, केवल पौन लाख। पर उनके पास इतना सामान था, इतनी ताकत थी कि बकौल एनी बेसेट रोडेका जवाब गोलीसे दिया जाता था और हमारी हिसा चल नही पाती थी। तब अहिसासे काम बनता दीखता था, इसलिए उस समय गाधीकी पूछ थी। पर आज लोग कहते है कि गाधी हमे रास्ता नही बता सकता है, इस वास्ते स्वरक्षाके लिए हमे शस्त्र हाथमे लेने चाहिए। तो फिर यही कहना पडेगा कि हमने तीस वर्ष बेकार खोए जो अहिसाकी लडाई लडी। हिसाके सहारे तुरत ही उनको (अग्रेजोको) हटा देना चाहिए था।

लेकिन मेरे खयालमे हमने तीस वर्ष बेकार नही गवाये है। हमपर बेहद जुल्म ढाए गए फिर भी हम अहिसक रहे, यह अच्छा ही किया। उन्होने अपने अस्त्र-शस्त्र सब हमारे खिलाफ बरसाए, पर हम दबे नही और इस तरह काग्रेसका पैगाम सारे हिदुस्तानमे फैला, लेकिन वह सात लाख देहातोमे ठीक तरहसे नही फैला, क्योकि हमारी अहिसा नामर्दकी अहिसा थी। उस समय हमको किसीने एटम बम बनाना नही बताया था। अगर हम वह विद्या जानते होते तो उसीसे अग्रेजोको खत्म करनेकी सोचते, पर दूसरा कोई चारा नही था, इसलिए तब मेरी बात मानी गई और मेरा सिक्का जमा। पर लोग कहते है कि आज मेरा प्रभाव किसीपर नही है।

लेकिन आप लोग जो रोज यहा प्रार्थनामे आते है तो क्यों आते है ? आपपर मेरा कौन-सा जोर है ? आप प्रेमसे बधकर यहा आते है और शातिसे यहा बैठकर सुनते है। अगर इसी तरह मेरा सिक्का आज सिर्फ हिदुओपर ही चले तो आप देखेगे कि बहादुरोकी अहिसासे दुनियामे हिंदुस्तानका सिर ऊचा उठ जायगा। मुसलमानोसे मै नही कहता। उन्होने तो मुझे अपना शत्रु मान रखा है, पर हिदुओ तथा सिखोने मुझे शत्रु नही बनाया है। लेकिन हिंदू मेरी अहिसाकी बहादुरीकी बात

माने तो हमारे पास जो कुछ अस्त्र-शस्त्र होगे, उन्हे मै दरियामे और बवईकी 'वेक बे' खाडीमे डाल देनेको कहूगा और बहादुरोको अहिंसाका अमल करना सिखा दूगा।

काग्रेस महासमितिमे तो मुट्ठीभर आदमी थे। उनमे भी कुछके दिलोमे सकुचित विचार है, यह मैने देखा। क्योकि मैने दो-एक व्याख्यान सुने भी थे। लेकिन मुझे तो मुल्कभरकी बातका पता चलता है। मै उन करोडोका बना हुआ हू। वे कहते है कि अब मुसलमान कहा जायगा? आज जैसा मुसलमान कर सकता है उससे कही ज्यादा हम कर सकते है, क्योकि हम तादादमे ज्यादा है। अग्रेजोके जानेपर हम उनपर अपना राज जमायगे। हम अपनेको राज करनेका हकदार इसलिए मानते है कि हम जेल गए, हमने लाठिया खाई और हमने कोडे भी खाए। पर ऐसा कहना हमे शोभा नही देता। यह सारी हिसा है। अगर आप अहिसाकी वात सुनना नही चाहते और हिंसाकी वात ही सीखते है तो उसमे हमारी शर्म है। इस तरह 'जैसेको तैसा' का न्याय करेगे तो समझ लीजिए कि दोनो धर्मोका नाश है। इससे इस्लाम भी मरेगा और हिंदू-धर्म भी।

अगर हम जवरदस्तीकी अहिसा अपनायगे तो उन्होने जो पाकिस्तान ले लिया है वह महज खिलौना रह जानेवाला है। अहिसासे हम कुछ खोएगे नही।

मै तो पाकिस्तान और हिंदुस्तानको अलग मानता ही नही हू। मुझे पजाव जाना हो तो मै पासपोर्ट लेनेवाला नही हू। सिध भी मै ऐसे ही चला जाऊगा और पैदल जाऊगा। कोई मुझे रोक नही सकेगा। भले ही वे मुझे दुश्मन कहे, पर जब मै जाऊगा तो किसी असेवलीकी मेंवरी करने नही जाऊगा, सेवाके लिए जाऊगा। मेरी जिंदगीमे वह पहला मौका न होगा। नोआखालीमे चला ही गया था और अब भी कोई न समझे कि वह इस्लामिस्तानमे होनेको है, इसलिए मै वहा नहीं जाऊगा। मेरा दिल वही पडा है और वहा जाकर मै हिंदुओसे कहूगा कि अगर आप सच्चे हिंदू है तो—चाहे कितनी ही मार-काट करनेवाले आपके चारो ओर क्यो न फिरते हो—आप किसीका डर न माने।

लेकिन हम बहादुरोकी अहिसा तभी रख पायगे जब हम शराब-खोरी और चोरी-जारीको छोडेगे । अगर लगातार हम व्यसन-व्यभिचार-मे पडे रहे तो हिंद आजाद होकर भी उसकी आजादी व्यर्थ जानेवाली है ।

बहादुरी तो मुझमे तब आयगी जब मै मारा जाऊ। तो भी मारनेवालेके भलेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करता रहू। ईश्वरका नाम भी मै केवल मुहसे न लूगा, पर उसे अपने हृदयमे जिदा बैठा हुआ देखूगा। मदिर-मस्जिदमे उसे ढूढने नही जाऊगा। अगर सब हिंदू ऐसे हो जाय तो बहुत काफी है। वे ऐसी बहादुरीकी अहिंसा न भी सीखे और केवल थोडेसे सिख ही बहादुरोकी अहिंसा अपना ले और खालसाका एक-एक व्यक्ति सवा लाखके बराबर सच्चा बहादुर बने तो हिंदुस्तानका काम बन जाय।

पर आज तो बादशाह खान, जो इतने बहादुर रहे है, बहादुर नही बन सकते । वर्षोसे यह पठानोको अहिंसा सिखाते आए है—पर आज वह कहते है कि मै नही कह सकता कि मै हिंदुस्तानमे हू । अगर कहूगा तो बिहारसे दस गुना काड वही हो जायगा। लेकिन वे क्या करे ? अपने पठान भाइयोको कहातक साहस दिलावे ? अहिंसा कोई हल्दी-मिर्च तो है नही जो बाजारसे मोल आ जायगी । अगर वे सच्ची अहिसा दिखा पाते तो अकेला सीमाप्रात समूचे हिंदुस्तानको बचा सकता था।

मेरे पास नागपुर तथा बबईसे दो पत्र आए है, जो सही हो तो दु खकी बात है। क्या आप अपने राष्ट्रीय मुसलमान भाइयोको, जिन्होने आपके साथ इतनी यातनाए झेली, ऐसा कह देगे कि आप हिंदुस्तानके नही है ? मै तो कहूगा कि लीगी मुसलमानसे भी हम न कहे कि आप जाइए। ऐसा कहना अहिंसाका न्याय नही है। फिर तो जिन्नाकी दो राष्ट्रकी बात ठीक ही कहलाएगी और दुनिया हमपर थूकेगी। इसका मतलब तो यह है कि अभी हिंदुस्तान पूरा आजाद बना नही है और हम उसे हाथसे खो देनेका सामान पैदा कर रहे है।

मै नही कहता कि मुसलमान हमारे साथ तकव्वरी (?) कर सकते है। जो कुछ अग्रेजके राजमे था वह सब उन्हे नही दिया जा सकता। पृथक् निर्वाचन वे मागे तो हम नही देगे । पृथक् निर्वाचन तो अग्रेजोकी जबरन

जमाई हुई जहरी जड थी। पर हम उनके साथ न्याय तो करेगे ही। उनके बच्चोको तालीमकी सहूलियत उतनी ही देगे जितनी अपने बच्चोको, बल्कि वे गरीब हो तो वे ज्यादा सहूलियतके हकदार होगे और अगर हम ऐसा इन्साफ करेगे तो हम हिंदुस्तानके लोग बहादुर साबित होगे।

: ४२ :

१७ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आजकल जो भजन गाये जाते है उन्हे पसद करनेमे मेरा हाथ नही होता। पर ठीक वही भजन आता है जो मौकेका होता है। आज-के भजन[1]मे कहा है कि जब साधुकी सगत मिल जाती है तब हम परायापन भूल जाते है और तब कोई बैरी या बेगाना नही होता।

आजकल हमे इसी बातकी सबसे ज्यादा जरूरत है। लेकिन जो मेरे पास आता है यही कहता है—'तुम कितना भी चीखो, यह अलगाव तो रहने ही वाला है। दोनो ही अपने-अपने दायरेको कस-कर मजबूत बनाये बिना नही मानेगे।' यह बात मुझे अच्छी नही लगती, फिर भी मुझे उससे परेशानी नही है। मै तो कहता ही रहूगा कि जो हुआ वह भले ही हो गया, लेकिन उसपर मोहर लगाकर हमे उसे पक्का नही करना है।

आप जानते है कि कल जब हमारी प्रार्थना पूरी हुई तब एक भाईने प्रश्न किया था। मैने उसे लिखकर भेजनेको कहा था। उसने लिखा है—'अगर पाकिस्तान नही टूट जाता है तो मै और मेरी

---

[1] बिसर गई सब तात पराई,
जब ते साधु संगत पाई।
नहि कोई बैरी नहि बेगाना,
सकल संग हमरी बन आई—

धर्मपत्नी—दोनो फाका करके मर जाएगे। और फाका भी यहा[1] पडे-पडे करेगे।'

फाका करना है तो पहले मै करू। हर चीजका शास्त्र होता है, यानी उसके करनेके कानून अथवा पद्धति होती है। चर्खे-जैसी छोटी चीजका भी शास्त्र होता है। पहिले हम उसको नही जानते थे, लेकिन अब उसका शास्त्र बन गया है। तब हमे चर्खेकी शक्तिका पता चला है। मै तो यहातक कहता हू कि सारी दुनिया उसके द्वारा आजाद होगी। 'एटम बम'से दुनिया आजाद नही होगी। दुनियामे शास्त्र दो प्रकारके है—एक सात्त्विक और दूसरा राजसी। यानी एक धार्मिक और दूसरा अधार्मिक। 'एटम बम' का शास्त्र धर्मवाला नही हो सकता। वह ईश्वरको नही मानता, बल्कि वह खुद ही ईश्वर बन जाता है।

इसी तरह फाकेका भी शास्त्र होता है। बगैर तरीकेके फाका करनेमे धर्म नही होता। अगर कोई कहे कि जबतक ईश्वर मेरे सामने नही आयगा तबतक मै भूखो मरूगा, तो वह मर भले ही जाय, पर ईश्वर उसे नही दिखेगा।

सार्वजनिक अनशनका भी एक शास्त्र है, और उसको जाननेवाला मै हू। यद्यपि मै भी उसे पूरा नही जानता, पर सबसे ज्यादा मै ही उसे जानता हू। गोया 'ऊजड देशमे अरड ही पेड', वाली मेरी स्थिति है। मै इस अनशनको धार्मिक अनशन नही मान सकता। इसका मेरे दिल-पर कुछ असर होनेवाला नही है। दुनियाकी भी इसके साथ हमदर्दी नही हो सकती। इसलिए मै तो दोनोसे कहूगा कि आप फाका छोड दे और अपने घर जाय।

लेकिन घर जाकर क्या करे? चुप बैठ जाय? नही, चुप बैठने-की बात नही है। हमे अपने मनमे यह बात आने ही नही देनी है कि हम अलग-अलग हो गए है। हम अपने दिलमे पाकिस्तान माने ही नही, किसीको अपना वैरी न समझे, किसीको बेगाना या पराया न माने।

---

[1] वाल्मीकि-मंदिरमें।

और यह सब साधु-सगतसे हो सकेगा, यानी हम सद्ग्रथ पढे, बुरे विचार छोडे। ऐसा तभी हो सकेगा जब हम अपने चित्तको कुविचार-से खाली करेगे। चित्तके कुविचार आसानीसे नही टल सकते। रामका नाम लेनेसे ही वह खाली हो सकता है।

लेकिन आजकल हमारा चित्त तो किस्म-किस्मके उपभोगोको सोचता रहता है। हम रामको नही याद करेगे, हम सिगारको याद करेगे—और सिगारके लिए मै क्या कहू। लेकिन हालत यही है कि हमारा ध्यान गलत बातोपर जाता है। लोग जोर-जोरसे कहे ही जाते है कि हम मुसलमानोकी खबर लेगे। और इस तरह हम खुद पाकिस्तानको पक्का बनानेकी पैरवी करते है।

पाकिस्तान जिन्नाने नही बनाया है। हमे स्वप्नमे भी खयाल नही था कि जिन्ना पाकिस्तान बना पायगा। पर वह बहादुर आदमी है। अग्रेजोकी मार्फत उसने पाकिस्तान प्राप्त कर ही लिया। लेकिन हम अगर अपने दिलमे उसे न माने और यह कहे कि मुसलमानोको अब हम देख लेगे तो उससे वह पाकिस्तान मिट नही जानेवाला है।

उसका मतलब यह नही कि मै मुसलमानोकी खुशामद करनेके लिए आपसे कहता हू। हम अपने घरमे छोटे भाईकी खुशामद नही करते। उसके प्रति अपना जो धर्म है उसका पालन करते है और उसका विश्वास कमा लेते है।

आपको अखबारमे पता चला होगा कि आज मै वाइसरायके पास गया था। वाइसरायने मुझसे पूछा कि "तूने अखबार देखा?" मैने कहा, "मै अखबार कम देख पाता हू।" तब उन्होने कहा, "हमने आज एक अच्छा काम कर लिया है।"

विभाजनके प्रश्नपर हिंदुओकी और मुसलमानोकी अलग-अलग रिपोर्टे वाइसरायके पास पहुची और वाइसरायने दोनो दलोको मिलकर एक रिपोर्ट बनानेके लिए राजी कर लिया।

मै तो कहता हू कि जब भाई-भाईका बटवारा होना तय हो जाय तो फिर वह रूठ-खीजकर नही हो सकता। ऐसा नही हो सकता कि घरमे जब एक कुर्सी है तो उसकी टाग तोडकर या टुकडे करके उसे बाट ले।

अगर हमारा एक-चौथाई और तीन-चौथाई बटवारा होना है तो सारे आकडे समझदारीसे निकालने होगे ।

इसलिए एक समिति बनाकर यह जो अच्छा काम किया गया है, उसका सिलसिला बराबर चलते रहना चाहिए। केवल मुस्करा देने-भरसे अच्छाई साबित नही हो जाती। अगर यह जबानी मिठास ही नही, पर सचमुच मिल-जुलकर काम किया जाना है तब तो मै कहूगा कि भले पाकिस्तान आया। और तब वाइसरायको तकलीफ देनेकी बात ही नही रहेगी। वाइसरायको अपना दफ्तर बद करना होगा। तब हम सरकारी अफसरोसे, जो इस कामको जानते है, कहेगे कि आप इकट्ठे बैठकर दोनो दलोको सतोष हो वैसी फेहरिस्त बना दे। जहा हिसाबसे काम बने, हिसाबसे बटवारा कर दीजिए, जहा हिसाबसे बटवारा ठीक न बैठे वहा पर्ची डालकर फैसला कीजिए, पर हम इस बातपर लडनेवाले नही है। मेलसे ही फैसला करेगे। वाइसरायको भी बीचमे नही डालेगे।

आखिरी बात यह है कि आज फिर मेरे पास त्रावनकोरके दीवान सर रामस्वामीका लबा-चौडा तार आया है, जिसमे मुझे समझानेकी कोशिश की गई है कि उनके साथ वहाके ईसाई आदि भी है। पर ऐसे तारमे मुझे बुरा लगता है। कडवी चीजको मीठी बनानेसे वह मीठी नही बन जाती। मूलसे ही इनकी बात बुरी है। 'आ जाओ, हम तो आजाद है।' 'आप किससे आजाद है?' रैयतसे? लोग इस तरह भारतसे आजाद होकर करेगे क्या? आप इस तरह घुमा-फिरा कर बात न करे। सीधी बात करे कि हिदुस्तानके साथ हम है, तब ही आप अपने राजाके प्रति सच्चे वफादार है, नही तो बेवफा है।

: ४३ :

१८ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोको कल मै बता चुका हू कि यहा एक भाई और

उनकी पत्नी वाल्मीकि-मदिरके बाहर रास्तेपर उपवास कर रहे है। उन्होने आज विनयसे भरा पत्र मेरे पास भेजा है। पर मुझे खेद है कि उसमे समझदारी नही है। वे छोटे है, मै बूढा हू। अगर मै कहू कि ज्ञानकी बात मै कुछ जानता हू तो उन्हे वह मान लेनी चाहिए। वे कहते है कि आपकी बात हमे लगती तो ठीक है, पर हमारी अतरात्मा नही मानती, इसलिए हम उपवास छोडनेमे मजबूर है।

आप लोगोने तिलक महाराजकी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता-रहस्य' का नाम सुना होगा। उसमे इतना ज्ञान भरा है कि उसके अनेक पारायण करने चाहिए। मैने वह यरवदा जेलमे पढी थी। यह बात सही है कि मै उनकी सभी बातोसे सहमत नही हू, पर इसमे कोई सदेह नही कि तिलक महाराज बहुत बडे विद्वान थे और उन्होने सस्कृत साहित्यका बहुत गहरा अध्ययन किया था। उनकी वह गीता पढे मुझे बहुत समय हो गया, इसलिए उनके ठीक शब्द मुझे याद नही है, पर उनके लिखनेका भावार्थ मै बताऊगा। वह बात मुझे बहुत ठीक लगती है।

उन्होने एक जगह कहा है कि अग्रेजी भाषामे अतरात्माके लिए 'कान्शस' शब्द अच्छा है पर जब यह कहा जाता है कि हम अपने 'कान्शसके मुताबिक चलते है' तब इसका सही अर्थ यह नही होता कि हम अतरात्माके कहनेपर चलते है। हमारे वैदिक धर्मके मुताबिक 'कान्शस' सभीमे (जड-चेतनमे) होता है। पर बहुतोका 'कान्शस' सोया हुआ रहता है, अर्थात् उनकी अतरात्मा मूढ अवस्थामे होती है। तो उस अवस्थामे उसे 'कान्शस' कैसे कहा जाय? हमारे धर्मके अनुसार मनुष्यकी अतरात्मा तब जाग्रत होती है जब यम-नियमादिका पालन और दूसरी भी बहुत-सी चेष्टा आदि करे। तिलक महाराजकी इस बातको मैने पचा लिया है। शास्त्रकी जो चीज हम पचा सके वही सार्थक है। जैसे वही आहार हमारे लिए सार्थक बनता है जिसका हम रक्त बनाए। तो तिलक महाराजकी इस बातको मैने पचा लिया है, जिसके जरिए कौन-सी आवाज अतरात्माकी है और कौन-सी नही,

उसकी परख मै कर लेता हू । कोई चोर यह कह कि मेरी अतरात्माने मुझे कहा कि अमुक लडकेको मार डाल, उसके हाथ-पैर काट ले और उसके जेवर लूट ले तो वह अतरात्माकी आवाज नही, जडता है । आज-कल तो हम भी जड बने है न ? हमे वही सूझ रहा है कि हम मासूम बच्चोको मार डालते है । पर वह अतरात्माकी आवाज नही होती ।

दूसरी बात यह कि मै उपवास सिखानेवाला आचार्य हू । कुछ जैन लोग किसी चीजको न पानेतकके लिए अनशन कर लेते है। उन्हे समझाकर मैने उनका अनशन तुडवाया है। स्व० धर्मानद कोसबीजीकी बात भी मैने बताई थी कि उन-जैसे विद्वानतकने मेरे कहनेपर अनशन छोड दिया था और काका साहब कालेलकर जो यहा आए है, वे कहते है कि कोसबीजीने अपने स्वर्गवासके पहले कहा था कि गाधीने अनशन छोडनेकी बात ठीक ही कही थी। तो जब मै, अनशनका आचार्य, कह रहा हू कि वे पति-पत्नी अनशन छोड दे तो उन्हे छोड देना चाहिए। तीन दिनका अनशन बहुत हो गया है। अब वे मान जाय।

आपने अखबारमे देखा होगा कि मै कल जिन्ना साहबसे मिला था। यह बात मैने आपको नही बताई थी, क्योकि पहलेसे मिलनेकी बात थी ही नही। जब मै वहा था तब वाइसरायने मुझसे कहा कि जिन्ना साहब यहा आ गये है, उनसे मिल लो। तो मै इन्कार कैसे करता ? मै वह आदमी रहा जो जिन्नाके घर भी चला जाता है। हम मिले और यह ठहरा कि बादशाह खान भी मिले तो अच्छा । और कल शामको तो हमे फिर वाइसरायके पास जाना था । पर बादशाह खान तो मिस्कीन आदमी ठहरे। वे गरीबोकी-सी मोटरमे बैठकर देवबद चल दिए । इसलिए वहासे लौटकर आनेमे उन्हे तीन घटेके बजाय पाच घटे लग गए और हम कल शामको वाइसरायके पास नही जा सके ।

आज वाइसराय चले गए, पर उनके दिलमे था कि हम मिले तो अच्छा। सो लार्ड इज्मेके पास हम साढे चार बजे गए । इसका नतीजा यह हुआ कि बादशाह खान जिन्ना साहबके घरपर उनसे मिलने गए है और अभी वह वहीपर है ।

इसपर भी हम बड़ी लंबी-चौड़ी आशाएं न बना लें कि चलो, अब सब भला हो गया। पर पाकिस्तानका जो जख्म हो गया है उसके और भी गहरा हो जानेसे रुकनेकी आशा तो हम कर सकते हैं। हमारा काम तो प्रयत्न करनेका है, इसलिए बादशाह खान कायदे आज़मके मकानपर चले गए हैं। लेकिन फल देना ईश्वरके हाथकी बात है। हम प्रार्थना करें कि अच्छा परिणाम आ जाय।

और वह अच्छा परिणाम कौन-सा हो सकता है? सीमाप्रांतमें जो सब पठान हैं वे एक हो जायं। पठान तलवारबाज होता है। कोई पठान ऐसा नहीं होता जो तलवार और बंदूक चलाना न जानता हो। पीढ़ी-दर-पीढ़ी पठान खूनका बदला लेता रहा है। पर बादशाह खान-ने देखा कि हथियारोंकी बहादुरीसे भी ज्यादा बुलंदी, मरकर स्वरक्षा करनेमें है। बादशाह खानका खयाल था कि पठान लोग यह ऊंची बहादुरी अपना लें और एक होकर सबकी खिदमत करें। पर यह ख्वाब पूरा होनेसे पहले वहां यह जनमतसंग्रहका झगड़ा फैल गया।

कुछ कहेंगे कि हम पाकिस्तानके साथ रहेंगे, कोई कहेंगे कि कांग्रेसके साथ रहेंगे। और कांग्रेस तो आज बदनाम है कि वह हिंदुओंकी हो गई। इस बातपर पठान अलग-अलग होंगे और ऐसी यादवस्थली मचेगी कि जिसका बखाना दुश्वार होगा। वे आपसमें कट मरेंगे। बादशाह खान चाहते हैं कि किसी तरहसे जनमतसंग्रहकी बला-से छूटकर पठान आजाद रहें। वे खुद अपने कानून बनावें और एक रहें। फिर चाहे वे पाकिस्तानमें रहें चाहे हिंदुस्तानमें मिलें। वे कहते हैं कि हमारे पास पैसा नहीं है। हम तो मिस्कीन आदमी हैं। हम अपना स्वतन्त्र राष्ट्र बनाना नहीं चाहते, पर किसमें मिलेंगे इसके बारेमें आपसी झगड़ा मिट जानेके बाद ही हम निश्चय करेंगे।

फिर जो हिंदू भागकर हरद्वार आए हैं यह भी डा० खान साहब-को बहुत चुभता है। इसलिए बादशाह खान सीमाप्रांतके हिंदुओंको वापस लौटाना चाहते हैं। सीमाप्रांतमें भी अभी बहुतसे हिंदू हैं जो गरीब हैं और कहीं जा नहीं सकते। उन सबको तसल्ली तभी मिल सकती है जब जनमतसंग्रहका यह झगड़ा खतम हो। इसलिए बादशाह

खान कायदे आजमके पास मिलनेके लिए चले गए है। पता नही वहासे क्या करके लाते है। हम इबादत करे कि अच्छा ही हो।

आखिरी बात यह कि आज फिर ख्वाजा अब्दुल मजीद साहब आए थे। कहते है कि अब तो पाकिस्तान बन गया है, तब राष्ट्रीय मुसलमानोकी उपेक्षा नही होनी चाहिए।

ख्वाजा साहब अपनेको अच्छा मुसलमान होनेकी वजहसे वैसा ही अच्छा हिंदू बताते है जैसा कि मै अपनेको अच्छा हिंदू होनेकी वजहसे अच्छा मुसलमान बताता हू। गोया हरेक अच्छा धार्मिक आदमी दूसरे सभी धर्मवालोके बीच पूरी इज्जत पानेका हकदार है। और उन्होने यह कहा कि अब पृथक् निर्वाचन खत्म हो जाने चाहिए। हम दुनियाकी नजरोमे हिंदुस्तान यूनियनमे एक बनकर रहना चाहते है। धर्म अलग हो, पर कानूनकी दृष्टिमे सभी हिंदुस्तानमे रहना चाहते है और यूनियनके प्रति जो वफादार रहता है उसे उसकी योग्यताके आधारपर सभी हक होने चाहिए जो हरेक हिंदुस्तानीको हो।

मैने उनसे कहा कि आपको वे सब हक मिलेगे ही। अगर दूसरे नही तो हम दो तो है ही, जो एक दूसरेको पूरा धार्मिक और अच्छा मानते है। धर्मके कारण किसीका हक नही छीना जायगा, यह हम देखेगे। पर यह भी हमे देखना है कि धर्मके नामसे ज्यादा रिआयत देना भी अच्छा नही होगा।

एक बार जिन्ना साहबने ऐसा ही किया था। कभी वे १४ शर्ते पेश करते थे, उससे पहले उनकी ११ शर्ते थी और फिर १४ हुई। फिर २१ हुई और फिर एक पाकिस्तानवाली शर्त हुई। लेकिन अब कोई ऐसा नही कर सकेगा। हिदुस्तान बहुत बडा मुल्क है। उसमे सब आजादीसे रहे। जो हिदुस्तानमे वफादारीसे रहना चाहे उन सबको हिंदुस्तानमे स्थान है।

: ४४ :

१९ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

कल प्रार्थना-सभाकी समाप्तिके बाद एक सज्जनने मुझसे एक प्रश्न किया था। मैंने उनसे लिखकर देनेको कहा। उन्होंने लिखकर भेजा। लेकिन वह पर्ची जेबमे[1] पडी रहनेके कारण कपडा धोनेके समय धुल गई और जब वह मेरे पास पहुची तब वह पढी नही जा सकती थी। यह मेरे लिए शरमकी बात है, पर प्रश्नकर्त्ता यहा मौजूद नही है, इसलिए मै क्षमा किससे मागू?

तीन-चार दिनसे पाकिस्तानके विरोधमे जो दपति उपवास कर रहे थे, उनके बारेमे कल जब मैने यहा कहा था, उसे सुनकर पहले तो उन लोगोको बुरा लगा कि मै अपनेको उपवासके शास्त्रका आचार्य कैसे कहता हू। इतना घमडी क्यो बनता हू? लेकिन मै रातको नौ बजे उनसे कुछ देरके लिए मिला और मैने उन्हे समझाया कि जो आदमी पाच फुट ऊचा है वह अगर कहे कि मै पाच फुटका हू तो इसमे घमडकी क्या बात है? उनका वह क्षणिक जोश था। फिर वे समझ गए कि उपवास करनेसे यह अच्छा है कि हिंदुस्तानके टुकडे हो गए यह बात हम दिलमे माने ही नही। उन्होने दूध-फल लेकर अपना उपवास छोड दिया। इसके लिए मै उन्हे मुबारकबाद देता हू। लेकिन उन्होने मुझसे पूछा, "यह तो बताइए कि हम अनर्थका साथ कैसे दे?" तब मैने कहा—"अनर्थसे जो लाभ मिल सकता है, उसे छोड दे।" हम किसीके साथ जबर्दस्ती न करे। अनर्थके कामका कोई लाभ न उठावे, यही अहिसक युद्धका राजमार्ग है। इसीका नाम असहयोग है।

यह सहज प्रश्न है कि बादशाह खान कल जब जिन्ना साहबके पास गए थे तब मैने कहा था कि हम प्रार्थना करे, तो उस प्रार्थनाका फल

---

[1] जिसे वह रखनेको मिली यहा उसकी जेबसे मतलब है, क्योकि गाधीजी तो कपडे पहनते नहीं थे।

हमे क्या मिला ? इस सिलसिलेमे अखबारोमे जिन्ना साहबने जो कुछ निकाला है उससे ज्यादा मै नही बता सकता। उन्होने जो कहा है कि दोनोकी बाते मुहब्बतसे हुईं, यह अच्छा है। मुहब्बतसे बात न करते तो क्या लडने लगते ? पर नतीजा क्या निकला ? कहते है कि नतीजा तो तब निकलेगा जब बादशाह खान सरहदसे समाचार भेजेगे। यह तो कोई नतीजा नही हुआ। लेकिन कल जो प्रार्थना हमने की उसका नतीजा आज मिल जाय, ऐसा थोडा होता है ? ऐसा जो कहे, वह भगवानको जानता ही नही। ईश्वर तो निराकार और निरजन है। उसकी प्रार्थनाका महत्त्व मै आज थोडा-सा आपको बताना चाहता हू।

ईश्वरकी प्रार्थनाका फल नही मागा जा सकता और न उसकी प्रार्थना छोडी ही जा सकती है। खाने-पीनेका उपवास भले ही हम करे—समय-समयपर करना भी चाहिए—पर प्रार्थनाका फाका नही हो सकता। हमे आखिरी सासतक रामको भजना चाहिए। आजके भजनमे कबीरजीने कहा है न, 'साहब मिले सबूरीमे।' वह धैर्य, वह सबूरी हमे नाम-स्मरणसे ही मिल सकती है। शरीरकी खुराक जैसे अन्न है वैसे शरीरमे पडी आत्माकी खुराक राम-नाम है। गायत्री-पाठ, सध्या-वदन, नमाज आदिका समय होता है। राम-नामके लिए तो समय ही नही होता। जिसके सासके साथ राम-नामका जाप चले उसकी खैर। ऐसा करनेवाला आदमी १२५ वर्ष जिदा रह सकता है। अगर मै १२५ वर्षसे पहले मर जाऊ तो आप कह सकते है कि मै उस स्थितितक नही पहुच पाया हू, जिसे मैने बताया है। मै चाहता हू और कोशिशमे हू कि दिन-रात सासके साथ राम-राम कहता रहू।

(इसके बाद गाधीजीने हनुमानजी और सीताजीवाली वह कथा सुनाई जिसमे हनुमानजीने सीताजीकी दी हुई मालाके मोतीमें राम-को खोजनेके लिए एक-एक करके उन्हें चबाकर फेक दिया था और कारण पूछनेपर हनुमानजीने अपना हृदय चीरकर राम दिखा दिया था।)

इस कथाको याद करके अगर मै हनुमान-जैसा भी बन जाऊ तो फिर पूछना ही क्या ? तो फिर मेरा भी शरीर पहाड-जैसा हो ? शरीर-

की बात छोडो, आत्मा तो उससे भी ऊचे पहाडके समान दृढ होनी चाहिए। यह सब कहना आसान है, करना कठिन है। मैंने आपके सामने वह आदर्श रख दिया। अगर आज उसतक हम न पहुच सके तो उसकी ओर कुछ-न-कुछ प्रगति तो करे। तो हम ऐसा न कहे कि 'बादशाह खान गए और कुछ हाथ नही आया तो प्रार्थना क्यो करे?' हम फल न देखे। पृथ्वीमे कोई कार्य ऐसा नही होता, जिसका फल न हो। और प्रार्थना तो सबसे उत्तम कार्य है। इसलिए अगर हम मदिर जाते है, माला फेरते है, जो थोडा-सा ढोग भी होता है, उसके पीछे भी अतमे अच्छाई आनवाली है, यह विश्वास रखे।

मै परसो हरिद्वार जाऊगा। मेरे साथ जवाहरलाल जायगे। वे तो युक्तप्रातमे अद्वितीय है। आज तो वे सारे हिदुस्तानमे भी अद्वितीय हो रहे है। हमारे सामने पेचीदा प्रश्न है। वहा हजारो आश्रित पडे है, उनके लिए क्या करे? बेकारमे किसीको खाना देनेके मै विरुद्ध हू। हम जो खाना खाते है, उसका बदला हमे चुकाना ही चाहिए। ईश्वर-का यह कडा नियम है कि जो काम करे वह खाना खाय। बिना काम किए कोई न खाय। इसलिए उन आश्रितोको भी मै कहूगा कि उन्हे काम करना जरूरी है। वैसे तो जितनी शीघ्रतासे हो सके, उन्हे घर लौट जाना चाहिए।

परतु जो वाकये वहा हालमे हो गए है उन्हे देखते हुए मै उन्हे मृत्युके मुहमे जानेके लिए नही कह सकता।

लेकिन मुस्लिम लीगको मै कहूगा कि अपने पाकिस्तानमे उन सभी लोगोको सजा देनेका इतजाम करे, जिन्होने गुनाह किया है। मै यह नही कहता कि गालीके बदले गाली दी जाय और पिटाईके बदलेमे पीटा जाय। लेकिन हकूमतका फर्ज है कि अपने यहाके सब लोगोकी, चाहे वे विधर्मी ही हो, रक्षा करे। ऐसा तो वे कहते है कि आओ। पर वे जाय और फिर मार खानेकी बात हो तो वे कैसे लौटे? इसलिए वहाकी हकूमतको ऐलान करना चाहिए कि वह गुनाह करने-वालोको सजा देगी और जनताकी रक्षाका पक्का बदोबस्त करेगी। यह ऐलान कहनेभरका न हो। ऐसा हो जिसपर हम भरोसा कर

सके। वे कहे कि पहले आपको खाना खिलायगे फिर हम खुद खायगे। और विधर्मीको भी वे सभी हक है जो हमारे यहा मुसलमानको है। तो फिर मै एक भी दिन शरणार्थियोको हरिद्वारमे रुके रहने नही दूगा।

जब वाइसरायने उनसे पूछा कि यह तो बताओ 'आप अलग जो हो रहे है, तो भाईकी तरह या दुश्मनकी तरह ?' तब उनके चारो प्रतिनिधियोने कहा था, 'हम भाई-भाईकी तरह ही अलग होनेवाले है।' अगर यह बात सिर्फ वाइसरायके कमरेतक ही सीमित रह जायगी, इसका अमल रोजके कागमे न होगा, तो उन चारोने और वाइसराय-ने भी फरेब किया है, ऐसा कहना होगा। इसलिए वे आज ही अपना भाईपना दिखलावे। चार महीनेके बादतक रुके रहनेकी क्या जरूरत !

(बादशाह खानकी बात बताते हुए गाधीजीने कहा—) आज उनके प्रातमे यह बात पैदा कर दी गई है कि दो बक्सोमेसे एक बक्सेमे पर्ची डालो। चाहे पाकिस्तानवालेमे, चाहे हिंदुस्तानवालेमे। और हिंदुस्तानमे उन्हे बिहारवाला हिंदूराज बताया जाता है। इस आबोहवामे कोई मुसलमान नही कहेगा कि वह मुसलमानका साथ छोडकर हिंदूके साथ जायगा। आज उनमे यह कहनेका साहस नही है कि वह यह कहे कि बदमाश मुसलमानसे शरीफ हिंदूकी सोहबत अच्छी है।

इस हालतमे बादशाह खान कहते है कि वे अपने सूबेको सबसे पहले स्वतत्र सूबा बनाना चाहते है। यानी हिंदुस्तान या पाकिस्तानसे न मिलकर पठान-पठान आपसमे मिल जाय और अपना कानून और अपना विधान बना ले।

काग्रेसको पठानोसे यह कह देना चाहिए कि वे अपना कानून बनाए। आपके बनाए विधानमे हम जरा-सा भी दखल नही देगे। हमे उतना दखल तो रहेगा जितना कि केद्रका बधन माननेवाले दूसरे प्रातोमे हो सकता है। बाकी अदरूनी सारा काम आप अपनी शरीयतके मुताबिक चलावे।

इसी तरह लीग भी कह दे कि उसके जो दो-चार सूबे होगे वे अपने अदरूनी इतजाममे आजाद रहेगे और सिर्फ अमुक-अमुक बात केद्र-

की चलेगी । गोया हमारे यहा दो केद्र अलग-अलग बनेगे और हरेक सूबा अपने लिए आजाद होगा । तो फिर जन-मतसग्रह-की जरूरत न रहेगी । और मै भी पठानोसे कहूगा कि चूकि आप लोग पाकिस्तानके पास है, इसलिए उन्हीके साथ रहे। आज मै उन्हे यह नही कह सकता, क्योकि मै नही जानता कि पाकिस्तान कैसे चलनेवाला है।

ऐसी धुधली आबोहवामे वे जन-मत लेना चाहे तो ले, पर फिर वह पाकिस्तानके मुकावले हिदुस्तानके नही, पर पाकिस्तानके मुकाबलेमे पठानिस्तानके लिए ही लिया जाय। इतनी सीधी-सी बात ही मै उनसे कहना चाहता हू ।

: ४५ :

२० जून १६४७

भाइयो और बहनो,

कल प्रातकाल मै हरिद्वार जाऊगा और कल ही लौटने-की उम्मीद है, इसलिए मोटरमे ही रात हो जायगी। यहा प्रार्थनामे मै न रहूगा। आप आना चाहे और प्रार्थना करना चाहे तो कर सकेगे। मुझे वहा लोगोको आश्वासन देनेके लिए जाना है। ज्यादा तो मै क्या कर सकूगा? पर धर्म समझकर जाता हू।

आज इस छोटी लडकी[1]के पास किसीने एक पत्र भेजा दिया था कि तू अगर कुरानकी आयत बोलेगी तो तुझको मै मार डालूगा[2]।

---

[1] कु० मनु गांधी।

[2] पता चलानेपर मालूम हुआ कि आज सवेरे कु० मनु गांधीके पास डाकसे एक पत्र पहुचा कि शामको प्रार्थनामें तुम कुरानका पाठ मत किया करो। करोगी तो गोलीसे उड़ा दी जाओगी। गांधीजीने और दूसरोंने इसे एक मजाक समझा और बात टाल दी। पर दोपहरमें कु० मनु गांधी-

इस तरहसे किसीको धमकाना हमारी सभ्यताके अनुकूल नही है। और फिर मनु तो छोटी-सी लडकी है। अगर वह कुरान बोलती है तो मेरे सिखानेपर बोलती है। मेरा गला ऐसा नही चलता कि मै मधुरता-से वह गा सकू। अगर यह विनोद ही है तो भी छोटी लडकीसे ऐसा मजाक नही करना चाहिए।

और कुरानकी इस आयतके बारेमे तो मै काफी समझा चुका हू। उसमे कोई ऐसी बात नही है जो खटकनेवाली हो। उसका अर्थ मै बता चुका हू। जिन मुसलमान मित्रोंके साथ मै उठता-बैठता हू वे कहते है कि सच्चे दिलसे जो यह प्रार्थना करे तो उसे शैतान नही सता सकता। इसी तरह राम-नामकी महिमा गाते हुए तुलसीदासजी-ने सारी रामायण भरी है। गायत्री-मन्त्रके बारेमे भी हम लोग ऐसी भावना रखते है। तो जो प्रार्थना करे उसपर क्रोध क्या करना? धमकी क्या लिख भेजना? इस तरह करनेका फायदा क्या? अगर फायदा है ही, तो इस तरह लिखनेवालेको कोई फायदा होनेवाला नही है, होगा तो उस लडकीको, क्योकि वह तो अब ज्यादा निर्भयता महसूस करती है।

मै आपसे कहना चाहता हू कि हम लोग आज स्वदेशीको भूल

को टेलीफोनपर बुलाया गया और पूछा गया—"बोलो, तुमने क्या विचार किया ?"

"किस बारेमें ?"

"प्रार्थनामें कुरान बोलोगी ?"

"हां जी, वह तो नियमपूर्वक बोलूंगी ही।"

"तो गोलीसे मार दी जाओगी।"

"बस, इतना ही।"

"अच्छा, मानोगी नही ?"

"गरजनेवाले मेघ कम बरसा करते है! पर आप अपना नाम तो बताइए ? "

बस टेलीफोन बंद हो गया।

गए हैं । मैं शुरूसे कहता आया हूं कि अगर हम विदेशी रीति-रिवाज अपनाते है तो स्वदेशी राजकी बात करना बेकार है। आप ऐसी पश्चिमी तरीकेकी धमकी न दे। अपनेमे स्वदेशीपन रखे। जिससे हमे नुकसान हो, जिससे हम भूखे रहे वह स्वदेशी मनोवृत्ति नही है। वह परदेशी मनोवृत्ति है। पहले अगर कोई जरा भी परदेशी काम करता था तो मै उसे बहुत डाटता था। लेकिन तब मेरा राज था, बदूकका राज नही। पर सारे मुल्कमे प्रेमका राज था। अब मेरा वह सिक्का नही है। मै अब बूढा हो गया हू। हर जगह दौडकर नही जा सकता। अगर आज भी मेरी आवाज हर जगह पहुचे तो मै वही कहूगा जो ३२ बरससे कहता आया हू। वैसे मै ७८ बरसका हू, पर जवानीमे दक्षिण अफ्रीकामे मै जलावतन रहा। वहासे लौटकर मैने जो ३२ बरस-तक बात सिखाई है उसका नतीजा यह है कि इस सारे कामको हम अपने हाथो मारनेपर तुले हुए है और विदेशीपन अपना रहे है। स्वदेशी वह है जो आत्माको भाता है ।

मैने सपूर्ण स्वदेशीकी बात कही। उसका केद्र खादी ठहराया। उस समय हमारे पास राष्ट्रीय झडा नही था। तब तीन रगका ऐसा झडा बनाया गया जिसमे हिंदुस्तानके सारे आदमियोका प्रतिनिधित्व आ गया। लेकिन इकट्ठे होकर करे क्या? बोलते रहे? ना। 'काम करे?' 'हा'। तो क्या काम करे? सूत काते। और ऐसा समझकर हमने हिंदुस्तानकी महाशक्ति चर्खेको झडेमे रखा। यह तिरगा झडा आज मृतप्राय हो गया है। अगर उसे हम हृदयमे रखे तो बहुत ऊचे उठ सकते है।

लेकिन आज तो हम खादी पहनते है या खादी टोपी पहनते है, पर भीतरमे तो पोल-ही-पोल रहती है। मैने तब कहा था कि बाहरका कपडा ही नही, यहाकी मिलोका कपडा भी, हमारे लिए परदेशी है। कपूर जो हम यहा पैदा नही कर सकते और जो बहुत कामका और उपयोगी है, उसे जापानसे मगावे तो उसमे परदेशीपन नही है। लेकिन जो यहा पैदा कर सकते है उसे जापानसे मगावे तो वह हमारे लिए जहर है। जब कि हमारे यहा करोडो आदमी पहले अपना कपडा बनाते थे, खुद ढके

रहते थे और जहाजके जहाज भरकर बाहर भी भेजते थे, उन्होने अब कौन-सा गुनाह किया है कि वे अपनी कपास तो विदेशोमे भेज दे और उसीमेसे विदेशोसे जो कपडा बनकर आवे, वह यहाकी रुईके दामोसे भी सस्ता बिके ? इसके पीछे क्या-क्या कारगुजारिया चलती है यह कोई सुने और समझे तो उसके रोगटे खड़े हो जाय ।

उस जमानेमे हमने विदेशी कपडेके पहाड चिन-चिनकर जला दिये थे और कोई यह नही कहता था कि इससे राष्ट्रकी निधि बरबाद हो रही है। श्रीमती नायडूने अपनी पेरिसकी साड़ी जला दी थी और स्व० मोतीलालजीने भी अपने विलायती कपडोमे दियासलाई लगा दी थी। उनके पास तो आलमारीकी आलमारिया विदेशी कपडे थे। इसके बाद जब वे जेल गए तब उन्होने मेरे पास एक खत भेजा था—आज वह खत मै खोज नही सकता—पर उसमे था कि मै सच्चा जीवन अभी जी रहा हू, आनदभवनमे मेरे पास जो समृद्धि थी उससे मुझे यह सुख नही मिलता था। वहा उन्हे सिगार, शराब, गोश्त कुछ नही मिलता था। पूरा भोजन भी नही मिलता था, फिर भी उसमे उन्हे सुख मालूम हुआ। यह सही है कि उनकी यह चीज हमेशा नही चली। आदमी जो ऊची उडान लेता है वह हमेशा टिक नही सकता। हम भी ऊचे चढकर बार-बार गिर जाते है। पर मनुष्य-के लिए अपनी वह ऊची उडान पुण्यस्मृति बन जाती है। कम-से-कम मेरे लिए तो ऐसा ही है। तो क्या वह जमाना खराब था ? आज वह जमाना कहा चला गया ?

आज तो जमानेने एकदम पलटा खाया है। एक छोटेसे भले व्यापारीने मेरे पास पोस्टकार्ड भेजा है कि वह पुराना जमाना कहा गया ? आज तो हम सब स्वार्थी बने हुए है। हम व्यापारी तो स्वार्थी है ही, राजा भी स्वार्थी है; उनके दीवान भी स्वार्थी है। और ये अग्रेज भी जाते-जाते इतने नखरे और इतना स्वार्थ क्यो करते है, वे इतनी लडाई कराते है और उसमेसे अपने लिए पैसे पैदा करते है। अगर उन्हे जाना है तो मोह क्यो नही छोडते ? अपने जानेमे सुगध

पैदा क्यो नही करते ? लेकिन अग्रेजकी क्यो कहे। काग्रेसी भी स्वार्थी हो गए है। इन्हें क्या कहे ? समुद्रमे आग लगी हो तो उसे कौन बुझायगा ? नमक अगर अपना नमकीनपन छोड देगा तो रस कहासे आयगा ? काग्रेसने इतना त्याग किया, इतनी लड़ाई की, वह उसका गौरव कहा गया ? अब तो वे लोग प्रधान बनना चाहते है, सेक्रेटरी बनना चाहते है। मेरी रायसे यह सारा-का-सारा परदेशीपन है।

मै सुन रहा हू कि देशी मिलोके कपडेकी बिक्रीपर हमारे देशमे अकुश, है पर बाहरसे आनेवाले कपडेपर कोई अकुश नही है। यह सब क्या हो रहा है ? मेरी समझमें नही आता। यह तो हम एक हाथसे स्वराज ले रहे है और दूसरे हाथसे उसे खोनेकी कोशिशमे लगे हुए है। यह बडे ही दु.खकी बात है।

एक भाईने लिखा है कि पश्चिमी पजाबको कुछ आश्वासन दो। मैंने कुछ आश्वासन दे भी दिया, लेकिन केवल सहानुभूति जतानेसे काम होनेवाला नही है।

आखिर पजाब तो वही है न, जहा पजाबके शेर लाला लाजपतराय पैदा हुए थे। पजाब तो बहादुरोका गढ ठहरा। वहां सिख पैदा हुए। मै सिखोकी तलवारकी बहादुरीकी सराहना नही कर सकता। मेरी निगाहमे निहत्थे रहकर जो बहादुरी दिखाई जाय वही असली बहादुरी है। पर पजाबके लोग आज हथियारकी ही बात करते है। मैंने पूछा था कि आपको पैसेकी आवश्यकता है क्या ? तो उन्होने (पजाबियोने) कहा कि हमे तो हथियारोकी मदद दिलवाइए। मेरी समझमे यह मनोवृत्ति भी परदेशीपन ही है।

दु ख-निवारणकी बात क्या बताऊ ? मै तो उन्हे यही कह सकता हू कि पजाबमे बकरी नही, भेड़ नही, शेर पैदा होने चाहिए। मै तो पजाबको जानता हू। मै वहांकी स्त्रियोंको भी जानता हूं। उन लोगोंका मजबूत शरीर होता है। पर मन भी तो मजबूत चाहिए। आजकल वहा जो प्रवाह बह रहा है उससे आदमी शेर-दिल नही बन पाते।

वहाकी स्त्रियोको आज विदेशी और चटकीले कपडे चाहिए। साडी भी उतनी बारीक चाहिए कि सारा बदन दीखता रहे। और पुरुष भी उनसे कम नही होते। वे खुद नही पहनते, पर स्त्रियो को पहिनानेका चाव रखते है। मेरे पास जब पजाबी बहने आती है और पूछ बैठता हू कि इतने जेवर क्यो, ऐसे कपडे क्यो? तो वे कहती है हमारे भाई, पिता या पतिका आग्रह है कि इतने जेवर तथा कपड़े तो चाहिए ही। पुरुष क्यो अपने घरकी स्त्रियोको गुडिया बनाते है?

अगर यह सब छोडेगे तो फिर हम डरेगे नही। हमे डरना किससे है? मुसलमानोसे? वे अगर हैवान बन जाते है तो हम इन्सान बने। फिर वे भी इन्सान बन जायगे। जब मै निकम्मा बनिया भी नही डरता तो आप क्यो डरे? मै तो कहता हू कि वे मेरा क्या करेगे? मारेगे न? भले मारे। खून पीएगे? तो पिये, एक दिनका भोजन बच जाएगा। और मै मानूगा कि मैने सेवा की। लेकिन मै सेवा करनेवाला कौन, ईश्वर ही सब करता है। इसलिए यह कहना सही होगा कि उसने मेरा उपभोग सेवाके लिए किया। इसी तरह मै सबसे कहूगा कि आप भी न डरे।

: ४६ :

२२ जून १९४७[1]

भाइयो और बहनो,

आप तो जानते है कि मै पजाब और सीमाप्रातके शरणार्थियोको देखने हरिद्वार चला गया था। वहा डेराइस्माइलखा और दूसरी जगहोके ३२,००० आदमी आ गए है। वहा बहस करनेको तो समय नही था। मैने उन लोगोसे भरपेट बाते की। उनके

---

[1] २१ ता०को गांधीजी हरिद्वारसे देरमें लौटनेके कारण प्रार्थनामें सम्मिलित नही हो सके।

कैंपोंमें भी चला गया। लोगोंने मुझसे उनके बारेमें तरह-तरहकी बातें कहीं। वहां दो किस्मके लोग आए हैं। एक सचमुच दुःखी, मिस्कीन हैं, और दूसरे वे जो अच्छे खाने-पीते हैं पैसेवाले हैं। पर उनमें कुछ ऐसे हैं जो जुआ खेलते हैं शराब पीते हैं और तरह-तरहसे पैसा पैदा करते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि उनका यह धर्म नहीं है कि आपत्ति-कालमें वे ऐसा करें।

लोग वहां दुःखी होकर आए हैं। अपने रिश्तेदारोंसे अलग हो गए हैं। पर अब इसका रोना क्या? मैंने उन्हें बताया कि दुःखकी बात भूल जाओ। दुःखको भूलनेसे दुःख मिट जाता है। तुम्हें तो दुःखमें सुख पैदा करना है। इतनी बड़ी दुःखकी बात हो गई; हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो रहे हैं, इसका मुझे बड़ा रंज है, पर क्या मैं रोऊं?

मैं आपको सुनाना चाहता हूं और आपके मार्फत उनको[1] कहना चाहता हूं कि सब लोग दुःखको भूल जायं। इन ३२,००० आदमियोंको अपना सहयोगी संगठन बना लेना चाहिए। उनको उद्यम करना चाहिए। जुआ नहीं खेलना चाहिए, शराब नहीं पीना चाहिए, गांजा नहीं पीना चाहिए। उन्हें कुछ-न-कुछ काम जरूर करना चाहिए। हुकूमत उन सबको खाना देना चाहे तो भी नहीं दे सकती। आज तो सब जगह ब्लैक मार्केट चलता है अगर सच्चे आदमी भी हों तो भी इस जमानेमें अच्छा पूरा राशन नहीं मिल सकता। लेकिन उन्हें रोना नहीं चाहिए। शिकायत करनेसे रोनेसे खाना नहीं मिल सकता। वे सहयोगसे काम लें।

दक्षिण अफ्रीकाकी ऐतिहासिक यात्रामें हम सब लोग रोज २० मील चलते थे। बहुत आदमी साथ थे। उनके देनेके लिए मेरे पास एक औंस चीनी और कुछ डबल रोटी होती थी। वह एक आदमीकी पूरी खुराक नहीं होती थी। जब २० मील चलकर पहुंचते थे तो शाम हो जाती थी। मैं देखता कि वहां कुछ पका करता था।

---

[1] शरणार्थियोंको।

जाच करनेपर मालूम हुआ कि वे लोग घासमेसे कुछ पत्तिया और दूसरी खाने लायक चीजे चुन लेते थे। थोडा-सा नमक लेते थे। पानी वहा होता ही था। पकाना शुरू कर देते थे। मै बहुत खुश हुआ कि ऐसे (उद्यमी) यात्रियोके साथ तो सदा यात्रा की जा सकती है। वहा उन्होने जगलमे मगल कर दिया था।

हरिद्वारकी मिट्टी और भी उपजाऊ है, वहा तो वे और भी उद्यम कर सकते है। वे ऐसा करेगे तो लोग उससे थकेगे नही। जो आश्रित है उन्हे तो ऐसी खूबसूरतीसे रहना चाहिए कि वे दूसरोके लिए भार न मालूम पड़े। सब साथ-साथ इस मुसीबतको काट ले।

लोगोको कुछ-न-कुछ पेशा करना चाहिए। वहा मुझे कुछ बहने मिली जो सिलाई-कताईका काम करती थी, कुछ आदमी भी ऐसे मिले, जो कुछ काम निकाल लेते थे। यह मुझे अच्छा लगा। उन्हे भिक्षुक नही बनना चाहिए। उन्हे बहादुर बनना चाहिए और डरना नही चाहिए।

मै तो सब जगह जा नही सकता था। डा० सुशीला नायर सब कैपोमे गई। वहा उन्होने बडी गदगी देखी। गदगी तो नही रहनी चाहिए। यह काम गवर्नमेंट नही कर सकती। हमे खुद अपनी सफाई करनी चाहिए। दूर-दूर रहना चाहिए। लोग कहते है कि वहा जानवरोका डर है। मै कहता हू कि उन्हे जगली पशुओसे क्या डरना? जैसे आदमी जगली पशुओसे डरता है, वैसे ही जगली पशु स्वय आदमीसे डरते है। ३२,००० आदमियोको डर छोड देना चाहिए। वे तो जहा बस जायगे वहा जगली पशु भाग जायगे। इन लोगोको प्रेमसे जैसे दूधमे मिश्री रहती है ऐसे सबके साथ मिलकर रहना चाहिए।

मैने एक दु खकी बात सुनी है। वह बात काबुलकी है। काबुलमे जो हिंदू रहते है वह वहावालोकी मेहरबानीपर रहते है। उन्हे वहा एक खास रगकी पगडी पहननी पड़ती है। मुझे यह सुनकर बडा बुरा लगा कि वहाके लोग पैसेके लोभके लिए ऐसी ज्यादती सह लेते है। हम अपने हक रखकर रहे तो रहे, नही तो नही। मै इसको बर्दाश्त नही कर

सकता। कोई बादशाह हो तो अपने घरका। फिर काबुल तो हमारा ही मुल्क है। हमारा मुल्क है, यानी पठानका मुल्क है। फर्क इतना है कि यहा ब्रिटिश है, वहा ब्रिटिश सल्तनत नही है। मेरी दक्षिण अफ्रीका-की लड़ाई भी इसी तरहकी थी। हम उन-जैसी पगडी क्यो नही पहने? हमारे लोग वहा आजादीसे न रह सके यह कोई सहन करने-जैसी बात नही है। मै समझता हू कि काबुलमें ऐसा नही होगा और इस कथनमे अतिशयोक्ति होगी। मै देखूगा और काबुलवालोसे पूछूगा।

: ४७ :

सोमवार २३ जून १९४७

(लिखित सदेश)

हिदुस्तानका बटवारा और प्रातोके जो टुकडे किए जानेवाले है, वह हमारे लिए कसौटी समझिए। आजके अखबारोमे जिक्र किया जाता है कि लदनमे हिदुस्तानके बटवारेका जो बिल पार्लमिटमे रखा जायगा उसकी रस्म धूमधामसे मनाई जायगी और हिंदुस्तान जो आजतक एक कौम रहा है, दो कौमे या दो नेशन बना दिया जायगा। ऐसे उदासीके मौकेपर खुशी किस बातकी! हमने तो यह श्रद्धा दिल-मे रखी है कि हम जुदा हो रहे है तो भी वह जुदाई एक ही खानदान-के भाइयोकी होगी, और हम मित्र तो रहेगे ही। अगर अखबारोकी खबर ठीक है तो बरतानिया हमे दो राष्ट्र बनानेवाला है और वह भी खुशीके नारे लगाकर! क्या यह उनकी हमपर आखिरी गोली होगी? मै उम्मीद करता हू कि नही।

लेकिन अगर हिदुस्तानके वडे हिस्सेने, अर्थात् इडियन यूनियन-ने अपने धर्मका पालन किया तो हम उनकी चालको मात कर सकेगे। बटवारेसे तो हम आज बच नही सकते, चाहे वह हमे कितना ही नापसंद हो। लेकिन धर्मका पालन यह है कि हम मीधे रास्तेपर

चले, अपने आपको हमेशा एक ही कौम समझे और मुसलमान अल्पसख्यकोको कभी भी परदेशी माननेसे साफ इन्कार करे। हिंदुस्तान उनका भी उतना ही घर है जितना कि हमारा।

इसके स्पष्ट मानी यह हुए कि हमे हिंदू-धर्ममे क्रातिकारी परिवर्तन करना होगा। हमारे ऊपर अछूतोका कलक लगाया जाता है और वह हमारी कमजोरी जरूर है। पढनेमे आता है कि मुस्लिम लीगके नेता आज अछूतोको यह झासा दे रहे है कि पाकिस्तानमे उन्हे अलग चुनावका हक मिलेगा। क्या यह पाकिस्तानी इस्लाममे शामिल होनेकी दावत है? जबर्दस्तीसे जो हालमे लोगोसे मजहब बदलवाया ऐसी और बात चली है, उसके बारेमे मै कुछ नही कहना चाहता। चूकि मैने अछूत भाइयोसे खुद ऐसी बाते सुनी है। मुझे जरूर डर है कि क्या होनेवाला है।

इस डर या डरावेका जवाब एक ही हो सकता है, वह यह कि हिंदू-धर्ममेसे छूतछातका भूत बिल्कुल निकल जाय। हिंदुस्तानमे कोई अछूत न हो। हिंदू सब एक हो। कोई ऊचा, कोई नीचा नही। जिन गरीब लोगोकी ओर, मसलन अछूत या आदिवासी, हम आजतक बेदरकार रहे है, उनकी हम खास देखभाल करे। उन्हे पढाए, उनके रहन-सहनको देखे, आदि। वोटरोकी फेहरिस्तमे सब एक ही हो। आजकी हालत न रहे, इससे कई दर्जे बेहतर हो। क्या हिंदू धर्म इतनी ऊचाईतक चढ सकेगा या कि झूठी मिथ्या बातोसे और दूसरोकी खराबीका अनुकरण या नकल करके अपना आत्मघात करेगा? सवाल तो हमारे सामने यही है।

: ४८ :

२४ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

इस भजनमें ऐतिहासिक रामकी करुण कहानी है, जिसे सुनकर

आंखोमे आसू आ जाते है। कहा तो जानकीनाथका तिलक होनेवाला था और कहा उन्हे वनवास हो गया! इससे अधिक करुणाजनक चीज और क्या हो सकती थी! वही इतिहास आज हमारी आखोके सामने आ रहा है। एक ओर तो लदनमे हिदुस्तानको औपनिवेशिक स्वराज्य दिए जानेपर खुशिया मनानेकी चर्चा है, दूसरी ओर हम आज अपने धर्मकी रक्षाके नामपर आपसमे लड रहे है। मेरे पास कितने ही खत आते है जिनमे मुझपर तरह-तरहके कटाक्ष किए जाते है। कोई लिखता है कि 'तूने हिदुओको बर्बाद कर दिया। तू मुसलमानोकी खुशामद करता रहता है,' आदि। मेरे दिलपर इन गालियोका असर नही होता। मै किसीकी खुशामद, नही करता और करता हू तो केवल ईश्वरकी। उसकी भी खुशामद क्या, उसके तो हम सब गुलाम है, हम सब उसके बदे है। वह किसीकी खुशामद नही मानता क्योकि वह तो सर्वशक्तिमान है। मै इन खतोपर गुस्सा करके भी क्या करू? आखिर मेरा गुनाह क्या है? मै यही तो कहता हू कि कोई व्यक्ति पापी बननेसे या फरेब रचकर या दूसरोपर अत्याचार करके अपने धर्मकी रक्षा नही कर सकता। यह बात हिदू, मुसलमान सबपर लागू होती है। पाकिस्तान बुरी चीज है यह सब कोई कहता है। ऐसी हालतमे वहा खुशिया और धूमधाम मनानेवाली क्या चीज है। हमारे देशके टुकडे करके भी उनको नक्कारा क्या बजाना था! हमे एक लड्डू मिलता है और उसके भी टुकडे हो जाते है। इसने उन्हे खुशी क्या मनानी थी? मै ६० वर्षसे, जब कि मै हाईस्कूलमे पढता था, यही कहता आया हू कि इस देशमे हिदू, मुसलमान पारसी और ईसाई जो भी रहते है सब भाई-भाई है। इतने वर्षोके तजुर्बेसे मै कहता हू कि हमारी जमीनके टुकडे हो गए तो क्या हम अपने भी दो टुकडे करे? एक देशमे रहनेवाले लोग दो प्रजा कैसे बन सकते है? क्या यहा हिदू और मुस्लिम प्रजा अलग-अलग होगी? हिदुस्तानमे एक ही प्रजा रहेगी और वह हिदुस्तानी प्रजा होगी। हम गलत इतिहास क्यो सीखे? हम यही कहेगे कि हम दो प्रजा नही है। जब मै ऐसा कहता हू तो लोग गालिया देते है। क्या मै उनकी बात मानकर अपने आपको खूनी बना

लू ? इससे मै अपनेको ही नुकसान पहुचाऊगा। आत्मा ही आत्माका बधु और आत्मा ही आत्माका शत्रु हो सकता है। अत हिदूको मिटाने-वाला हिदू ही हो सकता है, दूसरा नही ।

परतु आज तो चारो ओर अगार फैल रहे है । इस आगसे बचोगे तभी धर्म बच सकेगा। मै कहा-कहा जाऊ, यह मुझे नही मालूम देता। मेरी शक्ति क्षीण होती जाती है । मेरा शरीर इस गर्मीको सहन कर-ने लायक नही रहा। मैने जो कहा है वह सत्य है। वह सबपर लागू होता है। वह सर्वसामान्य दुनियाका नियम है और सत्यकी हमेशा जय है और झूठकी क्षय होती है। मै जो कह रहा हू वह डरपोक और बुज-दिलके लिए नही, बल्कि उनके लिए जो बहादुर है और नि स्वार्थ है, जो अपनी माकी, लडकीकी और अपने धर्मकी रक्षा करते हुए मरना जानते है, दूसरोको मारना नही। जो आदमी खुशीसे मर जाता है वह मारनेवालेसे कही ज्यादा बहादुर होता है। मै चाहता हू कि इस बहादुरीके स्तरतक सारा हिदुस्तान पहुचे ।

मै तो यह सब[1] देखकर काप उठता हू । किसको मै जाकर समझाऊ। मै तो धीरज रखकर यहा बैठ गया हू । हम अग्रेजोकी ओर देख रहे है। ऐसे हम कबतक देखेगे ? १५ अगस्तके बाद, जब कि सब कुछ हमारे हाथोमे आ जायगा, तब हम किसकी ओर देखेगे ?

पजाबमे मार्शल-ला लागू करनेकी बात कही जाती है । वहा एक मार्शल-ला लागू हुआ मै देख चुका हू। मै जानता हू कि मार्शल-ला क्या चीज हो सकती है। मार्शल-ला दिलोको नही बदल सकता।

मै तो यही कहूगा कि मुसलमानोको इस्लाम, हिदुओको हिंदू-धर्म और सिखको गुरुद्वारा बचाना है तो वे सब मिलकर यह फैसला कर ले कि हम आपसमे लडेगे नही । यदि किसी चीजके बटवारेपर झगडा भी हो तो उसका फैसला तलवारसे नही, पचद्वारा कराएगे ।

(त्रावनकोरके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अय्यरके ताजा, वक्तव्यकी आलोचना करते हुए) सर सी० पी० कहते है कि गाधी

---

[1] लाहौर, अमृतसर और गुडगांवके उपद्रव।

और कांग्रेस सरहद्दी सूबेको तो आजादी देनेको तैयार है, परतु त्रावनकोरको नही। इतना बडा विद्वान होकर भी वह कितनी गलत बात करता है। यदि त्रावनकोर अलग हुआ तो हैदराबाद. काश्मीर और इदौर आदि सब अलग हो जायगे। इस तरहसे तो हिंदुस्तान-के अनेक टुकडे हो जायगे। इसके अलावा फ्राटियरके खान हिदुस्तान-से पृथक् नही होना चाहते। वे कहते है कि हम पाकिस्तानमे नही जायगे। तब फिर क्या वे हिदुस्तानमे हिदुओकी गुलामी करेगे? उनपर कांग्रेससे पैसा खानेका इल्जाम लगाया जाता है? कांग्रेस यदि इस तरहसे किसीको पैसा देकर अपनी तरफ करे तो वह अबतक जिंदा नही रहती। बादशाह खानने हमे विश्वास दिलाया है कि हिंदुस्तान पहले अपना विधान बना ले। इस दौरानमे वह किसी फैसलेपर पहुच जायगे। मगर रामस्वामी जो कहते है वह बिल्कुल गलत है। फ्राटियरमें वहा रहने-वाली प्रजाकी आवाज है, जब कि त्रावनकोरमे तो एक राजा और उसका सचिव ही सारी प्रजाकी तरफसे बोल रहा है।

आजकी हालतमे राजा और प्रजा दोनोका एक हक है, यह मेरा दावा है। फ्राटियरकी मिसाल देकर सर सी० पी० लोगोकी आखोमे धूल नही झोक सकते। इस तरहसे न तो धर्म रहता है और न कर्म रहता है। मै तो रामस्वामीसे यही कहूगा कि सही चीज यही है कि त्रावनकोर राज्य विधान-परिषद्मे आ जाए।

: ४९ :

२५ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

हरिद्वारमे मुझे सूबा सरहद और पजाबके शरणार्थियोने यह बताया था कि काबुलमे जो हिंदू लोग रहते है उनको एक अमुक रगकी पगडी पहननी पडती है जिससे कि वे अलग पहचाने जा सके। इस बारेमे आज अफगान राजदूतने एक लबा बयान

देते हुए उसका प्रतिवाद किया है। उनका कहना है कि काबुलमे ऐसी कोई चीज नही है। वे कहते है कि वहा तो हिदुओके मदिर भी है और उन्हे मदिर बनानेकी इजाजत है। यदि ऐसा है तो हमारे लिए यह बडे फख्रकी बात है।

लाहौर, अमृतसर और गुडगावके उपद्रव हिदू, मुस्लिम और सिख तीनो कौमोके लिए शर्मकी बात है। कुछ भी हो, ये झगडे-फसाद बद होने चाहिए। सच्चे दिलसे सब लोगोको मिल जाना चाहिए। आजके अखबारोमें मैने पढा है कि लाहौरमे कल मध्य रात्रितक नवाब ममदोतकी कोठीपर तीनो कौमोके नेतागण बैठे और उन्होने तय किया कि ये झगडे बद होने चाहिए। यह एक खुशखबरी है। आखिर क्या लाहौर और अमृतसरकी कब्रपर पाकिस्तान बन सकता है ? और फिर ये कोई छोटे कस्बे भी नही हैं। इनको बनानेमे एक जमाना लगा है। अमृतसरमे तो सिखोका एक सुनहरी मदिर भी है।

आदमी अपना कर्त्तव्य भूलकर हैवान बन जाय, यह दु खकी ही बात ह। ये नेतागण कल फिर मिलनेवाले है। यदि वे सफल हो जाते है तो वहा मार्शल-ला लागू करनेकी जरूरत ही नही होगी। अतः ये नेतागण धन्यवादके पात्र हैं।

मुझपर आज धर्म-सकट आ पडा है। मेरा दिल कभी बिहार जानेके लिए करता है तो कभी नोआखाली। नोआखालीमे तो मैने एक तरहसे अपना काम शुरू भी कर दिया है और इससे वहाके हिदुओको काफी साहस मिला है। बिहार मुझे जाना ही चाहिए। मै यहा आठ दिनके लिए आया था, परतु हो गया एक महीना। मै कहा जाऊ और क्या करू, यह मुझे मालूम नही होता। एक ईश्वर-भक्तके लिए यह अच्छा भी है कि वह केवल आजकी चिता करे, कलकी नही। कल क्या होनेवाला है यह तो ईश्वर ही जान सकता है। कुछ लोग कहते है कि तू अहिसाकी इतनी लबी-लबी बात करता है तो फिर अमृतसर या गुडगाव क्यो नही जाता ? मै वहा जाकर क्या करू और किसको कहू कि तुम लडो मत। मेरे दिलमे सशय तो नही है। मै चाहता हू कि आप लोग जैसा मै हू वैसा मुझे

पहचान लें। मेरे दिलमें भय तो कभी हुआ ही नहीं। परन्तु इस वक्त इतना गोलमाल बन रहा है, मुस्लिम और हिन्दुओंकी दुनियामें भी कि कुछ पता नहीं चल पाता। गीताने लिखा है कि जो मेरा आजका धर्म है वही मेरे लिए श्रेयस्कर है। जगह-जगह उपद्रव हो रहे हैं और मुझे नहीं सूझता कि मैं कहाँ जाऊँ। ईश्वर मुझसे कहता नहीं कि तुमको यह करना है। मैं ईश्वरसे पूछता हूँ। जब हमारे दिलमें शक पैदा हो जाता है तो अच्छा तरीका यही है कि हम चुप रहकर बैठे रहें, बजाय इसके कि हम कोई पत्थर लेकर मारनेको और बिगाड़ें। परन्तु ममदोतके नवाबसाहबने तो कहा है कि पाकिस्तानमें अल्पसंख्यकोंके साथ अच्छा सलूक किया जायगा। वे फरेबसे ऐसी बातें कहते हों, यह मैं क्यों मान लूँ? जब मुस्लिम हिन्दुस्तान-में हिन्दी नागरिक बनकर रह सकते हैं तो पाकिस्तानमें इससे भिन्न कोई अलग चीज हो नहीं सकती।

: ५० :

२८ जून १९४७

भाइयो और बहनो

मैं डेढ़ घंटेतक वाइसराय साहबके पास रहा। मैं वहाँ कुछ करनेके लिए तो गया नहीं था। न तो वाइसरायको कुछ देने गया था और न कुछ उनसे लेने। उनका काम करनेका अपना एक ढंग है, चूँकि मैंने भी हिन्दुस्तानकी आजादीके लिए अनेक लड़ाइयाँ लड़ी हैं, कुछ सेवा की है इसलिए जैसे वे औरोंको बुलाते हैं उसी तरह उनको ऐसा लगा कि मुझको भी बुलाना चाहिए। वे सबकी राय तो ले लेते हैं और पीछे उनको जो करना होता है वह करते हैं। उनके दिलमें क्या भरा है यह तो ईश्वर ही जानता है।

मेरी डाकमें आनेवाले खतोंमें कुछ खत तो गालियोंसे ही भरे होते हैं। उन गालियोंका तो मेरे ऊपर कोई असर नहीं होता, क्योंकि

मै इन गालियोको ही स्तुति समझता हू । परतु वे लोग गालिया इसलिए नही देते कि मै उनको स्तुति समझता हू, बल्कि इसलिए कि मै जैसा उनकी निगाहमे होना चाहिए वैसा नही हू । एक वक्त वह था जब कि वे मेरी स्तुति भी करते थे। इसलिए गालिया देना या स्तुति करना तो दुनियाका एक खेल है । परतु आज मैने एक खतमेसे दो सवाल चुन लिए है जिनका मै यहा उत्तर देना चाहता हू । एक सवाल तो यह है कि 'तुम लोग बरसोसे ब्रिटिश फौजके आदी हो गए हो । जब ब्रिटिश फौज यहासे चली जायगी तब तुम्हारा क्या हाल होगा ?' मै दक्षिण अफ्रीकामे भी, और वहासे आनेके बाद इस देशमे भी बरसो पहले इसका उत्तर दे चुका हू । आज भी मै वही कहता हू कि ब्रिटिश फौजसे हमारा वास्ता क्या है। हमारी शक्ति उससे बढती नही, बल्कि गिरती है। मै तो अहिंसाका माननेवाला हू, परतु जो लोग हिंसाको मानते है उनके लिए भी यही बात है। यदि सब लोग सिपाही बन जाय और वे राइफल भी चलाने लगे तो फिर हमे ब्रिटिश फौजकी क्या जरूरत रह जाती है ? यदि हमे ब्रिटिश फौजके चले जाने-से सदमा पहुचता है तो फिर हम स्वराज्यके लायक कैसे हो सकते है ? यदि किसी आदमीका फेफडा खराब हो जाय तो उसके जिदा रहनेके लिए वह दूसरेके फेफडेसे काम नही चला सकता। स्वराज्य हिंदुस्तानका फेफडा है। अगर हमे जिदा रहना है तो दूसरेकी मदद-से वह नही चलेगा। हमे आज ऐसा लगता है कि जैसे कोई आदमी जन्मसे किसी अधेरी कोठरीमे बद रहा हो और एक दिन उसे अचानक बाहर निकालकर छोड़ दिया जाय। सूर्यका प्रकाश देखकर उसकी आखे कुछ समयके लिए काम नही करेगी। उसी तरहसे हम यहा अधेरेमे रहनेवाले पक्षी-जैसे बन गए है। एक दिन हमे ऐसा लगेगा कि जैसे हम किसी नई दुनियामे आ गए हो। एक दिनके लिए चाहे हमे ऐसा लगे, मगर सच्ची बात तो यही है । न हम ब्रिटिश फौजके जरिये यहा दबना चाहते है और न उससे हम अपनी रक्षा कराना चाहते है । हमे ब्रिटिश फौज तो क्या, कोई अन्य फौज भी नही चाहिए ।

परतु आज अमृतसर और लाहौर आदिके दगोकी वजहसे

हमारा अपने ऊपरसे विश्वास उठ गया है। हम इतने बदमाश हो गए है कि एक दूसरेसे डरने लगे है। हमारे अदर यह खयाल जोर पकडता जा रहा है कि यदि फौज बीचमे न रहे तो लोग एक दूसरेको खा जाए । मगर हकीकत यह है कि जबतक तीसरी ताकत हमे दबानेके लिए तैयार है, तबतक हम अपनी ताकतको बढा नही सकते । स्वराज्य बुजदिल आदमियोके लिए नही होता।

दूसरा प्रश्न यह है कि 'तू कैसा बेअकल और मूर्ख आदमी है कि तुझे अभीतक तेरी अहिसाकी बदबू नही आती ! सब कुछ देखते हुए भी अहिंसाके लिए तेरे दिलमे नफरत क्यो नही होती ? न तो अपनी अहिसासे तू हिदूको बचा सकता है और न मुसलमानको बचा सकता है । तुझे हम जिदा रहने देते है, सो तेरी अहिंसाकी खातिर नही, बल्कि इसलिए कि तू इस देशकी सेवा करते-करते इतना बूढा हो गया है, सो तुझपर हमे रहम आता है ।'

मुझको तो ऐसा लगता है कि मेरे चारो ओर जो खून बह रहा है और जो भीषण हिसा हो रही है उससे मुझे बदबू आ रही है। उस बदबूको देखते हुए मेरी अहिंसामेसे जो खुशबू आती है वह मुझे और अधिक मीठी लग रही है। जो आदमी हमेशा अमृत-ही-अमृत पीता हो उसको अमृत उतना मीठा नही लगता जितना कि जहरका प्याला पीनेके बाद अमृतकी दो बूद भी बहुत मीठी लगती है।

हमेशा मुझको मेरी अहिसाकी खुशबू नही आती थी, क्योकि तब मेरे चारो ओरका वातावरण अहिसामय था । लेकिन आज जब मुझको हिसाकी बदबू आती है तो उस बदबूको मिटानेवाली चीज मेरे पास अहिंसा ही है । खतमे यह भी लिखा है कि मै बार-बार जिन्नासे मिलने क्यो जाता हू । वे हमारे दुश्मन है जिनसे हमे दूर रहना चाहिए । बलूच भी हमारे दुश्मन है और उनसे काग्रेसको कोई सबध नही रखना चाहिए । काग्रेस ऐसा कैसे कर सकती है ? उसका फर्ज सबकी सेवा करना है । मै मानता हू कि जिन्ना साहबने हिंदुओ-को, और खास तौरसे सवर्ण हिंदुओको, अपना शस्त्र बताकर देशका बुरा किया है। जो आदमी बुरा काम करता है वह बुरा तो लगता है,

मगर ग्राखिर तो वह हमारा ही भाई है। हिदू उसके पीछे पागल थोडे ही हो जायगे। यह माना कि जिन्ना साहबने पाकिस्तान ले लिया, परतु इसका मतलब यह नही कि हम ग्रापसमे मिलना ही छोड दे। कितने ही ग्रौर झगडे है जिनको हम एक जगह बैठकर सुलझा सकते है। मै तो 'सर्व-धर्म एक समान'का माननेवाला हू। इसलिए ग्रहिसाके लिए मेरे दिलमे नफरत हो नही सकती ग्रौर न मुझको हिंसासे खुशबू ही ग्रानेवाली है। मै मर जाऊ तब भी नही ग्रानेवाली है। उस ग्रहिंसाकी खुशबू यदि मै ग्राप लोगोको भी दिला दू तो मेरा काम पूरा हो जाता है। ग्रहिंसासे बदबू कभी ग्रा ही नही सकती, क्योकि उसमे खुशबू ही भरी पड़ी है।

: ५१ :

२७ जून १९४७

भाइयो ग्रौर बहनो,

ग्राज मुझको एक दुखद खत मिला है। उस खतमे दिल्लीके एक भाई लिखते है कि पजाबसे ग्राजकल काफी निराश्रित लोग यहा ग्रा रहे है। वे वहासे इसलिए भागे है कि उनको वहा ग्रपने जान-मालका खतरा था, परतु ग्राखिर भागकर वे जायगे कहा ? यदि ग्राज यह ग्रफवाह उड जाए कि दिल्लीमे कल भूकप होगा तो क्या हम यहासे भाग जायगे ? जो बहादुर ग्रादमी होता है वह भागकर कहा जायगा ? मौत तो हमेशा उसके पीछे पडी है। कोई ग्रमरपट्टा लेकर तो यहा ग्राया नही। रहा जायदादका सवाल, सो वह तो ग्राज हम पैदा करते है ग्रौर कल गवा देते है। परतु वह भाई लिखते है कि ये जो शरणार्थी परेशान होकर पजाबसे निकलकर ग्राए है उनसे दिल्ली-के मकान-मालिक ग्रपने मकान किरायेपर देते समय पगडी[1] मागते है।

---

[1] नजराना। कही-कही इसे 'सलामी' भी कहते है।

दिल्लीमे जो मकान-मालिक है या जिनके पास जमीने है, मै तो उनसे कहूगा कि उन्हे बाहरसे निराश्रित होकर आए हुए लोगोका अपने घरोमे स्वागत करना चाहिए। यदि यह नही कर सकते तो उनसे पगडी लेकर पैसा क्या पैदा करना! वे अपने मकानोका उतना ही किराया लेकर सतोष करे जितना कि शरणार्थी आरामसे दे सकते है। शरणार्थियोको शरण देना उनका परमधर्म है। यह सबका सामान्य कर्त्तव्य है, इसमे मुझे कोई सदेह नही है। माना कि कुछ मकान-मालिकोका निर्वाह मकानोके किरायेपर ही होता है, परन्तु वे उचित किराया लेनेसे ही अपने मकानोका उपयोग करे। पत्रमे लिखा है कि अतरिम सरकारको इस समस्यापर ध्यान देना चाहिए और जहांतक हो सके वह शरणार्थियोकी रिहाइशकी समस्याको सुगम बनानेका यत्न करे।

मुझसे रोज अखबारो और डाकमे आनेवाले खतोके जरिये अनेक सवाल पूछे जाते है। उन सबका उत्तर देना तो सम्भव नही; परन्तु कुछ सवालोका जवाब देना मुनासिब है। इसलिए आज मैने तीन सवाल चुन लिए है। पहला सवाल यह है कि जब दुनियामे लोग पैसेको ही परमेश्वर मान बैठे है तब हिदुस्तानको इस बारेमे क्या करना है? पैसा-बल, शरीर-बल या पशु-बल ये सब जडवादके द्योतक है, परतु इन सबसे बडा ईश्वरका बल है। जैसा कि एक भजनमे कहा गया है, जब सारे बल हार जाते है तब तेरे नामका बल ही हमारे पास रह जाता है। परतु आजके युगमे जब अमरीका, रूस और ब्रिटेन-जैसे देश ही पैसेको परमेश्वर मान बैठे है तब हमारी तो गिनती ही क्या है।

आज जडवादका ही बोलबाला है और लोग ऐसा समझने लगे है कि चैतन्यवाद या आत्मिक बल कुछ है ही नही, क्योकि हम न तो हाथोमे उसे छू सकते है और न आखोसे देख सकते है।

परतु मै अध्यात्मवादी हू और मेरे लिए नैतिक बलके सामने पशुबलकी कोई कीमत ही नही है। मै तो अब भी यही कहूगा कि पशुबल अस्थायी है और अध्यात्मबल या आत्मबल या चैतन्यवाद एक

शाश्वत बल है। वह हमेशा रहने वाला है, क्योकि वह सत्य है। जडवाद तो एक निकम्मी चीज है ।

दुर्भाग्यसे आज हिंदुस्तान भी इसमे फस गया और यह समझने लगा है कि जडवाद ही सब कुछ है। परतु मेरा तो यह अटल विश्वास है कि आखिरमे तो चैतन्यवाद या आत्मवादकी ही विजय होगी।

दूसरा सवाल यह है कि जब अग्रेज यहासे चले जायगे और डोमीनियन स्टेट्स भी तभीतक चलेगा जबतक कि विधान-परिषद् अपना विधान बनाकर तैयार नही कर लेती, तबतक इसके बाद आप यहा अग्रेजके दुश्मन बनकर रहेगे या दोस्त बनकर ?

इसका उत्तर यह है कि मेरी तो हमेशा यह आशा रही है कि अग्रेज हमारे साथ भले ही बने रहेगे । यदि कोई आदमी बुरा भी होता है तो उसकी बुराई उसके साथ चली जाती है, केवल भलाई ही पीछे रहती है।

परतु आज हिंदुस्तान प्रसव-वेदनामेसे गुजर रहा है। यदि इस वेदनामे अग्रेज पास हो जाते है, अर्थात् वाइसराय और उनके अग्रेज सलाहकार वही काम करते है जिससे सारे देशका भला हो तो फिर पीछे वे हमारे दुश्मन कैसे रहेगे ?

डोमीनियन स्टेट्स भी तो हमने उनसे मित्र बनकर ही लिया है। उसे लेनेके बाद हम एक बडे कबीलेके हिस्सेदार बन जाते है। इस कबीलेसे अलग होनेके बाद भी हम उनके साथ दोस्ताना तरीकेसे ही रहेगे । इसीमे हमारी और उनकी भलाई है । हमारी अतरिम सर-कारके वाइस प्रेसीडेट जवाहरलालजीने तो पहले ही कह दिया है कि हिंदुस्तानकी आजादी किसीको खटकनेवाली नही होगी। आजाद भारत सब देशोके साथ मित्रताके सबध बनायगा ।

तीसरा प्रश्न है कि इडियन रिपब्लिकका प्रेसीडेट कौन होगा ? क्या आप किसी बडे अग्रेजको इस पदपर रखेगे ? यदि किसी अग्रेज-को नही तो फिर पडित जवाहरलाल नेहरू बने, क्योकि वे बहुत पढे-लिखे है, अग्रेजी और फ्रेंच बोल सकते है और विदेशोका भी उनको अच्छा अनुभव है।

इसके उत्तरमे मैं कहना चाहता हू कि भारतीय प्रजातत्रकी प्रेसीडेट एक भगी लडकी वनेगी, यदि कोई पाक और वहादुर लडकी मुझे मिल गई। प्रेसीडेट वहुत पढा-लिखा ही हो और उसे कई भाषाओंका ज्ञान हो, यह कोई जरूरी नही है। किसी वडे विद्वान ब्राह्मण या किसी क्षत्रिय-को प्रेसीडेट वनाकर हम दुनियाको अपना घमड दिखाना नही चाहते।

एक हरिजन लडकीको उस पदपर विठाकर हम अपना आत्मिक वल दिखाना चाहते है। हमे ससारको यह वताना है कि यहा न कोई उच्च है, न नीच है। परतु वह लडकी दिलकी और शरीरकी साफ होनी चाहिए। उसमे किसी प्रकारका मैल न हो। यदि खडी हो तो सीता-जैसी पवित्र हो और उसकी आखोमे तेज वरसता हो। सीताजी-मे इतना तेज था कि उन्हे रावण छू नही सकता था। यह तो एक ऐतिहासिक कथा है, परतु इसका अर्थ यह है कि जिसमे इतनी पवित्रता हो उसे कोई छूनेका साहस नही कर सकता।

ऐसी लडकी यदि मुझे मिल गई तो वह हमारी पहली प्रेसीडेट वननेवाली है। हम सव उसको सलामी देगे और इस प्रकार एक नई वात दाखिल करके दुनियाके सामने एक मिसाल रखेगे।

आखिर कोई हिंदुस्तानकी वागडोर तो उसे सभालनी है नही। उसका एक सचिव-मडल रहेगा और वह जैसी सलाह देता जायगा उसीके अनुसार वह काम करेगी। उसे केवल अपने दस्तखत ही करने होगे। यह कितनी वडी नैतिक वात है जो मैने आज आपको वता दी। हिंदु-स्तानमे रहनेवाले सव लोग, चाहे वे सवर्ण हिंदू हो या मुसलमान, या कोई अन्य कौम, एक आवाजसे यही कहे कि जिस किसीको प्रेसीडेट वनाया जायगा हम सव उसको सलामी देगे। यही सच्चा नैतिक वल है और वाकी सव मिथ्या है। यदि मेरी कल्पनाकी लडकी हमारी प्रेसीडेट वनी तो मैं भी खादिम वनकर उसका काम करूगा और सर-कारसे अपने खाने तकके लिए भी पैसा नही मागूगा। जवाहरलालजी, सरदार पटेल और राजेंद्रवावू आदिको भी मैं उसके सचिव-मडलमे भेजकर उसके नौकर वना दूगा।

: ५२ :

२८ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आज जो मै आपको सुनाना चाहता हू वह एक निराली और अनोखी बात है। आशा है, आप सब ध्यानसे सुनेगे और उसे हजम भी कर लेग। एक आदमी यदि अच्छा काम करता है तो वह उस भले काममे सारे जगत-को हिस्सेदार बना लेता है। जो आदमी बुरा काम करता है, उसमे सारा जगत हिस्सेदार नही बनता, परतु जगतको उससे दु ख तो पहुचेगा ही। आज हमारी इस विधान-परिषद्मे यही बात तो चल रही है कि एक शहरीके सच्चे हक क्या-क्या है? अर्थात् यह कि शहरीके मौलिक हक क्या होने चाहिए। हकीकत तो ऐसी है कि उन मौलिक हकोके बदलेमें हम यह कहे कि शहरीके फर्ज क्या है। मौलिक हक वही तो हैं जिनको अमलमे लानेसे उनका भी भला हो और उनके पीछे सारे जगतका। आज हर आदमी यही सोचता है कि उसके हक क्या है? परतु यदि आदमी बचपनसे ही धर्म-पालन करना सीख जाए और अपने धर्म-ग्रथोका अध्ययन करे तो उसको अपना हक भी साथ-साथ मिलता चला जाता है। मुझे तो अपनी माताकी गोदमे ही अपना धर्म सिखाया गया था। मेरी माता तो जगली और बिना पढी-लिखी थी। अपने दस्त-खत भी नही कर सकती थी। छोटा-सा नाम था और वह भी लिखना नही सीखा था, हमको तो वह पढनेके लिए स्कूल भेज देती थी और खुद पढी नही थी। उन दिनो शिक्षक रखकर कोई पढता नही था और यह भी काठियावाड-जैसे जगली प्रदेशमे। यह मै ७० साल पहलेकी बात करता हू। पिताजी एक दीवान तो थे मगर उस जमानेमें दीवान कोई बहुत अग्रेजी पढा-लिखा थोडे ही होता था। वे तो एक अगरखा पहनते थे और पावोमे सादी जूतिया होती थी। पतलूनका तो नाम भी नही जानते थे। परतु इस हालतमे भी मेरी मा मुझे यह सिखाती थी कि बेटा, तुझे राम-नाम लेना चाहिए। वह मेरा धर्म जानती

थी । मतलब यह कि बचपनसे ही यह जानना चाहिए कि हमारा धर्म क्या है और उस धर्मका पालन करनेसे हमारा हक भी अपने आप हो जाता है। माता जो दूध पिलाती थी वह दूध पीनेसे मुझे जीनेका हक मिलता था। यदि मै दूध पीनेका धर्म-पालन न करू तो मै मर जाऊगा और फिर मेरा जीनेका हक भी नही रहता। बच्चेको दूध पीनेका कर्त्तव्य पालन करनेसे ही जीनेका हक मिलता है । यह एक बडी खूबीकी बात है। निचोड यह है कि कर्त्तव्य-पालनमे से ही हक पैदा होता है । यदि हम अपना धर्म-पालन करे तो हक उसके पीछे दौडता है । वह हक-से छूट नही सकता । असलमे वही हक सच्चा भी है। यदि उसकी हम रक्षा करे तो उसमे सारे ससारको अपने साथ ले सकते है। सत्या-ग्रह भी तो ऐसे ही पैदा हुआ था, क्योकि मै यही सोचता रहता था कि मेरा धर्म क्या है ?

परतु आज तो एक अनोखी बात दिखाई दे रही है । जो राजा है वह ऐसा मानकर बैठ गया है कि उसे ईश्वरने रैयतपर राज्य करनेके लिए ही राजा बनाया है । उसको किसीको फासी देना, किसीको दड देना और किसीको जुर्माना करनेका हक है। वह हर चीजका प्रजासे ही पालन कराना चाहता है । वह कहता है कि यह हक उसको ईश्वरसे मिला है । कारखानोके मजदूर और मालिक अपने-अपने हक माग रहे है। जमीदार अपने हक माग रहे है तो किसान अपने। यहा कोई ऐसे दो वर्ग तो है नही कि जिसमे एक वर्गको केवल हक हो और दूसरा केवल कर्त्तव्य-पालन ही करता रहे। जो राजा अपना कर्त्तव्य-पालन नही करता और प्रजा अपना धर्म-पालन करती रहे तो पीछे वह प्रजा राजाकी जगह ले लेती है ।

यदि राजा अपना धर्म-पालन करे और रैयतका ट्रस्टी बनकर रहे, तब तो वह रह सकेगा और यदि हाकिम बनकर रहेगा तो वह इस युगमे रह नही सकता। आजतक हम अधेरेमे पडे थे। राजा अपना धर्म भूल गया और प्रजा अपना धर्म भूल गई।

राजा लोग अपना धर्म छोडकर केवल यही कहने लगे कि मै चद्र-वशी हू या कि सूर्यवशी हू । मगर हकीकतमे राजा प्रजाका सबसे आला

दर्जेका सेवक होता है। सेवकका धर्म है सब कुछ स्वामीको भेट कर देना और फिर जो कुछ बच जाए उसे खाकर निर्वाह कर लेना। रैयत भी अपना धर्म-पालन करना सीखे । प्रजा लाखोकी तादादमे पडी है; वह चाहे तो राजाको मार भी सकती है, परतु इससे उसीको नुकसान पहुचेगा। यदि हम अपनी गली साफ करते है, रोशनी करते है या और कुछ करते है तो उसे अपना कर्त्तव्य मानकर करे। हममेसे हरएक-को भगी बनकर सेवा करनी चाहिए। जो मनुष्य पहले भगी नही बनता वह जिदा रह नही सकता है। और न रहनेका उसे हक है । हम सब किसी-न-किसी रूपमे भगी तो है ही। मानते नही तो क्या, हकीकत-मे तो है। यदि रैयत महसूल देती है तो वह इसलिए नही कि राजाका पेट भरना है, बल्कि इसलिए कि उसके बिना राजतत्र चल नही सकता। जो मनुष्य अपने धर्मका पालन करता हो उसके पास हक अपने आप आ जाते है। मजदूरो और मालिकोपर भी यही चीज लागू होती है। यहा हमारे पास ही हरिजन मजदूरोकी एक बस्ती पडी है। वह जिस गदगी-मे विद्यमान है, उसे देखकर मेरा दिल रोता है। हम कितने नालायक है। मै इतनी अच्छी और सुदर जगहमे रहता हू और वे बेचारे ऐसी गदगीमे पडे है। मालिकोके दिलमे ऐसा होना चाहिए कि मजदूर लोगोको खाना देकर पीछे आप खाए। मान लिया कि मालिक अपने धर्मका पालन नही करते तो फिर क्या मजदूर उस मालिकका गला काट देगे ? वे काट तो सकते है, परतु इससे तो सारे-का-सारा ढाचा बिगड जायगा और पीछे फिर वह जायगा कहा ? मालिकको धमकी भी क्या देनी ? इस तरहसे जो मजदूर है वे स्वत मालिक बन जाते है। मजदूरोको यदि अपनी स्थितिको दुरुस्त करना है तो उनको यह भूल जाना है कि उनके जो हक है वे धर्म-पालनमेसे पैदा नही होते। मजदूर तो आज करोडोकी सख्यामे पडे है।

यदि मजदूर अपना कर्त्तव्य छोड दे तो सच्ची अराजकता और अधा-धुधी मच जाती है। यही नजारा आज हम सारे हिंदुस्तानमे या सारे ससारमे देख रहे है।

मनुष्य जन्मसे ही कर्जदार पैदा होता है और शास्त्र भी यही

सिखाता है कि इस कर्जको अदा करनेके लिए ही हम जन्म लेते है, और जन्मसे ही परवश बन जाते है। माता यदि खाना दे तो खा लेते है। इन्सान दूसरोपर निर्भर रहकर ही अपने आपको इन्सान बनाता है।

: ५३ :

२६ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

कल हमने फर्ज यानी धर्म-पालनके बारेमे बात शुरू की थी। मै जो आपको कहना चाहता था वह सब-का-सब कल नही कह पाया था। आज मै उसे कह दूगा। हमेशा जब कोई आदमी कही भी जाता है, उसका वहा कुछ-न-कुछ फर्ज हो जाता है। लेकिन जो आदमी अपना फर्ज भूलकर सिर्फ हककी ही हिफाजत करना चाहता है, वह इस बातको नही जानता कि जो हक अपने कर्त्तव्य-पालनसे पैदा नही होता उसकी कोई हिफाजत कर नही सकता। हिंदू-मुसलमानोके बारेमे भी यही चीज लागू होती है। कही भी, हिदू रहे या मुसलमान रहे, या दोनो रहे, वे अगर अपना-अपना धर्म-पालन करे तो उसमेसे हक अपने आप पैदा हो जाता है। फिर उसके मागनेकी जरूरत ही नही होती। जैसे बच्चा माका दूध पीता है। दूध पीना उसका धर्म है, क्योकि उससे उसको जिदा रहनेका हक मिलता है। यह एक ऐसा सुनहरी कानून है कि उसमे कोई तब्दीली नही कर सकता। यदि हिंदू मुसलमानको अपना सहोदर समझकर उसके साथ अच्छा सलूक करता है तो मुसलमान भी बदलेमे दोस्तीका ही जवाब देगा। आप एक देहातकी मिसाल ले लीजिए। अगर एक गावमे ५०० हिदू और ५ मुसलमान रहते है तो इन ५०० हिंदुओका उन ५ मुसलमानोके प्रति फर्ज हो जाता है और पीछे हक भी। वे अपनी मगरूरीमे यह न मान ले कि हम तो इनको कुचल डालेग और

मार देगे। किसीको मारनेका हक तो पैदा ही नही होता। उसमे कोई बहादुरी नही, बुजदिली है, निर्लज्जपना और बेशर्मी है। उन ५०० हिंदुओका तो यह धर्म हो गया कि जो मुसलमान वहा पडे है, वे चाहे दाढी रखते हो या पश्चिममे नमाज पढते हो, उनके सुख-दु खमे वे शामिल हो। उनका फर्ज है कि वे यह देखे कि उन्हे खाना मिलता है या नही, पानी पीनेको है या नही और उनकी अन्य जरूरत भी पूरी होती है या नही। जब ये ५०० हिंदू अपना धर्म-पालन करते है तब उन्हे यह हक मिल जाता है कि वे ५ मुसलमान भी अपना फर्ज पूरा करे। अगर किसी कारणसे गावमे आग लग जाती है और वे ५ मुसलमान यह कहे कि गाव जलने दो और उलटा गावको जलानेमे ही मदद करे तो फिर वे अपना फर्ज अदा नही करते। गावमे आग लगना तो एक आम बात है। किसीने बीडी फूककर दियासलाई फेक दी और वह किसी घासमे या रुईमे जा गिरी तो आग जलने लगी। हवाका जोर, और गावमे घास-फूसके झोपडे ही होते है और सारा गाव जल जाता है। मगर हकीकतमे होगा ऐसा कि वे पाच मुसलमान भी यही कहेगे कि हम भी उसमे पानी ले जाय और अगारोको बुझानेका यत्न करे। इस तरह यदि हर एक अपने-अपने धर्मका पालन करे तो फिर उनका हक भी आप-ही-आप मिल जाता है। परतु आज हम लोग अपने फर्जका पालन नही करते। काम तो फिर भी चलता ही है, क्योकि ईश्वरने यह दुनिया ऐसी पचरगी बनाई है जिसका काम कभी नही रुकता। मगर फर्ज पालन करनेसे उसमे एक खूबसूरती पैदा हो जाती है।

यह तो मैने आपको एक नमूना बताया। मान लो कि ये ५ मुसलमान बदमाशी करना ही चाहते है। आप उनको खाना दे, पानी भी दे और अच्छे-से-अच्छे सलूक करे और फिर भी वे गालिया ही दे, तब उन ५०० हिदुओका क्या फर्ज हो जाता है? उनका यह धर्म नही कि वे उनको काट डाले। यह तो जानवरोकी बात हुई, मनुष्यका यह धर्म नही। यदि मेरा कोई सगा भाई है और वह दीवाना बन गया है तो क्या मै उसपर मार-पीट शुरू कर दूगा? मै ऐसा नही करूगा। उसको एक कमरेमे अलग रख दूगा और दूसरोको भी मार-पीट नही करने

दूगा। यह एक इन्सानियतका सलूक हुआ। इसी तरह यदि वे मुसलमान दोस्ताना तौरसे चलना ही नही चाहते और कहते जाय कि हम तो अलग नेशन है, हम पाच है तो क्या हुआ, हम वाहरसे ५ करोड मुसलमान वुला सकते है तो वे हिंदू उन वाहरके मुसलमानोकी धमकी-मे डरे नही। वे उनमे साफ कह दे कि हम तो उनसे दोस्ताना तौरसे चलनेको कहते है मगर वे चलते ही नही। अगर आप उन्हे मदद देना चाहते है तो दे, मगर हम डरनेवाले नही है और हम कभी भी डरके आगे सिर नही झुकायगे। अतमे वाहरकी दुनिया भी समझ जायगी कि वे ५०० हिंदू शरीफ आदमी है और अपना फर्ज पालन करनेको तैयार है। यही चीज उस गावपर भी लागू होती है जहा ५०० मुसल-मान और ५ हिंदू रहते हो जैसा कि पाकिस्तानमे बहुत जगह रहते है। अभी झेलमके कुछ आदमी मुझसे मिले। उन्होने कहा कि हमारा वहा क्या हाल होगा? मैने उनसे कहा कि अगर वहा मुसलमान अच्छे है, अपने आपपर कावू रखनेवाले है और अपना धर्म-पालन कर रहे है तो फिर आपको डरनेकी वात क्या है? और यदि वे ५ हिंदू पाजी है तो फिर वे सारे हिंदुस्तानके हिदू वहा वुलावे तो भी क्या वनता है? जव सव अपना-अपना धर्म-पालन करे तो पीछे उनके पास हक अपने आप आ जायगा। ईश्वरकी ऐसी खूवी है। यह मै वहुत तजुर्बे-की वात कहता हू और वह तजुर्वा भी एक वर्षका नही, वल्कि साठ वर्षोका।

आजकल हिंदुस्तानके कुछ राजा लोग वहुत विगड रहे है, वे समझते है कि वे 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' राजा ही है। वे कहते है कि हमे रैयतने थोडे ही राजा वनाया है, या तो अग्रेजने वनाया है या सूरज और चाद-ने। परन्तु यह तो धर्म-पालनकी वात नही, वल्कि घमड और अहकार-की वात हुई। अवतक राजाओपर अग्रेजोका साया था। करोडो रुपया उन्होने अमरीका और इग्लैडमे खर्च किया। खूव खेल खेले। मगर अव किस मुहसे वे खेल खेलेगे। अव तो रैयत चाहेगी तभी वे राजा रह सकेगे। अव तो वे रैयतके सेवक वनकर ही रह सकते है। मगर खाना तो सेवकको भी चाहिए। अवतक तो वे लूटकर खाते थे।

महलोमे भी उनको रहने दिया जाय, क्योंकि वे कह सकते है कि हम जन्मसे ही महलोमे रहना सीखे है, झोपडोमे कभी रहे ही नही। तो महलोमे उनको रहने देनेसे रैयतका क्या बिगडता है ?

परतु राजा यदि रैयतके पास आता है, उसका सुख-दु ख सुनता और अपनेको रैयतका सेवक कहता है, तो फिर उस राजाको उस रैयत-पर राज्य करनेका हक मिल जाता है। वह सेवककी हैसियतसे राज-काज करे। उसे रैयतसे कर लेनेका भी हक मिल जाता है, क्योंकि करके बिना रियासतका काम कैसे चल सकता है ? रैयत भी स्वेच्छासे कर देती है और बडी खूबसूरतीसे सारा काम चलता है।

यदि राजा लोग कहे कि रैयत कौन होती है, हम उसे तोपसे उडा देगे, तो वह राजाका धर्म-पालन नही हुआ। तब रैयत क्या करे ? ऐसी स्थितिमे रैयतका धर्म क्या है ?

तब रैयतका धर्म हो जाता है राजाका सामना करनेका और उसका राज-पाट बद करनेका। मगर रैयतके बिगडनेका मतलब यह नही कि वह महलोमे आग लगा दे और सब कुछ छिन्न-भिन्न कर दे। वह तो अधर्म हो जाता है। राजा यदि उलटे रास्तेपर है तो रैयतका यह धर्म नही कि उसे जमीनपर घसीटे। रैयत बाअदब, सत्यसे और अमनसे सामना करे। सत्याग्रह इसीमेसे पैदा हुआ था।

रैयत अपने धर्मको छोडकर अकेले हकके पीछे न भागे। जो केवल हकके पीछे दौडता है उसको वह मिलता नही है। उसकी दशा उस कुत्ते-जैसी होती है जो पानीमे अपनी ही परछाईं देखकर उसको काट खानेके लिए झपटता है। वह उसका काल्पनिक हक है। धर्म-पालनके बाद हक तो अपने-आप उसकी गोदीमे आ पडता है। यह एक बडी खूबसूरत और अनोखी बात मैंने आज आपको बताई है।

: ५४ :

सोमवार ३० जून १९४७

(लिखित संदेश)

लोगोंकी आखें आज सरहदी सूबेमें होनेवाले जन-मतकी तरफ लगी हुई हैं, क्योंकि सरहदी सूबा कानूनन कांग्रेसका रहा है और आज भी है। बादशाह खान और उनके साथियोंसे कहा जाता है कि पाकिस्तान या हिंदुस्तान, दोनोंमें किसी एकको चुनो। हिंदुस्तानका आज गलत अर्थ हो गया है—हिंदुस्तानका हिंदू और पाकिस्तानका मुसलमान। बादशाह खान इस कठिनाईमेंसे कैसे निकले? कांग्रेसने वचन दिया है कि डा० खान साहबकी सीधी देख-रेखके नीचे सरहदी सूबेमें जनमत लिया जायगा। सो वह तो नियत तारीखपर ही होगा। खुदाई खिदमतगार मत नहीं देंगे। सो मुस्लिम लीगको सीधी जीत मिलेगी और खुदाई खिदमतगारोंको अपनी आत्माकी आवाजके खिलाफ काम भी नहीं करना पड़ेगा, बशर्ते कि उनकी आत्माकी आवाज है, ऐसा माना जाय। ऐसा करनेमें क्या जन-मतकी शर्तोंका भंग होता है? वही खुदाई खिदमतगार जिन्होंने बहादुरीसे ब्रिटिश सरकारका सामना किया, अब हारसे डरनेवाले नहीं हैं। हार होगी, यह पक्की तरह जानते हुए भी अलग-अलग दल रोज चुनावमें हिस्सा लेते हैं। जब एक दल चुनावमें हिस्सा नहीं लेता तब भी तो हार निश्चित ही होती है।

पठानिस्तानकी नई मांग पेश करनेके लिए बादशाह खानको ताना दिया जाता है। कांग्रेसकी वजारत बननेसे पहले भी, जहांतक मैं जानता हूं बादशाह खानके सिरपर यही धुन सवार थी कि अपने घरमें पठानोंको पूरी आजादी हो। बादशाह खान एक अलग स्टेट बनाना नहीं चाहते। अगर वह अपने घरमें अपना विधान बना सके तो वह खुशीसे दोमेंसे एक संघको कबूल कर लेंगे। मुझे तो समझमें नहीं आता कि पठानिस्तानकी इस मांगके सामने किसीको क्या उज्र हो सकता है। हां, पठानोंको पाठ सिखाना हो और उन्हें किसी-न-किसी तरह झुकाना

ही हो तो बात अलग है । बादशाह खानपर एक बडा इल्जाम यह लगाया जा रहा है कि वह अफगानिस्तानके हाथोमे खेल रहे है। मै समझता हू कि वह कभी किसी तरहकी धोखावाजी कर ही नही सकते । वह सरहदी सूबेको अफगानिस्तानमे जज्ब होने नही देगे।

उनके दोस्त होनेके नाते मै मानता हू कि उनमे एक ही कमी है। वे बहुत ही शक्की है, खासकर अग्रेजोके काम और नीयतपर वह हमेशा शुबहा करते है। मै सबसे कहूगा कि वे उनकी इस कमजोरीको, जो कि खास उन्हीमे नही है, नजरअदाज कर दे। यह जरूर है कि इतने बड़े नेताके लिए यह शोभा नही देता। अगर्चे मैने उसको एक कमजोरी कहा है और जो एक तरहसे ठीक ही है, मगर दूसरी प्रकारसे इसको एक खूबी मानना चाहिए। क्योकि वे चाहे भी तो अपने विचारोको छिपा नही सकते।

सरहदसे मै आपको रामेश्वरम्‌की ओर ले जाना चाहता हू, जहासे, कहा जाता है कि रामचन्द्रजीने शिलाओका तैरता हुआ पुल बनाया था, ताकि उनकी सेना समुद्र पार करके लका पहुच जाए, जिसे उन्होने जीता, लेकिन अपने पास नही रखा और उन्होने उसे रावणके भाई विभीषणको सौप दिया। यही मशहूर मदिर आज हरिजनोके लिए खोल दिया गया है। इस प्रकार दक्षिणमे कोचीनके मदिरोको छोडकर तमाम मशहूर मदिर हरिजनोके लिए खुल गए है। राजाजीने खास-खास मदिरोकी जो सूची मुझे दी है, वह इस प्रकार है मदुरा, तिन्नावेली, चिदम्बरम्, श्रीरगम्, पलनी, तिरुलिरेन, तिरुपति, काची और गुरवय्यूर। सूची इतनेपर ही खत्म नही हो जाती है। मद्रास असेम्बलीके हरिजन-स्पीकर अन्य हरिजनो और दूसरे पूजा करनेवालोको साथ लेकर इनमे-से अक्सर मदिरोमे घूमे है। शिक्षित हरिजन और अन्य लोग इस सुधार-के महत्त्वको शायद कबूल न करे, लेकिन हम इसका महत्त्व कम न करे, क्योकि वह सुधार वगैर खून-खराबीके हुआ है । हमे उम्मीद रखनी चाहिए कि कोचीन भी त्रावनकोर, तामिलनाड और ब्रिटिश केरलकी तरह अपने मदिरोको हरिजनोके लिए खुलवा देगा।

मदिर-प्रवेश-सुधार तबतक अपूर्ण रहेगा जबतक मदिर, जरूरी अदरूनी सुधारसे, वास्तविक रूपमे पवित्र न हो जाय।

: ५५ :

१ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोने आजका भजन[1] समझ लिया होगा। यह भजन मध्य-प्रातके तुकडोजी महाराजने बनाया है। इसमे खासी हिंदुस्तानी है। ऐसी हिदुस्तानी नही है जिसमे ठूस-ठूसकर अरबी और फारसी भरी जाती है। यह तो दिल्लीवालोकी-सी हिदुस्तानी है। इसमे खूबी भी है, और मिठास भी है। भजनमे कहा है कि ये तीन बाते जिसने पाईं राम उसको मिलता है। तीन बाते यह कि घर-बार चला गया, सब कुछ लुट गया, लेकिन वह हाय-हाय न करके रामका नाम लेता है। सगी-साथी उसे छोड देते है, उसका अपमान करते है तो भी वह ईश्वरको नही छोडता। रोग होता है, मामूली नही—बहुत भयानक, फिर भी वह रामको नही छोडता। जिसने ये तीन चीजे नही पाईं उसने रामको नही पाया। जिसने ये तीन नियामते पाई है उसके घरमे तो राम बैठा ही है। भजनकी ये तीन चीजे आज हमारे लिए बडी फायदेमद है। सो आज जो हम-पर गुजरती है उसमे हम हाय-हाय न करे।

एक भाई लिखते है कि तू रोज-रोज प्रार्थनामे कहता है कि हिदु-स्तानका जो टुकडा हो गया है उसे किसी तरहसे मिटा देना है। लोग जानते नही कि मैने ऐसा नही कहा है। जिस चीजको काग्रेस और लीगने मजूर कर लिया और भूगोलके दो टुकडे हो गए उसके पीछे सर क्या फोडना? मै ऐसा आदमी नही हू। दिलके टुकडे थोडे ही

---

[1] "किस्मतसे राम मिला जिसको
उसने ये तीन जगह पाई।"—तुकडोजी

हुए है। काग्रेसने जो मान लिया है उसे तो होने दो। उससे बिगडता क्या है? जमीनका टुकडा कर लिया तो उसमे क्या दिलके टुकडे हो गए? अगर हम एक दूसरेके साथ मिल-जुलकर काम नही करेगे तो हिंदुस्तानका काम कैसे चलेगा? मान लिया कि मुसलमान लोग मिल-जुलकर काम नही करना चाहते तो हम क्या करे? मै कहता हू कि जिदगी एक खेल है। खेलमे हमेशा दो पार्टिया चाहिए। अगर एक (पार्टी) मान ले कि टुकडा नही हुआ है तो दो टुकडे नही हो सकते। लेकिन इसका यह मतलब नही कि हम किसीकी खुशामद करे। हमे तो अपने धर्मका पालन करना चाहिए। जैसा मैने परसो कहा था उसी प्रकार फिर कहता हू कि धर्म सच्ची चीज है, हक अच्छी चीज नही। कोई आदमी अगर हमे तग करता है तो हमे खुशामद नही करनी चाहिए, बल्कि धर्म-पालन करना चाहिए।

मुझे एक सिख लडकेने लिखा है कि तू सिखोसे मुहब्बत तो करता है पर उनके बारेमे करता क्या है? हिंदू और मुसलमान दोनो-ने कुछ-न-कुछ पाया है, लेकिन सिखको क्या? उसके लिए तू क्या कहता है? उसके लिए कुछ हमदर्दी तो बताओ। मुझे उनसे यही कहना है कि पजाबमे सिखोका टुकडा हुआ उसके लिए मै क्या कहू? मै कोई हाकिम तो हू नही। मै क्या करना? मेरे नजदीक तो सिख-धर्म और हिंदू-धर्ममे कोई भेद नही। मै तो सब पढ चुका हू। सिखो-का ग्रथ साहब बड़ा आसान है। उसमे जो भरा है वही सब वैदिक-धर्ममे भी है। गुरु नानकने भी वही कहा है। लेकिन आज यह अलग माने जाने है। यह कौम बहुत छोटी है, लेकिन विख्यात है। इसकी तलवार मशहूर है। आज मेरे पास कनाडासे दो भाई आए थे। वे कहते थे कि कनाडामे काफी सिख पडे है और काफी काम करते है। अफ्रीकामे भी सिख लोग है। जहा-तहा सब जगह सिख दिखाई पडते है। सिख खेती करते है, इजीनियर है, रेल बनाते है, मोटर चलाते है। पर आज तो सिख वहुत ऐश-आराममे भी आ गए है।

मेरे पास मुस्लिम लीगका मथुरामे एक तार आया है कि यहा हिंदू लोग हमारे साथ बडी ज्यादती कर रहे है। मै नही जानता

कि यह बात ठीक है या गलत। पर यह तरीका अच्छा नही। अगर हम सख्या-बल बताए तो यह ठीक नही। सख्या-बलसे मगरूरी आती है और मगरूरीसे हमारा नाश हो जाता है।

आप जानना चाहेगे कि आज वाइसरायसे मिलने गया तो वहा क्या हुआ? मै तो नेहरूजी और सरदारके साथ चला गया था। अखबारवालोसे मै कहूगा कि जबतक वहासे कोई अधिकृत वक्तव्य न निकले वे अपनी गप्प न चलाए। आजकी हालतमे अखबारवालोको चाहिए कि वह ऐसी कोई बात न करे जिससे देशको नुकसान हो।

एक पत्रमे लिखा है कि अग्रेज बदमाश है और तू भी बदमाश है। लेकिन अग्रेज फरेबी और बदमाश है ऐसा माननेको मै तैयार नही। जब वह बदमाश साबित हो जायगे तो वे खुद ही मर जायगे। इसी तरह अगर मै बदमाश हू तो मै भी मर जाऊगा। यह ऐसा खूबसूरत कायदा ईश्वरने बना रखा है। दुनियाको चलने दे। हम कोई फरेब न करे। अपनेमे कोई गलती न रहे। यही धर्मका मार्ग है।

: ५६ :

२ जुलाई १९४७

एक भाई मुझे लिखते है कि 'जगतमे बहुत वस्तुए होती है। कुछ ऐसी होती है जिन्हे लोग पसद करते है और कुछ ऐसी जिन्हे पसद नही करते। जिसे लोग कबूल नही करते उसको करना, जिसे लोग पसद नही करते उस कामको हाथमे लेना यह तो मूर्खताकी इन्तिहा है। तू तो लोगोको सच्ची राह बताता था। अब तुझे बुढापेमे भी ऐसा ही करना चाहिए कि लोग जिस रास्तेमे जाय उसमे तुझे समर्थन देना चाहिए।'

लेकिन मुझे यह चीज चुभती है। जो चीज लोकप्रिय बन गई है उसे वजन (समर्थन) क्या देना? जो कोई नही करते ऐसा काम करो। अगर तू अकेला है तो कुछ गवाता नही है। कानून तो यह है

कि अकेला है तो भी तुझे काम करना है। फिर लोग चाहे राजी हो या नाराज। किसी शख्सने ऐसा माना कि छोटे-छोटे रेतके कणोसे रस्सी बनाकर बिस्तर बाधूगा, तो यह मूर्खता है। रस्सी तो मूजसे ही बनती है। जो काम करने लायक होता है वह तो करना ही है।

लोग कहते है कि तू तो बहुत दिनोसे हिंदी-साहित्य-सम्मेलनमे था। जब वहा था तो हिंदीको बहुत बडी बताता था। दक्षिणमे पहले हिदी चलाता था। वहा तो लोग तमिलको मानते थे। वहा तूने हिंदी चला दी। तूने इतना हिदीका काम किया यह बहुत था, फिर हिदुस्तानी क्यो?

इसका जवाब यह है कि मेरी हिदुस्तानी हिदीमेसे आई है। मै इदौरके हिदी-साहित्य-सम्मेलनमे गया। मारवाडी-सम्मेलनमे भी जमनालालजीके प्रेमसे चला गया। वहा जानेकी इच्छा नही थी, लेकिन प्रेमसे जाना ही पडता है। प्रेम मुझको घसीट ले गया। वही मैने कह दिया था कि मेरी हिंदी तो अजीब प्रकारकी है। जिसे हिदू भी बोलते है, मुसलमान भी बोलते है। उसे उर्दूमे लिखो, चाहे देव-नागरीमे लिखो—ऐसी मेरी हिदी है। मेरी हिदी वह नही है जो साक्षर[1] बोलते है। मै तो टूटी-फूटी हिदी बोलता हू। मगर आप समझ लेते है। मैने तुलसीदास पढ लिया है, पर मै हिदीमे साक्षर नही हुआ हू। उर्दूमे भी साक्षर नही बना हू, क्योकि मेरे पास उतना वक्त नही है। मैने ऐसी हिदी चलाई, पर वह नही चली तो मै हिदी-साहित्य-सम्मेलनसे निकल आया।

सस्कृतमयी बोली तो हिंदी हो सकती है और उर्दू भी आज ऐसी हो गई है जिसे मौलाना साहब बोल सकते है या सप्रू साहब। इसीलिए मैने कहा कि न मुझे हिदी चाहिए, न उर्दू। मुझे गगा-जमुनाका सगम चाहिए। पर लोग कहते है कि तू तो मूर्ख है। जहा अन्जुमन तरक्की-ए-उर्दू है, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन है जो हिदीका बडा काम करता है, वहा तेरी बात नही चलेगी। और जब पाकिस्तान बन गया है तो भी तू हिदुस्तानीकी बात करता है?

---

[1] शिक्षित।

कि पानीमे मछली रहे और प्यासी रहे यह बडी हँसीकी बात है। हम ईश्वरकी दुनियामे पडे है, पर उसे जानते नही। ऐसी भरमना पैदा हो जाय तो यह हँसीकी ही बात है। ईश्वर तो हमारे पास पडा है। जैसे नाखून अगुलीसे अलग नही है ऐसे ही ईश्वर भी अलग नही है। नाखून अलग होता है तब वेदना होती है, ऐसे ही ईश्वर अगर दूर रहेगा तो वेदना होगी ही।

आज हिंदुस्तानमे भी वेदना फैल रही है। लेकिन यह सब शहरोमे है। ७ लाख देहात तो शहरोके इर्द-गिर्द नही रहते। हिंदुस्तान तो १६०० मील लबा और १५०० मील चौडा है। हिंदुस्तानके दो टुकडे हो गए तो नक्शा थोडे ही बदल गया। वह तो जैसा आज है वैसा ही रहेगा। अगर हम सब यह बात समझ ले और भूल न जाए तो सब झगडा निपट जाता है।

(एक ब्राह्मणने गाधीजीको पत्र लिखते हुए पूछा था कि महाशय! हमारा पढने-लिखनेका पहला हक है मगर कालिजोमे हमारे लडकोको स्थान नही मिलता, आप इसपर कुछ कहिए। गाधीजीने इसका उत्तर देते हुए कहा) एक भाईने मुझे लिखा है कि ब्राह्मण तो ४० करोडमे एक मुट्ठीभर है। समुद्रमे बिंदुवत् है। इसलिए अल्पमत है।

मै अगर अकेला हू तो मै भी अल्पमतमे हू। लेकिन बिंदु अपने आपमे अल्पमतमे नही। जब वह पानीसे अलग हो जाता है तभी अल्पमतमे होता है और सूख जाता है। अगर वह साथ रहता है तो वह बिंदु नही, समुद्र ही है। हिंदुओके समुद्रमे ब्राह्मण अल्पमतमे कहा है? जितना बडप्पन सबमे है वह उसमे भी है।

एक जमाना था कि ब्राह्मणके लडके ही पढने जाते थे। वह जमानेसे पढते आते थे, इसलिए जब नई चीज आई तो वह भी पढने लगे। लेकिन अब तो ब्राह्मणेतर भी शिक्षा लेते है। तब ब्राह्मण या दूसरेका दिल यो क्यो कहे कि मेरे लडकेकी भरती क्यो नही होती? मै तो दो-तीन दिनसे आपको हककी बात समझा रहा हू। हक-जैसी कोई चीज नही है। अगर ब्राह्मण हकसे पढने आता है तो मै पूछूगा कि यह

कहांसे पैदा हुआ? जन्मसे ब्राह्मणका हक है या किसी औरका हक है, मैं नहीं मानता। धर्मके साथ कर्म करनेसे हक पैदा होता है। पापीको भी पाप-कर्मका फल भोगनेका हक है ऐसा आप मानते हो, लेकिन मैं तो कहूंगा कि जिसने पुण्य-कर्म किया है उसे पुण्य-फलका हक हो जाता है।

ब्राह्मणका हक क्या है यह कोई मुझसे पूछे तो मैं कहूंगा कि वह ब्रह्मको जाने, यही उसका हक है। ब्राह्मणके तो दो ही धर्म है—एक तो ब्रह्मविद्याको जाने और दूसरे उसे जानकर दूसरोंको सिखाए। जो ब्राह्मण इस तरहसे धर्मका पालन करता है तो उसे जिंदा रहने-का हक हो जाता है।

पहले जब ब्राह्मण ऐसा होता था तो लोग उन्हें जिंदा रखने-के लिए भीख आदि देते थे, और वे ब्राह्मण भी ऐसे थे कि जितना उन्हें चाहिए उतना ही लेते थे, बाकी वापस कर देते थे। ब्राह्मणका हक तो ब्रह्मविद्या सिखाना है। जब ऐसा हक है तो रोना क्या कि कालेजमें नहीं जा सकते। सब कालेजमें कहां जा सकते हैं? ७ लाख देहातोंमें रहनेवाले लड़के-लड़की कालेजमें कहां जा पाते हैं। वह तो नई तालीमसे ही मुमकिन है। पर आज मैं उसकी बात नहीं करता।

इसलिए मैं कहता हूं कि कोई अपनेको अल्पसंख्यक न माने। सब एक हैं। हमारे धर्ममें जो सबसे नीचा है उसे सबसे ऊंचा बताया गया है। इसलिए हम सब भंगी बन जाय, मेहतर बन जाय, तभी हम सबकी खैर है। ब्राह्मणके लिए भी खैर है, फिर उसके लिए कोई दुविधा पैदा होनेवाली नहीं है।

: ५८ :

४ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मैं आपलोगोंको एक बहुत बड़ी बात कहना चाहता हूं। कुछ

लोग मुझे सुनाते है कि जो कुछ हो गया और हो रहा है और जो डोमि-नियन स्टेटस[1] हमे मिलने जा रहा है, क्या उसमेसे राम-राज्य पैदा हो जायगा? पूछनेवाले मुझे ताना देते है और मुझे कबूल करना पडता है कि मै ऐसा नही कह सकता कि इसमेसे राम-राज्य पैदा होगा। मै सब चिह्न उसके विरुद्ध ही पाता हू। अग्रेजोने हमारे देशके दो टुकडे बनाए और पीछे उनके दो डोमीनियन स्टेटस भी बन जाते है। दोनो एक-दूसरेके दुश्मन बन गए, ऐसा मानकर जब वे चलते है तब उसमेसे राम-राज्य कैसे पैदा हो सकता है? डोमीनियन स्टेटसका मतलब अग्रेजोके मातहत तो नही, उनके साथ हमारा बराबरीका रिश्ता हो जाता है। वह करीब-करीब आजादी-जैसा ही है, इसमे मुझे कोई शक नही है। परतु ब्रिटिश कामनवेल्थमे बाकी जो डोमीनियने है, वे सब तो ऐसी है जिन्हे हम एक कबीलेके कह सकते है। हिंदुस्तान तो एशियाका एक देश है। तब वह डोमीनियन कैसे रह सकता है? यदि दुनियामे जितने भी राज्य है उन सबका एक डोमीनियन बनता तब तो बात दूसरी थी और उसमेसे राम-राज्य भी पैदा हो जाता। मगर जो कुछ बना है उसमेसे राम-राज्य या खुदाई राज्य नही निकल सकता। पहले तो ब्रिटिश गवर्नमेंट-ने यह माना था कि वह ३० जून १९४८ तक भारतीयोके हाथोमे सारी सत्ता सौप देगी। मगर अब उसने ऐसा ठान लिया कि वह जितनी जल्द हिंदुस्तानसे चली जाय उतना ही अच्छा है। मगर जल्दीसे छोडकर जाय कैसे? इसके लिए उन्होने फैसला किया यदि डोमीनियन स्टेटस आज वे बना दे तो उसमे कोई खटका नही रहता, क्योकि डोमीनियन बननेपर कुछ-न-कुछ ताल्लुक तो उनका रह ही जाता है।

मै नही चाहता कि हिदुस्तान एक कुएके मेढककी तरह रहे। जैसे एक कुएका मेढक कहता है कि कुएमे तो मेरा राज्य चलता है, बाहर चाहे कुछ होता रहे उसका मुझे पता नही। मगर हमारे यहा तो जवाहरलालजी तथा अन्य नेता लोग यह कह चुके है कि हम किसीके दुश्मन बनकर नहीं

---

[1] औपनिवेशिक स्वराज्य।

रहेंगे अर्थात् दुनियाके सबके दोस्त बनकर रहेंगे। इसमें सन्देह भी आ जाते हैं। तो क्या वे एक विश्व-संघ बनाना चाहते हैं? एशियाई सम्मेलनमें मैंने कहा था कि ऐसा विश्व-संघ बन सकता है और उसमें किसी मुल्कको अपने यहां फौज रखनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

कुछ देश आज अपने आपको डेमोक्रेट[1] कहते हैं। केवल कहनेसे ही वे डेमोक्रेट थोड़े ही बन जाते हैं! जहां लोक-राज होता है वहां फौजकी क्या जरूरत? जहां फौजी राज्य होता हो वहां लौकिक या पंचायती राज्य हो नहीं सकता। फौजी राज्योंका कोई विश्व-संघ नहीं बन सकता। जापान और जर्मनीकी फौजी हकूमतोंने अपनी दोस्ती बनाकर अन्य देशोंको अपने साथ मिलानेकी चाल चली थी मगर वह चाल आखिर चली थोड़े ही। नतीजा यह कि आज जिस जगहपर भी नजर डालता हूं मैं आज राम-राज्यकी कोई निशानी नहीं पाता हूं।

कुछ लोग मुझसे पूछ रहे हैं कि तुमने ३२ सालतक सत्य और अहिंसाका नाम लिया। क्या उसीका यह नतीजा नहीं देखा जा रहा है कि आज देशमें हर जगह छुरों और गोलियोंसे मार-काट मची हुई है। इस तरहसे कौन कबतक यहां जिंदा रहेगा? इसपर मैं यह कहूंगा कि आज जब इतनी बेचैनी फैल रही है तब वह अहिंसा तो नहीं हुई। तो क्या ३२ वर्षतक मेरा झूठ और फरेबका राज चलता रहा? ३२ वर्ष-तक करोड़ों आदमियोंने जो मुझसे अहिंसाकी तालीम ली क्या वे एका-एक आज झूठे और हिंसक बन गए? मैं तो यह कबूल कर चुका हूं कि हमारी अहिंसा दुर्बलोंकी थी। मगर सच्चाई तो यह है कि दुर्बलोंके साथ अहिंसाका कभी मेल बैठता ही नहीं। अतः उसे अहिंसाकी बजाय निष्क्रिय प्रतिरोध कहना चाहिए। मगर मैंने जो अहिंसा चलाई थी वह दुर्बलोंकी नहीं थी जब कि निष्क्रिय प्रतिरोध दुर्बलोंका होता है। उसमें सबलता नहीं आई थी। इसके अलावा निष्क्रिय प्रतिरोध हमेशा और

---

[1] जनतंत्र।

सशस्त्र प्रतिरोधकी तैयारी होती है । नतीजा यह हुआ कि लोगोके दिलोमे जो हिसा भरी थी, वह एकाएक बाहर निकल पडी ।

निष्क्रिय प्रतिरोध भी तो हमारा असफल नही हुआ। हमने अपनी आजादी करीब-करीब प्राप्त कर ली। आज जो हिसा दिखाई दे रही है, वह भी नामर्दोकी हिसा है। एक मर्दकी हिसा भी होती है। मान लीजिए, चार-पाच आदमी अपनी तलवारोसे लडते-लडते मर जाते है। उसमे हिसा जरूर है, परतु वह मर्दोकी हिंसा है। जब दस-बारह हजार सशस्त्र आदमी एक गावके निहत्थे लोगोपर हमला करके स्त्री-बच्चो-समेत उन्हे काट डालते है तो वह नामर्दोकी हिसा हुई। अमरीकाका एटम बम एक तरफ और सारा जापान दूसरी तरफ। वह नामर्दोकी ही हिंसा थी। मर्दोकी अहिंसा तो देखनेकी चीज होती है। उसी अहिंसा-को देखते हुए मै मरना चाहता हू । उसके लिए हृदयमे बल होना चाहिए । वह एक बडा खूबीदार हथियार है । यदि सबलोकी अहिसाको लोगोने जान लिया होता तो हालमे ही जो जान-मालका नाश हुआ वह कभी नही होता।

मगर आज तो बहुत बुरी हालत पडी है इस देशकी। हिंदुस्तान-जैसे मुल्कमे, जहा ३२ सालसे मै सत्य और अहिसा सिखाता रहा हू, कपडा और अनाजका राशन करनेकी क्या आवश्यकता थी यदि लोगो-का एक-दूसरेपर विश्वास होता। यदि हम दयानतदारीसे अन्न खाए और कपडा पहने तो हिंदुस्तानमे दुष्काल हो नही सकता। यदि सब लोग सचाईसे रहे और अपने-आप अपनी मदद करने लगे तो हमे सिविल सर्विसकी तरफ देखनेकी भी जरूरत न हो। स्वर्गीय माटगूने तो सिविल सर्विसको लकडीका ढाचा कहा था। वे अपनेको जनताके सेवक नही मानते और न वे इस मतलबके लिए रखे जाते है। वे तो जैसे भी हो विदेशी राजको यहा बनाये रखनेके लिए होते है। वे केवल दफ्तरोमे बैठे चपरासियोंके जरिए हुक्मनामे जारी करते रहते है। यदि आप लोग स्वय अपनी टागोपर खडे हो जाए और सिविल सर्विस-पर निर्भर रहना छोड दे तो फिर हमे यहा न तो किसी चीजका राशनिग चाहिए और न आजकलकी सिविल सर्विस चाहिए। मगर राजतन्त्र

चलानेके लिए सिविल सर्विसकी जरूरत तो रहेगी ही। यदि वे समयके साथ बदल जाए और जनताकी सेवा करनेके लिए तत्र चलाए तो वह तत्र हो जाता है।

: ५६ :

५ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज वाइसराय साहबकी पत्नी यहा आई थी। उनके आनेका मेरे खयालमे कोई सबब नही था। मैंने टेलीफोनपर उनको कह भी दिया था कि आप यहा आनेका क्यो कष्ट करती है। उन्होने उत्तर दिया कि जब आप हमारे पास इतनी दफा आ चुके तो मुझे भी आपके यहा आना ही चाहिए। मैंने कहा कि मै तो अपने कामसे वाइसराय साहबके पास आता था और आना चाहिए था। मगर वे न मानी और आखिर आई। वे बडी सादगीसे रहनेवाली है और हमारे पास वैसे ही आकर बैठ गई जैसे हम यहा बैठे हुए है। उन्होने सब बाते दरयाफ्त की। यह भी पूछा कि हमारा जीवन यहा कैसे बीतता है और हर चीजमे दिलचस्पी ली। मैंने बताया कि मै तो यहा मेहतरोके बीचमे रहता हू। परतु मैंने यह कहा कि मै तो एक मदिरमे रहता हू जो काफी स्वच्छ है और होना भी चाहिए। यदि आपको कुछ देखना है तो यहा पास ही भगियोकी एक बस्ती पडी है, उसे जाकर देख ले। उसे ढाकर दूसरी बनवा सकनेका अधिकार तो आपने छोड दिया और अच्छा किया। उन्होने रसपूर्वक सब कुछ वहा जाकर देखा। मै इसलिए उनके साथ नही गया कि लोगोकी भीड वहा जमा हो जाती। इसके बाद वे हरिजन-निवास गई जहा-पर कि हरिजन लडकोको काम सिखाया जाता है। वहा तो उनके खुश होने-जैसी चीज ही थी। वहा एक मदिर और स्तभ भी बन चुके है। साराश यह कि वे वहासे खुश होकर लौटी।

मेरा इरादा इस चिट्ठीका[1] जवाब आज दनेका नही था, परतु मैंने ऐसा महसूस किया कि मुझे उसको कलके लिए नही रोकना चाहिए। पजाब-विभाजनको लेकर सिखोके बारेमे जो कुछ हुआ है, वह एक दर्दनाक बात है। हिंदू और सिखमे पहले कोई भेद नही था, मगर मेकालेने सिखोका जो इतिहास लिखा उससे यह सारा जहर पैदा हुआ। चूकि वह एक बडा इतिहास-लेखक था, इसलिए उसकी बातको सबने स्वीकार कर लिया। सिखोका जो गुरु-ग्रन्थ-साहब है वह सब हिंदू-शास्त्रोके आधारपर बना है। सिख बहादुर तो है मगर छोटी तादादमे है। पजाबके दो टुकडे होनेसे वहा जो सिख रहते है उनके भी दो टुकडे हो जाते है। चिट्ठीमे लिखा है कि पूर्वी पजाबमे जो सिख आ गए वे तो ठीक है, परतु पश्चिमी पजाबके सिखोका क्या होगा? यदि उनके साथ कुछ हुआ तो काग्रेस कुछ मदद करेगी या नही? मै यही कहूगा कि जो बहादुर होते है उनको किसी-की मददकी जरूरत नही होती। उन्हे केवल ईश्वरकी मदद होनी चाहिए। फिर आप ऐसा मानते ही क्यो है कि पश्चिमी पजाबमे सिखोके साथ कुछ होनेवाला है। यदि उनके साथ कुछ होगा भी तो क्या हिंदुस्तान-मे जो इतने लोग पडे है वे सब देखते ही रहेगे? इसलिए सिख भाइयो-को कोई फिक्र करनेकी जरूरत नही है।

जो बिल[2] पेश हो चुका है वह शीघ्रतासे कानून बन जायगा। उससे हिंदुस्तानमे दो डोमीनियन बन जायगे, अर्थात् ब्रिटिश कामनवेल्थ-के दो नये मेम्बर बन गए। बिलमे कुल २० कलमें[3] है, जिनको मैंने पढा है। मै यह नही कह सकता कि उसमे कोई फरेब है या अग्रेजोने उसमे ऐसी भाषा प्रयोग की है जिसका उल्टा-सीधा अर्थ निकलता हो। आज किसी अग्रेजका हमे फसानेका इरादा नही है। मगर जहर तो उस बिल-मे है ही। उस जहरको हमने पी लिया और काग्रेसने भी। अग्रेजोने डेढ-सौ सालतक यहा हकूमत चलाई और अग्रेजी राजने सियासी[4] तौर-

---

[1] जिसका जिक्र आगेकी पंक्तियोंमें है। [2] ब्रिटिश पार्लामेंटमें उप-स्थित भारतीय स्वाधीनता बिल। [3] धाराएं। [4] राजनैतिक।

पर यह मान लिया कि हिंदुस्तान एक मुल्क है। उन्होने उसे एक मुल्क बनानेकी कोशिश की और उसमें वे सफल भी हुए। मुगल-राजने भी ऐसी कोशिश की थी, मगर उसे इतनी सफलता नही मिली।

इस मुल्कको एक बनाकर फिर उसे मिटा डालना कोई अच्छी बात नही थी। मै यह नही कहता कि उन्होने इरादतन ऐसा किया है। केबिनेट मिशनने भी हिंदुस्तानको एक मुल्क माना था और उसने अपनी दलीले भी दी थी। मगर आज वे सब दलीले मिट गई। दो आजाद और समान अधिकारवाले डोमीनियन पैदा करनेका जहर इस बिलमे मौजूद है। यह माना कि कांग्रेस और मुस्लिम-लीग दोनोने इस बिलपर रजामंदी दे दी थी, मगर कोई बुरी चीज स्वीकार करनेसे वह अच्छी थोडे ही हो जाती है।

कायदे आजम जो कहते थे वही चीज आज वास्तवमे हो गई। उनकी पूरी-पूरी जीत हुई है, ऐसा कहनेमे मुझे कोई हर्ज नही लगता। मेरी दृष्टिमे तो इस बिलसे तीनोकी परीक्षा हो जाती है, जिनमे अंग्रेज भी आ जाते है। डोमीनियन स्टेटस तो इससे बन जाता है मगर वह तो चार दिनकी बात है, या कुछ महीने कह सकते है। विधान-परिषद् जो विधान बनायगी उसपर गवर्नर जनरलको दस्तखत देना होगा। वह उसमे एक अल्प-विराम भी नही बदल सकता। ऐसा ही पाकिस्तानकी विधान-सभामे होगा। विधान बनानेके बाद यदि दोनो अपनी आजादीकी घोषणा करे तो उनको कोई रोक नही सकता। दोनो करेंगे भी यही, ऐसा मै मानता हू। मगर यह तो आगे-की बात है जिसे कोई भी अभी निश्चित रूपसे नही कह सकता, परतु यह तो साफ है ही कि हिंदुस्तानके दो टुकडे किए गए और दोनोमे खुदमुख्तार डोमीनियन बने। इसके अलावा अंग्रेजोने एक और बातमे भी अपनी परीक्षा करवा दी है। हिंदु-स्तानमे जितने देशी राज्य पडे है वहा भी हकूमत हिंदुस्तान अथवा भारतीय संघकी होनी चाहिए। यह एक खतरा रह जाता है जिसे रखनेकी कोई जरूरत नही थी, ऐसा मै मानता हू।

पाकिस्तानवालोको उनकी इच्छाके मुताबिक पाकिस्तान तो

मिल गया। जमीन उनको चाहे थोडी मिली हो मगर हक तो बराबरी-का मिल गया । कलतक जब पाकिस्तानके लिए लडाई लडी जा रही थी, मै पाकिस्तानको समझ ही नही पाया था । समझमे तो आज भी नही आता। पाकिस्तानका रग-ढग तो तब दिखाई देगा जब उसकी विधान-सभा क़ायदे-कानून बना लेगी। मगर पाकिस्तान-की असली परीक्षा तो यह होगी कि वह अपने यहा रहनेवाले राष्ट्रवादी मुसलमानो, ईसाइयो, सिखो और हिदुओ आदिके साथ कैसा बरताव करते है। इसके अलावा मुसलमानोमे भी तो अनेक फिरके है। शिया और सुन्नी तो प्रसिद्ध है। और भी कई फिरके है, जिनके साथ देखते है, कैसा सलूक होता है। हिदुओके साथ वे लडाई करेगे या दोस्तीके साथ चलेगे ? क्या वे ऐसा तो नही मान बैठेगे कि हम तो सरदार है और बाकी सब गुलाम है ? इन सबका जवाब उन्हे अपनी विधान-सभामे देना होगा ।

हिंदुस्तानको भी इस बिलके जरिएसे यह परीक्षा देनी होगी कि यहा जो मुसलमान है उनको वे भाई समझेगे या दुश्मन ? मेरे खयालमे तो सब धर्म एक ही है । वृक्षकी शाखाए अलग-अलग होती है, परतु मूल पेड एक ही होता है। सब मजहबोमे एक ही ईश्वर है। यूरोपमे भी पहले इस तरहके मजहबी लडाई-झगडे होते थे मगर अब वहा एक दूसरा वायुमडल बन रहा है और लोग इन मजहबी झगडोसे इतने तग आ गए है कि वे अब ईश्वरतकको छोडते जा रहे है। जब दुनियाका यह रग है तो क्या हिंदुस्तान् ही पीछे पडा रहेगा ?

जो लोग हिंदुस्तानको एक नेशन मानते है उनके यहा तो बहुमत और अल्प-मतका सवाल ही पैदा नही होता । इस दृष्टिसे देखा जाय तो यह बिल सब पार्टियोकी अतिम परीक्षाका साधन है। यदि हम सब अपने इम्तहानमे सफल होते है तो हम इसे ईश्वरकी भेजी हुई भेट मान सकते है और अगर समझसे काम न ले तो वह फासी बन जाती है।

: ६० :

६ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरा खयाल है कि कल सीमाप्रातमे रेफरेडम (जनमत लेनेका कार्य) शुरू होनेवाला है। मै तो बादशाह खानको और उनके सब मिनिस्टरोको सलाह दे चुका हू कि उनके लोग किसी भी डिब्बेमे अपने मत न डाले।

(मचपर बैठे हुए एक सज्जनने गाधीजीको याद दिलाई कि जनमत-सग्रहका कार्य आज शुरू हो गया है। इसपर गाधीजीने कहा——) मुझे तो ऐसा खयाल रह गया था कि कल ७ ता०से शुरू होनेवाला है। कुछ भी हो, मै तो यह कहने जा रहा हू कि वे तो अमन रखनेवाले है। मगर मुझे यह देखना है कि वह अमन बुजदिलोका है या बहादुरोका। इस तरफ तो मैने मजूर कर लिया कि वह बुजदिलोंका अमन था।

मैने तो उनसे कह दिया कि वे अपना मत डिब्बेमे न डाले। लीगमे भी मैने यही बात कही है। मगर वे डाले या न डाले। खुदाई खिदमतगारोसे तो मै यही कहूगा कि यह आपसकी लडाई क्यो?

कल जो बिल पेश किया गया है उसके मुताबिक हिंदुस्तानके दो टुकडे हो जायगे——एक पाकिस्तान और दूसरा हिंदुस्तान। अग्रेजोको दो टुकडे करनेसे क्या मतलब था? सारा हिंदुस्तान एक था मगर उसके साफ दो टुकडे बना दिए गए। हम तीस सालसे जो लडाई चला रहे थे वह सारे हिंदुस्तानकी आजादीके लिए थी। उसका नतीजा यह हुआ कि देशके दो टुकडे हो गए। हमारा दिल टूट गया है, इसलिए हमारी जमीनके भी दो टुकडे हो गए है। ३० बरसतक हमने शोर मचाया कि हम अपने देशका कब्जा ले ले। मै अपने दिलसे पूछता हू कि क्या इसीलिए तू कोशिश कर रहा था? मै १७ बरसका था, तबसे मै

कोशिश करता रहा हू । मगर क्या सारी लडाई इसीलिए थी कि आखिरमे देशके दो टुकडे हो जाय ? तीस बरसकी लडाईका नतीजा क्या यह होना चाहिए था कि एक कैंपमे हिंदू, एकमे मुस्लिम हो जाय और सिख किसीमे भी शामिल हो जाय ?

देशके टुकडे करनेके साथ-साथ हमारे लश्करके भी दो टुकडे हो रहे है। यह क्या हमारे आपसमे लडनेके लिए ? सारी काग्रेसका इतिहास फौजके खिलाफ आदोलनसे भरा हुआ है। जबसे काग्रेस बनी —और उस समय दादाभाई नौरोजी, जो राष्ट्रके 'दादा' कहे जाते थे, ह्यूम, फीरोजशाह मेहता और तिलक भी मौजूद थे—उस वक्तसे ही उसकी माग थी कि हिंदुस्तानमे तालीमका जो इतजाम है उसपर सबसे कम खर्च किया जाता है । दूसरी ओर फौजपर इतना ज्यादा खर्च क्यो ?

उस फौजकी तो पैदाइश इसलिए हुई थी कि ४० करोड हिंदुस्तानियोंको दबा दे। दूसरे, इस देशमे फ्रेच थे और थोडी-सी जगहपर पोर्चुगीज भी थे। इधर एक क्लाइव साहब थे, उन्होने सोचा, फ्रेच सेटिलमेंट और पोर्चुगीज सेटिलमेंट कायम हो रहे है। उनके खतरेको बचानेके लिए और अपने-आपको कायम रखनेके लिए फौज तैयार की। उस तरफ अफगानिस्तानमे ट्राइब्ज (कबीले) हैं। यह भी डर था कि रूस हमला न करे। इन सब कारणोसे यहा इतनी बडी फौज तैयार की गई थी।

इतनी बडी फौजके रहते हुए भी हम अग्रेजोके साथ निबट लिए। मगर हमारी अहिसा बहादुरीकी अहिसा नही थी, वह बुजदिलोकी अहिंसा थी। मैने पैसिव रेजिस्टेन्स (निष्क्रिय प्रतिरोध)का रास्ता बताया था। उसको अख्तियार करके हमने अग्रेजोके साथ हथियारोकी तैयारी नही की। फिर भी अभी आर्मी (फौज) रह ही जाती है। यह क्यों ? यह आपके लिए सोचनेकी बात है। मेरे लिए दु ख और शर्मकी बात है। मै सोचता हू, हमारी आखोमे खुशहाली क्यो नही है ? हम आजाद हो गए है। हमारे देशके टुकडे हो गए है। मगर यह टुकडे दोस्त बननेके लिए किए गए है या दुश्मन बननेके लिए ?

हमारे आजके तरीकोका मतलब तो लश्कर बढाना हो रहा है। दोनो ही लश्कर बढायगे। अगर एक ओर बढ़ेगा तो दूसरी ओर भी बढेगा। पाकिस्तानवाले कहेगे कि हम हिंदुस्तानवालोसे बचनेके लिए लश्कर बढाते है, क्योकि हम करोडो तो नही है। हिंदुस्तानवाले भी इसी तरहकी बाते कहेगे। आखिर परिणाम लडाई आता है।

हम अपना पैसा तालीममे खर्च करेगे, या दियासलाईमे, बारूदमे करोडों रुपये लगा देगे? फिर तोपोंमे और फिर बदूकोंमे खर्च करेगे? और फिर अपने नौजवानोको तालीम भी वही देगे?

पाकिस्तानने तो अमनको नही माना। कहते है कि कुरानशरीफमे ऐसा नही लिखा। मगर मै पूछना चाहता हू कि आप क्या करनेवाले है? क्या आप भी वही करेगे?

अगर हमे डोमीनियन स्टेटस (औपनिवेशिक स्वराज्य) मिलता है तो भी हमारे दो टुकडे होते है। यदि हम आजाद होते है तो भी दो ही रहते है। मगर क्या हम लडनेके लिए अलग होते है? अग्रेजोने जो कुछ किया है उसमे मुझे अपने लिए सतोष या शानका कोई कारण मालूम नही होता। मुझे भविष्य बहुत ही मनहूस दिखलाई पडता है। उसे बताते हुए मैं कापने लगता हू। अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तान लडते-लडते बार-बार एक दूसरेको शिकस्त दे तो इसमे कौन-सा रस है? सब जगह यदि ख्वारी-ही-ख्वारी हो तो इसे क्या मै आजादी कहू? मै नही जानता। भगवान् हमे अधेरेसे उजालेमे ले जा।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय।'

: ६१ :

७ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

कल शामको मैने आप लोगोको बताया था कि आनेवाली आजादी हमारे दिलोंमे खुशी क्यो नही पैदा कर रही है। आज मै आपको

यह बताना चाहता हू कि अगर चाहे तो हम बुराईसे भलाई किस तरह बना सकते है। जो हुआ सो हुआ । उसपर ख़याल दौडानेसे या किसीको बुरा-भला कहनेसे कुछ बननेवाला नही । कानूनकी भाषामे आजादीके आनेमे अभी थोडे दिन बाकी है । असलमे तो जब सब पक्षोने बात मजूर कर ली है तो वे उसपरसे वापस नही जा सकते । केवल भगवान ही है जो इन्सानकी तय की हुई बातको उलट सकता है।

सबसे आसान रास्ता मुसीबतसे निकलनेका अब यह है कि काग्रेस और मुस्लिम लीग आपसमें समझौता कर ले—बिना वाइसरायके दखल या मददके । ऐसा करनेमे लीगको पहला कदम उठाना होगा। मेरा यह मतलब हरगिज नही है कि पाकिस्तानको मिटा दिया जाय। उसे तो एक पक्की बात और बहसके बाहर समझना चाहिए । लेकिन अगर काग्रेस और लीगके ज्यादा-से-ज्यादा दस नुमायदे एक मिट्टीकी झोपडीमे बैठे और निश्चय करे कि हम यहासे उठेगे नही, जबतक कि हम समझौता न कर ले, तो मै दावेसे कहता हू कि यह फैसला उस बिल या कानूनसे जो आज ब्रिटेनकी पार्लमिटके सामने पेश है और जिससे दो बराबरकी रियासते, या दो डोमीनियन बन रहे है, हजार दर्जे बेहतर होगा।

अगर हिंदू और मुसलमान जो मेरे पास आते है या मुझे लिखते है, मुझे धोखा देनेकी कोशिश न कर रहे हो तो मुझे तो साफ यही नजर आता है कि बटवारेसे कोई भी खुश नही। उसे लाचार होकर स्वीकार किया जा रहा है।

पर यह 'अगर'का शब्द जो मैने इस्तेमाल किया है सो जरूर असभव-सा लगता है । मुझसे कहा जा सकता है कि जब लीगने ब्रिटेनसे अपनी हकूमत कायम करवा ली है तो वह फिर अपने 'दुश्मनो'के पास क्यो आए और किस तरह उनके साथ भाई-भाई और दोस्तोके जैसा समझौता करे ?

एक दूसरा तरीका भी है। वह भी शायद उतना ही मुश्किल हो। फौजका बटवारा हो रहा है—उस फौजका जो आजतक एक रही,

जिसका मकसद भी एक ही रहा—चाहे वह कुछ भी था। इस बटवारे-से तो हर एक देश-प्रेमीके दिलमे डर ही पैदा होगा। ये दो सेनाएं किसलिए बनाई जा रही हैं? इसलिए नही कि अपने मुल्कके दुश्मन-का सामना करे. बल्कि इस मतलबसे कि वे एक दूसरेसे लडे और दुनियाको दिखाए कि हम लोग सिवा आपसमे लडने और एक-दूसरेको मार-मिटानेके और किसी कामके लायक ही नही।

मैने यह भयानक चित्र आपके सामने जैसा है वैसा जान-बूझकर खीचा है ताकि आप उसे पहचाने और उससे बचे। बचनेका तरीका तो लुभानेवाला है ही, कम-से-कम मेरी नजरोमे क्या हिंदू जनता और वे सब लोग, जिन्होने आजादीकी लड़ाईमे हिस्सा लिया, इस डरावनी तसवीरको समझकर आज कसौटीपर पूरे उतरेगे? क्या वे आज कहनेको तैयार होगे कि अब उन्हे फौजकी जरूरत ही नही, या कम-से-कम यह प्रतिज्ञा ले लेगे कि उसका उपयोग अपने मुसलमान भाइयों-के खिलाफ कभी नही करेगे, चाहे वे सघमे रहते हों या पाकिस्तानमे ? मेरी इस मांगके शायद एक ही मानी किए जायगे. वह यह कि ऐसा करनेसे हिदू जनता और उसके साथी ३० सालकी कमजोरीको एक सुंदर महाशक्ति बना सकेगे। हो सकता है कि मेरा जो तरीका मसलेको हल करनेका है उसे आप मूर्खता समझे। जो भी हो, इतना तो मै कहूगा कि ईश्वर इन्सानकी मूर्खताको दानापन या बुद्धि-मानी बना सकता है। और उसके हाथोसे इतिहासमे ऐसा हुआ भी है। जो लोग फौजके खतरनाक बटवारेपर तुले हुए है ताकि आपस-आपसमे लडे, इससे बचनेके लिए भी मेरी बताई हुई कोशिश करनी चाहिए।

: ६२ :

८ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मै आज आपसे क्षमा मागता हूं, क्योकि मै १० मिनट देरसे आया।

आज मेरे पास इतना काम था और इतने लोग मिलने आए कि शाति नही मिली। आजकल मै जो कुछ बोलता हू सोच-विचारकर बोलता हू। पहले कुछ नोट लिख लेता हू और फिर उसे बोलता हू। मै आज लिखता ही रहा और उसके बाद हाथ-मुह धोने गया, क्योकि हाथ-मुह तो धोना ही चाहिए न, और इसी बीच लडकिया मुझे कहने आई कि समय हो गया। किंतु मैने सुना नही। इसीलिए आज कुछ देर हो गई।

आज मै कुछ कठिन बात करना चाहता हू। एक भाईने अग्रेजीमे पत्र लिखा है। वह लिखते है—"मै राष्ट्रभाषा नही जानता। इसलिए अग्रेजीमे खत लिखता हू।" उन्होने कहा है कि मै तमिल जानता हू—अगर मै तमिलमे कुछ लिखूगा तो आपको पढ़नेमे कठिनाई होगी—आप तमिल कुछ जानते है तो भी कठिनाई होगी। आप जानते ही है कि मै चाहता हू कि जो भाई मुझे चिट्ठी लिखे वे अपनी भाषामे लिखे। अच्छा तो यह है कि वे उत्तरी भारतकी भाषा—हिंदी और उर्दूके बीचकी भाषा—राष्ट्रभाषा हिंदुस्तानीमे लिखे। उस खतके लिखनेवालेने अपने खतमे अग्रेजी लेखक बर्नार्ड शाकी कुछ पक्तियोको उद्धृत किया है। बर्नार्ड शा अग्रेजोको ऊचा समझते है। अग्रेज समझते है कि उनके-जैसा खूबसूरत कौन है। वे बहुत अच्छा मजाक करते है। कहते है कि अग्रेज कुछ गलती नही करते। वे धर्मके लिए ही सब कुछ करते है। वे कहते है कि अग्रेज धर्मके लिए लडाई करता है। लूट करता है तो भी वह धर्मके नामपर, क्योकि किसीके पास अधिक पैसा क्यो रहे। हमे गुलाम बनाता है तो भी धर्मके नामपर—अच्छा बनानेके लिए। राजाका खून करता है तो वह भी धर्मके लिए अर्थात् जनमतके लिए। वे सब काम धर्मके नामपर करते है।

खत लिखनेवाला बर्नार्ड शाकी नकल करता है और इसीलिए मेरा भी मजाक करता है और कहता है कि अग्रेज आजादीके लिए देशको दो हिस्सेमे बाट रहा है। सो अग्रेज किस धर्मके नामपर हमे आजाद बना रहा है? लेकिन अग्रेजको मै जितना जानता हू उतना कोई नही जानता, तब मै कहूगा कि अगर कोई इन्सान कुछ कहता है तब उसपर क्यो न विश्वास किया जाय, जबतक कि वह ठग न साबित हो?

अंग्रेज भारत इसलिए छोड रहे है, क्योकि वे समझते है कि उन्हे पैसोका लाभ नही होगा। सियासी मामलेमे भी वे हमे गुलाम बनाकर नही रख सकते, यह भी वे जान गए है।

पहली लडाईमे एक जगह मार्शल-ला लगाया था। अबकी लडाई-के दिनोमे भी वेवल साहबने सारे हिंदुस्तानमे मार्शल-ला लगा दिया। लेकिन अब सब अंग्रेज जान गए है कि अब हिंदुस्तानको गुलाम नही रख सकते। हमने जब अहिंसात्मक आदोलन किया तब वे जान गए कि अब ज्यादा पैसा नही निकाला जा सकता। अब देशको कब्जेमे रखने-के लिए अंग्रेजको ज्यादा खर्च ही करना पडेगा। इसीलिए वे जाना चाहते है।

देशको बचानेके अब भी दो तरीके है, जैसा मैने कल बताया। अब भी अंग्रेजोके हाथमे है—अभी उनका बड़ा लश्कर पड़ा है। जबतक वह लश्कर नही चला जायगा तबतक नही कह सकते कि वे चले गए। अंग्रेज चाहे तो अब भी दुरुस्त कर सकते है।

अंग्रेज देशको टुकडा कर जाना चाहते है। अंग्रेज हिंदुस्तानमे यदि नियम रखकर बाकायदा सबको ठीक कर जाय तो इसका मतलब यह नही कि हैदराबाद कहे, हम आजाद होगे—त्रावनकोर कहे, हम आजाद होगे—जब ऐसा सब कोई आजाद हो जायगा तब हिंदुस्तानकी आजादी कहा गई। मै यह स्वीकार करता हूं कि हालकी कुछ घटनाओसे लोगो-को अंग्रेजके इरादोपर सदेह हो गया है किंतु मै इसे तबतक बदमाशी नही कह सकता जबतक बदमाशी साबित न हो जाय।

इतना तो ठीक है कि अंग्रेज रियासतोके बारेमे उचित काम करने-मे हिम्मतसे काम नही ले रहे है। लेकिन यदि अंग्रेज देशमे ऐसी स्थिति उत्पन्न करके छोड जाता है जिससे देशमे कई भाग एक दूसरेसे अलग हो जाय और वे आपसमे लडते रहे तो इससे बढकर अंग्रेजोकी आबरू-पर और कोई धब्बा नही लगेगा।

: ६३ :

६ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आजका भजन[1] तो आपने सुना ही है। उसमे प्रेमकी सगाई सबसे बडी बात कही गई है। कृष्ण तो बादशाह था। जो कुछ करना चाहता था कर लेता था। उन्होने सबका पूजन किया तभी वे दासानुदास कहलाए। प्रेमके बदलेमे यदि हम अहिसा शब्दका प्रयोग करे तो वही बात है। प्रेम कैसे पैदा कर सकते है यह दूसरी बात है।

आज आप लोग पूछेगे कि मै वाइसराय साहबके पास क्यो गया। आजादी तो अभी मिली नही है। अभी तो दुश्मनकी बात चलती है। जिस दिन चाहे वह ट्राम बद कर देता है, लूट लेता है और छुरा भोंक देता है। आजादी सूर्य-जैसी है, लेकिन वह आ रही है, ऐसा मुझे नही लगता। वाइसराय तो मुझे मित्र कहते है। मै भला उनका मित्र कैसे हो सकता हू—मै तो भगीका मित्र हू, गरीबोंका मित्र हू, लेकिन उनका कैसे! वे तो बादशाह है, लेकिन वे मुझे मित्र मानते है।

आज आपको कलके खतका दूसरा हिस्सा सुनाऊगा। वह लिखता है कि सन् १९४०मे मैने ऐसा कहा था—उस समय मैने लिखा था कि मै सब जगह अहिंसाकी बू पाता हूं। वह लडाईका जमाना था। उस समय अहिंसाकी बू नही थी। वह पूछता है कि यदि उस समय हवामे खूनकी बदबू आती थी तो आज क्या निकलती है। उनको ऐसा पूछनेका हक है। आज हिंदुस्तानमे नियमबद्ध काम हो रहा है, ऐसा नही है। दिलमे आता है तो कोई रेल रोकता है, कोई आग लगाता है, कोई लूटता है और कोई छुरा भोंक देता है। इसे अव्यवस्था कहते है। लोग पैसे खा जाते है। लोग बेशर्म होकर अनुचित रास्तेसे पैसा कमाते है। देनेवाले चुपचाप दे भी देते है। कौन किसको कहे! लोगोंके दिलमे

---

[1] 'सबसे ऊंची प्रेम सगाई'।

पैसा पैदा करनेकी धुन है, चाहे किसी ढगसे हो । हवामे आजकल झूठ, हिंसा, तिरस्कार और अविश्वास जोरोसे फैला है।

इन सबके ऊपर क्या आता है, ३ जूनकी बात। सबने—हिंदू, सिख व मुसलमानने—हिंदुस्तानका टुकडा करना मान लिया है। इसके बाद रोज अखबारसे क्या पाते है कि कई स्थानोमे चोरी हो गई, लूट हो गई, आग लगा दी गई, हत्या कर दी गई, खजर भोक दिया—आदि। खत लिखनेवाला मुझे ताना देता है कि यही आपकी प्रेम-सगाई है। वह पूछता है कि आप सदा सत्यके पुजारी रहे, लेकिन अब वह कहा है? सब जगह झूठ-ही-झूठ है। कौन नीचा है कौन ऊचा, यही सवाल है। सहिष्णुता कहा गई? यह सब जब नही है तब कहो तो कौन इसके लिए जिम्मेदार है? आप, वाइसराय या और कोई? उनको ऐसा पूछनेका हक है। ३० वर्षमे काग्रेसियोंने जो त्याग किया, कठिनाइया सही, क्या आज उसका नतीजा देशका टुकडा करना है? आपका अमृतरूप स्वराज्य कहा गया? इसका वे जवाब मागते है। आगे वह कहता है कि अगर इस जहरमेसे अमृत पैदा करना है तो वह आप ही कर सकते है।

इसके जवाबमे मै तो कहूगा कि यह बात सच्ची है कि देशमे बदबू आ रही है। मै कहूगा कि मै इसके लिए जिम्मेदार हू । मै ३० वर्षसे कहता आ रहा हू कि सत्य और अहिसासे काम लो। यदि देश उसके अनुसार चलता तो आज ऐसा नतीजा नही होता। पेडसे ही उसका फल जाना जाता है।

यदि अग्रेज चला जाता है तो क्या उसके बाद नियम न रहे? इसके लिए मुझे शर्मसे कहना पडता है कि मै इसके लिए जिम्मेदार हू। जो लोग अभीतक कह रहे थे कि वे सत्याग्रह कर रहे थे उनके भी दिलमे था कि जब हथियार मिलेगा तब हथियारसे काम लेगे। हमने पहले सत्याग्रहसे काम लिया, लेकिन अब नही दिखाई देता। जिस तरहके स्वराज्यकी कल्पना की जाती थी वह बहुत दूर है। हम आपसमे लड रहे है। मै ऐसा देखना नही चाहता। मुल्तान, रावलपिंडी, गढमुक्तेश्वर, विहार और बगालमे क्या हुआ? मैं सिपाही हू। मै इनके लिए आसू नही बहाना चाहता और न मरना ही चाहता हू।

आज हम जो पागल बन गए है उससे न हिंदू जिदा रह सकता है, न मुसलमान और न सिख। तलवारके जरिए पैसा कमा सकते है, लेकिन धर्म नही।

जब मै ३० वर्षके अनुभवके बाद कुछ नही बता सकूगा तो उससे काम नही निपटता। तब हमे अब क्या करना चाहिए! हम सत्याग्रह करनेके लिए तैयार तो है, लेकिन अहिसाको ठीक रूपमे अपनानेमे हमारी ही नही ससारकी भलाई है। आज इन्सानियत-का तकाजा है कि अग्रेज हम दोनोमे दोस्ती करा दे--दो लश्करोमे दोस्ती करा दे। मै आशा करता हू कि इसके बिना अग्रेजके जानेके लिए अभी जितना दिन बाकी है वह इसके लिए काफी है।

और रियासतका मसला पडा है। हम कहे कि टुकडा तो हो गया, अब क्या होगा। १५ अगस्त आखिरी दिन है। यह काफी समय है और इसके बीचमे सब कुछ हो सकता है। यदि १५ अगस्ततक तय नही होगा अर्थात् दोनो दलोमे समझौता नही होगा तो मुझे डर है कि बादमे भी वह तय नही होगा। अग्रेजकी ताकत हमसे ज्यादा है। उसके पास बहुत बडी सैनिक शक्ति है। जो कहते है कि उनकी सैनिक शक्ति खत्म हो गई, वे गलतीपर है।

: ६४ :

१० जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझसे हमेशा कई तरहके प्रश्न पूछे जाते है। आज भी कुछ ऐसे ही प्रश्न पूछे गए है। एक प्रश्न तो यह है कि आज पाकिस्तान तो बन गया, तब हम लोग यूनियनमे पडे है, उनका धर्म क्या हो जाता है? मै कई बार इसपर बोल चुका हू। मगर यह इतना पेचीदा मामला है कि किसी-न-किसी तरहसे सामने आ ही जाता है। या तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो एक दूसरेके दुश्मन बन जाते है या

ऐसा कहो कि दोनो दुश्मन बनकर बैठ गए है। मुस्लिम लीग तो कहती ही है कि हिंदू और उनमे भी सवर्ण हिंदू हमारे दुश्मन है। तो क्या हिंदू भी उनके दुश्मन बन जाय ? एक तरीका तो यह है कि यदि कोई एक-दूसरेको दुश्मन मानता है तो दूसरा भी उसको अपना दुश्मन समझे। मगर कम-से-कम मेरा वह रास्ता नही है। जब सारा जीवन मै दूसरे रास्तेसे चलता रहा हू तो अब मै कैसे उसे छोड सकता हू। यहा मेरा इम्तहान होनेवाला है। मेरी इसानियत मुझे यही सिखाती है कि सारी दुनिया मेरी दोस्त है। यदि वे लोग न माने तो वे ही खोनेवाले है, मै खोनेवाला नही। एक-दूसरेका गला काटनेमे किसीका भला होनेवाला नही है। वह तो जानवरके समान है।

दोस्तीका मतलब किसीको किसी-न-किसी तरहसे राजी करना नही है। दोस्त कभी एक-दूसरेकी खुशामद नही करते। यदि कटु शब्द कहने है तो वह भी कहने होगे। यह पूछा गया है कि जब आप खुशामद नही करते तो १९४४ मे १८ दिनतक तेज धूपमे कायदे आजमके घर जाकर क्या करते रहे ? मै वहा अपना धर्म समझकर गया था, खुशामद करने नही। जो चीज मै उन्हे देने गया था, वह यदि वे ले लेते तो आज इतनी खूरजी न हुई होती और जो बेइन्तिहा जहर फैल गया है, वह नही होता। इसके अलावा इस देशमे कोई तीसरी ताकत नही रहती और पाकिस्तान बननेके बाद भी हिंदुस्तान एक बना रहता। वह मेरी जिन्ना साहबसे एक दोस्ताना बातचीत थी। खुशामदको आज बहुत बुरे मानीमे लिया जाता है। जब जर्मनी और इग्लैड एक-दूसरेके विरोधी थे तब चेम्बरलेनने, जो कि उस समय इग्लैडके प्रधान मत्री थे, हिटलरको सतोष देनेका तरीका अख्तियार किया। यह मेरी राय नही है मगर अग्रेज लोग ऐसा कहते है कि यदि चेम्बरलेनने हिटलरको सतोष देनेका तरीका अख्तियार न किया होता तो दूसरी ही बात बनती। उसमे तो खुशामद आ जाती है। मगर मै जब किसीको अपना दुश्मन मानता ही नही तब मै इस मानीमे किसीकी खुशामद करनेवाला नही हू।

मगर मेरे सामने सवाल यह है कि यूनियनमे रहनेवाले हम लोग क्या करे? पाकिस्तानमे जो मदिर और गुरुद्वारे मौजूद है, क्या उन्हे वे वहासे उठा देगे या नष्ट कर देगे? मेरा दिल तो ऐसा नही कहता। क्या वे हिंदुओको मदिरोमे जानेसे रोक देगे? पाकिस्तान-के ये मानी है, ऐसा मै कबूल नही करता। आज ही तो मुस्लिम लीग-के दौलताना साहबने कहा है कि 'पाकिस्तानमे हिंदू और सिख लोग अपने-अपने मजहबके मुताबिक नही चल सकेगे, यह बात तो इस्लामके दुश्मन ही कह सकते है।' यदि वास्तवमे पाकिस्तानमे हिंदू और सिखको वही इन्साफ मिलेगा जो मुसलमानको मिलने-वाला है, तो मुझे कोई शक नही कि इस्लामकी डेमोक्रेसी एक बहुत बुलद चीज है। यदि वे सबको एक ही आदमकी औलाद मानते है, तब फिर कैसे हो सकता है कि दूसरे मजहबके लोगोको खुदाकी इबादत करनेसे रोक दिया जाय? दौलताना साहब ठीक कहते है, ऐसा मुझे लगता है। मै तो पजाब और सीमाप्रातके हिंदुओ और सिखोसे कहूगा कि वे डरके मारे भागते न फिरे। सिखोका सुनहरी गुरुद्वारा तो अमृतसरमे है, मगर ननकाना साहब कहा जायगा, जिसके लिए सिखोने इतना त्याग किया था? वह तो पाकिस्तानमे ही रहेगा। हैदराबादमे कितने ही हिंदुओके मदिर है। हैदराबाद पाकिस्तानमे जायगा यह तो मै नही कह सकता। वहा तो ६५ फीसदी हिंदू है? यदि हिंदुओको भी पाकिस्तानमे ले जायगे तो फिर वह पाकिस्तानमे कहा रहा। मुसलमानोकी सबसे आला दर्जेकी जुमा-मस्जिद भी यहा यूनियनमे पडी है। क्या हम मुसलमानोंको उसमे नमाज पढनेसे मना कर देगे? आगरामे उनका ताजमहल है और अलीगढमे मुस्लिम युनिवर्सिटी है। क्या वहा मुस्लिम युवक पढना छोड देगे? यह तो ईश्वरकी मेहरबानी है कि पाकिस्तान बननेके बाद हमारा टुकडा हुआ ही नही है। क्या वे यहासे जुमा मस्जिद उठा ले जायगे या उसके लिए लडाई लडेगे? क्या एक और लडाई बाकी है? कौन-सी जगह ऐसी है जहा मस्जिद और मदिर न हो? मै जहा जाता हू वही ये सब मुझे मिलते है। तव क्यो पजाव, सरहद और सिंध-

से हिदू लोग भागकर आते है ? आखिर वे जायगे कहा ? उनमे आला दर्जेकी बहादुरी होनी चाहिए। हमे उस बहादुरीकी जरूरत नही जो मकानोको जलाने और मासूम बच्चोको मार डालनेमे काम आती है। वह बहादुरी नही, हैवानियत है। हमारी जमीनके टुकडे भले ही हो जाय, मगर हम दोनो जगह इन्सान होकर रहे, हैवान बनकर नही।

परतु यदि सिध या और जगहोसे लोग डरके मारे अपने घर-बार छोडकर यहा आ जाते है तो क्या हम उनको भगा दे ? यदि हम ऐसा करे तो अपनेको हिदुस्तानी किस मुहसे कहेगे । हम कैसे 'जय हिद'का नारा लगायगे ? नेताजी किसके लिए लडे थे ? हम सब हिंदुस्तानी है, चाहे कोई दिल्लीका हो या गुजरातका। वे लोग हमारे मेहमान बनकर रहे। हम यह कहते हुए उनका स्वागत करे कि आइए, यह भी आपका मुल्क है और वह भी आपका मुल्क है। इस तरहसे उन्हे रखना चाहिए। यदि राष्ट्रीय मुसलमानोको भी पाकिस्तान छोडकर आना पडा तो वे भी यहा रहेगे। हम हिदुस्तानीकी हैसियतसे सब एक ही है। यदि यह नही बनता तो हिंदुस्तान बन नही सकता।

१५ अगस्त आनेमे ३५ दिन और पडे है। हम अबतक हैवान बने रहे, मगर चाहे तो अब भी इन्सान बन सकते है। हम सबका इम्तहान हो रहा है। उसमे अग्रेज भी शामिल है। नोआखालीसे मेरे पास तार आया है कि पाकिस्तान बन जानेके कारण वहाके पीडित हिदुओको मुआ-वजा मिलनेकी सभावना नही रही। मुआवजा उन्हे क्यो नही दिया जाता ? पाकिस्तान बन जानेसे तो वहाकी गवर्नमेटका और अधिक, उनकी रक्षा करनेका, धर्म हो गया। तारमे यह भी लिखा है कि जिन लोगोने खून किया और जो आज हवालातोमे बद है, उनके छोड दिए जानेकी सभावना है। मेरी उम्मीद है कि यह होनेवाला नही है। पाकिस्तानवालोको तो यह सिद्ध करना चाहिए कि उनके यहा जो हिंदू रहते है उनका कुछ भी बुरा होनेवाला नही है। तब मै कहूगा कि हम १५ अगस्तको आजादीका दिन मनायगे। यदि ऐसा नही होता है तो वह आजादी मेरी नही और मुझे उम्मीद है कि वह

आपकी भी नही होगी। अभी ३५ दिन बाकी पडे है। हम चाहे तो इन ३५ दिनोमे बहुत कुछ हो सकता है। मै केवल भारतीय स्वाधीनता बिलसे ही अपनी आजादी माननेवाला नही हू ।

: ६५ :

११ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

हमने ईश्वरका नाम लेना तो छोड दिया,[1] परतु काम, क्रोध और मोह आदि जो हमारे छः बुलद शत्रु है, उनको हम प्रिय समझकर अपने पास रखते है ।

नोआखालीसे मेरे एक साथी लिखते है कि "जब तुम नोआखालीमे आए तब बडी लबी-चौडी बात करते थे और 'करूगा या मरूगा'का प्रण किया था। यदि अब १५ अगस्तसे पहले यहा नही आओगे तो तुम्हे पछताना होगा।" यह मै कबूल करता हू कि अगर मै वहा १५ अगस्तसे पहले न पहुचा तो मुझे पछताना ही होगा। मै उन लोगोके बीचमे रहता और उनके साथ खाता-पीता था। मै यहा दिल्लीमे क्यो पडा हू ? मुझे बिहार या नोआखालीमे चले जाना चाहिए। यहा तो मै बेहाल हू। यदि मुझसे कोई पूछे कि मैने यहा क्या किया तो मै यही कह सकता हू कि मैने केवल हजामत की है, जो मै खासी कर लेता हू। नोआखालीमे मै बेहाल नही रहता था। रोज पैदल चलता था, नए-नए देहातमे जाता और नए-नए आदमियो—हिदू और मुसलमान-दोनोसे मिलता था। नोआखालीमे मै कुछ काम करता था और बिहारमे भी। मेरे भीतर आज अगार जल रहा है। अगर मै नोआखाली चला जाऊगा तो वह नही जलेगा। अत आप लोग प्रार्थना करे कि हे भगवान, तू गाधीको जल्दीसे नोआखाली भेज दे।

---

[1] आजका भजन था : 'नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?'

मैंने वहा जो प्रतिज्ञा की थी उसे छोडा नही है। वहासे मै विहार चला गया, क्योकि जहा नोग्राखालीमे सिर्फ दो-चार सौ ही ग्रादमी मरे थे वहा विहारमे तो हजारो ग्रादमी मारे गए। इसलिए नोग्रा-खाली ग्रौर विहार मेरे लिए एक-जैसे बन गए है। वहासे जवाहर-लालजीने मुझे वुला लिया ग्रौर कृपलानीजीका भी तार गया। परतु यहा ग्राकर मैंने किया क्या ? वहुतसे लोग मुझसे ऐसा भी कहते है कि तुम नोग्राखालीमे ही क्या करोगे ? जब सब चीज हिंदुस्तानमे तय हो जायगी तब नोग्राखालीमे ग्रपने-ग्राप तय हो जायगी। मगर मैंने तो इससे उलटा ही सीखा है। मेरे पिता यद्यपि विद्वान् नही थे, पर यह मुझे कबूल करना चाहिए, कि इतना तो मुझे बचपनमे वह सिखा गए थे कि झूठ नही वोलना ग्रौर डर लगने लगे तो रामका नाम ले लेना। 'यथा पिडे तथा व्रह्माडे' ग्रर्थात् जो पिडमे है वही व्रह्माडमे है, यह मूल मत्र मुझे वचपन-हीसे मिल गया था। मेरी ग्रनपढ ग्रौर देहाती माताने भी मुझे यही सिखाया था कि तू जो भी करे ग्रपनी ग्रात्माकी प्रेरणासे कर, तुझे दुनियाकी क्या पडी ! दुनियाको देखनेवाला तो ईश्वर है। ग्रत नोग्राखालीमे मैंने जो वचन दिया उसे मुझे प्राण देकर भी नही छोडना चाहिए।

: ६६ :

१२ जुलाई १९४७

भाइयो ग्रौर वहनो

मुझे एक भाई लिखते है कि 'ग्राज हमारे यहा जो हो रहा है वह वहुत वुरा है।' वुरा क्यो है, यह भी उन्होने वताया है। वे कहते है कि 'जो लोग सत्याग्रह ग्रादोलनमे जेल गए वे समझते है कि उन्होने वहुत भारी काम कर लिया, जिसकी वजहसे उनको प्रधान मत्री या किसी प्रात-का गवर्नर या मिनिस्टर या उसका पार्लमेंट्री सेक्रेटरी तो वनाना ही

चाहिए। उनके पास मोटरकार होनी चाहिए, क्योकि वे समझते है कि यदि जेल चले गए तो हिदुस्तानका लाखो करोडो रुपयेका काम उन्होने कर दिया। मै भी दो दफा जेल हो आया हू और एक दफा तो यरवदा जेलमे आपके साथ भी था। परतु मै तो भिखारी ही रहा और किसीने मुझको पूछा तक नही।'

मै कहता हू, यदि जेलमे कोई चला गया तो क्या वह हिंदुस्तान-पर मेहरबानी करने गया था? यदि यही सिलसिला रहा तो मुझे डर लगता है कि काग्रेसका नाम मिट जायगा। काग्रेसमे जो लोग है उनको ऐसी बात ख्वाबमे भी नही सोचनी चाहिए। इस तरहसे तो कोई काग्रेसी यह कहेगा कि चूकि वह जेल हो आया है इसलिए उसके लडके-की शादी हिंदुस्तानकी सबसे अच्छी लड़कीके साथ होनी चाहिए या उसकी लडकीकी शादी हिंदुस्तानके सबसे अच्छे युवकके साथ हो। जवाहरलाल-जी इसलिए बडे मत्री या वाइस-प्रेसिडेट नही बने कि वे जेल हो आए है। यदि उनको ये पैसे न मिले तो क्या वह भूखो मरनेवाले है? राजेद्र बाबू तो पटना हाईकोर्टके चीफ जस्टिस होनेवाले थे। लेकिन उन्होने स्वेच्छासे उसे लात मारकर फकीरकी तरह रहना पसद किया। राजाजी भी जेल जानेके कारण मिनिस्टर नही बने। मै यह नही कहता कि वे सब फरिश्ते है। वे भी हमारी तरह इसान है और इसान तो भूलोकी गठरी होते है, फिर, सरकारी दफ्तरमे कितने आदमी समा सकते है? यह तो एक निकम्मी बात है जिसे शीघ्र ही भूल जाना चाहिए। हम इस बातका खयाल भी न करे कि हमे जेल जानेके बदलेमे कुछ मिले। जो आदमी अपना धर्म पालन करता है, धर्म ही उसका बदला है।

मुझसे पूछा गया है कि कायदे आजम जिना पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल बन गए और यहाका गवर्नर-जनरल वाइसराय बनकर बैठ गया, यह कहाका हिसाब है? हिदुस्तानकी आजादीकी लडाई तो काग्रेसने लडी, मुस्लिम लीगने उसमे कोई हिस्सा नही लिया या ऐसा कहो कि काग्रेसने जब भी सिविल नाफर्मानी या सत्याग्रह किया, लीगने उसमे बिल्कुल सहयोग नही दिया, इसपर भी यदि काग्रेसको हिंदुस्तानी गवर्नर-जनरल नही मिलता है तो यह कोई इसाफकी बात नही हुई। इसका

मतलब यह हुआ कि हम अंग्रेजोकी खुशामद करेंगे तो आरामसे रहेंगे, नही तो मर जायगे। मै यह कहूगा कि जो चीज बनी है या जो चीज १५ अगस्तको बा-कानून बननेवाली है, उसमे गवर्नर-जनरल चाहे अंग्रेज हो, फ्रेंच हो, डच हो, काली चमडीवाला हिदुस्तानी हो, गौरवर्ण हो या हब्शी हो, उससे कोई फर्क नही पडता। यदि मेरे हाथमे हो तो मेहतर बस्तीकी एक हरिजन लडकी गवर्नर-जनरल बनाकर बिठा दी जाय। अत माउटबेटन यदि गवर्नर-जनरल बनते है तो वे हिदुस्तानके खिदमतगार या नौकर होकर ही बनते है। आप कह सकते है कि यह तो बच्चोको फुसलानेकी-सी बात हुई। जो माउटबेटन इग्लैडके शाही घरानेसे सबध रखते है वह क्या तुम्हारी नौकरी करनेवाले है, आप तो धोखा देते है। मुझे आपको धोखा देकर माउटबेटनसे कोई इनाम नही चाहिए। मै तो आजतक उनसे लडता आया हू, तो आज उनकी खुशामद करनेकी मुझे क्या जरूरत पडी है? आप शायद यह कहेंगे कि काग्रेसी नेता उनके फुसलावेमे आ गए है। इसका मतलब यह हुआ कि जवाहरलालजी, सरदार और राजाजी ऐसे पागल है कि अपना सब नूर गवाकर बैठे है, वे खुशामदी बन गए है। मै वहातक नही जा सकता। यह तो सही है कि मै जो चाहता था वह नही बना और बहुत दफा मै यह कह भी चुका हू। मगर मै हर चीजका सीधा मतलब निकालता हू। हमलोग माउटबेटनको गवर्नर-जनरल बनाते है, इसीलिए तो वह बनते है। यदि हम न चाहते तो वह नही बन सकते। परतु जिना साहबने यह सोचा होगा कि सारी दुनिया कैसे मानेगी कि मैने पाकिस्तान ले लिया, इसलिए मै क्यो न गवर्नर-जनरल बनू। हमे इसपर ईर्ष्या क्या करना और गुस्सा भी क्या करना। उनको गवर्नर-जनरल बनकर यह सारी दुनियाको बताना है कि इस्लाम क्या चीज है। यह देखना है कि वह वहाके खादिम बनते है या बादशाह। यदि एक भी सिंधी सिंध छोडकर चला आएगा तो उसकी जिम्मेदारी पाकिस्तानके गवर्नर-जनरलपर होगी। उनको तो खलीफा अबूबकर या उमर और अलीकी तरह सबके साथ इसाफ करना होगा। मै यह नही कहता कि वे सब अहिंसक थे। मै तो केवल उनकी बहादुरी और शराफतकी बात कहता हू।

अखबारोंसे मुझे मालूम हुआ कि पहले हिंदुस्तान और पाकिस्तान—दोनोके लिए एक ही गवर्नर-जनरल रखना तय हुआ था। मगर बादमे जिना साहब मुकर गए। तब कौन उन्हे पाकिस्तानका गवर्नर-जनरल बननेसे रोकनेवाला था? मेरी निगाहमे उन्होंने ठीक नही किया। एक दफा जब उन्होंने कहा था तो माउटबेटनको बनने देते और पीछे यदि कोई गोलमाल होता तो उनको हटा देते। परतु अब इस्लामकी परीक्षा जिना साहबकी मार्फत होनेवाली है। सारी दुनियाके सामने वे पाकिस्तान स्टेटके गवर्नर-जनरल बन रहे है। अत पाकिस्तानकी खूबिया ही देखनेमे आनी चाहिए। काग्रेस तो हमेशा अग्रेजोंसे लडती आई है। जवाहरलालजी तो सीधे आदमी है, मगर सरदार तो हमेशा लडनेवाले है। वे तो मेरे साथ लडते थे कि तू इनका एतबार करता है। जब वही इनके दावमे आ गए तो आपकी तथा हमारी बात ही क्या है! जब वे यह कबूल करते है कि वाइसराय गवर्नर-जनरल बनकर रहे तो हमे कबूल करनेमे क्या सकोच है? हम देखते है कि वे हिंदुस्तानके खादिम बनकर गवर्नर-जनरल हो रहे है या दगा देनेके लिए। एक नया अनुभव हमको मिलेगा। अत इसमे दूरन्देशी है और फिर हम कुछ खोते तो है ही नही। आखिर डोमीनियन स्टेटस भी हमने उनके कहनेपर स्वीकार किया है। वे एक बहुत बड़े एडमिरल है, बड़ी लडाई लडनेवाले है। उनको हम रखे तो सही। यदि कोई बुराई निकली तो हम उनसे लड लेगे।

जब मै वाइसरायसे मिलने गया था तब उन्होने मुझसे कहा कि जिस लडकेसे एलिजाबेथकी सगाई हुई वह मेरे लडके-जैसा ही है, आशा है, कल आप आशीर्वादके तौरपर कुछ शब्द लिखेगे। सो परसो जब वाइसरायकी लडकी यहा आई तब मैने उसके हाथ मुबारकबादीका एक खत लिखकर भेज दिया। कितनी सादी लडकी है वह। प्रार्थनाके समय मैने उसे कुर्सीपर बैठनेके लिए कहा, मगर कुर्सीपर न बैठकर वह हमारे साथ ही दरीपर बैठ गई। और फिर राजकुमारी अमृतकौरने तो आज मुझे यह भी बताया कि जिस लडकीकी सगाई हुई है वही इग्लैडकी रानी बनेगी, क्योकि बादशाहके कोई लडका नही है। वाइसरायके भी कोई लडका नही है। खैर वाइसराय अगर बुरा होता तो मै आशीर्वाद लिख-

कर क्यों भेजता ? मै उसे बुरा नही मानता। उनकी जगह अगर जवाहर-लालजी या सरदार पटेल गवर्नर-जनरल बनकर बैठ जाते तो उन्होने बहुत खतरनाक काम किया होता। इसके अलावा गवर्नर-जनरलके हाथमे किसी प्रकारकी सत्ता नही होगी। जवाहरलालजी या उनकी केबिनट जो कहेगी वही उसको करना होगा। उसको तो केवल अपने दस्तखत देने होगे।

मगर लार्ड माउटबेटन एक बडा आदमी है और अग्रेज शैतानियत ही कर सकते है, ऐसा हम लोगोंका ख्याल बन गया है। तो माउटबेटनको भी अपनी शराफत और इन्साफ-पसदीका सबूत देना होगा। और मुझे विश्वास है कि वह इन्साफ करनेके लिए ही यहा आया है।

मेरे पास इन दिनो काफी मुसलमान मिलने आते है। वे भी पाकि-स्तानसे कापते है। ईसाई, पारसी या दूसरे गैर मुसलमान डरे यह तो समझमे आ सकता है, मगर मुसलमान क्यो डरे ? वे कहते है कि हमे क्विसलिंग[1] माना जाता है। पाकिस्तानमे हिंदुओको जो तकलीफ होगी उससे ज्यादा हमे होगी। पूरी सत्ता मिलते ही हमारा काग्रेसके साथ रहना शरियतसे गुनाह माना जायगा। इस्लामके ये मानी है, इसे मै नही मानता। काग्रेस यदि किसी मुसलमानको अपने साथ रखती है तो क्या गुनाह करती है ? क्या मुसलमान काग्रेसी बननेसे गुनहगार हो जाते है ? क्या व कलमा या नमाज नही पढते ? क्या अली भाइयोंके जमानेके इस्लामसे आजका इस्लाम कुछ बदल गया है ? राष्ट्रीय मुसलमानोंको कैसे क्विसलिग कहा जा सकता है ? मुझे आशा है कि जिना साहब जहा गैरमुस्लिम अल्पसख्यकोकी रक्षा करेगे वहा इन मुसलमानोको भी पूरा सरक्षण देगे।

---

[1] देशद्रोही।

: ६७ :

१३ जुलाई १९४७

ऐसा समय एक-दो बार आया है जब मै प्रार्थनामे ठीक वक्तपर नही पहुच सका। आजका वक्त ऐसा ही था। मैने बहुत कोशिश की कि सात बजेके पूर्व पहुच जाऊ, लेकिन ऐसा नही हो सका। मै वाइसरायसे मिलने चला गया था। मै यहा पडा हू तो कुछ बाते करनी ही पडती है। यहा बहुत बाते होती है इसलिए मेरे-जैसे आदमीको भी कुछ कहना होता है। यो तो मै चार बजे ही चला गया था और आशा थी कि समयके पहले ही लौट आऊगा। मगर दूसरे मित्र भी होते है, इसीलिए मै वक्तपर नही आ सका। मगर मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि प्रार्थना ठीक समयपर शुरू कर दी गई है।

जिना साहबने एक प्रेस-कान्फ्रेस की है। उसकी रिपोर्ट मेरे हाथमे आई है। उसमे उन्होने कहा है कि पाकिस्तानमे जो अल्पमतवाले है उनको किसी किस्मकी तकलीफ नही होनेवाली है। उनके साथ वैसा ही बर्ताव किया जायगा जैसा कि मुसलमानोंके साथ। हिंदू मदिरोमे जा सकेंगे, सिख गुरुद्वारोंमे।

पर किसी एकके कहने मात्रसे वैसा हो नही जाता। आज भी खून-खराबी हो रही है, मकान जल रहे है और यह सब पाकिस्तानमे हो रहा है। यूनियनमे[1] भी हो रहा है। यह कौन कर रहा है? क्या मुसलमान ही कर रहे है? या हिंदू भी कर रहे है? मेरे पास दोनो प्रकारके खत आते है। लोग कहते है कि अब हम शातिसे क्यो नही रह पाते? मै जिना साहबसे पूछता हू कि आपकी बात कब अमलमे आएगी? वह १५ अगस्तके बाद अमलमे आएगी या अभीसे? सिध तो पाकिस्तानका केंद्र-बिंदु होगा। वहा मुस्लिम लीगका बहुत जोर है। जिना साहब पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल भी बन गए है। ऐसा होनेपर भी इग्लैडमे बादशाह तो है ही। जबतक वह है तबतक जनताका कुछ-न-कुछ सबध

---

[1] इडियन यूनियन।

गवर्नर-जनरलके मार्फत उसके साथ रह ही जाता है। गवर्नर-जनरलको हम बनाते है। जिना साहब पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल बने है। फिर भी वह बादशाहके सामने जिम्मेदार तो रहते ही है। लीगके प्रेसीडेंट भी वे मिट नही जाते। उनकी हैसियत बढ जाती है। उन्हे सबको अदल[1] इन्साफ देना चाहिए। सिंधियोको सिंधसे क्यो जाना चाहिए? अगर एक भी सिंधी वहासे चला जाता है तो यह जिना साहबके लिए शर्मकी बात है कि वह गवर्नर-जनरल है और उनके रहते हुए अल्पमतवाले जा रहे है।

मुझे लगता है कि एक आदमी जो कहता है वह वैसा करता है या नही, इसीसे उसकी जाच होती है।

इसी तरह यूनियनसे भी मेरे पास खत आते है। युक्तप्रातमे कुछ हुआ या नहीं, मुझे नही मालूम। मगर वहाके मुसलमान यह भय महसूस करते है कि वे इस प्रातमे रह सकते है या नही। मै पूछता हू कि वहा वे क्यो नही रह सकते? जिस तरह मै जिना साहबसे पूछता हू उसी तरह युक्तप्रात और विहारमे भी पूछता हू कि वहा मुसलमान रह सकते है या नही?

अग्रेजोमे तो हमे निजात (?) मिल गई। एक जमाना था जब वे हमे लडाते रहते थे। अब वह जमाना चला गया। अब उनको हमे लडानेका मौका नही रहा।

युक्तप्रातके मुसलमानोको नौकरीके अनुपातके प्रतिशतके बारेमे शिकायत है। वे कहते है कि 'अबतक जहा ६० और ७० प्रतिशत सरकारी नौकरिया उनके हाथमे थी वहा अब आबादीके हिसाबसे १४ प्रतिशत ही देनेका निर्णय किया गया है।' मेरा दिल तो इसकी शिकायत नहीं कर सकता। सरकारी नौकरिया कितने लोगोको मिल सकती है? उससे हमारा क्या भला होनेवाला है? और फिर, वहा तो हम खिदमतके लिए जाते है, अपना भला करनेके लिए नही? अबतक जो कुछ होता रहा है वही होता रहे तो यह कोई न्याय न होगा। यदि डाक्टर गोग

---

[1] पक्षपातरहित।

वकील अबतक लोगोको लूटते रहे है तो क्या आगे भी वे लूटते ही रहेगे ?

इसी तरह कोई पूछ सकता है कि हमे अबतक जो परसेंटेज[1] मिला हुआ था वह रहेगा या नही ? मै कहूगा कि वह किसने दिया था ? कैसे दिया था ? यदि हरिजन कहे कि सरकारने हमे इतना दिया था, वह कायम रहना चाहिए, तो मै पूछ सकता हू कि सरकारने तुम्हे वह क्यों दिया था ? काग्रेस सरकारसे लडती थी, सरकारने काग्रेससे लडनेवालोंको रिश्वत दी। उसे उनकी खुशामद करनेकी जरूरत थी। अब हमारी हकूमत होगी। हमारी सरकार किसीकी खुशामद क्यो करे ? हमारे लिए तो यह जरूरी है कि हम अछूतपन मिटा दे। सरकारकी हिम्मत थी कि कानून बनाकर सब मदिर खोल दे ? मगर जब मै देखता हू कि मद्रासमे एकके बाद एक मदिर खुलता जाता है, वहाके बडे-बडे और पुराने मदिर हरिजनोके लिए खुल गए है, तो मेरा पेट (?) भर जाता है। धर्मकी रक्षा ऐसे ही हो सकती है। इसी तरह ईसाइयो और पारसियोकी बात है।

हमारी हकूमतका काम तो जो मिस्कीन है, जाहिल है, उन्हे ऊपर लाना होगा। यदि वह हरिजनोके लिए, शूद्रो आदिके लिए कुछ करती है तो ब्राह्मणको शिकायत क्यो होनी चाहिए ? हा, अगर कोई कहे कि ब्राह्मणोंको कोडे लगाए जाय, उनका अपमान किया जाय, तो मै कहूगा कि ऐसा क्यो, वह भी तो बुरा है।

मुसलमानोकी ओरसे या यूनियनकी ओरसे मै जो कुछ कह सकता हू वह यही है कि सबको अदल इन्साफ मिले। अगर ऐसा हो तो फिर कहनेको कुछ नही रहेगा। फिर देशके टुकडे होनेका दु ख नही रहेगा।

देशके टुकडे होनेके बारेमे लोग कहते है कि आज तो हिसाब हो गया—सेनाका हिसाब हो गया, नौ-सेनाका हिसाब हो गया। मै कहता हू कि हमारी ताकत कम हो गई। बाहरके लोग कहेगे कि हिंदुस्तानके पास नौ-सेना कहा है ? अपने मतलबके लिए वे दोमेसे किसी एक हिस्सेको

---

[1] प्रतिशत।

मिलाएगे और यह सेनाका बटवारा हमेशाके लिए गृह-युद्धका कारण बन जायगा।

पर मुझे आशा है कि पाकिस्तान और शेष भारतमे मैत्रीका भाव रहेगा। दोनोमे अल्पसख्यकोके प्रति न्यायका व्यवहार होना चाहिए। यदि यूनियनमे केवल हिंदू ही रह सकेगे तो यह पक्षपात होगा। इसी तरह यदि पाकिस्तानमे सिर्फ मुसलमान ही रह सकेगे तो वह भी पक्षपात होगा।

यद्यपि हमने अहिसाका सबक नही सीखा तो भी हमे अपनी तीस बरसोंकी कोशिशसे यह सीख लेना चाहिए कि हम किसीके दास नही बनेगे। ऐसा हम अहिसासे करे, चाहे हिंसासे। अहिंसाका नाम तो मैने छोड दिया। फिर भी, अगर हमारे पास बल आ गया तो हम किसीकी सलामी नही करेगे। यही मै बिहारसे कहता आया हू। लोग कहते है कि हमे तलवार दो, बदूक दो। मै कहता हू, तलवार और बदूक क्यो मागते हो? कहो, हम नही झुकेगे। ऐसा ही मैने नोआखालीमे भी कहा है।

अगर मुसलमानो और हिदुओके दिलमे तीस बरसोकी कोशिशसे यह आ गया है कि हम किसीकी गुलामी नही करेगे तो मेरे लिए इतना बस है। अगर तीस बरसमे हमने इतना सीख लिया है, तो वह हिसासे हो या अहिसासे मुझे इसकी परवाह नही। हा, अगर मुझसे सीखने आओगे तो मै कहूगा कि यह अहिसासे ही हो सकता है। एक अकेला आदमी अगर दुनियाका सामना करने चले तो वह अहिसासे ही कर सकता है। अहिंसाके साथ ईश्वर होता है, उसके सामने तलवार टूट जायगी।

: ६८ :

१४ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

कहा जाता है कि मेरे भाषण आजकल निराशा पैदा करनेवाले होते है।

कुछ लोग तो कहते है कि मुझे बिलकुल बोलना ही नही चाहिए । लोगोके ऐसा कहनेसे मुझे एक चित्रकारकी कहानी याद आती है । उसने अपना चित्र एक दुकानमे रखा और नुक्ताचीनी करनेवालोंको दावत दी कि वे जहा-जहा भी उसमे गलतिया पाए वहा-वहा निशान लगा दे। नतीजा यह हुआ कि वह तस्वीर तो रही नही, एक धब्बा-सा हो गया । चित्रकारका मतलब यह था कि लोगोको दिखाए कि हरेकको खुश करना नामुमकिन है, और उसे खुद तसल्ली हो गई कि उसने एक अच्छा चित्र खीचा था । उसका तो काम ही था कि वह अपने मनके पसदकी और अपनी लियाकतके मुताबिक एक तस्वीर बनाए । मेरा भी वही हाल है । मै केवल बोलनेके लिए कभी नही बोलता । मै सिर्फ यह समझकर बोलता हू कि मेरे पास लोगोंके लिए देनेके लायक सदेश है ।

यह सच है कि आज मेरे और मेरे घने दोस्तोमे कुछ मतभेद है। बाज बाते जो उन्होने की या कर रहे है, उनसे मै सहमत नही । लेकिन दिल्लीमे रहकर मेरे लिए मौजूदा हालातपर अपनी राय न देना असभव है। और असलमे मतभेद क्या है ? अगर आप छानबीन करे तो आपको पता चलेगा कि मतभेदकी जड एक ही है । अहिसा मेरा धर्म है, काग्रेसका धर्म कभी नही रहा । काग्रेसने तो उसे केवल नीतिके रूपमे स्वीकार किया था । नीति उसी वक्ततक धर्म रह सकती है जबतक कि उसे चलाया जाय । उसके बाद नही । काग्रेसको पूरा अधिकार है कि जिस वक्त जरूरत न रहे उसी वक्त नीतिको बदल ले । धर्मकी और बात होती है। वह तो अमर है। वह कभी बदल नही सकता ।

काग्रेसके विधानमे नीति तो वही रखी गई है, लेकिन काग्रेसवालोके अमलने नीतिको बदल दिया है । कानूनके शास्त्री भले उसपर नुक्ता-चीनी करे, लेकिन आप और हम ऐसा नही कर सकते और न करना चाहिए । आजके काग्रेसी क्यो न अपनी नीतिको बदले ? कानूनकी बात हो ही जायगी । और यह बात भी समझने लायक है कि काग्रेसके विधानमे 'शाति'का शब्द इस्तेमाल किया गया है, 'अहिसा'का नही ।

१९३४मे जब काग्रेसकी बैठक बबईमे हुई थी तो मैंने बहुत कोशिश की कि 'अहिंसात्मक' शब्द 'शातिमय'की जगह ले, लेकिन मै असफल रहा ।

इसलिए अगर कोई चाहे तो 'शांति'के मानी अहिंसासे कुछ कम निकाल सकता है। मै खुद तो कोई फर्क नही पाता। लेकिन मेरी रायसे यहा कोई मतलब नही। फर्क है या नही यह फैसला विद्वानोको करना पडेगा। आपको और मुझे तो इतना ही समझ लेना चाहिए कि काग्रेसका अमल आज हर्गिज अहिंसात्मक नही है। अगर 'अहिंसा' काग्रेसका धर्म होता तो किस तरह फौजको सहायता देती, जैसा आज हो रहा है। फौज अगर चाहे तो जनताको खाकर फौजी-राज भी कायम कर सकेगी। क्या मै यह आशा विलकुल ही छोड दू कि जनता मेरी वात कभी भी नही सुनेगी? और अगर न सुनना चाहे तो फिर मेरे ऊपर जो नुक्ताचीनी करते है उनका क्या विगडता है, और वे मुझे वोलनेमे क्यो रोके?

मुझे एक वात स्पष्ट करनी चाहिए सो यह कि मैने साफ-साफ कह दिया और मान भी लिया है कि पिछले तीस साल जो लडाई हमने की वह अहिंसाके वलपर नही थी। वह तो सिर्फ मद विरोध था और ऐसा विरोध कमजोरोका हथियार है। उसे वे लोग इस्तेमाल करते है जो अहिंसाका उपयोग जानते नही, यह नही कि अहिसाका उपयोग करना चाहते नही। अगर हममे अहिंसात्मक लडाई करनेकी वहादुरी होती—और उसके लिए वीरोकी वहादुरी चाहिए—तो हम दुनियाके सामने आज आजाद हिंदका एक और ही चित्र दिखा सकते। लेकिन आज तो हम दो टुकडेका हिंद वना रहे है, एक ऐसा देश, जहा भाई-भाई आपसमे लड रहे है और एक-दूसरेपर जरा भी विश्वास नही रखते। ऐसा होनेके कारण हम खुराक और कपडेकी कमीपर काफी ध्यान नही दे पाते और उन करोडो गरीवोको कुछ नही दिखा सकते—वे गरीव जिनका एक भगवान ही उनके सामने रोजकी जरूरतोकी शक्लमे नजर आता है—जिनका लडाई-झगडोसे क्या वास्ता, सिवा सिनेमाकी तस्वीरोके, कि जिनसे एक-दूसरेको मारनेकी तदवीरके अलावा वे और क्या सीख सकते है?

: ६९ :

१५ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मैंने कुछ दिन हुए तामिलनाड और मलाबारके मदिरोंके बारेमे कहा था, जो हरिजनोके लिए खोले गए थे, और खासतौरसे रामेश्वरम्के मदिरका उल्लेख किया था। वह एक बहुत बडा मदिर है और उसके बारेमे वहा काफी वहम भरा हुआ था। उनका खयाल था कि हरिजनोके अदर जानेसे मदिर अपवित्र हो जायगा। परतु आजके एक खतमे मुझसे कहा गया है कि मैंने आध्र देशके तिरुपति मदिरका नाम नही लिया जो बहुत विशाल और प्राचीन मदिर है। उसमे यह भी लिखा है कि यदि मै अपनी गलती दुरुस्त कर दू तो आध्र देशके लोगोंको बहुत सतोष मिलेगा। मै तो इस मदिरकी महिमा बराबर जानता था, परतु मेरी दृष्टिमे तामिल-नाड और आध्र जुदा-जुदा सूबे नही है। आज तो कुछ आबहवा ही ऐसी बिगड गई है कि सब अलग-अलग रहना चाहते है। तो भी मुझे अच्छा लगा कि मै अपनी गलतीको दुरुस्त कर लू।

अभी कुछ बगाली भाई मिलने आए है। वे कहते है कि पश्चिमी बगालके जुदा हो जानेसे पूर्वी बगालके हिदुओके दिलमे ऐसा लगता है कि पश्चिमी बगालके हिदू अब उनको भूल जायगे। यदि ऐसा हुआ तो मुझको बडा दर्द होगा। अगर इस तरहसे हिदू हिदूको और मुसलमान मुसलमानको भूल जाय तो सब गोलमाल हो जायगा। हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई सब हिदुस्तानी है और हिंदुस्तानके रहनेवाले है, ऐसा हमे मानना चाहिए। मजहब या धर्म तो निजी बात है। मै ईश्वरको पूजना चाहता हू, उससे दुनियाकी कौन ताकत मुझे रोक सकती है। परतु यदि मुसलमान, पारसी, हिदू और ईसाई आदि सब अपनेको अलग-अलग मानने लगे तो पीछे हिदुस्तान रहा कहा? मै तो कबूल करूगा कि बगालके हिस्से ही क्या करने थे। मै बगाली मुसलमानोमे रहा हू। नोआखालीमे मै उनके बीच पैदल घूमता था। मैंने वहा सबके दिलोमे मोहब्बत पाई है। हिदुओको मुसलमानोसे डरना क्या था? जो मूर्खता और दीवाना-

पन आ गया, वह क्या हमेशा थोडे ही रहनेवाला है। मेरी समझमे तो पूर्वी बगालके हिंदुओके साथ बुरा होनेवाला नही है। मगर बहुत-सी बाते न चाहते हुए भी हुई और हो रही है। बगालके टुकडे हुए और हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान भी बन गए। परतु जो चीज हो गई उसे बर्दाश्त करके आगे बढना चाहिए और पीछे उसे दुरुस्त कर लेना चाहिए। पश्चिमी और पूर्वी बगालके हिंदू-मुसलमान एक साथ रहे और एक भाषा बोलते है। अत हिंदुओका वहा कोई बिगाडनेवाला नही है। यदि वहाका हिंदू भी मुसलमानको अपना दोस्त माने तो क्या पूर्वी बगालके मुसलमान उनको मारते ही रहेगे ? जब एक भी हिंदू मुसलमानको अपना दुश्मन नही मानेगा तो फिर वे सब दोस्त ही रहनेवाले है, इसमे मुझे कोई शक नही है।

उन्होंने यह भी पूछा है कि क्या बगालप्रातीय काग्रेस-कमेटी मिट जायगी, क्योंकि उसके भी तो दो टुकडे हो गए। मेरी दृष्टिसे तो बगाल-प्रातीय काग्रेस-कमेटीके हिसाबसे बगालके टुकडे नही हुए। जैसी वह आज है, वैसी ही रहनी चाहिए। वह हकूमतके कानूनसे बाहर है। अगर वह अपने टुकडे कर लेती है तो मै कहूगा कि पश्चिमी बगालने बेवफाई की है। आज काग्रेसकी रचना इस तरहकी है कि देहातमे काग्रेस-कमेटी होती है, फिर मडलमे, उसके बाद जिलेमे, सूबेमे और सबसे ऊपर अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटी है। ऐसा हमारा सिलसिला है। अत काग्रेस-कमेटी पूर्वी बगालमे होगी और पश्चिमी बगालमे भी। वे दोनो मिलकर बगालप्रातीय काग्रेस-कमेटी बनाएगे। काग्रेस-मुसलमान, ईसाई और पारसी आदि सबकी है। उसमे आगे भी कोई फर्क नही पडना चाहिए। इन बगाली भाइयोंने यह भी पूछा है कि क्या पूर्वी बगाल बिलकुल भिखारी बन गया है कि उसके मत्री भी पश्चिमी बगालसे आए। यह तो उनके लिए और भी हितकर होना चाहिए, क्योकि इससे पूर्वी और पश्चिमी बगालमे सबध बराबर बना रहता है। यह माना कि पूर्वी बगालमे मुसल-मान काफी पडे है, परतु यह कैसे मान लिया जाय कि सारे मुसलमान गदे है। बिहारमे कितने ही मुसलमान मारे गए, परतु तो भी मै कह सकता हू कि वहा लाखो हिंदू गदे बिल्कुल नही बने। कुछ लोगोकी गदगीकी वजहसे सारी कौमको गदा बताना बिल्कुल गलत है। इसका मतलब तो

यह है कि हमारे अदर स्वय गदगी है। हम नापाक और बुजदिल बन गए हैं। हमारे अदर अहिंसाकी बहादुरी नही है। वह बहादुरी केवल मरनेका इल्म सिखाती है, मारनेका नही। दुनियामे बडे-बडे लश्कर पडे है, मगर फिर भी सारी दुनियाकी आबादीको देखते हुए ये लश्कर मुट्ठी-भर है। एक ऐसा सिलसिला-सा बध गया है कि जिससे हमारी आख हमेशा टेढा ही देखती है। जब भी कुछ हो जाता है, हम फौज भेजनेकी ही माग करते है। नोआखाली, बिहार, पजाब और सीमाप्रात सब जगहोसे यही माग आई कि फौज भेजो तो हमारी रक्षा होगी। परतु जो बहादुर हो सकते है, वे ऐसा क्यो कहे ?

: ७० :

१९ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आजका जो भजन[१] था वह मैने बचपनमे ही, जब कि मै अग्रेजी हाई-स्कूलमे चला गया था, तब पढ लिया था। वह 'बालमित्र' नामक पुस्तककी प्रार्थना-मालामे आ गया था। भजन अच्छा और मीठा है और बात भी सच्ची है कि हम अपने शरीरकी फिक्र क्यो करे ? वह आज है और कल चला जायगा। या तो जल जायगा या कब्रमे चला जायगा, राख हो जायगा या मिट्टीमे मिल जायगा, पर बात एक ही है। यदि पानीमे फेका गया तो जीव-जतु खा जाएगे। मतलब यह कि आखिरमे शरीरका हाल एक ही-सा होता है। परतु इस भजनमे—'आप मुए पीछे डूब गई दुनिया'—यह अच्छा नही लगता। भले ही यह कबीरका बनाया हुआ हो, मगर उससे क्या हुआ ? मुझे तो यह बहुत चुभता है। ऐसा माननेमे कुछ स्वार्थ काम करता है, यह मेरी छोटी बुद्धि मुझे बताती है। इसको भजनमालामेसे निकाल देना चाहिए। हमारे मरनेके बाद दुनिया कैसे डूबनेवाली है ? पहले तो यह कि हम मरते ही नही है, क्योकि आत्मा

[१] "इस तन धनकी कौन बड़ाई।"

अमर है। फिर दुनियाका तो मरना ही क्या है, वह तो हमेशा बदलती रहती है। उसको तो परमात्माने एक खेल बना रखा है। मगर जितना भजनमें कहा गया है उसको हम मानकर ही नही बैठ जाते है। यदि वह सब मान ले तो पीछे यह विधान-परिषद् क्यो बैठती ? क्यो हमारे नेता लोग कायदे-कानून बनाते। यदि वे सब यही मान ले कि हमारे मरनेके बाद दुनिया डूब जायगी तो फिर कोई किसीके लिए कुछ न करता। अत इस वाक्यमे स्वार्थकी पराकाष्ठा आ जाती है।

मुझसे कुछ अखबारनवीस मिलने आए थे। उनके साथ बातचीतमे द्राविडस्तानकी चर्चा आ गई थी। हिंदुस्तानके विंध्याचलके दक्षिणमे जो प्रदेश पडा है उसे द्राविडस्तान कहते है। इस द्राविड प्रदेशमे तामिल, तेलगू, मलयाली और कन्नड ये चार भाषाए बोली जाती है। मैने थोडा-थोडा सबको देख लिया है और मै कह सकता हू कि इनके मूलमे सस्कृत ही पडी है। तेलगू यदि आप सुनेगे तो उसमे सस्कृतके ही शब्द सुनाई देगे। तामिलमे सस्कृतके शब्द तो काफी है, परतु उनको उन्होने द्राविडी लिबास पहना दिया है। मलयाली भी सस्कृतसे मिलती-जुलती है। कर्नाटकमे कन्नड भाषाका भी यही हाल है। मतलब यह कि इन सब भाषाओका मूल स्रोत सस्कृत ही है। मै तो द्राविडस्तानको हिंदुस्तानसे अलग मानता ही नही हू। अग्रेजोने हम सबको एक कर दिया है। काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारीतक जो लोग पडे है वे सब हिंदुस्तानी है। उनमे आर्य और अनार्य या आर्यावर्त और द्राविडस्तानका भेदभाव करना, कोरी अज्ञानता है। इस बारेमे मेरे दिलमे कोई शक नही है।

अब प्रश्न केवल भाषाका रह जाता है। हमारे यहा हिंदी और उर्दू ये दो भाषाए है, जो हिंदुस्तानमे बनी और हिंदुस्तानियोंद्वारा बनाई गई है। उनका व्याकरण भी एक ही रहा है। इन दोनोंको मिलाकर मैने हिंदुस्तानी चलाई है। इस भाषाको करोडो लोग बोलते है। यह एक ऐसी सामान्य भाषा है जिसे हिंदू और मुसलमान दोनो समझते है। यदि आप सस्कृतमय हिंदी बोले या अरबी-फारसीके शब्दोसे भरी हुई उर्दू बोले, जैसा कि प्रो० अब्दुल बारी बोलते थे, तो बहुत कम लोग उसे समझेगे। तो क्या हम द्राविडस्तानकी चारों भाषाओका अनादर

कर दे ? मेरा मतलब यह है कि वे मातृभाषाके तौरपर अपनी-अपनी प्रातीय भाषाको रख सकते है, मगर राष्ट्रभाषाके नाते हिदुस्तानीको जरूर सीख ले। यो तो हर सूबेकी अलग-अलग भाषा है। उडिया, बगला, आसामी, सिधी, पजाबी, गुजराती तथा मराठी, ये सब भाषाए हिदुस्तानीसे भिन्न है। तो क्या हम ये सब भाषाए सीखे या अग्रेजीको अपनी राष्ट्र-भाषा मानने लगे ? यदि मै अब अग्रेजीमे बोलना शुरू कर दू तो आपमेसे बहुत कम लोग समझेगे। ८-१० वर्ष परिश्रम करे तब कही लगडी अग्रेजी हम सीख पाते है। इस तरहसे तो सारा हिदुस्तान पागल बन जायगा। अत अग्रेजी हमारी राष्ट्र-भाषा नही बन सकती। वह दुनियाकी भाषा या व्यापारकी भाषा रह सकती है, हालाकि दुनियाकी भाषा भी अभी-तक कोई बा-जाब्ता तय नही हुई है। हिदुस्तानकी भाषा तो हिदुस्तानी रहनेवाली है, इसमे मुझे कोई शक नही है। प्रातीय भाषाए अपनी-अपनी जगह बनी रह सकती है, परतु सबसे ज्यादा लोग जो भाषा बोलते है वह हिंदुस्तानी ही है। हिदी-साहित्य-सम्मेलनमे भी मै रहा हू। वहा जिस प्रकारकी हिंदी बोली जाती है उसे बहुत कम लोग समझ सकते है। उसी प्रकार जो ठेठ उर्दू है उसे बहुत थोडे लोग बोलते और समझते है। जन-साधारणकी भाषा तो हिदुस्तानी है। जितना हमे चाहिए उतना साहित्य भी हम उसमेसे पैदा कर सकते है। द्राविडस्तानकी मातृभाषा तामिल या तेलगू बनी रहनी चाहिए, मगर वहाके लोगोका धर्म या फर्ज यह हो जाता है कि वे जितनी जल्दीसे हिदुस्तानी सीख सके, सीख ले। यदि वे हिंदुस्तानीको हिदी और उर्दू दोनो लिपियोमे सीखे तो बहुत ही अच्छा हो, क्योकि इससे दोनो भाषाओका साहित्य उनको मिल जायगा; परतु यदि वे केवल बोलनेके लिए ही हिंदुस्तानी सीखना चाहते है तो उसे अपनी लिपिमे सीख ले। मद्रासमे हिदुस्तानी-प्रचार-सभा हिदुस्तानीको उनकी अपनी लिपियोमे सिखानेका कार्य कर रही है। यदि वहाके लोगोको स्वदेशीका सच्चा अभिमान है तो उनको राष्ट्रभाषा सीख ही लेनी चाहिए।

मगर आज हम इतने बदनसीब हो गए है कि जहा एक ओर पाकि-स्तान बना वहा दूसरी ओरसे द्राविडस्तानकी माग आने लगी। यदि यही हाल रहा तो हिंदुस्तान कहा रह जायगा ! हम गुलामकी हालतमे तो

एक रहे, परतु आजादी मिलते ही टुकडे-टुकडे हो गए, इससे वडी मूर्खता हमारी और क्या होगी ?

आज हम आजादी लेनेको तो तैयार हो गए, परतु हम उसके लिए सामान क्या तैयार कर रहे है ? सब लोग अपने-अपने शौकके मुताविक चलना चाहते है। यही तो मूर्खताकी सबसे वडी निशानी है। अवतक तो एक तीसरी ताकतने हर सूबेको अपने मातहत रखा, परतु अब हमारा परम धर्म हो जाता है कि हम खुशीसे सब एक होकर रहे। हमारे यहा जो लश्कर रहनेवाला है, उसका काम किसी सूबेको दबाकर सघके अधीन रखना नही होगा। इग्लैंडमे जो लश्कर है वह वहा अग्रेजोको दवानेके लिए नही है। वहा जो पुलिस रहती है उसके हाथमे भी कभी बदूक नही रहती, केवल लकडीका छोटा डडा होता है। वे आम लामबदी भी करते है तो अग्रेजोको दवानेके लिए नही, किसी बाहरी आक्रमणको रोकनेके लिए अथवा समुद्रपर अपनी सरदारी बनाए रखनेके लिए करते है। इग्लैंडकी सेना वहाके लोगोको बचानेके लिए नही होती। अत यदि हमने अपने लश्करसे वही काम लिया जो अवतक लेते रहे है, तो वह लश्कर आपको ही खा जानेवाला है। हम अपनी ही तरफ देखना सीखे, लश्करकी तरफ नही। हिंदू-मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि सब इसी ढगके रहनेवाले है। उनके मदिर और मस्जिद अलग-अलग रह सकते है, परतु हिंदुस्तानरूपी जो बडा मदिर है वह सबका है। सब मजहबोके लोग एक ही ईश्वरकी इबादत करते है।

दूसरी बात, जो मैं कल सुनाऊगा, वह सुनने लायक होगी। आजकी बात भी सुनने लायक थी और यदि उसपर अमल न किया गया तो हमारा निश्चय ही सत्यानाश होनेवाला है।

: ७१ :

१७ जुलाई १६४७

भाइयो और बहनो,

आज जो भजन[1] आप लोगोने सुना वह सूरदासजीका बनाया हुआ है। वह हम सवको विनम्र बनानेवाला भजन है। सूरदास कहते हैं कि मुझ-जैसा कुटिल, खल और कामी कौन हो सकता है कि जिसने शरीर दिया उसीको मै भूल गया। इसी भजनमे वे यह भी कहते है कि हरिजनो-को छोडकर उसने हरि-विमुख लोगोका साथ किया। 'हरिजन' शब्द मैने सूरदाससे ही लिया है, वैसे तो एक गुजराती कविने भी इस शब्दका प्रयोग किया है। परतु क्या सूरदास-जैसा भक्त कुटिल और खल हो सकता था? जवानीमें मैंने जब यह भजन पढा तब मैंने यह सोचा कि ये साधु-सत लोग बहुत अतिशयोक्ति करते है। मगर पीछे मैने इस बातको समझा कि उसने जो कुछ कहा वह अपने-आपको सामने रखकर ही कहा था। उसने अपने लिए कोई माप या गज बना रखा था जिसके मुताबिक वह यदि एक सेकिंडके लिए भी भगवानका नाम भूल जाता तो अपनेको कुटिल और खल समझता था।

आज जो दो बाते मै आपसे कहना चाहता हू उनपर भी यही चीज लागू होती है। अखबारी समाचारोसे मालूम हुआ है कि दक्षिण अफ्रीकामे भारतीयोके साथ गुडागाही बरती जा रही है। उनको हलाक किया जा रहा है। मै २० वर्षतक वहा रहा हू। इसलिए मै जानता हू कि वहा हिंदुस्तानियोके साथ क्या गुजरती है। मै तो वहा उनके-जैसा ही हब्शी बन गया था। वहा मुसलमान भी बहुत अधिक तादादमे है, मगर वे सब अपने-आपको हिंदुस्तानी कहते हैं। ईश्वर, कम-से-कम हमे इतनी सद्-बुद्धि तो दे कि बाहर दुनियामे हम अपने-आपको हिदुस्तानी कहे। यदि वहा भी हम अपनेको हिदू, मुसलमान या पाकिस्तानी कहने लगे तो निश्चय-से हमारा खात्मा हो जानेवाला है।

---

[1] "मो सम कौन कुटिल खल कामी।"

अभी पिछले दिनो स्वरूप[1] सयुक्त राष्ट्रीय सघके सामने दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोका पक्ष रखनेके लिए जस्टिस छागला आदिके साथ अमरीका गई थी। उसके बाद अफ्रीकामे हिंदुस्तानियोको कानूनी तौरसे तो तग नही किया जा रहा है, मगर गुडागाहीसे मारना-पीटना शुरू कर दिया है। यदि यही हाल जारी रहा तो जो मुट्ठीभर हिंदुस्तानी है वे कैसे वहा रह सकेगे? मै एक बार ट्रासवाल चला गया था और दो हजार लोगोके साथ वहा पैदल घूमा। एक बोअरने भी वहा हमको नही छूआ। हमे तो बोअर लोग पानी भी पिला देते थे। हमारे यहा तो पानी बहुत रहता है, मगर वहा पानी कम मिलता है। जब वर्षा होती है तब वे पानी जमा करके रख लेते है और उसे ताला लगाकर रखते है। हम बोअरोके साथ दोस्ती करके जहा चाहते वहा चले जाते थे। परतु आज तो मै एक दूसरी ही शक्ल देख रहा हू। चूकि हमारे यहा अब दो सरकारे बन रही है, इसलिए मै जिना साहब और जवाहरलालजी दोनोसे कहूगा कि उन्हे मिलकर स्मट्सके पास तार भेजना चाहिए। स्मट्स साहब मुझको अपना दोस्त मानते है। मै भी उनको एक दोस्तके नाते यह कहूगा कि वे गोरे लोगोसे कह दे कि वे दक्षिण अफ्रीकामे एक भी हिंदुस्तानीके साथ मारपीट न करे। यदि तब भी वे उनका कहना न माने तो वे अपने पदसे इस्तीफा दे दे। लार्ड माउटबेटनको भी खामोश होकर नही बैठना चाहिए। वह नौ-सेनाका आला दर्जेका एड-मिरल है और शाही कुटुबका है। फिलिप माउटबेटन तो उनके लडकेके समान है, जिसकी कि शादी इग्लैडकी राजकुमारी एलिजाबेथसे होने-वाली है। इसके अलावा माउटबेटन १५ अगस्ततक तो वाइसराय भी है और उसके बाद गवर्नर-जनरल रहेगे। अत उनको अपनी इन सब बातोसे लाभ उठाकर जनरल स्मट्सको कहना चाहिए कि हिंदुस्तान भी उसके अपने देशकी तरह एक डोमीनियन बन गया है। अर्थात् एक बडे ब्रिटिश कुटुबका सदस्य हो गया है। अत उनके देशमे भारतीयोके साथ जो कुछ हो रहा है, वह बद होना चाहिए।

---

[1] श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित।

डोमीनियन स्टेटसको आजादीसे भी बढकर बताया गया है। परतु जबतक मै इस फलको चख नही लेता तबतक कैसे कह सकता हू कि अमृत है या उसमे जहर भरा है। उसमे शायद अमृत ही होगा, मगर हमे उसको चखने तो दो?

दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोंको मेरी यह सलाह है कि वे सब वहा भले आदमी बनकर रहे। उनमेसे जो अच्छे पैसेवाले है वे अपने गरीब मुसलमान भाइयोको न छोडे, जो कि वहा अछूतोंकी तरह पडे है।

मुझसे यह पूछा गया है कि दक्षिण भारतमे तो हरिजनोके लिए इतना काम हो गया और तामिलनाड तथा आध्रके सब बडे-बडे मदिर हरिजनोके लिए खोल दिए गए, परतु युक्तप्रातका क्या हुआ? युक्त-प्रातमे हरिद्वार पडा है। क्या हरिद्वारके मदिरोंमे अछूत जा सकते है? दक्षिण भारतकी त्रावनकोर रियासतमे तो बहुत पहलेसे ही यह सब हो गया था। वहाके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर आज तो हमसे बिगडे हुए है, और बिगडे हुए है भी या नही यह आज तो मै नही जानता। मगर तब उन्होने वहाके महाराजाको समझाकर अबसे बहुत पहले ही कानूनद्वारा अपनी रियासतमे अछूतपनको मिटा दिया था। युक्तप्रातमे हरिद्वारके अलावा काशी विश्वनाथ भी है जहा गगाजीमे स्नान करनेसे मोक्ष मिलता बताया जाता है। वहाके मदिरोमे हरिजन जा सकते है, ऐसा मै नही कह सकता। परतु मै तो यही कहूगा कि जहा हरिजन नही जा सकते वे मदिर नापाक है।

आज दुनियामे सब धर्मोकी कड़ी परीक्षा हो रही है। इस परीक्षामे हमारे हिंदू-धर्मको सौ फीसदी नबर मिलने चाहिए ६६ फीसदी भी नही।

: ७२ :

१८ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आजका जो भजन[1] है, वह समझने-जैसा है, क्योकि हम लोग भी तो आखिर भीरमे पडे हुए है। न हमारे पास खानेके लिए अन्न है, न पहननेके लिए कपडा। तो क्या हम इसकी शिकायत जवाहरलालजीसे या सरदारजीसे करे, क्योकि वही तो आज हमारे हाकिम बन गए है? वाइसराय साहबने गद्दी छोड दी या छोडने जा रहे है। गवर्नर-जनरल तो उनको हमने बनाया है, इसलिए बन रहे है। पहले जो अफसर होते थे वे लदनसे नियुक्त होकर आते थे। मगर अब तो स्वाधीनता-बिल पास हो गया है और कलके अखबारोमे आप यह भी पढ लेगे कि बादशाहने उस बिलपर अपने दस्तखत दे दिए। अत सारी सत्ता अब हिंदुस्तानकी आम जनताके हाथमे आ गई। मगर इस भजनमे जो चीज भरी है वह यह है कि जब हमपर भीर पडती है तब हम दूसरोको नही, बल्कि तुमको, अर्थात् ईश्वरको ही पुकारेगे। केवल वही हमारी भीर हर सकते है। यदि उसको याद करके हम अपना काम चलायेगे तो हमारा काम ठीक चलता जायगा, नही तो वह बिगड जायगा। वह दुनियाका बादशाह है। अत. उसके मातहत रहकर काम करनेमे ही हमारी भलाई है।

'डॉन' नामका एक अग्रेजी अखबार दिल्लीसे निकलता है। वह जिना साहबका अखबार है और उसमे रोज कुछ-न-कुछ गालियां आ ही जाती है। मुझको भी आती है। मै तो उनको देखकर केवल हँस देता हू। मगर आज तो उसके एडीटरने मेरे नामसे एक खत छापा है। खासा लिखा हुआ है। वे कहते है कि आप जिना साहबसे जो चीख-चीखकर कहते है कि आपका इम्तहान होनेवाला है, सो यह सब बद कर दे।

क्या मै एडीटर साहबसे पूछ सकता हू कि कराचीसे, जहापर कि

---

[1] "हरि तुम हरो जनकी भीर।"

पाकिस्तानकी राजधानी बन रही है, जो हिंदू लोग दुखी और डरके मारे भाग रहे है उसकी वजह क्या है? क्यो वे डरे हुए है? सिंधके हिंदू बहुत आला दर्जेके व्यापारी है। वे क्यो बबई, मद्रास या किसी और जगह भागकर जा रहे है? इससे सिंधकी ही हानि होगी, उनकी नही। मैं जानता हू कि वे जहा भी जायंगे वही पैसे पैदा करेगे। वे कही भी खोनेवाले नही है। दक्षिण अमरीका तकमे सिंधी मिल जाते है। दुनियामे कोई ऐसी जगह नही होगी जहा सिंधी न रहते हों। दक्षिण अफ्रीकामे तो उन्होने अच्छा पैसा पैदा किया है और जब मै वहा था तब मुझे भी वे गरीब लोगोंके हितमे खर्च करनेके लिए खूब पैसा देते थे; परतु उनमे एक अवगुण यह है कि वे शराब पीते है। उसे वे छोड भी नही सकते, क्योकि उसके छोडनेसे वे मर (?) भी जाते है।

'डॉन'ने यह भी लिखा है कि आप जिना साहब या अन्य लीगी नेताओको ही क्यो कहते है? आज युक्तप्रातमे क्या हो रहा है? वह तो आपका अपना सूबा है। पर सिंध भी तो मेरा ही सूबा है, जैसा युक्तप्रात। मै तो सारे हिंदुस्तानको, जिसमे पाकिस्तान भी शामिल है अपना मानता हू। मै अपनको पाकिस्तानका भी तो बाशिंदा कहता हू। इसलिए नही कि मैं वहा कोई हकदार बनना चाहता हू। मुझे कोई हाकिमी नही चाहिए। मै तो केवल पेटके लिए रोटी चाहता हू और वह ईश्वर मुझको दे देता है। मुझे तो युक्तप्रातके बारेमे कुछ पता ही नही था। इसके अलावा मैंने किसीपर इल्जाम तो लगाया ही नही। एडीटर बड़े आदमी है। वे अगर ऐसा समझते है कि मै जो कुछ कहता हू वह सही नही है तो उनको क्या परवाह पडी थी! मेरे-जैसे कितने ही कहते फिरते है। मगर युक्तप्रातके बारेमे पतजीसे मेरी बाते हुई है। उन्होने मुझे बताया कि जितना हमसे होता है हम मुसलमानोको बर्दाश्त करते है। मगर हम हर जगह तो नही पहुच सकते। मुस्लिम लीगियोने जब रोज हिंदुओको गालिया देने और उनको सतानेपर कमर कस ली हो तब कही-कही हिंदू भी बिगड जाते है। हम जहातक होता है सबके साथ इन्साफ करते है। पतजीने यह कहा है कि गढमुक्तेश्वरमे हिंदूओने जो किया वह अच्छा नही किया। और अखबारी समाचारोके

अनुसार तो युक्तप्रातके मुस्लिम लीगी नेताओतकने पत-मत्रिमडलके कामकी सराहना की है।

परतु मै 'डॉन'के एडीटर साहबको यह कहना चाहता हू कि अगर यह मान भी लिया जाय कि उनकी सब बाते ठीक है और पतजीने जो कुछ कहा वह कोई वेद-वाक्य नही है, तो भी कोई वजह नही कि अगर युक्त-प्रातमे एक मुसलमानका गला कटता है तो उसके बदलेमे सिंध या पजाबमे दस हिंदुओके गले काटे जाय। मै तो यह देखनेके लिए जिंदा रहना चाहता हू कि हम इस मजहबी खुराफातको बिल्कुल भूल जाय। हमने चाहे किसी भी मजहबमे जन्म लिया हो, मगर कर्मसे हमे हिंदुस्तानी होना चाहिए। जब यह हो जायगा तभी हम अपने देशकी आजादी कायम रख सकेगे।

'डॉन'के एडीटर अगर सचमुच इस्लामकी खिदमत करना चाहते है, तो मै कहूगा कि इस्लाम यह तरीका नही सिखलाता। जहातक जिना साहबसे कहनेका सबध है, मै तो लार्ड माउटबेटन और जवाहर-लालजीको भी कहता रहता हू। जवाहरलालजीके कहने और करनेमे अगर फर्क हो तो वे भले ही अपने घरके 'पडित' बने रहे, मेरेलिए तो वे बदमाश है। ऐसा कहकर मै जवाहरलालजीको कोई गाली थोडे ही देता हू। मगर 'डॉन'के एडीटरसे मै इतना अवश्य कहूगा कि उनकी कलममे जो जहर है उसको वे छोड दे। राष्ट्रीय पत्रोंमे भी कभी-कभी भली-बुरी बाते आ जाती है। पर अगर सब मिलकर आपसी झगड़ेकी खबरे न छापे, तो मै कहूगा कि हमने एक बडा भारी काम कर लिया।

: ७३ :

१९ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज वर्किंग कमेटीकी बैठक यहा हुई थी, परतु उसमे ऐसी कोई बात नही हुई जो मै आपको बता सकू, अर्थात् उसमे कोई बता सकने

लायक बात ही नही हुई। एक बातकी ओर मै आज आपका ध्यान दिलाना चाहता हू और वह यह कि काग्रेसी लोगोंमे आज ऐसी बेसब्री, या इसे गदगी कहना चाहिए, पैदा हो गई है कि किसी-न-किसी तरह काग्रेसकी मार्फत ऊपर चले जाय। अगर काग्रेस केवल मुट्ठीभर लोगोकी होती और वे ऐसी इच्छा रखते, तब तो बात समझमे आने लायक थी। परतु काग्रेसमे तो करोडोंकी तादादमे लोग है और यदि ये सब-के-सब ऐसी इच्छा करे तो हकूमत तो मर जायगी। नौकरी दो ही तरहके लोग किया करते है। एक तो वे जो और सब तरफसे लाचार हो जाय और दूसरे वे जो अपने सब स्वार्थ छोडकर सेवाकी दृष्टिसे ऐसा करे। चूकि काग्रेसके हाथमे शासनकी बागडोर आ गई है, इसलिए करोडो रुपयेकी आय और व्ययका हक भी उसको मिल गया है। अगर सब काग्रेसी यह समझ ले कि काग्रेस जो खर्च करे उसमेसे उनके पल्ले भी कुछ पडना चाहिए और कर-दाता यह मान बैठे कि चूकि काग्रेसके हाथमे सत्ता है इसलिए अब कर देनेकी कोई जरूरत नही, तब कोई काम नही चल सकेगा। इसका मतलब तो यह हुआ कि हम अपना धर्म तो भूल गए और अधर्मको अपना रहे है।

आजकल मेरे पास तार-पर-तार आ रहे है। मै यह नही कहता कि मेरे पास ही ये तार आ रहे है। जिनके हाथोमे हकूमत है उनके पास तो और भी अधिक तार आ रहे होगे। उनमे लिखा है कि हिंदुस्तानमे गो-वध रुकना चाहिए और वह भी ऐसी गायोका जो दूध देती है तथा हलमे चलाने लायक बैलोका। तार भेजनेवालोको शायद यह मालूम नही है कि मै जब दक्षिण अफ्रीकामे था तब भी गायका पुजारी और उसका भक्त था, परतु जिसकी भक्ति हम करते है उसे हमारी रक्षा करनी चाहिए या हम उसकी रक्षा करे? मगर हकीकत तो यह है कि जो अपनेको गो-रक्षक कहते है, वही गो-भक्षक है। वे यही समझकर मुझे तार देते है कि मै जवाहरलाल या सरदारसे ऐसा कानून बनानेके लिए कहू, परतु मै उनसे नही कहूंगा। मै तो इन गो-रक्षकोसे कहूगा कि आप क्यो व्यर्थ इतना पैसा तारोपर खर्च करते है? उस पैसेको गायोपर ही क्यों न खर्च करे? अगर आप नही खर्च कर सकते तो

उसे मेरे पास भेज दे। मै तो यह कहूगा कि गायकी पूजा करनेवाले भी हम है और उसका वध करनेवाले भी हमी है। गायोंको हम इतना कम चराते है और बैलोंपर इतना अधिक वजन लादते है कि उनकी हड्डी-ही-हड्डी देखनेमे आती है। लकडीमे भी चोभनी लगा लेते है और जब बैल नही चलता तब उसके बदनमे चुभो देते है। ऐसे जो लोग है उनको यह कहनेका क्या हक है कि गोकुशी बद होनी चाहिए। आखिर गो-धन तो सारा हिंदुओके ही घरोमे भरा है। वे क्यो कसाइयोके हाथ उन्हे बेच देते है? हिंदू तो कम दूध देनेवाली गायको खरीदेगा नही, चाहे गौशालावाले भले ही खरीद ले, क्योकि उनके पास तो धर्मादेका पैसा होता है। तब बाकी गाय बूचडखानेमे ही जाती है। इसके अलावा आज कोई जमाना तो बदल नही गया है। हम जो थे वही आज है और वही १५ अगस्तके बाद रहनेवाले है। जैसी दुर्बल गाये मै आज हिदुस्तानमे देखता हू वैसी मैने दुनियाके किसी हिस्सेमे नही देखी। हम तो यहा धर्मके नामपर ही अधर्म कर रहे है। सरदार या जवाहरलाल कानून बनाकर इस गोकुशीको बद कर दे ऐसी चीज नही है। कानून तो लडाईके दिनोंमे भी बनाए गए थे, क्योकि दूध तो आखिर उनको भी चाहिए था। उस वक्त भी दूध देनेवाली गायोंका वध बद था और यह सब जगह हो सकता है। यह तो पाकिस्तानमे भी होनेवाला है, क्योंकि दूध तो उनको भी पीनेको चाहिए।

मुझसे कुछ प्रश्न पूछे गए है जिनके जवाब इस प्रकार है—

प्रश्न . अभी हमने सुना है कि जो हमारा राष्ट्रीय झडा होनेवाला है उसके एक कोनेमे यूनियन जैक होगा। यह केवल सुनी हुई और अखबारोकी पढी हुई बात है। अगर यह सच है तो हम उस झडेको फाड डालेगे और उसके पीछे अपनी जान तक दे देगे।

उत्तर अगर हमारे झडेके एक कोनेमे यूनियन जैक लगाया गया है तो क्या गुनाह किया? गुनाह अगर किया होगा तो अग्रेजोने किया। उनके झडेका क्या दोष है? अग्रेजोंकी खूबी भी तो आप देखिए। वे स्वेच्छासे आपके हाथमे बागडोर देकर जा रहे है। कितनी खूबीकी बात है कि इतना बडा बिल जिसमे सारी सल्तनतको उन्होने फेक दिया, पार्ला-

मेटने पास करनेमे एक सप्ताह भी नही लगाया। एक जमाना वह था जब कि हम लोगोंके मिन्नते करते रहनेपर भी छोटेसे बिल पास होनेमे भी एक-एक साल लग जाता था। उस बिलमे उन्होंने कोई सफाई की है या नही, यह तो बादमे तजर्वेसे ही पता चलेगा। मगर यूनियन जैक रखनेमे तो हमारी शराफत ही थी। हम अपने सबसे बडे दरवानके तौर-पर लार्ड माउटबेटनको यहा रखते है। वह पहले इग्लैडके बादशाहका नौकर होता था मगर अब हमारा नौकर है। जब हम उसको अपनी नौकरीमे रखते है, तब एक कोनेमे उसका झडा भी रख लेते है तो उससे हिंदुस्तानके साथ कोई बेवफाई नही होती।

पर यह तो मैने आपको अपनी राय बताई है। मगर मैने आज यह सुन लिया है कि यूनियन जैककी जो बात थी वह हमारे झडेमे नही होनेवाली है। मुझको तो इस बातका दर्द होता है कि काग्रेसी नेताओंने इतनी उदारता क्यो नही दिखाई? हम उससे अग्रेजोके साथ अपनी मित्रताका सबूत देते। आज अगर मेरी वैसी ही चलती जैसी पहले चलती थी तो मै उन लोगोंको डाटनेवाला था। आखिर हम लोग अपनी इन्सानियत और शराफतको क्यो छोडे?

: ७४ :

२० जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझको कुछ लोग ऐसा सुनाते है, और सुनानेका उनको हक भी है, कि मै आजकल ऐसी बाते कहता हू जिससे लोगोंका उत्साह नही बढता। वे कहते है कि जिस आजादीके लिए आप लड रहे थे वह तो मिल गई और राजनैतिक आजादीके साथ-ही-साथ आर्थिक आजादी भी मिल जायगी। यह सब कुछ होनेपर भी मै आजादीके दिन, अर्थात १५ अगस्तको खुशी नही मना सकता। मै आपको धोखा देना नही चाहता, इसलिए मै जाहिरा यह बात कह रहा हू। मगर मै आपसे यह नही

कह सकता कि आप भी खुशी न मनाए। आखिर सब काम मेरी मर्जीके मुताबिक थोडे ही होते है। मै तो हिदुस्तानके टुकडे करना भी नही चाहता था, मगर वे होकर रहे। जब वे हो गए तो उसके लिए रोना क्या? अगर इससे भी बुरी चीज हो जाती तब भी मै नही रोता। हिदुस्तानके टुकडे होनेका जो दुःख आपको है उससे अधिक मुझको होगा। मेरी सारी जिदगी लडाई लडनेमे बीती है या यह कहिए कि मेरा सारा जीवन करीब-करीब बागी रहा है। तब ऐसे आदमीको रोना कैसे आ सकता है? जब नोआखालीमे गया तब मैने वहा रोते हुओके आसू सुखा दिए। मैने उनको बताया कि जो लोग मर गए उनके लिए रोना क्या? परतु जिन लोगोंके हाथोमे हमने बागडोर सौपी है वे बहुत बडे आदमी है। वे जब कहते है कि खुशी मनाई जानी चाहिए तब आपको वह मनानी ही चाहिए। यह न सोचे कि गाधी क्यों नही खुशी मनाता। अगर कोई न मनाना चाहे तो काग्रेस किसीको मजबूर तो करती नही; परतु मेरी अपनी यह राय है कि वह दिन खुशी मनानेके लिए नही है। इसका मतलब यह नही है कि अग्रेज यहासे जायगे नही। १५ अगस्त-तक तो बहुतसे गोरे अफसर यह देश छोड चुकेगे। जो रहेगे भी, तो वे हमारे गुमाश्ते बनकर रहेगे। अब उनकी भी नियुक्ति लदनसे न होकर यहासे हुआ करेगी।

मगर हकीकत तो यह है कि आज जो आजादी हमे मिली है वह हिदुस्तान और पाकिस्तान दोनोको आपसमे लडाई लडनेका सामान भी साथ देती है। तब हम उस दिन दिया-बत्ती क्या जलाए? मै तो उस दिन आजादी मिली समझूगा जब कि हिदू और मुसलमानोके दिलोंकी सफाई हो जायगी। अभी पंजाबके कुछ मुस्लिम-लीगी भाइयोने यह धमकी दी है कि अगर सीमा-कमीशनने अपना फैसला, जैसा हम चाहते है, वैसा न दिया तो हम लडकर लेंगे। सिख भाई भी इसी तरहकी धमकिया दे रहे है। जब हम सब किसीको पच मान लेते है तो वह जो फैसला दे उसे कबूल कर लेना चाहिए। 'लडके लेगे पाकिस्तान' और 'लड़के लेगे सिक्खिस्तान'—यह चीज हममेसे कब जानेवाली है? मै तो केवल एक ही लडाई जानता हू और वह सत्याग्रहकी लडाई है।

उस लडाईसे आत्म-शुद्धि होती है। वह लडाई अगर दुनियामे हमेशा चलती रहे तो अच्छा ही है। मै अपने हिंदू, सिक्ख और मुस्लिम भाइयोंसे कहता हू कि जब हमने सीमा-कमीशनको अपना पच मान लिया तो उसका फैसला मानना उनका धर्म हो जाता है। मगर आजकी आबहवासे मुझे जब वह सुगधि नही मिलती तब खुशी किस बातकी? अग्रेजोंका यहासे चले जाना ही मेरे लिए काफी नही है।

ब्रह्मदेश भी हिंदुस्तानकी तरह आजाद हो रहा है। वहाके नेता जनरल यू आग-सागने आधुनिक बर्माको जन्म दिया और उसे आजादीके दरवाजेपर लाकर छोड दिया। वह सत्याग्रही नहीं था तो उससे क्या हुआ? वह एक बहादुर लडाका था और उसीके फलस्वरूप आज बर्मा आजाद होने जा रहा है। एक सशस्त्र गिरोहने उनको और उनके चार अन्य साथियोंको कत्ल कर दिया, यह कोई छोटी बात नही है। हम चाहे उनसे कितनी ही दूर हो, मगर हमारे लिए यह बड़े रजकी बात है। अगर ऐसी घटनाए होती रही तो दुनियाका क्या हाल होगा? हत्यारे सचमुच लुटेरे थे, ऐसा मुझे नही लगता। मै बर्मामे काफी रहा हू। रगून और माडले आदि स्थान सब मेरे देखे हुए है। वहा बुद्ध-धर्म चलता है। बर्माके लोग अधिकाश बुद्ध-धर्मको मानते है। जहा बुद्ध-धर्म प्रचलित है वहा ऐसे खून-खच्चर क्यो? इन हत्याओंमे लुटेरूपन नही, बल्कि उनके पीछे कुछ पार्टीबाजी रही है। इस तरहकी लडाइयोने दुनियाका सत्यानाश कर दिया है। इस तरहसे तो जो हमारे मुखालिफ है वे आकर हमारा खून करने लगे तो कैसे काम चलेगा। बर्मा जब आजादीके दरवाजेमे दाखिल हो गया है तब ऐसा होना बहुत दुःखदायी बात है। हम ऐसे जाहिल क्यो बन जाते है?

मुझे आशा है कि हिदुस्तान इससे सबक लेगा, क्योकि यह न केवल बर्माके लिए बल्कि सारे एशिया और ससारके लिए एक दुखद घटना हुई है। हम सब यह प्रार्थना करे कि हे भगवान, बर्माके जो लोग है वे हमारी ही तरहसे आजादीके लिए तडप रहे है, उनको तू इस दुखमे सांत्वना दे और मृत व्यक्तियोंके परिवारोको शोक सहन करनेकी शक्ति दे। जिन लोगोने खून किया है उनके दिलोकी भी तबदीली कर।

'डॉन' अखवारके एडीटरने आजके अकमे मेरे दो सुझाव मान लिए है। यह पढकर मुझको अच्छा लगा। वे कहते है कि हम गाधीको इतमीनान दिलाते है कि पाकिस्तानमे हिंदू और मुसलमान सब आपसमे दोस्ताना तौरपर रहेगे। उन्होने एक बात और लिखी है। वे कहते है कि अखबारनवीसोकी एक कमेटी बना दे। वह कमेटी साप्रदायिक समाचारोकी जाच करे और उसके बाद उसे प्रकाशित करे। मुझको सबोधन करते हुए वे कहते है कि तू भी तो अखबारनवीस है। उस कमेटीका अध्यक्ष वन जा। मै उनसे कहना चाहता हू कि मै तो लाचार हू। मेरे पास वक्त नही है। दूसरे, मै इस कामके लायक भी नही रह गया हू। इसक अलावा, मै आज यहा और कल वहा, मै कैसे उसकी सदारत कर सकता हू? अगर वे दिलसे कुछ करना चाहते है तो वे और सम्पादकोसे मिलकर कर सकते है।

मै अतमे फिर कहता हू कि जब पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनोमे रहनेवाले अल्पसख्यक यह कह देगे कि हम वहा बहुत खुश है, तव मै कहूगा कि अब हमारे पास सच्ची आजादी आ गई है और हमको उसकी खुशिया मनानी चाहिए।

: ७५ :

सोमवार २१ जुलाई १९४७

(लिखित सदेश)

पाकिस्ताननिवासी एक भाई लिखते है—'आप लोग पद्रह अगस्तका दिन मनानेकी वाते कर रहे है। क्या आपने सोचा है कि उसे हम हिंदू कैसे मनावे? हम तो सोच रहे है कि उस रोज हमारे हाल कैसे होगे और हमे क्या करना होगा? इस वारेमे कुछ कहोगे? हमारे लिए तो वह दिन मुसीवतका सामना करनेका होगा, उत्सव मनानेका हरगिज नही। यहाके मुस्लिम आजसे ही हमे डरा रहे है। क्या जाने हिंदुस्तानके मुस्लिम क्या समझते होगे? क्या वे भी भयभीत नही होगे। हम लोगोंको

यहातक डर लग रहा है कि बडे पैमानेपर लोगोंको मुस्लिम बनानेका यत्न किया जायगा। आप कहेंगे कि धर्मकी रक्षा सब अपने-आप करे। यह सन्यासीके लिए भले ही सच्चा हो, गृहस्थीके लिए नही।'

जिना साहब अब तो पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल बन रहे है। उन्होंने कहा है कि हरेक गैर-मुस्लिमके प्रति ऐसा ही बरताव होगा जैसा मुस्लिमके प्रति। मेरी सलाह यह है कि हम उनके लफ्जोपर भरोसा रखे और माने कि वहा गैर-मुस्लिमोके प्रति कुछ भी बुरा बरताव नही होगा और न मुसलमानोके प्रति हिंदुस्तानमे। मेरा खयाल तो ऐसा भी है कि अब जब दो राज होते है तो हिंदुस्तानको पाकिस्तानसे जवाब मागना होगा।

मै इतना जरूर मानता हू कि १५ अगस्त किसी तरह उत्सव मनानेका दिन नही है, वह दिन प्रार्थनाका और अर्तविचारका है। लेकिन अगर दोनो समझ जाए तो दोनोंको आजसे दोस्त बननेकी तजवीज करनी चाहिए। या तो १५ अगस्तको सब भाई-भाई मिलकर खुशी मनावे या बिलकुल नही। आजादीकी खुशी मनानेका दिन ही तब हो सकता है जब हम सच्चे दिलसे दोस्त बने। लेकिन यह तो मेरा विचार है और इस विचारमे मुझे कोई साथ देनेवाला नही है।

फिर वह भाई पूछते है कि कष्टके मारे अगर सब या बहुत लोग पाकिस्तानसे निकल जाए तो उनको हिंदुस्तानमे आश्रय मिलेगा या नही? मै तो मानता हू कि ऐसे लोगोंको जरूर आश्रय मिलना चाहिए। लेकिन धनिक लोग अगर पुराने ढगसे रहना चाहे तो मुसीबत होगी। ऐसे लोगोको जगह मिलनी चाहिए और कामके बदले दाम भी। मेरी उम्मीद तो यही रहेगी कि कोई गैर-मुस्लिम डरके मारे पाकिस्तानका अपना वतन नही छोडेगा, और न हिंदुस्तानका कोई मुस्लिम हिंदुस्तानका अपना वतन छोडेगा।

वह भाई यह भी पूछते है कि जो जमीन व मकान पाकिस्तानमे छूटेगे उनका क्या होगा?

मैने तो कहा है कि जमीन व मकानका बाजार-दाम पाकिस्तानी सरकारको देना चाहिए। रिवाज तो यह भी है कि ऐसे कामोमे दूसरी

सरकार दखल भी देती है। यहा तो हिंदुस्तानकी सरकार होगी। लेकिन मै क्यो मानू कि मामला वहातक जायगा। पाकिस्तान सरकारका फर्ज होगा कि ऐसे लोगोको अपनी जमीन व मकानका बाजार-दाम दे।

वही भाई फिर पूछते है कि आप तो अपनेको व्यावहारिक आदर्श-वादी मानते है। आजकल जो चल रहा है सो तो वहशियाना काम है। आततायीके प्रति अहिंसा चल सकती है क्या? यदि हा तो कैसे?

मेरी कोशिश तो रहती है कि मै अपने आदर्शको इस तरह चलाऊ कि वह काममे आ सके, चाहे भले ही मै हमेशा सफल न बनू। आततायी किसे कहे? मनु महाराजने जिनको आततायी माना है उन सबका वध आज नही होता है। आज तो वध-मात्रका प्रतिबध करनेकी चेष्टा होती है। फिर सुधारक लोग यहातक जाते है कि दड-नीति हटनी चाहिए। आततायी भी बीमार माने जाय और जैसे बीमारोका इलाज होता है वैसे इन आततायियोंके लिए भी अस्पताल बनाये जाय। कहनेका मतलब इतना ही है कि शास्त्रके नामसे जो चलता है सबको शास्त्र न माना जाय और शास्त्र वही माना जाय जिसमे कम-बेश हमेशा होता रहे। युग-युगमे नीति बदलती रहती है। जिसमे फर्क नही हो सकते, ऐसे कानून बहुत कम होते है। और आततायीको दड देनेका काम हरेकका कभी नही होता है। यह काम पचायतका या हकूमतका होता है। हकूमत कानून बनाती है और उसके मुताबिक इसाफ करनेके लिए अदालत बनती है। ऐसा न हो तो हम सबके आततायी बननेका डर होता है। बर्मामे जो भयानक खून हुए वे भयानक थे, लेकिन अब हम समझे कि वे सियासी थे। मुझे यकीन है कि जिनका उन्होने खून किया वे उनके हिसाबसे आततायी थे। हमारे आतकवादियोने मेरा कहा नही माना था। ऐसा उन्होने सच्चे दिलसे मुझको कहा है कि जिनका खून उन्होंने किया वे आततायी थे। अपनेको उन्होने कभी आततायी नही माना था। इसी कारण मै कहूगा कि जो आदमी अपने हाथोमे कानून लेता है वह गुनहगार बनता है। वह लोगोकी हिंसा करता है। अहिंसासे अगर छूट हो सकती है तो वह सिर्फ लोगोकी बनाई हुई पचायतसे। आज जो जगतमे हो रहा है वह अत्याचार है, आततायीपन है।

: ७६ :

२२ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मेरे पास एक खत आया है। इस प्रकारकी जो चीजें मेरे पास आती हैं उनका खुलासा मैं यहां कर देता हूं। खतमें लिखा है–"आजकल आप लार्ड माउंटबेटनको बहुत बढ़ा रहे हैं। वे कोई गलती ही नहीं कर सकते, ऐसा आप कह रहे हैं। लेकिन आपको याद होगा कि आपने दूसरी राउंड टेबुल कान्फ्रेंसमें चीख-चीखकर यह कहा था कि जब हिंदुस्तानको आजादी मिल जायगी तब वाइसराय साहबका जो घर है उसमें हरिजन बालक रहेंगे या वहां अस्पताल खोला जायगा। आज आपका इस तरहसे लार्ड माउंटबेटनको चढ़ाना उस चीजसे मेल नहीं खाता।"

मैं कभी किसीको नहीं चढ़ाता। न तो मुझे उनसे कुछ चाहिए और न उनको मुझसे। मुझको तो खिताब भी नहीं चाहिए, और दूसरी चीज उनके पास देनेके लिए है ही क्या? मुझपर इलजाम तो यह लगाया जाता है कि मैं अपने आदमियोंको केवल डांटता ही रहता हूं और उनकी कभी तारीफ नहीं करता। जहांतक लार्ड माउंटबेटनका संबंध है, अभी तो उसी घरमें—घर तो क्या एक किला कहना चाहिए—उनको रहना चाहिए। अगर मैं उनको बाहर घसीट सकूं तो मैं उनको अपने पास ही रखूं। मगर उनको वहां राजाओंसे मिलना है और भूतकालकी गलतियोंको उन्हें दुरुस्त करना है। उन गलतियोंसे जो दुष्परिणाम हो सकते हैं उसको उन्हें मिटाना है। गवर्नर-जनरल भी तो उनको इसीलिए बनाया गया है कि वह बहुत तेजीसे काम करनेवाले हैं। उनको यह पद देनेका मतलब उनकी खुशामद करना नहीं है। और फिर क्या जवाहरलालजी और सरदार पटेल किसीकी खुशामद करनेवाले थे? इसमें मुझे कोई गलती नहीं दिखाई देती। अगर वह बदमाश ही हैं तो उसका नतीजा उनको मिलनेवाला है। मेरे ६० वर्षोंका अनुभव तो यही बताता है कि जो किसीके साथ धोखा करता है, वह किसीका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। वह केवल

अपना ही वुरा करता है। मगर अभी मै नही जानता कि लार्ड माउटवेटन साहव उसी किलेमे रहेगे या कही और, या वहा अस्पताल वनेगा। उस वारेमे तो जवाहरलालजी और सरदारको ही मालूम होगा। मुझे इसका कोई ज्ञान नही।

एक दूसरे भाई लिखते है कि लश्करका जो विभाजन हो रहा है और उसमे जो ब्रिटिश अफसर रखे जायगे उससे क्या तुम सहमत हो? इस भाईको पहले तो मुझसे यही पूछना चाहिए कि जो लश्कर रहनेवाला है, क्या उससे मै सहमत हू। लश्करको रखनेमे, चाहे वह कैसा और कितना ही क्यो न हो, मेरी मदद हो ही नही सकती। मगर दुखकी वात तो यह है कि आज हम पुराने-जैसे नहीं रह गए। पुराना जमाना वदलकर अब नया शुरू हो गया। मैने तो यह माना था कि हमारे लोग सव अहिंसक है। सबसे मेरा मतलब है एक बडे पैमानेपर।

परतु अब ३२ वर्षके वाद मेरी आखे खुली है। मै देखता हू कि अवतक जो चलती थी वह अहिंसा नही थी, बल्कि मद-विरोध था। मद-विरोध वह करता है जिसके हाथमे हथियार नही होता। हम लाचारी-से अहिंसक वने हुए थे, मगर हमारे दिलोमे तो हिंसा भरी हुई थी। अब जब अग्रेज यहासे हट रहे है तो हम उस हिंसाको आपसमे लडकर खर्च कर रहे है। मै तो केवल इतना ही जानता हू कि मेरे दिलमे कभी हिंसा नही थी। मगर जो दूसरे लोग है उनका मै क्या करू। वे कहते है कि अग्रेजोके वक्त हमने अहिंसा रखी। हम अब भी अहिंसा रखे, यह तू किस तरहसे कहता है? इसमे दोष मेरा ही है। ३२ वर्षतकका जो शिक्षण था वह दोषपूर्ण था। मगर यदि वे भाई मुझसे पूछे तो मै आज भी यही कहूगा कि लश्कर रखनेमे मै शरीक नही हू। क्या हिंदुस्तानमे आखिर फौजी-राज्य होना है? वगाल, पजाब, बिहार जहा देखो, वहीसे लश्करकी माग आती है। कही हिंदुओको अपनी रक्षाके लिए लश्कर चाहिए तो कही मुसलमानोको। ऐसे वेहाल है हम आज। इसलिए लश्करका किस तरहसे वटवारा होता है या नही होता इसका मुझे कुछ पता नही। जिस चीजमे मेरी दिलचस्पी ही नही उसमे मै क्यो अपना वक्त खर्च करू?

आज चार बहने मुझको इस बातके लिए मुबारकबाद देने आई थी कि तिरगा झडा जिसमे चर्खेका चक्र मौजूद है, अब सारे भारतका राष्ट्रीय झडा बन गया है। मै तो उसमे अपने लिए कोई मुबारकबादी नही देखता हू। मुझे बताया गया है कि उसमे चर्खेके स्थानपर एक चक्र है। यदि वह चक्र चर्खेका ही है तो, तब तो खैर है और अगर नही है तो भी मुझे उसकी क्या पड़ी है। अगर उन्होने चर्खेको फेक दिया तो फेक दे, मेरे दिलमे और मेरे हाथोमे तो वह रहेगा ही।

एक भाईने बताया कि चर्खा उसमे है और दूसरे कहते है कि चर्खा तो अब खत्म हुआ और तेरे जिदा रहते हुए ही वह खत्म हो गया। मै नही जानता कि चर्खा है या खत्म हो गया। मगर इतना जरूर जानता हू कि अगर चर्खा झडेमे लगा भी दिया जाता और वह लोगोके दिलोमे नही है तो मेरी दृष्टिसे झडा और चर्खा दोनो जलाने लायक है। परतु अगर चर्खा झडेमे नही है और लोगोके दिलोमे है तो मुझे झडेमे चर्खा न लगानेकी कोई चिंता नही है। मै तो यह चाहता हू कि सारे देशका एक झडा हो और हम सब उसको सलामी दे। मुझको यह सुनकर अच्छा लगा कि आज विधान-परिषद्मे चौधरी खलीकुज्जमा और मोहम्मद सादुल्ला दोनोने इस झडेको सलामी दी और यह भी कहा कि यूनियनका जो झडा होगा उसके प्रति वे वफादार रहेगे। अगर दिलसे उन्होंने ऐसा किया है तो यह अच्छा लक्षण है।

लेकिन सिलहटसे जो तार आया है वह बहुत खतरनाक है। वहा जनमत-सग्रह तो हो गया मगर त्रास अभीतक चल रहा है। क्यो वहाके मुसलमान अपना मिजाज खो बैठे है? वहा जो राष्ट्रीय मुसलमान है उनको हलाक किया जा रहा है। तारमे लिखा है कि यहासे किसीको देखनेके लिए तो भेज दो। मै किसको भेज सकता हू। या तो कृपलानी-जी भेजे या जवाहरलालजी भेज सकत है। मै चाहता हू कि मुझे यहासे अब नोआखाली चला जाना चाहिए। सिलहट तो उसके नजदीक ही है। मगर कैसे जाऊ, मै तो यहा कैद पडा हू। मै उल्लघन करके जा भी नही सकता।

मै मानता हू कि पत्रमे जो लिखा है उसमे एक शब्द भी झूठ नही

है। उसमे भेजनेवालोने अपने दस्तखत भी दिए है। यह भी बताया गया है कि जनमतके बाद एक हरिजन बस्तीको भी मुसलमानोने जला दिया। यह बडे शर्मकी बात है। एक तरफ तो हम देखते है कि खलीक साहब और सादुल्ला यूनियनके झडेकी सलामी करते है और दूसरी तरफ पाकिस्तानमे ये घटनाए हो रही है।

कराचीसे एक और खत आया है जिसमे एक धनिक आदमी लिखते है कि पाकिस्तान सरकारने उनके मकानपर कब्जा कर लिया है। वह लिखते है कि अब मै रहूगा कहा? मै तो जिना साहब या वहाके और लोगोसे कहता हू कि अगर ऐसा कुछ होता है तो बडे आश्चर्यकी बात है।

ऐसे मौकेपर तो हमे खुशिया मनानेके बजाय यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे ईश्वर, हमको इस झझटमेसे छुडा दे और आजादीमे जो मिठास होती है उसको चखनेका मौका दे। उस आजादीका, जिसका, हम अबतक ख्वाब लेते रहे है, हमे स्वाद तो लेने दिया जाय? वास्तवमे यह प्रार्थना करनेका ही मौका है।

: ७७ :

२३ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

(आज प्रार्थना-सभामे किसी व्यक्तिने गाधीजीको लिखकर यह पूछा कि क्या आपने ईश्वरसे साक्षात्कार कर लिया? इसका उत्तर देते हुए उन्होने कहा—) हमारे लोग ऐसे भोले दीखते है कि किसीके इतना कह देनेपर ही कि वह आदमी महात्मा है, उसे महात्मा मान लेते है। हमारे देशमे महात्मा बनना तो आसान बात हो गई है। मैने तो साक्षात्कार किया नही है, अगर कर लेता तो आपके सामने बोलनेकी कोई जरूरत नही रहती। मैने तो ऐसी गलती की कि अबतक जो चीज चलती रही उसे अहिसा समझता रहा। जब ईश्वरको किसीसे काम लेना होता है तो वह उसको मूर्ख बना देता है। मै अभीतक अधा बना रहा। हमारे

दिलोमे हिसा भरी हुई थी और उसीका आज यह नतीजा है कि हम आपसमे लडे और लडे भी बहुत वहशियाना तौरसे।

आज जो भजन गाया गया है—'साधो मनका मान त्यागो'—उसका मतलब है कि यदि मनुष्य काम और क्रोधको छोड दे तो उसको निर्वाण मिल सकता है। उसके मानी रामराज्य भी है। मगर वह रामराज्य ऐसा नही जैसा कि आज हमे मिल रहा है। आज तो हम रामराज्यसे करोडो मील दूर पडे है। केवल अग्रेजोके चले जानेसे ही रामराज्य नही मिल जाता। आज तो रामराज्यकी मेरे नजदीक कोई निशानी नही है।

आज तो मै नमकके बारेमे कहना चाहता था। कुछ लोग कहते है कि कभी तो तुमने नमकके लिए डाडी कूचतक किया था और आज नमक नही मिलता और अगर मिलता है तो उसके लिए बडा दाम देना पडता है। मुझको यह सब सुनकर अपना सिर झुकाना पडता है। लोग कहते है कि नमकपरसे कर तो उठ गया मगर हमको तो इसका पता नही चलता। नमकपर कोई राशन तो नही है, मगर चोर-बाजार तो है। व्यापारी लोग ऐसे बदमाश है कि वे नमकपर भी नफा निकालते है। मगर हम लोग भी आलसी बन गए है। देहातोमे बहुत-सी जगहे ऐसी है जहा लोग मुफ्तके बराबर नमक पैदा कर सकते है। इस बातकी छूट तो उस वक्त भी मिल गई थी जब कि मेरा लार्ड इरविनसे समझौता हुआ था। अगर हम आलसी न बने तो नमक अच्छा मिले और सस्ता भी। आज जो नमक बाजारमे मिलता है वह कितना गदा होता है। इसका कारण यही है कि लोग मेहनत नही करते। जेलमे मुझे मेरे हिस्सेका जो नमक मिलता था उसको भी मै स्वय साफ कर लेता था। हम आज इतने स्वार्थी हो गए है कि लोगोको सस्ते भावपर नमक भी खानेके लिए नही दे सकते। जहा गरीबोको नमक भी खानेको नही मिलेगा, उसे हम रामराज्य कैसे मान लेगे। नमककी केवल मनुष्योके लिए ही नही पशुओके लिए भी जरूरत होती है। डर तो इस बातका भी है कि चूकि हिंदुस्तानके दो हिस्से हो गए है और दोनोको पैसेकी जरूरत होगी इस-लिए वे नमकपर कर न बढा दे। मगर क्या वे इस कदर पागल बन

जायगे कि लोगोको नमक भी खानेको नही देगे? अगर ऐसा हुआ तो निश्चय ही हमे यह आजादी बहुत महगी पडेगी।

: ७८ :

२४ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मै कई बार पहले भी इस बातकी ओर ध्यान दिला चुका हू कि जब हम प्रार्थना करने जाते है या कोई अन्य पवित्र कार्य करने बैठते है तब हम सिगरेट या बीडी नही पीते। ईसाई लोग वैसे खूब सिगरेट और शराब पीते है, मगर गिरजा-घरमे मैने कभी किसी ईसाईको शराब या बीडी पीते हुए नही देखा। मस्जिदो और गुरुद्वारोमे भी यही नियम चलता है। फिर इस स्थानको तो हम मदिर, गिरजाघर, मस्जिद जो चाहे मान सकते है, क्योंकि हमारी प्रार्थनामे सब मजहबोसे चुन-चुनकर चीजे ली हुई है। आप बीडी पीना छोड दे तो सबसे अच्छा हो; मगर मेरे कहनेसे आप छोडनेवाले नही है, यह मै जानता हू। तो भी, जिनको बीडी पीना है वे अलग जाकर पी ले। इसके अलावा कुछ लोग प्रार्थनाके बीचमे ही उठकर चल देते है। शायद उनको रस नही आता होगा। मगर रस नही आता तो क्या हुआ, हमारा मतलब तो ईश्वरका नाम लेनेसे है। प्रार्थनाका यह नियम है कि जबतक खत्म न हो और खत्म तब होती है जब मै करता हू, तबतक कोई आदमी बीचमे उठकर न जाय।

चर्खा-सघके पास दो लाख रुपयेकी कीमतके पुराने ढगके तिरगे झडे बने पडे है। चर्खा-सघ बहुत गरीब लोगोकी सस्था है। उसका मै सदर हू। उसमे जो लोग नौकरी करते है उनको भी बहुत कम पैसा मिलता है। सो उन्होने पूछा है कि जो दो लाख रुपयेकी कीमतके झडे उनके पास पडे है उनका क्या होगा? नए और पुराने झडेमे कोई अतर नही है, केवल पुरानेको नई खूबसूरती दे दी है। पहलेमे चर्खा था, जब कि

इसमे चर्खेका चक्र तो है, मगर माल और तकुआ नही है। नया झडा बन जानेसे पुरानेकी कीमत किसी तरहसे कम नही हो जाती। जिस तरहसे एक बादशाह तो मर जाता है, मगर बादशाहत कभी नही मरती। वह हमेशा बनी रहती है। एक सिक्का पलटता है तो दूसरा सिक्का आ जाता है। मगर दूसरा सिक्का आनेसे पहलेके सिक्केकी कीमतमे फर्क नही पडता। महारानी विक्टोरियाके शासनमे रुपया कुछ और तरहका था, जार्ज पचमके समयमे कुछ और तथा अब कुछ और किस्मका है मगर रुपयेकी कीमत वही सोलह आने बनी रही। अत दोनो झडोकी कीमत तबतक एक ही रहेगी जबतक कि गाधी-आश्रममे एक भी पुराना तिरगा झडा बाकी बचा रहेगा। अत. जिन लोगोके पास पुराने झडे है वे उनको फाड न डाले और गाधी-आश्रमसे भी उसी झडेको खरीदे ताकि दो लाख रुपयेकी रकम नष्ट न हो। मगर आगेसे चर्खा-सघ नए सिक्केके झडे ही बनाएगा।

आज मेरे पास दो सवाल आ गए है। एक भाई लिखते है कि १५ अगस्तके बाद काग्रेसका क्या होगा और उसका प्रोग्राम क्या रहेगा? वे यह भी लिखते है कि अबतक काग्रेसमे आदमी यह शपथ लेकर शामिल होता था कि वह सत्य और अहिंसाके द्वारा हिंदुस्तानकी आजादी प्राप्त करेगा, मगर अब जब कि आजादी मिल गई तब उसके बाद क्या होगा ?

काग्रेसका क्या प्रोग्राम रहेगा यह तो काग्रेस ही बता सकती है। मगर काग्रेसके एक खादिमके नाते मै तो इतना जानता हू कि अबतक तो हमारा काम हकूमतका सामना करना था। हम हकूमतके बागी बने और उसको हमने हटाया। हमने बाहरसे तो सत्य और अहिसाको बनाए रखा मगर हमारे भीतर तो हिसा भरी हुई थी। हमने ढोगी बनकर काम किया। उसीका फल हम आज आपसकी लडाईके रूपमे भोग रहे है। आज भी हम अपने दिलोमे लडाईका सामान तैयार कर रहे है और अगर यही सिलसिला जारी रहा तो हमे १८५७के गदरसे भी अधिक भयानक रक्तपातका सामना करना होगा। तब तो हिंदुस्तान इतना जाग्रत नही था और इसके अलावा वह केवल सिपाहियोका बलवा था।

उसमे सिर्फ अग्रेजोंको ही हमने काटा था। मगर अतमे अग्रेजी लश्करने बलवाइयोका सामना किया और उन्हे शिकस्त भी दी। लेकिन ईश्वर न करे कि आज हमारे दिलोमे जो लडाई भरी है वह उस हृदतक चली जाय। अत. केवल सत्य और अहिंसाकी दृष्टिसे ही नही, बल्कि हिंदुस्तानके हितकी दृष्टिसे, जिसके लिए लाखो लोग जेल गए और अनेक कष्ट झेले, मै यह सलाह दूगा कि इस प्रकारकी तैयारी न करो। उससे न केवल तुम हिदुस्तानकी आजादीको खोओगे, बल्कि उसे फिर गुलाम बना दोगे। अग्रेज, रूस, अमरीका या चीन कोई देश हमपर हमला करके हमे गुलाम बना लेगा। क्या आप यह देखनेवाले है कि १५ अगस्तको हिदू और मुसलमान आपसमे लडे और सिख उनके बीचमे फसकर मर जाय? इससे तो मुझे यह पसद होगा कि एक भूकप आ जाय और उसमे हम सब दबकर मर जाय। अत कांग्रेस चूकि सारे हिदुस्तानकी है, इसलिए उसे चाहिए कि वह हिंदुओ, मुसलमानो, पारसियो तथा अन्य सब जातियोको सतुष्ट करे। मै यह नही कहता कि आप मुसलमानोकी खुशामद करे या खुद बुजदिल बन जाय। बुजदिली तो मै कभी किसीको सिखाता ही नही हू। हम बहादुरीके साथ सबको शात करे, यही कांग्रेसका मुख्य प्रोग्राम होना चाहिए।

यद्यपि मै हिंदी-साहित्य-सम्मेलनका दो बार सदर रहा हू, मगर फिर भी मेरा यह दावा है कि हिदुस्तानकी राष्ट्र-भाषा हिदी और देवनागरी लिपि नही हो सकती। आज हमारे बहुतसे कार्यकर्ता यह कहते है कि गाधी तो सब ऐसी-वैसी बाते करता है। वह तो हमेशा मुसलमानोकी खुशामदमे ही लगा रहता है। मगर जिना साहबने भी दो नेशनकी बात कहते समय मुझपर उर्दू भाषाको मिटानेका इल्जाम लगाया था। आज तो मै दोनो भाषाओका दुश्मन बना हुआ हू। मगर मै दोनोका दोस्त रहना चाहता हू। ईश्वरके सामने मेरा यह दावा मजूर होगा कि अगर हिंदुस्तानका कोई सच्चा खैरख्वाह था तो वह गाधी ही था। आज मै काफी हिंदू आपको ऐसे बता सकता हू जो न तो हिदी जानते है और न देवनागरी लिपिमे लिख सकते है। अगर यहा हिदू, मुसलमान ईसाई, पारसी और सिख सबको रहना है तो हिदी और उर्दूके सगमसे

जो भाषा बनी है उसीको राष्ट्रभाषाके रूपमे अपनाना होगा। जो शब्द आप सब लोग बोलते है उनसे एक बुलद भाषा बन सकती है इसमे मुझे कोई सदेह नही है।

यहा इडोनेशियाके नेता शहरियार आए है। वे नेहरूजी और जिना साहबसे मिलेगे। हिदुस्तान तो उनको नैतिक मदद दे सकता है, जो कि किसी भी फौजी मददसे अधिक प्रभावशाली होगी।

एक अग्रेजका खत आया है कि चूकि अब हिदुस्तानके दो टुकडे हो गए, इसलिए अब उसका दर्जा ससारके बडे राष्ट्रोमे नही हो सकेगा। मै इस बातको नही मान सकता, बशर्ते कि दोनों टुकडे दोस्त या भाई-भाई बनकर रहे।

: ७९ :

२५ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज राजेद्रबाबूने मुझको बताया कि उनके पास करीब ५० हजार पोस्टकार्ड, २५–३० हजार पत्र और कई हजार तार आए है जिनमे गो-हत्या बाकानून बद करनेके लिए कहा गया है। इस बारेमे मैने आपसे पहले भी कहा था। आखिर इतने खत और तार क्यो आते है? इनका कोई असर तो हुआ नही है। एक तार और आया है जिसमे बताया गया है कि एक भाईने तो इसके लिए फाका भी शुरू कर दिया है। हिदुस्तानमे गो-हत्या रोकनेका कोई कानून बन नही सकता। हिदुओको गायका वध करनेकी मनाही है, इसमे मुझे कोई शक नही। मेरा गो-सेवाका व्रत बहुत पहलेसे लिया हुआ है, मगर जो मेरा धर्म है वही हिंदुस्तानमे रहनेवाले सब लोगोका भी हो, यह कैसे हो सकता है? इसका मतलब तो जो लोग हिदू नही है उनके साथ जबर्दस्ती करना होगा। हम चीख-चीखकर कहते आए है कि जबर्दस्तीसे कोई धर्म नही चलाना चाहिए। हम प्रार्थनामे हमेशा

कुरानकी आयत पढते है, परतु यदि यही चीज मुझसे कोई जबर्दस्तीसे कहलवाना चाहे तो मै कैसे कहूगा ? जो आदमी अपने-आप गोकुशी नही रोकना चाहता उसके साथ मै कैसे जबर्दस्ती करू कि वह ऐसा करे ? भारतीय यूनियनमे अकेले हिदू तो है नही। यहा तो मुसलमान, पारसी और ईसाई आदि सभी लोग रहते है। हिदुओका यह कहना कि अब हिदुस्तान हिदुओकी भूमि बन गई है, बिल्कुल गलत है। जो लोग यहा रहते है उन सबका इस भूमिपर अधिकार है। अगर हम यहा गो-हत्या रोक देते है और पाकिस्तानमे इसका उलटा होता है तो क्या स्थिति रहेगी ? मान लीजिए कि वे यह कहे कि तुम मदिरमे नही जा सकते, क्योकि तुम पत्थरोकी पूजा करते हो, जो शरियतके अनुसार वर्जित है। मै पत्थरमे भी ईश्वर मानता हू तो ,उसमे दूसरोका क्या दोष करता हू ! अत अगर वे मुझे वहा जानेसे रोकेगे तब भी मै वहा जाऊगा। इस तरह मै ईश्वरका भक्त बन जाता हू।

इसलिए मै तो यह कहूगा कि तार और पत्र भेजनेका सिलसिला बद होना चाहिए। इतना पैसा इनपर बेकार फेक देना मुनासिब नही है। आखिर हम ऐसा सोचनेका घमड क्यो करते है कि दो पैसेका पोस्टकार्ड भेजनेमे कौन-सी कमी आ जाती है। मै तो आपकी मार्फत सारे हिदुस्तान-को यह सुनाना चाहता हू कि वे सब तार और पत्र भेजना छोड दे।

इसके अलावा जो बडे-बडे हिदू है, वे खुद गोकुशी करते है। वे अपने हाथसे तो गायको काट नही सकते, परतु आस्ट्रेलिया तथा अन्य देशोको यहासे जो गाये जाती है उन्हे कौन भेजता है ? वे वहा मारी जाती है और उनके चमडेकी जूती बनकर यहा आती है, जिन्हे हम पहनते है। एक कट्टर वैष्णव हिदूको मै जानता हू। वह अपने बच्चेको गो-मासका शोरबा पिलाते थे। मेरे पूछनेपर उन्होने कहा कि दवाईके तौरपर उसे इस्तेमाल करनेमे कोई पाप नही है। अत धर्म असलमे क्या चीज है यह तो लोग समझते नही है और पीछे गो-हत्या बाकानून बद करनेकी बात करते है। देहातोमे हिंदू लोग बैलोपर इतना बोझ लादते है कि वे मुश्किलसे चल पाते है। क्या यह गो-हत्या नही है, चाहे शनै-शनै ही क्यो न

हो? अत. मै तो यह सलाह दूगा कि विधान-परिषद्पर इसके लिए जोर न डाला जाय।

जिस जगह वृक्ष अधिक होते है वे बादलोसे पानी अपने आप बरसा लेते है। पेडकी पत्तियोंमे कुछ ऐसा आकर्षण होता है कि पानी दूधकी धारकी तरह ऊपरसे गिरने लग जाता है। यह प्रकृतिका कानून है। जिस भूमिमे वृक्ष नही होते वह मरुभूमि हो जाती है, क्योकि पानी तो वहा बरसता नही, इसलिए सब रेत-ही-रेत हो जाता है। अगर वर्षा बद करनी हो तो वृक्षोको काट दीजिए। मै जोहान्सबर्गमे कई वर्षतक रहा। वहाका जलवायु बहुत अच्छा है। वहा जबसे वृक्षारोपण हुआ तबसे वर्षा पडनी भी शुरू हो गई। इसलिए दिल्लीके अफसरने वृक्षारोपणका जो काम उठाया वह बहुत अच्छा है। जिन लोगोके पास खाली जमीने नही है वे मिट्टीके गमलोमे थोडी-थोडी मिट्टी डालकर सब्जी पैदा कर सकते है।

एक भाईने यह प्रश्न पूछा है कि आज हमपर मुसलमानोकी तरफसे जो ज्यादतिया हो रही है उनको दृष्टिमे रखते हुए हम किस मुसलमानका एतबार करे और किसका नही, यूनियनमे जो मुसलमान रहते है उनके साथ हम कैसा सलूक करे और पाकिस्तानमे जो गैर-मुस्लिम है, वे क्या करे?

इस बारेमे मै पहले भी कई बार कह चुका हू और आज फिर कहता हू कि अब हिंदुस्तानमे सारे धर्मोका इम्तहान हो रहा है। सिख, हिंदू, मुस्लिम और ईसाई आदि सब धर्म किस तरहसे चलते है और कैसे हिंदुस्तानकी बागडोर सम्हालते है, यह देखना है। पाकिस्तान तो चाहे मुसलमानोका कहो, मगर यूनियन तो सबका है। अगर आप यहा बुज़दिल न रहकर सचमुच बहादुर बन जाते है तो आपको यह सोचना भी नही पडेगा कि आपको मुसलमानोके साथ कैसा सलूक करना चाहिए? मगर आज तो हम सब बुज़दिल पड़े है। उसके लिए मैंने तो अपना गुनाह मजूर कर लिया। हमारा ३० वर्षका शिक्षण क्यो गलत तरीकेसे हुआ, यह मेरे लिए एक कठिन प्रश्न हो गया है। मैंने कैसे यह मान लिया कि अहिंसा बुजदिलोका हथियार

हो सकती है? अगर अब भी हम सचमुच बहादुर होकर मुसलमानोके साथ प्रेम करे तो मुसलमानोको भी सोचना होगा कि वे आपके साथ धोखा करके क्या लेगे। वे भी बदलेमे मोहब्बत ही दिखाएगे। क्या हम यूनियनके करोडो मुसलमानोको अपना गुलाम बनाकर रख सकते है? दूसरोको गुलाम बनानेवाला खुद गुलाम बन जाता है। अगर हम यहा तलवारका बदला तलवारसे, लाठीका बदला लाठीसे और लातका बदला लातसे देने लगे तो फिर पाकिस्तानमे उससे भिन्न सलूककी आशा रखना फिजूल है। अगर ऐसा हमने किया तो जिस हाथसे हमने आजादी ली उसी हाथसे हम उसे खो देगे। जो सीधा और सरल रास्ता है वही हमे अपनाना चाहिए और फिर हम देखेगे कि पाकिस्तानमे एक भी हिंदू या एक भी ईसाईको कोई छूनेवाला नही है।

आज पाकिस्तान और भारतकी भावी सरकारोकी ओरसे जो वक्तव्य प्रकाशित हुआ है वह मुझे अच्छा लगा है। मगर मैं तो उसे प्रत्यक्षमे देखना चाहता हू। इस वक्त तो हम ऐसा क्यो माने कि जो कुछ वे कहते है उससे भिन्न ही पाकिस्तानमे होनेवाला है। होता भी है और हम बुजदिल नही है तो हम उसका जवाब भी दे देगे। जबतक ऐसा नही हुआ है तब उसे मानकर ही हम बैठ जाय यह तो हमारी बुजदिली है। इस तरहसे माननेका मतलब होगा लडाईका सामान तैयार करना। तब तो हमारे और पाकिस्तानके लश्करोमे आमने-सामनेकी लडाई छिड जायगी और जिना साहब जो दो नेशनकी बात करते थे वह सही साबित होगी। इसलिए मैं तो ईश्वरसे यही प्रार्थना करता हू कि तू हमे उस आपत्तिसे बचा ले।

: ८० :

२६ जुलाई १९४७

भाइयो और वहनो,

मैं चाहता तो यही हू कि एक बैरिस्टरको जितना पैसा मिलता है उतना ही एक भगीको भी मिले, परतु यह बात कहनेमे जितनी

आसान है, करनेमे उतनी ही मुश्किल है। दूसरे, ये सब बाते हडताल करनेसे पूरी नही होती। वेतन-कमीशनकी सिफारिशोसे जो वेतन बढे है, पहले हमे उन्हे हजम करना चाहिए और फिर बादमे अपने पक्षमे लोकमत तैयार करना चाहिए। हडतालका भी एक शास्त्र होता है। यो ही हडताल कर बैठनेसे कोई लाभ नही।

आज तो हिंदुस्तानमे हडतालोका एक वातावरण-सा बन गया है। जहा लोगोकी अपनी हकूमते है वहा भी हडताले होती है। जब हमारे यहा अग्रेजी हकूमत थी तब, जहातक मुझे याद है, इतनी हड़ताले नही होती थी। आज कलकत्तासे तार आया है और अखबारोमे भी छपा है कि वहा एकाउटेट जनरल आफिसके कर्मचारियोने कलमबद हडताल कर दी है। इस आफिसमे डाक और तारघर शामिल है जो किसी एक आदमीकी खातिर नही, बल्कि सब लोगोकी भलाईके लिए चलते है। यह माना कि उनमे बडे-बडे अमलदार भी है जिन्हे काफी पैसा मिलता है। फिर छोटोंने क्या गुनाह किया कि उन्हे थोडा पैसा मिले? आखिर इतना बडा अतर क्यो रहता है? अग्रेजोने यह आदत डाली, मगर हमको भी वह मीठी लगी और उसे हम जारी रख रहे है, परतु इस तरहसे यदि लोग कलमबद करके बैठने लगे तो हिंदुस्तानका क्या होगा? हडतालके जरिए दबाव डालकर यदि कुछ पैसे उन्होने बढवा भी लिए तो उससे क्या हुआ? मगर यह तरीका तो गलत है और इससे हिंदुस्तानका सत्यानाश होनेवाला है।

आजकी हिंदुस्तानकी हालत देखकर मुझे उस मुर्गीकी मिसाल याद आती है जो सोनेके अडे देती थी। मुर्गीवालेने सारे अडे एक साथ निकालनेके लिए उस मुर्गीको मार डाला। मगर नतीजा यह हुआ कि सोनेके अडे भी नही निकले और मुर्गी भी मर गई। आज जो हमारे हाथमे हकूमत आई है वह उसी किस्मकी मुर्गी है। हम अगर यह उम्मीद करे कि उस मुर्गीसे सब सोनेके अडे आज ही निकालकर खा जाय तो निश्चय ही वह मुर्गी तो मरेगी ही, उसके साथ हम भी मरनेवाले है।

इसके अलावा हडतालका तो मैने शास्त्र बना रखा है। दक्षिण

अफ्रीकामे पहले-पहल हमने इसकी आजमाइश की थी। वहा हिंदुस्तानी कुली और मजदूर समझे जाते थे। वहा उनका हडताल करना कुछ मानी रखता था, क्योकि और तरहसे वहा उनकी बात कोई सुननेवाला नही था। अत वह आदमी जो हडतालका शास्त्र जानता है, वह उन लोगोसे जो कि आज इधर-उधर हड़ताल कर रहे है, यह सूचना देना चाहता है कि जो तरीका उन्होने अपनाया है उससे वे अपना ही खात्मा कर लेगे। हमारे देशके दो टुकड़े तो हो गए, मगर अब भी अगर हमारे आपसके झगडे इसी तरह जारी रहे तो ईश्वर ही जानता है कि हमारा क्या हाल होनेवाला है! अब तो हमारा यह धर्म हो गया है कि हम अपना काम करते जाय, क्योकि वह हकूमत-का काम है। वेतन-कमीशनकी सिफारिशोके फलस्वरूप छोटे लोगोका दर्जा काफी ऊचा हो गया है। अगर इस तरहसे हम मागते ही रहेगे तब तो हिंदुस्तानका दिवाला निकल जायगा। यह ठीक है कि हकूमतके पास करोडों रुपये आते है, मगर वह सब केवल मुट्ठीभर लोगोपर तो खर्च नही किया जा सकता। उस रुपएका अधिक भाग तो उन देहातियोपर खर्च किया जाना चाहिए जिनसे वह पैसा आता है।

बबईमे, हाल हीमे, मजदूरोकी एक नाममात्रकी हड़ताल हो चुकी है। वहाकी सरकारने एक-दो करोड रुपया तो मजदूरोको दिया, मगर उससे भी उनको सतोष नही हुआ और अपनी ताकत जाहिर करनेके लिए उन्होंने एक नाममात्रकी हड़ताल की। उन्हे चाहिए तो यह था कि जो कुछ मिल गया उसे तो हजम करते और उसके बाद अपने पक्षमे लोकमत बनाते। इसके बजाय उन्होने हडताल करके पैसे बढवानेका मार्ग अपनाया। कांग्रेसमे भी आज कितनी ही पार्टिया बन गई है और उनमेसे ही एक पार्टीका इस हड़तालमे हाथ है, [ऐसा मुझे बताया गया है। मगर इस नाममात्रकी हडतालमे तो चाहे वह दो घटेके लिए ही क्यो न हो, एक तरहका घमड भरा रहता है। उससे वह पार्टी यह सिद्ध करनेकी कोशिश करती है कि उसकी मजदूरोमे कितनी चलती है। अन्यथा इस नाममात्रकी हडतालका क्या उद्देश्य हो सकता था? मुल्कका इस प्रकारकी हड़तालोसे कोई भला

नही हो, सकता। इसलिए वहाके मजदूरोने जो कुछ किया वह मुझे अनर्थ लगता है।

दूसरी लडाई तो जब होगी तब होगी, मगर क्या हम इस आपसकी लडाईमे ही कटकर मर जाना चाहते है? यह कोई देशका काम नही है, कोरा स्वार्थका काम है। एक ओर तो हमे आजादी मिली, अग्रेज यहासे गए और हकूमतका काम हमने चलाना शुरू ही किया कि दूसरी ओर हम पैसोके बटवारेपर ही लडाई करने लगे। मै तो यहातक मानता हू कि एक बैरिस्टरको जितना पैसा मिलता है उतना ही एक भगीको भी मिलना चाहिए। मगर बैरिस्टर तो अधिक छीन लेता है और हम खुशीसे उसे दे देते है। मै भी तो कभी बैरिस्टरी करने लगा था, मगर मैने कुर्सीपर पडे रहकर पैसे लूटना एक निकम्मी बात समझी और इसलिए भगी बन गया। मगर ये सब बाते कहनेमे तो अच्छी लगती है, करनेमे मुश्किल होती है। आखिर हम ऐसे आदमी कहासे लाए जो गवर्नर-जनरल, बैरिस्टर और व्यापारी हो सके और साथ-ही-साथ पैसा भी उतना ही ले जितना एक भगीको मिलता है। एक दर्जी भी चार-पाच रुपये रोज कमा लेता है, मगर भगीको कौन इतने पैसे देता है? अत आज जरूरत इस बातकी है कि मनुष्य अपना स्वभाव बदले, मनुष्यमे उदारता पैदा होनी चाहिए। यह नही कि हम अपनी स्वार्थपूर्तिके लिए सबका गला काट दे। बर्मामें जो खून हुए है, उनसे भी अगर हम कोई सबक नही लेगे तो हिंदुस्तान और सारी दुनियाका क्या हाल होगा? यह हिसाब आप अपने घर जाकर करे।

: ८१ :

२७ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

हिंदुस्तान देशी राज्योसे भरा पडा है। उनकी सख्या पाच-सौसे ऊपर है, जिनमे कोई बडे है और कोई छोटे है। हाल हीमे वाइसराय

साहबने राजाओंको यहां बुला लिया था। अबतक तो उनपर ब्रिटिश साम्राज्यका छत्र था, परंतु वह तो अब उठ गया। वाइसराय साहबने उनको बहुत नम्र शब्दोंमें जो व्याख्यान दिया वह मुझको अच्छा लगा। उन्होंने राजाओंको सलाह दी कि भारतीय यूनियन और पाकिस्तानके रूपमें जो दो स्वतंत्र राज्य बन रहे हैं उनको उन दोनोंके भीतर आना है। वह कोई छोटा व्याख्यान नहीं था। मगर उसमें जो चीज मुझे चुभी वह यह कि इतने बड़े व्याख्यानमें रियासतोंकी रैयतका कहीं जिक्र नहीं था। ब्रिटिश गवर्नमेंटके साथ जो करार था वह तो राजा लोगोंसे ही था। उसमें रैयत कहीं आती ही नहीं थी। इसलिए जब ब्रिटिश साम्राज्यसत्ता हट गई तब बाकानून वे आजाद तो हो जाते हैं और ब्रिटिश सल्तनत उसमें कोई दखल भी नहीं दे सकती। मगर राजा लोगोंका धर्म और कर्त्तव्य भी तो कोई चीज है। अब बंदूकका राज्य तो चला गया जिससे किसी रियासतको मजबूर किया जा सकता था। मगर ब्रिटिश साम्राज्यके मातहत जो वे सुरक्षित रहते थे वह सुरक्षितता तो अब नहीं रही। फिर कोई भी बड़ी-से-बड़ी रियासत ले लीजिए, मैं कोचीनको ही लेता हूं, क्योंकि एक खासा बड़ा समुद्र भी उसके साथ लगता है। वह अपनी सुरक्षाके लिए सारी दुनियाके साथ तो समझौते कर नहीं सकती। ऐसी हालतमें उनको ठीक सलाह देना वाइसरायका धर्म था। मगर रैयतका भी अगर वे अपने व्याख्यानमें कुछ जिक्र कर देते तो मुझको बहुत अच्छा लगता। चूंकि मैं काठियावाड़ राज्यमें पैदा हुआ था, इसलिए एक रैयत होनेके नाते मुझे उस बारेमें कहनेका हक है। अबसे पहले राजा लोग अगर दीवान भी रखते थे तो उसमें वाइसरायकी इजाजत लेते थे। वह उनको अच्छा तो नहीं लगता था। इसलिए अब जहां उनके ऊपरसे ब्रिटिश-सुरक्षाका छत्र हटा उसके साथ-साथ उनका दबाव भी तो उनपरसे हट गया। मगर दूसरी तरफसे प्रजाका दबाव अब उनपर पड़ता है। नतीजा यह हुआ कि राजा लोग प्रजाके सेवक बनकर रहेंगे तभी वे राजा रह सकते हैं। उनके यहां जो प्रजा-मंडल है उनके साथ उनको मशविरा करना चाहिए और शासन-प्रबंधमें उनका सहयोग लें। यह

बात तो ठीक है कि उन्होंने कभी राज्य तो चलाया नही। राज्य तो हमारे इन नेताओने भी पहले कभी नही किया था जो आज केंद्रीय सरकारमे है। वे बाहर तो शेर बने हुए थे, मगर आज तो बकरी-जैसे बन गए है। इसका यह मतलब नही है कि राजा लोग यो ही अपने राज्यमे बीस-पच्चीस आदमियोको खडा कर दे और उनको प्रजा-मडल कहने लगे। वे जो कुछ करे वह सच्चाई और नेकनीयतीसे करे।

जहातक यूनियन या पाकिस्तानमे शामिल होनेका सबध है, उसमे भौगोलिक स्थितिका पूरा ध्यान रखना होगा। गुजरात या काठियावाडका कोई राज्य अपनेको बगालके साथ थोडे ही कह सकता है? अत रियासते भूगोलके दबावसे नही निकल सकती।

अग्रेज जाते समय क्या राजाओको यह नही कह सकते थे कि जो सर्वोच्च सत्ता उनके पास थी वह अब हिंदुस्तान और पाकिस्तानके पास चली गई है। निश्चय ही यह बहुत खटकनेवाली बात है और हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान दोनोके लिए वह एक पेचीदा प्रश्न बन गया है। मै तो यही कहूगा कि राजाओंके लिए भी यह इम्तिहानका समय है। वे नामके राजा रहे, मगर असलमे प्रजाके सेवक बन जाए, तब तो हिंदुस्तानकी खैर है।

मैंने जो आज यह रुदन किया है वह इस वजहसे नही कि राजाओ-के विरुद्ध वाइसरायने मुझसे शिकायत की हो या हमारी स्वदेशी हकूमतने, जिसमे जवाहरलालजी और राजेद्रबाबू आदि है, मुझसे कुछ कहा हो। हकीकत तो यह है कि लोग आज इस बातकी तुलना करते है कि हिंदुस्तानकी हकूमत क्या करती है और पाकिस्तानकी क्या?

मगर देशी राज्योकी प्रजापर क्या बीत रही होगी? वहाकी रैयत क्या इस आजादीपर खुश होगी? क्या वहाके लोग आज़ादीके उत्सवमे शामिल होंगे? मै तो उस दिन उपवास करूगा और मेरी प्रार्थना भी खासतौरसे उस दिन यही होगी कि हे ईश्वर! हिंदुस्तान आजाद तो हुआ, परतु उसे बर्बाद न कर!

देशी राज्य हिंदुस्तानका एक चौथाई हिस्सा है। क्या वहाकी दस करोड प्रजा १५ अगस्तको आजादीका उत्सव मना सकेगी? अगर राजा लोग यह कहे कि हम तो तुम्हारे नौकर बनकर रहेंगे तब

तो खैर है। तब वे प्रजासे जो पैसा लेंगे वे प्रजाको ऊपर उठानेके लिए ही लेंगे। वे दस गुना करके उसे वापिस दे देंगे, पैसेके रूपमें नही, बल्कि अपने राज्यमें शिक्षाके लिए स्कूल, रोगियोंके लिए अस्पताल, सड़कें तथा बाग-बगीचों आदिके रूपमें। इसलिए मुझे ऐसा लगा कि मैं आज राजाओंके बारेमें इतना तो कह दू। वाइस-रायके भाषणके बारेमें जवाहरलालजी और सरदार पटेलने तो कुछ कहा नहीं। मगर दिलमें तो वे भी महसूस करते ही होंगे। दिलमें फिर जहर क्या रखना था? यह तो एक तरहका खेल-सा है जिसमें खेलके सब खिलौने मेजपर रखे रहने चाहिए। जब हमारे दिलमें किसी प्रकारका जहर नहीं होगा तभी तो हम १५ अगस्तका दिन दिल खोलकर मना सकेंगे।

: ८२ :

२८ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मैं कुछ प्रश्नोंके जवाब दूंगा।

प्रश्न— १५ अगस्तके बाद दोनों राज्योंमें दो कांग्रेसें होंगी या एक ही रहेगी? या कांग्रेसकी आवश्यकता ही न रहेगी?

उत्तर—मेरे विचारमें उस समय ऐसी संस्थाकी जरूरत और भी ज्यादा होगी। बेशक, उसका काम बदल जायगा। यदि कांग्रेस मूर्खतापूर्वक दो धर्मोके आधारपर दो राष्ट्रोंका सिद्धांत मंजूर नहीं कर लेती तो सारे हिंदुस्तानके लिए केवल एक कांग्रेस रह सकती है।

हिंदुस्तानके बटवारेसे आज उसके समूचेपनका बटवारा नहीं होता—नहीं होना चाहिए। दो सार्वभौम राज्योंमें बांट दिये जानेके कारण हिंदुस्तानके दो राष्ट्र नहीं होते। मान लिया जाय कि कोई एक या ज्यादा रियासतें दोनों राज्योंके बाहर रहती हैं तो क्या कांग्रेस उन्हें और उनकी जनताको राष्ट्रीय कांग्रेससे निकाल देगी? क्या

उनकी माग यह नही होगी कि काग्रेस उनकी ओर विशेष ध्यान दे और उनकी विशेष परवाह करे ? जरूर ही पहलेसे ज्यादा उलझे हुए सवाल उठेगे। उनमेसे कुछका हल कठिन भी हो सकता है। मगर काग्रेसके टुकड़े कर देनेके लिए यह कोई कारण न होगा। उससे अबतककी अपेक्षा अधिक बडी राजनीतिज्ञता, अधिक गहरे विचार और अधिक शात निर्णयको उत्तेजना मिलेगी। पगु बना देनेवाली कठिनाइयोपर ही हमे पहलेसे विचार नही करते रहना चाहिए। आजतक जो खराबिया हो चुकी वे काफी है।

प्रश्न—क्या काग्रेस अब साप्रदायिक सस्था बन जायगी ? आज जोरोंसे माग की जा रही है कि चूकि अब मुसलमान अपने आपको परदेशी समझने लगे है, इसलिए हमे भी अपने सघको हिदू भारत कहकर क्यो नही पुकारना चाहिए और उसपर हिंदू-धर्मकी अमिट छाप क्यों नही लगा देनी चाहिए ?

उत्तर—इस सवालमे घोर अज्ञान भरा है। काग्रेस कभी हिंदू-संस्था नही बन सकती। जो उसे ऐसा बनावेगे, हिंदुस्तान और हिंदू-धर्मसे दुश्मनी करेगे। हिंदुस्तान करोडोका मुल्क है। उनकी आवाज़ किसीने नही सुनी। अगर कोई दो प्रजाकी बातपर जोर देनेवाले है तो वे शहरोके शोर-गुल मचानेवाले लोग ही है। हम उनकी आवाजको हिंदुस्तानके देहातोके करोडोकी आवाज न समझे।

तीसरी बात यह है कि हिंदुस्तानके मुसलमानोने नही कहा है कि वे हिदुस्तानी नही है और अतमे याद रखा जाय कि हिंदू-धर्ममे कितनी ही कमिया क्यो न हो, हिंदू-धर्मने कभी अलहदगीका दावा नही किया। अलग-अलग धर्मोके लोगोने मिलकर हिंदुस्तानको एक प्रजा या राष्ट्र बनाया है उन सबका हिंदुस्तानी कहलानेका समान हक है। बहुमतको दूसरोको दबानेका हक नही है। बहुमतके जोरसे या तलवारके जोरसे मिली हुई ताकत सच्ची ताकत नही है। दरअसल सचाई ही सच्ची ताकत है।

प्रश्न—तीसरा सवाल है कि जो मुसलमान नही उनका पाकिस्तानके झडेकी तरफ क्या रुख रहे ?

उत्तर—पाकिस्तानका झडा अभी तो लीगका झडा होगा। अगर मुस्लिम लीग और इस्लाम एक चीज है तो सारी दुनियाके मुसलमानोका झडा एक होना चाहिए और जिनकी इस्लामसे दुश्मनी नही उनको उसकी इज्जत करनी चाहिए। मै इस्लामका, हिंदू-धर्मका, ईसाई-धर्मका, या किसी दूसरे धर्मका झडा जानता नही हू। मगर मैने इस्लामका गहरा अभ्यास नही किया तो मै भूल कर सकता हू। अगर पाकिस्तानका झडा, चाहे उसका रूप-रग कुछ भी हो पाकिस्तानमे रहनेवाले सब लोगोका झडा होगा, तो मै उसकी सलामी करूगा और आपको भी ऐसा ही करना चाहिए। दूसरे लफ्जोमे उपनिवेश एक दूसरेके दुश्मन नही बन सकते। मै तो बहुत रस और दुखसे देख रहा हू कि दक्षिण अफ्रीकाका उपनिवेश हिंदुस्तानके उपनिवेशकी तरफ क्या रुख रखता है? क्या दक्षिण अफ्रीकाके लोग हिंदुस्तानको नफरत कर सकते है? क्या अफ्रीकाकी यूनियनके गोरे अब भी हिंदुस्तानियोके साथ रेलके एक डिब्बेमे सफर करनेसे इन्कार करेगे?

: ८३ :

२९ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै बहुत कामकी बाते कह रहा हू। मुझसे ऐसा कहा जाता है कि मुझे काश्मीर जाना चाहिए। मुझे वहा जानेका शौक नही है और होना भी नही चाहिए। लेकिन वह खूबसूरत जगह है। वहा हिमालय पहाड भी है। लेकिन दुनियामे कई और भी खूबसूरत जगह है। तीर्थ-क्षेत्र भी काफी पडे है।

एक बार मै काश्मीर जाना चाहता था। उस समयके काश्मीर महाराजाने मुझे बुलाया भी था। उस समय सर गोपालस्वामी आयगर वहाके दीवान थे। लेकिन ईश्वर जब मुझको मौका दे तभी तो मै जाऊगा।

जब पिछली बार पडित जवाहरलाल काश्मीरमे रोक लिए गए

तब उनकी यहा जरूरत थी। उस समय मौलाना आजाद काग्रेसकी सदारत करते थे। वे जवाहरलालको काश्मीरसे बुलाना चाहते थे; क्योकि यहा उनकी जरूरत थी। उस समयके वाइसराय लार्ड वेवेलने भी उनकी जरूरत महसूस की। वेवेल और मौलाना साहब दोनों परेशान थे। तब मौलानाने जवाहरलालके पास खबर भेजी कि आपने जो काम अपनाया है वह काग्रेसका काम है, इसलिए अनुशासनके मुताबिक आप यहा आइए। उस समय जवाहरलालने यहा आना तो मजूर कर लिया, लेकिन यह भी उन्होंने कहा कि बादमे फिर काश्मीर जाऊगा। मौलानाने कहा कि बादमे यह काम किया जा सकता है और जरूरत होगी तो गाधीजीको भी आपके साथ भेज दिया जायगा। मैने भी जवाहरलालसे कहा कि ऐसा करनेसे तुम्हे कोई नही रोक सकता।

अब तो सरकार ही बदल गई। वाइसराय बदल गया। मै अब काश्मीर जानेको तैयार हो गया, जिससे जवाहरलाल अपना काम करते रहे। चूकि वहा कई झझट थे, इसलिए मैने कह दिया था कि यदि वाइसराय कह दे कि वहा जाओ तो मै जाऊगा। वाइसरायने कुछ समय पहले मुझसे कहा कि मै अभी वहा जाता हू, आप न जाय। इसलिए मै नही गया। अब सिलसिला ऐसा हो गया कि या तो मै वहां जाऊ या जवाहर जाय। लेकिन वह तो जा नही सकते। यही काम बहुत पडा है। वैसे तो वहाकी आबहवा अच्छी है। यदि वहा वह जायगे, तो वह तदुरुस्त होकर आयेंगे। लेकिन यहाके झझटको भी तो सम्हालना होगा। यदि अतरिम सरकारके उपाध्यक्ष वहां जाय तो उसका ऐसा भी मतलब निकाला जा सकता है कि वे काश्मीरको भारतीय सघमे मिलाने गए है—इस तरहका भ्रम पैदा हो सकता है। इसलिए मै वहा जाऊगा।

काश्मीरमे राजा है और रैयत भी। मै राजाको कोई ऐसी बात नही कहने जा रहा हू कि वे पाकिस्तानमे न सम्मिलित हो और भारतीय सघमे सम्मिलित हो। मै इस कामके लिए वहा नही जाऊगा। वहा राजा तो है, लेकिन सच्चा राजा तो प्रजा है। यदि राजा प्रजाका सेवक नही है तो वह राजा नही है, मै यही मानता हूं। मै

तो इसीलिए वागी वना, क्योकि अग्रेज अपनेको यहाका राजा समभते थे, जिसे मै नही मानता था। अब वे भारत छोड रहे है। जो हाकिमी करने आया था वह अब नौकर वनना चाहता है। मनसा-वाचा-कर्मणा वे अब नौकर वनना चाहते है। वे अब इसलिए गवर्नर-जनरल नही वनते, कि राजाने नियुक्त किया है, वल्कि हम—अतरिम सरकार—उन्हे गवर्नर-जनरल बना रहे है। मै तो कहता था कि हरिजनकी एक लडकीको गवर्नर-जनरल बना देना चाहिए, लेकिन मै यह मानता हू कि अभी इस हालतमे हरिजनकी लडकीको गवर्नर-जनरल नही बनाया जा सकता, क्योकि राजाओसे बात करनी है, और भी कई वडे-वडे काम पडे है। हा, जब प्रजातत्र वन जायगा तव ऐसा हो सकता है। मैं कहना चाहता हू कि अग्रेजोके इस काममें फरेबी नही दिखाई देती। आज यह भी नही है कि वे पैसा चाहते है—यदि रखना है तो उन्हे नौकरी दो नही तो वे जा रहे है। १५ अगस्तको काफी अग्रेज चले जायगे; ऐसी उनकी मशा है—वाचा और कर्मणा तो ऐसा है ही।

अभीतक वाइसरायकी छत्रछायामे काश्मीरके महाराजा जो करना चाहते थे कर सकते थे। अब तो वे रैयतके है। सर्वोच्च सत्ता लोगोके हाथमें है। मै यह नही कहता कि मै महाराजा साहबको तकलीफ देना चाहता हू। वहा काम करनेवाले जो पडित और मुल्ला है वे मुझे नाममे तो जानते ही है। मैने काश्मीरके लोगोको काफी पैसा दिया है। उनका नकाशीका काम व शाल वनानेका काम अच्छा होता है। चर्खा सघने भी अच्छा काम वहा किया है। वहाके गरीब लोग मुझे पहचानते है।

वहाके लोगोसे पूछा जाना चाहिए कि वे पाकिस्तानके सघमे जाना चाहते है या भारतीय सघमे। वे जैसा चाहे करे। राजा तो कुछ है ही नही। प्रजा सब कुछ है। राजा तो दो दिन वाद मर जायगा लेकिन प्रजा तो रहेगी ही। कुछ लोगोने मुझसे कहा कि यह काम मै पत्र-व्यवहारके जरिये ही क्यो न करू? तो मै कहूगा कि वैसे तो मै पत्र-व्यवहारके जरिये ही नोआखालीका काम भी कर सकता हू।

काश्मीरमे मै कोई काम सार्वजनिकरूपसे नही करूगा। मै प्रार्थना

भी सार्वजनिक सभामे नही करना चाहता, करू वह दूसरी बात है। प्रार्थना तो मेरे जीवनका एक अग है।

अब रही बात यह कि मै जो कहता हू कि १५ अगस्तको फाका करो और प्रार्थना करो, यह क्या है ? मै दु ख तो नही मनाना चाहता हू। लेकिन दु खकी बात यह है कि हमारे पास खुराक नही है, कपडा नही है। आज एक आदमी बिगड जाता है और दूसरे आदमीको मार डालता है। लाहौरमे ऐसा चल रहा है कि ज़रा बाहर निकले और मार डाले गए। सो हम मौज करे और मिठाई खाय, ऐसा उत्सव ऐसे अवसरमे कैसे मनाया जाय ?

६ अप्रैल १९१९ को सारे हिंदुस्तानमे जागृति हो गई थी। उस दिन कोई उत्सव इस तरहसे नही मनाया गया। मैने हिंदुओ और मुसलमानोसे कहा कि वे उस दिन फाका रखे, प्रार्थना करे और चर्खा चलाए। उन दिनोमे हिंदू और मुसलमानोमे कोई दुश्मनी नही थी, इसलिए सबोने वैसे ही फाका रखकर उत्सव मनाया। ६ तारीखको जितना बडा उत्सव उस समय था वैसी तारीख हिंदुस्तानके इतिहासमें आनेवाली नही है। आज ६ तारीखसे भी ज्यादा आवश्यकता है कि लोग फाका रखे। करोडो लोग भूखो मर रहे है। उस समय तिलक-स्वराज्य-फडके लिए एक करोड रुपये जमा करना मुश्किल था—वह जमाना ही वैसा था। हमारे पास सत्ता नही थी। आज तो करोडों रुपया हमारे हाथमे आ गया है। ऐसी जिम्मेदारी आ गई है। यदि ऐसे समयमे हम नम्र न बनेगे तो क्या होगा ? अगर १५ अगस्तको खूब खा-पीकर मजे उडाएगे तो १६ अगस्तको राजेंद्रबाबू क्या करेंगे—क्या खिलाएगे ? इसलिए मै कहूगा कि उत्सव जरूर मनाए, लेकिन फाका रखकर, प्रार्थना करके और चर्खा चलाकर मनाए। हा, हमे मातम नही मनाना चाहिए।

: ८४ :

३० जुलाई १९४७

आज मेरा यहा अखीरका दिन है। कलसे प्रार्थना नही हो सकती। अगर आप करेगे तो अच्छा होगा, मगर मै तो नही रहूगा। ईश्वरकी कृपा हो गई तो परसो श्रीनगर पहुच जाऊगा। मैने कल कहा था कि मै वहा दो-तीन दिन रहूगा। मुझे वहा कोई खास काम करना है, ऐसी बात नही है। मुझे वहा किसी सार्वजनिक सभामे हिस्सा नही लेना है। मै तो लोगोसे मिलने जा रहा हू। किसी उम्मीदसे नही। मै खाली हाथ भी लौटकर नही आनेवाला हू, लेकिन मेरे हाथ भरना या न भरना ईश्वरके हाथ है। आज तो मै प्रतिज्ञाके वश होकर जाता हू। प्रतिज्ञाका पालन हो जानेपर पीछे भाग आऊगा। वहासे मै नोआखाली जाऊगा।

बिहारके एक मुसलमानके पाससे मेरे पास खत आया है कि वहा हिंदू और मुसलमान सब लोग पहले-जैसे भाई-भाईके समान रहने लगे है। बिहारके मत्री श्रीअसारीने भी मुझे बताया है कि अब कोई झगडा नही रहा। पहले जिस तरह भाई-भाईके-जैसे लोग रहते थे वैसे ही अब फिर रहने लगे है। स्पेशल ट्रेनोंसे लोग आ रहे है। वे बिहार-सरकारके खर्चसे नही आ रहे है। बिहार-सरकारने तो उन्हे नही भेजा था। बगालवाले ले गए थे। उनका काम था कि वे उन्हे भेज देते। मै तो बिहारके हिंदुओसे कहूगा कि जो मुसलमान आ रहे है उन्हे अपनाना चाहिए। अपनेमे पहले-जैसा मिला लेना चाहिए। हकूमतपर भरोसा किए बैठे नही रहना चाहिए। अबतक तो हमारे हाथमे सत्ता नही थी। अग्रेजोका राज था। तब उनपर भरोसा करना पडता था। अब सल्तनत हमारे हाथमे आ गई है। रैयतकी हकूमत है। इसलिए अब कोई ऐसा नही कह सकता कि हकूमतका काम है। अगर रैयत ही नही है तो हकूमत कहा ? इसलिए बिहारके हिंदू ऐसी आबोहवा रखे कि वहाके मुसलमान ऐसा न समझे कि हमारी पीठपर पाकिस्तान नही है। अभी दो भाग हो

गए है, मेरे ख्यालसे यह बुरा हुआ है। मगर बुरा या अच्छा, अब तो हो ही गया है। जो पाकिस्तानको माननेवाले थे उनके मनमे तो वह भरा ही हुआ है। दोनोंने मान लिया है कि अब हम अलग-अलग हो गए। यदि मुसलमानोंने ऐसा समझकर किया तो मुझे बुरा लगेगा। पाकिस्तान तो कोई चीज नही है। उससे सिर्फ हकूमतका बटवारा हुआ है। मै बिहारियोसे इतना ही कहना चाहता हू।

अब मै बबईके बारेमे कुछ कहना चाहता हू। बबईकी हकूमतने तय किया है कि कमीशनकी बताई हुई वृद्धिके मुताबिक तनख्वाह दी जायगी। मैने अतिशयोक्ति की थी। कह दिया था कि अभीसे कर दिया। मगर अभीतक ऐसा नही किया गया। मगर इससे क्या हुआ? जो तय हो गया है उसके मुताबिक किया जायगा। फिर वहाके कर्म-चारी भूख-हडताल क्यो करे?

वहासे एक तार आया है कि अगर गाधी इस मामलेमे दखल दे तो फैसला हो सकता है। मैने कहा, गाधीके हाथमे कोई सत्ता नही है। यो तो वह सब मेरे दोस्त है। उन्होने मेरे मातहत काम किया है। वह कहते है कि गाधी जैसा कहेगा वैसा हम मान लेगे। मगर मै ऐसा नहीं कह सकता। अशोक मेहता वहा है। वह भी कहता है कि गाधी फैसला कर दे तो हमे मजूर होगा। मगर मै कहता हू कि मै ऐसा नही कह सकता। अबतक हमारे हाथमे ताकत नही थी। अब ताकत आई है। क्या मै दखल देकर उसे नष्ट कर दूं? मुझे लोग डिक्टेटर बनाकर फैसला कराए, ऐसा घमडी मै कभी नहीं बन सकता। परमेश्वर मुझसे काम ले सकता है। हकूमतने अपना काम कर दिया। उसने कमीशनके मुताबिक वृद्धि करना तय कर लिया है। मै बादमे उसमें शिरकत दू तो ऐसा हो नही सकता। इसलिए उनका यह कहना कि ऐसा तो ठीक नही और हम टोकेन स्ट्राइक[1] करेंगे, यह ठीक नही। मै उनसे अदबके साथ कहूगा कि वे ऐसा न करे। मै उनका दोस्त हू, हकूमतका दोस्त हू, और राजा

[1] सांकेतिक हड़ताल।

लोगोका भी दोस्त हू। उन्हे मुझसे अनुचित काम नही कराना चाहिए। सभी पार्टियोका फर्ज है कि १५ अगस्तसे जो हकूमत बननेवाली है उसके मारफत सब काम कराए। अंग्रेजोंके जमानेमे हम कुछ नही कर पाते थे। हमने कोशिश की। अहिंसात्मक युद्ध किया। अब भी कर सकते है। मगर उसके लिए सामान तो चाहिए, लोकमत तो बनना चाहिए।

उदाहरणके लिए गो-रक्षाका मामला है। इसमे मजबूर करोगे तो मुसलमानोको! हिंदुओको क्यो नही? पारसियोको क्यों नही? इस तरह गो-रक्षा नही हो सकती। अपने धर्मपर चलनेसे सब काम बिना कानून हो सकता है। मै तो चाहता हू कि मुसलमान भी गो-वध न करे। वे गायका मास न खाए। लेकिन ऐसा करना या न करना उनकी इच्छापर है। हमे यह घमड नही होना चाहिए कि हमारी हकूमत आ गई है इसलिए हम जबरन या कानूनन सब काम करा सकते है।

मै चाहता हू कि जो स्वराज्य मिला है उसका ठीक उपयोग किया जाय। हम धर्मकी वृद्धि करे, ताकि जो स्वराज्य हम चाहते है वह जल्दी आ जाय।

: ८५ :

१० सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मै शाहदरा पहुचा, तो मैंने अपने स्वागतके लिए आए हुए सरदार पटेल, राजकुमारी और दूसरे लोगोको देखा। लेकिन मुझे सरदारके ओठोंपर हमेशाकी मुस्कराहट नही दिखाई दी। उनका मसखरापन भी गायब था। रेलसे उतरकर मै जिन पुलिसवालों और जनतासे मिला, उनके चेहरोपर भी सरदार पटेलकी उदासी दिखाई दे रही थी। क्या हमेशा खुश दिखाई देनेवाली दिल्ली आज एकदम मुर्दोका शहर बन गई है? दूसरा अचरज भी मुझे देखना बदा था। जिस भगी-बस्तीमे ठहरनेमें

मुझे आनद होता था, वहा न ले जाकर मुझे बिड़लाके आलीशान महलमे ले जाया गया। इसका कारण जानकर मुझे दु ख हुआ। फिर भी उस घरमे पहुचकर मुझे खुशी हुई, जहा मै पहले अक्सर ठहरा करता था। मै भगी-बस्तीमे वाल्मीकि भाइयोंके बीच ठहरू या बिडला-भवनमे ठहरू, दोनों जगह मै बिडला भाइयोंका ही मेहमान बनता हू। उनके आदमी भगी-बस्तीमे भी पूरी लगनके साथ मेरी देखभाल करते है। इस फेरबदलके कारण सरदार नही है। वह वाल्मीकि-बस्तीमे मेरी हिफा-जतके बारेमे किसी तरह डरनेकी कमजोरी कभी नही दिखा सकते। भगियोके बीच रहकर मुझे बडी खुशी होती है, हाला कि नई दिल्लीकी कमेटीके कसूरसे मै बिलकुल उन घरोमे तो नही रह सकता, जिनमे भगी लोग मछलियोकी तरह एक साथ ठूस दिए जाते है।

मुझे बिडला-भवनमे ठहरानेका कारण यह है कि भगी-बस्तीमे जहां मै ठहरा करता था, वहा इस समय निराश्रित लोग ठहराए गए है। उनकी जरूरत मुझसे कई गुना बडी है। लेकिन हमारे यहा निराश्रितोका कोई भी सवाल खडा हो, यह क्या एक राष्ट्रके नाते हमारे लिए शरमकी बात नही है? पडित नेहरू और सरदार पटेलके साथ कायदे आजम जिना, लियाकतअली साहब और दूसरे पाकिस्तानी नेताओंने यह ऐलान किया था कि हिंदुस्तानी सघ और पाकिस्तानमे अल्पमतवालोके साथ वैसा ही बरताव किया जायगा, जैसा कि बहुमतवालोके साथ। क्या हर डोमीनियनके हाकिमोने यह मीठी बात दुनियाको खुश करनेके लिए ही कही थी, या इसका मतलब दुनियाको यह दिखाना था कि हमारी कथनी और करनीमे कोई फर्क नही है और हम अपना वचन पूरा करनेके लिए जान भी दे देगे? अगर ऐसा ही है, तो मै पूछता हू कि हिंदुओ, सिखों, गौरवभरे आमिलो और भाईबदोको अपना घर पाकिस्तान छोड़नेके लिए क्यो मजबूर किया गया? क्वेटा, नवाबशाह और कराचीमे क्या हुआ है ? पच्छिमी पजाबकी दर्दभरी कहानिया, सुनने और पढनेवालोके दिलोंको तोड़ देती है। पाकिस्तान या हिदुस्तानी सघके हाकिमोके लाचारी दिखाकर यह कहनेसे काम नही चलेगा कि यह सब गुडोका काम है। अपने यहां रहनेवाले लोगोके कामोकी पूरी जिम्मेदारी अपने सिर लेना

हर डोमीनियनका फर्ज है। उनका काम 'क्या और क्यों' करनेका नहीं, बल्कि करने और मरनेका है। अब वे साम्राज्यवादके कुचल डालनेवाले बोझके नीचे चाहे या अनचाहे कोई काम करनेके लिए मजबूर नहीं किए जाते। आज वे आजादीसे जो चाहे कर सकते हैं। लेकिन अगर उन्हें ईमानदारीसे दुनियाके सामने अपना मुह दिखाना है, तो इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि अब दोनों डोमीनियनोंमें कोई कानून-कायदा रहेगा ही नहीं। क्या यूनियनके मंत्री अपना दिवालियापन जाहिर करके दुनियाके सामने बेशर्मीसे यह मंजूर कर लेंगे कि दिल्लीके लोग या निराश्रित जुनूनी और खुद होकर कानूनको नहीं पालना चाहते? मैं तो मंत्रियोंसे यह आशा करूंगा कि वे लोगोंके पागलपनके सामने झुकनेके बजाय उनके पागलपनको दूर करनेकी कोशिशमें अपने प्राणोंकी बाजी लगा देंगे।

जिस मकानमें मैं रहता हूं उसमें भी फल या शाक-भाजी नहीं मिलती। क्या यह शर्मकी बात नहीं है कि कुछ मुसलमानोंके मशीनगन या बंदूक वगैराते गोलीबार करनेके कारण सब्जीमंडीमें शाक-भाजीका मिलना बंद हो गया? शहरके अपने दौरेमें मैंने यह शिकायत सुनी कि निराश्रितोंको राशन नहीं मिलता। जो कुछ दिया भी जाता है, वह खाने लायक नहीं होता। इसमें अगर दोष सरकारका है, तो उतना ही दोष निराश्रितोंका भी है जिन्होंने जरूरी कामकाजको भी रोक दिया है। उन्होंने यह क्यों नहीं समझा कि ऐसा करके वे अपने-आपको नुकसान पहुंचा रहे हैं? अगर उन्होंने अपनी तमाम सच्ची शिकायतोंको दूर करनेके लिए सरकारपर भरोसा किया होता और कायदा पालनेवाले नागरिकोंकी तरह बरताव किया होता, तो मैं जानता हूं और उन्हें भी जानना चाहिए, कि उनकी ज्यादातर मुसीबतें दूर हो जातीं।

मैं हुमायूंके मकबरेके पास मेवोंकी छावनीमें गया था। उन्होंने मुझसे कहा कि हमें अलवर और भरतपुर रियासतोंसे निकाल दिया गया है। मुसलमान दोस्तोंने जो कुछ भेजा है, उसके सिवा हमारे पास खानेकी कोई चीज नहीं है। मैं जानता हूं कि मेव लोग बड़ी जल्दी उभाड़े जा सकते और गड़बड़ी पैदा कर सकते हैं। लेकिन उसका यह इलाज नहीं

है कि उन्हे न चाहनेपर भी यहासे निकालकर पाकिस्तान भेज दिया जाय। उसका सच्चा इलाज तो यह है कि उनके साथ इन्सानोंका-सा बरताव किया जाए और उनकी कमजोरियोका किसी दूसरी बीमारीकी तरह इलाज किया जाए।

इसके बाद मै जामिया-मिलिया गया, जिसके बनानेमे मेरा बडा हाथ रहा है। डा० जाकिरहुसेन मेरे प्यारे दोस्त है। उन्होने सचमुच दु खके साथ मुझे अपने अनुभव सुनाए, लेकिन उनके मनमे किसी तरहकी कडु-वाहट न थी। कुछ समय पहले उन्हे जालधर जाना पडा था। अगर एक सिख केप्टन और रेलवेके एक हिंदू कर्मचारीने समयपर वहा उनकी मदद न की होती, तो मुसलमान होनेके कसूरमे गुस्सेसे पागल बने सिखोने उन्हे जानसे मार दिया होता। डा० जाकिरहुसेनने इन दोनोका अहसान मानते हुए अपना यह अनुभव मुझे सुनाया। जरा खयाल तो कीजिए कि इस राष्ट्रीय सस्थाको, जहा कई हिंदुओने शिक्षा पाई है, यह डर है कि कही गुस्सेसे भरे निराश्रित और उन्हे उकसानेवाले लोग उसपर हमला न कर दे। मै जामिया-मिलियाके अहातेमे किसी तरह ठहराए गए १००से ज्यादा निराश्रितोसे मिला। जब मैने उनकी मुसीबतोकी दर्दभरी कहानी सुनी तो मेरा सिर शर्मसे नीचा हो गया। इसके बाद मै दीवान हॉल, वेवेल केंटीन और किंग्सवेकी निराश्रितोकी छावनियोमें गया। वहा मै सिख और हिंदू निराश्रितोसे मिला। वे पजाबकी मेरी पिछली सेवाओको अबतक भूले नही थे। लेकिन इन सारी छावनियोमें कुछ गुस्सेभरे चेहरे भी दिखाई दिए, जिन्हे माफ किया जा सकता है। उन्होने मुझे हिंदुओकी तरफ कठोरता दिखानेके लिए कोसते हुए कहा, 'हम लोगोकी तरह आपने मुसीबते नही सही है। हमारी तरह आपके भाई-बेटे और सगे-सबधी नही मारे गए है। हमारे-जैसे आप दर-दरके भिखारी नही बनाए गए है। आप यह कहकर हमे कैसे धीरज बधा सकते है कि आप दिल्लीमे इसीलिए ठहरे है कि हिंदुस्तानकी राजधानीमे शाति और अमन कायम करनेमे भरसक मदद कर सके?' यह सच है कि मैं मरे हुए लोगोको वापिस नही ला सकता। लेकिन मौत सारे प्राणियोको— इन्सान, जानवरो वगैरा—भगवानकी दी हुई देन है। फर्क सिर्फ

समय और तरीकेका है। इसलिए सही बरताव ही जीवनका सही रास्ता है, जो उसे जीने लायक और सुदर बनाता है ।

आज दिनमे एक सिख दोस्त मुझसे मिले थे। उन्होंने कहा कि वे जन्मसे तो सिख है, लेकिन ग्रथ साहबकी दृष्टिसे वे सच्चे सिख होनेका दावा नही कर सकते । मैंने उन भाईसे पूछा कि आपकी नजरमे कोई ऐसा सिख है ? वे एक भी ऐसा सिख नही बता सके । तब मैंने नरमीसे कहा कि मै ऐसा सिख होनेका दावा करता हू । मै ग्रथ साहबके मानोमे सच्चे सिखका जीवन बितानेकी कोशिश कर रहा हू। एक समय था, जब ननकाना साहबमे मुझे सिखोंका सच्चा दोस्त करार दिया गया था। गुरु नानक मुसलमान और हिंदूमें कोई भेद नही मानते थे। उनके लिए सारी दुनिया एक थी। मेरा सनातन हिंदू-धर्म ऐसा ही है। सच्चा हिंदू होनेके नाते मै सच्चा मुसलमान होनेका भी दावा करता हू। मै हमेशा मुसलमानोकी महान् प्रार्थना गाता हू, जिसमे कहा गया है कि खुदा एक है और वह दिन-रात सारी दुनियाकी हिफाजत करता है ।

निराश्रितोंसे मेरा कहना है कि वे सचाई और निडरतासे रहे और साथ ही किसीसे वैर या नफरत न करे। गुस्सेमे बिना सोचे-समझे नादानी-भरे काम करके महगे दामो मिली आजादीके सुनहले सेब को फेक न दे।

: ८६ :

१२ सितम्बर १६४७

भाइयो और बहनो,

पहली बात तो मै आपको यह कहना चाहता हू कि आज जो खबर मेरे पास सरहदी सूबेसे आ गई है वह खतरनाक बात है। मेरा दिल तो उससे दुखी होता ही है। सरहदी सूबेमे मैं काफी दिनोतक रहा हू। बादशाह खान मेरे साथ थे। डाक्टर खानसाहबके घरपर रहता था। लीगवाले दोस्तोसे मुहब्बतसे मिलता था। जब मै यह सुनता हू कि वहां अब तो कोई हिंदू या सिख आरामसे नही रह सकता तो मुझे आश्चर्य

होता है । हिंदू और सिख वहा काफी तादादमे थे, लेकिन मुसलमानोके सामने उनकी तादाद छोटी ही थी। कितनी भी छोटी क्यो न हो, उससे क्या ? बात तो यह है कि एक भी मासूम बच्चा वहा रहे तो उसको भी सुरक्षित होना चाहिए।

जैसा मै अपने लिए सोचता हू वैसा ही मै आपको कह सकता हूं कि हम कभी गुस्सेमे न आए। दु ख मानना है तो माने। हमारे दिलमे हमारे दु खी भाइयोके लिए दिलचस्पी होनी चाहिए, उनके लिए हमारे दिलमे हमदर्दी होनी चाहिए। वे मारे जाते है तो हम मुसलमानोको क्यो न मारे, यह दिलमे आ सकता है। लेकिन जिन्होने हमारे भाइयोको मारा उन्हे तो मै मार नही सकता। उनके बदले दूसरे बेगुनाहोको मारनेकी तैयारी करू ? कितनोको मार सकते है ? वहा जो हुआ उसका जितना हो सके बदला लेना, इसका नाम वैरभाव हुआ—मै इस चीजको नही मानता कि कोई बुराई करता है तो उसका बदला बुरा बनकर लू । जो बुराई करता है, वह वहशियाना बात करता है, वह जगली बन जाता है, मूर्ख बन जाता है, तो क्या मै भी मूर्ख और जगली बनू ? मेरे ही लोग मूर्ख बन गए, दीवाने बन गए तो क्या उनको मारू ? मै आपको अपने बचपनकी बात सुनाऊ। उस वक्त मै शायद दस वर्षका था। मेरा बडा भाई बीमार पड गया। दीवाना-सा बन गया। मगर सबने उसपर दया हीं की । उसके लिए डाक्टर बुलाया, यह बुलाया, वह बुलाया लेकिन जेलरको नही बुलाया। इसको कैदमे भेज दो ऐसा नही कहा। यह दीवाना हो गया है, फौज बुलाओ ऐसा नही कहा। मेरा बाप सब कुछ कर सकता था, क्यो नही किया ? वह उसका लडका था। बाप कहता था, क्या लडकेको मार डालू ? तो जैसे अपना लडका है, भाई है, ऐसे मेरे सभी भाई है। मै आपको कहूगा कि हम ऐसा न कहे कि मुसलमान हमारे दुश्मन है। कितने मुसलमान मै बता सकता हू जो मेरे दोस्त है। उनके घरमे मै रह सकता हू। वे मेरे घरमे रहते है। उनके घरमे मैं रहू तो वे मेरी बडी हिफाजत करेगे। चूकि यहा हिंदुस्तानमे आज पाकिस्तान बन गया, हिंदुस्तानमे जो सब मुसलमान है उन्हे काटना इन्सानका काम नही है। इसलिए मै आपको यह सुनाता हू और आपकी

मार्फत सबको। वहाकी, पाकिस्तानकी, हकूमत तो अपना काम भूल गई। कायदे आजम जिना साहब जो पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल है, वहांके जो गवर्नर है, उनको मै कहूगा कि आप ऐसा न करे। जितनी बाते अखबारमे आई है, अगर वे सही है, तो मै उनसे कहूगा कि वहा हिंदू-सिख आपकी सेवाके लिए ही पडे है। आज वे क्यो डरते है ? इसलिए कि उनको और उनकी बीबियोको मर जाना पडेगा, उनकी बीबियोको कोई उठा ले जायगा। उन्हे खतरा है सो वे भागते है। वहाकी हकूमतमे ऐसा क्यो ? अपने लोगोको भी मै कहना चाहता हू कि आप ऐसे जाहिल न बनें। यहा दिल्लीमे हिंदू-सिख कहे कि चूकि पाकिस्तानमें हिंदू-सिख मुसीबतमे पडे है, वहा उन्हे बर्बाद कर दिया गया है, करोडोकी जायदाद वहा छोडकर वे आए है, उसका बदला यहा लेगे तो यह जहा-लत है। मैंने पाकिस्तानके हिंदू-सिखोकी दशा देखी है। मै लाहौरमे रहा हू। क्या मुझे दु ख नही होता ? मेरा दावा है कि मेरा दु ख किसी पजाबीके दु खसे कम नही। अगर कोई पजाबी हिंदू या सिख मुझे आकर कहेगा कि उसकी जलन ज्यादा है, क्योकि उसका भाई मर गया है, लडकी मर गई है, बाप मर गया है, तो मै कहूगा, उसका भाई मेरा भाई है, उसकी लडकी मेरी लडकी है, उसकी मा मेरी मा है। मेरे दिलमे भी उसके जितनी ही जलन है। मै भी इन्सान हू, गुस्सा आ जाता है, पर उसे पी जाता हू। उससे मुझमे शक्ति पैदा होती है। उस शक्तिसे क्या बदला लू ? बदला कैसे लू कि वे खुद अपने गुनाहके लिए पश्चा-त्ताप करे। कहे, हमसे बडा गुनाह हो गया है। जो मुसलमानोने वेस्ट[1] पजाबमे किया है वह सबके सामने है। वे हिंदू-सिख ऐसा करके मारे उससे क्या ? लेकिन वे धर्मको मारते है, उसको वे क्या करेगे ? उसका जवाब वे किसको देनेवाले है ? यह सब मै जानता हू। लेकिन वे जाहिल बनते है इसलिए मै यह कहू कि दिल्लीके हिंदू दिल्लीके सिख और जो कोई भी यहा बाहरसे आए है वे जाहिल बने ? मै उम्मीद करता हू कि वे ऐसा नही करेगे, ऐसे पागल नही बनेगे, ताकि बादमे आनेवाले

---

[1] पश्चिमी।

यह कहे कि हमारे बाप-दादे—हिंदू, सिख, मुसलमान सब ऐसे पागल बन गए कि उनको एक मोटी रोटी जिसका नाम आजादी था वह मिल गई, पर उसको वे हजम नही कर सके, खा नही सके, उस रोटीको उन्होंने दरियामे फेक दिया और ऐसा कहकर हमपर थूके। मै आपको कहता हू कि हम सावधान नही बन जाते है तो ऐसा जमाना आ रहा है।

आज मै जुमा मस्जिदमे गया था। उनकी बीबियोसे मिला। कोई रोती थी, कोई अपने बच्चेको मेरे पास लाती थी कि मेरा यह हाल है। इनको मै क्या कहू कि वहा वेस्ट-पजाबमे हिदुओका, सिखोका क्या हाल हुआ है, यह सब उनको जाकर सुनाऊ कि सरहदी सूबेमे क्या हुआ वह सुनाऊ? वह सब सुनाकर क्या करू? ऐसा करनेसे पजाबके हिंदू-सिखोंका दर्द क्या मिट जायगा?

पाकिस्तानवाले जाहिल बने, उसके सामने हिंदू और सिख भी जाहिल बन गए। तो एक जाहिल दूसरे जाहिलको क्या कहनेवाला था? इसलिए तो आपसे यह कहूगा, आप सारे हिंदू-धर्मको, सिख-धर्मको बचानेका काम करे। हिदुस्तानको और पाकिस्तानको, सारे देशको बचानेका काम करे। हम आखिरतक शरीफ रहे तो पाकिस्तानमे मुसल-मानोको शरीफ बनना ही है। यह दुनियाका कानून है। इस कानूनको कोई बदल नही सकता। यह आपको एक बूढा सुना रहा है, जिसने धर्म-का काफी अभ्यास किया है। हरेकका भला करनेकी कोशिश की है। ७८, ७९ वर्षमे मैने काफी तजुर्बा लिया है। मै कोई आखे बद करके दुनियामे नही घूमा। बीस वर्षतक हिंदुस्तानके बाहर रहा हू। दक्षिण अफ्रीका-जैसे जगली मुल्कमे जो हब्शी लोगोसे भरा हुआ है, उनके बीचमे मै रहा और राम-नाम नही भूला। रामका नाम याद रखता था और तभी तो मै वहा रह सका। इसलिए मै आपको अपने तजुर्बेसे कह सकता हू कि हमारा काम नही है कि अगर किसीने हमारे साथ बुरा किया हो तो हम उसका बुरा करके बदला ले। बुरेका बदला हम भला करके ले, यह सच्ची इन्सानियत है। जो भलेके बदले भला करता है वह तो बनिया बन गया और झूठा बनिया। मै कहता हू, कि मै बनिया हू। मगर सच्चा। आप झूठे बनिया न बने। सच्चा वह इन्सान है जो बुरेका बदला

भलेसे करता हूँ। यह मैंने बचपनसे सीखा और इतना तजुर्बा होनेके बाद समझ सकता हू कि यह सच्ची बात है। तो मै आपको कहता हू कि बुरेका बदला हम भले बनकर ले।

वे लोग मस्जिदमे बेहाल पडे थे। जुमेके रोज इतने इकट्ठे हो गए, तो नाटक करनेके लिए नही। उन्होने सुन लिया था, मैंने कलकत्तेमें मुसलमानोके लिए कुछ किया, बिहारमे कुछ किया, नोआखालीमे हिंदुओंके लिए कुछ किया, सो उन्होने सोचा, अच्छा वह आ गया है। अपने-आपको सनातनी हिंदू कहता है और इसलिए मुसलमान, सिख, पारसी और क्रिस्टी होनेका भी दावा करता है। तो उससे पूछो तो सही कि हमारे लिए क्या करना चाहता है?

एक माताने कहा मेरा बच्चा मर गया है, मै क्या करू? मैंने कहा—मा, मै तुझे क्या बताऊ? खुदाको याद कर, ईश्वर तेरा भला करेगा। बच्चा मर गया, सब मर गए तो क्या हुआ। तू भी तो इसी रास्तेपर जानेवाली है। छुरीसे नही तो शायद कालरेमे मर जायगी। तू हमेशा जिंदा थोड़े ही रहनेवाली है? इसलिए खुदाका नाम ले और हँस-रोकर क्या करेगी?

ऐसी घटनाए क्यो होती है? ऐसे हम जाहिल क्यो बने? हम अपने धर्मको पहिचाने। उस धर्मके मुताबिक मै सब लोगोको कहूगा कि यह हमारा परम धर्म है कि हम किसी हिंदूको पागल न बनने दे, किसी सिखको पागल न बनने दे। मै कहना चाहता हू कि सब मुसलमान जो अपनी-अपनी जगहोसे हट गए है, उन्हे वापिस भेजो। मेरी हिम्मत नही है कि मै आज उन्हे भेजू, मगर उन्हे वापिस भेजना है यह आप अपने दिलमे रक्खे। मै तो रखता हू। हमे शाति नही हो सकती है जबतक सब मुसलमान जिन जगहोसे निकले है, वही फिर न चले जाय। हा, एक बात है। आज मुझे लोग सुनाते है कि मुसलमान आज तो अपने घरोमें छुरा रखता है, गोला-बारूद रखता है, मशीनगन रखता है—स्टेन-गन, मैंने तो देखी भी नही है, वह सब रखता है, जैसे कि सब्जी-मडीमे। मैंने सब सुना है, देखा तो नही, लेकिन मै सब माननेको तैयार हू। पर उससे हम क्यो डरे? मै तो मुसलमानोको कहूगा और दिल्लीमे

तो सबको कहता हू कि आप एक ऐलान निकाले और खुदाको हाजिर-नाजिर जानकर, ईश्वरको साक्षी करके उसमे कहे कि पाकिस्तानमे कुछ भी हो उस गुनाहके लिए हमको आप क्यों मारे? हम तो आपके दोस्त है, हम हिदुस्तानके है और रहेगे। दिल्ली कोई छोटी नही है, देशकी राजधानी है, पायेतख्त है। यहा बडी आलीशान जुमा मस्जिद पड़ी है, यहा फोर्ट भी है वह आपने नही बनाए है, मैने नही बनाए है, हिंदूने नही बनाए है। वह तो मुगलोके बनाए हुए है, जो हमारे ऊपर राज्य करते थे। वे तो यहाके बन गए थे, हमारे रीति-रिवाज सब चीज ले ली थी। मुसलमानोको आज हम कहे कि यहासे जाओ, नही तो हम तबाह कर देगे तो क्या जामा मस्जिदका कब्जा आप लेनेवाले है? और अगर हम कब्जा लेते है तो उसके मानी क्या होते है? आप समझे तो सही! उस जुमा मस्जिदमे क्या हम रहेगे? मै तो यह कभी कबूल नही कर सकता। मुसलमानोको वहा जानेका हक होना ही चाहिए। वह उनकी चीज है। हमे भी उसका फख्र है। उसमे बडी कारीगरी भरी पड़ी है। हम क्या उसे ढा देगे? यह कभी नही हो सकता।

मुसलमानोसे मेरा कहना है कि आप साफ दिलसे कह दे कि आप हिंदुस्तानके है। यूनियनके वफादार है। अगर आप ईश्वरके वफादार है और आपको इडियन यूनियनमे रहना है तो आप हिंदुओके दुश्मन नही बन सकते। उनके साथ लड नही सकते। आपको यह कहना है। पाकिस्तानमे जो मुसलमान हिंदुओके दुश्मन बने पडे है उन्हे सुनाना है कि आप पागल न बने। अगर आप पागल बनेगे तो हम आपका साथ नही दे सकते। हम तो यूनियनके वफादार रहेगे। इस तिरगे झडेको सलाम करेगे। हकूमतका जैसा हुक्म होगा, उसके मुताबिक हमे चलना है। वे सब मुसलमानोंको कह दे कि जिनके पास मशीनगने है गोला-बारूद है, वह सब हकूमतको दे दे। हकूमतका यह धर्म है कि किसीको इसके लिए सजा न करे। ऐसा ही मै कलकत्तेमे करवाकर आया हूं। कलकत्ते-मे मेरे पास काफी हथियार लोगोने जमा कर दिए थे। ज्यादा तो हिंदुओने ही दिए थे। यहा मुसलमानोके पास हथियार है तो क्या हिंदुओके पास नही है? मै हिंदूको तो कहता हू कि हथियार रखना ही न चाहिए।

रखना है तो उसके लिए लाइसेंस होना चाहिए, उसके लिए परवाना होना चाहिए। पंजाबमें कहते हैं कि सबको हथियार रखनेका हक दे दिया है। मैं नहीं जानता कि पंजाबमें क्या हो रहा है। अगर सबको हक है तो सब हथियार रक्खेंगे। उससे पंजाबका कोई भला नहीं होनेवाला है। सबके पास हथियार रहेंगे तो आपस-आपसमें लोग लड़ेंगे और एक दूसरेको मारेंगे। सब हथियार रक्खें और सब लड़नेवाले हो जायं तो तिजारत कौन करेगा? क्या आपसमें मारनेका पेशा रह जायगा? इसलिए मैं कहूंगा कि अगर पंजाबमें या पाकिस्तानमें ऐसा है तो उसमें तबदीली करनी चाहिए और कहना चाहिए कि हथियार कोई न रक्खेगा, हथियार सब हकूमतके पास रहेंगे। शहरीको हथियारकी क्या जरूरत है, इसकी तो हकूमतको जरूरत है। कुछ भी हो, आज तो किसी शहरीके पास हथियार नहीं होना चाहिए। मैं कहूंगा कि जितने भी हथियार मुसलमान रखते हों, सब हथियार हकूमतको दे देना चाहिए। हिंदुओंको भी सब हथियार दे देना चाहिए। पीछे हिंदू-सिख मुसलमानोंसे कहें कि आप क्यों डरते हैं। हम आपसे नहीं डरेंगे और आप हमसे न डरें। बाहर कुछ भी हो, दिल्लीमें तो हम भाई-भाई होकर रहेंगे। ऐसा कलकत्तेमें भी हुआ और हिंदू-मुसलमान भाई-भाई होकर रहने लगे। बिहारमें भी हिंदू ऐसा करते हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि दिल्लीमें भी वही होगा जो कलकत्तेमें हुआ। आप लोग जल्दी दिल्लीमें वैसी हालत लाएं जिससे मैं जल्दी पंजाब जा सकूं और वहां जाकर कह सकूं कि दिल्लीमें मुसलमान शांतिसे रह रहे हैं। उसका बदला मैं वहां मांगूंगा। मेरे बदला मांगनेकी बात कैसी है, वह मैंने आपको समझा दिया और वही सच्चा बदला है। वह बदला मैं ममदोतके नवाब साहब और वहांकी हकूमतसे मांगूंगा। ईस्ट[1]-पंजाबमें भी मैं चला जाऊंगा। वहां सिखोंको, हिंदुओंको डांटूंगा, उन्हें कड़ी सुनाऊंगा, क्योंकि मैं सबका खादिम हूं, दोस्त हूं। मैं सब मजहबका हूं, तो मुझे सबको कहनेका हक है और मैं कहूंगा कि आप पागल क्यों बनते हैं। सिख इतनी बहादुर कौम है। एक सिख

---

[1] पूर्वी।

सवा लाख इन्सानसे ज्यादा कहलाता है। वह क्या किसी कमजोरको मारेगा? मारकर क्या पानेवाला था?

मुसलमानोंको चाहिए था पाकिस्तान, उन्हे मिल गया। पीछे क्यो लडते हैं, किसके साथ लडते है? क्या पाकिस्तान मिल गया तो सारा हिदुस्तान ले लेग? वह कभी होनेवाला नही। क्यो वे कमजोर हिंदू-सिखोंको मारते है? यह सब मै उनको कहना चाहता हू। मै तो अकेला हू। आपके पास हकूमत पडी है, दोनो हकूमते आमने-सामने बाते करे कि उनके यहा जो अल्पमत—माइनारिटी—पडी है, उसकी रक्षा आपको करनी है। यहा जो है उनकी रक्षा हमे करनी है। नही तो यहा किस मुहसे जवाहरलाल कह सकता है, किस मुहसे सरदार पटेल कहनेवाले है कि हम बराबर अल्पमतकी हिफाजत करते है और यहा कोई मुसलमान लडका ऐसा नही है, जिसको कोई छू सकता है या उसपर लाल आखे निकाल सकता है। अगर कोई ऐसा मुसलमान है, जो पागल बन जाता है, अपने घरके अदर मशीनगन रखता है तो हम उसको सजा करेगे, मारेगे। लेकिन जो मुसलमान यहा वफादार होकर रहता है, उसे कोई छू नही सकता। ऐसे हालात आप पैदा करे कि जिससे जवाहरलाल ऐसा कह सके, सरदार बल्लभभाई ऐसा कह सके कि दिल्ली थोडे दिनोंके लिए पागल बन गई थी, लेकिन दिल्ली शुद्ध बन गई है। आज हिंदू कहते है कि मुसलमान अगर हमारे बीच रहे तो मशीनगन चलाएगे, हमारे पास मशीनगन नही हम क्या करे? तो क्या हम मुसलमानोंको मार डाले, या निकाल दे? यह शराफत नही। हम इस तरह डरपोक न बने।

मुसलमान भाइयोको मै कहना चाहता हू कि उन्हे एक खासा स्टेटमेट[1] निकालना चाहिए। दिलोको बिलकुल साफ कर लेना चाहिए। सिखोने भी कुछ निकाला है, हिंदुओने भी। दिल और दिमाग साफ हो जावे तो हम मेलजोल कर सकते है। आखिर दिल्लीकी इतनी बडी तिजारत, इतनी खूबसूरत इमारते, दिल्लीकी तहजीब यह सब हिंदू-मुसलमान दोनोकी है, महज एककी नही।

---

[1] वक्तव्य।

: ८७ :

१३ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक जमाना था, शायद १५की सालमे, जब मैं दिल्लीमे आया था, हकीम साहबको मिला और डाक्टर असारीको। मुझको कहा गया कि हमारे दिल्लीके बादशाह अग्रेज नही है, लेकिन ये हकीम साहब है। डाक्टर असारी तो बडे बुजुर्ग थे, बहुत बड़े सर्जन थे, वैद्य थे। वे भी हकीम साहबको जानते थे, उनके लिए उनके दिलमे बहुत कद्र थी। हकीम साहब भी मुसलमान थे, लेकिन वे तो बहुत बडे विद्वान् थे, हकीम थे। यूनानी हकीम थे लेकिन आयुर्वेदका उन्होने कुछ अभ्यास किया था। उनके वहा हजारो मुसलमान आते थे, और हजारों गरीब हिंदू भी आते थे। साहूकार, धनिक मुसलमान और हिंदू भी आते थे। एक दिनका एक हजार रुपया उनको देते थे। जहातक मैं हकीम साहबको पहचानता था, उन्हे रुपएकी नही पडी थी, लेकिन सबकी खिदमतकी खातिर उनका पेशा था। और वह तो बादशाह-जैसे थे। आखिरमे उनके बाप-दादा तो चीनमे रहते थे, चीनके मुसलमान थे, लेकिन बडे शरीफ थे। जितने हिंदू लोग मेरे पास आए, उनसे पूछा आपके सरदार यहा कौन है ? श्रद्धानदजी ? श्रद्धानदजी यहा बडा काम करते थे। लेकिन नही, दिल्लीके सरदार तो हकीम साहब थे। क्यो थे ? क्योकि उन्होने हिंदू-मुसलमान सबकी सेवा ही की, खिदमत की। तो वह १५ के सालकी बात मैंने कही। लेकिन बादमे मेरा ताल्लुक उनसे बहुत बढ गया और उनको और पहचाना—डाक्टर असारीको पहचाना। डाक्टर असारीके घर मैं काफी दिनोतक रहा और उनकी लडकी जोहरा और उनके दामाद शौकतखाको पहचानता हू। सब भले है, आज भी यहा पडे हैं। लेकिन दिलमे रज क्यो है ? उनको आज डर लग गया है, क्या यहा कोई हिंदू उनको भी मारेगा ? उनके घरमे तो वे रहते नही है। होटलमे जाकर रहते है। इत्तिफाकसे बच गए है, उनका दरबान हिंदू था। उसने जो लोग आए थे उनको भगा दिया। तो ऐसे आज हम क्यो है ? ऐसे पागल हिंदू क्यो

वने, सिख क्यो वने, जिसका उनको डर लगे। आप मुझको कह सकते है, काफी हिंदू कहते है, गुस्सेमे आ जाते है, लाल आख करते है कि तू तो बगालमे पडा रहा, बिहारमे पडा रहा, पजावमे आकर देख तो सही, पजावमे हिंदुओकी क्या हालत मुसलमानोने की है, सिखोकी क्या हालत की है, लडकियोकी क्या हालत की है। मै यह सव नही समझता हू, ऐसा तो नही है। लेकिन मै उन दोनो चीजोको साथ-साथ रखना चाहता हू। वहा तो अत्याचार होता ही है। पर मेरा एक भाई पागल वने और सबको मार डाले तो मै भी उसके समान पागल वनू और गुस्सा करू ? यह कैसे हो मकता है ? मेरे पास सव एक है, मेरे पास ऐसा नही है कि यह गाधी हिंदू है इसलिए हिंदुओको ही देखेगा, मुसलमानोको नही। मै कहता हू कि मै हिंदू हू और सच्चा हिंदू हू और सनातनी हिंदू हू। इसलिए मुसलमान भी हू, पारसी भी हू, क्रिष्टी भी हू, यहूदी भी हू। मेरे सामने तो सव एक ही वृक्षकी डालिया है। तो मै किस डालीको पसद करू और मै किसको छोड दू। किसकी पत्तिया मै ले लू और किसकी पत्तिया मै छोड दू। सव एक है। ऐसा मै वना हू। उसका मै क्या करू। सव लोग अगर मेरे-जैसा समझने लगे तो पूरी शाति हो जाय।

आज मै पुराने किलेमे गया। वहा मैने हजारो मुसलमानोको देखा। और दूसरी मुसलमानोसे भरी गाडिया किलेकी तरफ चली आ रही थी। सारे मुसलमान आश्रित थे। किलेमे उनको रहना पडा, तो किसके डरसे ? आपके डरसे, मेरे डरसे ? मै जानता हू कि मै तो नही डराता हू, लेकिन मेरे भाई डराते है, जो अपनेको हिंदू मानते है, जो अपनेको सिख मानते है। उन्होने डराया सो मैने डराया और आपने डराया। तो मुझसे तो वरदाश्त नही होता कि वे डरके मारे भागकर पाकिस्तानमे जाय। पाकिस्तानमे स्वर्ग है और यहा नरक है, ऐसा नही। हम इस नरकमे क्यो पडे ? मै जानता हू कि न पाकिस्तान नरक है और न हिंदुस्तान नरक है। हम चाहे तो उन्हे स्वर्ग वना सकते है, और अपने कामोसे नरक भी वना सकते है। पाकिस्तानमे मुसलमानोकी वडी तादाद है, वे उसे नरक वना सकते है। हिंदुस्तानमे जहा हिंदू वड़ी तादादमे है, हिंदुस्तानको नरक

बना सकते है। और जब दोनो नरक-जैसे बन गए, तो उसमे फिर आजाद इन्सान तो नही रह सकता। पीछे हमारे नसीबमे गुलामी ही लिखी है। यह चीज मुझको खा जाती है। मेरा हृदय काप उठता है कि इस हालतमे किस हिंदूको समझाऊगा, किस सिखको समझाऊगा, किस मुसलमानको समझाऊगा। किलेमे काफी मुसलमान गुस्सेमे आ गए, दूसरोने उन्हे रोका। यह भी मैने देखा उनके दिलोमे मुहब्बत थी, वह समझाते थे, रोकते थे, कहते थे कि यह बूढा आया है, वह तो हमारी खिदमत करने आया है। हमारे आसू है, उसको पोछनेके लिए आया है। हम भूखे है, तो देखनेके लिए आया है कि उनको रोटीका टुकडा कहीसे मिल सके तो पहुचाए, उनको पानी नही मिलता है, तो उनको पानी कहासे पहु-चाए। मुझे पता नही है कि वहा पानी मिलता है या रोटी मिलती है कि नही। किसीने कहा कि हमारे पास रोटी नही है, पानी भी नही है। मै तो देखने गया था। कोई शौकसे थोडे ही गया था, कोई मजा तो मुझे लेना नही था। कुछ लोगोने मुझे बडी मोहब्बतसे सुनाया। मुझे अच्छा लगा। घर-बार छोडना किसीको पसद नही आएगा। जैसे वे वैसे आज हिंदू आश्रित पडे है। अपना घर छोडा, जायदाद छोडी, कोई मर गया और कोई यहा जिदा आ पडे है। पीछे यहा खाना कहा है, पीना कहा है, घर कहा पडा है? कही भी पडे रहते है। यह अच्छी बात नही है। सबके लिए शर्मकी बात है। तो मै तो इनको भी समझाता था। आप लोगोकी मार्फत दूसरे जिसको मेरी आवाज पहुच सके, उनको भी पहुचाना चाहता हू। आपकी दिल्ली बडी आलीशान नगरी है, जिसमे वह पुराना किला है, वह तो इद्रप्रस्थ कहा जाता है। कहते है कि महा-भारतके कालमे पाडव यहा पुराने किलेमे रहते थे। इसको इद्रप्रस्थ कहे, दिल्ली कहे, यहा हिंदू-मुसलमान दोनो इकट्ठा होकर पले। मुगलोकी यह राजधानी थी। आज तो हिंदुस्तानकी है, मुगल बादशाहका तो कोई है नही। मुगल बाहरसे आए थे। लेकिन उनका सब कुछ यहा देहलीमे था। वे देहलीके बने। उसमेसे अंसारी साहब भी बने, हकीम साहब भी बने और कही हिंदू भी बने। हिंदूने भी उनकी नौकरी की। ऐसी आपकी इस दिल्लीमे, हिंदू-मुसलमान सब आरामसे पडे रहते थे।

बाज दफा लड़ लेते थे। दो दिनके लिए लडे पीछे एक बन गए। जिसमे एक दफा किसी कातिलने, खूनी आदमीने हमारे श्रद्धानदजीका खून किया, लेकिन उसके पहले मुसलमान श्रद्धानदजीको दिल्लीकी जामा मस्जिदमे मोहब्बतसे ले गए थे और वहा उन्होने भाषण दिया। यह है आपकी दिल्ली।

लेकिन आज क्या हो रहा है? सरदार ऊचा सिर रखकर चलनेवाला, आज मै आपको कहता हू कि उसका सिर नीचा हो गया है। वह जवाहरलाल, वह बहादुर जवाहरलाल, हवामे उडनेवाला, किसीकी परवाह न करनेवाला, आज वह लाचार बनकर बैठ गया है। क्यो लाचार बना? हमने उसको लाचार बनाया। अगर ऐसा ही रहता कि पश्चिमी पजाबके मुसलमान दीवाने बन गए, वह भी खतरनाक बात है, नही बनना चाहिए। मगर एक पागल बने तो उसकी तो दवा हो सकती है, लेकिन सब पागल और दीवाने बने तो कौन दवा करेगा? वह जवाहरलाल कोई ईश्वर तो है नही। सरदार ईश्वर थोडे ही है। दूसरे जो उनके मत्री पडे है, वे ईश्वर तो है नही। उनके पास ईश्वरी ताकत तो कोई नही है। बाहरकी ताकत, दुनियाकी ताकत भी कहा उनके पास पडी है?

मै तो बस यही बात सबको कहता हू। काफी हिंदू आ गए, मुसलमान आ गए, उनसे काफी बहस की, लेकिन आखिरमे मेरी आवाज ईश्वरको जाती है। मै कहता हू, मुझको यहासे उठा ले तू। नही तो दिल्लीमे जो आज दीवाने बन गए है वे लडते है, उनको तू जैसे पहले थे वैसे बना दे। किसी हिंदूके दिलमे या सिखके दिलमे मुसलमानोके लिए गुस्सा न हो। मुझको लोग सुनाते है कि मुसलमान तो फिफ्थ कालमिस्ट[1] है, उसका मतलब है बेवफा है, आज जो हकूमत है उसके प्रति वे बेवफा है। साढे चार करोड मुसलमान पडे है। साढे चार करोड अगर बेवफा बनते है तो उसमे खोएगा कौन? उनको ही गवाना है। वे इस्लामको गढेमे डालेगे।

---

[1] पचमांगी।

लेकिन हिंदू और सिखको वे खतरेमे नही डाल सकते है। साढे चार करोड मुसलमान अगर ऐसी बदगुमानी करे कि हकूमतकी बेवफाई कर सकते है तो उनको गढेमे पडना है। मगर साढे चार करोड मुसलमानोको आप न सतावे। मगर, नही तो वे पाकिस्तान जाय ऐसा कहे, यह ठीक नही। क्यो जाय ? किसकी शरणमे जाय ? मै आपको कहता हू वे आपकी शरणमे है, मेरी शरणमे है। कम-से-कम मै वह दृश्य देखना नही चाहता। मै ईश्वरको यही कहूगा कि उससे पहले तू मुझको यहासे उठा ले। काफी दिन जिंदा रखा है, कोई ७८, ७९ बरस कम नही है। मुझको पूरा सतोष है। जो मेरेसे बन सकती है वह सेवा मैने कर ली, लेकिन अगर जिदा रखना चाहता है तो मेरे पाससे ऐसा काम ले जिससे मेरी आत्माको सतोष पहुचे। दोनो कहे तू दोनोका दोस्त है। इसलिए सब तेरी बात सुनते है और सुनेगे। मै काफी मुसलमानोके साथ बैठता हू, किसे कहू कि वह दगा-बाज है और मुझको दगा दे रहा है। मै कहता हू कि अगर वह दगा देता है, तो दगा किसीका सगा नही हो सकता।

मुसलमानोके पास काफी हथियार पडे है, यह मै कबूल करता हू। थोडे तो मैने ले लिए, थोडे-से पडे है तो क्या करेगे ? मुझको मारेगे ? आपको मारेगे ? ऐसा करे तो हकूमत कहा गई है ? मै आपको कहता हू कि अगर हम आज अच्छे बन जाय, शरीफ बन जाय तो हकूमतको हमे इन्साफ दिलाना ही है। हकूमतोको आपस-आपसमे लडने दे, हम आपस-आपसमे नही लडे, हम आपस-आपसमे दोस्त ही रहे। हम डर न करे कि हमको मार डालेगे। मारनेवाला कितना ही बलवान हो, मार नही सकता जबतक ईश्वर हमारी रक्षा करता है। इसलिए मै कहता हू, दोनोसे कहता हू, डरको छोडो। कायदे आजम-की बहस मुझे बुरी लगी। कहते है, यूनियनमे मुसलमानोको सताया गया, इसलिए उन्हे पाकिस्तान लाया जा रहा है, उनके लिए खाना चाहिए, जमीन चाहिए। पाकिस्तान गरीब है, इसलिए जिसके पास पैसे है वे पैसे भेज दे। मुझे उसकी शिकायत नही। मगर साथ ही यह क्यो नही कहते कि पश्चिमी पजाबमे हिदुओपर क्या हुआ ?

बिहारने बुराई की तो उसका कफ्फारा किया। कलकत्तेमे हिंदुओने आकर मेरे सामने पश्चात्ताप किया। ऐसे ही मुसलमान आकर कहे, हमने बुराई की, गलती की तो वह शराफत होगी। मैंने देख लिया है, मै कैसे आखे बद कर सकता हू। हिंदू गुनाह करते है उसको भी छिपा नही सकता हू। इसी तरह कोई मुसलमान गुनाह करे तो उसे भी मै नहीं छिपाऊगा। छिपाऊगा तो मै इस्लामका बेवफा बनूगा। मै उसका बेवफा नही बनना चाहता। गुरु ग्रंथका भी बेवफा नही बनूगा। मै सबका वफादार ही रहना चाहता हू। न मै खुदाका बेवफा बन सकता हूं न इन्सानका। सबकी तरफ वफादारी करना चाहता हू।

मुसलमान सब बेवफा होते है, ऐसा नही है। मै काफी मुसलमानोके बारेमे कहनेको तैयार हू कि वे बावफा है। अगर बेवफा होगे तो ईश्वर उन्हे पूछेगा और वे अपने-आप इस्लामको खतरेमे डालेगे। काफी मुसलमानोने इरादा किया, इसलिए मैने कल कहा कि मुसलमानोका यह धर्म है कि जितने खास-खास लोग है वह कहे कि हम ऐसे निकम्मे नही है। हम हिंदुस्तानके वफादार है और रहेगे, हिंदुस्तानके लिए दुनियासे लड़ेगे। तब तो वे सच्चे मुसलमान है नही तो वे बुरे मुसलमान हो जाते है। मेरी ऐसी उम्मीद है कि ऐसे बुरे मुसलमान हमारे यहा हिंदुस्तानमे है नही और अगर है तो उन्हे अच्छा करनेके लिए हमको अच्छा बनना है, बुरा नही।

: ८८ :

१४ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

जैसे कल गया था वैसे आज भी मै वहा चला गया था, जहा हमारे मुसलमान आश्रित लोग रहते है। वहां कैंपमे जो गदगी थी वैसी मैंने देखी नही। मै हिंदुओके कैंपमे भी गया और मुसलमानोके कैंपमे भी गया। हिंदुओके कैंप दूसरी जगह है। मुस्लिम कैंपोमे

इतनी बदबू निकलती है, इतनी गदगी है, क्यो उसको नही साफ करते ? अगर मै उस कैंपका कमाडर हू तो मै तो उसे बरदाश्त नही करूगा। मै तो कैंपोमे रहा हू, मैंने कैंप देखे है। कैंप ऐसे गदे नही रह सकते। मुझको बडा रज हुआ। इतने सिपाही बने है, इतनी मिलिटरी पडी है, तो वे इतनी गदगी क्यो बर्दाश्त करते है ? वे कहेगे कि सफाई करना हमारा काम कहा है। हमको तो बदूक चलानेका हुक्म है। यहा शाति रखनेकी हमारी ड्यूटी है। वे आपसमे लड़ते है, तो हम उनको बदूकसे साफ कर देते है। इतना ही हमको हुक्म है, हुक्मके बाहर हम नही जा सकते। ठीक है, लेकिन वह हमारी मिलिटरी है हमारे वे सिपाही है। मेरी निगाह है कि उनके हाथमे एक कुदाली भी होनी चाहिए। एक फावडा भी। कही भी गदगी हो उसे साफ करे। पहिले-पहल उनका काम सफाई होना चाहिए। कैंपको अगर अच्छा रखना है तो हमारे मुस्लिम और हिंदू भाइयोको खुद वहा सफाई रखनी है। जैसे वे पडे है ऐसे ही पडे रहे, उन्हे हम कुछ न कहे तो हम उनके दुश्मन बनते है। अगर हम उनके दोस्त है, उनके सेवक है तो हमे उन्हे साफ कहना है कि आप यहा आए है, लाचार न बने। अगर पाकिस्तानसे हिंदू शरणार्थी आ जाय तो क्या उनको कुएमे डाल दे। क्या यहा रक्खे नही और देखभाल न करे। हम उनको ऐसा कहे कि आप दुःखी है इसलिए आपको झाडू नही लगानी है, यह चलनेवाला नही है। आपको सफाई करनी है। हम आपको खाना भी देगे, पानी भी देगे मगर भगी नही देगे। मै तो बहुत कठिन हृदयका आदमी हूं।

हरिद्वारमे जब कुभका मेला था तो मैंने कुदाली चलाई। हमारे पास वहा कैंप सैनिटेशन[१] के सब काम थे। वहाके जो कैंप-कमाडर थे वे चार-पाच आदमियोकी टोली करके निकल जाते थे और सब काम करते थे और जितनी गदगी होती थी उसको साफ करते थे। इसके लिए सबको तालीम दी गई थी। तो मै तो यह कहूगा कि यहाके जो कैंपके कमाडर है, कोई भी हों, मुसलमान हो, हिंदू हो,

---

[१] सफाई।

मुझे परवाह नही है, उनका पहिला काम है अपने कैंपको बिल्कुल साफ रखना। उसमे कोई पैसा तो खर्च नही होता। अगर कैंपके पास फावडे नही है तो हकूमतका काम है कि वह उस चीजको सफाई करनेके लिए दे। अगर नही देती, उसके पास इतने काम पडे है कि उसमेसे उसे फुर्सत नही मिलती तो कमाडरको फावडा कहीसे पैदा करना है और लोगोंको देना है। जिस तरहसे हकूमतका काम कैंपमे खाना पहुचानेका है, उसी तरहसे सफाईका इतजाम करनेका है। पीनेका पानी है और कपडे साफ करनेका पानी है, टट्टी-पेशाबका पानी है, चूकि उसकी निकासीका इतजाम नही होता, इसलिए कालरा[1] हो जाता है। कभी कैंप-सैनिटेशन अधूरा रहना ही नही चाहिए। मुझे कहना पडेगा कि यह चीज मैंने अग्रेजोके पाससे सीखी। मुझे पता नही था कि कैंप-सैनिटेशन कैसे चलाया जा सकता है। किस तरहसे हजारो-लाखों आदमी रहते है, उनको किस तरहसे काम दे कि जिससे वह सैनिटेशनका काम करे। और जो कुछ उनको काम करनेको दिया जाय वह करे। मिलिटरीवाले यह सब करते है। मिनटोंमे सारा शहर खडा हो जाता है। तम्बू, डेरे लग जाते है। कैंपका पहला काम यह है कि पहली पार्टी जो पहुच जाती है, उसको पानी कहा है, यह देख लेना है। किस तरीकेसे पानी इस्तेमाल करे। दूसरी जो पार्टी है उसको ट्रेंचे[2] खोदना है, जिससे पेशाब व पाखाना बाहर न जा सके। जाहिर है, ऐसा करे तो पीछे वहा कालरा नही हो सकता। डिसेन्ट्री[3] नही हो सकती? वे आरामसे रह सकते है। बाकी चीजोको मैं छोड देना चाहता हू। यहा तो अधाधुध पडे है। सब जैसे-तैसे पडे है। कैंपको कोई साफ-सुथरा नही रखता।

मैं किसका गुनाह निकालू। मुस्लिम शरणार्थी कैंपका जो कमाडर है वह मुस्लिम है। वह उनको कह सकता है, उनको समझा सकता है कि उनको यह करना है। उनको समझाकर काम लेना है। उनको कहा जाय कि तुम अगर ऐसे रहोगे तो तुम मर जाओगे। तुम्हारे बच्चे

---

[1] हैजा; [2] खाइयां; [3] पेचिश।

साफ-सुथरे नही रह सकते है, इससे बेहतर है कि कैंपको साफ रखो। वहा हम सफाई सिखा दे तो बडा काम कर सकते है। हिंदूके कैंप देखे तो वहा भी मैला पडा रहता है और कचडा पडा रहता है। मगर कुछ फर्क तो है। नगे पैर जाओ तो मै तो वहा चल ही नही सकता। तालाबमे कुछ पानी ही नही था, सूखा पडा था। कहासे पानी निकले उसका इतजाम नही। आखिरमे जानवर तो मुसलमान भी नही है, और हिंदू भी नही। आज हम जानवर-जैसे बन गए है। तो मुझको यह सब बडा बुरा लगा। पीछे मेरा खयाल दूसरी चीजकी तरफ चला गया। ऐसे तो हम है, लेकिन ऐसे हम क्यो बने? क्यो पाकिस्तानसे डरके मारे हिंदू भागे, सिख भागे। ठीक है, हिंदूने यहा कुछ बुरा किया। मगर वहा तो नही किया। पश्चिमी पजाबमे हिंदू क्या बुरा करेगे, सिख क्या करेगे? उन्हे वहासे क्यो भागना पडे? किसीने गुनाह किया है तो उसको सजा करो। यह तो हकूमतका काम है। इसी तरह मै कहूगा कि किसीको यहासे भागना क्यों पडे? मुसलमान है तो क्या मुसलमान होनेका गुनाह उसने किया है? मुसलमान है तो भी हमारा है, हमारी हकूमतमे पडा है। उस मुसलमानको भागना क्यो पडे? वे शरणार्थी है तो खुली बात है कि यह दिल्लीके लिए शर्मकी बात है। जो मुसलमान यहा पडे है वे बाहरसे नही आए है। लेकिन वे करीब-करीब सब यहा दिल्लीके मोहल्लोसे आए है। थोडे बाहरसे आए होंगे। दिल्लीमेसे हमने उनको मारकर भगा दिया है। मै आपको कहूगा, कल भी सुनाया था कि यह हमारे लिए तो बडे शर्मकी बात है। पीछे मेरा विचार चला कि हम दोनों पागल क्यो बने। पाकिस्तानकी हकूमतकी यह कमजोरी है कि जो वहाके अल्पमत है उनको वहासे भागना पडा। वे उनकी रक्षा न कर सके, पाकिस्तानकी हकूमत उनकी रक्षा नही कर सकी, इसलिए उनको भागकर यहा आना पडा। पाकिस्तानकी हकूमतका फर्ज है कि उनकी मिन्नत करे कि भाई, आप कहा जाते है, क्यो जाते है? आपको कोई हलाक करता है तो हमको बताइए, हम उनको मारेंगे, जेलमे भेजेंगे, सजा करेंगे। लेकिन आपको तो यहा रहना है। आज तो वहा ऐसा बन गया है कि शरीफ आदमी

भी भाग रहे है। लाहौर खाली हो गया है। जिस लाहौरको हिदुओने बनाया, उस लाहौरमे जहा हिदुओके बडे-बडे महलात मैने देखे, इतनी तालीमकी जगहे देखी। इतने कालेज और कहा है? मै तो सबको पहिचाननेवाला ठहरा। आज वे कालेज वगैरा किसके कब्जे-मे है? यह सब बहुत बुरा लगता है और मुझको शर्म आती है कि पाकिस्तानकी हकूमत ऐसे कैसे बन सकती है। पीछे यहा देखता हू तो भी मुझको शर्म आती है कि हमारी हकूमत होते हुए और ऐसा शेर जैसा जवाहरलाल होते हुए ऐसे सरदारजी-जैसे यहा होम मिनिस्टर[1] होते हुए, दिल्ली क्यो बिगडे और उनकी हकूमत क्यो न चले? उनका हुक्म निकले कि एक बच्चेको यहा रक्षित खडा रहना है तो बच्चेको सुरक्षित रहना चाहिए। तब तो हमारी हकूमत चली। लेकिन आज तो उनके पास मिलिटरी पडी हुई है, पुलिस पडी हुई है, उसके मार्फत वे शाति करवा रहे है। लेकिन आखिर हकूमत है किसकी? आपकी है। आपने बनाई है। वह जमाना चला गया जब अग्रेज फौजसे राज्य करते थे। आज सच्ची हकूमत आप ही है। आपने उनको बडा बनाया, आप उनको छोटा बना सकते है।

मान लो, कि यहा सब मुसलमान बिगड़े है, सबके पास हथियार पड़े है, बारूद-गोला पडा है। उनके पास स्टैनगन पडी है, ब्रेनगन पडी है, मशीनगन पड़ी है। सब मारनेको तैयार है। लेकिन फिर भी आपको हक नही है कि आप उन्हे मारे। हर एक आदमी हकूमत बन जाता है तो किसीकी हकूमत नही रहती। अगर हर एक आदमी अपनी बनाई हुई हकूमतका हुक्म मानता है तो पीछे सब काम हो सकता है। नही तो दुनिया हँसेगी, अरे देखो, तुम्हारी दिल्ली। दूसरी योरुपकी कोई ताकत रूसकी ताकत हो, फ्रास हो, अग्रेज हों, अमरीका हो सब मिलकर हमको चिढा सकते है, आप आजादी रखना कहा जानते हो, आप तो गुलाम बनना ही जानते हो। वैसा होना नही चाहिए। इसलिए मै मुसलमानोको कहूगा कि जितने हथियार उनके पास यहा पडे है वह सब

---

[1] गृह-मंत्री।

हथियार उनको अपने-आप दे देना चाहिए। किसीके डरसे नही। लेकिन वे हिंदुस्तानके हैं और हिंदुस्तानमें पडे हैं और भाई बनकर अगर यहा रहना चाहते हैं तो हथियार दे दे। पीछे वे बतला दें कि हम तो वफादार ह हिंदुस्तानके हैं और हम कभी बेवफा नही हो सकते हैं; हिंदू क्या, मुसलमान क्या, सब आपके हैं। मुसलमानोको यह भी कहना है कि अगर पश्चिमी पजाबमे, सरहदमे, बिलोचिस्तानमे, सिंधमे मुसलमान बिगडते हैं और वहा हिंदू और सिख चैनसे और आरामसे नहीं रह पाते हैं तो पीछे हमारे लिए यहां दुश्वारी हो जाती है। आखिरमे सब इन्सान हैं, इन्सानियतको समझे। हम कहातक समझाते रहे। इन्सान बिगड भी जाता है, अच्छा भी होता है। अच्छे तरीकेसे रह सकता है तो यहा अच्छे तरीकेसे रहे। कोई शख्स ऐसा बिगड जाता है कि वह हैवान बन जाता है। तब मैं दिल्लीके हिंदुओको कहूगा आप खबरदार रहे, बहादुर बने, बुजदिल न बने। मुसलमानोके हथियारोसे डरना बुजदिलीका काम है। हमे क्या परवाह है कि मुसलमान कही हथियार लेकर बैठे है। उनसे हथियार लेना हकूमतका काम है। मिलिटरीका काम है उनके पाससे हथियार छीन ले। अगर वे शरीफ बनते हैं, अगर वे हिंदुस्तानके सच्चे हैं और हिंदुओके पास सब भाई-भाईकी तरह मिलकर रहना चाहते हैं तो हथियार दे दे। और मुसलमान कहे कि हमने गलती की, हम ऐसा समझते थे कि हम दिल्ली सर कर लेंगे और सारे हिंदुस्तानको पाकिस्तान बना लेंगे, लेकिन अब हम समझ गए हैं कि हिंदुस्तानको पाकिस्तान बनाना है तो वह ऐसे नही हो सकता। हमारे पास पाकिस्तान तो है उससे हमे इतमीनान होना चाहिए। हम वहां हिंदुओको बचा सकते हैं। खुश रख सकते हैं। तब तो यह होगा कि पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनो भले होनेमें मुकाबला करने लगेंगे और भलमन्सीमें कौन ज्यादा खुदापरस्त है, इसमे मुकाबला करेंगे। मक्केकी तरफ देखे, या पूरबकी तरफ देखे, सच्चाई तो हम लोगोंके दिलमें पडी है, सफाई तो दिलसे होनी चाहिए। हम एक-दूसरेका भलाईमे मुकाबला करे तो हम सब ऊंचे होकर काम कर सकते हैं।

मै यहा आया हू, तो मैने आपको कह दिया है कि मै तो यहा मरना चाहूगा। अगर हम दीवाने बनते रहे और गुस्सेमे आ जाएं और मुसलमानोको मारे तो वह काम तो मेरा नही है। उसका गवाह मै नही बनना चाहता हू। मुसलमान माने कि हिंदू सब गुनहगार है, सिख सब गुनहगार है और हिंदू और सिख कहे कि मुसलमान गुनहगार है, तो दोनो गलती करते है। मै तो सबको एक जानता हू। मेरे नजदीक हिंदू हो, मुसलमान हो सब एक दर्जा रखते है। इसमे जो सच्चे है वे ईश्वरको मान्य है। जो बुरे है उनकी बुराई-की सजा आप क्या देनेवाले है? वे अपने आप सजा पानेवाले है। इसमे मुझे कोई शक नही है। सारी दुनियाके धर्मोका यह मैने निचोड निकाला है। इसलिए मै कहूगा कि मुसलमान कैसा भी बुरा करे, लेकिन आपको तो भलाई ही करनी है। बुराईका बदला देना है सचमुच तो वह भलाईसे हो सकता है। ऐसा मै कम-से-कम आपको करते देखना चाहता हू। इतना हम करे तो हिंदुस्तानकी अपनी हकूमतको अच्छा रख सकते है। अगर नही तो हम सब गवा देते है।

: ८६ :

मौनवार, १५ सितम्बर १९४७

(लिखित सदेश)

रातमे जब मैने धीरे-धीरे गिरनेवाले जीवनप्रद पानीकी आवाज सुनी—जो और मौकोपर जीवनको खुश करनेवाली होती—तो मेरा मन दिल्लीकी खुली छावनियोमे पडे हुए हजारो निराश्रितोकी तरफ दौड गया। मै चारो तरफसे अपनेको पानीसे बचानेवाले बरामदेमे आरामसे सो रहा था। अगर इन्सान बेरहम बनकर अपने भाईपर जुल्म न करता तो ये हजारों मर्द, औरते और मासूम बच्चे आज बेआसरा और उनमेसे बहुतसे भूखे न रहते। कुछ जगहोंमे तो वे घुटने-घुटने पानीमे ही होगे। इसके सिवा उनके लिए कोई चारा नही।

क्या यह सब अनिवार्य है ? मेरे भीतरसे मजबूत आवाज आई--नही। क्या यह महीनेभरकी आजादीका पहला फल है ? इन पिछले २० घटोंमे ये ही विचार मुझे लगातार सताते रहे है। मेरा मौन मेरे लिए वरदान बन गया है। उसने मुझे अपने दिलको टटोलनेकी प्रेरणा दी है। क्या दिल्लीके नागरिक पागल हो गए है ? क्या उनमे जरा-सी भी इन्सानियत बाकी नही रही है ? क्या देशका प्रेम और उसकी आजादी उन्हे बिलकुल अपील नही करती ? इसका पहला दोप हिंदुओं और सिखोको देनेके लिए मुझे माफ कर दिया जाय। क्या वे नफरतकी बाढको रोकने लायक इन्सान नही बन सकते ? मै दिल्लीके मुसलमानोसे जोर देकर यह कहूगा कि वे सारा डर छोड दे, भगवानपर भरोसा करे और अपने सारे हथियार सरकारको सौप दे। क्योकि हिंदुओ और सिखोको यह डर है कि मुसलमानोके पास हथियार है। इसका यह मतलब नही कि हिंदुओ और सिक्खोंके पास कोई हथियार नही है। सवाल सिर्फ डिग्रीका है। किसीके पास कम होगे, किसीके पास ज्यादा। या तो अल्पमतवालोको न्याय करनेके लिए भगवानपर या उसके पैदा किए हुए इन्सानपर भरोसा रखना होगा, या जिन लोगोंपर वे विश्वास नही करते उनसे अपनी हिफाजत करनेके लिए उन्हे अपने बदूक, पिस्तौल वगैरा हथियारोपर भरोसा करना होगा।

मेरी सलाह बिलकुल निश्चित और अचल है। उसकी सचाई जाहिर है। आप अपनी सरकारपर यह भरोसा रखिए कि वह अन्याय करनेवालोसे हर नागरिककी रक्षा करेगी, फिर उनके पास कितने ही ज्यादा और अच्छे हथियार क्यो न हो। आप अपनी सरकारपर यह भी भरोसा रखिए कि वह अन्यायसे बेदखल किए गए अल्पमतके हर मेंबरके लिए हरजाना मागेगी और वसूल करेगी। दोनो सरकारे सिर्फ एक ही बात नही कर सकती। वे मरे हुए लोगोको जिला नही सकती। दिल्लीके लोग अपनी करतूतोसे पाकिस्तान सरकारसे न्याय मागनेका काम मुश्किल बना देगे। जो न्याय चाहते है, उन्हे न्याय करना भी होगा। उन्हे बेगुनाह और सच्चे होना चाहिए। हिंदू

और सिख सही कदम उठाए और उन मुसलमानोसे लौट आनेको कहे, जिन्हे अपने घरोसे निकाल दिया गया है।

अगर हिंदू और सिख हर तरहसे यह उचित कदम उठानेकी हिम्मत दिखा सके, तो वे निराश्रितोंकी समस्याको एकदम आसान-से-आसान कर देगे। तब पाकिस्तान ही नही, सारी दुनिया उनके दावोको मजूर करेगी। वे दिल्ली और हिदुस्तानको बदनामी और बरबादीसे बचा लेगे। मै तो लाखों हिदुओ, सिखो और मुसलमानोकी आबादीके फेरबदलके बारेमे सोच भी नही सकता। यह गलत चीज है। पाकिस्तानकी बुराईको हम हिदुस्तानसे आबादीका फेरबदल न करनेका पक्का और सही इरादा करके ही मिटा सकते है। मेरा खयाल है कि मै आखिरतक हिम्मतके साथ इस बातकी हिमायत करूगा, फिर चाहे मै अकेला ही इसे माननेवाला क्यो न होऊ।

: ६० :

१७ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल शामको मेरे अनुभवके बाद मैने यह तय कर लिया है कि जबतक सभाका एक-एक आदमी प्रार्थना करनेके लिए राजी न हो, तबतक आम प्रार्थना न करूगा। मैने कभी कोई चीज किसीपर जबरन नही लादी। तब फिर प्रार्थना-जैसी ऊची आध्यात्मिक या रूहानी चीज तो मै लाद ही कैसे सकता हू ? प्रार्थना करने या न करनेका जवाब दिलके भीतरसे मिलना चाहिए। इसमे मुझे खुश करनेका तो कोई सवाल ही नही उठ सकता। मेरी प्रार्थना-सभाए सचमुच जन-प्रिय बन गई है। मालूम होता है कि उनसे लाखो आदमियोको फायदा पहुचा है। लेकिन इस आपसी खिंचावके समय मै उन लोगोके गुस्सेको समझ सकता हू, जिन्होने बडी-बडी मुसीबते सही है। मेरी प्रार्थना करने-की शर्त यही है कि उसका जो भाग किसीको एतराजके लायक मालूम

हो, उसे छोडनेकी मुझसे आशा न रखी जाय। या तो प्रार्थना जैसी है वैसी ही दिलसे स्वीकार की जाय या उसे नामजूर कर दिया जाय। मेरे लिए कुरानकी आयत पढना प्रार्थनाका ऐसा हिस्सा है, जिसे छोडा नही जा सकता।

मै आपके गुस्से और उससे पैदा होनेवाले उतावलेपनको समझनेके लिए तैयार हू। लेकिन अगर आप अपनी आजादीके लायक बनना चाहते है, तो आपको अपना गुस्सा दबाना होगा और न्याय पानेकी भरसक कोशिश करनेके लिए अपनी सरकारपर विश्वास रखना होगा। मै आपके सामने अपना अहिंसाका तरीका नही रख रहा हू, हाला कि मै उसे रखना बहुत पसद करूगा। लेकिन मै जानता हू कि आज मेरी अहिसाकी बात कोई नही सुनेगा। इसलिए मैने आपको वह रास्ता अपनानेकी बात सुझाई है, जिसे लोकशाही हकूमतवाले सारे देश अपनाते है। लोकशाहीमे हर आदमीको समाजी इच्छा यानी राजकी इच्छाके मुताबिक चलना होता है और उसीके मुताबिक अपनी इच्छाओकी हद बाधनी होती है। स्टेट, लोकशाहीके द्वारा और लोकशाहीके लिए राज चलाती है। अगर हर आदमी कानून अपने हाथमे ले ले, तो स्टेट नही रह जायगी। वह अराजकता हो जायगी, यानी समाजी नियम या स्टेटकी हस्ती मिट जायगी। यह आजादीको मिटा देनेका रास्ता है। इसलिए आपको अपने गुस्सेपर काबू पाना चाहिए और राजको न्याय पानेका मौका देना चाहिए। मेरी रायमे अगर आप सरकारको अपना काम करने देगे, तो इसमे कोई शक नही कि हर हिदू और सिख निराश्रित शान और इज्जतके साथ अपने घरको लौट जायगा। मै यह कबूल करता हू कि आप लोगोको पाकिस्तानमे बहुत कुछ सहना पडा है, कई घर उजाड और बरबाद हो गए है, सैकडो-हजारो जाने गई है, लडकिया भगाई गई है, जबरन लोगोका धर्म बदला गया है। लेकिन आप अपनेपर काबू रखे और अपनी बुद्धिपर गुस्सेको हावी न होने दे, तो लडकिया लौटा दी जायगी, जबरदस्तीके धर्म-परिवर्तनको झूठ करार दिया जायगा, और आपकी जमीन-जायदाद भी आपको लौटा दी जायगी। लेकिन अगर आप

शातिसे न्याय पानेके काममे दखल देगे और अपना मामला बिगाड लेगे तो यह सब नही हो सकेगा। अगर आप यह आशा करते हों कि आपके मुसलमान भाई-बहनोको हिदुस्तानसे निकाल देना चाहिए, तो आप इन सब चीजोंके होनेकी आशा नही रख सकते। मै तो ऐसी किसी बातको बहुत भयानक समझता हू। आप मुसलमानोके साथ अन्याय करके न्याय नही पा सकते। इसके अलावा, अगर यह सच है कि पाकिस्तानमे अल्पमतवालों यानी हिदुओ और सिखोके साथ बहुत बुरा बरताव किया गया, तो यह भी सच है कि पूर्वी पजाबमे भी अल्पमतवालो यानी मुसलमानोके साथ बुरा बरताव किया गया है। अपराधको सोनेकी तराजूमे नही तोला जा सकता। दोनो तरफके अपराधको मापनेका मेरे पास कोई सबूत नही है। यह जान लेना सचमुच काफी होगा कि दोनो पार्टिया दोषी है। दोनो राज्योके लिए ठीक-ठीक समझौता करनेका आम रास्ता यह है कि दोनो पार्टिया साफ दिलसे अपना पूरा-पूरा दोष स्वीकार करे और समझौता कर ले। अगर दोनोंमे कोई समझौता न हो सके, तो सामान्य तरीकेसे पच-फैसलेका सहारा ले। इससे दूसरा जगली रास्ता और है लड़ाईका, मुझे तो लडाई-के विचारसे ही नफरत होती है। लेकिन आपसी समझौते या पच-फैसले-के अभावमे लडाईके सिवा कोई चारा नही रह जायगा। फिर भी इस बीच मुझे आशा है कि लोग अपना पागलपन छोडकर समझदार बनेगे और जिन मुसलमानोने अपनी इच्छासे पाकिस्तान जानेका चुनाव नही किया है, उन्हे उनके पडोसी सुरक्षा या सलामतीसे पक्के विश्वासके साथ अपने घरोको लौट आनेके लिए कहेगे। यह काम फौजकी मददसे नही किया जा सकता। यह तो लोगोके समझदार बननेसे ही हो सकता है। मैंने अपना आखिरी फैसला कर लिया है कि मै भाई-भाईकी लडाईमे हिदुस्तानकी बरबादीको देखनेके लिए जिदा नही रहना चाहता। मै लगातार भगवानसे प्रार्थना किया करता हू कि हमारी इस पवित्र और सुदर धरतीपर इस तरहका कोई सकट आए उसके पहले ही वह मुझे यहासे उठा ले। आप सब इस प्रार्थनामे मेरा साथ दे।

मैं हिंदू और मुसलमान मजदूरोको एक साथ मिल-जुलकर काम

करनेके लिए धन्यवाद देता हूं। अगर आप पूरे एकेले काम करेंगे तो देशके सामने एक उम्दा मिसाल रखेंगे। मजदूरोंको अपने बीच साम्प्रदायिकताको कोई जगह नहीं देनी चाहिए। क्या मैंने यह नहीं कहा है कि अगर आप अपनी ताकतको पहचान लें और समझदारीके साथ रचनात्मक कामोंमें उसे लगाएं, तो आप सच्चे मालिक और शासक बन जाएंगे और आपकी रोजी देनेवाले आपके ट्रस्टी और मुसीबतोंमें साथ देनेवाले दोस्त बन जाएंगे। यह सुखकी घड़ी तभी आएगी जब वे यह जान लेंगे कि सोने और चांदीकी पूंजीके, बनिस्बत, जिसे मजदूर जमीनके भीतरसे निकालते हैं, मजदूर ही ज्यादा सच्ची पूंजी हैं।

: ९१ :

१८ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज हम सब दीवाने बन गए हैं, मूरख बन गए हैं, ऐसा नहीं है कि सिख ही दीवाने बने, हिंदू ही या मुसलमान ही दीवाने बन गए हैं। मुझसे कहा जाता है कि सारा आरंभ तो मुसलमानोंने किया। वह ठीक है, मैं तो मानता हूं, कि उन्होंने आरंभ किया, इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन वह याद करके मैं करूंगा क्या? आज क्या करना है, मुझको तो वह देखना है। हिंदुस्तानरूपी गजराजको हो सके तो छुड़ाना चाहता हूं। मुझको क्या करना चाहिए? मुझको तो ईश्वरका सहारा लेना चाहिए। मेरा पराक्रम कुछ कर सके तो मुझको खुशी है। पर मेरा शरीर तो थोड़ी हड्डी है, थोड़ी चर्बी। ऐसा आदमी क्या कर सकता है? किसको समझा सकता है? लेकिन ईश्वर सब कुछ कर सकता है। तो मैं रात-दिन ईश्वरको पकड़ता हूं। हे भगवान, तू अब आ, गजराज डूब रहा है। हिंदुस्तान डूब रहा है उसे बचा।

हिंदुस्तानमें सिवा हिंदूके कोई रहे ही नहीं, मुसलमान रहे तो गुलाम होकर रहे तो ऐसी बात तो नहीं है। आप देखें तो जवाहरलाल क्या

कहता हूं। हम तो तगीमे पडे है। दूसरे जो काम करने है उन्हे नही कर सकते। इसी एक काममे पडे है। अगर मान ले कि सब मुसलमान गदे है, पाकिस्तानमे सब बिगड़ गए है तो उससे हमको क्या? पाकिस्तानमे सब गदे है तो क्या हुआ? मै तो आपको कहूगा कि हम तो हिंदुस्तानको समुदर ही रखे जिससे सारी गदगी बह जाय। हमारा यह काम नही हो सकता कि कोई गदा करे तो हम भी गदा करे। तो आज मै दरियागज चला गया। मेरे पास मुसलमान भाई भी आते है। उनसे बाते करता हू, मोहब्बत करता हू और उनको कहता हू कि आप क्यो डरते है। आप तगडे बन जाय। आप क्यों घर-बार छोडते है। आप जाकर बैठिए अपने घरमे। यहा वे तो शरारत नही कर सकते। इसलिए मै चाहता हू कि सब हिंदू भले हो जाय। सब सिख भले बन जाय। जो मुसलमान पड़े है और जो पाकिस्तान नही जाना चाहते है उनसे सिख और हिंदू कहे कि आप अपने घरमे जाकर बैठो। यहा तो दुनियामे सबसे बडी मस्जिद, जुमा मस्जिद पडी है। हम बहुतसे मुसलमानोंको मार डाले और जो बाकी बचे वे भयके मारे पाकिस्तान चले जाय, तो फिर मस्जिदका क्या होगा? आप मस्जिदको क्या पाकिस्तानमे भेजोगे, या मस्जिदको ढाह दोगे या मस्जिदका शिवालय बनाओगे? मान लो कि कोई हिंदू ऐसा गुमान भी करे कि शिवालय बनाएगे, सिख ऐसा समझे कि हम तो वहा गुरुद्वारा बनाएगे। मै तो कहूगा कि वह सिख-धर्म और हिंदू-धर्मको दफनानेकी कोशिश करनी है। इस तरह तो धर्म बन नही सकता है।

पाकिस्तानमे जानेवाले जो जाना चाहते है वे यहासे चले जाय। मगर जो हिंदुओंके डरके मारे चले गए, पुराने किलेमे है, हुमायूके मकबरेमे है, वे क्यो वहा रहे? मैने तो उनको कहा है कि जो अपने घरोमे है वे वही पडे रहे और पीछे हिंदू मारे-पीटे, काट डाले तो भी न हटे। मै आपके पीछे कट जाऊगा। मेरी जान है, वह जान मै फिदा कर दूगा। या तो करूगा या मरूगा। उनको कुछ हौसला आया और उन्होंने कहा कि हम यही मरेगे, घर है वहासे हटेगे नही। मेरा खयाल

है कोई मुसलमान वहासे हटेगा नही। अपने घरोमे पडे है, सदियोसे यहा है। उनको आज हम निकाल दे? लेकिन वह नही हो सकता। जो यहासे चले गए है उनका क्या करे? मैने कहा कि उनको हम अभी नही लाएगे। पुलिसके मार्फत, मिलिटरीके मार्फत थोड़े ही लाना है? जब हिंदू और सिख उन्हे कहे कि आप तो हमारे दोस्त है आप आइए अपने घरमे, आपके लिए कोई मिलिटरी नही चाहिए, कोई पुलिस नही चाहिए, हम आपकी मिलिटरी है, पुलिस है, हम सब भाई-भाई होकर रहेगे तब उन्हे लावेगे। हमने दिल्लीमे ऐसा कर बतलाया, तो मै आपको कहता हू कि पाकिस्तानमे हमारा रास्ता बिल्कुल साफ हो जायगा। और एक नया जीवन पैदा हो जायगा। पाकिस्तानमे जाकर मै उनको नही छोडूगा। वहाके हिंदू और सिखोके लिए जाकर मरूगा। मुझे तो अच्छा लगे कि मै वहा मरू। मुझे तो यहा भी मरना अच्छा लगे, अगर यहा जो मै कहता हू नही हो सकता है तो मुझे मरना है। मुझको भी गुस्सा आता है, लेकिन इन्सान तो ऐसा होना चाहिए कि गुस्सेको पी जाय। मैने सुना कि काफी औरते जो अपनी शर्मको गंवाना नही चाहती थी मर गई। काफी मर्दोंने खुद अपनी औरतोको मार डाला। मुझे तो यह बडा अच्छा लगता है। क्योकि मै समझता हू कि वे हिंदुस्तानको बुजदिल नही बनाते है। आखिर मरना-जीना यह तो थोडे दिनोका खेल है। गया तो गया, लेकिन बहादुरीसे गया। अपनी शर्म नही बेच डाली। यह नही था कि उनको जान प्यारी न थी; लेकिन उनको मुसलमान जबर्दस्ती इस्लाममे लाए और उनकी मिट्टी ख्वार करे, उससे बेहतर था बहादुरीसे मर जाना। औरते मर गई, दो-चार नही, काफी औरते मरी। यह सब सुनता हू। मेरी तो आख खुशीसे नाचना शुरू कर देती है कि ऐसी बहादुर औरते हिंदुस्तानमे पडी है। लेकिन जो लोग भागे है वे लोग कहा जाय? उनको वापस जाना है और शानके साथ। हम अपने यहा तो न्याय ही करे। अपना दामन शुद्ध रक्खे और अपने हाथ शुद्ध रक्खे, तब हम सारी दुनियाके सामने न्याय माग सकते है। मैने कह दिया है कि जो मुसलमान हथियार रखते है, उन मुसलमानोको हथि-

यार छोड देना चाहिए। परसो जैसा मैंने कहा है, सब लोग हथियारोको दे दे। मैं समझता हू कि उसमे कुछ देर लगेगी, लेकिन बात चल गई है हथियार तो छोडना ही है। हथियारसे बच नही सकते।

दूसरी, मेरे पास बडी शिकायत आती है जो हमारे सिपाही लोग, मिलिटरीवाले है, हिंदू है, सिख भी है, उसमे क्रिस्टी भी पडे है, गोरखे पड़े है, वे सब रक्षक है पर भक्षक बन गए है। यह कहातक सच है और कहातक झूठ है, मै नही जानता हू। लेकिन मै अपनी आवाज उन पुलिसवालोतक पहुचाना चाहता हू कि आप शरीफ बने। कही तो ऐसा सुना है कि वे खुद लूट लेते है। मुझको आज सुनाया गया कि कनाट-प्लेसमे कुछ हो गया और वहा जो सिपाही और पुलिसके लोग थे उन्होने लूटना शुरू कर दिया। मुमकिन है कि वह सब गलत हो। लेकिन उसमें कुछ भी सच्चाई हो तो मै सिपाही और मिलिटरीसे कहूगा कि अग्रेजका जमाना चला गया। तब जो कुछ करना चाहते थे वे कर सकते थे, लेकिन आज तो वे हिंदुस्तानके सिपाही बन गए है, उन्हे मुसलमानका दुश्मन नही बनना है, उनको तो हुक्म मिले कि उसकी रक्षा करो तो वह करनी ही चाहिए।

: ६२ :

१९ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझे एक पर्चा मिला है। यह पहले सरदारके पास पहुचा, पीछे मेरे पास। उसमे कहते है, जबतक हम मुसलमानोके बीच पडे है, आरामसे रहनेवाले नही। पाकिस्तानसे हिंदुओंको भागना पडा। कूचा ताराचदमे उनके चारो तरफ मुसलमान है, उन्हे डर रहता है कि मुसलमान कुछ गोलाबारी करे तो? वे कहते है, अच्छा होगा कि सब मुसलमान यहासे चले जावे। काफी तो चले गए है, पर काफी अभी यहा पडे है। मैंने आपको सुनाया कि कल मै गया था तो उससे उल्टी

बात मैं मुसलमानोको कहकर आया। सो, जो लोग यहा पड़े हैं उनको जानेका सवाल नही उठता। जो चले गए हैं उनको भी मै तो यही कह सकता हू कि आप आ जाय। जबरदस्तीसे लानेकी बात नही। जब हम पचायतका राज्य चलाते हैं तो जबरदस्तीसे थोड़े ही चला सकते हैं। लोगोको समझाए, लोगोको तालीम दे। ऐसे हम क्यो डरे? जिन मुसलमानोके साथ इतने बरसोसे रहे हैं वे ही मुसलमान आज ऐसे बिगड़ गए हैं कि उन्हे रखा नही जा सकता? बिगड भी सकते हैं, मैं यह नही कह सकता कि वे नही बिगड सकते। लेकिन जो अच्छे थे वे बिगडे तो पीछे वे अच्छे भी हो सकते हैं। हम अगर अच्छे होते हैं और अच्छे होना ही काफी नही, बहादुर भी होना चाहिए और इसके साथ ज्ञान भी होना चाहिए, तो हमारे सपर्कमे जो बुरे आदमी आ जाते है वे भी भले हो जाते हैं। यह मेरा न्याय नही है, यह दुनियाका न्याय है। मैं अपनी बात आपसे नही कहता हू। तो मैंने जो कल बताया था आज भी वही कहूगा कि मैं बचपनसे ऐसा ही सीखा हू। अब मैं नया सबक नही ले सकूगा। और मुझे अब जीना कितना है? मैंने कहा, आप मुझे यह सुनाते तो है, लेकिन उसे मै बर्दाश्त नही कर सकता हूं। बर्दाश्त नही करूगा तो किसीको मारूगा, ऐसा नही। मै मर जाऊगा, ऐसा हो सकता है। इत्तफाकसे मेरे हाथमे एक दूसरा पर्चा आ गया। वह भी रास्तेमे किसीने दिया। जो पर्चा रास्तेमे मिले वह मैं मोटरमे पढ लेनेकी कोशिश करता हू। उस पर्चेमे लिखते है, पश्चिमी पजाबमे इतना अत्याचार हो गया, अभी भी तुम क्यों नही समझते हो। उसके साथ एक और पर्चा है, जिसमे न नाम है न दस्तखत। उसमे लीगवालोसे कुछ कहा है, गदी बाते भरी हैं। वैसे लीगवाले करे तो पीछे पाकिस्तानका क्या होगा और हिंदुस्तानका क्या होगा, उसका पता ही नही चल सकता। तो क्या हम भी गदे बने? यह मेरी नजरमे न्याय नही।

वहा इर्द-गिर्दमे मुसलमान रहते हैं। कुछ मुस्लिम कार्यकर्ताओने वही रहना पसद किया। मुसलमानोके वे सेवक हैं। कोई मार डाले तो भले मार डाले, वे बहादुर हैं सो रहते हैं। मेरे पास च

काफी मुसलमान पडे है। उनका कहना है कि बहुत लोग घर छोड चुके है। लेकिन मैंने देखा, काफी मुसलमान तो भी वहा थे, हिंदू थोडे ही थे। जितने हिंदू भाई वहा भागे है उनको मैंने सुनाया कि मै तो बचपनसे ऐसा ही सीखा हू। पॉलिटिक्स[1]मे दाखिल हुआ उससे पहलेसे मानता आया हू कि मुसलमान, हिंदू सबको मिल-जुलकर रहना है। ऐसे ही हिंदुस्तान बना है, ऐसे हिंदुस्तान रहना चाहिए। तो जो आदमी बारह बरसकी उमरसे वही काम करता आया है, तो आज उसकी जबानसे दूसरी चीज नही निकल सकती। मुझको तो यह पसद होगा, कि कोई अपनी जगहसे हटे नही, वही मर जावे। यही मै मुसलमानोसे कहता हू और यही हिंदुओको कहता हू।

हिंदू कहते है मुसलमानोके पास इतने हथियार पडे है, वे निकले तो हम समझे, नही तो हम कैसे माने कि वे पीछे हमला न करेगे। मै कहूगा कि उसमे हम न पडे, वह हकूमतका काम है। किसीके पास परवाना नही है, लाइसेन्स नही है तो उसके पास हथियार नही रख सकते हैं, भले ही वे लोग अपनी रक्षाके लिए हथियार रखते हों। रखना है तो लाइसेन्स ले लो। लेकिन हथियारसे रक्षा क्या करनी थी, पांच मुसलमान है, पाच सौ हिंदू और सिख, उनका मुकाबला क्या? वे पडे रहे। भले ही हिंदू, सिख उन्हे काट डाले। जो पाच ऐसे कट जायगे, बिना हथियार ईश्वरका नाम लेते चले जायंगे, वे बडे बहादुर है। वे कहते है, आप हमारे भाई है, मारना है तो मार डाले। यही मेरी सलाह सबके लिए है। आज मेरे पास काफी हिंदू पाकिस्तानके आ गए और सबने अपना दुःख मुझको सुनाया। कई हँसकर सुनाते थे, कई बहनोने रो दिया। मैंने उन्हे सुनाया, आपकी मार्फत सबको सुना देना चाहता हू कि हम बुज़दिल न बने। पाकिस्तानमे मुसलमानोने अत्याचार किया। इसलिए हम यहाके मुसलमानोसे न डरे, न उन्हे डरावे। ऐसे ही मुसलमान पडे है जो पाकिस्तानमे रह ही नही सकते।

तो जो पर्चा मुझे मिला है, उसमे लिखा है कि अब तो पाकिस्तानमे

---

[1] राजनीति।

कोई गैर-मुसलमान रहनेवाला नही है, तो पीछे हिंदुस्तानमे मुसलमान क्यो रहे ? तो मै कहता हू कि एक आदमी आज गदगी करता है तो गदी चीजकी हम नकल न करे। पाकिस्तानमे एक भी गैर-मुसलमान नही रह सकता। वह पाकिस्तानके माने हो नही सकते है, और इस्लामके भी नही है। इस्लामकी सल्तनत फैली हुई है, कही ऐसा कानून नही बना है कि वहा कोई गैरमुसलमान न रहे। गैर-मुसलमान थे और आरामसे रहते थे, सुखसे रहते थे, उनके पास पैसा भी रहता था। तो अब क्या नया इस्लाम हिंदुस्तानमे दाखिल होनेवाला है ? इस्लाम १३०० बरससे चल रहा है, उसके पीछे इतनी तपश्चर्या हुई, इतनी कुर्बानिया हुई। पीछे कोई नया इस्लाम निकले तो वह सच्चा इस्लाम नही, जिसे सब मुसलमान अच्छा कह सकते हो। सोचो। इसका मतलब यह है कि सच्चा हिंदुस्तान वह नही है जिसमे हिंदूके सिवा कोई रह न सकता हो, सच्ची क्रिश्चियैनिटी[1] तो वह नही है जिसमे सिवा क्रिश्चियनके कोई रह ही नही सकता हो। वह धर्म नही है, अधर्म है। इस तरहसे दुनिया नही चली है, न चलती है और न चलनेवाली है। तो हम नया इतिहास लिखनेके प्रपचमे क्यो पडे? ऐसा करके हम हिंदुस्तानको तबाह न करे और पाकिस्तानको तबाह होने न दे। यहा आज साढे चार करोड मुसलमान है, वे सब वहा चले जाय ? और पीछे जुमा मस्जिद है उसको भी ले जाय, अलीगढ यूनिवर्सिटी है उसको भी ले जाय, और तमाम मुस्लिम मकबरेमे पडे है, वे सब पाकिस्तानमे चले जाय, पीछे जो गुरुद्वारे है वहा वेस्ट[2] पजाबमे है उन्हे ईस्ट[3] पजाबमे ले जाय ? वहा जितने हिंदू रहते थे उनके मदिर वहा पडे है, वे पाकिस्तानमे रह नही सकते तो मदिरोंको यहा लाना चाहिए ? इसका मतलब यह होगा कि सबको तबाह होना है, अपना धर्म है उसको तबाह करना है। मै तो इसका गवाह बनना ही नही चाहता हू। उससे पहले ईश्वर मुझको उठा ले। और मै तो कहूगा कि जो पीछे सब नौजवान पडे है, वे करते-करते मरे।

---

[1]ईसाइयत [2]पश्चिमी [3]पूर्वी।

उनके रहते हुए हिंदुस्तान बेहाल न हो। यह मै देखना नही चाहता हू। देखना चाहता हू तो यह कि खराबीको साफ करनेमे हम सब मर जाय।

: ९३ :

२० सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप ईश्वरका भजन करे और उसीका भरोसा करे। यह सबकी समझमे नही आता। वे कहते है कि ईश्वर कहा पड़ा है? ईश्वर रहे तो इतने झझटमे हम क्यों पडे? अगर मुसलमान जहमतमे[1] पड जाते है तो वे कहे ईश्वर कहा है, अल्लाह कहा है, खुदा कहा है, कुरान शरीफ कहा है। बहुत लोग कहते है, लेकिन वे सब गलती करते है। खुदा है, अल्लाह है, ईश्वर है, राम है, उसे याद करनेके लिए ऐसे मौके है। वह हमको मदद देता ही है। वह हमे थोडे पूछनेवाला है कि हम उसको पहिचानते है या नही। वह हमारे हाथोमे नही आता, उसे आखोंसे नही देख सकते है, कानोसे नही सुन सकते है, इसलिए वे कहते है कि इद्रियोसे बाहर पडा है। ऐसी एक वह हस्ती है, दूसरे सब नास्ति है। हम सब नास्ति है। हम कहे जब हम जिदा रहते है तो नास्ति कैसे हो सकते है? आजतक तो मै जिदा रहा, लेकिन कलके लिए मुझे कोई नही बता सकता कि रहूगा या नही। ऐसे ही, कल-कल करके ७८ वर्ष निकाल दिए। और भी शायद दो-चार दिन निकाल दू या वर्ष निकाल दू। लेकिन हम क्या जाने, मै कैसे कह सकता हू कि कोई आदमी अभी जिदा है तो वह एक मिनट बाद भी जिदा रहेगा या नही। कोई नही कह सकता। इसलिए मै कहता हू कि हम तो नास्ति है, जिसका कोई ठिकाना नही है। हमेशाके लिए नही रह सकते।

---

[1] मुसीबत।

'अस्ति' वह तो एक ही हो सकता है। हस्ती शब्द अस्तिमे निकला है। अस्तिके माने, है 'आदि है, अनादि है, और आयदा रहेगा। ऐसा हमेशा रहनेवाला अस्ति है, जिसने हमको बनाया है और जो हमको बिगाड सकता है, यहासे उठा सकता है। मेरे नजदीक तो वह बिगाडता नही, हमको बनाता ही है। इसलिए अगर आज हम माने कि वह नही मिल सकता, और बिगडे तो वह मूर्खता होगी। लेकिन वह तो है और सब कुछ कर सकता है। वह रहीम है और उसके लिए सब एक है। वह किसीका बिगाडेगा नही, न किसीको मारेगा, न किसीको गाली देगा। वही उसका कानून है।

मुसलमान भी मेरे पास आ जाते है। वे यहाकी बात सुनाते है कि हम दिल्लीमे अभीतक रहे है लेकिन अब तो हम रह नही पा रहे और भाग रहे है। तो मै उनको कहता हू कि जब तक मै जिदा पडा हू तबतक आपको यही रहना चाहिए, खिलाफतके जमानेमे हिंदू, मुसलमान, सिख सब साथ-साथ पडे थे। मै तो गुरुद्वारेमे गया हू और मुसलमान भी मेरे साथ आए है। ननकाना साहबका जो बडा किस्सा बन गया, उस वक्त मौलाना साहब थे, अलीभाई थे और मै था। सब ऐसा मानते थे कि सिख हो, मुसलमान हो, हिंदू हो, वे तीनो एक है। जलिया-वाला बागमे क्या हुआ? सब पुकार-पुकारकर और चीख-चीखकर कहते थे कि यहा तो सबका खून मिल गया। क्योकि उसमे सब थे। हिंदू थे, मुसलमान थे और सिख थे, सबका खून मिला। उस वक्त तो बडे जोरसे कहते थे कि अब तो हमारा खून एक हो गया। उसको कौन जुदा कर सकता है? तो आज फिर वह जुदा बन गया? मुसल-मान कहता है कि सिख है वह तो हमारे साथ मिल नही सकता है। सिख कहते है कि मुसलमानोके साथ क्या मिलना था। क्या गुनाह किया है एक-दूसरेका, जो एक-दूसरेके दुश्मन बन गए। तो मै तो हैरान हो जाता हू। मै पडा हू, जिंदा रहता हू, तो मै तो तीनोका खून आज भी एक है, वही मानकर। हो सकता है तो उसे सिद्ध करनेके लिए। ऐसा चीखते-चीखते, ईश्वरके पास रोते-रोते। इन्सानके पास तो मै रोता नही हू, लेकिन ईश्वरके पास तो रो सकता हू,

उसकी मिन्नत कर सकता हू, क्योकि उसका तो गुलाम मै हू। सबको उसका गुलाम बनना चाहिए। पीछे किसी इन्सानको किसीके गुलाम रहनेकी आवश्यकता नही रहती। कहता हू कि अगर मै ऐसा कर सकू तो जिंदा रहना चाहता हू, नही तो ईश्वर मुझको यहासे उठा ले।

मेरा सिर शर्मसे झुक जाता है और मै शर्मिदा बन जाता हूं कि वही हिंदू, वही सिख, वही मुसलमान जो कलतक एक दूसरेको भाई-भाई कहते थे आज एक दूसरेके दुश्मन हो गए है। कोई तो समझे कि वह हमारे दुश्मन नही हो सकते। चार-पाच भाई आए, उन्होने मुझे कहा कि यहा जो सारे साढे चार करोड मुसलमान पड़े है वे ऐन मौकेपर बागी हो जायगे। वे तो आखिर मुसलमान है, पाकिस्तानमे भी मुसलमान है। मानो कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे लडाई हो गई या कुछ और ऐसा हो गया तो क्या वे पाकिस्तानको खुफिया तौरसे मदद नही देगे? तो मैने उनसे कहा कि माना कि कोई दे, मगर सब-के-सब तो ऐसा कर नही सकते। मै आपको कहना चाहता हू कि साढे चार करोड मुसलमान ऐसे बन नही सकते है। मैने उन भाइयोको कहा कि अगर आप शरीफ रहे, हम शरीफ रहे, जितने यहां अक्सरियतमे[1] हिंदू पड़े है, सिख पडे है वे सब शरीफ बने, वे अगर किसी मुसलमानकी दुश्मनी नही करते है तो मै जोरोसे कहूगा कि साढे चार करोड मुसलमानोमेसे एक भी बेवफा नही बन सकता है। हमको बहादुर बनना चाहिए। अक्सरियतमे होते हुए हम बुज़दिल न बने। साढ़े चार करोड़ मुसलमान हिंदुस्तानमे है मगर सब तो ४० करोड़ है। वे ऐसे बुज़दिल बने कि साढ़े चार करोड मुसलमानोसे डरे? मै कहता हू कि साढे चार करोड़ अगर हिंदुस्तानके बेवफा बनते है तो वे इस्लामसे बेवफाईका काम करेगे और इस्लामको खत्म कर देगे। लेकिन अगर हम भी ऐसे ही बने, बुज़दिल बने, दगाबाज बने और उनका भरोसा बिल्कुल न करे और यहा एक भी मुसलमानको न रहने दे तो मै आपको कहता हूं कि

---

[1] बहुसंख्यक।

हिंदुस्तानमे हिंदू अकेला तो कुछ खा नही सकेगा। उनका रोटी खाना पीछे जहर-सा हो जायगा।

हिंदुस्तानके बाहर कोई भी मुसलमान या दूसरी सल्तनत हो, या तो पाकिस्तानमे जो मुसलमान है वे हिंदुस्तानपर हमला करते है तो मै आपको कहता हू कि साढे चार करोड मुसलमान जो यहा पडे है उनको हिंदुस्तानकी वफादारी करनी है। अगर नही करते है तो उनको शूट करो, यह तो कानूनमे पडा है। मेरा कानून तो दूसरा है, जो मैने बतला दिया। लेकिन उसको कौन मानेगा? लेकिन जो दुनियाका कानून बना है, उसमे तो जो ट्रेटर[1] होता है, फिफ्थ कॉलमिस्ट[2] होता है—जिस मुल्कमे रहता है अगर उस मुल्कको डुबोनेका काम करता है, तो वह ट्रेटर[1] है, वह बेवफा है। उसके लिए एक ही सजा है कि उसको मार डालो। मै कहता हू कि आखिर इतनी बडी सल्तनत पडी है, साढे चार करोड मुसलमान सब-के-सब तो बेवफा हो नही सकते। साढे चार करोड मुसलमानोको किसने देखा है? वे तो ७ लाख देहातोमे पडे रहते है, थोडे शहरोमे पडे है। यू० पी० मे पड़े है, बिहारमें पडे है, सब देहातोमे फैले हुए है। मै तो देहातोमे रहा हू और उन सबको जानता हू। वे कभी बेवफा नही हो सकते है। सेवाग्राममे भी मुसलमान पडे है। वे सेवाग्राममे काम करते है। वे सेवाग्रामके लिए वफादार रहेगे, उसके लिए मर जायगे। वे क्या जाने कि दूसरी जगह मुसलमान क्या करते है। वे तो सेवाग्राममे रहते है, वे सेवाग्रामके आश्रमकी रक्षा करते है और सबको भाई-भाई समझकर रहते है। कोई कहे कि सारे-के-सारे साढे चार करोड़ मुसलमान जो यहाके रहनेवाले है बेवफा हो सकते है, तो वह नही होनेवाला। और बेवफासे हम क्यों डरे? मै तो नही डरता हू। अगर वे हिंदुस्तानमे पड़े है और बेवफाई करते है तो मै कहूगा कि उनको मरना है और इस्लामको मार डालना है।

सच्चे काफिर तो वे है जो हमारी रोटी खाए, हमारे यहा नौकर बने, लेकिन काम हमारे दुश्मन बनकर करे और हमारा गला काटे।

---

[1] देशद्रोही [2] पंचमांगी।

ऐसे हिंदू भी बने है, सिख भी बने है, मुसलमान भी बने है। दुनियामे हर किस्मके लोग रहते है, लेकिन ऐसा समझना कि साढे चार करोड मुसलमान जो यहा पडे है इस तरहसे दगाबाज बनेगे हमारी बुज़दिली है, और इससे यह पता चलता है कि हम सच्चे हिंदू नही है, हम सच्चे सिख नही है। हमारी शराफत, जितने अफसर पड़े है उनकी शराफत, हिंदू है, सिख है उन सबकी शराफत और बहादुरी इसीमे पडी है कि कहे कि तुमको जाना ही नही चाहिए। उनकी मिन्नत करना चाहिए कि आपको कोई छू नही सकता। छोडिए, हमने काफी बुरा काम किया है, पर आगे नही करनेवाले। क्यो जाते हो, पाकिस्तान पहुचोगे तो वहा क्या होगा और वहा जाकर क्या करोगे, उसका क्या पता है? यहा तो तुम्हारा घर पड़ा है, सब कुछ है। ऐसी मोहब्बतसे हम उनको रक्खे तो सरहदी सूबेमे, डेराइस्माइल खा वहाके जो मुसलमान अफ्रीदी लोग है वे भी हमारे लोगोंको कहेंगे कि आपको भागना नहीं है। यह शराफतका असर है। अगर हम दिल्लीमे शाति कायम रक्खे, डरके मारे नही या गाधी कहता है इसलिए नही, लेकिन अगर सच्चे दिलसे आप इस तरह चले तो मै आपको कौल दे सकता हू कि कोई मुसलमान आपको ईज़ा[1] नही कर सकता है, और अगर करेगा तो ईश्वर तो पड़ा है। वह सर्वशक्तिमान है, सबको पूछनेवाला है, वह हमारी रक्षा करेगा, इसमे मेरे दिलमे कोई शका नही है।

: ९४ :

२१ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

जिस तरहसे आज हिंदू, सिख और मुसलमान रह रहे है इस तरीकेसे नही रह सकते है। मुझको यह बडा बुरा लगता है और एक

---

[1] पीड़ित।

इन्सान जितनी कोशिश कर सकता है उतनी मै इस चीजको हटानेकी करूगा। आपको मै कह दू कि मुझको दिलमे खुशी नही हो सकती है कि मै जिदा रहू और जो मै चाहता हू वह न कर सकू। ईश्वर मेरे पाससे वह काम लेता है, तब तो भला है, अच्छा है, लेकिन अगर ऐसा नही होता तो मै समझता हू कि मेरा काम खतम हो गया। मै कोई आत्महत्या करके मरना चाहता हू ऐसा नही। यह सही है कि जो अपने जीवनको दूसरोकी ही सेवामे काटना चाहते है उनके लिए दूसरी परीक्षा नही हो सकती है। जो वे करते है उसमेसे कुछ भी फल नही निकले उसके लिए वे हैरान न हो। लेकिन जब फल नही मिलता है तो जिस तरहमे एक वृक्ष, जिसमे फल नही आते और वह सूख जाता है, उसी तरहसे मनुष्य भी एक वृक्ष-जैसा है, उसको सूख जाना चाहिए, और वह सूख जाता है, यह सृष्टिका नियम है। हिंदू-धर्मके मुताबिक आत्मा तो अमर है; वह मरती नही, एक शरीर जो निकम्मा हो गया है और उसकी कोई उपयोगिता नही है, उसको तो खत्म होना चाहिए। उसकी जगह नया आ जाता है। परतु आत्मा अमर होती है और सेवाके द्वारा अपनी मुक्तिके लिए नए-नए चोले धारण करती है।

तो आज मै चला गया जहा एक ओर बहुतसे हिंदू और दूसरी ओर बहुतसे मुसलमान एक साथ पडे थे। उन्होने कहा—'महात्मा गाधी जिदाबाद'। उसके क्या मानी? हिंदू भी वैसे कहे, वह भी क्या मानी रखता है, अगर दोनोंके दिल अलग-अलग है और वे एक-दूसरेके साथ शातिसे नही रह सकते। तो मुझको वह जयघोष कठोर-सा लगा। मैने उन मुसलमानोंसे कहा कि आप लोगोको घबराहट क्या करनी थी? आखिरमे मरना है तो मर जायगे। मरेंगे अपने भाइयोके हाथसे, दूसरेके हाथसे मरनेवाले नही है। आप उनपर रोष भी न करे, उनको मारनेकी चेष्टा भी न करे; खुद मर जायं, लेकिन वहासे आप डरके मारे न भागे और न वहासे हटे। मै तो उसपर कायम हू। लेकिन एक बात मैंने यहा सुनी कि वह महात्मा कैसा बुरा आदमी है? वह ऐसा कर रहा है कि हमने जिन मुसल-मानोको उनके घरोमेसे हटा दिया, उनको उन्ही घरोंमे फिर वापिस

लाना चाहता है। बात सच्ची है, मै उनको वापिस लाना चाहता हू, लेकिन किस तरहसे लाना चाहता हू ? मैने तो उनको कहा, और आज भी उनको कहकर आया हू कि जो डरसे भागे है उन्हे वापिस लाना चाहता हू। जो खुशीसे अपने आप पाकिस्तान जाना चाहते है, उनको तो जानेमे कोई रुकावट नही होनी चाहिए। लेकिन डरके मारे, दु खके मारे और हकूमत आपकी रक्षा नही कर सकती है, हिंदू, सिख, तो रक्षा करते ही नही है, ऐसा समझकर आप जाना चाहते है तो मुझको बडा दु.ख होगा। जो लोग पाकिस्तान नही जाना चाहते है और यही रहना चाहते है मै कहूगा उनको कि तुम्हे यहासे नही जाना है। मैने उनको कहा कि जो लोग बाहर चले गए है वे तो तभी आ सकते है, और तब ही आना चाहिए जब यहाके हिंदू और सिख खुशीसे कहे कि आप आइए। पुलिस और मिलिटरी—उनके जरिएसे उन्हे लाना मुझको तो अच्छा भी नही लगता। मै तो कहता हू कि यह सब छोड दे। पुलिस नही चाहिए, मिलिटरी नही चाहिए। जो कुछ हमे करना है, हम कर लेगे। मरना है तो मर जायगे। अगर कोई किसीको मारता नही है तो वह मरता नही है। लेकिन अगर एक मारता है, दीवाना बन गया है तो उसके सामने मै क्यो दीवाना बनू? मै तो उसके हाथसे मर जाऊ, वह तो मुझे बडा प्रिय लगेगा। वह मुझे काट दे, वह अच्छा लगेगा। मै हकूमतकी तरफसे कह नही सकता हू। मेरे हाथमे हकूमत है नही। मै जैसा बना हू, वह तो आप जानते है। एक आदमी पागल बनता है और वह बुरा करता है, तो मै वैसा नही कर सकता। पीछे वह भी मुझसे भलाई सीख लेना है। चालीस करोड हिंदू-मुसलमान पडे है, उसमेसे पाकिस्तानमे थोडे करोड चले गए, लेकिन तब भी साढे चार करोड मुसलमान तो यही हिंदुस्तानमें पडे है, बाकी तो सब-के-सब हिंदू ही है। थोडे पारसी, थोड़े क्रिष्टी, थोडे यहूदी भी पडे है, उसकी तो गिनती नही हो सकती है। तो वे आपसमे लडकर मर जाय तो भले मर जाय, लेकिन पुलिस-मिलिटरीकी मारफत जिदा रहना वह जिदगी नही। दोनो लडते है तो हकूमत क्या करे ? हकूमत कहे कि हम तो इस तरहसे रह सकते है, नही तो हम हकूमत

छोड़ देते है। पीछे जो ऐसा मानते हो कि हिंदुस्तानमे तो हिंदू ही रहे, क्योंकि पाकिस्तानमे मुसलमान ही रहते है, तो वे हकूमत बनावे। इसका मतलब यह होगा कि पाकिस्तानमे वे निकम्मे बन जाते है दीवाना बन जाते है, ऐसे ही हम भी यहा दीवाना बने? हम चाहे तो ऐसा कर सकते है। मेरा एक दोस्त है, उसको मै गाली देता हू तो वह मुझको दो गाली दे, वह ठीक है। वह गाली देता है, उसे सहन कर लिया, तो वह कहातक गाली देगा? मारता है, वह भी मै सहन कर लेता हू, मै उसको गुक्केके सामने मुक्का नही देता हू। तब पीछे क्या होना है, आपने देखा है? मैंने तो देखा है कि कोई आदमी ऐसा हवामे मुक्का मारता है तो उसके हाथ टूट जाते है। जो बाक्सिग[1] करता है, वह भी रुईका मोटा तना गद्दा-सा होता है, उसपर मुक्का चलाता है, तब तो उसको कुछ लज्जत आती है। लेकिन अगर बाक्सर[2] कोई चीज सामने नही रखता है तो वह निकम्मा बन जाता है और कुछ नही कर सकता है। मैंने तो आपको सनातन सत्य बतला दिया। मै उसपर अकेला कायम हू। लोग तो आज उसपर नही चल रहे है। मै आखिरतक उस सत्य पथपर पडा रह सकूगा कि नही, यह तो ईश्वर ही जानता है। मै तो आज सीधी बात करता हू कि जो बाहर चले गए है, उनको बाहर रहने दे। लेकिन बाहर रहते है, पीछे उनको खाना-पानी तो देना है। चूकि वे बाहर चले गए है, उनको भूखो रहने दे और उनको कहे कि तुम पाकिस्तान भाग जाओ, ऐसा नही हो सकता। ऐसा करके हम लडाईका सामान तैयार करते है। काग्रेस हकूमत, अगर वह हकूमत सचमुच देशकी सेवा करनेके लिए है, पैसोके लिए नही है, सत्ताके लिए नही है, लेकिन सबकी खिदमत करनेके लिए है—एक कौमकी नही, दो कौमकी नही, सबकी है। अगर वे खिदमत करते है और लोग बिगडते है और उन्हे खिदमत करने नही देते तो उन्हे हट जाना है। पीछे जो लायक है, जो हिंदुस्तानमे हिंदुओंको ही रखना चाहते है, वे उनकी जगह ले, हकूमतमे। वह हिंदूधर्मको डुबोनेवाली चीज होगी,

---

[1] मुक्केबाजी [2] मुक्केबाज।

हिंदुस्तानको भी डुबोनेवाली चीज़ होगी। पाकिस्तानको हम छोड दे, वह जो कुछ भी चाहे करे। हम तो हिंदुस्तानको ही देखे। उसका नतीजा यह आ जाता है कि सारी दुनिया हमारी तारीफ करेगी, हमारे साथ होगी। नही तो दुनिया जो अबतक भारतकी ओर देखती आई है, अब उसकी ओर देखना बद कर देगी। वे मानते थे कि हिंदुस्तान एक बडा मुल्क है, उसमे अच्छे आदमी रहते हैं, वे बुरे होनेवाले नही, यह विश्वास खत्म हो जायगा। आपको इस तरहसे करना है तो कर सकते है। लेकिन जबतक मेरे सास-मे-सास है तबतक मैं सबको सावधान करता ही रहूगा और सबको कहता रहूगा कि अगर इस तरहसे करोगे तो इसमेसे कोई भलाई निकलनेवाली नही है।

: ९५ :

मौनवार, २२ सितम्बर १९४७

(लिखित सदेश)

एक सभ्य समाजमे मूल अधिकारोपर अमल करनेके लिए बदूकोसे रक्षाकी आवश्यकता नही होनी चाहिए, यह सबको मान लेना चाहिए। काग्रेसके वार्षिक अधिवेशनोमे प्रदर्शनीकी भूमिपर अन्य धर्मो, सम्प्रदायो और राजनैतिक सस्थाओकी बैठके होती देखकर मुझे अत्यत हर्ष होता था। वहा बिना पुलिसकी सहायताके विरोधी विचार प्रकट किए जा सकते थे। अब लोग इस रास्तेसे हट गए है और जनतामे इस रास्तेको अच्छी निगाहसे भी नही देखा जाता। अब वह अनुकूल वातावरण और बरदाश्तकी भावना कहा चली गई? क्या यह इसलिए हुआ कि हमने राजनैतिक स्वतत्रता प्राप्त कर ली है? क्या हम स्वतत्रताका दुरुपयोग करके उसकी आज़माइश कर रहे है? आशा रखे कि यह मनोवृत्ति अधिक दिन नही रहेगी। अगर रही तो वह हिंदुस्तानके लिए अत्यत दु खद बात होगी। हमारे टीकाकारोंके लिए, जो बहुत है, हम यह कहनेका मौका न दे कि हम स्वतत्रताके लायक

नही थे। इन आलोचकोके लिए मेरे दिलमे कई उत्तर खडे होते है। लेकिन इनमे कुछ सतोष नही होता। भारतवर्षके करोडोके जन-समुदायसे प्रेम करनेवालेके नाते मेरे स्वाभिमानको हानि पहुचती है कि हमारी सहनशक्तिका दीवाला निकला। हम आशा करते है कि हमारी कौमी जिंदगीका यह एक गुज़रता हुआ नजारा है। मुझसे फिर यह न कहा जाय, जैसा कि कहा जाता है कि यह सब मुस्लिम लीगके बुरे कामोंका परिणाम है। इसको हम सत्य मान लें तो क्या हमारी सहनशीलता इतनी कमजोर हो गई है कि वह मामूलीसे बोझके सामने घुटने टेक दे? शिष्टाचार और सहनशक्ति तो इस तरहकी होनी चाहिए कि हमारी सस्कृति अपना स्वय परिचय दे। यदि भारतवर्ष सफल न हुआ तो एशिया मरता है। ठीक ही तो कहा गया है कि हिंदूने अन्य सस्कृतियो और सभ्यताओको ढाला है। ईश्वर करे कि हिंद ससारमे उन सब देशो-का—चाहे वे एशियाके हो या अफ्रीकाके—आशा-स्थल बना रहे।

अब मैं बिना लाइसेसके और छुपे हुए हथियारोके भयकी बातपर आता हू। इसमे सदेह नही कि कुछका तो पता चल गया है। कुछ अपनी इच्छासे मुझे दिए जा रहे है। ऐसे सब हथियारोको निकाल देना चाहिए। जितना कुछ मुझे मालूम है उससे दिल्लीमेसे अभी भी बहुत कम निकल पाए है। मगर इन हथियारोसे हम डरे क्यो? अग्रेज़ी राज्यमे भी कुछ छुपे हुए हथियार रहते थे। उस समय इनकी कोई चिंता नही करता था। जब तुमको विश्वास हो जाय कि शस्त्रके गुदाम किसी जगह छिपे हुए है तो उन सबकी ज़रूर ख़बर दो। ऐसा न हो कि शोर तो ज्यादा हो और निकले कुछ भी नही। स्वतत्र होनेपर हम एक कानून अग्रेजोके लिए और दूसरा अपने लिए लागू न करें। कुत्तेको मारनेका कारण बतानेके लिए उसको बुरा नाम न दे। इतना सब करने और कहनेके पश्चात् अतमे साठ वर्षके परिश्रमसे पाई हुई स्वतत्रताके लायक होनेके लिए कैसी ही कठिनाइया क्यो न हो, हमको वीरतासे उनका मुकाबला करना चाहिए। यदि हम उनका सामना सफाईसे करे तो हम ज्यादा योग्य बन सकते है। ऐसा समझकर कि मुसलमान अक्सरियतमे बेवफा बनेगे उनको मार डाले या जला-

वतन करे तो हमसे ज्यादा बुजदिल कौन ?

अक्लियतके लिए सम्मान रखना अक्सरियतका भूषण है। उसका तिरस्कार करनेसे अक्सरियतपर दुनिया हँसेगी । अपनेमे विश्वास, और जिसको दुश्मन माने उसका उद्धार करनेमे हमारी रक्षा होती है। इसी-लिए मै जोरोसे कहता हू कि हिंदू, सिख और मुस्लिम जो देहलीमे है वे दोस्ताना तौरसे एक-दूसरेसे मिले और सारे मुल्कको वैसा करनेके लिए कहे। आप दुनियाके लिए नमूना बने। दूसरे हिस्सेमे हमारे लोग क्या करते है सो देहली भूल जाय। तब ही देहलीको इस जहरीले वायुमडलको दूर करनेका गौरव हासिल हो सकता है। अगर वैरका बदला लेना मुनासिब हो तो वह हकूमत हीके जरिए हो सकता है, हर एक आदमीके जरिए हरगिज नही।

: ९६ :

२३ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

प्रार्थना कोई मामूली चीज नही है, वह बडी बुलद चीज है। जीवनभरमे हम सब तरहकी बात करते है, २४ घटेमे काफी बाते करते है; गुनाह करते है, पैसेके लिए मारे-मारे फिरते है, तो कम-से-कम प्रार्थना तो कर ले। समाजमे अगर प्रार्थना करे तो वह बहुत बडी चीज हो जाती है। ४० करोड आदमी ऐसा मानकर कि ईश्वर एक है अपनी भाषामे प्रार्थना करे तो वह एक बहुत बुलद बात हो जाती है। और पीछे उनमे कुरान शरीफकी कोई आयत आए तो उससे भी न घबरावे। जो भाई ऐसा कहते है कि कुरानसे कुछ भी प्रार्थनामे न पढा जाय, वे तो गुस्सेमे ऐसा कहते है। मुसलमान चूकि हिंदुओको तग करते है, सिखोंको तग करते है, उनको मारते है, इसलिए क्या हम कुरानपर गुस्सा करे? मुसलमानोने जो कुछ किया वह अच्छा नही किया, लेकिन कुरान शरीफने क्या बुराई की? भग-

वानका एक भक्त पाप करता है तो इसलिए हम क्या भगवानका नाम नही लेगे? भगवान तो एक ही है। जो भगवानके भक्त है वे ऐसा कहेगे कि हिंदुओने भी बुरा किया है तो क्या गीता बुरी है? सिखोने अगर बुरा किया तो क्या हम गुरु-ग्रथसाहब न पढे? गुरु-ग्रथने क्या गुनाह किया? सिख बिगडे, हिंदू बिगडे, मुसलमान बिगडे, पारसी बिगडे उससे क्या हुआ? उनके जो धर्म है और उनके पीछे जो तपश्चर्या हो गई है वह तो कायम ही रहेगी।

मेरे पास रावलपिंडीसे जो भाई आज आ गए वे तो तगडे थे, बहादुर थे और बडी तिजारत करनेवाले थे। रावलपिडी बनाई थी तो हिंदुओने और सिखोने, लाहौर भी उन्ही लोगोने बनाया। पाकिस्तान सारे-का-सारा मुसलमानोने थोडे ही बनाथा है, तो पाकिस्तान जो है, उसके बनानेमे सबने हिस्सा लिया, किसी एक कौमने नही। हिंदुस्तानको कहे कि यहा हिंदुओकी सख्या ज्यादा है इसलिए इसको हिंदुओने ही बनाया है तो यह बात ठीक नही। उसको हिंदुओने, मुसलमानोने और सिखोने बनाया, पारसियोने बनाया, ईसाइयोने बनाया। जैसा आज हिंदुस्तान बना है उसके बनानेमे सबने हिस्सा लिया है। मैने तो उस भाईसे कहा, आप शात रहे और आखिरमे तो ईश्वर पडा है। ऐसी कोई जगह नही जहा ईश्वर नही। उसका भजन करो और उसका नाम लो, सब अच्छा हो जायगा। उन्होने कहा, वहा पाकिस्तानमे जो पडे है उनका क्या करे? मैने उनको कहा, आप यहा आए क्यो, वहा मर क्यो नही गए? मै तो इसी चीजपर कायम हू कि हमपर जुल्म हो तो भी हम जहा पडे है वहीपर पडे रहे, मर जाय। लोग मार डाले तो मर जाय। मगर ईश्वरका नाम लेते हुए बहादुरीसे मरे। यही मैने लडकियोको सिखाया है। मरनेका इल्म तो हासिल कर ले और ईश्वरका नाम लेती रहे। कोई इन्सान है, बुरा आदमी है, उसकी नजर बद हो जाती है, वह हिंदू हो, सिख हो, पारसी हो, कोई भी हो, हम यह तो कर सके कि उसके बसमे न हो। वह कहे कि चलो, पैसा देते है तो उसको यही कहना चाहिए कि ५ मिनट बाद मारना है तो तू अभी मार दे, लेकिन हम तेरे बसमे आनेवाली

नही है। पैसे देकर छूटनेवाली नही। मै तो, जबतक मेरेमे मास है, यही शिक्षा दूगा। दूसरी बात मै नही कर सकूगा। मै ईश्वरको नही भूलना चाहता। इसलिए मै सब लोगोको कहता हू कि सबसे बडी बहादुरी और सबसे बडी समझ दुनियाकी इसीमे पडी है कि मरनेका इल्म सीखो तब जिंदा रहोगे। अगर मरनेका इल्म नही सीखते हो तो विना मौत मारे जाओगे। मै नही चाहता कि कोई बेमौत मरे। मैने मुसलमानोको भी कहा, आप क्यो जाना चाहते है, यही पडे रहो और मरो। मैने रावलपिंडीके लोगोको भी यही कहा। मै उन लोगोकी मिन्नत करूगा। हकूमतवाले जो कुछ कर सकते है करे। मैने उन लोगोको कहा है कि यहा आए है तो आप कैपोमे जावे, वहा मेहनत करे। आप लोग तगडे है, हिम्मत न हारे। यह न कहे कि हम अब क्या कर सकते है, मकान नही, कुछ नही। मकान तो पडा है, धरती माता हमारा मकान है, ऊपर आकाश है। जो मुसलमान डरसे भाग गए, उनके मकान पडे है, ज़मीन पडी है। तो क्या मै कहू कि आप मुसलमानोके घरोमे चले जाय? मेरी ज़ुबानसे ऐसा नही निकल सकता। मुसलमानोके घर जो कलतक थे वे आज भी उनके है। वे भाग गए डरके मारे। अगर वे अपने-आप भाग गए है और उनको ऐसा लगता है कि वे पाकिस्तानमे खुश रहेगे तो चले जाय, वहा खुश रहे। उनको ईजा[1] न पहुचाओ, आरामसे जाने दो। उनकी जायदाद और जेवर जो है वे ले जायं। पीछे जो घर वे छोड जाते है वह तो हकूमतके कब्जेमे रहता है, वह जो चाहे कर सकती है। उसमे जो हमारे शरणार्थी है वे अपने-आप चले जाय, यह तो अच्छा नही। मै एक चीज जानता हू कि आप तगडे बने और जो मै आपको कहता हू उसको आप करे ताकि आप मुझको यहासे भेज सके। मै पजाब जाना चाहता हू, लाहौर जाऊगा। मै पुलिस और मिलिटरीकी इस्कोर्ट[2] लेकर नही जाना चाहता हू, मै तो भगवानके भरोसे अकेले जाना चाहता हू और वहाके जो मुसलमान है उनके भरोसेपर जाना चाहता हू। अगर उनको मारना है

---

[1] कष्ट; [2] दस्ता।

तो मार डाले। मैं हँसते-हँसते मर जाऊगा और दिलमे कहूगा कि भगवान उनका भला करे। उनका भला भगवान कैसे कर सकता है? उनको भला बनाकर। ईश्वरके पास भला करनेका यही तरीका है—दिलके मैलको शुद्ध कर देना। वह मेरा शत्रु बने तो भी मै उसका शत्रु नही हू, मै उसका बुरा नही चाहता तो ईश्वर मेरी बात सुनेगा। उस आदमीके दिलमे लगेगा मैने मारकर क्या लिया, इसने मेरा क्या गुनाह किया था? मुझे वे मारे तो मारनेका उन्हे अधिकार है। इसलिए मै लाहौर जाना चाहता हू, रावलपिंडी जाना चाहता हू। हकूमत मुझे रोके। तो रोके लेकिन मुझे रोक कैसे सकती है? रोकना चाहे तो मुझे मार डाले। अगर मुझको मार डाले तो आप लोगोको एक पाठ देकर मै चला जाऊगा। वह मुझको बडा अच्छा लगेगा। वह पाठ क्या है, तू मरेगा, लेकिन किसीका बुरा खयाल भी नही करेगा।

ध्रुव बालक था, बच्चा था। उसने भगवानकी प्रार्थना की। प्रह्लाद क्या था? १२ वर्षका लडका। उन सबने यही किया, तो हम तो उनके वारिस है। गुरुओने, नानक साहबने, जो गुरु-ग्रथ जानने वाले है वे सब जानते होगे, कि उन्होने यही सिखाया है कि किसीका बुरा नही सोचना, किसीको तलवार नही लगाना। मरनेकी हिम्मत रखना वह तो सबसे बडी बहादुरी है। अगर हमारे लोग इस तरहसे खप जाय तो किसीपर गुस्सा नही करना है। आपको समझना है कि वे खप गए, तो ठीक गए, भले गए। ऐसा ही ईश्वर हमको भी कर दे। ऐसी हमारी हमेशा हार्दिक प्रार्थना रहे। मै आपसे यह कहूगा, रावलपिंडीवालोसे भी कहा कि आप वहा जाय और जो सिख और हिंदू शरणार्थी है उनको मिले, उनसे कहे कि भाई, आप वापिस जाय और अपने-आप—पुलिसके मारफत नही, मिलिटरीके मारफत नही। दिल्लीमे आप ऐसा करे कि हम झगडा नही करेगे तो मै समझूगा कि ईश्वर मेरी सुनता है। उस चीजको लेकर मै पजाब चला जाऊगा, मै एक दिन भी यहा उसके बाद न रहूगा, यह मै आपको कहना चाहता हू। मै यहा कोई शौकसे नही पडा हू, यहा सेवा करनेके लिए पडा हू। जो आग यहा भडकती है उसके बुझानेमे एक इन्सान जितना कर सकता

है वह करनके लिए मै यहा पडा हूं। तो मै आपको, रावलपिडीके जो भाई आए है उनको, बतला देता हू कि उनको किस तरहसे रहना है और किस तरहसे वे काम करे कि उनकी खुशबू हिंदुस्तानमे, सारी दुनियामे, फैल जाय।

: ६७ :

२४ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज जो भजन आप लोगोने सुना वह हमारे लिए आज ठीक है। हम सब आज कह सकते है—"मेरी टूटी-सी किश्ती है।" और पीछे भगवानको हम कहते है कि—"कृपा करके हमको पार उतारिए, अगर आपकी कृपा नही रहनेवाली है तो यह किश्ती पार उतर नही सक्ती।" यही आज हिंदुस्तानका हाल है, इसे मै प्रतिक्षण देख रहा हू। हममे, किसी-न-किसी तरहसे कहो लेकिन वैर-भाव आ गया है। हिंदू-मुसलमान दोनोके दिलोमे इतना गुस्सा आ गया है कि दिल्लीमे मुसलमानोको हम रहने नही देगे। हिंदू-सिखोको पाकिस्तानसे भगाया गया है। मै सुनता हू कि छोटे-छोटे बच्चोको भी यह सिखाया गया है। यह ठीक है कि यह सब प्रचार मुस्लिम लीगका है। मुस्लिम लीगने यह सिखाया और इसका मै साक्षी हू कि हम तो लडकर पाकिस्तान लेनेवाले है, मश्विरा करके नही, हिंदू और जितने गैरमुसलमान है उनके साथ मिन्नत करके नही। यह तो हमारा दुर्भाग्य था कि वर्षोसे यह चलता रहा कि वे हमारे साथ लडेगे। लेकिन यह कभी चल नही सकता। लडकर क्या लेना था? तो एक तरहसे तो कह सकते है कि लडकर नही लिया है। लेकिन हमने पाकिस्तान माना, हमने कबूल कर लिया, अग्रेजोने कबूल कर लिया। अगर अग्रेज कबूल न करते तो पाकिस्तान हो नही सकता था। काग्रेस कितना ही कबूल करे; लेकिन आखिरमे तो सत्ता अग्रेजोंके हाथमे थी। उनको उसे छोड़ना

था। क्यों ? सत्ता अब यहा चल नही सकती थी। हम उनसे तलवारसे नही लडे थे। हमारा निःशस्त्र युद्ध था। हम तो कहते है कि हमारा अहिंसात्मक युद्ध था। सो हिंदुस्तानको आजादी मिली। हिंदुस्तानके टुकडे हुए। काग्रेसने उसमे शिरकत दी। काग्रेसने सोचा कि भाई-भाई कब-तक इस तरहसे लडते रहेंगे, इसस तो अच्छा है चलो दो जो मागते है। पाकिस्तान चाहिए ? दे दो। तो पाकिस्तान तो दिया। मुल्कका पूरा-पूरा हिस्सा हुआ, पाकिस्तान मिला। मगर कइयोको लगता है पूरा नही मिला, पूरी रोटी नही मिली, आधी-पौनी ही मिली, तो इसे तो खा लो, पीछे देखेंगे। सो आजादी तो मिली, पर उसे हम हजम न कर सके, जहर जो भरा था। सो हमारे बीचकी लडाई खत्म नही हुई। लीगवालोने जहरीली तकरीरे की। वे लोग जो पाकिस्तानमे रहते है, सब मुसलमान थोडे है ? वहा हिंदू रहते है, पारसी रहते है, सिख रहते है, ईसाई रहते है। उन सबको खुश करे, बतावे कि सबका हक एक-सा होगा, हकूमत तो हमारी होगी, इसमे शक नही है, क्योकि हमारी अक्सरियत है। वह ठीक है, लेकिन हकूमत आखिर इन्साफसे चलाना है। ऐसा कहा तो सही, लेकिन हो नही सका। क्यो नही हो सका, इसमे तो मै क्यो जाऊ। मुझको सब पता है, वहा क्या-क्या हुआ। मुसलमान सब हदसे बाहर चले गए। उन्होने सोचा कि अब तो हमारा राज्य हो गया है, तो काटो-मारो। वहासे शुरू हुआ। जब शुरू हुआ तो पीछे सिख भी तो लडनेवाले है। वे कैसे बरदाश्त करनेवाले थे। उन्होने भी काटना-मारना शुरू कर दिया। यह हमारा किस्सा है और अभी वह खत्म नही हुआ।

हजारो भाई मेरे पास आते है कि हम वहा नही रह सकते, वहा हमारे लिए यह है कि इस्लाम कबूल करो, नहीं कबूल कर सकते तो जिस तरह हम रखते है वैसे रहो, यानी गुलाम होकर रहो। वह हम कैसे कबूल कर सकते है ? मजबूर होकर वहासे भागे है। हमको पसद पडे तो हम मुसलमान भले हो जाय। डरके मारे मुसलमान होना दूसरी बात है। पेट पालनेके लिए कोई धर्म नही छोड सकता है। मजबूर होकर धर्म छोडना धर्म नही अधर्म है। जो पुरुष या स्त्री अपना मान खो देता है—और मान धर्ममे ही है, उसका बचना क्या ?

क्योकि पैसा चाहिए, जेवर चाहिए, नौकरी चाहिए, इसलिए जो धर्म खो देता हैं, मै वहता हू कि उसके पास कोई धर्म ही नही। न वह हिंदू धर्मके लायक है, न वह अच्छा मुसलमान ही बन सकता है। और मजबूर करके हमे कलमा पढाए तो हम थोडे ही मुसलमान हो सकते है ? मै यहा कलमा नही पढता हू, मै तो फातेहा पढता हू । दोनोमे खूबी पडी है। कलमामे तो ऐसा है कि सिवा खुदा दूसरा नही है, ऐसा कहो। और पीछे उनके रसूल तो मोहम्मद साहब थे। बाकी जो रसूल हो गए हैं, वे कोई नही है। लेकिन फातेहामे तो बिल्कुल साफ है, तू मालिक है, सबको बचा सकता है तो हमको भी बचा। लेकिन अच्छा हो तो भी जबर्दस्ती क्या पढाना। उसे हम पढे तो खुशीसे पढे। लेकिन कोई कहे—तू यह चीज पढ, पढेगा या नही, पढना होगा, नही पढेगा तो बदूक लगेगी। तो मैं नही पढना चाहूगा। मेरे पास मुट्ठीभर हड्डी है, लेकिन दिल तो मेरे पास है, वह दिल आपके पास है, वह दिल लडकियोके पास है। वे कह सकती है कि अपना धर्म नही छोडेगी। लेकिन आज तो हम एक बाजी खेल रहे है। आज ऐसी हालतमे हिंदुस्तान-मे, हमे क्या करना चाहिए ? यह बडा प्रश्न आप लोगोके सामने है। आज पाकिस्तानसे जो ट्रेन भरकर आती है, पाकिस्तानसे तो मुसलमान नही आते हैं, हिंदू आते है, सिख आते हैं, तो उस ट्रेनमे कुछ-न-कुछ कत्ल हो जाते है। यहासे जाते है तो, यहासे मुसलमान जायगे, उनका कत्ल हो जाता है। उसमे मुझको कहा जाता है कि हिसाब तो सुनो। मैं क्या हिसाब सुनू ? मेरे पास हिसाव तो है नही। हिसाब सुनकर क्या करूगा ? मै तो यह कहूगा कि एक आदमी है वह शराबकी एक बोतल पीता है, दीवाना बन जाता है, दूसरा आदमी शराबकी दो बोतल पीता है, वह बिल्कुल दीवाना बन जाता है। दोनो दीवाने बन जाते है। एक पीनेकी चीज ऐसी पीता है कि वह दीवाना नही बन सकता, जैसे कि साफ नदीका पानी है। उसको शराबका नाम भले दे दो, लेकिन वह किसीको दीवाना नही बना सकती है। उसको शराब कौन कहनेवाला है ? शराब तो वह है जो हमारी अक्लको ले जाय और हमको दीवाना बना दे। बात यह है कि आज

हमको नशा चढ गया है। मान लो कि आज मुस्लिम लीगने नशा दिया, क्योकि उसके मनमे आया सो कर लिया। तो हम सोचे कि वह कर सकते है तो हम भी वैसा करे। हम सोचे कि हम तो सारे हिदुस्तानमे राज्य चलाएगे और पाकिस्तानको मिटा देंगे, मै आपको कहता हू कि पाकिस्तानको हमने कबूल कर लिया, पीछे उसको मिटाना क्या है? मिटा नही सकते है। ताकतसे, अपनी तलवारकी ताकतसे तो नही मिटा सकते। और मिटानेकी चेष्टा करे तो हम दोनो डूबनेवाले है। हमारी किश्ती फूटी किश्ती है। आज हम डूब रहे है। आज चाहे आप हम लोगोसे कहे कि लड़ो और पीछे जीत लेकर आओ। तो मै कहूगा कि जीत लेकर आओगे उसमे पहिले ही दुनियाकी दूसरी ताकत आपको खा जानेवाली है, दोनोको खा जाएगी। इतनी चीज़ मेरे सब दोस्त जो समझदार आदमी है, जिन्होने इतने वर्ष ऐसे कामोमे काटे है समझ ले, तो हमारी खैर हो सकती है। मगर जब दोनो ह्विस्कीकी बोतल पी रहे हो और उसमे लज्ज़त आती हो तब कैसे होगा? मै कहूगा कि भाई, तू ह्विस्कीकी बोतल छोड दे, उसमे हमारे लिए विष भरा है, तो इसलिए हम इसे दरियामे डाल दे। मुसलमानोको हम इस वक्त ईज़ा नही पहुचायेगे। उन्हे जाना हो तो उनको राजी-खुशीसे भेज देगे; लेकिन उनको जबर्दस्ती और मजबूर करके नही भेजेगे। वे अपने घरमे पडे है, यहां अक्सरियत उनकी है नही, हम क्यो ऐसे बुज़दिल बने कि उन्हे सतावे? हम आज़ाद है, सारा हिदुस्तान आज़ाद है, वे ऐसा क्यो मान ले कि हम उन्हे खा जाएगे? क्या वे ऐसे है कि हिंदू उन्हे पाए तो खा सकते है? काग्रेसने इतनी कुरबानिया की, वर्ष-प्रतिवर्ष ज्यादा-से-ज्यादा कुरबानी करती गई, उसमे काफी हिंदू-मुसलमान थे, तो क्या स्वराज्य मिलनेपर वे पागल हो गए है। इन कुरबानियोसे, तकलीफें सहनेमे हिंदुस्तानको आज़ादी मिली, उसको शराबके नशेमे फेंक देगे क्या? यह कितनी बुरी वात है। मै तो आपको यह कहूगा कि अखवारमे आप खबर पढते है और गुस्सा करते है, यह समझने लगते है कि वे हमारे कभी नहीं बनेंगे तो मै आपको वह बात नही सुनाता हूं।

मैंने कल भी कहा था कि यह सब बद हो सकता है। किस तरहसे ? हम साफ बन जाय। साफ बने उसके मतलब यह है कि हम बहादुर बन जाय। जो आदमी बहादुर बनता है वह ऐसी हरकतें नही करेगा। आपके पीछे आपकी हकूमत है, हकूमत बदला लेगी। हकूमतको कहो। राज्य तो हकूमत चलाती है। वह जमाना चला गया जब अग्रेजोकी हकूमत थी और जब हम उनको कुछ पूछ नहीं सकते थे। आज आपकी हकूमत है, उसको पूछो। सबको पूछना है। उनको हम कह सकते हैं कि इस तरहसे करो और इस तरहसे न करो। आखिर साढे चार करोड मुसलमानोसे क्या डरना था। मानो कि साढे चार करोड मुसलमानोको मार डाला, तब पीछे क्या करोगे ? पाकिस्तानमे तो वहुत मुसलमान पडे है, वहा किसको मारोगे ? पाकिस्तानवाले आपके पाससे साढे चार करोड़का हिसाब लेगे और वह हिसाब आप नही दे सकेंगे, क्योकि उसके साथ सारी दुनिया होगी। इसलिए मैं कहता हू कि हम पाक रहे, हमारी जो किताब है, बहीखाता है, अमलनामा है, उसको हम साफ रक्खें। हम कभी कर्जदार नही बनेंगे, लेनदार बनेंगे। ऐसा हम कर ले और पीछे मै कहूगा कि आपकी जो हकूमत है उसको तो पाकिस्तानको अल्टीमेटम[1] देना है। जितने हिंदू, सिख वहासे चले आए है उनको सबको वापस जाना है और उनकी हिफाजत पाकिस्तानको करनी है। पाकिस्तानने तो अब कह भी दिया है कि जितनी अक्लियत पाकिस्तानमे है उनको वही हक होगे जो मुसलमानोको है। उनको बोलनेका, रहनेका, अपने मदिरोमे जानेका, गुरुद्वारोमे जानेका, सब हक रहेगा। हकूमत उनके हाथमे नही आ जायगी। आज एक-दूसरेका एतबार टूट गया है, वह मैं समझ सकता हू। लेकिन इलाज क्या यह है कि मेरे पास यहा मुसलमान पडे है, उनकी जायदाद पडी है, घर पडे है, उनके बच्चे है, उनको हम मारे और भगाना शुरू कर दे ? ऐसा नही होना चाहिए। इसमे बडी बुज़दिली है। हम क्यो बुज़दिल वने ? ऐसी सीधी-सीधी वात

---

[1] अंतिम चेतावनी।

मै आज आपको सुनाना चाहता हू। मै तो यही कहता हू कि हम हिदुस्तानमे बदला लेना भूल जाय और दिलको ऐसा बहादुर रक्खे कि हिदुस्तान देख सके कि दिल्लीमे कुछ होनेवाला नही है। दिल्लीमे हमने कुछ कर लिया है, मुसलमानोको निकाल दिया है। मै नही कहता हू कि जो चले गए है उनको आप आज वापस लाए। लेकिन जितने यहा पडे है उनसे कहे कि चलो आरामसे रहो। बादमे जो पीछे चले गए है उनको आप दिल्लीमे लाएगे। जो कोई मुसलमान बुराई करे उसके लिए हकूमतको कहो। आज जो करना चाहिए वह करने नही देते। वह आपकी हकूमत है, ईस्ट[1] पजाबमे भी आपकी हकूमत है और वह तो हिदुस्तानमे है। तो हिदुस्तानमे जो पडे है वे तो हिदुस्तानकी हकूमतमे पडे है। उनको हकूमत जैसा कहे करना है। अगर हकूमत कहे कि मारो, हमारे पास तो लश्कर नही है, तो पीछे हकूमत मर जाती है। तब तो पीछे गुडा-राज्य बन जाता है और वह तो हकूमतका काम ही नही है। मै आपको कहना चाहता हू कि हकूमतको आप जितना जोर दे सकते है दे, लेकिन आप अपने हाथमे कानून न ले, बदूक न ले और किसीको मारे नही। इतना करो तो हम जीत जाते है और हमारी किश्ती जो आज डूब रही है वह बच जायगी। और पीछे जो सच है उसके साथ तो हमेशा ईश्वर है ही। ईश्वर हमको कभी छोड नही सकता है। हम अगर ईश्वरको छोड दे, उसको भूल जाए और सच्चा रास्ता छोड दे तो ईश्वर क्या कर सकता है?

: ६८ :

२५ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

यह सब आपत्ति हमारे सिरपर यकायक आ पडी है। हमारी आजादी

---

[1] पूर्वी।

अभी दो-डेढ महीनेकी नही हुई। १५ अगस्तसे १५ सितम्बरतक और आज २५ तारीख है, तो एक महीना १० दिन हुआ। वह आज़ादी अभी तो एक छोटी-सी बच्ची है। एक महीना १० दिनका बच्चा क्या कर सकता है? उसके तो हाथ-पैर चलने चाहिए। एक महीने १० दिनके बच्चेमे वह दिमाग नही हो सकता। लेकिन हम तो तगड़े है और अंग्रेजी सल्तनतसे आजतक लडते आए है, तो हम थोडे ही मुसीबतके सामने झुकनेवाले थे। आजादी के बादकी ही बात करे। यह तो हो नही सकता कि हम तैयार नही थे। आजाद तो हम बन गए; लेकिन हमारे जो लोग है उन्होने आजादीके यह माने मान लिए कि अब हम जो कुछ चाहे वह करे। इसस हिंदकी हकूमतका काम हमने बहुत ही मुश्किल कर दिया है। जो आदमी अपने हाथ साफ नही रखता वह साफ चीज क्या देखेगा और उसकी कहातक कदर करेगा? आज हममे बदमाश आदमी पडे है तो उसमेंसे कौन आदमी किसको कहे कि तू बुरा है? अगर दूसरा उसका जवाब दे कि तू बदमाश है तो इससे वह सवाल और पेचीदा हो जाता है। यह स्वराज्य नही है और न यह स्वराज्य लेनेका रास्ता है। इसलिए मै कहूगा कि हमे तो जितना हो सकता है हमारी हकूमतको कहना चाहिए, उसको हमे मदद देनी चाहिए। मानो कि यह मदद नही मिलती, तो क्या जो पाकिस्तानमे होता है और हो रहा है ऐसा हम भी करने लगे? इससे उनको पाठ मिल जायगा? मै आपको कहूगा कि उनको पाठ ऐसे नही मिल सकता। दुनियाका काम इस तरह नही चलता। कुछ आदमी लडते-भिडते है तो हकूमत कहती है कि तुम आपसमे क्यो लडते हो, पुलिस पडी है उसको कहना चाहिए। पुलिस नही सुनती है तो मजिस्ट्रेटका मकान तो है, आप वहा निवेदन कर सकते है। वहा जो कुछ हो सकता है, वह होगा। एक-दो आदमी आपसमे लडे तब तो मजिस्ट्रेट फैसला करे, लेकिन यहा तो दो बडी कौमे आपसमे लडी। हकूमत क्या करे? यह अंग्रेजी हकूमत नही है जिसको इग्लैडसे हुक्म आते थे। आज तो हकूमत आपकी है। उसके माने हुए कि आप हुक्म निकाल सकते है। आप हकूमतको कह सकते है, यह मत करो। उसे हटाना चाहे तो हटा सकते है। ऐसी आपकी

ताकत है। अगर उस ताकतका आप सच्चा इस्तेमाल न करे तो बडे खतरेमे पड जाएगे और मै कहूगा कि हम आज बडे खतरेमे पड़े है। पाकिस्तान तो खतरेमे पडा ही है और हम भी खतरेमे पडे है। मै इसके जवाबमें यही कहूगा कि हमारी सरकार है, सल्तनत है, हकूमत है, उसको जो करना चाहिए कर रही है। और अगर कुछ बाकी रह गया तो उसको भी करना है। मैने आपको बतला दिया है कि आपका धर्म क्या है, बाकी मै कहना नही चाहता। आप लोगोका धर्म क्या है? मिल-जुलकर रहे, मुसलमानोको दुश्मन न समझे। जो दुश्मन है वे अपने-आप मर जायगे। लेकिन हम एक आदमीको दुश्मन समझे, उसको मारे-पीटें तो उसमे हमारी बुजदिली है, इससे हममे दुर्बलता आती है। जो हिम्मत रखते है, बहादुर है उनका यह काम नही है कि वे किसीसे लडे-भिडे। क्योकि किसीपर हम अविश्वास रखते है, उससे हम लडते है, यह सब व्यर्थ है। लडना क्या था। उसके बीचमे हमारे बीचमे भगवान है। मैने आपको सुनाया था कि यह सब तुम्हारे हाथमे नही (?) है; ईश्वरके हाथमे है। वह हमारी लाज रखे तो रहती है, नही रखे तो नही रहती है। उसको कहो, मनुष्यको नही। जो पतितका उद्धार करनेवाला है, उसको कहो। वह हमारे बीचमे है। वह हमारा उद्धार करनेवाला है। तो हम क्यो किसीसे बिगडे या डरे? भले ही मुसलमान कुछ भी करे, भले ही कितने हथियार रक्खे, भले वह बदमाश बन जाय, बेवफा बने। तो बेवफाईका बदला हकूमत लेगी। हकूमतके लिए तो यह कानून सारी दुनियामे पडा है कि बेवफाको गोली मार-कर उडा देती है। अगर कोई बेवफाई करे तो वह स्टेटके लिए बडा भारी गुनाह हो जाता है। वह एक खूनसे भी ज्यादा गुनाह हो जाता है। इसलिए उनको उडा देते है। तो वे ऐसा करे यह मै समझ सकता हू। लेकिन वे बेवफा हो गए है, ऐसा शक करके उन्हे मारना इन्सानका काम नही है, वह बुजदिलका काम है। मै कहूगा हम ऐसा न करे।

कल मैने कहा और आज फिर कहता हू कि हमारी टूटी-फूटी किश्ती है। उसको कृपा करके तुम ही पार उतार सकते हो। नही तो किश्ती दरियामे पडी है। उसको डूबना है, उसमे एक बडा छिद्र हो

गया है। पानी उसमें फक-फक करके भर जायगा और जो लोग उसमें बैठे वे भी डूब जायगे। भजनमें कहा है कि मेरी टूटी हुई किश्ती है उसको हे प्रभु, तू कृपा करके पार उतार। यह बिलकुल ठीक बात है कि हमारी ऐसी टूटी हुई किश्तीको भगवान ही पार उतारेगा। लेकिन हमें प्रयत्न करना चाहिए। अगर किसी जगहपर किश्ती टूट गई है तो हमारे पास जो सामान हो सकता है वह लेकर उसमे पानी भरने न दे। पानी भर जाता है तो मैंने देखा है कि जितने जोरसे पानी अदर आता है उतने ही जोरसे उसे निकाल फेकते हैं। तब छिद्र होते हुए भी वह नय्या चलती है, लेकिन कब चल सकती है जब ईश्वरका उसमे हाथ हो। ईश्वर कृपा करें तो वह नय्या चलनेवाली है और वह पार उतर जाती है, नही तो डूब जाती है। इसलिए मैं कहूगा कि मनुष्यको प्रयत्न करना चाहिए और ईश्वरका सहारा रहना चाहिए।

दिल्लीमें आग भभक रही है, दूसरी जगह हिंदुस्तानमे आग लग रही है, हर जगह आज आग जल रही है तो हमारा धर्म हो जाता है कि हम उसको मिटा दें, उसपर पानी डाले, नही तो वह आग बुझ नही सकती। हमारा पहला काम यह हो जाता है कि हम लोगोको समझाए। उनको, आप लोगोको, सबको मैं वही चीज समझाता हू। जब-तक मुझमें सास है, मैं सारी दुनियाको वही चीज़ कहनेवाला हू। हिंदुस्नान इतना आलीशान मुल्क, आज बिलकुल एक स्मशान-सा हो गया है। ऐसा हैवान हो गया है।

मुझको तजुर्बा है और मैं कहता हू कि हमारी पुलिस, मिलिटरीको लोगोका सेवक बनकर रहना है, लोगोका अमलदार बनकर नही। अमलदारीका ज़माना चला गया। मेरा तो उसूल यह है कि मुहब्बतसे काम लेना चाहिए। अगर हम ऐसा कहेगे कि हिंदू मिलिटरी है, पजाबी मिलिटरी है, हिंदू पुलिस मुसलमानको कटवा देगी—यह सब मैं सुनता हू तो मुझको दुःख भी होता है, हँसी भी आती है। अगर यह बात सच्ची है तो मैं समझता हू कि पुलिस-मिलिटरी दोनो हिंदुस्तानको दबा देगी और हिंदुस्तानकी किश्ती डूब जायगी। आज तो हमारी मिलिटरी है। मैं ऐसा नही मानता कि अंग्रेज सब निकम्मे है। मगर अंग्रेज़

तो उसमेंसे काफी चले गए हैं, अफसर लोग हैं। माना कि वे सब निकम्मे हैं। मैं तो ऐसा मान नहीं सकता, मगर ऐसा है तो वे जा सकते हैं। माना कि पाकिस्तानने मिलिटरी कोई गंदा काम करे तो क्या हिंदुस्तानने जो मिलिटरी है वह भी गंदा काम करे? वहांकी पुलिस गंदा काम करती है तो यहांकी पुलिस भी गंदा काम करे? मैं आपको कहना चाहता हूं और उसका नतीजा बतलाता हूं। सब ऐसे बने तो हमारा हिंदुस्तान बिलकुल खुवार हो जायगा और हमारी आजादी जो एक महीना १० दिनकी है वह दो महीने भी नहीं चल सकेगी। ऐसा हम न करें। ऐसा न करनेके लिए हमें क्या करना चाहिए? हमको बहादुर होना चाहिए। किसीसे न डरें। सिर्फ भगवानसे हम डरें। भगवानसे हम प्रार्थना करें कि जो हमारी किश्ती है उसको पार उतार दे। हमारी और उसकी शर्त यह हो जाती है कि पाकिस्तानमें कुछ भी हो, दूसरे कुछ भी करें, हमें साफ रहना है। हम दिल शुद्ध रक्खें। अगर ऐसा नहीं करते तो पीछे हम राक्षस बनेंगे, यह समझनेकी बात है। मुसलमान कहीं भी हों, सारी दुनियामें वे कुछ करें, उससे हमें क्या पड़ा है? हम तो अपने हिंदुस्तानको स्वच्छ रक्खें, शुद्ध रक्खें, सहिष्णु रक्खें। मुसलमानोंको हिंदुस्तानका वफादार बनना है। अगर वे वफादार नहीं रहते हैं तो वे शूट[1] होते हैं। हम थोड़े ही गोली मार सकते हैं? वह हमारा काम नहीं। लेकिन अगर साबित हो जाता है कि उन्होंने हिंदुस्तानकी बेवफाई की है तो उनके लिए एक ही इलाज है कि उनको गोलीसे शूट किया जाय या फांसीपर चढ़ाना होगा। दूसरा तरीका नहीं। यह शर्त है उन लोगोंके लिए जो हिंदुस्तानमें रहते हैं। मुसलमान तो हमारे भाई हैं, मुसलमानोंका तो सब घर-बार यहां पड़ा है। इसलिए हमको समझ लेना चाहिए कि जो यहां रहना चाहे वे खुशीसे रहें। हमको एक-दूसरेका डर न हो। मैं तो आपको कहूंगा कि आप विश्वास रखिए; क्योंकि विश्वाससे विश्वास बन सकता है और दगाबाजीसे दगाबाजी। तो विश्वासको बढ़ाते रहो।

---

[1] गोली मारना।

: ६६ :

२६ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

यह जो चल रहा है वह न सिख-धर्म है, न इस्लाम है, न हिंदू-धर्म। सबको थोडा-थोडा हम जानते है। ऐसा कोई धर्म रह सकता है कि जो न करनेका काम करे? गुरु नानकसे सिख पथ चला। गुरु नानकने क्या सिखाया है? वे कहते है कि ईश्वरको तो बहुत नामसे हम पहिचानते है, उनकी बयानमे अल्लाह आ जाता है, रहीम आ जाता है, खुदा आ जाता है, सब धर्मोमे यह है। नानक साहबने भी यह यत्न किया कि सबको मिला देगे। कबीर साहबने भी वही कहा। वह जमाना चला गया। यह हमारे लिए दु खकी बात है।

आज एक भाई मेरे पास आ गए--गुरुदत्त। वे बडे वैद्य है। अपनी कथा सुनाते-सुनाते वे रो दिए। उन्होने यह कबूल किया कि तुम्हारी शिक्षा यह थी कि मुझे वहा मर जाना था, लेकिन उसकी हिम्मत मुझमे,नही थी। उन्होने कहा कि 'मैने तुम्हारा सदा सम्मान किया है और मै समझता आया हू कि जो तुम बताते हो वही सच्ची बात है। लेकिन सच्ची बातके मुताबिक चलना दूसरी बात है। सच बात है कि वह मुझसे नही बना। अभी मुझसे कहो तो मै--वापिस चला जाऊ।' मैने कहा कि अगर हम समझे, हमको बिलकुल साबित हो जाता है कि पाकिस्तान गवर्नमेटसे हम कभी इन्साफ नही ले सकते है--वह अपने-आप कबूल नही करते कि उन्होने कुछ गुनाह किया है--अगर उनको आप समझा न सके तो आपकी कैबिनेट[1] है, बडी कैबिनेट है, उसमे जवाहरलाल है, सरदार पटेल है, दूसरे अच्छे आदमी पडे है, वे भी उनको समझा न सके कि ऐसा मत करो, तो आखिर लडना होगा। हम आपसमे दोस्ताना तौरसे तय कर ले। क्यों न ऐसा कर सके? हम हिंदू-मुसलमान कलतक दोस्त थे तो क्या आज ऐसे दुश्मन बन गए कि

---

[1] मन्त्रिसभा।

एक दूसरेका भरोसा ही नही करते ? अगर आप कहे कि भरोसा नही ही करनेवाले है तो पीछे दोनोको लडना पडेगा। लॉजिक[1] बताती है जिसके पास फौज रहती है, पुलिस रहती है और जिनको उनके मारफत काम करना पडता है वह ऐसा न करे तो क्या करे। अगर यही करते है कि वे पाकिस्तानमे, एकको मारते है तो हम दोको मारेगे, तो कौन किसका रहेगा ? अगर हमको इन्साफ लेना है तो हम यह समझ ले कि यह मेरा और आपका काम नही है। वह हमारी हकूमतका काम है। हकूमतको कहो वह तो हमारी मददके लिए पड़ी है। हमे हमला नही करना है। लेकिन लड़नेके लिए तैयार रहे, क्योंकि लड़ाई जब आती है तो हमे नोटिस देकर नही आती है। किसीको लड़नेके लिए आगे कदम बढाना नही है लेकिन अगर कोई कदम बढ़ाता है तो पीछे दोनो हकूमतोंका सत्यानाश हो जाता है। लड़ाई कोई मामूली चीज नही है। मै आखिर कबतक यह बताऊंगा। अगर दोनोके बीच समझौता नही हो सकता तो हमारे लिए दूसरा कोई चारा नही। पीछे जितने हिंदू है वे लड़ते-लड़ते बरबाद हो जायं, या मर जाय तो मुझे इसमे कोई दुःख नही। लेकिन हमे इन्साफका रास्ता लेना है। मुझे कोई परवाह नही है कि सब-के-सब मुसलमान या हिंदू इन्साफके रास्तेमे मर जाते है। पीछे जो ४॥ करोड़ मुसलमान है अगर यह साबित होता है कि वे तो फ़िफ्थ कॉलमिस्ट है, पंचम स्तंभ है तो उन्हे तो गोलीपर जाना है, फांसीपर जाना है, इसमे मुझे कोई संदेह नही है। तो जैसे उनको जाना है वैसे हिंदूको, सिखको जाना है। अगर वे पाकिस्तानमे रहकर पाकिस्तानसे बेवफाई करते है तो हम एक तरफ़से बात नही कर सकते। अगर हम यहां जितने मुसलमान रहते है उनको पंचम स्तंभ बना देते है तो वहां पाकिस्तानमे जो हिंदू, सिख रहते है क्या उन सबको भी पंचम स्तंभ बनानेवाले है ? यह चलनेवाली बात नही है। जो वहां रहते है अगर वे वहां नही रहना चाहते तो यहां खुशीसे आ जायं। उनको काम देना, उनको आरामसे रखना हमारी यूनियन सरकारका परम फर्ज हो जाता है।

[1] तर्कशास्त्र।

लेकिन ऐसा नही हो सकता कि वे वहा बैठे रहे और छोटे जासूस बनें, काम पाकिस्तानका नही, हमारा करे। यह बननेवाली बात नही है और इसमे मै शरीक नही हो सकता। मेरे पास कोई जादूकी लकडी नही है, तलवार नही है। मेरे पास एक ही बात रही है, ईश्वरका नाम लेना, ईश्वरका काम करना। उससे हमारे सब काम निबट जाते है। यह साधन मेरे ही पास थोडे है, यह आपके पास भी है, और जो छोटी लडकी खड़ी है उसके पास भी है। जो जादू है वह ईश्वरके पास पड़ा है। ईश्वरकी कृपा न हो तो मै क्या करनेवाला हू ? लेकिन इतना समझ सकता हू मै तो बहुत वर्षोसे, ६० वर्ष हो गए, बस लडनेवाला हू, तलवारसे नही, बल्कि सत्य और अहिसाके शस्त्रसे। आज भी वह शस्त्र हमारे पास है, लेकिन वह मेरी अकेलेकी शक्ति नही। अगर आप सब मेरा साथ न दे तो मै बेकार हो जाता हू।

हमको जिस शक्तिसे यह आजादी मिली है उसी शक्तिसे हम उसे रखनेवाले है। इस शक्तिसे हमने अग्रेजोको हरा दिया। बम-गोलोसे नही हराया। लेकिन जो कुछ हमारी शक्ति रही वह निःशस्त्र थी, उससे हमने उनको हरा दिया। हिंदू हो, सिख हो, पारसी हो, क्रिस्टी हो अगर हिंदुस्तानमे बसना चाहते है तो उनको हिंदुस्तानके लिए लडना है और मरना है। सब हिंदुस्तानी अपने देशके लिए लडेगे तो हमारे पास लश्कर हो या न हो, हमे कोई ताकत नही हरा सकती और न हटा ही सकती है। उन्होने कहा है वे हिंदुस्तानके वफादार रहेंगे हम उनका विश्वास करे और दिलसे करे। याद रखें कि 'सत्यमेव जयते' सत्यकी जय होती है। सत्य हमेशा जय पाता है। 'नानृतम्' अर्थात् झूठ कभी नही। यह महान् वाक्य है। इसमे हमारे धर्मका निचोड़ है। उसको आप कठ कर ले, दिलमे रख ले। तो मै कहूगा और जोरोसे कहूगा कि अगर सारी दुनिया हमारा सामना करे तो हम खड़े रहनेवाले है, हमको कोई नही मार सकता है। हिंदू-धर्मका कोई नाश नही कर सकता। अगर उसका नाश हुआ तो हम ही करेगे। इसी तरह इस्लामका हिंदुस्तानमे नाश होता है तो पाकिस्तानमे जो मुसल-मान रहते है वे कर सकते है, हिंदू नही कर सकते है।

: १०० :

२७ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरा खास वैद्य कौन है वह मै आपको बतला दू ? वह मेरे लिए भी अच्छा है और आपके लिए भी अच्छा है। आज मेरा वैद्य, मनसे, वचनसे और कर्मसे राम है, ईश्वर है, रहीम है । वह वैद्य कैसे बन सकता है ? एक भजन सुनाया।—'दीनन दुखहरन नाथ' दुखमे—सब दुख आ जाते है, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक जितने दुख एक आदमीको भुगतने पडते है। शरीरके जितने दुख है उनका हरण करनेवाला राम है, यह भजनमे कहा है। सो मैने समझ लिया कि सबसे बडा अचूक इलाज या उपचार है रामनाम। जो लोग मेरे पास आ जाते है उनके लिए मेरे पास तो दूसरी दवाई ही नही है। हा, रामनाम है। पीछे थोडी मिट्टी ले लो, पानीका उपचार कर लो। मै जानता हू कि जिसके हृदयमे रामनाम अकित हो गया है उसको तो मिट्टी भी नही चाहिए और पानीका उपचार भी नही। जिदा रहते है तो जिदा रहेगे, मर जायगे तो भले मर जाय। दो घोड़ो-पर कोई सवारी नही कर सकता। अगर मुझको रामनाममे विश्वास है तो मुझको उसीपर कायम रहना चाहिए। उससे डरे तो मरे। राम तो तारणहार है। जो मनुष्य रामनामको अपने हृदयमे अकित करता है उसको मरना है ही कहा। यह शरीर क्षणभगुर है। आज है, कल नही, अभी है दूसरे क्षणमे नही। तो इसका मै अहकार करू ? नाशका समय आ जानेपर उसको जिदा रखनेकी चेष्टा करना वह व्यर्थ है। उस मनुष्यका क्या होगा जो शरीरपर इतना अहकार करता था ? नानक गुरु बडे गुरु हो गए है। उनके पीछे जितने गुरु आए उन्होने भजन-कीर्तन लिखे तो सही, लेकिन आखिरमे उन्होने गुरु नानक-का नाम दिया। यह हमारी हिंदुस्तानकी सभ्यता है। मै ऐसा मानता हू कि बहुतसे देशोमे ऐसा होता होगा। कुछ भी हो, मै तो यहा हिंदुस्तानकी जो सभ्यता है उसकी ही बात कर सकता हू।

मीराबाई बडी भक्त थी। बहुत भजनोके अतमे मीराका नाम आता है। उसने अपना नाम नही दिया, लेकिन अपने भजनोमें मीराका शब्द लगानेसे मीराके भक्तोको सतोष मिला। वह बडी खूबसूरत चीज है। कहते है कि अर्जुनदेव बहुत बडे गुरु हो गए है और कवि भी थे। वे लिखते है—"कोई बोले रामनाम, कोई खुदाई, कोई सेवे गोसइया कोई अल्लाह।" यह देखने लायक बात है, यह गुरुग्रथमे दिया है। आज जो सिखोके बारेमे कहा जाता है वह तो नानक गुरुकी जो शिक्षा थी उसको दबानेकी बात है। ऐसी चीजोसे गुरुग्रथ साहिबकी प्रतिष्ठा बढ नही सकती, सिख भी बढ नही सकते। कुछ सिख भाइयोने ऐसे सादे भावमे मुझसे बात की। गुरु अर्जुनदेवने ऐसा नही कहा है कि रामके साथ रहीमका क्या मिलना था, कृष्णके साथ करीमका क्या मिलना था? और उन्होने पीछे मुझे और सुनाया कि कोई जावे तीर्थ और कोई हज जाय, तो सब एक है। कोई पूजा करे कोई सिर नवाए, पूजा कोई मदिरोमे करता है और कोई अपना शरीर है वह ईश्वरके नामपर झुका लेता है। पीछे कहते है कि कोई पढे वेद, कोई किताब। किताबके माने कुरानशरीफके है। कोई नीला कपड़ा पहनता था कोई सफेद। मुसलमान नीला कपडा पहनता है और जो खासा हिंदू रहता है वह सफेद पहनता है। पीछे कोई कहे तुर्क, कोई कहे हिंदू। तुर्कके माने मुसलमान है। प्रभु और साहब इनके बीचमे भेद रहा, रहस्य रहा वह जान लेते है। अगर वक्त मिले तो हिंदू भजनोमे, कीर्तनोमेसे इतनी चीजे मै सुना सकता हू कि आप हैरान हो जायगे कि यह हिंदू-धर्म है या सिख-धर्म है। आज हम ऐसा क्यो कहते है कि बस मुसलमानोको यहासे जाना ही है, मुसलमानोको हिंदुओके साथ बसानेकी जो योजना रखी जा रही है वह भूल है और काग्रेसकी यह चौथी भूल है। काग्रेस इसको करे या न करे, लेकिन यह मेरी योजना है और भूल है तो यह मेरी भूल है। दूसरे आते है, वे कहते है कि तू महात्मा कहाका रहा? महात्मा होकर हिंदू-धर्मका नाश करनेमे पडा है। लेकिन मै तो कहता हू कि जो मेरी भूल बतलाते है वह भूल नही है। सही बात यह है कि आज हम दीवाने बन गए है और

दीवानेपनमें उल्टी-सीधी बातें करते है। जब हमारा दीवानापन निकल जायगा तब हम जो सही बात है वह कहेंगे। इसलिए मै कहता हू कि मेरी बात भूल नही हो सकती। जो लोग ऐसा मानते है, कि मै भूल करता हू वे खुद भूल करते है। अगर ४।। करोड मुसलमानोको यहासे निकाल देंगे तो सारा जगत थूकेगा। तब क्या यह कहोगे कि पाकिस्तान क्या कर रहा है? पाकिस्तान अपना धर्म नही पालता, इसलिए मै हिंदुओंको सिखाना शुरू कर दू कि तुम भी धर्म छोडो? यह तो मैने सीखा नही। हम तो अगर यहा जो मुसलमान भाई है इनकी रक्षा कर लेते है और खुद साफ रहते है तो पाकिस्तानमे भी उसका असर होगा। यह मेरा जवाब है।

आज मै सोचता हू और यह समझनेकी बात है कि एक क्रिस्टी बहन उसे आप जानते है, राजकुमारी अमृतकौर, वह तो हेल्थ मिनिस्टर[१] है, जितने लोग कैपोमे पडे है, हिंदू-मुसलमान, सबके लिए वह कुछ करना चाहती है। मगर उसे किसीका सहारा न मिले तो वह क्या कर सकती है? वह पक्षपात तो कर नही सकती। जो कुछ हो सकता है सबके लिए करती है। वह थोडी क्रिस्टी भी है, थोडी मुसलमान भी है, थोडी हिंदू भी, इसलिए उसके सामने सब धर्म एक समान है। वह चली गई और उसके साथ लडकिया भी गई, वे सब तो सेवाके लिए गई थी। सेवामे डर क्या? लेकिन उन्होने मुझको सुनाया कि वहा जो हिंदू, सिख पडे है वे कहते है कि खबरदार, तुम मुसलमानोकी सेवा करनेके लिए जाती हो तो यहासे भागना होगा। जब मैने यह सुना तो हँस दिया। वह कहनेकी बात थी, कुछ करना थोडे ही था। लेकिन आखिरमे तो जो बेचारे मुसलमान पडे है या थोडे क्रिस्टी पडे है, वे कोई मारधाड करनेवाले थोडे ही है। कहासे मारधाड करेंगे? उनके पास है क्या? उनकी तो आज दुर्दशा है। उन्हे धमकी क्या देना था? इसलिए मैने सोचा कि आपको यह कह जिससे हम सावधान बने और ऐसी बाते न करे।

आखिरमे जो मै कहना चाहता हू वह यह है कि मैने लडाईकी

---

[१] स्वास्थ्यमंत्रिणी।

बात की थी तो समझ-बूझकर की थी। लेकिन हमारे अखबारनवीस है उनका काम है बातको बढाना। उन्होने हेड लाइन[1] दी कि गाधी तो लडाई करना चाहते है। कलकत्तेसे तार आता है कि गाधी भी लडाईकी बात कहते है। क्या लडाई होगी? मैने जो बात कही वह तो यह है कि मेरे मनमे स्वप्नमे भी, ख्वाबमे भी लड़ाईकी बात हो नही सकती। क्या आखिर मै एक ऐन मौकेपर अपना धर्म छोड दूगा? मेरा धर्म तो अहिंसा है। मैने तो कभी लडाई नही की और न किसीको लडना चाहिए। जो काम हमे करना है वह लडकर हम कैसे कर सकते है? मैने तो बतलाया है कि अगर पाकिस्तान गुनाह करता है और हिंदुस्तान भी गुनाह करता है, क्योकि दोनो हकूमते अलग हो गई, आजाद हो गई, तो एक हकूमत दूसरी हकूमतसे इन्साफ करवाना चाहे तो कैसे करवा सकती है? हा, मिल-जुलकर काम करे तो वह दूसरी बात है। अगर मिल-जुलकर नही कर सकते है तो पच रक्खें। वह भी नही करते तो हम लाचार बन जायगे। यह कहना कि आप मेहरबानी करके आपसमे मिलकर कोई फैसला करे, अगर वह नही कर सकते तो पच रक्खे और अगर वह भी नही करते है तो हम लाचार बन जायगे और लडाई होगी, क्या लडाईकी हिमायत करना है? मुझे तो हिंदुस्तान-को यही कहना है, और पाकिस्तानको भी यही कहना है कि आपसमे मिल-जुलकर फैसला करे या पच रक्खे। लेकिन पाकिस्तानवाले कहे कि नही, 'हम तो लडकर लेगे हिंदुस्तान' तो मैने कल सुनाया कि अगर ऐसा गुमान रक्खे तो यहा हिंदुस्तानकी हकूमत लडेगी नही तो क्या करेगी? अगर हकूमतका चार्ज मेरे पास दे तो मेरे पास तो कोई मिलिटरी नही है, न कोई पुलिस है, मेरा तो रवैया दूसरा है। मगर उसमे तो मै अकेला हू, मेरा साथ कौन देगा? जो हकूमत आपकी है, जो सल्तनत आपकी है वह जब ऐन मौका आएगा तो जो कुछ कर सकती है सो करेगी। मै तो एक ही बात कहता रहूगा। मगर अहिंसाको अगर लोग नही समझते है तो मै किसको सुनाऊ?

---

[1] सुर्खी।

: १०१ :

२८ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

सभामे कोई ऐसा आदमी है जिसे कुरानकी खास आयते पढनेपर एतराज हो? (सभाके दो आदमियोंने विरोधमे अपने हाथ उठाए। गाधीजीने कहा—) मै आपके विरोधकी कदर करूगा, हाला कि मै जानता हू कि प्रार्थना न करनेसे बाकीके लोगोको बडी निराशा होगी। अहिसामे पक्का विश्वास रखनेके कारण इसके सिवा दूसरा कुछ मै कर नही सकता, फिर भी यह कहे बिना नही रह सकता कि आपको अपना विरोध करनेवाले इतने बडे बहुमतकी इच्छाओका अनादर नही करना चाहिए। आपका यह बरताव हर तरहसे अनुचित है। मै आगे जो बात कहूगा, उससे आपको यह समझ लेना चाहिए कि किसीके बहकावेमे आकर आपने जो गैर-रवादारी दिखाई है, वह उस चिडचिडेपन और गुस्सेकी निशानी है जो आज सारे देशमे दिखाई देती है, और जिसने मि० विन्स्टन चर्चिलसे हिदुस्तानके बारेमे बहुत कडवी बाते कहलवाई है। आज सुबहके अखबारोमे रूटरद्वारा तारसे भेजा हुआ मि० चर्चिलके भाषणका जो सार छपा है, उसे मै हिदुस्तानीमे आपको समझाता हू। वह सार इस तरह है :

"आज रातको यहा अपने एक भाषणमे मि० चर्चिलने कहा—'हिंदुस्तानमे जो भयकर खूरेजी चल रही है, उससे मुझे कोई अचरज नही होता।

"उन्होने कहा—'अभी तो इन बेरहमीभरी हत्याओ और भयकर जुल्मोकी शुरुआत ही है। यह राक्षसी खूरेजी वे जातिया कर रही हैं, ये जुल्म एक-दूसरीपर वे जातिया ढा रही है, जिनमे ऊची-से-ऊची सस्कृति और सभ्यताको जन्म देनेकी शक्ति है और जो ब्रिटिश ताज और ब्रिटिश पार्लियामेटके रवादार और गैर-तरफदार शासनमे पीढियोतक साथ-साथ पूरी शातिसे रही हैं। मुझे डर है कि दुनियाका जो हिस्सा पिछले ६० या ७० बरससे सबसे ज्यादा शात रहा है, उसकी आबादी भविष्यमे सब जगह बहुत ज्यादा घटनेवाली है। और,

आबादीके घटावके साथ ही उस विशाल देशमे सभ्यताका जो पतन होगा, वह एशियाकी सबसे बडी निराशापूर्ण और दु खभरी बात होगी'।"

"आप सब जानते है कि मि० चर्चिल खुद एक बडे आदमी है। वे इग्लैडके ऊचे कुलमे पैदा हुए है। मार्लबरो-परिवार इग्लैडके इतिहासमे मशहूर है। दूसरे विश्व-युद्धके शुरू होनेपर जब ग्रेट ब्रिटेन खतरेमे था, तब मि० चर्चिलने उसकी हकूमतकी बागडोर सभाली थी। बेशक, उन्होंने उस समयके ब्रिटिश साम्राज्यको खतरेसे बचा लिया। यह दलील गलत होगी कि अमेरिका या दूसरे मित्र-राष्ट्रोकी मददके बिना ग्रेट ब्रिटेन लडाई नही जीत सकता था। मि० चर्चिलकी तेज सियासी[1] बुद्धिके सिवा मित्र-राष्ट्रोको एक साथ कौन मिला सकता था? मि० चर्चिलने जिस महान् राष्ट्रकी लडाईके दिनोंमे इतनी शानसे नुमाइदगी की, उसने उनकी सेवाओकी कदर की। लेकिन लडाई जीत लेनेके बाद उस राष्ट्रने ब्रिटिश द्वीपोको, जिन्होने लडाईमे जन-धनका भारी नुकसान उठाया था, नया जीवन देनेके लिए चर्चिल-सरकारकी जगह मजदूर-सरकारको तरजीह देनेमे कोई हिचकिचाहट नही दिखाई। अग्रेजोने समयको पहचानकर अपनी इच्छासे साम्राज्यको तोड देने और उसकी जगह बाहरसे न दिखाई देनेवाला दिलोका ज्यादा मशहूर साम्राज्य कायम करनेका फैसला कर लिया। हिदुस्तान दो हिस्सेमे बँट गया है, फिर भी दोनो हिस्सोने अपनी मरजीसे ब्रिटिश कामनवेल्थके मेंबर बननेका ऐलान किया है। हिंदुस्तानको आजाद करनेका गौरव-भरा कदम पूरे ब्रिटिश राष्ट्रकी सारी पार्टियोने उठाया था। इस कामके करनेमे मि० चर्चिल और उनकी पार्टीके लोग शरीक थे। भविष्य अग्रेजोद्वारा उठाए गए इस कदमको सही साबित करेगा या नही, यह अलग बात है। और इसका मेरी इस बातसे कोई ताल्लुक नही है कि चूकि मि० चर्चिल सत्ताके फेरबदलके काममे शरीक रहे है, इसलिए उनसे उम्मीद की जाती है कि वे ऐसी कोई बात नही कहे या करे, जिससे इस कामकी कीमत कम हो। यकीनन आधु-

---

[1] राजनीतिक।

निक इतिहासमे तो ऐसी कोई मिसाल नही मिलती, जिसकी अग्रेजोके सत्ता छोडनेके कामसे तुलना की जा सके। मुझे प्रियदर्शी अशोकके त्यागकी बात याद आती है। मगर अशोक बेमिसाल है और साथ ही वे आधुनिक इतिहासके व्यक्ति नही है। इसलिए जब मैने रूटरद्वारा प्रकाशित किया हुआ मि० चर्चिलके भाषणका सार पढा, तो मुझे दुख हुआ। मै मान लेता हू कि खबरे देनेवाली इस मशहूर सस्थाने मि० चर्चिलके भाषणको गलत तरीकेसे बयान नही किया होगा। अपने इस भाषणसे मि० चर्चिलने उस देशको हानि पहुचाई है, जिसके वे एक बहुत बडे सेवक है। अगर वे यह जानते थे कि अग्रेजी हकूमतके जुएसे आजाद होनेके बाद हिदुस्तानकी यह दुर्गति होगी, तो क्या उन्होने एक मिनटके लिए भी यह सोचनेकी तकलीफ उठाई कि उसका सारा दोष साम्राज्य बनानेवालोके सिरपर है, उन 'जातियो' पर नही जिनमे चर्चिल साहबकी रायमे 'ऊचीसे ऊची संस्कृतिको जन्म देनेकी ताकत है।' मेरी रायमे मि० चर्चिलने अपने भाषणमे सारे हिदुस्तानको एक साथ समेट लेनेमे बेहद जल्दबाजी की है। हिदुस्तानमे करोडोकी तादादमे लोग रहते है। उनमेसे कुछ लाखने जगलीपन अख्तियार किया है, जिनकी कि कोई गिनती नही है। मै मि० चर्चिलको हिदुस्तान आने और यहाकी हालतका खुद अध्ययन करनेकी हिम्मतके साथ दावत देता हू। मगर वे पहलेसे ही किसी विषयमे निश्चित मत रखनेवाले एक पार्टीके आदमीकी हैसियतसे नही, बल्कि एक गैरतरफदार अग्रेजकी तरह आए, जो अपने देशकी इज्जतका किसी पार्टीसे पहले खयाल रखता है और जो अग्रेज सरकारको अपने इस काममे शानदार सफलता दिलानेका पूरा इरादा रखता है। ग्रेट ब्रिटेनके इस अनोखे कामकी जांच उसके परिणामोसे होगी। हिदुस्तानके विभाजनने बेजाने उसके दो हिस्सोंको आपसमे लड़नेका न्यौता दिया। दोनो हिस्सोको अलग-अलग स्वराज देना, आजादीके इस दानपर धब्बे-जैसा मालूम होता है। यह कहनेसे कोई फायदा नही कि दोनोमेसे कोई भी उपनिवेश ब्रिटिश कामनवेल्थसे अलग होनेके लिए आजाद है। ऐसा करनेसे कहना सरल है। मै इसपर और ज्यादा कुछ नही कहना चाहता। मेरा इतना कहना यह बतलानेके

लिए काफी होगा कि मि० चर्चिलको इस विषयपर ज्यादा सावधानीसे बोलनेकी जरूरत क्यो थी। परिस्थितिकी खुद जाच करनेके पहले ही उन्होने अपने साथियोंके कामकी निंदा की है।

आप लोगोमेसे बहुतसोने मि० चर्चिलको ऐसा कहनेका मौका दिया है। अभी भी आपके लिए अपने तरीकोको सुधारने और मि० चर्चिलकी भविष्यवाणीको झूठ साबित करनेके लिए काफी वक्त है। मै जानता हू कि मेरी बात आज कोई नही सुनता। अगर ऐसा नही होता और लोग उसी तरह मेरी बातोको मानते होते, जिस तरह आजादीकी चर्चा शुरू होनेसे पहले मानते थे, तो मै जानता हू कि जिस जगलीपनका मि० चर्चिलने बडा रस लेते हुए बढा-चढाकर बयान किया है, वह कभी नही हो पाता और आप लोग अपनी माली और दूसरी घरेलू मुश्किलोको सुलझानेके ठीक रास्तेपर होते।

: १०२ :

मौनवार, २९ सितम्बर १९४७

(लिखित सदेश)

सुनता हू कि मेरे भाषणमे पाकिस्तान और यूनियनमे लडाईकी शक्यताके जिक्रसे पश्चिममे शोर-सा हो गया है। मै नही जानता कि अखबारवालोने बाहर क्या रिपोर्टे भेजी है। किसी बयानका सार बनानेमे मानी बदल जानेका खतरा रहता है। १८९६ मे दक्षिण अफ्रीकाके बारेमे मैंने हिंदुस्तानमे कुछ लिखा था। उसका छोटा-सा सार दक्षिण अफ्रीकाके अखबारोमे छपा। नतीजेमे मेरी तो जान ही जानेवाली थी। सार इतना गलत था कि मुझे मार-पीट करनेके बाद २४ घटोके अदर वहाके गोरोका गुस्सा पश्चात्तापमे बदल गया। उन्हे अफसोस हुआ कि एक बेगुनाह आदमीपर उन्होने बिना कारण जुल्म किया। यह कहानी याद करनेका मेरा मतलब इतना ही है कि किसीपर जो उसने नही कहा या नही किया, उसकी जिम्मेदारी न डाली जाय।

मैं दृढतासे कहना चाहता हू कि मेरे किसी भाषणमेसे यह अर्थ नही निकाला जा सकता कि मैंने लडाईको उत्तेजन दिया है या लडाईकी हिमायत की है। क्या लडाईका नाम लेना ही गुनाह है ? गुजरातमे एक वहम है कि अगर किसी घरमे सापका नाम लिया जाय तो चाहे किसी बच्चेके मुहसे ही वह क्यो न निकला हो, साप निकलकर रहता है। मै उम्मीद रखता हू कि हिंदुस्तानके आम लोगोमे लडाईके वारेमे ऐसा कोई वहम नही है।

मेरा यह दावा है कि आजकी परिस्थितिपर अच्छी तरह गौर करके और साफ-साफ कहकर कि किन हालातमे लडाई हो सकती है, मैंने दोनो हिस्सोकी सेवा की है। मेरे कहनेका हेतु लडाई कराना नही था, जहातक हो सके लडाईको रोकना था—मैंने यह बतानेकी कोशिश की है कि अगर लोगोने पागलपनमे लूट-मार, आग लगाना, कत्ल करना वगैरह बद न किया तो उसका अनिवार्य परिणाम लडाई होगा। एकमेसे एक निकलनेवाली चीजोकी तरफ ध्यान खीचनेमे क्या बुराई है ?

हिंदुस्तान जानता है और दुनियाको भी जानना चाहिए कि मैं अपनी पूरी ताकतसे यह कोशिश कर रहा हू कि भाई भाईका गला न काटे। अगर यह न रुके तो उसका परिणाम लडाई ही हो सकता है। जब एक ऐसा इन्सान जो अहिंसाको जिंदगीका कानून मानता है, लडाईका जिक्र करता है तो उसका हेतु लडाईको रोकना ही हो सकता है। मेरी उम्मीद है कि मेरे इन बुनियादी विचारोमे मेरी मृत्युतक फर्क नही आनेवाला है।

: १०३ :

३० सितम्बर १९४७

भाइयो और वहनो,

मेरा ऐसा खयाल है कि हम तो हैवान बन गए है। आज हिंदू और मुसलमान दोनो हैवान वन गए है। कौन किसको कहे कि किसने कम किया और किसने ज्यादा किया। किसने कम मारा और किसने ज्यादा

मारा। उसमे हम नही जा सकते। हकूमतको वहासे शरणार्थियोको बुलानेकी चेष्टा करनी चाहिए, और वह ऐसा दूसरी हकूमतसे मिल-कर ही कर सकती है। वे सब पेचीदगिया पडी है। पेचीदगिया तो है, लेकिन हकूमत बनी है तो वह पेचीदगिया रफा करनेके लिए है। हकूमत-के जो अपने मातहत[1] रहते है उसे उनकी हिफाजत करनेका धर्म पालन करना है और नही तो हकूमत छोड देना है। इसमे मुझे तनिक भी सदेह नही है। हमारी हकूमत आज तो ऐसी ही है कि जिसको हम बना सकते है और उसको मिटा सकते है। इसका नाम डेमोक्रेसी[2] है। लोगोको खुद ऐसा होना चाहिए कि जो काबूमे रहते है, जो सयममे रहते है, नियमन क्या चीज है उसे जानते है, पालन करते है। ऐसा न करे तो पीछे वे निकम्मे बन जाते है। हमको अगर अपने धर्मपर कायम रहना है तो यह सीख लेना चाहिए। हमारे बच्चोको जबसे समझ आ जाती है तबसे उनको यह समझाना है। आप उनको ऐसी तालीम दे कि धर्म तुम्हारे दिलमे है, उसकी रक्षा मै नही कर सकता हू। मै तो पिता हू, लेकिन पिताको अपने लडकोको, अपनी लडकियोको सिखाना है। मैने तो सिखाया है कि अपने धर्मकी रक्षा खुद करो। मेरा लडका एक जनूबी[3] अफ्रीकामे पडा है। एक कही शराब पीता है। कहा पडा है, मुझको पता भी नही है। एक बेचारा मुसीबतसे अपनी रोटी कमा लेता है। वह नागपुरमे पडा है। एक लडका यहा पडा है। वह मुसीबतसे कमाता है ऐसा तो नही। तो क्या उन सबके धर्मका ख्याल मै करू? मै तो करता नही हू। और क्यो करू? वे बडे हो गए है। अगर छोटे हो तो उनके धर्मकी रक्षा मै कर सकता हू। वह भी कैसे? लडकेको सिखा दिया कि अगर सचमुच तेरा हिंदू धर्म है तो तुझमे उसके लिए मरनेकी ताकत होनी चाहिए, मारकर तू नही बच सकता। मानो कि लडका है उसके पास एक लाठी है, दूसरेके पास रिवाल्वर पडी है तो रिवाल्वर-वाला लाठीवालेको मार डालेगा। ऐसे, धर्मकी रक्षा नही हो सकती।

---

[1] नीचे; [2] जनतंत्र; [3] दक्षिण।

क्यो नही हो सकती? लाठीवाला लडका मारा गया। उसका रिश्ते-दार आया। रिवाल्वरवाला लड़का एक है। एकसे दो नही बन सकता है। वह एक रिवाल्वर लाता है। या एक ब्रेनगन और स्टेन-गन लाता है तो सामनेके लोग १० स्टेनगन लावेगे। उसको कहेगे, बोल इस्लाममे आता है या नही, या क्रिस्टी बनता है या नही, नही तो देख हम १० आदमी है, तेरे हाथमे जितने हथियार पडे है वे सब बरबाद हो जायगे। बोल, जल्दी कर, नही तो हम तुझे शूट कर देगे। तो वह डरके मारे कहेगा कि आप मुझे मजबूर करते है, मगर मेरा धर्म तो ऐसा है कि वह अपनी देहसे मुझे प्यारा है। धर्मका पालन करना उसके माने है कि हम ईश्वरके बने। प्रह्लादके साथ यही हुआ। वह तो रामका नाम लेता था। पिताने कहा, तू रामका नाम लेता है, छोड़ दे इसे। तो वह कहता है कि मै दूसरा नाम नही लूगा। इसपर एक भजन है, कितना सुदर है। प्रह्लादने पाटीपर लिखा है रामनाम और गुरु लिखाता है दूसरा। तो कहता है कि मेरी पाटीपर रामका ही नाम लिखा जा सकता है, दूसरा नाम मेरे पास नही है। वह बड़ा मीठा भजन है। प्रह्लाद कहता है कि रामनामके सिवा उसकी कलम कुछ लिख ही नही सकती। कहा तो यह जाता है कि वह १२ वर्षका लडका था। १२ वर्षके लडकेने अपने बापका सामना करके अपने धर्मकी रक्षा की। कैसे धर्मकी रक्षा की उसको छोड़ता हूं। उसे सब हिंदू जानते है। लेकिन बात यह है कि प्रह्लाद अपने धर्मकी रक्षा अपने आप कर सका। ऐसे हजारो दृष्टात हर मजहबमे पड़े है। तो हमारे लड़के-लड़किया है, कोई लडकीको ऐसा मानकर बैठे कि वह हमेशाके लिए अबला है तो मै कहता हू कि जगत्मे कोई अबला है ही नही, सब सबला है। जिसके दिलमे अपने धर्मकी चोट पडी है वे सब सबल है, वे दुर्बल नही है। इसलिए मै कहूगा कि हम पहली तालीम अपने लड़के-लडकियोको यह दें कि वे अबल नही है। बच्चेका धर्म बच्चेके पास है। हमारे भाई जब आते है मै उनको कहता हू कि हकूमत जितना कर सकती है करे, लेकिन अगर आप ऐसा मानते होगे कि हकूमत कुछ न करे तो सब-के-सब इस्लाममे चले जायगे, तो

यह खराब बात है। हिंदुस्तानमे आज करोडो मुसलमान है, यह बहुत सोचनेकी चीज है, वे है कौन? वे कोई अरबिस्तानसे नही आए। अरबिस्तानसे जो आए वे करोडोकी तादादमे नही थे। करोडोकी तादादमे जो मुसलमान बने वे सब-के-सब हिंदू थे। या कहो कि वे बुद्धिस्ट[1] थे। तो बुद्धिस्ट और हिंदूमे फर्क क्या पडा है? मेरे पास तो कोई फर्क है नही। अफगानिस्तानमे कौन थे, उसका तो सबको पूरा पता होना चाहिए या नही? बादशाह खानने मुझसे कहा कि हम तो पहले बौद्ध थे, पीछे इस्लाममे आए। इसलिए जो हमारी पुरानी सभ्यता थी उसे हम भूल थोडे ही गए है। उसे भूल कैसे सकते है? उन्होने बताया कि हमारे जो देहात पडे है उनके नाम भी पहले सस्कृतमे थे। अब हमने उनका नाम बदल दिया है। यह सब किया, लिबास बदला, सब कुछ बदला, लेकिन जो चीज हममे पडी थी उसको हम नही बदल सकते है। उसे कैसे भूल सकते है? और पीछे यहा मद्रासमे, बगालमे क्या, सब जगह, जिधर जाओ वहा, सब-के-सब आपके हिंदू पडे थे। आप पूछो, जैसा कि मै अपने दिलको पूछता हू, वे खुद इस्लाममे आए। क्यो आए? वे इस्लाममे आए उसके लिए गुनहगार मै। प्रायश्चित्त आपको करना है, मुझको करना है। हा, अगर उन्होने अच्छा काम किया और हिंदू-धर्मसे भी बुलन्द धर्म ले लिया तो पीछे हम भी उसके साथ चले और सब कलमा पढे, इस्लामका नाम ले और इस्लामका जयघोष करे। लेकिन ऐसा हुआ तो नही। तो आज हम किससे मारपीट करेगे? किसको यहासे निकाल देगे? वे हमारे ही लोग है। हमारे ही दादा परदादाके वक्त, चार पीढी कहो, पाच पीढी कहो, छ· पीढी पहले कहो, लेकिन ये हमारे लोग थे। वे सब हिंदू थे और मुसलमान बने। मैने हिंदू-धर्मियोंको सारे हिंदुस्तानमे घूमकर बताया है कि याद रखो आप लोगोमे बड़ी दुष्टता है, आपने अस्पृश्यताको धर्मका हिस्सा मान लिया है, उसका नतीजा क्या हुआ? एक हिस्सा हमारा पचम वर्ण बन गया। वर्ण चार, हमने पाच बनाए और वह पाचवा अति शूद्र कहा

---

[1] बौद्ध।

जाता है। वे हमसे बाहर रहे। उसका खाना भी अलग। हमारे बीचमे नही रह सकते उन्हे तो हमारा गुलाम रहना चाहिए। उसमेसे पीछे वे मुसलमान बने। तो सब ऐसे नही थे। पीछे तो काफी ब्राह्मण भी मुसलमान बने। काफी तादादमे क्षत्रिय भी बने और वैश्य भी बने। लेकिन वे थोडी-थोडी तादादमे ही बने। आज करोडोकी तादादमे जो मुसलमान बन गए है, उसका हिसाब तो यह है जो मैंने बताया। वे अस्पृश्यतामेसे मुसलमान बने। आज हम कितना तूफान हिंदुस्तानमे करते है और कहते है कि मुसलमानोको यहासे मार-पीटकर, किसी-न-किसी तरहसे उनको रज पहुचाकर हटा दे। कहा हटाए, किस जगहसे हटाए इसका कोई खयालतक नही करता। हमको सोचना चाहिए जब हमपर कोई हमला करता है और कहता है कि तू इस्लाममे आ, पीछे हमारा खात्मा हो जाता है। मै मानता हू कि इस्लामने जबर्दस्ती मुसलमान बनाना कभी नही सिखाया। मै तो मुसलमानोके साथ बैठनेवाला हू। मेरे जो दोस्त है वे कहते है कि इस्लाम कभी नही सिखलाता है कि किसीपर जुल्म करके उसको इस्लाममे लाना। वह अपने-आप आना चाहते है तो आए। उसके पास इस्लामकी खूबिया रक्खो। लेकिन यह नही कि फुसलाकर, धोखा देकर, पैसा देकर या जालसे इस्लाममे लाना। लेकिन हमारे जो मुसलमान पडे है वे हमारे सगे भाई है। इसलिए मै कहूगा कि हम सोच-विचारकर काम करे। हम सोचे, वे लोग क्यो इस्लाममे गए? पैसेके लिए। अरे, पैसा कमाना है, कुछ भी करना है, जाओ, कही भी दुनियामे, लेकिन अपने धर्मको साथ लेकर जाओ। अगर वह छोड देते है तो आपने सब कुछ छोड दिया। मै तो आपसे एक ही बात कहना चाहता हू, हम किसी मुसलमानको मारनेकी चेष्टा न करे। मुसलमान मारे तो मारे। मारे तो वह बुरा है, उसको हम बुरा मानेगे लेकिन अगर वह बुरा है तो हम उसके बुरेका बदला बुराईसे कैसे दे। बुराईका बदला भलाईसे दे सकते है। वह शराब पीता है तो हम शराब पीवे? रडीबाजी करता है तो रडीबाजी करे? वह जुवा खेलता है तो हम जुवा खेले? एक आदमी तलवार चलाता है तो

हम भी तलवार चलाए, और बच्चोको मार जाता है तो हम भी बच्चोको मार डाले? वह अगर लडकियोको ले जाता है तो हम उसकी लडकीको ले जाय? तो उसमे और हममे फर्क क्या हुआ? मै तो कोई फर्क नही पाता हू। मै तो कहता हू, "ऐ मुसलमान, हिंदू और सिख, कुछ समझो तो सही, मजहब क्या सिखाता है?" इकबालने कहा— "मजहब नही सिखाता आपसमे वैर करना।" इकबालने ऐसा कहा उस वक्त वह लदनमे रहता था। वह बडा कवि था। उस वक्त वह राउड टेबुल कान्फ्रेसमे आया हुआ था। वहा उसके लिए सबने एक खाना किया तो मुझको भी बुलाया गया। मै चला गया। उसने कहा कि मै तो ब्राह्मण हू। क्यो ब्राह्मण हू? क्योकि मेरे बापदादे ब्राह्मण थे। कहाके? काश्मीरके। मै तो काश्मीरका हू। ब्राह्मण हू और अब मै इस्लाममे आया हू। अभी नही बहुत पीछे हम इस्लाममे आए। तो भी हममे ब्राह्मण खून पडा है, और इस्लामका तमद्दुन[1] हमारेमे पडा है। तो इकबालने कहा "मजहब नही सिखाता आपसमे वैर करना।" पीछे उसने दूसरा-तीसरा भी लिखा है। वह दूसरी बात है। इकबाल तो चले गए, लेकिन हम इतना तो सीख ले कि हमको हमारा धर्म नही सिखाता है कि हम किसीसे वैर करे। इसलिए मै कहूगा कि हम इन्सान बने। इन्सान बने तो हम हिंदुस्तानको ऊचा ले जाते है। आज तो हम हिंदुस्तानको गिरा रहे है। ईश्वर करे कि हम हिदुस्तानको कभी गिराए नही।

: १०४ :

१ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक बहनने मुझको कल खत लिखा है, उसमे वह लिखती है

---

[1] संस्कृति।

कि मै कुछ सेवा करना चाहती हू और मेरे पतिदेव भी कुछ सेवा करना चाहते है। लेकिन हमको कोई बताता नही कि क्या करे। यह प्रश्न बहुत लोग करते है, लेकिन मैने ऐसे प्रश्नोका एक ही जवाब दिया है कि हकूमतका क्षेत्र, सरकारका क्षेत्र, वह तो छोटा रहता है लेकिन सेवाका क्षेत्र बहुत बडा रहता है। इतने दु.खी और पीडित भूखे और नगे है, लबा-चौडा सेवाका क्षेत्र पडा है। इसमे किसीको पूछने-की गुजाइश ही नही रहती है। जो सेवा करना चाहता है वह करे। लेकिन हम ऐसे पगु बन गए है कि हमको किसीको पूछना पडता है। तो मै बता दू क्या करे? आखिरमे देहली स्वच्छताके लिए कितनी मशहूर है? उसमे इतने कैप पडे है और उनमे कितनी स्वच्छता है, वह मै जानता हू। लोग वहा बीमार हो जाते है यहा जितने शिविर पडे है उनमे इतनी गदगी भरी रहती है कि उसका बयान करना बडी मुसीबतका काम है। जहा खून-खराबा हो गया है, वहा भी बस ऐसा ही पडा है। दिल्लीकी म्यूनिसिपैलिटी कभी भी सफाईके लिए मशहूर नही रही। देहली शहरकी म्यूनिसिपैलिटीने शहरको साफ-सुथरा कभी रखा हो और दुनियामेसे लोग आकर देहली देखे और कहे कि अगर कोई स्वच्छ शहर देखना चाहे तो देहली देखे, ऐसी तो बात नही है। सफाई हो तो लोगोके मकान साफ हो, लोगोके पाखाने साफ हो, लोगोके बैठनेका, सोनेका स्थान साफ हो। ऐसे ही लोगोके दिल भी साफ हो। तो अगर दूसरा काम न मिल सके तो मै कहूगा कि इतना काम तो है ही। यह हो सकता है कि वह कैपोमे न जा सके तो और भी जगहे है। कही भी हम पूरी सफाई रखे तो उसका असर सारे दिल्लीके शहरपर पडता है। ऐसा मानकर हर एक आदमी अपने मकानको, और अपने दिलको, आत्माको साफ ही रखे। उसका नतीजा मुझे बतानेकी जरूरत नही। मै तो उस बहनको कहता हू कि अगर वह सचमुच सेवा करना चाहती है, सेवा-भावसे---नामके लिए नही, तो सेवा करनेके लिए आपके लिए बहुत बडा क्षेत्र दिल्लीमे पडा है। उसको मुझे कुछ भी बतलानेकी आवश्यकता नही और अगर यह कर सके, दिल्लीवासियोके लिए दिल साफ हो जाय, यहा जितने आश्रित

लोग आते है वह भी साफ हो सके तो वह तो एक बहुत बुलद काम होगा और वे आदर्श दपति बन जायगे। दूसरे उनकी नकल करेगे।

अभी मेरे पास दो तार आए है। एक लिखता है कि हमको तो ऐसा लगता था कि हिंदुस्तानके लोग बहुत अच्छे है और वहा हिदू-मुसलमान सब मिले-जुले ही रहते है। यह तार मुसलमान भाईका है। अब हिदुस्तानमे क्या हो गया है कि हिदू-मुसलमान एक-दूसरेके साथ बैठ भी नही सकते। एक-दूसरेके साथ झगडते है, एक-दूसरेको काटते है और जगली पशु-से बन गए है। दिल्लीको ले । दिल्लीके हिदू, सिख, मुसलमानोंको अपनाना चाहते है, और उनको भाई बनाकर रखना चाहते है, बशर्ते कि वे अपनी वफादारी यूनियनके प्रति सच्चे दिलसे जाहिर कर दे। जो यूनियनमे रहना चाहते है, मै हू या आप है या कोई भी, ऐसा तो सबको करना ही चाहिए। यह मुसलमानोके लिए खास नही है, सबके लिए है और जरूरी है। फिर मुसलमानोके पास काफी हथियार पडे है, बहुतसे मिल गए है, लेकिन सब नही आए। पुलिसके जरिए तहकीकात चल रही है, लेकिन पुलिसके जरिएसे सब तो आ नही सकते है। तो वे अगर साफ-दिल है और हिंदुस्तानके साथ लडना नही चाहते तो वे हिंदुस्तानके वफादार बने। कोई मुसलमान-ताकत हो और हिंदुस्तानपर हमला करे तो उससे भी लडना चाहिए। यह ठीक है कि अगर उन्हे हिंदुस्तानके साथ लडना नही है, तो उन्हे हथियारोकी क्या जरूरत है? हमारे यहा क्रिस्टी बहुत थोडे है, लेकिन अगर किसी क्रिस्टी-मुल्कके साथ, जर्मनके साथ लडाई छिड गई तो उन्हे उसके साथ हमारी ओरसे लडना होगा और यूनियनका वफादार रहना होगा। यह तो ठीक है कि अगर मुसलमान वफादार है, उनको हिदुस्तानसे लडना नही है तो फिर हथियारोकी जरूरत क्या है? उनको हथियार अपने-आप दे देना चाहिए। यह तो सब ठीक है लेकिन जिस तरह वह बात कही गई उसमे जहर भरा था। आज तो शायद ५० हजार या इससे ज्यादा मुसलमान कैंपोमे पडे है, उनको दिल्लीमेसे हमने निकाल दिया है । कुछको कत्ल कर दिया है। कैसा ही बहादुर आदमी हो, लेकिन मौत तो कोई पसद नही करता। कोई

तिजारत करना चाहता है, कोई और कुछ करना चाहता है, वह सोचते है, चलो, जिंदा तो रहेंगे, यहांसे भाग-भागकर कहा जाए? सो उन्होने पनाह ले ली है पुराने किलेमे, और हुमायूकी कब्रके नजदीक जो बगीचा है उसमे। उनपर पानी आता है, सब कुछ होता है। पूरी डाक्टरी मदद नही मिल सकती है। यह डाक्टर नैयर मुझको वहाकी हालत सुनाती है। चार घंटे रोज उनको देती है। वहा काफी गर्भवती पडी है। उनके बच्चे पैदा कराने है। उसके लिए नर्से चाहिए, कुछ दवा भी चाहिए, सब कुछ चाहिए। वह सब आहिस्ते-आहिस्ते होता है। वे ऐसी हालतमे पडे है तो क्यो पडे है? हिंदू कहते है कि हमने उन्हे निकाल दिया है उसमे हमने कोई गुनाह नही किया। लोग कहते है कि उन्हे हम वापिस भी ला सकते है कब, जब वे देशके लिए वफादार हो जाय। मै कहता हू कि उनको तभी वापिस लाया जा सकता है जब उनके लिए दिल साफ हो जाय। मान लो, वे वफादार भी नही रहे मान लो कि वे असला[1] भी नही देते, क्या इसीलिए हम मुसलमानोको मारे-काटे? चार करोड या साढे चार करोड मुसलमान पडे है, अगर उसमे एक करोड या एक लाख भी कहो, वह अपने घरोमे छुपाकर अस्त्र रखते है तो आपकी मिलिटरी है, पुलिस है, वह सब उनको घरसे बाहर ला नही सकती? आज पुलिस अंग्रेजोके जमानेकी नही है। अगर हम मुसलमानोको मारे, उनके बच्चोको काटे, बहनोको काटे, तो उसका नतीजा क्या होगा, यह आप देख ले। मैने कहा है कि हम गिर गए है। जब १५ अगस्तको आजादीका दिन मनाया गया, हम आजाद बन गए, तब दो-चार दिनके लिए तो सब भाई-भाई होकर रहे, तो उस वक्त कोई अस्त्रोके लिए कुछ नही कहता था। उस वक्त वफादारीकी भी बात नही थी। सब बिलकुल ठीक था। आज सब भूल गए है कि वे भाई है। वे हमे, आपको मारते है, उसमे गुनहगार तो मुस्लिम लीग थी। दिलमे गुस्सा भरा था। लेकिन आजादीका एक तेज आ गया और घडीभर हम भूल गए कि वे कभी दुश्मन

---

[1] लड़ाईके हथियार।

थे। यह नजारा मैंने कलकत्तेमे देखा। सारे हिंदुस्तानभरमे ऐसा हो गया। लेकिन बादमे वह गुस्सा निकल आया और उन्होने कहा कि अब तो हिंदुओ, सिखोंको काटना चाहिए। काटो, निकाल दो। तो अब हम क्या करे। हम और आप मुसलमानोके साथ शर्त करे? हम करे भी तो वह काम हमारा नही है। लेकिन हमारे नामसे हमारे लिए, जो हमारे नुमाइदे[1] हकूमत चला रहे है उनको करना है। वे नही करते तो ऐसा नही है। आप देख ले, वे कोशिश कर रहे है और थोडे-बहुत असला ले भी लिये है। ऊचे पहुचकर हम एकदम नीचे गिर गए और रोज-बरोज गिरते जा रहे है। मैंने कहा है कि दोनो शर्ते भले कायम रखो लेकिन इसके साथ एक और शर्त भी लगा दो तो पीछे आप आरामसे काम कर सकते है। वह शर्त यह है कि हम कानून अपने हाथोमे नही लेगे। उन्हे सजा करना हमारा काम नही था, हम कबूल करते है कि हम बेवकूफ बने। मै मानता हू कि मुस्लिम लीगने पहिले बेवकूफी की, लेकिन एक आदमी घोडेकी सवारी करता है और दूसरा भी सवारी करता है, तो पहिला आदमी घोडेपरसे किसी कारणसे गिर जाता है, तो क्या जो दूसरा घुडसवार है वह भी गिर जाय? पीछे दोनोका नाश हो जाता है। हमे इस तरह उनका मुकाबला क्या करना था? हम मुकाबला करेंगे किस चीजमे? जैसा कि मैंने बतलाया है, जितना ज्यादा भलापन उनमे है उससे ज्यादा हम लाए। लेकिन जितनी दुष्टता उनमे है, उतनी ही दुष्टता हम करेंगे ऐसा मुकाबला करे तो हम दोनो गिरते है। वे बुराई करते है तो इस चीजको हमारी हकूमत दुरुस्त करेगी। हमारी हकूमत देख लेगी कि हमारा कोई भी आदमी पाकिस्तानमे पडा है, हिंदू हो, सिख या क्रिस्टी हो, वह वहा माइनारिटी[2]मे है और उसकी देखभाल अगर पूरी तरह नही होती है, उनको वहा काटते है, उनकी लडकियोको उठा ले जाते है, उनकी जायदाद ले लेते है और उन्हे जबर्दस्तीसे इस्लाममे लाते है तो उसका जवाब हमारी हकूमत देगी। हम कौन जवाब

---

[1] प्रतिनिधि [2] अल्प संख्या

देनेवाले है? जवाब देनेकी कोशिश करके हम जाहिल[१] बन जाते है। हम कभी जाहिल नही बनेगे। यह आजादीकी बडी भारी निशानी है। उसमे हम बिलकुल नापास साबित हुए है। उसका नतीजा क्या हुआ? मेरे दिलमे आता है कि हममेंसे जो सचमुच कातिल बने है, वे कौन है यह तो मैं जानता नही हू, लेकिन है तो सही और वे तजवीजसे काम कर रहे है कि आज इतना खून करे, आज इतने घर जला दे, इतने मकान खाली करवा दे। वे करनेवाले कहा है, यह मैं जानता नही, लेकिन ऐसा होता है तो हम तो गिरते ही है। इसलिए हमको कबूल कर लेना है कि यह हमारी बेवकूफी है। उस बेवकूफीको हम निकाल देगे और पीछे जितने पडे है उनको लाएगे। सल्तनतको और हकूमतको यह देखना है कि जितने लोगोको पाकिस्ताननें ईजा हुई है, जितने तबाह कर दिए गए है उन सबको पाकिस्तान मिन्नत करके बुलावे और जिनकी जायदाद लाहौरमे है, वह जायदाद उनको वापिस मिले। उनके मकान जो ले लिए गए है उनको वापस देना है। कितने बुलद मकानात मैंने देखे है। लडकियोकी कितनी तालीमगाह[२] वहा है। तालीमका जो इंतजाम लाहौरमे रहा, वह हिंदुस्तानमे किसी जगहपर नही रहा। लाहौर तालीमके बारेमे पहिले दर्जेपर था। वह लाहौर आज कहा है? लाहौरको, वहाकी संस्थाओको बनानेमे लाहौरकी हकूमतने हिस्सा नही लिया है, पैसा नही दिया है। पजाबके लोग तगडे है बडी तिजारत करनेवाले है, पैसा पैदा कर लेते है, बडे-बडे बैकर पडे है, वे लोग जैसा पैसा पैदा करनेमे होशियार है वैसे पैसा खर्च करनेमे है। मैंने यह सब आखोसे देखा है। उन्होने इतने मकानात बनाए, इतने कालेज औरतो और मर्दोंके लिए रक्खे और पीछे ऐसे आलीशान अस्पताल बनाए, वे सब उनको वापस करना चाहिए। ५० मील लंबा कारवां आ रहा है, बेहाल पडा है। हकूमतके हाथमे अगर हम अपने दुखका बदला लेना छोड देते तो हम जाहिल नही बनते। यह मैंने बतलाया। मेरे पास विदेशसे मुसलमान भाईका तार आया है। लोग ऐसे क्यो बन

---

[१] मूर्ख [२] शिक्षगालय

गए है, भाई-भाई बने, हम तो मुसलमान है मगर हम नही चाहते है कि आपसमे लडे, इस्लाम ऐसा नही सिखाता। मैंने कहा ही है कि आप लोग जागे। इतना मै कह दू, आप मेरी न माने तो न माने, मगर मै ऐसी चीजोंका गवाह तो नही बनना चाहता हू। मै यह गिरावट देखना नही चाहता हू। मेरी तो यही ईश्वरसे प्रार्थना है कि मुझे इससे पहले उठा ले। अगर हालत न सुधरी तो मेरे दिलमे ऐसा अगार पैदा हो जायगा कि मुझे भस्म कर डालेगा। मेरा दिल कहता है तू यह देखकर क्या करेगा। हिंदुस्तानकी आजादीके लिए तूने अपनी जान कुर-बान करनेकी कोशिश की, जान तो नही गई लेकिन आजादी तो मिल गई। लेकिन आजादीके साथ-साथ तू यह नतीजा देखनेके लिए जिदा रहकर क्या करेगा? तो मेरी तो दिन-रात ईश्वरसे यह प्रार्थना रहती है कि मुझको तू यहासे जल्दी उठा ले। या मेरे हाथमे एक बाल्टी[1] रख दे ताकि उसके मार्फत इस अगारको बुझा दू।

यहा एक अस्पताल है। अस्पतालमे बहुतसे घायल मुसलमान पडे है, सब मुसलमान नही है थोडे हिंदू भी पडे है। उनको घायल और कत्ल करनेकी किसीने कोशिश की। ऐसी कोई पार्टी पडी है, देहातसे आई है। उन्होने बिलकुल एक छापा मारा, दरवाजेसे नही, लेकिन छोटी-छोटी खिड़किया रहती है उसमेसे भीतर घुसे, और चार या पाच मरीजोको कत्ल करके भागे। इससे ज्यादा कोई जहालत[2]की वहशियाना[3] बात मै नही जानता। किसी लडाईमे भी ऐसा नही होता। लडाइयोमे काफी अस्पतालोमे गोलिया चली है लेकिन इस तरहसे तो कभी नही हुआ।

और एक बात सुनाता हू। ट्रेन आती है तो उसमे पाच आदमी एक आदमीको खिडकीमेंसे फेक देते है, जैसे सामान फेक दिया। तो वह तो मर ही जायगा। यह आजकी बात है और अस्पतालका किस्सा वह कलकी बात है या परसोंकी होगी। इसमे शर्मिदा होना किसको है? सिर झुकाना किसको है? आपको, मुझको। जितने हम पडे है हिंदू, उनको।

---

[1] पानी की बाल्टी [2] मूर्खता [3] जंगली

पीछे ऐसा कहते है कि मुसलमान भी ऐसे है। मै वह समझता हू। वहा पश्चिम पजाबमे जो होता है उसका जवाब हकूमत मागे।

: १०५ :

२ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज एक सिख भाई मेरे पास आए थे। उन्होने कहा कि मुझसे किसीने पूछा कि आपने गुरु अर्जुनदेवकी वाणी तो सुनाई, परतु दसवे गुरु गोविंदसिहजीने उसमे तबदीली कर दी, इस बारेमे आप क्या कहोगे? इतिहास सिखाया जाता है कि गुरु गोविदसिह तो मुसलमानोके दुश्मनकी हैसियतसे पैदा हुए। लेकिन ऐसा माननेका कोई सबब नही, क्योकि दसवे गुरु साहबने करीब-करीब वही कहा है जो गुरु अर्जुनदेवने कहा था। गुरु नानककी बात ही क्या। वह तो कहते है कि मेरे नजदीक हिंदू, मुसलमान, सिखमे कोई अतर नही है। कोई पूजा करे, कोई नमाज पढे, सब एक है। एक ब्राह्मण पूजा करता है तो दूसरे धर्मवाला भगवानको कोसता है, ऐसा नही, मुसलमान नमाज पढते है। पूजा और नमाज दोनो एक ही चीज है। मानुस सब एक है, वाणी दूसरी-दूसरी है। गुरु गोविंदसिंहने कहा है कि मानुस सब एक है और एक हीके अनेक प्रभाव है तो पीछे मै माने लेता हू कि हम सब एक है, अनेक है। और देखनेमे तो अनेक भेष है, लेकिन वैसे सब एक है। व्यक्ति तो करोडों है, लेकिन स्वभावसे एक है। गुरु गोविंदसिंहने कहा है, "एकै कान, एकै देह, एकै बैन।" पीछे कहा, "देवता कहो, अदेव कहो, यक्ष कहो, गधर्व कहो, तुर्क कहो" वह सब न्यारे-न्यारे है, वही गुरु गोविंदसिहजी कहते है—"देखत तो अनेक भेष है, उसका प्रभाव एक है।" बैनके माने बाणी है, बाणी तो एक है, जबान एक है। और आतिश[1]

वह एक है। क्या मुसलमानके यहा एक सूरज है और हम और आप लोगोके लिए कोई दूसरा सूरज है? वह तो सबके लिए एक ही है। वह कहते है आब, पानी भी एक है। गगा बहती है तो गगा नही कहती है कि खबरदार, कोई तुर्क हो तो मेरा जल नही पी सकता है, बादलोमेसे जल आता है तब बादल नही कहते है कि मै आता हू पर मुसलमानोके लिए नही, पारसियोके लिए नही, मै तो सिर्फ हिंदुओके लिए हू। यूनियन सरकार हिंदुओके ही लिए हो, ऐसा नही, यह हो नही सकता। कुरान कहो, गीता कहो, पुराण कहो, सब एक ही है, लेकिन लिबास अलग-अलग पहना दिया है। अरबी जबानमे लिखो तो पीछे उसको कहो कुरान है, नागरी लिपिमे लिखो, सस्कृतमे लिखो, मगर समझकर पढो तो चीज एक ही है। तो वह कहते है कि सब एक है, और ऐसा कहकर खत्म करते है। गुरु गोविदसिहने यह सिखाया है। मैने पूछा कि पडितजी, अगर गुरु गोविदसिहजीने, आप कहते है वैसे किया भी हो, तो वह गलत बात थी। जब लडाई होती थी तो हिदू-मुसलमान लडाईमे मरते थे, घायल भी होते थे और जखमी भी, लेकिन जो जिदा होते थे उनको गुरु साहबका एक समझदार शिष्य पानी देनेका काम करता था। उसने मुसलमानोको भी पानी पिलाया, हिंदुओको भी और सिखोको भी। उसने कहा, मुझको गुरु महाराजने ऐसा ही सिखाया है कि तेरे नजदीक न कोई मुसलमान है, न कोई सिख है, न कोई हिंदू है, सब-के-सब इन्सान है और जिसको पानीकी हाजत हो तो उसको पानी देना है। वह ऐसा थोडे ही कहते थे कि अगर कोई हिंदू जखमी हो गया है तो मरहम-पट्टी लगा दे लेकिन अगर कोई मुसलमान जखमी पडा है तो उसको वैसे ही छोड दो। उन्होने पूछा, लेकिन गुरुजी तो मुसलमानोके साथ लडे थे? तो लडे तो सही, लेकिन उन मुसलमानोके साथ लडे जिन्होने इन्सानियत और इन्साफके रास्तेको छोड दिया था, जिन्होने अपने मजहबको छोड दिया था। वह दानी पुरुष थे, निर्लिप्त थे, अवतारी पुरुष थे, उनके लिए मेरे-तेरेका सवाल नही था। लेकिन हा, वह अपनी रक्षा तो करते थे, लडाई करते थे, इसमे कोई शक नही। सिख दावा करे कि नही, हम तो अहिसक है तो वह तो गलत वात होगी। वह कृपाण रखते है,

लेकिन गुरुजीने सिखाया कि कृपाण रक्षाके लिए है, वह कृपाण तो मासूम[1]की रक्षाके लिए है। जो दूसरोको तग करता है उस जालिमके साथ लडनेके लिए वह कृपाण है। कृपाण बूढी औरतोको काटनेके लिए नही है, बच्चोको काटनेके लिए नही है, औरतोको काटनेके लिए नही है, जो निर्दोष बेगुनाह आदमी है उनको काटनेके लिए नही है। कृपाणका तो वह काम नही है। जो गुनहगार है और जिसपर इल्जाम साबित हो गया है कि यह गुनहगार है, पीछे वह मुसलमान हो, कोई भी हो, सिख भी क्यो न हो, उसके पेटमे वह कृपाण चली जाएगी। आप लोग कृपाण जिस तरीकेसे आज खोलते है वह तो जहालतकी बात है। ऐसे लोगोके पाससे कृपाण छीनी जाए तो कोई गुनाह नही माना जायगा, क्योकि उन्होने धर्म तो छोड दिया है, सिखने कृपाणका दुरुपयोग किया है।

आज तो मेरी जन्मतिथि है। मै तो कोई अपनी जन्मतिथि इस तरहसे मनाता नही हू। मै तो कहता हू कि फाका[2] करो, चर्खा चलाओ, ईश्वरका भजन करो, यही जन्मतिथि मनानेका मेरे खयालमे सच्चा तरीका है। मेरे लिए तो आज यह मातम[3] मनानेका दिन है। मै आजतक जिंदा पडा हू। इस-पर मुझको खुद आश्चर्य होता है, शर्म लगती है, मै वही शख्स हू कि जिसकी जबानसे एक चीज निकलती थी कि ऐसा करो तो करोडो उसको मानते थे। पर आज तो मेरी कोई सुनता ही नही है। मै कहू कि तुम ऐसा करो "नही, ऐसा नही करेंगे"—ऐसा कहते है। "हम तो बस हिंदुस्तानमे हिदू ही रहने देंगे और बाकी किसीको पीछे रहनेकी जरूरत नही है।" आज तो ठीक है कि मुसलमानोको मार डालेगे, कल पीछे क्या करोगे? पारसीका क्या होगा और क्रिस्टीका क्या होगा और पीछे कहो अग्रेजोका क्या होगा? क्योकि वह भी तो क्रिस्टी है? आखिर वह भी क्राइस्टको मानते है, वह हिंदू थोडे है? आज तो हमारे पास ऐसे मुसलमान पडे है जो हमारे ही है, आज उनको भी मारनेके लिए हम तैयार हो जाते है तो मै यह कहूगा कि मै तो ऐसे बना नही हू। जबसे हिदुस्तान आया हू मैंने तो वही पेशा किया कि जिससे हिदू, मुसलमान सब

---

[1] निरपराध [2] उपवास [3] शोक

एक बन जाए। धर्मसे एक नही, लेकिन सब मिलकर भाई-भाई होकर रहने लगे। लेकिन आज तो हम एक-दूसरेको दुश्मनकी नजरसे देखते है। कोई मुसलमान कैसा भी शरीफ हो तो हम ऐसा समझते है कि कोई मुसलमान शरीफ हो ही नही सकता। वह तो हमेशा नालायक ही रहता है। ऐसी हालतमे हिंदुस्तानमे मेरे लिए जगह कहा है और मै उसमे जिंदा रहकर क्या करूगा ? आज मेरेसे १२५ वर्षकी बात छूट गई है। १०० वर्षकी भी छूट गई है और ९० वर्षकी भी। आज मै ७९ वर्षमे तो पहुच जाता हू, लेकिन वह भी मुझको चुभता है। मै तो आप लोगोको, जो मुझको समझते है, और मुझको समझनेवाले काफी पडे है, कहूगा कि हम यह हैवानियत छोड दे। मुझे इसकी परवाह नही कि पाकिस्तानमे मुसलमान क्या करते है। मुसलमान वहा हिदुओको मार डाले, उससे वे बडे होते है, ऐसा नही, वह तो जाहिल हो जाते है, हैवान हो जाते है तो क्या मै उसका मुकाबला करू, हैवान बन जाऊ, पशु बन जाऊ, जड बन जाऊ ? मै तो ऐसा करनेसे साफ इन्कार करूगा और मै आपसे भी कहूगा कि आप भी साफ इन्कार करे। अगर आप सचमुच मेरी जन्म-तिथिको मनानेवाले है तो आपका तो धर्म यह हो जाता है कि अबसे हम किसीको दीवाना बनने नही देगे, हमारे दिलमे अगर कोई गुस्सा हो तो हम उसको निकाल देगे। मै तो लोगोसे कहूगा भाई, आप कानूनको अपने हाथमे न ले, हकूमतको इसका फैसला करने दे। इतनी चीज आप याद रख सके तो मै समझूगा कि आपने काम ठीक किया है। बस इतना ही मै आपसे कहना चाहता हू।

: १०६ :

३ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मै देख रहा हू कि हमारे मुल्कमे काफी जगहपर आज सत्याग्रह चलता है। मुझको बडा शक है कि जिस जगहपर वह कहते है कि

सत्याग्रह चलता है वहा सचमुच वह सत्याग्रह है या दुराग्रह है। ऐसा हमारे मुल्कमे हो गया है कि एक चीजका नाम ले लिया, लेकिन काम उससे उल्टा किया। और आज जब कोई भी आदमी, चाहे वह पोस्टआफिसका हो, टेलीग्राफ आफिसका हो, रेलवेका हो या तो देशी राज्यमे हो जिस जगहपर वह सत्याग्रह करनेकी कोशिश कर रहा है इन सबको इतना समझ लेना चाहिए कि यह काम जो वे कर रहे हैं सत्य है या असत्य। अगर असत्य है तो उसका आग्रह क्या करना था और अगर सत्य है तो सत्यका आग्रह हमेशा और हर हालतमे करना ही चाहिए। 'हमको कुछ मिल जाय', इस उद्देश्यसे जो सत्याग्रह करते है वह सत्याग्रह नही हो सकता। वह तो असत्यका आग्रह होगा। सत्याग्रहके लिए मैने बहुत-सी चीजे बतला दी है। दो चीजे तो अनिवार्य बतलाई है। एक तो यह कि जिस चीजके लिए लड़ते है वह सचमुच सत्य है और दूसरे यह कि उसका आग्रह रखनेमे अहिसाका ही उपयोग हो सकता है।

जितने लोग आज सत्याग्रह चला रहे हैं वे समझ-बूझकर काम करे। अगर मूल चीज असत्य है और उसके आग्रहमे जबर्दस्ती की जाती है तो उसको छोड़ना अच्छा होगा। अगर उसमे जहर भरा है, अगर वह दुराग्रह है और असत्य है, जो वह मागते है वह हक उनको मिल नही सकता, तो भी वह मागना शुरू करते है, तो मै कहूगा कि ऐसी चीज मागनेमे अहिसा इस्तेमाल हो नही सकती। वह अहिसा नही हुई; वह तो हिसा हुई। जो आदमी एक असत्य चीज मागता है और पीछे कहता है कि अहिसासे कर लेगा, वह कर नही सकता है।

अगर कैपोको चलानेका काम मेरे हाथमे हो तो कैपोंमे रहनेवालोको मै कहूगा कि कैपोंकी सफाईका काम तो आपको ही करना है। क्या कैंपोमे जो लोग पडे है वे ताश खेलेगे, चौपड़ खेलेगे, जुआ खेलेगे और पडे रहेंगे या तो सोते रहेगे? खाना तो पूरा नही मिलता है पानी नही मिलता है, यह मै जानता हू। तो पीछे मै क्यो काम करूं? ऐसा करते है तो हम ऐबी बन जाते है। वहा कोई ५ या ७ आदमी थोड़े ही है, हजारोकी तादादमे पडे है। कब पहुचेगे अपने घरमे, यह भी पता नही। खाना तो हम उनको देगे, लेकिन उस खानेके लिए वे कुछ काम तो

करे। कम-से-कम सफाई करनेसे शुरू करे, पीछे कह दे कि हम दूसरा भी काम कर सकते है, सूत कात सकते है, बुन सकते है, बढईका काम कर सकते है, लुहारका काम कर सकते है, दर्जीका काम कर सकते है। या तो हम खटीकका काम करे वह निकम्मी चीज नही है। इतने काम हिंदुस्तानमे पडे है। कल वह भले ही करोडपति थे, आज तो करोड चले गए। ऐसा दुनियामे हो जाता है। अब सबको नए सिरेसे काममे जुट जाना ठीक है। कोई कहे कि हम करोडपति थे हम क्यो यह काम करे, तो हमारा काम बिगड जाता है। हम जो काम करना चाहते है वह बन नही सकता। मै बडे अदबसे कहूगा इस तरह हमारा काम चल नही सकता। हर दृष्टिसे जितना काम हमारा चलता है वह तो आदर्श होना चाहिए। उसमे सफाई हो, गदगी बिलकुल नही। लोग पडे है उन्होने अपना सब काम खुद किया है। ऐसा करे तो मै आपको कहता हू कि हमे आज जो तकलीफ हो रही है वह काफी हदतक रफा होनेवाली है। और अगर हम इस तरह काम करनेवाले बन जाते है तो पीछे हमारा गुस्सा भी शात हो जायगा। हमारे दिलोमे जो वैर-भाव पडा है वह भी शात हो जायगा। भलाई तो इसीमे है कि बुरे कामको बुरा समझना और पीछे उसका बदला देना है वह भलाईसे देना। उसका नाम भलाई है। ऐसा नही कि कोई पागल बन जाय, तो हम भी मूरख बन जाय। भलाईकी निशानी यह है कि हम दुष्टताका बदला दुष्टतासे न दे, दुष्टताका बदला हम साधुतासे दे। हमारे मुल्कका तो इसीमे कल्याण है। हम किसीको रज नही पहुचाएगे लेकिन खुद दु खको बर्दाश्त करके दूसरोको सुखी करनेकी कोशिश करेगे। अगर यह किया तो पीछे हिंदुस्तानका तो भला होता ही है आप जगतका भी भला कर सकते है। आज तो हिंदुस्तानकी ओर लोग देख रहे है कि हिंदुस्तान क्या करता है? अभी तो हमारे सच्चे इम्तहानका वक्त आ गया है। आजादी मिली है। अब हम क्या करेगे।

: १०७ :

४ अक्तूबर १९४७

भाइयो और वहनो,

मैं आप लोगोको कैसे मनवा सकूगा कि अगर हम लोग पागल नही वनते तो यह सव जो आज हो रहा है होनेवाला नही था। इसमे मुझको कोई सदेह नही, मान लो कि मुसलमान पागल वने, इसलिए ये शरणार्थी लोग पाकिस्तानसे भागकर आते है। इन्हे वहा चैन मिले तो हिंदू वहासे क्यो भागेगे? पश्चिमी पजावसे क्यो भागेगे? दूसरा पाकिस्तानका हिस्सा है, वहासे भी लोग भाग-भागकर आते है, यह दुखकी कथा है। लेकिन वहासे क्यो हटते है वे, यह समझने लायक चीज है। वहाके लोग जालिम वने है ऐसा हम मान ले, लेकिन उसके सामने क्या हम भी जालिम वन जाय? क्या हम हकूमत अपने हाथोमे ले ले; कानून अपने हाथोमे ले ले कि चलो, वह मारते है तो हम भी मारेंगे, वे बूढोको मारते है तो हम भी मारेंगे, औरतोको मारते है तो हम भी मारेंगे, बच्चोको मारते है तो हम भी मारेंगे, जवानोको मारते है तो हम भी मारेंगे? मैंने बहुत दफा कहा कि यह वहशियाना कानून है। यह कानून चले और साथ-साथ मेरा जीवन चले, तो ये दो काम नही चल सकेंगे। तो आजतक मेरी प्रार्थना ईश्वरसे यही रहती थी कि मुझको १२५ वर्ष जिंदा रख जिससे मैं कुछ-न-कुछ और भी देशकी सेवा कर सकू। और हिंदुस्तानमे खुदाई राज, राम-राज्य, जिसका नाम ईश्वरीय राज्य है, वह स्थापित हो तव मुझको चैन आ सकता है। तव मैं कह सकता हू कि हिंदुस्तान सचमुच आजाद वन गया है। लेकिन आज तो वह ख्वाव-सा[1] हो गया है। रामराज्य तो छोड़ दो, आज तो किसीका राज्य नही। ऐसी हालतमे मेरा-जैसा आदमी क्या करे? अगर यह सव नही सुधर सकता तो मेरा हृदय पुकार करता है कि हे ईश्वर! तू मुझको आज

---

[1] सपना-सा

क्यो नही उठा लेता ? मै इस चीजको क्यो देखता हू ? अगर तू नही उठाता और चाहता है कि मुझको जिदा रहना है तो कम-से-कम वह ताकत तो मुझको दे दे जो मै एक वक्त रखता था। मुझे ऐसा गुमान था कि मै लोगोको समझा सकूगा। लोगोके पास आया और कहा, खबरदार, इस तरहसे न करना, तो वे समझ जाते थे। उनके दिलमे मेरे प्रति इतनी मुहब्बत थी। मै नही कहूगा कि आज मेरे लिए लोगोके दिलमे मुहब्बत कम हो गई है। मगर कम हो या बेशी, उसके पीछे तो अमल होना चाहिए। वह नही है। तो मै कहता हू कि मेरा असर चला गया है। जब हम गुलामीमे थे तब तो मेरा काम अच्छा चलता था, लेकिन अब जब हम आजाद हो गए है, तब मेरा काम नही चलता। जो पाठ मैने प्रजाको उस वक्त सिखाया था मै तो वही पाठ आज भी दे सकता हू। अगर वह पाठ आज आप ले ले तो हम खूब आगे बढ जाते है।

मै कहना तो यह चाहता था कि आप लोगोके लिए अब जाडेके दिन आते है। मेरे लिए तो आप देखते है यह गरम चादर ये लडकिया लेकर आई है कि शायद मुझको ठड लगे। खासी भी है। इस वक्त कम है, सो यह सूती चादर काफी है। लेकिन वे जो यहा कैंपोमे पडे है, पुराने किलेमे पड़े है उनका क्या ? आप कह सकते है कि मुसलमानोको हम क्यो दे ? मै तो ऐसा नही बना हू। मेरे लिए तो मुसलमान भी वही है, सिख भी वही है, पारसी भी वही है, ईसाई भी वही है। मै ऐसा भेद नही कर सकूगा। इन जाडेके दिनोमे उन सबका क्या होगा ? अगर हम यह कहे कि यह तो हकूमतका काम है, हकूमत उन्हे जाडेके दिनोमे कबल दे देगी, तो मै आपको कहता हू कि हकूमत नही दे सकेगी। हकूमत कोशिश तो करेगी, लेकिन आज हमारे पास वह स्टाक कहा है ? हकूमत कबल कहासे निका-लेगी ? छू-मतर करके उनके पास आ जाता हो, ऐसे नही बनते। आज सारे यूरोपमे, अमरीकामे भी वह चीज नही मिलती। हमको वहासे कोई वस्तु भेज नही सकते। कुछ रहम करके कोई भेजे भी तो दस-बीस हजार कबलोसे क्या होगा ? यहा तो लाखो लोग पडे है, ऐसे हर एकको थोडे ही मिल सकते है। मै जितने आप लोग है सबसे

कहूगा कि जाडेके दिनोमे वे सर्दीको बर्दाश्त करते रहे यह ठीक नही। इसके साथ आप अपने सब कबल भी नही दे सकते। लेकिन मैं जानता हू कि हमारे पास बहुतसे लोग ऐसे पड़े है जो अपने लिए कबल रखते है और जितने चाहिए उससे ज्यादा रखते है। दिल्लीमे काफी गरीब पडे है, जिन्हे मुसीबतसे कबल मिलते है। जितने कबल आप बचा सकते है उन्हे दे दे।

मैंने देखा है, मै दिल्लीमे रहा हू और जाडेके दिनोमे रहा हू। मैं समझता हू कि दिल्लीमे काफी गरीब लोग भी पड़े है; लेकिन मैं तो इतना ही कहूगा कि जो ऐसे गरीब नही है, जिनके पास एक कंबलसे काम चल सकता हो, और उनके पास दो हो तो एक मुझे दे दे। इसी तरहसे आप आजसे चीजे देना शुरू करे। आप ऐसा न सोचे कि यहा हकूमत करती है सो आपको कुछ करना नही। ठंड तो शुरू हो गई है; लेकिन अभी बर्दाश्त हो सकती है। लेकिन १७ अक्तूबरके बाद मै वाइसरायके घर गया था, तब वहा आग जलती थी। क्योकि ठड हो गई थी और यहाकी ठड ऐसी होती है कि आदमीकी बर्दाश्तके बाहर हो जाती है। अक्तूबरसे वह जल्दी-जल्दी बढने लगती है और तेज हो जाती है। नवबर, दिसबर, जनवरी, फरवरी यह सब जाड़के खुशनुमा दिन है। जिनके पास खाना है, कपड़ा है, काफी पहनकर चलते है, बड़े बूट पहने है, मोजे पहने है, वह तो जाडेको खुशनुमा कह सकते है, लेकिन जिनके पास नही है उनका क्या हाल होता है उसका मै गवाह हू। आप भी हो सकते है। इसलिए मै कहूगा कि इतना तो हम करे कि जितनेको हम बचा सकते है, बचा ले। जिनके पास जाडेमे पहनने लायक कपडे है, यह भी हो सकता है कि आपके पास ऊनी कपडा न हो, ऊनी कमलिया नही तो लिहाफ तो रहता है, लिहाफ काफी हो जाता है, अगर वह अच्छा हो तो आप लिहाफ भी ला सकते है। चद्दर भी रहती है, जो चद्दर पुराने जमानेकी मोटे कपड़ेकी, मोटे खद्दरकी रहती है वह काफी गरम रहती है, मुझे और कपड़े नही चाहिए। लेकिन यह चद्दरकी शक्लमे ऊनकी हो, लिहाफ हो, या तो मोटी चद्दर पडी हो, उन तीनो चीजोमेसे जो आपके पास आरामसे बच सके,

आप अपने-आप मुझे दे दे। अगर आप भेजना शुरू कर दे तो इत-जाम हो जायगा कि कौन उसका कब्जा लेंगे। मैं आप तो करनेवाला नही हू। ऐसा भी नही होगा कि चीज आ गई तो सब गोदाममे पडी सड जायगी या नालायक आदमीको मिल जायगी। जितनी चादरे आप देगे, जितने ऐसे कपडे आप देगे, मैं आपको इतना कह सकता हू कि वे सब योग्य पुरुष और योग्य स्त्रीके पास जानेवाली है। मैं उम्मीद तो करूगा कि आप मुझको ऐसा न कहे कि यह तो हम हिंदुओके लिए देते है, यह सिखके लिए देते है। इन्सान सब एक है। पीछे कोई न कहे कि इसमेसे मुसलमानोको न देना। यहा काफी मुसलमान तो मारे गए, काफी भाग गए। हमने भगा दिए। जो बाकी रहे है, उनके पास कितनी जायदाद पडी है यह मुझको पता नही। जो मुसलमान हिंदुस्तानमे पड़े है वे भी अगर कबल वगैरह भेजे और कहें कि हम तो मुसलमानोको ही देगे, तो मै मुसलमानोको दे दूगा। लेकिन मैं यह उम्मीद करूगा कि जितने लोग मेरी बात सुनते है और दूसरे जो इस रेडियोकी मार्फत सुननेवाले है, वे सब मुझे परेशान न करे, और कह दे कि हमने तुझको यह चीज कृष्णार्पण[1] की, तो जो उसके लायक है उसको मिल जायगा। इसलिए मेरी उम्मीद है, विश्वास है कि इतना आप करेंगे। तो मै यह कहूगा कि आपने बहुत बड़ा काम किया है। ऐसा न करे कि चलो, जो टूटा-फूटा निकम्मा हो, मैला पडा हो, वह लाकर मुझको दे दे कि मैं धोऊ, रफू करू। मैला कपडा है तो आप धोनेकी कोशिश करे, इतनी अपनेको तकलीफ दे, धोबीको देनेकी कोई जरूरत नही रहती है। आरामसे थोडा पानी तो मिल जायगा, तो उसको अच्छा साफ करके लपेट करके आप मुझे दे दे। तो मुझको बड़ा अच्छा लगेगा।

---

[1] दान।

: १०८ :

५ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो मै अपनी तबियतके बारेमे आपसे कुछ कहू, क्योकि आज भी अखबारोमे मेरी बीमारीकी बाबत कुछ खबर आई है। किसने दी है, मुझको पता नही है। जो डाक्टर मेरे इर्द-गिर्द रहते है, उनकी तो यह खबर दी हुई नही हो सकती। लेकिन बहुत आदमी यहा आते-जाते है, वे देखते है कि मुझे कुछ खासी वगैरह है, थोडा बुखार भी आ जाता है और फिर वे रजका गज बना देते है। ऐसा क्यो? कुछ मेरी तदुरुस्तीके बारेमे लिखे तो, क्योकि मै महात्मा माना जाता हू इसलिए वह चीज सारी दुनियामे फैल जाती है। गाधी मर जायगा तो क्या होगा? सब मरनेवाले है तो गाधीको भी मरना है। कोई अमृत-फल खाकर तो आया नही है। मुझे कुछ दुर्बलता और खासी तो है, पर इसे अखबारोमे देनेसे क्या लाभ? मै यह कहूगा कि जिन्होने यह खबर दी उन्होने न तो मेरा और न किसी अन्यका ही भला किया। आप तो देखते है, मै आता हू बात भी करता हू, इसमे कोई रुकावट नही होती है। हा, थोडी दुर्बलता है, खासी है, लेकिन उसको जाहिर क्या करना था? मेरी इच्छा है कि लोग ऐसा न करे।

दूसरे, मैने तो कल आप लोगोसे कहा था, प्रार्थना की थी कि अगर दे सकते हो, तो गरीबोके लिए, अभी जाडेके दिन आते है, तो कबल दे, रजाई दे, और दूसरी ओढने लायक चीजे हो, उनको भी दे। आज तीन सज्जनोंने कबल भेजे है। उनमेसे दो सज्जन है वे तो यही इर्द-गिर्दमे रहते है। नाम तो मै उनका भूल गया हू। उन्होने दो कबल मुझे भेजे है, अच्छे-खासे है। एक शख्स है, उनका भी नाम तो मै भूल गया हू, उन्होने दस कबल दिए है और वे तो नए ही हो सकते है। वह सब जैसा मैने आपको कहा है, सुरक्षित रखे जा रहे है और जैसा आपको कल कहा था उनका इस्तेमाल योग्य भाई और बहनोको

देनेमे होनेवाला है। मेरी उम्मीद है कि आज अगर आप सब लोग समझ गए है तो जो कोई चीज आप दे सकते है, मुझको दीजिए।

अभी एक तार मेरे पास आ गया है, जिसे कई आदमियोने मिलकर साथ भेजा है। तार मेरे सामने पडा है। उसमे जो लिखा है, वह मुझे अच्छा नही लगता। लिखनेका तो उनको अधिकार है। तार भेजनेवाले लिखते है कि जैसा हिंदुओने किया है यदि वे वैसा न करते तो शायद तुम भी जिंदा नही रह सकते थे। यह बहुत बडी बात हो गई। मुझको जिंदा रखनेवाली कोई ताकत मै मानता ही नही हू, सिवा एक ईश्वरके। वह जबतक चाहता है तबतक मै जिदा हू, और उस वक्ततक मेरा कोई नाश नही कर सकता है। जो मेरे लिए सही है, वह सबके लिए सही है। तो ऐसी बात वे क्यो लिखें? मुझको कहना पडेगा कि लिखा तो मुहब्बतसे है यह, पर मेरा यह विश्वास है कि मुझे या किसीको भी जिंदा रखना सिर्फ भगवानके हाथोमे है।

वे पीछे लिखते है कि याद रक्खो, (कुछ नाम भी दिये है उनको मै छोडना चाहता हू) तुम बहुत भोले हो, जो अबतक मुसलमानोका विश्वास करते हो। कोई एक नही जो मुझको ऐसा बतलाते है, सब मिलकर मुझको सुनाते है कि यहा मुसलमान ऐन मौकेपर दगा देनेवाले है; वे पाकिस्तानका साथ देनेवाले है और वे पाकिस्तानके लिए हिंदुस्तानके सामने लडनेवाले है। वे लिखते है कि १०० मेसे ९८ मुसलमान दगाबाज है। मुझको कहना पड़ेगा मै यह नही मानता। यहाके साढे चार करोड मुसलमान तो ज्यादातर देहातोमें पडे है, और जो थोडे मुसलमान शहरोमे पड़े है, वे हममेसे ही मुसलमान बने है, वे सब-के-सब दगाबाज नही हो सकते। तो क्या सब मुसलमान दगाबाज है, यह मानकर प्रत्येक मुसलमानके घरमे प्रवेश करो और उन्हे तबाह कर दो? हर एकके पास हथियार है, उनको छीन लो? उनके कहनेका बिल्कुल ऐसा ही मतलब हो जाता है कि उनको तबाह करो और सबके सबको यहासे हटा दो। मै उन भाइयोको कहूगा कि यह तो कायरोकी बातें है। मै तो एक ही चीज कहूगा कि मान लो यदि मुसलमान ऐसे है तो वह चीज हकूमतको साबित कर दो।

हकूमतको कहो कि इसका फैसला करे। ऐसा ही करे जैसा कि वे भाई कहते है तो उससे तो हम दोनों दुश्मन बनेंगे और फिर उसका नतीजा होगा दोनोंकी लडाई। दोनों लडते है तो पीछे दोनोका नाश होनेवाला है या यह कहो कि हम पाई हुई आजादीका नाश करेंगे। कोई हिंदू दूसरोके मातहत जाकर अपना हिंदूपन नही रख सकता है। अंग्रेज थे तो हम उनकी गुलामीमें सोचते थे कि हमारे धर्मकी रक्षा होती है, वह भूल थी।

जब मै बच्चा था तो मैने एक अधे कविकी, जो एक अच्छे कवि थे, कविता पढी थी, जिसके अर्थ यह होते है 'खैर, अब तो वैर गया, हमे आरामसे रहना है, अंग्रेज आ गए है।' एक जमाना था कि हम अंग्रेजोपर मुग्ध हो गए थे और सोचते थे कि इनके नीचे हम सुरक्षित है। वह भूल सुधारो। अब यदि हम ऐसे बुजदिल बने कि साढे चार करोड मुसलमानोको मार भगानेकी सोचे तो उससे तो हम कायर सिद्ध होगे। ऐसी बातोसे हम अपने धर्मको कभी भी बचा नही सकेंगे। मै तो ऐसा नही मानता कि हिंदू, मुसलमान जन्मसे एक दूसरेके दुश्मन पैदा हुए है। और अगर ऐसे बने तो पीछे हिंदुस्तान कैसे जिंदा रह सकता है? क्या दोनो, हिंदू और मुसलमान गुलाम बननेवाले है और दोनो अपने धर्मको भूल जानेवाले है? यह कैसे हो सकता है? हमारा-आपका तो धर्म हो जाता है कि हम इस सबधमे सब बाते सरकारको पहुचा दे।

आज मै आपको कहूगा कि मै तो मन्त्रियोके साथ बैठता-उठता हू। पडितजी तो हमेशा करीब-करीब रोज मेरे पास आते है, सरदार भी करीब-करीब रोज आते रहते है, हाला कि उतना नही जितना पडितजी आते है। लेकिन दोनो आते है, दोनो मित्र है, दोनो मेरे साथ रहते है। दोनोने बडी खूबीसे मेरे साथ लडाई भी की है। तो मै ऐसा नही कहना चाहता हू कि मै उनको कुछ कह नही सकूगा। सरकारको हिंदू, मुसलमान, पारसी और ईसाई सबकी रक्षा करनी है, तभी वे कह सकते है कि वे सच्चे काग्रेसी है। हिंदू-सभा है—तो उसका काम तो हिंदू-धर्मकी रक्षा करना है। सिखो और

हिंदुओके धर्मकी रक्षा करना, बुराइयो और बदियोको हटाना, उनका अपना काम है। दूसरा थोडे ही कोई मिटानेवाला है? हम दूसरोंको कहे कि आप मेहरबानी करके हमारा धर्म बचा दे, तो इस तरह धर्म बचता नही है। मेहरबानीसे कही धर्म बचता है? यदि हम कहे कि हमारा धर्म बचाओ तो वह तो धर्मका सौदा हुआ। हमे जान प्यारी है इसीलिए हम ऐसा कहते है। हम कभी एक चोला पहिने, कभी दूसरा, तो यह भी कोई धर्म होता है? इस कारण मै कहूगा कि ये जो तार देनेवाले है, उन्होने कोई बडा सयानापन नही किया है।

वह चीज कहकर मै आपको दूसरी बात बतलाना चाहता हू। हमारे चर्चिल साहबने दुबारा भी वही चीज कही है और बढाकर, बनाकर कही है। यह मुझको चुभता है। क्योकि मै तो अग्रेज लोगोका दोस्त हू। मुझको किसीके साथ दुश्मनी तो है ही नही। उनमे बहुत भले लोग पडे है और अभी उन्होने भारतको आजादी देकर बहादुरीका काम किया है। पीछे उसका कुछ भी असर हो, मुझे उसकी परवाह नही। चर्चिल साहब उसपर हमला करते है और कहते है कि जैसा उन्होने पहले भाषणमे भी कहा था, "मै तो हमेशासे मानता आया हू। हिंदोस्तानी ऐसे है, वैसे है"। अगर हमेशा मानते आए है तो अब पीछे उसको दोबारा दुहरानेकी क्या जरूरत थी?

लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होने केवल अपनी पार्टीके लिए ही मजदूर सरकारपर हमला किया है, ताकि लेबर पार्टीकी मिनिस्ट्री मिट जाय और फिर उनकी पार्टीकी हकूमत हो जाय। इग्लैडमे आज मजदूरोका राज्य है। वह एक छोटा-सा टापू है, लेकिन मजदूरोकी शक्तिपर वह इतना बढा है और अपने उद्योगके कारण दुनियामे मशहूर हो गया है। जो मजदूर सरकार अब वहा बनी है, उसको हटा दो, यह चर्चिल साहबकी मशा है। और उसको हटा देनेके लिए वे कहते है कि इस लेबर मिनिस्ट्रीने बेवकूफी की है, उसने यह भद्दा काम किया, एम्पायरको[1] मलियामेट कर दिया, हिदुस्तान जो एम्पायरमे था,

---

[1] साम्राज्य।

उसको गवा दिया और अब बर्माका भी वही हाल होनेवाला है जो हिदका हुआ। अब मै कैसे कहू चर्चिल साहबको कि आपका इतिहास बहुत देखा, बर्मा किस तरहसे आप लोगोने लिया, हिदुस्तानमे कैसे आपने अग्रेजोंकी हकूमत कायम की, उस इतिहासपर कोई आदमी अभिमान कर सके यह मै नही मानता हू।

हम आज जो कर रहे है, वह वहशियाना काम करते है, और हमारे हाथमे जो हकूमत आई है, उसको मिटानेकी चेष्टा कर रहे है। मै कबूल करता हू कि आज आपके नजदीक मै एक नाकिस[1] आदमी बन गया हू, मेरी आपके पास आज नही चलती, लेकिन मै आपको कहू कि अगर चर्चिल साहबकी बात अग्रेजोने मान ली, जिसको कि कजरवेटिव[2] पक्ष कहते है, उसने मजदूरोको हराया और मजदूरोके राज्यको शिकस्त दे दी तो वह बुरा होगा। मै आपको कहूगा कि हम किसी शक्तिके मार्फत आजाद हुए है, ऐसा सारी दुनिया कहती है। वह शक्ति कैसी है? उस वक्त सत्ता मजदूरवर्गके हाथमे थी, सोशलिस्ट हकूमत उस वक्त इग्लैडमे थी और उसने हमे आजादी दी। सोशलिज्म[3]को कौन मिटा सकता है? उसको न तो चर्चिल साहब मिटा सकते है और न कोई और ही मिटा सकते है। उनका राज्य दूसरी तरहसे चल ही नही सकता, यह तो मै देख चुका। लेकिन माना कि अग्रेजी प्रजाने अपनापन गवा दिया और मजदूरोकी शिकस्त हो गई और चर्चिल साहबके हाथ फिर सत्ता आ गई, तो क्या वे हमे अल्टीमेटम दे देगे कि, नही, हम तुमको फिरसे गुलाम बनानेवाले है, हमला करनेवाले है? दे तो सही। किस तरहसे वे दे सकते है, मेरी अक्ल काम नही करती। कैसे भी हम हिंदुस्तानी बुरे हो, भले हो, हम बदमाश बन जाते है, हम दीवाने बन जाते है, तो भी उन्ही लोगोने मुझको सिखाया है कि आजादी सबसे बडी चीज है। ऐसी बडी आजादीमे जितनी गलतिया हो वह सब करनेका तुमको हक है। आजादीका मतलब यह नही है कि हम भले बने, तब तो आजादी मिलेगी और अगर लुटेरे रहते है, बुरे रहते है तो

---

[1] खराब; [2] कट्टरपंथी; [3] समाजवाद।

आजादी न मिले। यह कहाकी बात है? अंग्रेजोके लिए तो वह कानून नही हुआ। कोई भी प्रजा-जितनी दुनियामे पडी है, इनके लिए यह कानून नही था और अगर ऐसा रहता कि जो भला रहता है, उसके पास ही आजादी रह सकती है, तो आज सारी दुनियामे जो हो रहा है, उसे देखकर कही भी आजादी कैसे रह सकती है? अंग्रेजोने ही हमे सिखाया है कि आजादी गुलामीकी अपेक्षा भली है। एक अंग्रेज लेखक कहता है कि हम चाहे शराब पिए पड़े रहे पर आजाद रहे, परंतु गुलाम होकर सुधरना स्वीकार नही। पर हम उनकी बुराइया ले लेते है, भलाइया नही।

हिंदुस्तानमे तो सात लाख देहात पड़े है, सात लाख देहातके लोग तो आज पागल नही हो गए। सात लाख देहातके लोग अगर पागल बन जाते है तो हिंदुस्तानका नक्शा बदल जायगा। लेकिन सात लाख देहात हिंदुस्तानके है, वे सब-के-सब पागल बन जाय, लेकिन आजाद बने रहे तो मुझको बड़ा मीठा लगेगा। लेकिन चूकि वे पागल बन गए है, इसलिए कोई हिंदुस्तानपर बद-नजर करे और कब्जा लेनेकी कोशिश करे तो वह चलनेवाली चीज नही है।

मैंने कह दिया है और आज फिर कहता हू कि अगर हम पागल रहे तो उसका नतीजा यह आनेवाला है कि अंग्रेज तो अब यहा आनेवाले है नही, वे अब यहा नही आ सकते है, उन्होने एक चीज उगल दी तो पीछे दुबारा थोडे ही वापिस लेनेवाले है, मगर दुनियाके सामने तो सब है, वह तो देखेगी कि क्या हो रहा है? दुनिया उसको यह नही करने देगी और न हिंदुस्तान ही करने देगा। लेकिन दूसरी जो ताकते है, जिसको यू० एन० ओ० कहते है, जिसके पास बडी ताकत पडी है, यदि वह यहा जाच-पडतालके लिए आए तो हम उसे रोक नही सकेंगे। पीछे हम ऐसे पागल बन जाते है कि अपनापन छोड देते है तो हम आजादीको खोकर उनको दे देगे।

मैं चाहे बिलकुल अकेला रह जाऊ, लेकिन मेरी जबान तो यही सुनाएगी कि खबरदार, सारी दुनिया भी आए, वह हमारा बिलकुल नाश करना चाहती है, तो कर सकती है, लेकिन हमको दुबारा गुलाम बनाकर

नही रख सकती। मेरी तो ऐसी प्रतिज्ञा है कि हम दुबारा गुलाम न बने। उस प्रतिज्ञाका आप पालन करेगे, उसको सच्चा बनाना वह तो आप लोगोका काम है, मेरे अकेलेका नही है। मै अकेला तो भारतको बचा नही सकता। मेरा क्या ठिकाना है? कौन जाने कबतक चलता हू। ईश्वर मुझे उठा लेता है तो हिंदुस्तानका क्या होनेवाला है? मै अकेला थोडे ही हिंदुस्तानको बचा सकता हू। वह तो ईश्वरपर निर्भर है और अगर वह साथ रहेगा और उसकी मेहरबानी रही तो हिंदुस्तान बच सकेगा। जबतक मै जिदा हू मै समझता हू कि कोई ऐसा नही कर सकता कि चलो, हिंदुस्तानमे कुछ तूफान हो रहा है, इसलिए उसको गुलाम बनाओ और कब्जा करो। ईश्वर मेरी इस प्रतिज्ञाका पालन आपकी मार्फत कराए! यही मेरी इच्छा है।

: १०६ :

मौनवार, ६ अक्तूबर १९४७

(लिखित सदेश)

जिन लोगोको हमारी खुराककी समस्यापर जानकारी होनी चाहिए वे डा० राजेद्रप्रसादके निमत्रणपर, उनको खुराकके बारेमे, सलाह देनेके लिए यहा जमा हुए है। इस जरूरी मामलेमे यदि कोई भूल हो जाए तो उसका परिणाम यह हो सकता है कि उस भूलसे, जिससे बचा जा सकता है, लाखो आदमी मर जाए। हिंदुस्तानके, भूखे रहनेसे, करोडो नही तो लाखोकी सख्यामे, कुदरती तथा इन्सानके बनाए हुए दुष्कालसे मरनेसे कुछ अपरिचित नही है। मै कहता हू कि किसी अच्छे सगठित समाजमे हमेशा पानीकी कमीसे और अनाजकी फसल बिगडनेसे होनेवाली आपत्तिसे बचनेका कामयाब इलाज पहलेसे ही सोच रखा जाता है। इस बातकी चर्चा करनेका यह मौका नही है। इस वक्त तो हमे यही देखना है कि आया[1]

---

[1] अथवा।

हम मौजूदा खुराककी भयकर परिस्थितिसे बचनेकी उम्मीद रख सकते है या नही ।

मेरा खयाल है कि हम ऐसी उम्मीद रख सकते है। पहला पाठ जो हमे सीखना चाहिए वह है खुदकी मदद और स्वाश्रय। अगर हम इस पाठको हजम कर ले तो तुरंत ही अपनेको विदेशी मुल्कोकी मददपर भरोसा रखनेसे और आखिरमे दिवालियापनसे बचा लेगे। यह बात कुछ अभिमानके तौरपर नही कही जा रही, बल्कि यह तो एक हकीकत है। हमारा कोई छोटा मुल्क नही है जो अपनी खुराकके लिए बाहरकी मददपर निर्भर रहे। हमारी जनसख्या तो चालीस करोड है जो एक बर्रे-आजमके[1] हिस्सेमे रहते है। हमारे देशमे बाकी दरिया है और भाति-भातिकी फसले होती है और असख्य मवेशी है। यह तो हमारा ही कसूर है कि यह मवेशी हमारी जरूरतसे भी कम दूध देते है, मगर उनमे इतनी शक्ति आ सकती है कि वह हमारी जरूरतके मुताबिक दूध दे सके। यदि गत चद सदियोमे हमारे देशको भुलाया न गया होता तो वह न सिर्फ अपने लिए पूरी खुराकका प्रबध कर सकता बल्कि वह बाहरके देशोको भी कुछ खुराक पहुचा सकता, जिसकी कमी दुर्भाग्यवश पिछली लडाईके कारण तमाम ससारमे हो गई है। इसमे भारतवर्ष भी शामिल है। मुसीबत घटनेके बजाय बढती ही जा रही है। मेरी तजवीजका यह अर्थ नही है कि यदि कोई देश हमे खुशीके साथ खुराक देना चाहे तो हम उसे नामजूर कर दे। मेरे कहनेका आशय तो केवल यही है कि हम भीख मागते न फिरे। इससे हममे गिरावट आती है। इसके अलावा यह खयाल करो कि खुराकको एक जगह पहुचानेमे कितनी कठिनाइया आती है। हमे यह भी डर रहना चाहिए कि विदेशसे जो अनाज आवेगा वह शायद अच्छा नही होगा। हम इस बातको नजर-अदाज नही कर सकते कि मनुष्य-स्वभाव हर मुल्कमे कुदरती तौरपर कमजोर है। वह कही भी न पूर्ण हुआ है न पूर्णताके नजदीक पहुचा है। अब हमे यह देखना है कि हमे विदेशी सहायता क्या मिल सकती है। मुझे बताया गया है कि जरूरतका केवल तीन

---

[1] महाद्वीप।

फी सदी बाहरसे आ सकता है। यदि यह बात सच है और मैंने कई निपुण जानकारोसे इस सख्याकी सच्चाई मालूम कर ली है, तो विदेशोपर भरोसा रखनेके कोई मानी नही रहते है; क्योकि विदेशोपर थोडा-सा भी भरोसा रखे तो इसका परिणाम यह आ सकता है कि हमे अपनी हर एक इच जोती जानेवाली जमीनपर जितना ध्यान देनेको है, वह नही देगे। अगर हम स्वाश्रयी बननेका निर्णय करे या धन पैदा करनेवाली फसलकी बजाय खुराककी फसलपर ध्यान दे तो जो जमीन बेकार पड़ी है उसे हमे तुरत काममे लाना चाहिए।

खुराकके केंद्रीकरणको मै नुकसानदेह मानता हू। विकेंद्रीकरणसे काले बाजारपर बडी आसानीसे आघात पहुचता है तथा खुराकको इधर-उधर ले जानेमे जो समय और पैसा खर्च होता है वह बचता है। इसके अलावा किसान तो हिंदुस्तानका अनाज और दाले पैदा करता है। वह जानता है कि अपनी फसलको चूहो वगैरहसे कैसे बचाए। अनाज जब एक स्टेशनसे दूसरे स्टेशनपर जाता है तो चूहोको नुकसान करनेका मौका मिलता है। देशको करोडोका नुकसान उठाना पडता है और लाखो टन अनाजकी कमी पड जाती है जिसकी हर एक छटाक हमारे लिए कीमती है। अगर हर एक हिंदुस्तानी खुराक पैदा करनेकी, जहा-जहा वह पैदा किया जा सकता है, जरूरत महसूस करने लगे तो बहुत मुमकिन है कि हम यह भूल जाए कि देशमे अनाजकी कमी है। मैने अनाज अधिक पैदा करनेके लिए सुदर आकर्षक विषयको पूरी तरह बयान नही किया; लेकिन जितना मैंने बयान किया है उससे बुद्धिमान इस बातकी ओर ध्यान देगे कि हर एक आदमी इस शुभ काममे किस प्रकार मदद दे सकता है।

अब मै यह बताना चाहता हू कि जो तीन फी सदी अनाज हम बाहरसे शायद हासिल कर सकते है यह घाटा कैसे सहें। हिंदू हर एकादशीको या पद्रह रोज बाद उपवास या अर्ध-उपवास करते है, मुसलमान और दूसरे लोगोको ईस बातकी मनाही नही है कि कभी-कभी भोजनका त्याग कर दे, खासकर जब कि लाखो भूखोके लिए उसकी जरूरत है। अगर तमाम मुल्क इस बातकी खूबीको महसूस कर ले तो हिंदुस्तान विदेशी अनाजकी कमीको जरूरतसे ज्यादा मिटा देगा। मेरा अपना खयाल है

कि राशनिगका अगर कुछ लाभ है भी, तो वह बहुत कम है। यदि काश्तकारोको उनकी मर्जीपर छोड दिया जाय तो वे अपनी पैदावारको बाजारमे ले आएगे और हर एकको अच्छा खाने लायक अनाज मिलने लगेगा जो आजकल आसानीसे नही मिलता। मै खुराककी कमीके इस मुख्तसिर[1] बयानको खत्म करता हुआ प्रेसीडेंट ट्रूमैनकी सूचनाकी ओर ध्यान दिलाता हू जो उन्होने अमेरिकन लोगोको दी है कि उन्हे रोटी कम खानी चाहिए, ताकि यूरोपवालोके लिए अनाज बचा सके, जिसकी उन्हे सख्त जरूरत है। प्रेसीडेंटने यह भी कहा है कि इस त्यागसे अमेरिकन लोगोकी सेहत खराब नही हो जायगी। मै प्रेसीडेंट ट्रूमैनको उनके पारमार्थिक बयानके लिए बधाई देता हू। मै नही मान सकता कि इस दानके विचारके पीछे अमेरिकाको पैसा बनानेका खयाल रहा होगा। मनुष्यको उसके कार्यसे जाचना चाहिए न कि उस भावनासे जिससे वह प्रेरित हुआ है। केवल परमात्मा ही मनुष्यके हृदयको जानता है। यदि अमेरिका भूखे यूरोपके लिए खुराकका त्याग कर सकता है तो क्या हम अपने ही लिए यह छोटा-सा त्याग नही कर सकते ? अगर बहुतको भूखे मरना ही है तो कम-से-कम हम इतना श्रेय तो ले कि हमने अपनी मदद करनेके लिए जो बन सकता था वह किया। यह मेहनत हमारे देशको ऊचा उठाती है।

हमे उम्मीद करनी चाहिए कि डा० राजेद्रप्रसादने जो कमेटी बुलाई है वह जबतक कोई अमली[2] हल इस खुराककी स्थितिको सुधारनेका न निकाल लेगी, काम न छोड़ेगी।

: ११० :

७ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल जो मैने कहा उसमे तो एक शब्द भी, आज जो हिंदू-मुसलमानके

---

[1] संक्षिप्त; [2] व्यावहारिक।

बीचमे चल रहा है उस बारेमें नही था। लेकिन आज ऐसा कुछ हो गया है कि मुझको बिलकुल खामोश रहना नही चाहिए। यहा नही हुआ है, वह हुआ तो है देहरादूनमे। खासा सज्जन मुसलमान था; उसको कत्ल कर दिया। जहातक मुझको पता है, उसने कुछ गुनाह नही किया था, और कोई कानून हाथमें लिया हो ऐसा भी नही है। लेकिन चूकि वह मुसलमान था, इसलिए उसको काट डाला। मुझको बुरा लगा कि ऐसा ही हम करते रहे तो आखिरमे हम कहा जाकर ठहरेंगे। आज तो मै देखता हू कि मेरे पास काफी मुसलमान भाई-बद पडे है। मेरा दिल झिझकता है। अगर मै उनको कहू कि आज यहासे जाओ, उस जगहपर चला जा—वह कैसे जाए? आज मै पाता हू कि ट्रेनमे मुसलमान सही-सलामत है, ऐसा भी नही। जिसको जो चाहे कपार्टमेंटसे उठाकर फेक देते है या दूसरी तरह कत्ल कर डालते है। मै यह समझता हू कि पाकिस्तानमे ऐसी ही चीज हो रही है, लेकिन ऐसा हम करते रहे तो उससे हमको क्या फायदा पहुचनेवाला है। आखिरमे हम अपने-आपको पहचाने तो सही। अपने धर्मको भी तो पहिचाने। सबका धर्म सबके पास रहता है। हमारा धर्म क्या सिखाता है? क्या हम धर्मको छोड़कर काम कर रहे है? क्या काग्रेस पागल थी? आखिर ६० बरसतक काग्रेस क्या करती आई? अगर काग्रेसने आजतक गलती की तो वह मुल्ककी दुश्मन थी, और मै कहूगा कि पीछे काग्रेसको हटा देना चाहिए। आज जो अपनेको काग्रेसी मानते है वे भी साफ-साफ कह दे कि हम काग्रेसको छोड देते है, दूसरी कोई पार्टी बना लेते है। उसमे कोई शिकायत नही हो सकती है। लेकिन कुछ भी करो, सारी दुनियाके सामने और हमारे लोगोके सामने, मैं इतना तो कह सकता हू कि हम अपने हाथोमे कानून न ले। ले लेगे तो हम अपनेको मार डालनेकी कोशिश करेगे और आजादी गवा बैठेगे; तो पीछे जब दूसरा कोई आकर हिदुस्तानपर कब्जा कर लेगा तो हम हाथ मलना शुरू कर देगे कि हमने क्या गजब कर दिया। वह कोई अच्छी बात नही है। ऐसी बातोमे एक पाठ हमे सिखाया जाता है। एक नेवला था। उसने बच्चेको बचानेके लिए एक साप मार डाला। उसका मुह खूनसे लाल हो गया। मा तो आती है

बेचारी बाहरसे। सरपर पानीका बर्तन है। कुएपर गई थी, पानी लेने। मिट्टीका बर्तन था। वह नेवला तो नाचता-नाचता आया कि मैंने तुम्हारे बच्चेको बचा लिया, पर वह समझी कि उसने बच्चेको मार डाला है। वह बर्तन उसपर डाल दिया। बर्तनका पानी गया, बर्तन टूटा, नेवला मर गया। भीतर जाकर देखती है बच्चा तो पलनेमे पडा था और खेल रहा था। वह भी खुशीसे अपनी माको मिलना चाहता था। और सामने साप मरा पडा है। तो वह समझ गई कि नेवला उसका दोस्त था। अफसोस हुआ। कहा, मैंने खामखाह उसे मार डाला। तो ऐसा हम न करे कि आखिरमे हम, जैसे उस माको पछताना पडा वैसे पछताए कि अरे, हमने अपनी हकूमतका कहना न माना। हकूमत हमने बनाई है, क्या हम उसे बिगाडेगे ?

हमारे हाथोमे आज हकूमत आ गई है, अपने प्रधान आ गए है। आज मुख्य प्रधान यहा जवाहरलाल है। वह तो सच्चा जवाहर है और उसने काफी लोगोकी सेवा की है। सरदार है, दूसरे है। क्या वे हमको नापसद है ? आज कहे जवाहरलाल तो निकम्मा है, वह ऐसा हिदू कहा है, और हमको तो जैसा हम कहते है ऐसा ही करनेवाला चाहिए कि जो मुसलमानोको छोड दे, उनको निकाल दे, तो ऐसा जवाहरलाल नही है, न मै ही हू, यह मै कबूल करता हू। मै अपनेको सनातनी हिंदू मानता हू, तो भी ऐसा सनातनी नही कि सिवा हिंदूके और किसीको हिंदुस्तानमे रहने नही दू। कोई किसी धर्मका हो, लेकिन हिंदुस्तानका वफादार है तो वह हिंदुस्तानी है और उसको यहा रहनेका उतना ही हक है जितना मुझको है। भले ही उसके जातिवालोकी तादाद बहुत छोटी हो। धर्म मुझको यही सिखाता है। बचपनसे मुझको सिखाया गया कि इसको रामराज्य कहो या ईश्वरीय राज्य कहो। कभी हो नही सकता है कि एक आदमी इस वक्त विधर्मी है इसलिए वह नालायक है, नापाक है। तो आप समझे कि गाधी भी तो कैसा हिंदू है। गाधीके हाथमे ताकत नही है, वह प्रधान नही है। जवाहरलाल है, तो उसे चाहो तो हटा सकते हो। सरदार है। कौन सरदार ? वह बारदोलीका सरदार है। उसकी मानते हो ? तो उसके भी मुसलमान दोस्त पडे है। उनके

दोस्त इमाम साहब जो गुजरातमें हमारी कांग्रेसके सदर[1] थे, मर गए। अब इमाम साहबके दामाद अहमदाबादमें हैं। मेरा खयाल है वे डिस्ट्रिक्ट कांग्रेसके प्रधान हैं। खासा आदमी है, बड़ा भला है। मैं तो उसे बहुत जानता हूं। उसने इमाम साहबकी लड़कीसे शादी की। वे इमाम साहब, जो दक्षिण अफ्रीकासे मेरे साथ आए थे, अपना कारबार छोड़कर अपनी बीबीको साथ लेकर आए और मेरे साथ रहे। वे मर भी गए, उनकी जवान लड़की बैठी है। क्या मैं उसे छोड़ दूं और कहूं कि अब तू हमारे कामकी नहीं है, क्योंकि आखिरमें तू मुसलमान है? मुसलमान है इसमें कोई शक नहीं; लेकिन वह भली है, अच्छी है, ऐसा मैं कह सकता हूं। उसको पता नहीं है कि उसको जाना पड़ेगा। अगर सरदार उसे जाने दे तो पीछे वह कहां रहनेवाली है? हम अपने हाथोंमें कानून न लें। और जो कानून होनेवाला है वह सरदार या जवाहरलाल करें, आर्डिनेंस बनावें और पीछे वह प्रजापर छोड़ दें, ऐसा प्रधान आज हो नहीं सकता। माना कि अंग्रेजोंके समय वह सब पहले चला था, उन्होंने जो किया सो हम भी करें क्या? हम जिसकी शिकायत आजतक करते रहे हैं, वही शिकायत हमारे लिए की जाए? ऐसा हम बर्दाश्त न करें। यही मैं तो कहना चाहता था।

: १११ :

८ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

एक सज्जन मेरे पास आते हैं अच्छे हैं। वे देहरादूनसे आ रहे थे। ट्रेनमें काफी आदमी थे। तो किसी स्टेशनपर, मैं स्टेशनका नाम तो भूल गया उनके डिब्बेमें एक आदमी आ गया। बाकी तो उस डिब्बेमें सब हिंदू थे, सिख थे। किसीके हाथमें तलवार थी किसीके छुरा था।

---

[1] प्रधान।

उन्होने नए आनेवालेको देखा। किसीने पूछा कि आप कौन है। वह तो बेचारा अकेला आदमी था, उसने कहा भाई मै तो चमार हू। लेकिन उनको शक हुआ। उसका हाथ देखते है तो उसका नाम हाथोमे गुदा हुआ है। कभी लोग हाथोमे अपना नाम लिखवा लेते है। तो वह तो मुसलमान साबित हो गया और किसीने उसके छुरा भोक दिया और पीछे जमुनामे जो बीचमे रास्तेमे आती है उठाकर फेक दिया। यह कार्रवाई तो की एक ही आदमीने, लेकिन इतने आदमी थे, वे भी उनके गवाह रहे। मुझसे बात करनेवाले सज्जन यह सब देख न सके और मुह दूसरी ओर फेर लिया। मैने तो उनको कहा कि अगर आपके दिलमे रहम आ गया था और आप उस चीजको ठीक नही समझते थे तो आपने क्यो नही उस आदमीको कहा कि अरे ऐसी वहशियाना बात न करो। पचास साठ हिंदू, सिख उस डिब्बेमे थे, उनमे एक बेचारा मुसलमान। यह कहाकी इन्सानियत है कि उसको कोई मार डाले और जमुनामे फेक दे। वह बिल्कुल मर गया था ऐसा तो न था, उसके छुरा भोका गया था और वैसा ही फेक दिया गया था। आपमे इतना रहम था तो इतना आपने क्यो नही किया, क्यों नही उसको मरनेसे बचाया? उसने कहा कि मुझको दुःख तो हुआ, लेकिन मै अपना फर्ज भूल गया। मुझको सूझा नही कि क्या करना चाहिए तो मैने कहा यह तो कोई अच्छी बात नही है, यह कोई इन्सानियत नही है। हम इतने लोग पडे है, एक हमारा मुसलमान भाई आता है, उसका इस तरहसे खून कर देते है, फेक देते है, ऐसा करनेवालेका हाथ पकड़ो और रहमसे मुहब्बतसे कहो कि आप यह क्या करते है, किसको मारते है, उसने तो कोई गुनाह नही किया है, उसको आप न मारे। और अगर वह न माने तो उस भाईकी जान बचानेके लिए आप अपनी जान कुर्बान कर दें, तो मुझे बडा अच्छा लगेगा। एक आदमीको पचास साठ मिलकर मार डाले, इसमे क्या बहादुरी है? लेकिन इतने आदमी जमा हुए हैं उसमेसे एक आदमीको किसीने मारनेका इरादा कर लिया और वह उसको मार डालता है तो सब बैठे देख रहे है, उनके दिलमे या तो यह खयाल होता है कि चलो, मार डाला अच्छा है, इसमे वात क्या है। मै कहूगा कि जो लोग इस तरह सोचते है वे वहुत भारी

गलती कर रहे है। वे मारनेवाले ऐसे भी लोग होते है जिनके दिलोमे रहम तो है और वे मारनेको अच्छा काम नही समझते, लेकिन चूकि उनको अपनी देह प्यारी है, इसलिए वे कुछ नही कर सकते और वे भूल जाते है कि उनको ऐसे मौकेपर क्या करना चाहिए था। इसमे भूलना क्या था, एक आदमी इस तरहकी वहशियाना हरकत करे तो आप उससे कहे कि ऐसा मत करो। यह कितनी बुरी बात है कि जिन आदमियोको यह काम पसद नही था वे भी उसके गवाह होते है। मै आपको कहना चाहता हू, क्योकि मैने नजरोसे देखा है कि एक आदमी ऐसा बुरा काम करता है तो दूसरे आदमी जो खडे रहते है वे उसको पसद भी नही करते लेकिन हिम्मत नही कर सकते कि आगे बढकर रोके। एक भी भाई हिम्मत करके उठ खडा होता है और उसे रोकता है और कहता है कि अगर उसे मारोगे तो मै तुम्हारा हाथ पकड लूगा, नही मानोगे तो खुद मरूगा लेकिन उसको नही मरने दूगा, तो वह तो मै समझूगा। लेकिन अगर मेरे जैसा आदमी है वह तो अहिसापर रहेगा, खुद मर जायगा, मार तो सकता नही, लेकिन उसकी जान अपनी जान देकर बचाएगा। मुझे तो इसमे कोई शक नही है कि अगर कोई इस तरह हिम्मत करता तो वह आदमी बच जानेवाला था। और अगर उसे बचानेकी कोशिशमे अपना खून हो जाता तो वह तो सच्चा बहादुर आदमी साबित हो जाता। इसीका नाम सच्ची अहिंसा है। सच्ची अहिसा यह नही है कि बलवानके सामने तो हम अहिंसाका उपयोग करे, लेकिन कमजोरपर हिंसा करे।

अग्रेजोके लिए हमने अहिसाका इस्तेमाल किया लेकिन आज हम हिंसा अपना रहे है। किनके साथ ? अपने भाइयोके साथ। तो अग्रेजोके साथ जो हमने अहिसाको अपनाया वह बहादुरोकी अहिसा नही थी। उसका नतीजा हिंदुस्तान आज पा रहा है और उसका नतीजा आज मै भी पा रहा हू, आप भी पा रहे है। मै कबूल करता हू कि मै आपको सच्ची अहिंसा नही सिखा सका। मै तो आपको बहादुरकी अहिंसा बतलाता हू। आज यहा मुसलमान पड़े है, पाकिस्तान वहा हिदुओके साथ बुरा करता है, तो हम भी यहा वही करे ? वे क्या कोई बहादुरीका काम करते है। मै तो कहता हू कि पाकिस्तान जो करता है वह बुरा करता

है और हम यूनियनमे अगर उसकी नकल करते है तो वह भी बुरा है। पीछे यह कहना कि किसने पहले किया, किसने बादमे किया, किसने कम किया, किसने ज्यादा किया, यह तरीका दोस्त बनानेका नही है। सच्चा तरीका दोस्तीका तो यह है कि हम हमेशा इन्साफपर रहे और शरीफ बने रहे। इस तरह करनेसे जगली और दीवाना भी आखिरमे सुधर जाता है। हम इसमे नही जाना चाहते कि किसका गुनाह बडा है और किसका छोटा और किसने पहले शुरू किया। ऐसा कहे तो यह सब मैं जहालत समझता हू। वह दोस्तीका तरीका नही है। जो कलतक दुश्मन थे उनको दोस्त बनना है तो भले ही कलतक उनमे दुश्मनी रही हो, लेकिन आज जब उन्होने दोस्ती कर ली है तो पीछे वे सब कलकी बात भूल जाते है। उसको याद क्या रखना था? दोस्तीका यह तरीका नही है कि लडना होगा तो लडेगे, उसके लिए भी तैयारी कर ले और अगर दोस्ती हो गई तो दोस्त बनकर रहेगे। इसमेसे सच्ची दोस्ती पैदा नही हो सकती।

अब मैं दूसरी चीजपर आ जाता हू और इस बारेमे थोडासा कह दू तो अच्छा है। आज दुनियामे अखबारोकी ताकत बहुत बढ गई है जब एक मुल्क आजाद हो जाता है तब पीछे उसकी ताकत और भी बढ जाती है। आजादीके जमानेमे यह नही हो सकता है कि जो अखबार निकालनेवाले है उनको सिर्फ इतनी रिपोर्ट देनी है और यह खबर नही देनी है, वह सब बन नही सकता। मगर लोकमत ऐसे वक्तमे बडा काम कर सकता है। अखबार जो गदी बात कहते है या झूठी बात कहते है या दूसरोको उकसानेवाली बात लिखते है या तो हकूमत उनको बद करे और उनपर कानून लगावे, कोर्टमे चली जाय। लेकिन वहा जानेसे हुल्लड मच जाता है, और काम बढ जाता है। हकूमत ऐसा भी नही कर सकती। अग्रेजोका जमाना दूसरा था। उनको क्या पडी थी? तिलक महाराज-जैसे आदमीको पकडकर छः बरसके लिए सजा कर दी। अखबारमे उन्होने कुछ दिया था। ऐसी कोई खास बात भी नही लिखी थी। तो भी उनको छ बरसकी सजा मिली। और पूरी सजा भुगतनी पडी। इस तरहसे बहुतोको जेल जाना पडा। मुझको भी छ बरसकी सजा हो गई थी। छः वर्ष रहा नही यह दूसरी बात है। लेकिन सजा हुई छ बरस की, क्योकि

मैने 'यग इडिया'मे एक लेख लिखा था। कोई बुरा नही लिखा था, लेकिन सजा मुझको दी गई। आज आजादीके जमानेमे यह सब नही हो सकता। आज तो जो अखबारनवीस है, एडीटर है और जो अखबारोके मालिक है, उनको सच्चा बनना है, लोगोका सेवक बनना है। अखबारोमे गलत और झूठी खबरोको न आने देना चाहिए और न लोगोको उकसानेवाली बाते छापनी चाहिए। आज आजादीके जमानेमे तो यह पब्लिकका फर्ज हो जाता है कि गदे अखबारोको न पढे, उनको फेक दे। जब उन्हे कोई लेगा नही तो वे अपने-आप ठीक रास्तेपर चलने लगेगे। आज मुझे बडी शर्म लगती है यह देखकर कि गदी और गलत खबरोको पढनेकी लोगोकी आदत-सी हो गई है। ऐसे अखबार आज चलते है। एक चीज मैने देखी, वह रिवाडीका किस्सा है। एक अखबारने लिख दिया कि रिवाडीके मेव लोगोने, जो वहा पडे थे, सारे हिदुओ को मार डाला, मकान जला डाले और माल, मवेशी लूट लिए। मेवोने इतना बुरा काम किया यह खबर देखकर मुझे बडी चोट लगी। दूसरे रोज अखबारमे रिवाडीके बारेमे कोई खबर ही न थी। यह सब बनाई हुई बात थी। मै परेशान था कि उस अखबारमे रिवाडीकी बात कैसे आ गई। मै तो कहूगा कि जिस सज्जनने रिवाडीकी बाते लिखी थी उसे यह साफ करना चाहिए। अगर गलती की थी तब भी और अगर जान-बूझकर ऐसा लिख दिया था तो भी उसको साफ होना चाहिए। उसने खुदाके सामने बडा गुनाह कर लिया है, ऐसा नही होना चाहिए था। ऐसा वह करे तो हमारा काम आगे नही बढ सकता है। हकूमत तो आज अखबारवालोकी चौकसी नही कर सकती, वह चौकसी तो मुझको करनी चाहिए, आपको करनी चाहिए। हम अपने हृदयको साफ करे, गदी चीजको पसद न करे। गदी चीजको पढना छोड दे। अगर हम ऐसा करेगे तो अखबार अपना सच्चा धर्म पालन करेगे। एक बात और कहकर मै खतम करूगा।

जैसे अखबार है वैसे ही हमारी मिलिटरी है और पुलिस है। मिलिटरी और पुलिस सबके दो हिस्से हो गए। वह उन्होने नही किया यह मैं कबूल करता हू, लेकिन हो गया। तो यहाकी जो मिलिटरी है, उसमे हिंदू है सिख है। और मुसलमान फौज पाकिस्तानमे चली गई है। अगर

हिंदू, सिख फौज और पुलिस अपने दिलमे ऐसा समझे कि हम तो हिंदू है, सिख है, इसलिए हिंदूकी ही रक्षा करेगे, हिंदू है, उसने एक गुनाह किया है तो उसको छिपाएगे, जो मुसलमान है तो उनके लिए हम सिपाही कहा है, मिलिटरी कहा है, उनकी हम रक्षा क्यो करे ? ऐसा हमारे लोग समझ ले, और पाकिस्तानमे जो मुसलमान फौज है, पुलिस है वह ऐसा समझे कि जो हिंदू है उसको मारो, उसकी रक्षा करना हमारा धर्म नही है। ऐसा अगर हो तो हिंदुस्तानका भला नही हो सकेगा। हकूमतके पास तो पुलिस है, फौज है। लेकिन मुझे न तो पुलिस चाहिए न मिलिटरी चाहिए। मै तो लोगोसे कहूगा कि आप हमारी पुलिस वन जाइए, फौज वन जाइए। हिंदू अगर यहा मुसलमानोको मारते है तो उन्हे बचाना है। हमे उस कामसे हटना नही है। मै मर भी जाऊ लेकिन पीछे नही हटूगा। तो मेरी हकूमत तो ऐसी है। यह कोई मै हवामे वात नही कर रहा हू, सच्ची वात है सो कहता हू। तो वही बात मै हकूमतकी मिलिटरी और पुलिससे कहता हू। उनका पहला धर्म यह हो जाता है कि मुट्ठी भर भी मुसलमान अगर यहा पडे है तो उनकी रक्षा करनी है। अगर उनपर, जो यहा पडे है, हिंदू हमला करते है, सिख हमला करते है, तो पुलिस और फौजको उनको वचाना चाहिए। अपनी जानको खतरेमे डालकर भी उनको बचाना चाहिए। तब वह सच्ची पुलिस है, सच्ची मिलिटरी है। हिंदुस्तानको जो आजादी मिली है, वह भी एक अजीव किस्मकी है। सारी दुनिया ऐसा कहती है और मै भी कहता हू कि इस तरहसे किसी भी हकूमतने किसी मुल्ककी आजादी वहाके लोगोको नही दी है। बिना किसी लडाई-झगडेके और खूनखरावीके हमने अपनी आजादी पाई है। तो जरूरी है कि हमारी मिलिटरी हो, पुलिस हो, वह ऐसी न हो कि जेव भरनेके लिए काम करे। उनको जितना मिलता है, उससे सतोष रखना चाहिए। उनको यह नही सोचना कि मिठाई मिले, जलेबी मिले और दूसरे स्वादिष्ट भोजन मिले। सिपाही तो वह है जो सूखी रोटी नमक मिलता है उसको खाकर पेट भर लेता है और अपने धर्मका पालन करता है। लेकिन अगर वह समझे कि दूसरे आदमी-का लड़का तो कालिज-मदरसेमे जाता है, उसके लिए तो मोटर रहती

है बाईसिकल रहती है और क्या-क्या चीजें नही रहती है, और हमारे पास तो कुछ भी नही है, इसलिए रिश्वत लेना है, प्रजाको खाना है, तब वह प्रजाके सेवक नही रहते । इस कारण मै कहता हू कि रोटीका टुकडा खाकर जो मिले उसमे राजी रहकर अपना काम बिना धर्मके भेदभावके करे वही सच्चा फौजी और सिपाही है । वह कभी ऐसा न सोचे कि मै हिंदू हूँ इसलिए मुसलमानको मारू । मुसलमान अगर बदमाशी करे तो उसे पकडे और सजा दिलवाए वह दूसरी बात है । लेकिन क्या जो बेगुनाह आदमी है मगर मुसलमान है, उसको हम यहा इसलिए मारे कि दूसरे मुसलमान जो वहा हैं वे बिलकुल बदमाश है ? अगर कोई भी हिंदू ऐसा करता है तो सिपाहीका धर्म हो जाता है कि वह उस मुसलमानकी रक्षा करे । तब मै कहूगा कि वह जो हिंदुस्तानका नमक खाता है उसको सही अदा करता है । और अगर हमारी पुलिस और मिलिटरी ऐसा नही करती तो वह नमकहराम बनती है ।

ऐसा मै पाकिस्तानकी मिलिटरी और पुलिसके लिए भी कहूगा । लेकिन वहा तो मेरी कुछ चलती नही है । मै किसको कहू किसको न कहू । लेकिन मैं जो यहा कहता हू अगर यहा वैसा होता है, तो वहा अपने-आप बादमे वैसा होना है, इस बारेमे मुझे कोई शक नही है । तो आज तो लोगोके दिमाग बिगड गए है, वे कहते है कि वहा हमारे भाइयोपर ऐसा होता है तो हम यहा भी वैसा क्यो न करे ? लेकिन ऐसा कहना इन्सानियत नही है । इसलिए मै तो जबतक मेरेमे सास है, चीख-चीखकर यही कहता रहूगा कि हम अपनेको साफ रक्खे, शरीफ बने रहे, हमारे अखबारोको शरीफ रहना है, मिलिटरी और पुलिस है उसको शरीफ रहना है । यह चीज अगर नही रहती है तो हमारी हकूमत चल नही सकती है और पीछे हम बेहाल हो जायगे । पाकिस्तानमे कुछ भी हो, हमें शरीफ रहना है । वह दीवाना बने, तो भी हमे तो शरीफ ही रहना है । तो मै कहता हू हमें शराफत हर हालतमे अपनेमे रखनी है । इतना तो करो । अगर मेरी न सुनी, तो मैं कहता हू कि सब बेहाल होनेवाले है ।

: ११२ :

९ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

हमेशा मैं किसी न किसी रूपमे वही बात कह देता हू। लाचार बैठा हू। इसी कामके लिए तो यहा पडा हू। मुझे कहना चाहिए कि क्योकि आप उदार है, भले है, इसलिए शातिसे मेरी बात सुन लेते है, इसलिए मैं आपका उपकार मानता हू। धन्यवाद ही दे सकता हू। लेकिन मेरेमे ऐसा तो है नही कि चलो मैंने सुना दिया और लोगोने शातिसे सुन लिया और खतम हुआ। उससे मेरा पेट नही भरता। हमारे इतने लोग परेशान पडे है, हिंदुस्तानमे बहुत जगह पडी है, उनके लिए क्या करना चाहिए ? उन लोगोका धर्म क्या है ? हकूमतका धर्म क्या है ? जो लोग एक किस्मकी खराब आबोहवा पैदा करते है उन्हे हमे समझना है, समझाना है, तब तो पीछे जो लोग दूसरी जगह पडे है उनतक भी मेरी आवाज पहुचेगी।

मेरे पास कुछ लोग, जो लोग परेशानीमे है, वे आ गए थे। वे लोग बडे अच्छे है। पाकिस्तानके पश्चिमी पाकिस्तानके है। मेरे पास दस-बारह रोज पहले आ गए थे। पहले मैंने कहा, मुझे सब कुछ लिखकर दो। उन्होने लिखकर बयान दे दिया, ताकि मुझसे कुछ हो सकता है तो करू। उनका कहना यह था कि जो पाकिस्तानमे पडे है, उन लोगोके आनेका कुछ प्रबध हो, नही तो वे आ नही सकते। रास्तेमे खतरा रहता है। उनके पास अनाज है, पर अनाज साथमे कैसे ला सकते है ? रखने कौन देगा ? हवाई जहाजमे आ जाय, मोटरसे आ जाय ऐसा ही रास्ता आज हो सकता है। ट्रेनमे आज बडी दुश्वारिया है। जैसे पहले चलती थी ऐसे ट्रेने चलती भी नही। जो अबतक आ नही पाए है उनका पीछे क्या हाल हुआ वह भी पता नही। ऐसी हालतमे वे आ जाय तो अच्छा है। लेकिन मैं सोचता हू कि हम है कहा, और कहा जा रहे है ?

अब मैं जरा मनको बगालकी ओर ले जाऊ। वहा भी तो मैंने काफी

काम किया है। पूर्वी बगालमे भी और पश्चिमी बगालमे भी। पूर्वी बगालमे तो नवाखाली है, जो आज पाकिस्तानमे है। वहा मै चला गया था और वहा बडी लबी पैदल यात्रा की। रोज अलग-अलग जगहपर चला जाता था। वहाके लोगोसे बातचीत करता था। हिंदू बहनो, भाइयोमे जो डर भरा था उसे निकालता था। राम नामसे निकालना ठहरा। राम नाम लेते हुए कोई मार डाले तो मर जाए। ऐसा हमे क्या जीनेका मोह पडा है ? क्या जिदा रहनेके लिए राम नामको छोड दे ? डरके मारे राम नाम न ले ? औरते अगर कुमकुम लगाती है तो वह न लगाए ? वहा जो औरत विधवा नही होती वह शखकी चूडिया पहनती है, यह सौभाग्यकी निशानी है। जो विधवा बन जाती है वे नही पहनती। तो क्या डरके मारे शखकी चूडी न पहने, हालाकि वे विधवा नही है ? जो शुभ चिन्हके रूप शखकी चूडिया पहनती थी वे आज पहननेसे झिझकती थी तो मैने उनको समझाया कि ऐसे नही करना चाहिए। वे समझ गई और कहा कि अब पहनेगी। अब मै सुन रहा हू कि वहासे आहिस्ते-आहिस्ते लोग चले आते है। इसका मुझे पता नही चला, वहा तो मेरे आदमी पडे है। शायद मैने आपको कहा है कि जो अच्छे आदमी मेरे साथ थे वे सव वहा पडे है। प्यारेलाल वहा पड़े है, खादी प्रतिष्ठानके लोग वहा पडे है, कनु गाधी वहा पडे है। ऐसे काबिल लोग वहा पडे है। सतीशचन्द्र भी वहा पडे है। वे सब लोगोको हिम्मत देते है। लेकिन फिर भी लोग भागे चले आते है। वहा लोगोको परेशानी है। होनी भी चाहिए। लेकिन वहासे भागना क्या था ? कहासे भागेगे और भागकर वे करेगे क्या ? वे सोचे। हमारे यहा कुरुक्षेत्रमे २५००० शरणार्थी पडे है, औरते है, मर्द है। कुछ औरते है जिनके बच्चे होनेवाले है। उनमेसे कोई मर जाय तो बडी बात नही होगी, क्योकि वहा उनका इलाज आज कौन करेगा ? वहा मकान भी नही है, लोग परेशान है, क्योकि वे पजावसे भागकर आए है। तो मै अपने दिलमे सोचता हू कि मुझे उन लोगोको क्या सलाह देनी चाहिए ? जितने आए है इससे ज्यादा तो अव भी पडे है। हम कोई दस-बीसकी तादादमे हो, लाख दो लाखकी तादादमे हो तो उन्हे समझा सके, सभाल सके। करोडोकी

तादादमे, इस बडे मुल्कमे लोग पडे है, वहा लोगोको तबदील[१] करना, एक जगहसे दूसरी जगहपर ले जाना छोटी बात मत समझो। इसमे परेशानी इतनी है कि वे बिचारे वगैर मौतके मर जाते है, भूखो मर जाते है। हकूमत सबको सब चीज पहुचानेकी कोशिश करे तो भी पहुचा नही सकती है, चाहे कितनी भी कोशिश करे। हकूमतके पास आज जो सिपाही है, मिलिटरी है, सबका इतजाम अग्रेजोके पास जैसा था वैसा तो हो नही सकता। होना नही चाहिए। हकूमतके पास जो फौज है वह लोगोकी मारफत काम चला सकती है। लोग चाहे तो वे हकूमतके हाथ है, पैर है। अगर वे उन लोगोको मदद न दे और उनके पाससे मददकी उम्मीद करे तो वह मिल नही सकती। यह मै वजीरोसे भी कहता हू। मै देखता हू कि हकूमत बेफिकर नही है। मै करीब-करीब हमेशा उनको मिलता हू। वे लोग भी परेशान है यह मै आपको कहना चाहता हू। मगर वे करे क्या? आखिरमे हकूमत तो वे जानते नही थे। काग्रेस चलाई मगर वह तो मुट्ठी भरकी थी। हमारे दफ्तरमे जितने नाम रजिस्टर है उतने भी तो कभी हाजिर नही हुए और हमारे दफ्तरमे जितने है वह तो मुट्ठी-भर आदमी है, थोडे पैसोमे काम करना रहा। आज करोडोका काम करना है। करोडो रुपया पडा है और हजारोकी तादादमे जो आदमी पडे है उनका थोडोकी मारफत काम करना है।

यह काम कैसे हो सकता है। और कैसे पचीस हजार आदमियोको समयपर खाना पहुचा सकते है, वह सोचना है। हजारो नए आदमी रोज आते है, तो वे भूखो रहते है। कपडा पूरा नही है और जाडेके दिन आ रहे है। जो हाल यहाका है वही हाल आप समझे कि पाकिस्तानमे है। पाकिस्तानमे कोई जन्नत है और हमारे यहा दोजख है ऐसा नही है। या यह कहो हमारे यहा जन्नत है तो वह है नही, यह मै नजरोसे देखता हू और पाकिस्तानमे दोजख हो ऐसा भी नही। आखिरमे दोनो जगहोमे इन्सान है, कोई अच्छा है, कोई बुरा है लेकिन, उस अच्छापन और बुरापन-का हिसाब कौन निकाले? निकालकर हम क्या पाएगे? मेरे सामने

---

[१] बदलना।

तो बड़ा प्रश्न ही यह हो जाता है और आपके सामने भी यही होना चाहिए कि ऐसे लोग जो पड़े हैं, जिन्हें आना है या जो आ गए हैं उनकी जो हो सके हिफाजत करें। लेकिन जो आए हैं उनके लिए भी हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि वे आखिर अपने घर चले जाएं। मैं आपको कहता हूं कि उन्हें अपनी जगहपर जाना है। मैं तो जानता हूं कि जो देहातमें रहनेवाला आदमी है वह अपने देहातको छोड़कर नहीं जायगा। एक एकड़ जमीन हो तो उसके पीछे वह ख्वार हो जायगा। हजारोंकी तादादमें लाखोंकी तादादमें लोग चले जाए तो कहां जाए, कैसे रहें। जाते-जाते तो रास्तेमें मरते जाते हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि हमें मरना है तो हम मरेंगे। किसी जगहपर पड़े हैं तो वहां पड़े रहेंगे। पीछे क्या होता है देखेंगे। पाकिस्तानमें रहते हैं तो वह देखनेवाला नहीं है, ऐसा नहीं है। देखनेवाला ईश्वर तो है और दूसरा कोई है या नहीं, हकूमत तो है।

अभी बंगालसे मैंने कहा हमारे दोस्त सब पड़े हैं। तो जो हकूमत पश्चिमी बंगालमें है वह पूर्वी बंगालकी हकूमतको लिखे कि यहां क्या है। लेकिन वहांके लोग, वहां भी क्या, हर जगहपर, जो हकूमत कहे उसकी तामील[1] नहीं करते। अफसर लोग उसकी तामील नहीं करते। उनके दिल-दिलमें ऐसा गुमान आ गया है अब तो आजादी आ गई है अब कौन है हमें पूछनेवाला। अंग्रेज थे, वह तो गए। उनकी लाल आंखें देखकर तो यह कांप उठते थे। अब क्या हो गया है? अंग्रेजोंके सामने कांपते थे इसका मैं गवाह हूं। लेकिन आज सबको लगे कि हमको कौन पूछनेवाला है, हम अपने जनरल हैं, सिपाही हैं ऐसी आजादी हम पा गए हैं, उस आजादीमें अच्छा लगे सो करेंगे, तो मैं आपको कहना चाहता हूं कि इस तरह काम नहीं चल सकता।

दोनों हकूमतें मानती हैं कि हमें इन्साफ करना ही है, तो पीछे जोर आ जाता है। लेकिन मानो कि हकूमत इन्साफ नहीं करना चाहती तो क्या होगा? आखिर हो क्या सकता है? मैं तो लड़ाई करनेवाला आदमी हूं नहीं मैं तो लड़ाईसे भागूंगा। लेकिन जिसके पास हथियार रहते

---

[1]पालन।

है, सिपाही या पुलिस रहती है, मिलिटरी रहती है, उसको लडना नही तो दूसरा क्या करना है ? मै तो कुछ कर नही सकता हू, लेकिन जिसको करना है उसे तो करना ही है। तब लडना होगा। मेरे धर्मके आदमी जहा पडे है, वहा वे परेशान पडे नही रह सकते है। तो हमको कुछ करना होगा। वह तो दोनों हकूमतके लिए मै वात करता हू। दोनो हकूमतके लिए होता है। उसमे जो जालिम है उसको यह हक नही कि दूसरे जालिमको सजा दे। जो हकूमत लोगोको अच्छी तरहसे नही रखती या नही रख सकती वे दूसरी हकूमतका इसी दोषके लिए सामना करेगे क्या ? ऐसा कोई कर सकता है ? इन्साफके लिए लडते-लडते हम मर गए, हकूमत मर गई तो मै समझ सकूगा। लेकिन हम आज इस तरह डरके मारे मर जाए मरते-मरते वहासे भाग आवे ? आधे तो आते-आते मर जाते है, पीछे आते है तो, लेकिन रखना कहा ? उनको खाना कहासे दोगे ? वे क्या वेकार बैठे रहेगे ? वेकार न बैठे तो उनको काम-धधा देना होगा। इस देशमे आपके करोडो लोग भूखसे मरते है, करोडो वेकार बैठे है, उनके लिए तो हम कुछ कर नही पाते, तो जो लोग बाहरसे आते है, वाहरसे नही किसी दूसरे प्रातसे आते है, परेशानीमे पडे है, उनके लिए काम कहासे निकालोगे ? वह जो पेशा करते थे, वह कैसे होगा, वे कैसे करेगे और क्या करेगे ? झझट यह बडी है, इसमेसे खराबी पैदा होती है, वह खराबी जो मै वताता हू, उसमे हो नही सकती और पीछे लोग बहादुर बनते है। लोग मरनेका इल्म सीख जाते है। मरनेका इल्म सीख ले तो हमारा भी भला है और जगतका भी भला है। मैंने आपको जो उपाय वताया है वह हम हिंदुस्तानको समझा दे तो सबका भला है। हम बहादुर बनते है और पीछे सारा जगत हमारी तारीफ करनेवाला है, उसमे मेरे दिलमे कोई सदेह नही।

: ११३ :

१० अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भी काफी कबलिया वगैरह आ गई है। थोडे भाई पैसे भी दे गए है। बडौदासे एक तार भी आया है कि हम काफी कबलिया यहासे भेज सकते है। मेरा खयाल है कि उन्होने लिखा है कि आठ सौ कबल तो तैयार है, लेकिन यहा रेलवाले ले नही सकते। ठीक है कि आज रेलपर इतना बोझ पडा है कि हर कोई कुछ भेजना चाहे तो वह नही हो सकता। हो सकेगा तो मै यहाकी हकूमतके पाससे चिट्ठी ले लूगा कि वहासे कबलिया आ जाय। तब हमारे पास ठीक-ठीक सामान तैयार हो जायगा। पूरा तो अभी नही हुआ है, लेकिन मेरी उम्मीद ऐसी है कि भगवान किसी न किसी तरह से वह पूरा कर देगा और कोई ठडके मारे परेशान न होगा।

अभी एक बहनने अगूठी भेजी है, उसका भी आज तो मै यही उपयोग कर सकता हू कि अगूठीको इसी काममे लगा दू और ऐसा ही करनेकी चेष्टा होगी।

अब हमारे सामने एक गहरा प्रश्न है जिसके बारेमे मैने तो काफी कह दिया है। खुराककी तगी है और इसलिए परेशानी होती है। आजादी तो मिली लेकिन आजादी मिलते ही हमारी परेशानिया बढ गई है, ऐसा हम महसूस करते है। मुझे लगता है कि अगर हम सच्ची आजादीको हजम कर लेते है तो ऐसी परेशानी नही होनी चाहिए। सच्चे आजाद लोग किस तरहसे चले ? हमारी आजादी भी कैसी कीमती आजादी है कि जिसमे हमको किसीके साथ सोल्जर[1] जैसे लडते है ऐसी लड़ाई नही करनी पडी। लडाई तो एक किस्मकी थी, लेकिन उस लडाईकी सारी दुनिया तारीफ करती है। उस लडाईके अतमे हमको आजादी मिली तो उस आजादीकी कीमत हमारे पास बहुत ज्यादा होनी चाहिए। लेकिन है नही। यह हमारी कमजोरी है। तो मै क्या पाता हू कि जो मैने बात

---

[1] सिपाही।

कही है वह तो बडी सीधी है और बिल्कुल व्यवहारकी बात है। यानी बाहरसे खुराक नही मगवाना। ऐसी व्यवहार की बात सुनते ही लोग काप क्यो उठते है ? कहते है आदत पड गई है। आदत तो पडी है पर वह तो कई बरसोकी नही। वह हमारी आदत कही भी नही जा सकती है कि हमको कोई रोटी खिलावे तो हम खाए। हमारे लिए ऐसा इतजाम बने कि हमे छ आउस, आठ आउस, बारह आउस अनाज, जो कुछ भी हो उतना अनाज, हमे मिले तब हम खा सकते है, और उसके लिए नई-नई चिट्ठिया लिखे। वह तो व्यवहारके बाहरकी बात हो गई। जो मै कहता हू वह बिल्कुल व्यवहारकी बात है। और उसमे परेशान क्या होना था। हिंदुस्तान जैसा बडा मुल्क जिसमे करोडोकी तादादमे हम पडे है, जमीन भी हमारे पास काफी पडी है, ईश्वरकी कृपासे पानी भी बहुत है। ऐसे स्थान है हिंदुस्तानमे कि जिस जगह पानी नही मिलता। ऐसे रेगिस्तान पडे है यह मै जानता हू, लेकिन ऐसा नही कहा जा सकता कि हिंदुस्तानमे किसी जगह पानी मिलता ही नही है। तो हमारे पास पानी पडा है, जमीन पडी है, करोडोकी तादादमे लोग पडे है, हम क्यो परेशान बने।

मेरा तो कहना इतना ही है कि लोग इसके लिए तैयार हो जाय कि हम अपने परिश्रमसे अपनी रोटी पैदा कर लेगे। रोटी खानेके लिए अनाज पैदा कर लेगे। इससे लोगोमे एक किस्मका तेज पैदा हो जाता है और उस तेजसे ही आधा काम हो जाता है। कहा जाता है और वह सच्ची बात है कि मौतके डरसे जितने आदमी मरते है उससे बहुत कम सच्ची मौतसे मरते है। एक आदमीको ऐसा हो गया कि मै तो आज चला कल चला। किसी आदमीको क्यो, मुझको ही ले लो। मुझे खासी हो गई तो खासीके कारण मै समझ लू कि मै तो अब मर जाऊगा, तो मरना तो जब है तब मरूगा, वह तो भगवानके हाथमे पडा है, लेकिन मै अगर आजसे परेशान हो जाऊ और ऐसा मान लू कि मै तो अब मरा तो वह बेमौत मरना है। और रोज मरना अब चला हाय ! अब क्या होगा, तो इस तरह जो मेरे समीपमे लोग पडे है उनको भी परेशान करूगा और मै भी परेशान हूगा और हमेशा सूखता जाऊगा। हमेशा रोता ही रहूगा कि

अब मैं चला। उससे अच्छा तो यह है कि जबतक हमको मौत नहीं आती तबतक हम आरामसे पड़े रहें और समझें कि कोई हमको मारनेवाला नहीं है, कोई मारनेवाला है तो ईश्वर है। जब उसको जो चाहेगा उठा लेगा। एक तो यह चीज कि हम मौतका डर छोड़ देते हैं तो हमको हमारी परेशानी भी छोड़ देती है। इस तरहसे मैं कहता हूं कि जब हम यह करेंगे तब हम परेशान न होंगे। किसीको यह नहीं सोचना चाहिए कि हम किसीकी मेहरबानीसे अपनी खुराक पावें। बल्कि हम अपनी मेहनतसे उसे पैदा करें। तभी मैं कह रहा हूं कि हम बगैर मौतके न मरें। आज जो चिटें मिलती हैं, राशनिंग होती है और इसी तरहके जो तरीके हमें बेमौत मारनेके हैं, उनको हम छोड़ दें। यह तो खुराककी बात है।

ऐसी ही बात कपड़ोंकी है। मैंने तो कह दिया है कि अब जितना कपड़ा मिलता है, उससे चौगुना मिल सकता है। हमारे मुल्कमें कपड़ोंकी तंगी कैसी? मेरा तो ऐसा विश्वास है कि खुराककी तंगी तो थोड़ी-सी हो भी सकती है, लेकिन कपड़ोंकी तंगी इस हिन्दुस्तानमें नहीं होनी चाहिए। क्यों नहीं होनी चाहिए? क्योंकि हिन्दुस्तानमें जितनी रुई पैदा होती है वह हमको जितनी कपड़ोंके लिए रुई चाहिए उससे बहुत अधिक है। हिंदुस्तानमें कातनेवाले बुननेवाले इतने काफी पड़े हैं कि अपने-आप कात सकते हैं और सूतको बुन सकते हैं और आरामसे पहन सकते हैं, तब तो पीछे हम बिल्कुल आजाद बन जाते हैं.. खानेके लिए, कपड़ेके लिए, और मिलसे भी हम आजादी पा लेते हैं। आज तो नहीं पाई और अभी पा नहीं सकते तो उसमें हमारा अनजानपन है। मेरा ख्याल था कि हम ऐसा करेंगे। लेकिन आज तो वह नहीं है, वह जमाना तो चला गया कि जब मैं सारे हिंदुस्तानमें घूम-घूमकर खद्दरका प्रचार करता था। बहनोंको कहता था कि कातो, जितना कात सकती हो उतना कातो। उन्होंने कताई की भी, लेकिन काता बिना समझके। उन्हें मजदूरीकी परवाह नहीं थी, वह कातती थीं और कपड़े बनवा लेती थीं। यह होता था लेकिन आज तो शक्ल दूसरी है। आज तो तुम्हारे पास कपड़ा ही नहीं है। तो मैं तो कहता हूं कि अब हम अपने कपड़ोंके लिए सूत पैदा करें, कातें और उसको बुनवा लें और बुनें। अपने-आप बुननेमें कोई तकलीफ

तो है नही। लेकिन वह भी न करे तो क्या करे ? हा, तो जो मै बात कर रहा था उसमेंसे नतीजा यह आता है कि लोग तो जो कपडेकी दूकाने पडी है वहा चले जाय, कपडा ले ले। हकूमत है वह भी मिलोके पाससे कपडा ले और पीछे लोगोमे बाटना शुरू कर दे। इसके अलावा जो लोग कर सकते हो वह एक, दो महीनेके लिए, चार महीनेके लिए, यह व्रत ले ले कि हम कुछ कपडा लेनेवाले नही है। कपडेके लिए खद्दर चाहिए। छीट वगैरह जो महीन कपडे है वह न ले। हम इतने महीने तक वह न लेंगे, इसका मतलव तो यह होता ही नही कि हम नगे रहनेवाले है। इतनेमे खादी तैयार कर लेगे तो जाडेके दिनोमे झझटसे छूट जायगे। यहा कबलकी बात तो नही है। यहा तो इतनी ही बात है कि हमे पहननेके लिए जो खद्दर चाहिए वह खुद बना लेगे, बाजारसे नही खरीदना चाहते है। इतना हम करे तो कपडेका दाम एकदम गिर जाता है। आज तो कपडेका बाजार भी गरम होता जाता है। सभी बाजार गर्म होता जाता है। थोडा कपडा तो हमे चाहिए, कमीज बनवाना है, कुर्ता बनवाना है, उसके लिए थोडा गज कपडा तो चाहिए। तो खद्दर लो। और मैने कहा है कि चाहिए तो यह कि वह खद्दर हम अपन हाथसे बना ले। तय कर ले कि कपडेकी दूकानपर न जाएगे। ऐसा हम व्रत लेकर बैठ जाय कि इतने महीनेतक नही खरीदेगे, तो मै कहता हू कि सब झझट निकल जाता है और कपडोके लिए और खुराकके लिए हम आजाद हो जाते है। दूसरा क्या होना है कि लोगोमे मेरी समझमे आत्म-विश्वास आ जाता है और लोग स्वावलबी बन जाते है और वह समझते है कि कपडेकी तगी हमे क्या होनेवाली है। हम तो कपडा अपने लिए खुद पैदा कर लेगे, करवा लेगे। हमारी अपनी खुराक है वह पैदा कर लेगे या तो करवा लेगे। यह सव करे तो उसमेसे एक वडा भारी वुलद नतीजा आ जाता है। हम आजाद तो बने मगर राजनीतिक अर्थोमे आजाद वने। हमारी करोडोकी आर्थिक स्थिति आज सही नही हो गई। वह हम महसूस नही करते। पीछे महसूस करेगे जव यह समझे कि अव हमारे यहा हम खुराक पैदा कर लेते है, उसका दाम हम जितना चाहे उतना ले लेते है, कपडा हम अपने-आप वना लेते है। रूई तो पडी है। या तो कही मिलोसे ले लेते

है। कपडा मिलोमे मिलनेकी कोई गुजाइश नही है ऐसा समझ लेना चाहिए। कुछ भी हो, लेकिन कम-से-कम इतना तो समझे कि हम परेशानी उठानेवाले नही है। तो हम कम-से-कम आर्थिक आजादी पा जाते है। और जो गरीब लोग है उनको भी पता चलता है कि हमको आजादी मिल गई है। इतना काम हम करे, पीछे इसका दूसरा नतीजा खुद ही आ जायगा।

आज हम आपस-आपसमे झगडते है लेकिन झगड़ा करनेके लिए फुर्सत तो होनी चाहिए। जब हम काममे गिरफ्तार हो जायगे और सब मजदूर-जैसे बन जाएगे तब एक मिनट भी हमको न झगडा करनेको रहेगा न किसीसे मार-पीट करनेको। खाना तो हमारे पास है। पहिनना, उसका भी हमारे पास इतजाम है। हम शराबखोरी छोड दे, जुआ खेलना छोड दे। इस तरहसे सिलसिलेवार हम सीधे चलते जाते है तो मै कहता हू पीछे कोई दोष ही हममे नही रहता। ऐसा अपने-आप हम महसूस कर लेते है कि अब हम आपस-आपसमे लडेगे ही नही। न कोई मुसलमान रहा न हिंदू रहा। कोई वदमाशी करेगा तो उसका जवाब हम दे देगे। उसके साथ लडना है तो लडेगे। लेकिन आज हम क्यो बगैर मौतसे मरना शुरू करदे ?

इसलिए मै तो कहूगा कि जो चीज मैने आपको सिखा दी है और सुनानेकी चेष्टा की है वह अगर अच्छी तरहसे आपके दिलोमे जम जाय और उसपर चलनेका फैसला हम करे तो मै कहता हू कि हम बहुत ऊचे चढनेवाले है। और हमे किसीकी ओर देखना नही पड़ेगा कि कौन हमे मदद देता है। हमे मदद किसकी चाहिए ? मदद तो हमको ईश्वर देनेवाला है और वह किसको मदद देता है ? जो आदमी अपने-आपको मदद देनेके लिए खुद तैयार रहता है उसीको ईश्वर मदद देता है।

: ११४ :

११ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और वहनो,

आज भाद्रपदकी कृष्णपक्षकी द्वादशी है। यह दिन गुजरातमे यानी

काठियावाडमे कच्छमे रेंटिया बारसके नामसे समझा जाता है और उस वक्त लोगोका ध्यान रेंटियाकी ओर यानी चर्खेकी ओर और चर्खेके इर्द-गिर्दमे जो चीजे समझी जाती है उनकी ओर खिंच जाता है। एक सिल-सिला चलता है तो पीछे उसको कोई छोडता नही, लेकिन मै आज ऐसा नही पाता हू कि रेंटिया द्वादशीका हम कोई उत्साहसे पालन करे। रेंटिया-का विस्तृत अर्थ भी मैंने दिया है और हिंदुस्तानने मान लिया है कि चर्खा अहिंसाका प्रतीक है। उसकी निशानी है। आज वह निशानी तो गुम हो गई है। अगर वह निशानी रहती तो आज हमारे सामने जो चीजे बन रही है वह बननेवाली नही थी। लेकिन बनती है तो भी उस निशानी-का स्मरण तो मै आपको करा दू। मेरा जन्म दिन दो अक्तूबरको मनाया था सो काफी था। लेकिन कई वर्षोसे अग्रेजी तारीख भी मानी जाती है और जो हिंदी तिथि है उसको भी माना जाता है। इस तरहसे वह दो दिन है और उनके बीचमे जितना फर्क रह जाता है वह सबका सब समय उत्साहसे चर्खा उत्सव मनानेमे दिया जाता है। लेकिन आज जैसा मैंने कहा ऐसा कोई मौका मै पाता नही हू। तो भी अगर दैवयोगसे कोई भी चर्खेको और जिसपर वह निशानी है उस अहिंसाको मान ले तो अच्छा ही है। पाच आदमी भी इसे मान ले तो अच्छा ही है। और करोड करे तो और भी अच्छा है। लेकिन एक ही करे तो भी वह अच्छा है। इसलिए मैंने आप लोगोका ध्यान इस ओर खीचा है।

कराचीमे हमारे मडल साहब है और वे पाकिस्तानका जो प्रधान मडल है उसमे कोई प्रधान है। ऐसा कहा जाता है कि वे हरिजन है और बगालके है। तो भी कायदे आजमने उन्हे पाकिस्तानके प्रधान मडलमे स्थान दे दिया है। उन्हीकी सूचनासे एक बात बन गई है। उसमे दूसरे दो-तीनका नाम मै भूल गया हू, वे भी शरीक हो गए है। सबके सब शरीक है, ऐसा तो नही हो सकता। लेकिन दो हुए तो भी क्या, एक हुआ तो भी क्या। लेकिन एक सरक्युलर निकल गया है कि जितने हरिजन भी सिधमे रहते है उनको हाथपर एक पट्टी रखनी चाहिए। उस पट्टीपर ऐसा लिखा जायगा कि यह हरिजन है, याने अछूत है अस्पृश्य है। जिसमे उन्हे कोई हलाक न करे, कोई निकाल न दे। उसका लाजमी नतीजा मेरी समझमे यह

आता है—(वह अगर मेरे शककी ही बात है तो अच्छी ही बात है लेकिन वैसा एक आ ही जाता है) कि वह हरिजनोंको आज तो नौकरी मिल जायगी और पीछे मान ले कि वे हरिजन वहां ही रहे तो (सबके सब रहनेवाले तो नहीं हैं बाज तो वहांसे निकल भी गए हैं और निकलनेवाले हैं ऐसा मैंने सुना है। मेरे पास बहुत खत आ गए हैं लेकिन जितने वहां रह जायं) उनको पीछे आखिरमें इस्लाम कबूल करना है। ऐसा नतीजा आ जाता है मेरे सामने तो यह भयंकर नतीजा है। एक आदमी ऐसा मानकर कि वह सच्ची चीज है अपना मजहब छोड़ देता है और कोई भी धर्म कबूल कर लेता है तो उस चीजका मैं कहूंगा कि सबको हक है। आज मैं अपनेको सनातनी हिंदू मानता हूं कल मुझको ऐसा लगे कि सनातन हिंदू क्या है इस धर्मको मैं पसंद नहीं करता, तो उसे छोड़ सकता हूं। लेकिन वह बहुत भारी बात है। मैं अपने धर्मको कबूल नहीं करूं तो मुझे कौन रोक सकता है? मेरे दिलमें कोई लालच नहीं है कि मैं क्रिस्टी हो जाऊंगा तो मेरी आर्थिक स्थितिको दुरुस्त करूंगा या और कोई भी फायदा उठाऊंगा। मैंने तो अपने ईश्वरके साथ हिसाब कर लिया फिर दुनिया इसकी मुखालिफत[1] करे तो भी मैं वही करूंगा। मैं मानता हूं कि यह हालत आज एक भी हरिजनकी नहीं होगी। यह बात मैं शौकसे कहना चाहता हूं क्योंकि मैं हरिजन बन गया हूं अछूत बन गया हूं. उनका धर्म मैंने कबूल कर लिया है। मैं यह उम्मीद करता हूं कि आज पाकिस्तानमें जितने हरिजन पड़े हैं या कोई दूसरे पड़े हैं उनके लिए इतना ऐलान कर देना चाहिए कि वे सुरक्षित हैं। पीछेसे वह बिल्ला लगानेकी जरूरत नहीं रहती। सबके लिए ऐसा ऐलान होना चाहिए कि कोई भी शख्स आज ऐसा कहेगा कि मैंने धर्मका परिवर्तन राजीसे कर लिया है तो वह माना नहीं जायगा। धर्म अपने दिलकी बात है। इन्सान जाने और उसका ईश्वर जाने। लेकिन पाकिस्तानकी हकूमतमें कोई भी आदमी ऐसा दावा आज नहीं कर सकता कि उसने अपने धर्मका परिवर्तन जान-बूझकर किया है। ऐसा ही माना जायगा कि उसने किसी डरकी वजहसे

---

[1] विरोध।

या मजबूर होकर ऐसा किया है इसलिए आज ऐसा उनको कहना है किसीके धर्मका परिवर्तन हो ही नही सकता।

दूसरी एक बात रह जाती है। हमारे सामने इसी महीने दो त्योहार आ रहे हैं। एक तो दशहरा है। वह बडा बुलद त्योहार है। उसको बहुत लोग मानते है, सारे हिंदुस्तानमे हिंदू लोग मानते है। लेकिन उसकी महिमा बगालमे बहुत अधिक है। मै बगालमे रहा हू, इसलिए मै जानता हू कि दशहरेकी क्या महिमा वहा मानी जाती है। वह त्योहार आता है उससे ठीक दो दिनके बाद बकरीद आती है। पहले जब बकरीद होती थी तो हिंदू-मुसलमानमे कोई बडा वैमनस्य नही था। आजकी तरह लडाई नही करते थे तो भी दिलमे खटका रहता था। और जो अग्रेजी सलतनत थी उसको भी कुछ तैयारी रखनी पडती थी कि बकरीदके दिन कुछ हो न जाय, हिंदू-मुसलमानोके बीचमे लडाई न चल जाय। कोई भी मौका मिल सकता था गाय को काटे, गायको सजावटके साथ ले जाय, और हिंदुओको उकसानेके लिए ऐसा करे। दशहरेमे तो सब जगह सजावट करते है बाजा तो बजाना है, औरतो-मर्दोकी सजावट होनेवाली है, नए कपडे पहनकर कोई गाडीपर सवार होगे, कोई घोडेपर सवार होगे, वह सब करेगे तो क्या, वह भी एक लडाईका मौका हो जायगा और बकरीद भी लडाईका मौका हो जायगा। मै तो कहूगा कि जो हिंदू और मुसलमान दोस्ताना तौरसे साथ-साथ रहना चाहते है उनका यह धर्म हो जाता है कि वे मर्यादासे इन त्योहारोका पालन करे। ऐसी चीज कोई न करे जिससे सामनेका आदमी गुस्सेमे आ जाय। बगैर इस सबके आज हम गुस्सेसे भरे है और गुस्सेमे जब आ जाते है तो एककी दस बना देते है। ऐसी हालतमे ऐसी कोई बात हम न करे जिससे गुस्सा बढे।

अग्रेजी हकूमतने जाते हुए जो काम किया उसमे एक दोष रह गया। हिंदुस्तानके दो टुकडे कर डाले और दो हकूमते बन गई। आज तो दोनो दुश्मन-जैसे बन गए है। सभव है कि आपस-आपसमे कभी भी लडाई न करे। लेकिन ऐसा सामान बन रहा है कि जिससे यह कोई समझ नही सकता है कि आगे क्या होगा। लेकिन आशा रखे कि हम दोनो समझ जाय और अगर नही समझेगे तो अपनी आजादी हार बैठेगे। मुल्कको

हार बैठना धर्मकी बाजी है उसको गवाकर बैठ जाना वह बडी भारी गलती होगी। मेरी तो यह प्रार्थना है ईश्वर सबको ज्ञान दे और हम सब शुद्ध हो जाय। वह बडी अच्छी बात होगी।

एक और चीज मैंने कह दी है, दक्षिण अफ्रिकामे हमारे जो लोग पडे है उन्हे सावधान होकर काम करना है और यहा जो दो हुकूमते है उन दोनोको हमारे जो भाई वहा पडे है उन्हे पूरी सहायता देना चाहिए और उनका उत्साह बढ़ाना चाहिए।

: ११५ :

१२ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भी काफी कंबलियां आ गई। रजाई भी। और रजाईके बारेमे तो मैं यहांतक कह सकता हू कि मिलोकी तरफसे भी रजाइया तैयार हो रही है। वह रजाइयां भी आ जायगी। मेरे दिलमे इतनी आशा जरूर हो गई है कि जिस रफ्तारसे ये रजाई और कबलिया वगैरह आ रही है उससे इस जाडेके दिनोमे जो लोग यहां इकट्ठे हो गए है यहाके माने दिल्लीमे और उसके इर्दगिर्द, उनको तकलीफ नहीं होनी चाहिए। यह तजवीज भी हो रही है कि वह सबकी सब रजाइयां जिनको मिलनी चाहिए या कंबलियां या जो दूसरी चीजे पहिननेको आ जाती है वह सब जरूरतमंदोको मिलें। एक बात उसमें समझनेके लायक है कि जो कबलियां आती है वह आखिरमे फट जायगी, मगर आज वह पानीसे और ओससे बचा सकती हैं। लेकिन रजाई आ गई तो खतरा रहता है कि वह पानीसे नहीं बचेगी। बाकी तो ईश्वरकी कृपा रहेगी तो जाडोके दिनोमे पानी नही आना चाहिए लेकिन ओस काफी पड़ती है और सबको कबलियां शायद न मिल सकें, सबको तबू भी मिल सकेगे या नही सो मेरे दिलमे शक है। एक चीज है, मै आज बात कर रहा था तब बता दिया था। वह मैं यहां भी बता देना चाहता हूं कि जिन लोगोके हाथोमे रजाइयां

चली जाती है वह समझे कि न्यूज पेपर काफी पडे है, वह मिल जाय तो रजाईपर अगर न्यूज पेपर रखे तो पीछे ओस रजाईमे से होकर नही आ सकती । दूसरी खूबी रजाईकी यह है कि उसमे काफी रुई आ जाती है और उसमे काफी गरमी रहती है। जब रुई टूट जाती है तब रजाईको खोल सकते है । रजाईका कपडा धोकर रुईको धुनकर फिरसे भर सकते है । तो वह नई चीज बन सकती है । जो देखभाल करके उस चीजको इस्तेमाल करनेवाले है उनके लिए वह बडी कामकी चीज है । हमारेपर यह एक बडी भारी आपत्ति आ पडी है, लेकिन जो ईश्वरका स्मरण करते है और ईश्वरका काम कर लेते है उनको ऐसी आपत्तिसे भी सीख मिल जाती है । दो किस्मकी बाते हो सकती है । एक तो जब आपत्ति आ गई तो आदमी घबराहटमे पड जाता है या तो गुस्सेमे आ जाता है, तब पीछे वह ज्यादा दुख पाता है । लेकिन आपत्तिमे यह सोचे कि हम बेगुनाह है तो भी आपत्ति आती है, लेकिन तो भी हम इस वक्त ईश्वरको भूलने-वाले नही है, उनकी मदद मागनेवाले है । ऐसे लोग उस आपत्तिमेंसे भी सुखको पैदा कर सकते है । काफी लोग जो इधर आ गए है और आश्रित बन गए है वह ताजिर लोग थे, उनके पास काफी पैसा था, दूसरे प्रकारका धन था । बडी-बडी हवेलिया थी वे सब चली गई, खो गई । मैने तो कह दिया है जो जहासे आ गया है जबतक वहा वापिस पहुच नही सकता है, और वहा सही सलामत नही रह सकता है तबतक हमारी दोनो हकूमतोके लिए कष्टकी बात है । अगर हम लोग जिंदा रहना चाहते है, आजाद रहना चाहते है तो कभी न कभी हमे इस तबादलेके पापका पश्चात्ताप करना है । पश्चात्ताप उसका नाम है कि हमने जो भूल की उसको दुरुस्त करे । तब वह सच्चा प्रायश्चित्त है । दूसरा नही हो सकता। जो सचमुच गलतीको दुरुस्त कर लेता है उसका पश्चात्ताप काफी हो गया । गलतिया दुरुस्त करना है तब तो जो लोग आज आए है जान लेकर, जान बचाकर भाग आए है, उनको वापस जाना है । वह जब होनेवाला है तब होगा, लेकिन दरमियानमे क्या करोगे ? मै यह कहना चाहता हू कि दरमियानमे लोगोंको अगर अच्छे डाक्टर लोग मिल जाय—जो निराधार बन गए है उनमे डाक्टर भी रहते है, वकील भी रहते है सब किस्मके

लोग रहते है—वे डाक्टर सेवाका ही काम करे और दूसरे भी जो उनके मातहत पड़े है वे भी ऐसा करे, तब बहुत बुलद काम कर सकते हैं और हम उस आपत्तिमेसे एक नया पाठ सीख लेते है।

मै शरणार्थियोके बीच गया तो मुझे बताया गया है कि उनमे करीब ७५ फी सदी आदमी ताजिर थे। तो मैं चौक उठा कि इतने ताजिर लोग यहा तिजारत कैसे कर सकेगे। लाखोकी तादादमे ताजिर आ गए हैं, वे सब एकाएक तिजारत करने लगेगे तो सब जगह गोलमाल हो जायगा। अगर ऐसे मनमे रक्खे कि हम तो कुछ-न-कुछ मेहनत करेगे, हम नई चीज सीखेगे और वह सीख ले तब तो काम चल सकता है। वर्षोंसे जो ताजिर रहे है वे अपनी तिजारत भूल जाय। जगतमे ऐसा होता है अगर एक चीज नही मिल सकती है तो पीछे दूसरी चीज ढूढो। हम बेकार नही बैठेगे, जुआ नही खेलेगे, शराबमे अपना समय गवाना नही चाहते है कुछ काम तो करेगे ही। मेहनत करेगे। जो ताजिर है लेकिन जिसका शरीर अच्छा है, हाथ-पैर अच्छे चल सकते है वे थोडी मेहनतका काम करे। ऐसी मजदूरी काफी रहती है जिसमे बहुत सीखनेकी जरूरत नही रहती। ऐसी चीजे वह करे और सब मिलजुलकर काम करे। साथमे कैसे काम होता है वह सीख ले। तब हमारे लिए जो यह एक नरक-जैसी चीज तैयार हो गई उसमेसे हम स्वर्ग बना सकते है।

मै समझा रहा था और मैंने सोचा कि आज तो यह चीज अच्छी तरहसे आप लोगोके सामने रक्खूगा और आपकी मार्फत सबको सुना दूगा। जो निराधार लोग पड़े है वे यह सुनेगे और करेगे तो उनको बड़ा फायदा होगा और मुल्कको भी बड़ा फायदा होगा। और जो हमारे ऊपर दुख आ गया है उस दुखमेसे हम सुख पैदा कर लेगे।

इस सिलसिलेमे मै यह कहना चाहता था कि जो रजाइया हमारे पास अभी नही आई है लेकिन हर जगहसे आनेवाली है उसका हम क्या करे? उसमे जो कपड़ा रहता है वह मैला बन गया हो तो उसको निकालकर धो सकते है। उसकी जो रुई पडी है उसको हम रख लेते है। रुई तो बिगड़ती ही नही। उसको सुखा लेते है और उसको हाथसे साफ कर लेते है, धुनकीकी भी जरूरत नही। हा, उसे कातना हो, तब दूसरी

बात है। उस रुईके दुबारा गदेले बनाना है या रजाई बनाना है तो वह आरामसे हो सकता है। मेरी समझमे हाथोसे वह सस्ते दाममे बन सकती है, और जल्दी बन सकती है। मिलोके पास काफी कपडा पडा है। यहा मै खानेकी चीजकी बात नही करना चाहता। काफी कपास पडी है। उसमेसे रजाई बहुत शीघ्रतासे बन जाती है और लोगोको वह दे दी तो जाडेसे वे बच जाएगे। इसलिए यह चीज किस तरहसे हो सकती है वह लोगोको बताना है और पीछे जो एक निराशा फैल गई है उसमेसे हमे आशा खडी करना है। एक भजन है कि आशा तो लाखो निराशामेसे पैदा होती है। यह बात सच्ची है। वह कविका वाक्य है। लाखो निराशामे छिपी हुई आशाको हम देख लेना चाहते है। उसको देखनेके लिए हमको क्या करना है? जितने निराधार लोग बन गए है उनको पहले तो यह समझ लेना चाहिए कि वे सारे हिंदुस्तानके है, पजाबके ही नही, सरहदी सूबेके नही या सिंधके ही नही। जितने सूबे है वे हिदुस्तानमे पडे है सो वहाके लोग हिंदुस्तानके है। एक शर्तसे हम सब हिदुस्तानी बन सकते है और रह सकते है, हम किसीपर बोझ न पडे। जैसे दूधमे मिश्री दाखिल करो तो वह दूधको मीठा बनाती है और दूधमे मिल जाती है और दूधमेसे निकाली नही जा सकती है, दूध वैसाका वैसा रह जाता है, इसी तरहसे मिश्रीकी तरह वे लोग जिधर चले जाय वहा एक-दूसरेके साथ लडते नही रहे, द्वेष नही करे, मिलजुलकर रहे, आपस-आपसमे सहयोग बना ले और सबके सब मेहनती आदमी बन जाते है। तब होता यह है कि जिस सूबेमे वे चले जाते है उसे दुरुस्त कर लेते है। तब सूबेके लोग ऐसा कहेगे कि हमारे यहा ऐसे चाहे जितने आदमी आ जाय उनको हम समा सकते है।

मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि जिन्हे मेरी आवाज पहुच सकती है ऐसे जो निराधार लोग पडे है उनमे जो काम करनेवाले है वे उन लोगोको यह चीज बता दे कि आप भले आदमी बने। किसी जगह भी जाकर बोझ न बने और हर जगह पर रहे तो जैसे मैने बता दिया है इस तरह मुहब्बतसे रहे, साथ-साथ मिलजुलकर रहे। किसीको धोखा न दे। हमको अपना वक्त गवाना नही चाहिए। एक-एक मिनट ईश्वरके

लिए हो, ईश्वरके कामके लिए, सेवाके लिए हो। हम तो सेवाके लिए पैदा हुए है। पीछे हम भूल जायगे कि हम दु:खमे गिरफ्तार होकर पडे थे, शोकमे है। हमारे पास इतने लाखोकी तादादमे लोग पडे है, वे सेवा करे। हम पैदा हुए है सेवा करनेके लिए। हम तय करे कि हम अपने मुल्कको ऊचा ले जायगे, गिराएगे नही। इतना अगर हम सीख ले तो मै समझता हू कि हमारी धन्य घडी होगी और पीछे हमे कोई फिक्र न रहेगी। गलती तो होती है, इन्सान गलतियोका पुतला है। मगर आखिरमे गलतिया दुरुस्त करना भी इन्सानका काम है। हम अपनी गलतिया दुरुस्त कर लेते है तो हम इन्सान बन जाते है।

: ११६ :

१३ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

कल मैने शरणार्थी कैपोके बारेमे कुछ बाते कही थी। अग्रेजी तर्जुमेमे कुछ छूट गया था, आज उसे विस्तारसे कहता हू, क्योकि मै उस चीजको बहुत महत्त्व देता हू। अगरचे हमारे यहा धार्मिक और दूसरे मेले होते है, काग्रेस मिलती है, कान्फ्रेसे होती है मगर आम तौरपर हमे कैप जीवनकी आदत नही। मै १९१५मे हरिद्वार कुभ मेलेपर गया था। मुझे और मेरे साथियोंको भारत सेवक सघ (सर्वेन्ट्स आफ इडिया)के कैपमे काम करनेका मौका मिला था। अगरचे मेरी और मेरे साथियोकी अच्छी तरह देखभाल की गई, मगर मेरे मनपर यह असर पडा कि हमारे लोगोको कैपमे रहना नही आता। हमे सार्वजनिक सफाईकी तरफ ध्यान देनेकी आदत नही। परिणाममे भयानक गदगी पैदा होती है और छूतकी बीमारिया फूट निकलनेका खतरा रहता है। हमारे पाखाने इस कदर गदे होते है कि क्या बात करना। शायद यह कहना ज्यादा सही होगा कि पाखाने बनाए ही नही जाते। लोग समझते है कि पाखाने तो कही भी बैठा जा सकता है। और गगाजी या जमनाजीका किनारा इस कामके

लिए खास पसद किया जाता है। पडोसियोका ध्यान किये बिना, जहां-तहा थूकना तो अपना हक समझा जाता है। खाना पकानेका इतजाम भी अच्छा नही होता। मक्खिया तो हर जगह हमारी साथिन होती है। हम भूल जाते है कि मक्खी एक क्षण पहले गदगीपर बैठी होगी और किसी छूतकी बीमारीके कीडे उससे चिपके हुए होगे। रहनेकी जगह, तबू वगैरह भी ठीक तरीकेसे नही लगाए जाते। मै कोई चीज बढ़ा-चढाकर नही कह रहा। कैंपोमे जो शोर होता है उसकी तो बात ही क्या करना।

तरीकेसे कैंप बनाने और पूरी तरहसे सफाई रखनेके लिए किसी मिलिटरी कैंपको देखिए। मै मिलिटरीकी जरूरत नही समझता। मगर उसका यह मतलब नही कि मिलिटरीमे खूबिया नही। वे हमे नियमनमे, साथ रहने, सार्वजनिक सफाई, समयपर काम करना, हर एक जरूरी कामके लिए वक्त रखना, इन सब चीजोमे पाठ सिखा सकते है। उनके कैंपोमे पूर्ण शाति रहती है। वे घटोमे कैनवसका शहर खडा कर लेते है। मै चाहता हू हमारे शरणार्थी कैंप उस आदर्शको पहुचे। तब वर्षा आवे या ना आवे उन्हे तकलीफ नही होगी।

अगर सब काम करे तो ऐसे कैंप खडे करनेमे बहुत खर्च नही होता। शरणार्थियोको खुद खेमे लगाने चाहिए। खुद सफाई करना, झाडू लगाना, सडके बनाना, खदके खोदना, खाना पकाना, कपडे धोना वगैरह कोई काम ऐसा नही, जो उनकी शानके खिलाफ समझा जाय। कैंपका हर एक काम हर एकके करने लायक है। ध्यानपूर्वक और समझपूर्वक काम किया जाय तो जनताके मनोभावमे यह तबदीली जरूर लाई जा सकती है। तब आजकी विपत्तिको भी ईश्वरकी छिपी प्रसादी समझा जा सकता है। तब कोई शरणार्थी कही भी बोझ रूप नही होगा। वह कभी अकेले अपने-आपका खयाल नही करेगा। बल्कि अपने सब मुसीबत-जदा[1] भाइयोका ख्याल रखेगा और जो दूसरोको नही मिल सकता वह अपने लिए नही मागेगा। यह बात सिर्फ विचार करते रहनेसे नही

---

[1] विपत्ति ग्रस्त।

बल्कि जानकार आदमियोंकी देखरेख और रहनुमाईमे काम करनेसे हो सकती है।

रजाइया और कबल आ रहे है। आशा है जल्दी ही सर्दीसे बचनेका काफी सामान इकट्ठा हो जायगा।

: ११७ :

१४ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भी काफी कबलिया आ गई। यहा एक आर्य-कन्या-विद्यालय है, उसकी दो शिक्षिकाए और विद्यार्थिनिया आ गई थी। उन्होंने पैसा इकट्ठा किया है, वह भी कबलिया लेनेके लिए। वह बिचारी कितनी ला सकती थी। थोडी कबलिया लाई। लेकिन एक बडी बात मुझको सुनाई, मुझे वह अच्छी लगी। उन्होने सुनाया कि जब वह व्रत रखनेकी बात निकली मैने कहा कि महीनेमे कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष होते ही है, तो एक पक्षमे एक दिन सब निकाल दे और उस रोज खाना छोड दे तो जितना बाहरसे खाना आता है वह सबका सब हमे मिल जाता है, क्योंकि इतना बच जाता है। पैसा देकर बाहरसे अन्न लेना मै एक बडा दोष समझता हू। उस दोषसे हम बच जाते है, यह सुनकर विद्यालयकी शिक्षिका ने विद्यार्थिनियोके साथ मशविरा किया। उन्होने किसीको मजबूर नही किया। मगर सबने तय किया कि हम हर गुरुवारको व्रत रक्खेगे और उससे जो बच जाता है वह दान दे देगे। उनके पास जो बचा करता है, वह देनेकी कोशिश करती है। उन्होने यह भी कहा कि थोडी जमीन है उससे हम अनाज भी पैदा करेगी। दोनों काम खुराक बचाना और अधिक पैदा करना हमने अपने सरपर ले लिया है। यह सब मुझको उनकी जो कबलिया और पैसे आ गए है उससे ज्यादा प्रिय था। पीछे एक ईरानके एलची साहब और उनकी धर्मपत्नी आए। थोडा बैठे लेकिन एक बडा ढेर कबलिया दे गए। कहा, यह कबलिया किसीको दे सकते

हो तो दो। मैने कहा, मै तो एक भिक्षुक हू, जितना मुझको मिल जायगा लूगा और उसकी जिसे दरकार है उसे दे दूगा।

मेरे पास काफी सिख भाई आ गए थे। दो-तीन हिस्सेमे आए थे। उनसे काफी बाते हुईं। बाते क्या हुई वह तो मै आपको बताकर क्या करूगा उसमे कोई ऐसी खुफिया[1] बात नही थी लेकिन बातोका निचोड मैने निकाल लिया है और वह यह है कि वह भी पूरा-पूरा समझ जाय और इसी तरहसे दूसरे भी समझ जाय कि हम इस तरहसे आपस-आपसमे लडकर कुछ हासिल नही करनेवाले। न्याय देना, सजा देना, बदला लेना इत्यादि काम करना है तो हकूमत करे। हकूमतके मार्फतसे जितना हो सकता है उतना हम करे। मेरा ऐसा खयाल है कि वह सबके सब इस बातपर राजी है। बाकी हिस्सेको मै छोड देता हू।

पीछे एक तीसरी बात मैने सुन ली। कुछ आदमीको गिरफ्तार किया गया है। हमारी हकूमत है, गिरफ्तार करे तो वह हकूमतके हाथ है। बाज दफा उनसे निर्दोष आदमी भी गिरफ्तार हो सकते है। जान-बूझकर बेगुनाहोको गिरफ्तार करे, ऐसी गलती तो हमारी हकूमतसे होनी नही चाहिए। और स्वच्छदतासे किसीको गिरफ्तार करे ऐसा भी नही होना चाहिए। लेकिन कुछ भी करे आखिर इन्सान तो इन्सान है, गलतियोसे भरा हुआ पुतला है, वह कोई फरिश्ता नही है, वह ईश्वर तो है ही नही। तो गलतिया करेगा। गलतीसे कुछ बेगुनाह आदमियोको पकड लिया तो उसमे क्या आदोलन करना था? लेकिन मै सुनता हू कि कुछ आदोलन हो रहा है कि ऐसे आदमियोको क्यो पकडा, वह तो बेगुनाह आदमी है। बेगुनाह आदमी है या नही वह तो हकूमतको देखना है। हकूमतके पास अगर कोई सामान पैदा करके रक्खे कि फला आदमी बेगुनाह है वह तो मै समझ सकूगा। लेकिन हकूमतको इस तरह हलाक करे, आदोलनके बलसे किसीको छुडवा ले, तो वह ठीक नही है। जब अग्रेजी सल्तनतसे लडते थे और बाज दफा जो जेल वगैरहमे भेजे जाते थे उनके लिए कहते थे कि उनको क्यो नही छोडते, वे बेगुनाह है। वह तो

---

[1] गुप्त।

था लेकिन राज्यकी नजरमे वह गुनहगार थे, हमारी नजरमे नही थे। उस वक्त तो हमने अग्रेजी हकूमतके सामने आदोलन किया कि उन्होंने हमारे नेताओको क्यो पकड लिया। लेकिन आज किसके सामने आदोलन करे। अपनी सारी सरकार पचायती राज है। पचायतके वह प्रतिनिधि है, उन्हे नेता भी तो हमने बनाया है। इसलिए मै कहूगा कि आज वह मौका नही कि आदोलनके दबावसे हम हमारी हकूमतको दबाले। एक तो यह हमारी हकूमत है, उसके पास वह मिलिटरी ताकत नही है जो अग्रेजोके पास पडी थी। अग्रेजोके पास सारी नौका-सेना पडी थी। जिस नौका-सेनाके लिए एक वक्त कहा गया था कि वह अजित है, बेजोड है। आज तो वह दावा नही चल सकता, वह दूसरी बात है। लेकिन कैसा भी हो उसके पास सब पडा था। उसके बल हमारे ऊपर राज्य चलता था। आज हमारे ऊपर हम राज्य चलाते है। अगर हमको मालूम है कि कोई दूसरी ताकत हमारे ऊपर राज्य नही चलाती है और जो राज्य करते है उनको हमने बनाया है तो जिनको हम बनाते है उसको हम उठा भी सकते है। इसलिए मै कहूगा कि ऐसा आदोलन हमे नही करना चाहिए।

चौथी बात मै आपको सुनाना चाहता हू वह यह है, मैने इस बारेमे काफी तो कहा है कि किस तरहसे हिंदुस्तानमे पूरी-पूरी शाति पैदा हो सकती है। यह पेचीदा प्रश्न है। मै कोई खुश नही होता हू कि आज तो दिल्लीमे कुछ गड-बड चलती ही नही। कही एकाध आदमी मार दिया इस तरहसे कुछ चले भी लेकिन जैसा सिलसिलेवार पहले चलता था वैसा नही है। यह अच्छा है। इससे हकूमत तो खुश रह सकती है, लेकिन मै नही रह सकता। क्योकि मै हकूमत करनेके लिए नही आया हू। इत्तफाक[1]से यहा रह गया। मै तो इस उम्मीदमे रहा कि दोनोके दिल फूट गए है, उनको दुरुस्त करना है और ऐसा करनेमे मदद करना है। इससे पहिले भी आपस-आपसमे लडते थे, मगर लड लिया तो पीछे एक हो गए। आज तो हमारे दिल जहरीले हो गए है कि मानो एक-दूसरेके सदियोसे दुश्मन है, इस तरहसे मानना शुरू कर दिया है। हमारे लिए बड़ी नामुनासिब बात है। होना तो

---

[1] सयोग।

यह चाहिए कि हम कोई बुजदिल न रहे, न मुस्लिम, न सिख और न हिंदू। तो पीछे हमको किसीका डर न रहेगा। मुसलमानोको सिखोका डर छोडना चाहिए, और डरके मारे भाग जाते है उसे बन्द करे। हिंदुओको और सिखोको मुसलमानोका डर छोड देना चाहिए। तब, जब हम आपस-आपसका डर छोड देगे और सिख, हिंदू, मुसलमान, जब एक दूसरोसे नही डरेगे तब पीछे हम चाहे तो एक बडी भारी मिलिटरी ताकत बन सकते है। और हम चाहे तो हिन्दुस्तान एक बडी अहिंसक और अजीत सैन्य बन सकता है। दो रास्ते हमारे पास पडे है, तीसरा नही है। आज जो चलते है वह कोई रास्ता नही है। वह तो हैवानियतका रास्ता है। उसमे आगे बढनेका रास्ता नही है। तो मै बतलाना चाहता हू कि किस तरहसे हम एक-दूसरोके नजदीक आ सकते है। सबसे बडी चीज तो यह है कि मुसलमान, हिंदू, सिख एक-दूसरोकी गलतिया निकालते रहे जैसे आज निकालते है, वह छोड दे। सब अपनी गलतिया देखे और अपनी गलतियो-को पहाड-सा बनाकर देखे। ऐसा नही कि मुसलमान कहे कि हमने भी एक जमानेमे गलतिया की लेकिन उसमे क्या हुआ, देखो तो सही हिंदू और सिखकी जो पहाड-सी गलतिया है उनके सामने हमारी गलतिया कुछ भी नही है। और ऐसा ही हम कहना शुरू करदे कि अच्छा चलो हिंदू, सिख है उन्होने गलतिया की है लेकिन मुसलमानोने किया उसके सामने वह कुछ नही। यह जवाब नही। गलतियोका जवाब गलतियोसे दे दिया इसमे कौनसी बडी बहादुरी है? यह तो जगतमे होता आया है। ऐसा कहकर हम हिंदू और सिख अपने दिलको फुसला ले, मै कहूगा कि यह कोई तरीका ही नही है। इस तरह हम कभी आपस-आपसमे दिल साफ करके बैठ नही सकते। आज तो नौबत यहातक आ गई है कि पाकिस्तान सरकार कहती है कि इतने मुसलमानोको हम नही लेगे, तो हमारे दिलमे शक पैदा हो जाता है कि उसमे भी कुछ दगेकी बात है। उसमे दगेकी बात क्या होनी थी। और अगर है तो दगा उसके दिलमे पडा है उससे हमे क्या? हम इतने बहादुर नही रहेगे कि शकसे कुछ न करे, तो पीछे मरनेवाले है। इस बातको मै छोड दू। मै तो इतनी बात कहता हू मुसलमानोको, हिंदुओको और सिखोको कि दूसरेकी गुनाहकी तरफ

इशारा भी न करे। अपने ही गुनाहको कबूल करे। अगर मानते है कि यह गुनाह हुआ है तो उसको कबूल कर लेना चाहिए। मैंने कल कहा कि एक जहरी बात है कि बस हिंदू है वह तो हमारे दुश्मन है। ऐसे हम दुश्मन बने तो उसका नतीजा बुरा ही आनेवाला है। पाकिस्तान तो हो गया उससे क्या? लेकिन हम पागल नही बनेगे। कलतक दुश्मन थे, आज दोस्त बने। लेकिन जब दोस्त बने तब हमे ऐसा कहना है कि हम किसी जमानेमे दुश्मन थे तब हमने दुश्मनी की लेकिन अब तो दोस्त हो गए है। दुश्मनी भूल गए है। हकूमतको हिंदू, सिख और हिंदुस्तानमे जो कोई भी रहता है उनको साफ-साफ दिलसे कहना है कि इतनी गलती तो हमसे हो गई, आपकी गलती हुई है सो आप जाने। मगर हम क्यो गलती करे? नही करेंगे। ऐसा अगर दोनों आपसमे सच्चा मुकाबला करे, एक मुकाबला तो यह है कोई आकर एक मुक्का दे तो हम उसके दो मारे, लेकिन उसके बदलेमे यह मुकाबला करे कि हम तो बदलेमे बेगुनाह ही रहेगे और भले बनेगे। मुकाबला करेंगे भलेपनमे, अच्छा होनेमे, तब मै कहता हू कि हमारे लिए खैर है। तब मै आरामसे दिल्ली छोड सकता हूं। मेरे नसीबमे अगर दिल्लीमे, यही पड़ा रहना है और दिल्ली हीमे मरना है तो मर जाऊंगा। ऐसा करना मै जानता हू, दूसरा मैंने सीखा नही है। मरना तो एक दिन है ही, कर नही सकते हो तो मरो तो सही। लेकिन मारना नही है। मैं तो सबको यही कहता हू कि अरे इतना तो सीख लो। करेंगे या मरेंगे। तीसरी चीज नही है। अब हमे भागना नही। हमारे नसीबमे जो होगा वह दूसरा तो बन नही सकता। हमे किसीसे दुश्मनी नही करनी, वह हिंदुस्तानकी शातिका मार्ग नही है। हिंदुस्तानकी शातिका मार्ग तब हो सकता है जब हम किसीसे लडे ही नही। सब डर छोड़ देते है। मुसलमान यहा रहते है तो रहे। क्या हमे वे मार डालेगे, कैसे मारेंगे, क्यो मारेंगे? क्या सब यहासे हट जायं? क्यो हट जाय और कहा हट जायं? आज पाकिस्तानवाले कहते है कि हम तो इतने मुसलमानोको हजम कर सकते है। मुसलमान तो सारे हिंदुस्तानमे पड़े है। एक छोटा पाकिस्तान पड़ा है, उसमे कैसे सब भरे? वह कहे हम और नही ले सकते तो सुनना होगा। उसमे क्या फरेब पड़ा है?

पडा या नही पडा है, उससे हमे क्या? लेकिन हम इस चीजको तो समझ ले कि हमारे पास हमारे भाई भी पड़े है। मुसलमान अगर बदमाश है तो उसको मारो, कानून करो जो आदमी दगाबाज साबित होगा, हिंदुस्तानका बेवफा साबित होगा, उसको शूट करना है तो करो। पाचको करो, पचासको करो, चार करोडको करो, मुझे कोई परवाह नही है, वह तो मै समझ सकता हू, लेकिन एक आदमी यो ही आकर उसको मार डाले वह कैसे बरदाश्त हो सकता है? नही करना चाहिए। और हम खुद भी ऐसे पागल क्यो बने? ऐसे बुजदिल क्यो बने? इसलिए मैने आपको बतला दिया है कि अगर दोनो हकूमतोको अच्छी तरहसे रहना है तो एक-दूसरेके साथ भलाईमे मुकाबला करे। तुम्हारी गलती ज्यादा है यह बताते रहनेसे हमारी जय नही होनेवाली है। लेकिन हम समझ जाय कि हा, यह सब गलतिया हुई है इनको हम दुरुस्त करेगे। और सब साफ कर देगे तो खैर है। कह तो काफी सकता हू लेकिन आजके लिए मैने आपको काफी कह दिया इतना हजम कर ले तो बस है।

: ११८ :

१५ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास काफी लोग हमेशा आते है। उनमेसे कई लोग शरणार्थियोके लिए कबलिया और कुछ पैसा भी दे जाते है। एक बहनने आज दो हजार रुपएका चेक भेज दिया है। दो भाई मुसलमानोकी तरफसे भी आए है। उन्होने इकट्ठा करके कुछ कबलिया और कुछ पैसे भी दिए है। वे कारीगर लोग है। उन्होने अपने नामतक भी नही बताए। मैने उनसे इन चीजोको अपने-आप अपने पीडित भाइयोमे बाट देनेको कहा था। मगर उन्होने कहा कि हम ये चीजे गाधीके हाथमे ही सुपुर्द करना चाहते है, क्योकि पश्चिमी पजाबमे जो हिंदू और सिख वर्बाद हुए है उनको ये चीजे बटनी चाहिए। मुझको यह बहुत अच्छा

लगा। ऐसे मौकेपर अगर चद मुसलमान भी ऐसा करते है या चद हिंदू और सिख ऐसा करते है तो वह स्वर्ण अक्षरोमे लिख लेना चाहिए। उन्होने कहा कि एक जमानेमे हम आपको मुसलमानोका शत्रु मानते थे, मगर अब हमे विश्वास हो गया कि आप सबके दोस्त है। मै तो हू और मेरा यह दावा भी है। इसके लिए मुझे किसीके प्रमाण-पत्रकी जरूरत नही है। कोई पाच-सात वर्षसे नही, बल्कि ६० वर्षसे इसी धाराके मुताबिक मेरा जीवन चला है।

आम तौरसे यह कहा जाता है कि हर एक सिख मुसलमानोको अपना दुश्मन मानता है और हर मुसलमान सिखको। यह बात बिलकुल गलत है। यह सच है कि काफी तादादमे सिख लोग दीवाने बने, जैसे कि काफी हिंदू और मुसलमान भी बने। मगर यह कहना कि सारी सिख-जाति ऐसी है या सारे मुसलमान ऐसे है, एक बडी अधर्मकी चीज है। मेरे पास तो ऐसे अनेक उदाहरण पडे है जहा सिखो और हिदुओने मुसलमानोको बचाया या मुसलमानोने सिखो और हिंदुओको अपने घरोमे रखकर बचाया। पजाब और सरहदी सूबेमे ही नही, हर जगहसे ऐसे उदाहरण मिले है। अखबारोको ये चीज अच्छे ढगसे छापनी चाहिए। वे हिंदुओंद्वारा मुसलमानोको काटने या मुसलमानोंद्वारा हिंदुओको काटनेकी खबर छापना छोड़ दे। उससे नुक्सान ही होता है। अखबार आजकलकी दुनियामे एक बड़ी सत्ता हो गए है, और यदि चाहे तो वे बडा काम कर सकते है।

(युक्तप्रातीय सरकारकी उस घोषणाकी कि जिसमे कि देवनागरी लिपिमे लिखी हुई हिदीको राजभाषा घोषित किया गया है, चर्चा करते हुए गाधीजीने कहा—)सारे हिंदुस्तानके एक चौथाई मुसलमान यू० पी०मे भरे है। वे उर्दू बोलते है। अगर उनको वहा रहने देना है तो देव-नागरी लिपि नही होनी चाहिए। मालवीयजी महाराजने भी हिंदीके लिए बहुत काम किया था। मगर उर्दू जबानको काट डालो, ऐसा कहते मैने उनको कभी नही सुना। यू० पी०मे आज जिन लोगोके हाथमे सत्ता है वे बहुत बड़े है और अच्छे काम करनेवाले है। वे मुसलमानोको अपने साथ रखते है। मगर एक तरफ तो मै यह कहूं कि मुसलमान

यहांसे न जाएं और दूसरी तरफ उनकी तौहीन[1] करता रहूं और उनको गुलाम बनाकर रखनेकी कोशिश करूं तो फिर वे खुद ही मजबूर होकर चले जाएंगे। मगर मेरी तादाद वहां बहुत ज्यादा है तो क्या मैं इतना घमंडी बन जाऊं कि दूसरे लोगोंको बर्दाश्त ही न करूं। ऐसा तो हममें होना ही नहीं चाहिए। सबको हिंदी और उर्दू दोनों लिपियोंमें लिखना सीखना चाहिए। अगर मुसलमान अपनी खुशीसे जाय तो जाने दिया जाय, मगर हमें तो अपना फर्ज पालन करना चाहिए। आखिर यू० पी०में हर जगह मुसलमानोंकी निशानियां पड़ी हैं। आगरा, लखनऊ, देवबंद, आजमगढ़ आदि शहरोंमें उनकी आलीशान जगहें हैं। वहां काफी राष्ट्रीय मुसलमान हैं। इसके अलावा हिंदू भी ऐसे कितने ही हैं जो केवल उर्दू जानते हैं। सर तेजबहादुर सप्रू तो एक बड़े उर्दूदां हैं। क्या उनको देवनागरी लिपिमें लिखनेके लिए मजबूर किया जायगा? क्या उनसे यह कहा जायगा कि तुम उर्दूको भूल जाओ? क्या हम अपने हाथसे ही अपने हाथोंको काटनेवाले हैं? अगर हमने ऐसा किया तो हमारी ज्यादतीकी इन्तहा[2] होनेवाली है। हम इस तरहसे हिंदू-धर्मकी रक्षा नहीं कर सकते, इसमें मुझे कोई शक नहीं है। हमें पाकिस्तानकी नकल नहीं करनी है। अतः वहांकी हकूमतको, यद्यपि वह मेरे हाथमें नहीं है, मगर मुहब्बतसे मैं उससे कह सकता हूं कि जो सर्कूलर उन्होंने जारी किया है उसे वे वापिस ले लें।

: ११६ :

१६ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

अबतक मैसूरको तो मैं भूल ही जाता था। वहां क्या हुआ यह तो आप लोगोंने देखा होगा। श्रीरामास्वामी मुदालियर मैसूरके दीवान

---

[1] अप्रतिष्ठा; [2] अंत।

साहब है। मैसूर भारतीय यूनियनमे भी आ गया है। वहाके लोग काफी लिखे-पढे है। उन्होने काफी दफा सत्याग्रह किया है और इस वक्त भी उन लोगोकी तरफसे कुछ सत्याग्रह हुआ। वे चाहते थे कि राजतत्रमे काफी हिस्सा लोगोका रहे। राजा लोग तो रहे और जनता उनके प्रति वफादार भी रहे, परंतु वे राजतत्रसे हट जाए। होना भी यही चाहिए था, मगर हुआ नही, इसलिए लोगोने सत्याग्रह किया। सत्याग्रह शुरू करनेसे पहले उन्होने एक तार भी मुझे दिया था, जिसमे उन्होने कहा था कि आपको डरनेकी जरूरत नही, हम बहुत समझ-बूझकर सत्याग्रह कर रहे है और सत्याग्रहके कानूनसे बाहर नही जाना चाहते। उसमे जो तकलीफे आएगी उनको हम बर्दाश्त करेगे। मगर वहांके दीवान श्रीरामास्वामी मुदालियर तो बहुत बड़े आदमी है। उन्होंने सारी दुनियामे भ्रमण किया है। उन्होंने समझा कि आखिर कबतक लोगोको हलाक[1] करते रहेगे? ऐसा कबतक चल सकता है। नतीजा यह हुआ कि जो लोग कैदमे चले गए थे वे छूट गए और मैसूर राज्य और उसके लोगोके बीच एक सुलहनामा हो गया। लोगोकी जो बाकानून शर्तें थी वे राज्यकी तरफसे स्वीकृत हो गईं। मैसूरमे यह जो कुछ हुआ उसके लिए वहांके राजा, दीवान साहब और लोगोको धन्यवाद देना चाहिए। राज्यने वहां लोगोंको राजी रखकर ही काम चलाना कबूल कर लिया है। ऐसे ही और भी काफी राजा लोग पड़े है। वे भी सब ऐसा ही करे और लोगोको राजी रखते हुए इग्लैडके राजाकी तरह राज करे। जो प्रजा कहे वही वे करे और उसके बाहर न जाएं तो कितना अच्छा हो।

दूसरी बात मै यह कहना चाहता हूं कि जहां मै ठहरा हुआ हूं वह एक गृहस्थका मकान है—बिरला भाइयोका। वे सबको आने देते है। हमे उनके इस शिष्टाचारकी कद्र करनी चाहिए। वैसे तो प्रार्थना-सभामे लाखो लोग आए है, मगर यहां तो छोटी प्रार्थना-सभा होती है और मै तो इतनी भी आशा नही करता था। जो लोग आते है उनमें

---

[1] दमन।

पजाबसे आए हुए लोग भी रहते है। मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि कुछ लोग वृक्षोके फल तोड लेते है। किसीको पेडका एक भी फल छूना नही चाहिए। फल तो क्या एक पत्तीतक नही तोडनी चाहिए। यदि लोग इस तरहसे तोडने लगे तो बागके मालीको अच्छा नही लगेगा। फल काटनेका भी एक समय होता है। अत उनके साथ किसीको जबर्दस्ती नही करनी चाहिए। यहा जो लोग आते है वे ईश्वरका नाम लेनेको आते है। कम-से-कम प्रार्थना-सभामे तो हम लोग पवित्र और पाक बनकर रहे। सिवाय भगवानके और कोई चीज दिलमे होनी ही नही चाहिए। तो फिर चोरी हम कैसे करे। हम सब लोग दुखमे पडे है, यह एक दूसरी बात है। परतु हम अपनी सज्जनताको कभी न छोडे।

एक शिकायत और मेरे पास आई है। सारे दिनभर लोग मेरे पास आते रहते है। उनमेसे कोई कहते है कि प्रार्थना-सभामे तुमने सरकारी अफसरो, पुलिस और मिलिटरीकी प्रशसा करके उनको योग्यताका प्रमाण-पत्र दे दिया है। ऐसा मैने कहा तो है नही। यदि कह भी दिया तो बेवकूफी की या असावधानीमे कह दिया। मगर मैने कहा ही नही। मैने यह कहा था कि उन्हे ऐसा होना चाहिए। यह नही कि वे ऐसे है। वह आदमी ऐसा था, एक बात है और वह ऐसा होना चाहिए बिलकुल दूसरी बात है। प्रमाण-पत्र तो मै दे ही कैसे सकता था, क्योकि मै तो किसीको पहचानता ही नही। मुझे क्या पता कि वे सब बाकायदा काम करते है। हमारा धर्म तो है कि जो पुलिस और मिलिटरी कहे, क्योकि वे अधिकारके साथ कहते है, उसका पालन करे।

यदि हम पचायत राज्य चाहते है तो उसका पहला नियम यह है कि वह जो हुक्म करे उसको हम पालन करे। हमने अभी पचायत राज्यका पूरा नतीजा नही पाया है। यदि हम दिलसे अहिसक होते तो आजका यह नजारा हमे देखनेको नही मिलता। फिर भी अग्रेजी हकूमत तो यहासे हट गई। यहा जो गवर्नर-जनरल है, वे नौ सेनाके एक बडे अफसर और बादशाही कुटुबके होनेपर भी आज हमारे नौकर बनकर रह रहे है। हमारा जो प्रधान मडल कहे उसपर उनको चलना पडता है। वे हमारे हाकिम नही, बल्कि हम उनके हाकिम है। इस

प्रकार जो हमारी हकूमत हो गई है वह पचायत राज्य है और उसके हुक्मपर सबको चलना चाहिए। अगर किसीको इन सरकारी अफसरोके खिलाफ कोई शिकायत है तो उसका इलाज यह है कि वे हकूमतके पास चले जाय या अखबारोमे छपवा दे। यदि किसी अफसरने रिश्वत खा ली है या वह निकम्मा है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाय। जो लोग रिश्वत लेते है वे अपने और अपने मुल्कके साथ गुनाह करते है। अभी कुछ मिलिटरीके लोगोने स्टेशनपर कोडा मारना शुरू कर दिया। किसी अफसरको कोडा मारनेका अधिकार ही नही है। मगर हम भी यदि उसके जवाबमे कोडा मारे तो हम भी वही चीज सीख जाते है। स्वराज्यसे पहले तो सरकारी अफसर हमारे नौकर नही, बल्कि हाकिम बनकर बैठ गए थे। वे अग्रेजी हकूमतके प्रति वफादार थे और यदि उस वक्त रिश्वत खाते थे तो अग्रेजी हकूमतका गुनाह करते थे। मगर आज भी यदि वे ऐसा करे तो हिदुस्तानके साथ गुनाह करते है। इतना बडा फर्क हो गया है।

नवाखालीके लोग मेरे पास आ गए है। पूर्वका पाकिस्तान कोई छोटा मुल्क थोडा ही है। उसमे ढाका और त्रिपुरा-जैसे पडे है। उनका कहना है कि ढाकासे हिंदू लोग भाग रहे है। उनको ऐसा लगता है कि यहा कुछ ज्यादती होनेवाली है। इन बगाली भाइयोने मुझसे कुछ कहनेके लिए कहा है। मै तो वही कह सकता हू जो कहता आया हू। किसीको इस तरहसे अपना वतन या अपना स्थान नही छोडना चाहिए। जो बहादुर लोग होते है वे किसीसे डरते नही। यदि डरते है तो केवल ईश्वरसे। उन्हे बुजदिल बनकर भागना नही चाहिए। मरनेकी ताकत उनमे होनी चाहिए। पाकिस्तान हकूमतको वे कह दे कि आप मारना चाहे तो मारो, हम आपको तकलीफ देना नही चाहते। पाकिस्तानके वफादार बनकर हम यहा रहना चाहते है। हम यहा पाकिस्तानकी जड़ काटनेकी बेवफाई नही करेगे। मगर हकूमत यदि चाहे तो हमको काट सकती है, हमारी लडकीको उठा या छीन नही सकती। यदि हकूमत यह कहे कि रामनाम मत लो, तो उसे तो हम लेगे। यदि वह कहे कि दशहरेके दिन नक्कारा न बजाओ, तो नक्कारा हमारा जरूर बजेगा क्योकि वह हमारे धर्मका अग बन गया है। मगर यह बात बुरी है कि बड़े-बड़े

आदमी तो अपनी जान बचानेके लिए भाग जाए और बेचारे मिस्कीन[1] आदमी वहा पडे रहे। वहा शूद्र लोग काफी तादादमे पडे है। वे इतनी बहादुरी कैसे दिखाएगे। अगर मै तिजारत करता हू और मेरे पास काफी पैसे पडे है तो क्या मै भाग जाऊ? वह मेरा धर्म नही है। जो डाक्टर, वकील और व्यापारी वहा है वे इस बातको देखे कि यदि वहासे छोडकर जाना ही है तो गरीब लोग उनसे पहले जाए। गरीब लोगोको वही छोडकर खुद भाग आनेमे कोई इन्सानियत नही है। इस तरहसे वे हिंदू, सिख या इस्लाम-धर्मको बढा नही सकते। आप जहा भी जाए गरीबोको अपने साथ रखे। बदकिस्मतीसे मै आज पूर्वी पाकिस्तानमे नही हू। ईश्वरने मुझको कहा ऐसा बनाया कि मै हर जगह हो सकू। मै तो इन्सान पडा हू और वह भी बहुत मिस्कीन हू। मगर आवाज तो वहातक पहुचा ही सकता हू और वह पहुचा देता हू।

इन बगाली भाइयोने कहा है कि मै हमारे सचिव डा० अम्बेदकर साहबसे भी कहू कि वे इस बारेमे कुछ करे। उन्होने दलित जातियोमे काफी काम किया है। उनको भी इस मौकेपर वहाके लोगोको कुछ कहना चाहिए। वे उनको यह सुना दे कि अपना धर्म छोडकर जिदा रहना पाप समझना चाहिए। ऐसा कहनेसे उनमे एक ताकत आ जाएगी।

मुझसे सुहरावर्दी साहबको भी वहा भेजनेके लिए कहा गया है। उनका जाना भी ठीक ही होगा। मगर सुहरावर्दी साहब यहा है नही। एक-दो दिनमे यहा आ जायगे। मगर ख्वाजा नाजिमुद्दीन तो वहा है। वे भी तो ऐसा कहते है कि पूर्वी पाकिस्तानमे किसी हिंदू या सिखको हलाक नही किया जायगा। सुहरावर्दी साहब भी उनकी मदद करनेके लिए वहा चले जायगे। नही जायगे तो करेगे क्या? आज सबका स्वार्थ इसीमे है कि हिंदू-मुसलमान और सिख सब मिलकर रहे। अगर ऐसा नही होता तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो मर जाते है।

---

[1] दीन।

: १२० :

१७ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास कुछ खत भी आए है और यो भी जो लोग सुनते है वे बताते है कि मेरी खासी अबतक मिटी नही है। मै प्रार्थनाके बाद जब कुछ कहता हू तो भी खासी आ जाती है। मै डाक्टर या वैद्यकी दवाई नही करता हू । डाक्टर कहते है कि जो तीन दिनमे खत्म होनेवाली चीज है उसको तीन सप्ताह लग गए । पेनिसिलीन लेनेसे तीन दिनमे ठीक हो सकती है । लेकिन मै समझता हू कि रामनाम सबसे ऊची दवा है। वह रामबाण दवा है । जैसे रामका बाण काम करता था और जाकर कभी निष्फल नही होता था, वैसे ही यह दवा कभी निष्फल नही जाती । लेकिन धीरज तो चाहिए। इस अवस्थामे और आजकल दिल्लीमे क्या सारे मुल्कमे जो चल रहा है उसमे मै अपने लिए दूसरा कोई चारा नही पाता। सिवा ईश्वरकी मददके और कोई चारा ही नही है। मै मनुष्यकी हैसियतसे कितनी ही कोशिश करू वह सब निष्फल होती है। मेरे शब्द एक जमानेमे बड़ा असर रखते थे, आज वे नही रखते। तो क्या मै कोई गुनहगार हो गया हू या पहले दिलसे बात करता था आज दिलसे नही करता ? मै तो दिलसे ही करता हू और आप भी सुनते है । लेकिन युग बदल गया है । युगकी तासीर[1] होती है, होनी चाहिए और हो भी रही है। लेकिन मुझपर नही होनेवाली है । मै नही होने देता। मै तो जैसा था वैसा ही हू । मै जानता हू कि मै जैसी बात कहता था वही बात आज भी कहता हू । मेरी सत्य और अहिंसापर पहले जो श्रद्धा थी, वह अब भी है और हो सकता है कि आज ज्यादा है। युग बदल गया है मगर मै तो नही बदला हू । श्रद्धासे जो प्रार्थना सुनते है उनपर असर होता है । आदमी स्वभावसे जैसा बना है वैसा ही कर सकता है। इसमे कृत्रिमताको कोई स्थान नही है।

---

[1] असर।

आज जो काम कर रहा हू वह रामका नाम लेकर कर रहा हू। उसपर मेरी श्रद्धा है। तो क्या वजह है कि इस मामूली व्याधिके लिए छोड दू। या तो यह व्याधि दूर हो जाती है या मुझको दूर कर देती है। आदमी मर जाता है तो कौन-सी बडी बात है? सबके जन्मके साथ मरण भी लिखा है। अगर रामको मुझसे काम लेना है तो जिंदा रखेगा और अगर नही लेना है तो मुझे इसी खासीसे मार डालेगा। अभी लडकीने जो राम-नामका भजन गाया है उसमे कहा है कि तू रामनाम ले, तू कामको भूल जा, क्रोधको भूल जा, रागको भूल जा, मोहको भूल जा, लेकिन रामनामको मत भूल, वही तेरा सहारा है। भजनको गाना और चिंतन करना तेरा काम है। लेकिन ऐसे मौकेपर जब खासी आती है तो डाक्टर या वैद्य बताते है कि तू पेनिसिलीन ले। वहा रामनाम कहा आया। जब इसी छोटे काममे रामनामपर श्रद्धा नही होगी तो वडे काममे उससे मै कैसे सफल होऊगा। इसमे मै अपने पुरुषार्थसे काम न करू'तो हीन बन जाऊगा, निकम्मा वन जाऊगा। दूसरे चाहे न समझे मै अपनी दृष्टिसे वहुत हीन वन जाऊगा। इस मामूली-सी खासीको हटानेमे रामनामको क्यो भूल जाऊ।

हमेशा जैसे आते है आज भी कवलिया आ गई। कुछ चेक भी आ गए। वडे शौकसे एक मुसलमान भी लिहाफ दे गए। उसमे ढाई रतल रूई है। जिनके पास नही है उनके पास ये पहुचनी चाहिए और उनके पास पहुचानेकी चेष्टा की जा रही है। कहते है कि लोगोको जितने उत्साहसे भेजनी चाहिए उतने उत्साहसे नही भेज रहे है। मै तो लोगोको धन्यवाद ही देना चाहता हू कि वे इतनी तेजीसे कवलिया भेज रहे है और पैसे भी भेज रहे है। कुछ लोग पैसा इसलिए भेजते है कि वे कवलिया सस्ते नही खरीद सकते और कहते है कि तुम सस्ते खरीद लो।

राजेद्रवावूने खुराकके वारेमे एक कमेटी वुलाई थी। कपडेके वारेमे उसमे कुछ नही हुआ। कपड़े और खुराकके वारेमे महीनोसे जिस चीजको मै मानता आया हू उसीपर मै आज भी कायम हू। मै मानता हू कि गरीव लोग उससे परेशान होते है और वह परेशानी और भी वढ जाएगी। मुझको कोई खत लिखता है और जो किसानोमें काम करते

है वे कह गए है कि जो तुमने कहा है उससे किसान लोग बहुत खुश हो गए है। उनपर जो अकुश लादा गया है उससे तो वे छूट जाएगे। उनको कुछ तो मौका मिल जाएगा। उनके यहा अनाज तो भरा पडा है। वे सारा अनाज क्या खाएगे ? पैसा भी उनको पैदा करना है तो क्या वे अनाजपर ब्लैक मारकेट करेगे ? किसान वेचारे स्वभावसे सीधे होते हैं, उन्हे ब्लैक मारकेट क्या करना है। थोडा दस-बीस रुपया उनको मिल जाय, इसीलिए वे खुश हो रहे है। उनको ब्लैक मारकेट या प्रपच क्या करना है। इसीलिए मै फिर कहूगा और आपके मारफत हकूमतको भी कहूगा कि आखिर इतनी श्रद्धा तो लोगोपर रखो। इतनी हिम्मत क्यो नही करते कि राशनिगको छोड दो। उसका नतीजा कभी बुरा नही हो सकता। लोग बदमाश हो गए है और अनाजको छिपा बैठे है ऐसा मानकर आप क्यो बैठ गए है। आखिर हकूमत तो आपके हाथमे पडी है। दुबारा करना हो तो फिर करो। इतनी भी हिम्मत आप न रखे और उसके कारण लोग इतने परेशान हो कि उसका कुछ हिसाब नही मिलता। जो पचायतका स्वभाव है वही होना चाहिए।

मिल-मालिक कहते है कि उनके पास कपडेका ढेर लग गया है, उसपर अकुश है, वे कैसे निकाले ? वे अपने फायदेकी बात नही करते ऐसा मै मानता हू। बिल्कुल लोगोकी दृष्टिसे ही बात करते है। अगर छूट दे दी जाय तो जो कपडा पडा है वह लोगोतक पहुच तो जाए। यह कितनी भयानक बात है कि हिंदुस्तानमे अनाज तो पडा है, लेकिन जिनके पास पहुचना चाहिए उनके पास पहुच नही रहा है। मुझे ऐसा लगता है कि इसमे कोई बडा दोष है। हमारे सिविल सर्विसके लोग कुर्सीपर बैठे-बैठे काम करना चाहते है। उनके सामने टेबुल है, डेस्क है, लाल पट्टी है, बैक्स है और लाल पट्टी लगाना, फाइल बनाना यही उनका काम रहता है। कब वे किसानोके बीच रहे है ? किसानोका कब उन्होने परिचय किया है ? बडे अदबसे मै उनसे कहूगा कि आप ऐसा क्यो मान बैठे है कि लोग मर जाएगे ? आपके अकुशसे लोग मर रहे है यह तो हम अपनी खुली आखोसे देख सकते है। जो लोग बदमाशी और पागलपन करनेवाले है वे अब भी कर रहे है, लेकिन उनकी अच्छी चीजे छिप

जाती है। मै तो कहूगा कि दोनो चीजे जितनी जल्दी हो सके निकाल देनी चाहिए। अगर स्टाक थोडा भी पडा है तो भी लोग जाग्रत हो जाएगे। कपडा, अनाज और सब चीजोके दाम जो आज बढ गए है वे गिर जाएगे। जग तो अब है नही और हिंदुस्तानसे बाहर कुछ जाता नही है, लकिन दाम बढता ही जाता है। यह बडी नामोशी[1] की बात है। हमारा सिर झुक जाता है। ऐसा मै मानता हू। सरकारको लोगोपर श्रद्धा रखना चाहिए और हिम्मत रखनी चाहिए। हिम्मतके साथ हम जितनी जल्दी हटा सके हटाना चाहिए। ऐसा मेरा विश्वास है और यह विश्वास मेरा दिन-पर-दिन बढता जाता है।

आज तो हम बेचैनीमे बैठे है। दिनभर हम यही बात सोचते रहते है कि मुसलमान मार डालेगे, हिंदू मार डालेगे, सिख मार डालेगे। यही काम रहता है और कोई बेहतर काम दीखता ही नही। वैमनस्य तो है मगर उसका विचार करनेसे हम उसे भूलनेवाले नही है। हमारा शास्त्र भी कहता है कि जो उसका विचार करता रहता है वह उस समय बन जाता है। उसका जहर चढ जाता है। उसका नशा हमको भी हो जाता है और हम भी यही सोचने लगते है कि मुसलमानोको काटो और मुसलमान सोचते है कि हिदुओ और सिखोको काटो। अगर हम ऐसा ही सोचते रहे तो यह हमारा स्वभाव बन जाएगा। क्या आजादीमे हमारा यही हाल होनेवाला है? इसका नाम पचायती राज मै कभी नही कह सकता।

दक्षिण अफ्रीकासे मेरे पास तार आया है। तारमे वे लिखते है कि तुमने (गाधीजी) हमपर बडा उपकार किया है। मैने क्या उपकार किया, जो मुझे अच्छा मालूम हुआ उसे कह दिया। सत्याग्रहमे यह बडा गुण तो पडा है। जब पजाबमे मार्शल-ला चलता था तो उसमे बडी ज्यादतिया होती थी। लाखो आदमियोको पेटके बल चलना पडता था। पेटके बल वे चलते थे, क्योकि उनको अपनी जान प्यारी थी। वे चले। उस गलीका नाम मै भूल गया—वह छोटी-सी गली अमृतसरमे है। पेटके

---

[1] शब्द 'नामूसी' है जिसके माने है बदनामी।

बलसे सिर्फ जिंदा रहनेके लिए चलते थे। नही चलोगे तो मार डाले जाओगे, ऐसा उनसे कहा जाता था। सिर्फ जिंदा रहनेके लिए उन्हे ऐसा क्या करना था, वे खडे होकर कहते कि हम ऐसा नही करेंगे—'कदी नही हारना भावे साडी जान जावे।' यह सत्याग्रहमे बिल्कुल सही है कि चाहे जान चली जाए, पैसा चला जाए, लेकिन हारना नही। उसमे सत्य आ जाता है। असत्य काम करनेसे उसमे असत्य आ जाता है। दक्षिण अफ्रीकामे चाहे लोग मुट्ठीभर क्यो न हो उससे क्या हुआ—ऐसा करनेवाले करोड़ो हो कैसे सकते है। वहा लाखोकी तो आबादी ही है। यदि सैकडो क्या, दस भी ऐसे मिल जाए तो वे हिंदुस्तानका नाम करनेवाले है। वे कहते है कि तुम यहाके लोगोको यह भी क्यो नही कहते कि वे पैसे भेजे। वह मुझको चुभता है। वे मिस्कीन नही है। दक्षिण अफ्रीकामे वे पैसा कमाने गए है, लेकिन हमपर उपकार करने नही गए। जो वहा लडनेवाले लोग पडे है उनके पास पैसे ज्यादा नही है और पैसेवाले उनको पैसे नही देते। जो पैसेवाले होते है उनको पैसा ही प्रिय हो जाता है। वे अपना मान और सम्मान पैसेमे ही समझते है। हम तो लडनेवाले है, लेकिन पैसे थोडे है, लेकिन पैसे नही तो अबतक कैसे चलता रहा।

पूर्वी अफ्रीकामे हमारे लोग बहुत है और पूर्वी किनारा तो हमारे लोगोसे भरा पडा है। मै उनसे कहूगा कि वे पैसे भेजे। हमारा हिंदुस्तान तो आज मिस्कीन-सा बन गया है। किस मुहसे मै यहा किसीसे कहू। यहा करोडपति तो है और करोडो कमा भी रहे है, कितु उनपर टैक्स वगैरह लगा देनेसे उनके पास भी कम पैसा रह गया है। हमारी कम-नसीबीसे लडाई भी कर रहे है। उसमे भी करोडोका नुकसान हो जाता है। मै कैसे कहू कि दक्षिण अफ्रीकामे भेजनेके लिए पैसे दो। दक्षिण अफ्रीकामे मै जब था तब आप लोग पैसे भेजते थे—गोखले महाराज पैसे भेजते थे। पजाब और सारे हिंदुस्तानने मेरे पास ५ से ७ लाख रुपए-तक भेजा। आज तो मैं ऐसा नही समझता कि मै ऐसा कह सकता हू। मारेशसमे बहुत हिंदी पडे है—वे वहा कुली है। वहा हिंदू-मुस्लिम-सवाल नही है। मुबासामे भी काफी हिंदी पडे है। उनके पास पैसे भी है।

वे शराब पीते नही है, रडीबाजी भी नही करते। उन्हे खानेके लिए पैसे चाहिए। खानेमे कितना पैसा लगता है ? वे कह सकते है कि हम अपने लिए थोडे लड रहे है—हिदुस्तानके लिए लड रहे है। हा, मै यहासे पैसे भेजनेवालोपर रुकावट नही डाल सकता, लेकिन कह नही सकता कि आप लोग पैसे भेजे।

: १२१ :

१८ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कबल और चेक आ तो अब भी रहे है, किंतु उनकी गति सतोष-जनक नही है।

मैने देखा है कि सरदार पटेलने भी एक निवेदन निकाला है, जिसमे उन्होने भी लोगोसे भिक्षा मागी है। वह बताता है कि अगर हकूमतकी ओर देखकर बैठे तो काम निपट नही सकता। हकूमत उसतक पहुच नही सकती है। अच्छा है उन्होने भी निवेदन निकाल दिया। जो लोग आज जाडेको बर्दाश्त नही कर सकते उनके पास किसी-न-किसी तरह ओढने और पहननेको कुछ पहुचाया जा सके तो बडी अच्छी बात है।

डाक्टर सुशीला नायर भी यही काम कर रही है। वह हमेशा पुराने किलेमे जाती है और इधर-उधर भी जाती है। आज कुरुक्षेत्र चली गई है, क्योकि वहा एक नया शिविर बन गया है। वहा सब लोग इतजाम तो कर रहे है, लेकिन वह बडी डाक्टर है। उनके साथ दूसरी लेडी डाक्टर भी गई है। दूसरे लोग भी गए है। श्रीमती जान मथाई भी गई है। उन लोगोको जितनी मदद पहुचाई जा सकती है पहुचाई जाए।

कल मैने आपसे हिदुस्तानीके बारेमे बातचीत की थी। अब उसके बारेमे काफी लोग मुझे लिख रहे है कि आप यह कैसा भद्दा काम कर रहे है। मै मानता हू कि यह भद्दा काम नही है। मै समझता हू कि

मैं हिंदुस्तान और सबके लिए बड़ा अच्छा काम कर रहा हूं। उससे उसकी खिदमत होती है। वे लिखते हैं कि आखिरमें हिंदुस्तानीका जो सिलसिला चला वह ऐसे जमानेमें चला जब कि हम कुछ गिरे हुए थे, गुलामीमें थे। हम यह भूल जाते हैं कि जो लोग आए थे वे आए तो थे चढाई करनेके लिए, लेकिन रह गए इसी मुल्कमें। इस मुल्कमें किस तरह जीवन बसर हो सकता है यह उन लोगोंने सोचा। सच पूछिए तो उसीमेंसे पीछे उर्दू निकली और उसे ठेठतक पहुंचा दिया गया। चलते-चलते उसमें उन्होंने ठूस-ठूसकर अरबी और फारसीके शब्द डाल दिए। उसको जामा भी पहना दिया। उसका व्याकरण भी वहींसे है। हिंदुस्तानीमें तो ऐसा नहीं है, उसका व्याकरण भी यहांका है। उर्दूमें जो फारसीके शब्द हैं वे वर्षोंसे हैं। उनको चुन-चुनकर निकाल देना हमारा धर्म थोड़े ही हो जाता है। जो यहां आए पीछे वे यहीं रह गए। उन्होंने यहांके रीति-रिवाज सब ले लिए। उससे हमारा आज द्वेष करना तो निजी द्वेष हो जाता है, ऐसा मैं मानता हूं। लेकिन आज जो कहता हूं उसका तो दूसरा सबब है। मैंने काफी लिखा है। अंग्रेजीका तो ऐसा है कि अंग्रेज यहां सल्तनतके लिए आए थे। उनका दिमाग ऐसा नहीं चलता था। वे हिंदुस्तानके तो होकर बैठे नहीं। वे यहां बसनेके लिए थोड़े आए थे। वे हमेशा ऐसा सोचते थे कि वे बाहरके हैं, बाहर ही रहेंगे, बाहर ही पलेंगे और बाहर ही उनके बच्चे पलेंगे। पीछे उन्होंने अंग्रेजी भाषा भी दाखिल कर दी। उन्होंने धीरे-धीरे उसका ढांचा भी बनाया। वहां तो ऐसी कोई बात नहीं हुई जो उर्दूमें हुई। उर्दू तो अवधी या उस वक्त जो और दूसरी तीसरी भाषाएं चलती थीं उनमेंसे निकली। लेकिन अंग्रेजीका यह हाल नहीं है। आज तो यह ठीक है कि अंग्रेजी हकूमत हमारे घरसे चली गई है, लेकिन अगर अंग्रेजी भाषाकी हकूमत हमपर चले, वह हम-पर काबू करे, हम उसके बिना कारोबार चला न सकें तो हमारा क्या हाल होगा? क्या करोड़ों लोग अंग्रेजी सीखेंगे? क्या अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा होनेवाली है? बहुत साफ-साफ मैं कहना चाहता हूं कि वह तो कभी हो ही नहीं सकती। इसमें पड़नेकी कोशिशतक न करें। यदि करते हैं तो इसमें हमें हारना है।

एक सज्जन लिखते है कि तुम तो भूल जाते हो। हिंदुस्तानमे जो लोग काम करनेवाले है वे सब अंग्रेजी पढे-लिखे है। अंग्रेजी पढे-लिखे मुट्ठीभर है। ठीक है कि वे कोर्ट दरबारमे चले जाते थे और वहा अंग्रेजीमे काम करते थे, क्योकि उनका उनपर प्रभाव चलता था। जो गुलामीमे रहता है उसकी तो यह आदत हो जाती है कि वह राज्यभाषाको पसद करे। यह तो हुआ, मगर वे बेचारे जिनकी मातृभाषा हिंदुस्तानी या हिंदी है, वे अगर कही कोर्ट दरबारमे जाए और अंग्रेजीमे सब काम चले तो वे समझेगे ही नही। यह तो हमारा अक्लका दिवाला निकालना हो गया। हम बिल्कुल समझना नही चाहते। हमारा स्वार्थ किसमे है वह भी हम समझना नही चाहते। अब अंग्रेजी सल्तनत तो चली गई। उसके साथ ही अंग्रेजी जबानको भी उस जगहसे निकालना होगा जो हमने उसे दे दी है, और जिस जगहके लिए वह हो नही सकती। एक भाई मुझको लिखते है कि यह जो तुम कहते हो उसमेसे तो एक चीज और निकल जाएगी। लोग तो ठीक-ठीक मतलब लगाते नही है।

आज हम दीवाने जो बन गए है। हिंदू मुसलमानसे लडाई करे, उसके साथ न बैठे, उसका गला काटे, यही रह गया है। राजकुमारी अमृतकौर, जो कल या परसो ही शिमलेसे लौटी है, मुझको सुनाती थी कि शिमलेमे जो गरीब लोग वर्षोसे पडे है उन्हे वहासे हटना है, क्योकि वे लोग मुसलमान है। हम ऐसे जाहिल बन गए है। उनको हटनेमे कितनी तकलीफ बर्दाश्त करनी पडी। पाकिस्तानमे काफी हिंदू पड़े है—वे भी यही शिकायत करते है। यह सब सिलसिलेवार चलता गया।

कुछ लोग कहते है कि सस्कृतमयी जो हिंदी है वह राष्ट्रकी जबान है। अंग्रेजी तो अब जानेवाली है। मगर लोग सूबेकी भाषामे अपना काम चलाएगे। वहा झगडा होनेवाला है ऐसा डर है, और सही है। उसमे आपसमे घृणा पैदा हो जाएगी। अंग्रेजी तो रह नही सकती क्योकि अंग्रेज तो अब मुट्ठीभर है। वे हकूमत तो चला नही सकते।

: १२२ :

१६ अक्तूबर १६४७

भाइयो और बहनो,

आप लोग महसूस करते हैं कि ६ बजे प्रार्थना जो शुरू करते हैं उसमे देर हो जाती है, क्योकि दिन छोटे ही होते जाते हैं। रोज दो-तीन मिनट कम हो जाते हैं। इस तरहसे प्रतिमास १५ मिनट कम हो जाते है और दिसबरकी २३ तारीखको तो दिन कम हो ही जाता है। आजकल अधेरा जल्दी हो जाता है। इसलिए कलसे प्रार्थना ५।। बजे होगी।

आजका भजन तो आपने सुन लिया। मेरा खयाल है कि उस भजनका करुण हिस्सा मैंने आपको नही सुनाया है। यो तो एक भजन-माला बन गई है। वह जो भजन-माला है उसमे जितने भजन है उसका कुछ-न-कुछ इतिहास है ही। उसमे कोई सब गिने-चुने तो नही है। हा, चद गिने-चुने भी है, लेकिन सारा-का-सारा सग्रह आश्रममे तैयार हुआ है। आश्रममे एक बडे भक्त थे जो सगीत-शास्त्री भी थे। उनका नाम गणेश शास्त्री था। उन्होने भजनोका यह सग्रह किया। हा, उन्होने मदद ली काका साहबकी भी। उसमे यह भजन था। यह भजन तो मेरा भतीजा मगनलाल गाधी गाता था, जो दक्षिण अफ्रीकाके आश्रम-मे मेरे बहुत साथ रहा था। ऐसा सग्रह तो बहुतोने किया, अकेला गणेश शास्त्रीने थोडे किया। हम आखिर इन्सान पडे है तो जब थोडा-सा भी सत्याग्रह लबा हो जाता है, क्योकि उस जमानेमे तो लडाई चल रही थी सत्याग्रहके मारफत स्वराज हासिल करनेकी। थोडेसे वर्ष बीत गए तो कई लोगोको चोट लगी कि अभीतक हमको स्वराज नही मिला। उसमे हमारी कोई गलती होगी—ऐसा ही मानना चाहिए यही अच्छा है। आदमीको तो ऐसा ही मानना चाहिए कि कोई चीज टेढी हो जाती है तो उसका सबब दूसरा है। हमारा पडोसी है, या हमारा भाई है, हम नही है—यह शुद्ध रास्ता नही है, अशुद्ध है। दूसरोपर सब कुछ दोष डाल देना या जब कुछ

टेढी हो जाती है तो उसमे दूसरोका दोष है, हमारा तो है ही नही, ऐसा मानना गलत है। जितने भक्त हो गए है उन्होने यही कहा है। तुलसीदासजी भी वही कहते है, या कहो कि सूरदासजी भी वही कहते है 'मो सम कौन कुटिल खल कामी', मेरे-जैसा कुटिल कौन है, खल कौन है, कामी कौन है? तुलसीदासजी या सूरदासजी ऐसे नही थे हमारी दृष्टिमे, अब वे अपनी दृष्टिसे ऐसा मानते थे। जितने ईश्वरसे दूर रहते थे उससे कुछ गुस्सा होता था, पीछे चाहे भाई, बहन, लड़के, दोस्त सब क्यो न पास हों। उसके दिलमेसे यह आह निकलती है कि कुटिल, खल, कामी कौन होगा? ऐसा उन्होने कह दिया और वह अच्छा है कि वे हमेशा अपना दोष अपनेमे ही ढूढते रहे। ऐसा ही यह भजन है—'अजहु न निकसे प्राण कठोर'। वह कहता है कि अब-तक ईश्वरके दर्शन न हुए तो अबतक प्राण क्यो न निकले? हमेशा तो इस भजनको गणेश शास्त्री गाते थे, लेकिन बाज दफा जब वह हाजिर न होता या बीमार पड जाता तो मगनलाल उसको गाता था। वह सगीत-शास्त्री तो नही था लेकिन उसका कठ अच्छा था। उसका वह भजन अब भी मेरे कानोमे गूजता है। वह तो आश्रमका स्तभ था। आश्रमको चलानेमे वह पहाड-सा था, बहुत मजबूत। कुदाली अपने आप चलाता था तो सबसे आगे चला जाता था। दक्षिण अफ्रीकामे तो उसका शरीर बहुत मजबूत था। यहा उसको कोई बीमारी तो नही थी, लेकिन शरीर क्षीण हो गया था, क्योकि उसपर सारा बोझ तो वहापर भी था, लेकिन यहा तो एक अनोखी चीज यह है कि करोडो आदमियोमे काम करना पडता था। रचनात्मक कामका भी बोझ उसपर पडता था। रचनात्मक कामके बिना हम रह भी कैसे सकते है। उसके बगैर स्वराज चीज हो भी क्या सकती है? आज स्वराज तो मिला, लेकिन उसकी कितनी कीमत है? मिला तो भी क्या, आज हम सिद्ध करते है कि अगर हम रचनात्मक काम उस वक्त कर लेते तो हमे यह वक्त नही देखना पडता जो हम आज प्रत्यक्षमे देख रहे है। स्वराज्यकी जो कल्पना हमने की थी और वह कल्पना बढ भी गई थी, क्या वह यही है? अगर उस वक्त हम इतना कर लेते

तो आज हिंदुस्तानका इतिहास अनोखा होनेवाला था, इसमे मुझे कोई शक नही। मगनलालका जो भगवान था वह तो स्वराज्यमे ही था। उसका स्वराज्य तो राम-राज्य था।

भगवानके दर्शन तो स्वराज्यमे ही हैं। भगवानका कोई शरीर थोडा है। कोई कहते है कि वे चतुर्भुज मूर्ति हैं—उनके हाथोमे शख, चक्र, गदा, पद्म है। यह सब हमारी कल्पना है। ईश्वरके पास शख, चक्र, गदा, पद्म क्या होना था। वह तो निरजन और निराकार है, वह तो देहातीत है तव उसकी देह कहासे? हम मनसे कल्पना कर लेते है, मान लेते है। तो फिर हम अपना भगवान कहा देखे? उसको हम अपने कर्मोमे देखे। अगर यज्ञ समझकर कार्य करे तो भगवानकी स्थापना होती है, जैसे कि एक आदमी चर्खा चलाता है और सूत कातता है तो वह उसी सूतके धागेमे भगवानका दर्शन करता है या करती है। जब उसके दिलमे ऐसा है कि सारी दुनिया हमारी है और हमारी दुनिया तो भारतवर्ष है, जहा गरीब है। उनको खानेको नही मिलता। उनके निमित्त या दरिद्रनारायणके निमित्त जो वह एक धागा निकालता है उसमे वह भगवानका दर्शन करता है। स्वराज्य तो तव दूर था, लेकिन जव आश्रम चलता नही था तब मगनलालके दिलसे वाज दफा यह आह निकलती थी 'अजहु न निकसे प्राण कठोर।' अवतक भगवानका दर्शन नही हुआ तो भी यह प्राण क्यो नही निकला? पीछे वह कहता है कि चारो प्रहर चार युग-से वीते है। याने चार पहरकी जो रात्रि थी वीत गई, लेकिन मेरे प्राण तो नही गए। उसको चार पहर चार युगके-से लवे लगते है। मुझको भी ऐसे ही लवे लगते है। अवतक हमे स्वराज्य नही मिला था, लेकिन १५ अगस्तको तो वह मिल गया, यह माना, लेकिन मै उसे स्वराज्य नही मानता हू। मेरी व्याख्याका तो स्वराज्य मिला ही नही और न यह स्वराज्य राम-राज्य हो सकता है। आज तो हम एक दूसरेको दुश्मन समझकर वैठ गए है। हिंदूके दुश्मन मुसलमान है और मुसलमानके दुश्मन हिंदू और सिख है। हम दुनियामे किसीको दुश्मन वनाना नही चाहते और न हम किसीके दुश्मन वनना चाहते है, यह मेरी व्याख्याका स्वराज्य है। तो

वह अभी आया नही है। हिंदुस्तानमे क्या मुसलमान हिंदूके दुश्मन बने और हिंदू मुसलमानके दुश्मन बने? क्या हमारे भाई आपस-आपसमे दुश्मन बनेंगे? तो मै यह क्यो कहता हू, एक दफा तो थोडा-सा कह दिया था लेकिन मै बार-बार यही कहना चाहता हू कि अगर हम सचमुच ऊपर जाना चाहते है तो हम भाई-भाई बनकर रहे। आज तो हम गिर गए है और अभी भी शायद गिरते जा रहे है। हमारे दिलमे खून भरा है, द्वेष भरा है, हम मुसलमानको देखकर भडक जाते है, उसको मस्जिदमे ईश्वरको भजता हुआ देखते है तो उसको मार डालते है, उसको अपना दुश्मन मानते है और सोचते है कि कब उसको यहासे निकाल दे, उसकी मस्जिदको मदिर बना ले। और उसमे क्या गुनाह हो गया है, जैसा मदिर है, वैसी ही मस्जिद है, फिर क्या चीज है इसमे कि मुसलमान मदिरको ढा दे और हिंदू मस्जिदको ढा दे। ईश्वरकी दृष्टिमे दोनो ही गुनह-गार है। जो हम करे वह मुसलमानको बुरा लगे और जो मुसलमान करे वह हमे बुरा लगे तो वह स्वराज्य कैसे हो सकता है? आज तो हम ऐसा बन गए है, लेकिन हम इस अगारमेसे निकलना चाहते है।

वह तो मैने कह दिया कि दिल्लीमे मै 'करू या मरू', ऐसा कहकर आया था। किया तो नही, हां यह ठीक है कि अब हमेशा लडाईकी खबर आती नही और यो लगता है कि हम भाई-भाई-जैसे पडे है, लेकिन यह तो मनको धोखा देनेकी बात है। जो मिलिटरी और पुलिस यहा पडी है, यह तो उसकी वजहसे है। जो चद मुसलमान है क्या उनके दिलमे ऐसा होगा, क्या मेरे दिलमे भी ऐसा होगा। मै तो ऐसा नही समझता। मेरे पास भी यहा मुसलमान है। क्या आप यहा भी उनका अपमान करेगे? ? क्या आप मेरे देखते उनको मार डालेगे? उनके मारनेके पहले आपको मुझे मारना होगा। शेख अब्दुल्ला साहब कल यहा पीछे बैठे थे। कुछ काश्मीरी पडित भी उनके साथ थे। शेख साहब हमारे दोस्त है। हमारे रफी साहबके भाईको भी किसीने काट डाला मसूरीमे। कितना बेगुनाह आदमी था। हमारा तो वह खादिम[1]

---

[1] सेवक।

था। उनकी विधवा बेगम यहा आकर बैठी है। लोगोके दिलमे घृणा न हो, इसलिए मै इस करुण कथाको खोलना नही चाहता। बहुत बाते भरी है मेरे दिलमे। बहुत कुछ जानता भी हू; लेकिन मै उस कथाको बढाना नही चाहता। लेकिन निचोड तो बता दू। अगर हम ऐसा बने, जैसा गाते है कि जब हम भगवानका दर्शन नही करते है तब यह प्राण क्यो नही निकल जाता, ऐसी आह दिलमे निकले तो उसका पहला कदम यह है कि हम अपने दोषोको पहाड-जैसे देखे और दूसरोके दोषोको नही। अगर हम सारी दुनियाके सामने यह जाहिर करे कि हमारा ही सब दोष है, दूसरे सब भले आदमी है तो वह बुजदिली नही है, इससे हम गिरते नही है, हम बढते ही है। हम बहादुर बनते है।

अगर हम रामराज्य या ईश्वरका राज्य हिंदुस्तानमे स्थापित करना चाहते है तो मै कहूगा कि हमारा प्रथम कार्य यह है कि हम अपने दोषोको पहाड-जैसे देखे और मुसलमानोके दोषोंको कुछ नही। मै यह नही कहता कि मुसलमानोने कुछ नही किया। बहुत किया है। छिपाकर रखना या उसे मै नही जानता, ऐसी बात नही है। लेकिन जानते हुए मै ऐसा नही देखूगा। देखूगा तो दीवाना बन जाऊगा, हिंदुस्तानकी खिदमत नही कर सकूगा। जब मै यह समझू कि मेरा कोई दुश्मन ही नही है और अपना सारा दोष दुनियाके सामने रखू और दूसरोके दोषोको न देखू। तो क्या हुआ, भगवान तो देखने ही वाले है। अगर मेरेको कोई थप्पड मारे, कान काट ले, गर्दन काट ले तो उसमे कौन-सी बात है। मरना तो है ही। इन्साफ करनेवाला ईश्वर तो है, लेकिन मै जो कुछ करू उसको न भूलू। इसलिए मै इसी चीजको बार-बार सुनाना चाहता हूं कि आप अपने दिलोको ऐसा साफ करे कि सारी दुनियामे मुझे कोई सुनानेवाला न हो। आज मै गया था तो मुझसे पूछा कि दिल्लीमे कैसा है? तो मेरा सिर झुक गया। क्योकि अभी भी हिंदू-मुसलमानोका दिल एक नही हुआ है। दिल तो अब भी जुदा है। यह तो ठीक है कि कोई एक-दूसरेका गला तो नही काटता है, क्योकि पुलिस पडी है, मिलिटरी पडी है, सरदारजी सब इतजाम करते है, जवाहरलालजी करते है। इसलिए एक-दूसरेको काटते नही है।

उससे क्या हुआ, अंग्रेज भी तो ऐसा ही करते थे। जो दिल्लीमे हम देख रहे है, वह देखना नही चाहते। आज मेरी पाख कट गई है। अगर वह पाख फिर आ जाय तो उडकर पाकिस्तान चला जाऊगा और वहा भी देखूगा कि हिंदू या सिखने क्या गुनाह किया है और अगर किया भी है तो उससे क्या। उनका वहा मकान है उसमे वे क्यो न रहे? लेकिन आज मै किसको किस मुहसे कह सकता हू। मै तो सबको यही समझाता हू कि अगर ईश्वरका दर्शन करना है और यहा सच्चे स्वराज्यकी स्थापना करना है तो एक दिल होकर सारी दुनियाको कह दो कि हिंदुस्तान कोई गिरा हुआ मुल्क नही है। इसका क्या नतीजा आता है? यही कि एक तो हम ऊचे जाते है दूसरे हमारे मुल्कमे जो भूख है, प्यास है उसे दूर करनेके लिए वक्त मिलेगा।

आज सारी दुनिया हमारी ओर यह देख रही है कि अगर एशियाको ऊचा जाना है, अगर अफ्रीकाके हब्शीको ऊचा चढना है तो हिंदुस्तानको उठाना चाहिए। हिदुस्तान तो एशियाका या अफ्रीका और कहो कि यूरोपका भी मध्य-बिदु बना हुआ है। अगर हिदुस्तान कुछ कर पाए तो सारी दुनिया उससे आश्वासन लेगी।

दुनिया तो ठडीसे काप उठी है। अगर दुनियाको गर्मी आनेवाली है तो हिदुस्तानसे ही। मेरी तो भगवानसे प्रार्थना है और आप लोगोसे भी कि हम इस तरहका बर्ताव रखें कि हमको गर्मी मिले और हमारी मार्फत सारी दुनियाको गर्मी मिले। सारे एशियाके लोग और अफ्रीकाके लोग हमारी ओर देख रहे है। उन सबको ऐसा लगे कि यहां अभी तो कुछ होगा तो फिर सारी दुनिया मानना शुरू कर देगी।

: १२३ :

मौनवार २० अक्तूबर १९४७

(लिखित सदेश)

राजकुमारीने प्रार्थनाके बाद कल खबर दी कि एक मुस्लिम

भाई जो हेल्थ आफिसर थे, वह जब कामपर थे, उनको कत्ल किया गया। वे कहती है कि वह अफसर अच्छे थे, अपना फर्ज बराबर अदा करते थे। उनके पीछे विधवा है और बच्चे है। विधवाका क्रदन यह है कि खूनीके हाथसे उनका और उनके बच्चोका भी खून हो। उनका शौहर सब कुछ था, रोटी वही पैदा करते थे।

मैंने कल ही आपको कहा था कि जैसे देखनेमे आता है, ऐसे दिल्ली सचमुच शात नही हुई है। जबतक इस तरहके दु.खद किस्से बनते है, हम देहलीकी ऊपर-ऊपरकी शातिपर खुशी नही मना सकते। यह तो कबरकी शाति है। जब लार्ड इर्विन, जो अब लार्ड हैलिफैक्स है, देहलीके वाइसराय थे, तब उन्होने ऊपर-ऊपरकी हिंदुस्तानकी शातिको कबरकी शाति कहा था। राजकुमारीने मुझे यह भी बताया कि कुरान शरीफके मुताबिक शवको दफन करनेके लिए काफी मुसलमान मित्र इकट्ठे करना भी कठिन हो गया था।

इस किस्सेको सुनकर मेरी तरह हरेक रहमदिल स्त्री-पुरुष काप उठेगे। देहलीकी यह हालत ! बहुमतके लिए अल्पमतसे डरना, चाहे वह कितना ही ताकतवर क्यो न हो, बुजदिलीकी पक्की निशानी है। मैं आशा रखता हू कि सत्तावाले गुनहगारोको ढूढ निकालेगे और उन्हे सजा देगे। अगर यह आखिरी गुनाह है, तो मुझे कुछ कहना नही, अगरचे इस किस्मके गुनाह हमेशा शर्मनाक तो होते ही है। मगर मुझे बहुत डर है कि यह तो एक निशानी है, इससे दिल्लीकी जमीर[1]को जाग्रत होना चाहिए।

कबलके लिए पैसे आ ही रहे है। सब दाताओका बहुत-बहुत आभार मानता हू। यह खुशीकी बात है कि किसीने भी यह नही कहा कि हमारा दान हिंदूको या मुसलमानको दिया जावे।

मुझे दु खसे एक और खतरेकी तरफ भी आपका ध्यान खीचना है। मै नही जानता, यह खतरा सचमुच है या नही। एक अग्रेज भाई

---

[1] आत्मा।

एक खुली चिट्ठीमे, जो जिनके साथ उसका सबध हो उनके लिए है, लिखते है—

"हम कुछ लोग एक निर्जनसे दगे-फसादवाले इलाकेमे पडे है। हम ब्रिटिश है और बरसोसे खुद तकलीफे सहन करके भी हमने इस मुल्कके लोगोकी सेवा की है। हमे पता चला है कि खुफिया सदेश भेजा गया है कि हिंदुस्तानमे जितने अग्रेज बच गए है, उन्हे कत्ल कर दिया जावे। मैने अखबारोमे प० नेहरूका वह वक्तव्य पढा है, जिसमे उन्होने कहा था कि सरकार हरेक वफादार शख्सके जान और मालकी हिफाजत करेगी। मगर देहातोमे पडे लोगोकी रक्षाका करीब-करीब कोई साधन नही। हमारी रक्षाका तो बिलकुल नही।"

इस खुली चिट्ठीके और भी कई हिस्से यहा दिए जा सकते है। मैने खतरेसे आगाह होनेके लिए यहा काफी दे दिया है। हो सकता है कि यह झूठा डर ही हो। मगर ऐसी चीजोकी तरफ लापरवाही रखना ही अक्लमदी है। मुझे आशा तो यह है कि पत्र लिखनेवालेका डर सर्वथा निर्मूल होगा। मै उनके साथ सहमत हू कि दूर-दूर देहाती इलाकोमें पडे लोगोकी हिफाजत करनेका सरकारका वायदा कुछ मानी नहीं रखता। सरकार वह कर नही सकती, फिर चाहे सेना और पुलिस कितनी ही होशियार क्यो न हो। और हमारी सेना और पुलिस तो इतनी होशियार है भी नही। रक्षाका पहला साधन तो अपने हृदयमें पडा है। वह है ईश्वरमे अटल श्रद्धा। दूसरा है पडोसियोकी सद्भावना। अगर यह दो नही है तो अच्छा यही है कि हिदुस्तानको जहा मेहमानोकी ऐसी बेकदरी है, छोड दिया जावे। मगर हालत इतनी खराब आज है नही। हम सबका फर्ज है कि जो अग्रेज हिदके वफादार नौकर बन-कर रहना चाहे उनकी तरफ हम खास ध्यान दे। उनका किसी तरहका अपमान नही होना चाहिए। उनकी तरफ जरा भी लापरवाही नही होनी चाहिए। अगर हमे स्वमानवाला आजाद राष्ट्र बनकर दिखाना है तो प्रेसको और सामाजिक सस्थाओको इस बारेमे भी दूसरी कई चीजोकी तरह खब चौकन्ना रहना है। अगर हम अपने पड़ोसियोका स्वमान

नही रखते, चाहे वे गिनतीमे कितने ही थोडे क्यों न हो, तो हम खुद स्वमान रखनेका दावा नही कर सकते।

: १२४ :

२१ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भी मैने एक किस्सेकी बात सुन ली। उसमे वह कोई मुसलमान भाईका कत्ल नही हुआ, लेकिन शायद वह हिंदू था और वह तो कोई गवर्नमेंटकी नौकरीमे था। वह अपना काम कर रहा था। उसको भेजा गया था। वहा कोई होगा जिसके हाथमे बदूक पडी थी, तो उसने बदूकसे मार डाला। उसने कोई गुनाह किया था, ऐसा मै नही सुनता हू। बस, उसके दिलमे आया कि यह आदमी ऐसा है कि हम जैसा कहते है ऐसा नही करता, इसलिए मार डाला। तो मै इसमेसे कहना तो इतना ही चाहता था कि यह जो हमारेमे आदत हो गई है और अभी तो शुरूकी आजादी है, और आजादी शुरू करते ही हमारे दिलमे ऐसा आ गया कि हमारे पास बदूक है, इसलिए उसको मार डालो। जैसे एक आदमी उडते पक्षीको मारता है, उसका निशाना बनाता है। बडा शिकारी बना है जो उडते पक्षीका निशाना बनाता है। ऐसे ही एक इन्सान है, जो अमलदार है, उसको भी निशाना बना लेता है। उसको तो वहा काम करनेका हुक्म हुआ है। बस दिलमे आ गया कि मारो, तो फिर उसको मारो, ऐसे हम बन जाय तो हिंदुस्तानमे तो आखिर हमारा हाल बहुत ही बुरा होनेवाला है। कोई आदमी आरामसे नही रह सकता है। कहते है कि ऐसे तो जगली मुल्क कई पडे है, जिनमे कोई सही-सलामत रह नही सकता। क्योकि जिसके पास बदूक पडी है और वह खून करता है तो उसके दिलमे ऐसा नही कि इन्सानका खून कैसे करे। जो खून करता है वह जिंदा तो कर ही नही सकता। हकीकत तो यह है और कानून भी ऐसा है कि जिसने इन्सानको बनाया है, वह तो ले भी

जाय। वह तो ईश्वरका काम हुआ। जो आदमी जीवको बना नहीं सकता उसको लेनेका अधिकार कैसे आया? इन्सान जीवको बना थोडे ही सकता है। लेकिन हिंदूके दिलमे होता है मुसलमानका शिकार करना, मुसलमानके दिलमे होता है सिखका शिकार करो और सिखके दिलमे मुसलमानका। आज तो वह करे, लेकिन जिनका शिकार करना था वे जब चले जाएगे तो पीछे इन्सान आपस-आपसमे शिकार करेगे, यही कानून दुनियाका चला आया है। वही कानून हमने शुरू कर दिया है। तो मैंने सोचा कि यह बात तो कर लू।

दूसरी बात यह है कि काफी लोगोको हकूमतने पकडा। उस जमानेमे हमारे हाथमे तो आजादी थी नही। आज भी मानो कि आजादी नही आई। जो आदमी पकडे, वे तो पकड लिए गए। बहुत कर सकते है तो वाइसराय साहबके पास अर्जी करो। वह कहे कि छोडना है तो छूटे। लेकिन वाइसराय साहब खुद नही छोड सकते। वे बाकानून काम करते थे। मार्शल ला चले तो भी बाकानून काम करते। उनके कानूनके अफसर रहते है तो जिसको वे कह देते कि छोडो तो छोड दिया जाता। बाकीको वे कहते कि तहकीकात करनेके बाद ही छोड सकता हू। यह तो ठीक कानूनी बात है। जिसको पुलिसने पकडा है और बाकानून पकडा है, उसको पीछे जो सजावार होगा तो सजा हो जायगी। लेकिन आज तो हमारे हाथमे हकूमत आ गई है। हमने तो हकूमत चलाई नही थी। कोई यह ठान ले कि मै तो यहाका प्रधान हू और प्रधानकी हैसियतसे चलो, उसको छोड देते है, ऐसा हम अगर शुरू कर दे तो हमारा खात्मा हो जायगा। कभी लोगोको पकड लेते है, क्योकि वे खून करते है और पीछे छोड दिया, यह होना नही चाहिए। अभी भी मै कह दूगा कि यह हकूमतका काम नही है कि एक आदमीको पकड लिया, बाकानून पकडा है, पुलिसने पकडा है, पीछे शिकायत आई या कि फरियाद आई तो हकूमत किस कारणसे और कैसे छोडे। हमने पुलिस बनाई है, कोर्ट बनाए है, प्रोसीक्यूटर[1] बनाए है, तो क्या वे

---

[1] अभियोग चलानेवाला।

सब फिजूल है ? मेरे दिलमे आया कि एक रिश्तेदार है, दोस्त है, उसके लिए सिफारिश आई तो मैने उसको छोड दिया। वह कैसे छूट सकता है ? मेरे हिसाबसे तो छूट नही सकता। अगर बेगुनाह है तो उसको सजा हो ही नही सकती। इस तरहसे हमारा जो न्यायका दफ्तर है उसको साफ रखे। जज भी हमारे पास ऐसे होने चाहिए। जो पुलिस है और जो प्रोसीक्यूटर है वे खामखा केस चलाए और यह सोचे कि इतने केस तो कोर्टसे सजायाफ्ता हो ही, ऐसा नही होना चाहिए। जिनको सजा होनी चाहिए उनको ही हो। लेकिन वह सब कानूनमे कोर्टका काम रहा। माना कि एक आदमीने फरियाद की कि इसने मुझपर हमला किया, उसको पकडो। पकड़ लिया। क्या उसको छुडानेके लिए मै प्रधानके पास जाऊ ? प्रधान कहेगा कि कोर्टके पास जाओ। अगर फरियादी पीछे यह कहे कि पकडकर क्या करे, हमारी दुश्मनी बढेगी, उसको छोडो तो पीछे वह छूट जायगा। वह कहे कि मैंने फरियाद तो की, लेकिन उस बारेमे मै भुलावा देना नही चाहता कि मै उसको छोड देना चाहता हू। पीछे कोर्ट उसे छोड सकता है। पीछे प्रोसीक्यूटर रहा, उसको भी वह वही सम्मति दे सकता है। तो फिर यह हो सकता है। अगर कोई खूनी है और उसने खून किया है और उसको छुडाना है तो वह फरियादीके कहनेपर भी छूट नही सकता। वह छूटे तो हमारा काम नही चल सकता। मैंने तो वकालत की है और आदमी छुडाए है। तो कैसे ? जो खूनी है उसको कहना है और कह सकता है कि खून तो मैंने किया, लेकिन अब दिल साफ है, सजा न हो तो अच्छा है। जिस आदमीने फरियाद की है या शिकायत की है वह भी यह कहे कि उसको सजा नही होना चाहिए, हम तो उसके दोस्त बन गए है, गुस्सेमे आकर उसने खून कर दिया तो अब उसका खून करनेमे मुझको क्या फायदा। अब वह दोस्त बनता है, खिदमत भी कर सकता है, खुदापरस्त हो जायगा, ईश्वरकी भक्ति करेगा, तो फिर ईश्वर-भक्तिसे मै उसको महरूम[1] क्यो करू ? खूनी भी कोर्टसे कहेगा कि खून

---

[1] वंचित।

तो किया, गुनाह किया, लेकिन इस वक्त तो माफ करो, जो शिकायत करता है वह तो मुझको माफ करता है। पीछे हो सकता है कि मै अच्छा काम करूगा और सारी समाजकी सेवा करूगा,] इसलिए मुझे छोडा जाय। वह तरीका है खूनीको छोडनेका। वह तरीका बाकानून हो सकता है। लेकिन हमारे हाथमे जो हकूमत आई है उसका गैरइस्तेमाल न करे। अगर आज हम गैर-उपयोग कर लेगे तो सब कहेगे कि इसको छोडो, उसको छोडो। बेचारा वह प्रधान भी क्या करेगा? गलतीसे किसीको छोडनेका हुक्म कर दिया। हुक्म तो कर सकता है, लेकिन वह करेगा नही। उसका भाई है, दोस्त है, पत्नी है, कुछ भी है अगर उसने गुनाह किया है तो भी वह यही कहेगा कि वह मेरा काम नही है, कोर्टके पास जाओ, प्रोसीक्यूटर है उसके पास जाओ, शिकायत करनेवाला है उसके पास जाओ। मेरे पास कुछ हो नही सकता। प्रधान जबतक ऐसा साफ नही होता तबतक हम अपना काम नही कर सकते।

मुझको, ऐसा ही कहो, एक हिदायत मिली है कि मुझे १५ मिनटसे ज्यादा कहना नही चाहिए। मै इससे ज्यादा कहना भी नही चाहता। मै काफी बोला हू। मुझको शौक तो है नही कि बोलता ही रहू। बोलना है तो कामसे बोलना। लेकिन मुझसे कहा गया है कि १५ मिनटसे ज्यादा न बोलू तो उससे लोगोका ज्यादा कल्याण होगा, लोग ज्यादा सुन लेगे, तुम्हारी बात तो सुनना चाहते ही है। इससे मेरी आदत हो जायगी कि १५ मिनटसे आगे बढना ही नही।

: १२५ :

२२ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो मै आपको यह खबर दे दू कि कबल अभी भी आ रहे है। मुझको अभी पता लगा है कि दो सौ कवल आज आ गए। ऐसे ही आते रहते है और पैसे भी आते रहते है। मै उम्मीद करता हू जो

बहुतसे आदमी पडे है, उनको ओढनेकी चीज मिल जायगी और मिलनेवाली है। यह अच्छा है कि इतनी उदारता हमारे लोगोमे रही है।

एक भाई मेरे पास आ गए थे। मै कोई हमेशा, हमेशा क्या, शायद ही उर्दू अखबार पढता हू। उर्दू पढ तो लेता हू, लेकिन उसको पढनेमे थोडी दिक्कत होती है। जब एक बच्चा बारह-खडी पढ लेता है और आहिस्ता-आहिस्ता पढने लगता है, ऐसा ही मेरा हाल समझो। बच्चेसे कुछ थोडा ज्यादा जानता हू, लेकिन शीघ्रतासे पढना हो तो नही पढ सकता हू। तो उस भाईने मुझको एक उर्दू अखबारमेसे, इस तरहसे जो चीज आई है उसे पढकर सुनाया। उसको सुना और मुझको दु ख हुआ। सब चीजोका पूरा बयान तो मै यहा करना नही चाहता हू। उसमे लिखा है कि अब तो हमने तय कर लिया है—वह जो अखबार-नवीस है, वह एडीटर साहब, उसने अपने दिलमे तय कर लिया है, लेकिन उम्मीद है कि सारे हिंदुस्तानने ऐसा तय नही किया है, कि सब-के-सब मुसलमान पाकिस्तान चले जाए, जो रहता है उसको कट जाना है। या तो उसको काटो या पाकिस्तान चले जाओ। यह अखबार या एडीटर साहब जो लिखता है अगर वह सच्ची पडे तो यह बडी शर्मकी बात है। उसकी कलमसे ऐसी चीज नही निकलनी चाहिए। ऐसे अखबार तो निकलने ही नही चाहिए। अगर वह सचमुच ऐसा मानते है तो वे लोगोको अपनी राय बता सकते है। लेकिन जब ऐसा वे कहते है तो वह डूडी पीटकर कहनेकी-सी बात होगी कि या तो वे पाकिस्तान चले जाए या उनको मारो। तो कल मैने कह दिया था कि जब वे पाकिस्तान चले जाएगे तो पीछे क्या करोगे? आपस-आपसमे लडोगे? एक सज्जनने तो मुझको कह भी दिया कि आपस-आपसमे लडाई शुरू भी हो गई। यह लडाई तो आपस-आपसमे होनी ही है। जब एक दफा खूनका स्वाद ले लिया तो पीछे वह छूट नही सकता। वही हमारा हाल होनेवाला है। लेकिन अखबार-नवीसने ऐसा कह दिया और उसने छापा है तो ठीक ही है, हमारे लोग तो ऐसे अखबारके पीछे पागल बन गए है। गीताजीको छोडो, बाइबिलको छोडो, कुरान-शरीफको छोडो, लेकिन अखबार ही हमारी गीताजी है

और उसमे जो आता है उसको हम ब्रह्म-वाक्य मान लेते है। लोग जो इस तरहसे पागल बन गए है और अखबार उस पागलपनका लाभ उठाकर ऐसा छापे तो यह बहुत बुरी बात है। मै इस बारेमे इससे अधिक नही कहना चाहता।

दूसरी बात तो यह है कि हर जगहसे शिकायते आ रही है। यह ठीक था कि अग्रेजी जमानेमे तो जो देशी रियासते थी वे अपने दिलमे आए वैसा करती थी। थोडा-सा अकुश तो अग्रेजी सल्तनत रखती थी। उसको तो रखना ही था, क्योकि उसको सल्तनत चलानी थी। आज तो वह चली गई है। हा, यह तो है कि आज सरदार पटेल है—उनके हाथमे उनका महकमा[1] है, इसलिए वह तो कुछ करे? लेकिन वे बेचारे क्या कर सकते है? उनकी तो अपनी जबान पडी है—हिंदुस्तानकी सेवा कर ली है, इसलिए सरदार बने है। लेकिन उनके पास तलवार नही, बदूक नही, लश्कर नही। वे खुद थोडे लश्करी है, वे कमाडर भी नही है कि उनका हुक्म चले। जबतक सिपाही लोग समझते है कि वे तो हिंदुस्तानका नमक खाते है और उनके सामने वे हाकिम है—मतलब यह कि वे बडे सेवक है, ऐसा मानकर वे चले तो काम बडा सीधा-सीधा चले।

आज रियासतवाले कहते है कि हमने प्रवेश-पत्रपर दस्तखत तो कर दिए, उससे क्या हुआ? इससे क्या हमारे पाससे कुछ छीन थोडे ही लिया? हमारे पास भी तो सिपाही है। जब अग्रेजी सल्तनत थी तब वे खिलौने-से थे, लेकिन अब थोड़े ही है? देशी रियासते जो कुछ करना चाहती है, कर सकती है। मै खुद भी तो देशी रियासतका हू। इसलिए मै जानता हू कि वे क्या कर सकती है, कितना भला कर सकती है। मै देशी रियासतोके राजाओसे बडे अदबसे कहूगा कि अगर आप इतना अहकार रखेगे कि जो रैयत पडी है, उसको मार सकते है, काट सकते है, तो वे रह नही सकते है। मैने तो कह दिया है कि जो राजा लोग है उनका स्थान है अगर वे रैयतके ट्रस्टी बन जाते है। अगर वे रैयतका

---

[1] विभाग।

हाकिम बनकर रहना चाहते है, उसको चूसना चाहते है और दबाना चाहते है, तो उनका कोई स्थान नही रह सकता, इसमे मुझे कुछ भी शक नही है। हिंदुस्तानका क्या हाल होगा, वह तो ईश्वर ही बेहतर जानता है। जो राजा लोग पडे है उनके पास तो कोई चारा नही है। वे कभी हिदुस्तानका राज चला नही सकते। पीछे चाहे हम गुलाम ही बन जाए तो हम बनेगे। तो क्या राजा लोग भी गुलाम बनेगे ? वह जमाना चला गया। वह एक युग था। अग्रेजी सल्तनत थी, उसने सोचा कि जो यहा राजा लोग है वे भी अच्छे है, उनके मार्फत राज चलाए। वह तो उन्होने अपना स्वार्थ समझकर ही किया। तो फिर उसमे उसका दोष क्या निकालना ? लेकिन आज हम ऐसे कमनसीब है कि हम दोनो पागल बने और आपस-आपसमे लडे, उनमेसे कोई एक जीते या दोनोको कोई दूसरी या तीसरी ताकत या दो-चार ताकते मिल-जुलकर हिंदुस्तानको खा जायगी। तो फिर उसके साथ ही राजा लोगो-को भी खा जायगे। अगर वे हिदुस्तानके वफादार रहते है और रैयतके नौकर बनते है तो खैर है। मै तो रैयतसे भी कहूगा कि वह बुजदिल क्यो बने। अगर राजाओके पास हथियार है और वे बेहथियार है तो क्या? हम भी तो सल्तनतके सामने लडते थे, हम भी बेहथियार थे। कोई छुपकर भी हथियार रखे हो, ऐसा नही था। अगर होते तो मुझको तो इसका इल्म होना ही चाहिए था। लेकिन ऐसा नही था। करोडो लोगोने उसका हृदयबलसे सामना किया। हमने सोचा कि अगर काटेंगे तो एक लाखको काटेंगे, दो लाखको काटेंगे, तीन लाखको काटेंगे, आखिर कितनोको काटेंगे, हम ४० करोडकी आबादी है, काटते-काटते उसके हाथ काप जायगे। ऐसी जो रैयत पडी है, उसको आजादी तो मिलनी ही चाहिए थी और वह मिली। उस आजादीका हम क्या करते है, यह अलग बात है।

मै तो कहूगा कि राजा लोगोको पागल नही बनना चाहिए। उनको समझना चाहिए कि वे स्वेच्छाचारी नही बन सकते, व्यभिचारी नही बन सकते। वे शराबमे सारा दिन पडे रहे, ऐसा नही हो सकता। वह तो मैने आप लोगोको और आपकी मार्फत राजा लोगोको कह दिया।

एक वक्त तो मैंने कह दिया था कि अब दशहरा आ रहा है और पीछे एक दिन छोडकर बकरीद आ रही है। दोनो करीब-करीब एक साथ मिलते है। हम हिंदू और मुसलमान दोनो भयभीत रहते है, हमेशा रहते है, आज तो ज्यादा भयभीत है। क्योकि आज तो एक-तरफा ही हो सकता है। अगर हिदू पागल बन जाय और समझे कि मौका मिल गया—क्योकि बकरीद है, तो मुसलमानोको काटो। हमारा दशहरा भी हो गया है। दशहरा क्या है ? रामजीकी जीत मनानेके लिए ही दशहरा है। पीछे कहते है कि एकादशी है, उस दिन तो रामका भरतके साथ मिलाप होगा। उसमे तो हमे सयम सीखना है, भल-मनसाहत सीखना है, धर्म क्या चीज है उसको सीखना है। अगर वह हम सीख ले तो हम दशहरा सच्चे अर्थमे मनाते है। दशहरेके दिन दुर्गा-पूजा भी होती है। वह क्या चीज है ? हम सब खूनके प्यासे रहे, वह दुर्गाका अर्थ नही है। दुर्गाका अर्थ यह है कि वह एक बडी शक्ति पडी है, उसकी उपासना करके हम ऊचे चढ सकते है।

इसी तरहसे दशहराका यह मतलब नही है कि हम सारे दिनभर रूप, रग, राग उडाए। उसको हमारे गुजरातमे नवरात्रि कहते है। जब हम बच्चे थे तब मेरी मा कहती थी कि नवरात्रिको खाना नही खाना चाहिए। अगर खाना ही है तो फल खाओ, ज्यादा-से-ज्यादा दूध पीओ, लेकिन अनाज न खाओ। अगर सचमुच पूरा-का-पूरा उपवास करो तो सबसे अच्छा है। मेरी मा तो बडी उपवास करनेवाली थी, जिसका मै तो कोई मुकाबला नही कर सकता था। मेरे बडे भाई तो मुकाबला कर ही नही सकते थे—मै थोडा-सा मुकाबला करता था। लेकिन उसमे उपवास करनेकी जो शक्ति थी उसके सामने मै एक खिलौना हू, बच्चा हू। दशहराको हम इस तरहसे मनाते है। हा, पीछे जो दिवाली है उसमे खा-पी सकते है, थोडा मौज कर सकते है, लेकिन दशहराको बिलकुल नही। यह जो नवरात्रिका अर्थ है, क्या उसको छोडकर हम काट-कूट करेंगे ? पीछे बकरीद है। जो मुसलमान भाई है उनको हमने डरा दिया है। उनमे हमारे अच्छे भाई है। जो राष्ट्रवादी भाई थे वे भी आज परेशान पडे है। वे भी भागते है, लेकिन कहा जाय ?

हम ऐसे बेरहम बन जाय कि उनको भी भगा देगे। तब शाति होगी? वह शाति कैसे हो सकती है?

क्या ४ या ३॥। करोड मुसलमानोका नाश करोगे या उन्हे भगा दोगे या हिंदू बना लोगे? अरे, वह भी तो नाश ही करना हुआ। अगर तुमपर भी ऐसी जबरदस्ती हो तो क्या तुम सब मुसलमान बन जाओगे? तुमसे कहा जाय कि कलमा पढते हो या नही, अगर नही तो मार डाले जाओगे। मै तो पहला आदमी होऊगा कि यह कहूगा कि आप पहले हमारा सबका गला काट लो, पीछे बात करो। इतनी तो हमारेमे हिम्मत होनी ही चाहिए। इस तरह मुसलमानोसे हिंदू बननेको कहना बेकार बात है। मुझको तो ऐसा हिंदू नही चाहिए। ऐसे हिंदूमे क्या मै हिंदू-धर्मको बचा सकता हू। मुझको तो ऐसा अच्छा हिंदू चाहिए जो सयम रखे। मै ऐसा घमडी और जालिम क्यो बनू? जालिम बनना और धर्मका पालन करना दोनो चीज हो नही सकती। तो ये जो दो दिन है उनमे हम डरे नही, खामोशीसे रहे और हमसे जो गुनाह हो गए है उनका हम प्रायश्चित्त या पश्चात्ताप करे और भाई-भाई बनकर भेट करे। इतना अगर आप कर सकते है तो ईदके बाद मुझको यहा आप नही पाओगे।

एक हिंदू भाईने मुझसे पूछा कि पजाब जाओगे? मैने पूछा कि पजाब भेजोगे? हा, जाऊगा तो उनसे भी लडूगा। मेरी लडाई कैसी होती है यह तो आप जानते ही है। उनसे पेट भरकर बाते करूगा। लाखो आदमी जो वहासे यहा आते है, हिंदू और सिख है वे अपनी जगहपर क्यो नही बैठ सकते? जबतक यह नही होगा मुझको शाति नही मिलेगी। तो पीछे मुसलमानोको यहा लाना है। तो आप कहेगे कि यह तो होनेवाला नही है। मै कहूगा कि वह हो सकता है, लेकिन उसकी कुजी तो दिल्लीमे पडी है। उम्मीद तो ऐसी है कि जो दो दिन आते है उनमे हम बता दे कि हम हिंदू-मुसलमान दोनो शरीफ है और दोनो मिल-जुलकर रहनेवाले है।

: १२६ :

२३ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

दो भाई लिखते है, "हम शरणार्थी है। अपने मित्रोकी शरणमे रह रहे है। सर्दीके कारण हम बहुत दु खी है। कृपा कर हमे बताइए कि कबल तथा रजाई कहासे प्राप्त करे। क्या ऐसे शरणार्थियोके लिए कोई प्रबध है ?" वे रावलपिंडीके है ऐसा उन्होने लिखा है। अब इस तरहसे तो और काफी लोग पड़े होगे। जो रजाइया और कबल इकट्ठे किये जा रहे है वे तो सचमुच उन लोगोके लिए है जो कैपोमे पडे है और जिनके पास यह तो जाहिर ही है कि कोई चीज ओढनेको नही है। उनके लिए यह सब प्रबध हो रहा है। काफी बाटा गया है, और भी बाटा जायगा। हजारोकी तादादमे ऐसे लोग पडे है, कोई चद हो, ऐसा थोडे ही है । हो सकता है कि लाखो भी हो जिनको ये चीजे मिलनी चाहिए। एक शिविर तो, जो कुरुक्षेत्रमे है, मरकजी[1] सरकारने अपने प्रबधमे ले लिया है। वहा काफी तादादमे लोग पडे है और रोज नए आते रहते है।

दिल्ली शहरमे भी ऐसे शिविर है। तीन तो है कम-से-कम, शायद चार है। पूर्वी पजाबमे भी पडे है। वहा भी उनको ये चीजे मिलनी चाहिए, जो यहाके लोगोको मिले। वे भी तो शरणार्थी है। लेकिन जो शरणार्थी मित्रोके यहा रहते है उनको ओढनेके लिए कुछ देना, यह तो मित्रोका काम रहता है, ऐसा मेरा खयाल है। लेकिन हो सकता है कि जो लोग बेचारे अपने घरपर रखते है वे खुद अपने लिए मुसीबतसे रजाई या कबलका प्रबध कर सके, तो उनको, जिनको वे रक्षा देते है, कहासे दे ? यह नही हो सकता, ऐसा मै नही कहता। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि जिनको रजाईकी दरकार है उसीको दे दी जाय तो सबको पहुच नही सकती, क्योकि ऐसे मागनेवाले सब शरीफ ही है, ऐसा मानकर मै नही चलता। जिनको चाहिए ही

---

[1] केंद्रीय।

इसलिए माग लेते है, ऐसी बात नही है। मैने बहुत-से शिविरोको देखा है। ऐसा काम मै करता ही आया हू। जब जनूबी[१] अफ्रीकामे था तो वहा भी मुझे ऐसा ही करना पडा था, इसलिए मै तो जानता हू कि इस काममे कितनी मुसीबत है। ये जो भाई लिखते है उनकी तो कोई शिकायत मेरे पास नही है, उनके बारेमे तो मुझे कुछ कहना नही है। लेकिन जो सचमुच गरीब है और जिनके पास कुछ है ही नही, उनको पहुचना ही चाहिए, इसमे मुझे कुछ भी शिकायत नही है। लेकिन मुझे ऐसे आदमियोके बारेमे पता कैसे चलेगा ? पता लेनेकी कोशिश तो करता हू। बिलकुल ही खबर नही लेता, ऐसा तो है नही और न मै यह मान लेता हू कि मुझे कोई धोखा देगा नही, इसलिए जो मागे ले ले। क्या ये भाई कुछ ऐसा बता सकेगे ? मै तो भेज नही सकता, लेकिन मेरा खयाल है कि कहीसे भी उन्हे मिल जायगा। मेरे पास तो कबल है, नही है ऐसी बात नही है। ये सब कबल तो कुरुक्षेत्रमे भेजनेके लिए पडे है। दूसरे भी तो जमा कर रहे है, वे भेज सकते है।

अभी यहा रोज लोग आते है। वे बिडला-मदिरमे जाते है, जिससे वह भर गया है। वहा कोई जगह ही नही है, जितना ले सकते है उतना लेते है। उनका तो काम ही रहा है दूसरोंके दु खमे हिस्सा लेना। वहा गोस्वामी पडे है, जो रात-दिन वही काम करते है। लोगोके पास जाते है, वहासे कबल लाते है, खाना लाते है और उनको देते है। लेकिन जब रोज लोग आते है तब उनको भी थकान होती है। कहातक उनको देते रहेगे ? यही हमारा हाल है। तो इन लोगोको मै इतना ही कहूगा कि जो लोग रहते है वे अपने लिए तो कुछ करे। यह तो ठीक है कि जब सबके लिए होता है तो उनके लिए भी होना चाहिए। सबके लिए एक ही कानून हो सकता है। अगर एकके लिए एक हो और दूसरेके लिए दूसरा, तो फिर हम बडे पैमानेपर काम चला नही सकते। लेकिन हमे तो बडे पैमानेपर काम करना है। इसीलिए इसको बतानेमे मैने इतना वक्त ले लिया। अब जाडा तो दिन-प्रति-दिन

---

[१] दक्षिणी।

बढता ही जायगा, उसको बर्दाश्त कैसे करेगे ? मै नही चाहता कि एक दिनके लिए भी किसीको बर्दाश्त करना पडे। एक तो यह बात है।

दूसरी बात यह है कि आज भी मैने सुन लिया है कि चूकि काफी दूकाने खुल गई है, तो एक बेचारे गरीब मुसलमानके भी दिलमे आया कि मै भी अपनी दूकान खोलू। आज वह चला गया था अपनी दूकान खोलने। ऐनकका वह काम करता था। ऐसे आदमी तो मुश्किलसे शायद ही दिनमे दो-चार रुपए कमाते होगे। मै नही जानता कि वह कौन था ? उसका नाम भी मुझे पता नही है। जब वह दूकान खोलने जा रहा था तो उसको काट डाला। यह सारी दिल्लीके लिए शर्मकी बात है। किसीने काटा होगा, एकने या दोने ? लेकिन दो आदमी कैसे काट सकते है ? जो मिलिटरी है, पुलिस है, वहा कहा थी ? दूकान कोई कोनेमे तो थी नही ? रात्रि भी नही थी। कोई खुफिया तौरसे तो दूकान होती नही है। सब आदमी आते-जाते रहते है। इनमेसे किसीने रोकनेकी भी चेष्टा नही की ? उनको काटनेकी हिम्मत कैसे हो गई ? लोग इस बारेमे बेपरवाह रहते है कि जाने दो, एक मुसलमानको मार दिया तो अच्छा ही है। जब वे हिंदूको मारते है, सिखको मारते है तो हम मुसलमानको मारे। ऐसा बदला लेनेका ख्याल दिलमे पैदा हो जाता है। इसको रोकना चाहिए। अगर न रोके तो दिल्ली निकम्मी होनेवाली है। दिल्लीमे क्या आप ऐसा मानते है कि यहा हिंदू और सिख ही रहेगे ? अगर ऐसा है तो फिर दिल्ली मिट जायगी। उसको सारी दुनिया बर्दाश्त नही करनेवाली है। दिल्लीके पीछे एक बडा लबा-चौडा इतिहास पड़ा है। उस इतिहासको मिटानेकी चेष्टा करना भी पागलपन होगा।

आज मुझे, जो कुष्ट रोगसे पीडित है, उनके बारेमे कहना है। हिंदुस्तानमें भी ऐसे काफी लोग पडे है। वे रास्तेमे दिखाई नही पडते है, क्योकि उनको देखनेसे घृणा पैदा हो जाती है। जिनको कोढ है वे सचमुच पापी है और जो दूसरे मरीज है वे पापी नही है, ऐसी बात नही है। यह तो ठीक है कि जिसको मर्ज है उसने कोई-न-कोई दोष तो किया ही है। जब मुझको खासी हो गई थी तो मै समझता हू कि

कुछ-न-कुछ दोष तो मैंने किया ही होगा। दोषको मैं पाप मानता ही हू। खासी तो हर एकको ही हो जाती है, उसमे कोई दोष नही है यह मै माननेवाला नही हू। तो मै जो मेरे लिए कानून बनाऊ वही सारी दुनियाके लिए है। कोढ चमडीका रोग है। वह कैसे हो जाता है उसके लिए काफी कथा है। मै तो मानता हू कि यह शरीरका रोग होता है। और कोढ और खासीमे कोई भेद नही है। जिसको कोढ होता है उसको थोडा दर्द ज्यादा होता है, लेकिन अगूठा चला जाता है, हाथ चला जाता है, नाक चला जाता है, ऐसा बदसूरत तो बन जाता है। लेकिन वह बदसूरत है इसलिए बड़ा दर्द हो, ऐसी बात नही है। मै तो कहूगा कि इससे ज्यादा नफरत होनी चाहिए उससे, जो मन मलीन रखता है। जिसका शरीर मलीन है, क्योकि वह भी मनकी मलीनतासे ही होता है, और साथ ही जिसकी दृष्टिमे गदगी रहती है, जो भगवानका भजन न सुनकर दुष्टोका इतिहास सुनता है, वही सच्चा कोढी है। ऐसे मर्जवाले तो बहुत पडे है, क्योकि हम सब ऐसे होते है, इसलिए कौन परवाह करता है। लेकिन चूकि कोढ तो सबको नही होता है इसलिए हमारे दिलमे उनके बारेमे, जिनको यह होता है, नफरत होती है। हमारे पास काफी ईसाई लोग थे। हिंदुस्तानमे जितने कोढ-अस्पताल थे वे सब ईसाई लोगोके हाथमे थे और आज भी पडे है। वे लोग परोपकारकी दृष्टिसे उनकी सेवा करते है। आज हिंदुस्तानमे भी ऐसे लोग पैदा हो गए है जो परोपकारकी दृष्टिसे उनमे काम करते है। एक परोपकारी पुरुष, मै तो उनको महात्मा ही कहूगा, मनोहर दीवान है। वे वर्धामे रहते है और विनोबा भावेके बडे शिष्य है। विनोबाजी तो बहुत बडे आदमी है। तो मनोहरके दिलमे हुआ कि चलो, कुछ-न-कुछ करे। तो उन्होने कोढियोकी सेवा करनेका काम पसद किया। विनोबाने भी उनको ऐसा करनेके लिए प्रेरणा दी। वे निर्लेप रहते है। पैसेकी उनको दरकार नही। वे डाक्टर तो नही है, लेकिन उन्होने उसका काफी अभ्यास कर लिया है। काफी लोग उनकी मदद लेते है। अभी वर्धामे एक छोटे पैमानेपर, एक समितिकी मारफत एक सम्मेलन होनेवाला है। जो लोग इस काममे लगे हुए है वे ३० तारीखको

वहां मिलेंगे। डा० सुशीला नायर भी उसी कामके लिए जानेवाली है। यों तो जाना था डा० जीवराजको, राजकुमारीको भी, उसको पता भी है; क्योंकि वह मेरे साथ सेवाग्राममे रही है। लेकिन वे तो यहां काममे फसी है, इसलिए जा नही सकती। उनसे कोई आग्रह तो कर नही सकता कि आपको जाना ही होगा। और आग्रह करे कौन ? सेवाका काम है, जिसको जाना है, वे जाय। लेकिन उनको फुरसत नही है, इसलिए नही जायंगे। एक और भाई है जिनका नाम जगदीशन् है। उनको खुद भी कोढ हो गया था। वे मद्रासके रहनेवाले है। वे बड़े सज्जन और विद्वान पुरुष है। वे श्रीनिवास शास्त्रीजीके भक्त थे। तो उन्होंने अपना जीवन इस काममे लगा दिया है। वे भी आनेवाले है, और भी जो दूसरे है वे भी जमा हो जायगे। वह करुण कथा है, रसिक भी है और उसमें काफी लोग काम भी करते है। कलकत्तामे भी एक बहुत बडा कोढ-अस्पताल है, जो बडे पैमानेपर काम करता है। परोपकारकी दृष्टिसे सब कान होता है और आहिस्ता-आहिस्ता बढ रहा है। जब मै कलकत्तेमे था तब मुझको ले गए और कहा कि थोडा-सा लिख तो दो। लेकिन मै यहा आनेकी पैरवी[1] कर रहा था। और भी हिंदुस्तानमे इधर-उधर काफी कोढ-अस्पताल पड़े हुए है, लेकिन जितने पैमानेपर यह काम होना चाहिए उतने पैमानेपर नही हो रहा है। मै यह नही कहता कि सबको इसमे दिलचस्पी लेना चाहिए, लेकिन हम सुने तो सही कि जब हम ऐसे खाली पडे है तो इस तरहके कामोमे रहे। क्या हम एक-दूसरेके नाश करनेमे ही फमे रहेगे ? मै तो कहूगा कि यह सबसे बड़ी व्याधि है, सबसे बडा कोढ है। हम अच्छे कामोको भूलते है और हम आपस-आपसमे मर जाते है। हिंदू मुसलमानको मारता है, मुसलमान हिंदू व सिखको मारता है। हम कबतक आपस-आपसमे एक दूसरेको मारते रहेगे ? क्या ही बेहतर हो कि हमारे पास जो समय है उसका सदुपयोग करे और उसको ऐसे कामोमे दे दे, जिससे प्रेमभाव क़ायम हो।

---

[1] कोशिश।

: १२७ :

२४ अक्तूबर १९४७

भाइयो और वहनो,

अखबारोमे कुछ चार-पाच रोज पहले शायद यह खबर आई थी कि यहा जो मजदूर-सम्मेलन होनेवाला है उसमे एशियाके काफी लोग आएगे। वह सम्मेलन २७ तारीखको होगा। अखबारोमे यह भी लिखा था कि मै उसकी कार्रवाई शुरू करनेके लिए जाऊगा। मुझको तो इसका पता ही नही था और किसीसे मैने शायद ऐसा कहा भी नही। एक अखबारनवीस था। मैंने उसको कहा कि यह खबर कहासे मिली है? उसका विरोध कीजिए और कहिए, ऐसी बात नही है। मजदूर-मत्री श्रीजगजीवन राम आए थे। मैंने उनसे भी कहा। उन्होने कहा कि आपको तो आना ही है, लेकिन उस दिन तो सोमवार है, तो भी जब आप यहा है तब पूछनेकी कोई बात ही नही रहती थी। अखबारोमें तो ऐसा ही है। मैंने जवाहरलालजीसे भी कहा कि मैंने शायद गलतीसे कह दिया हो, तो उनको बडा आश्चर्य हुआ। मुझको तो वहा जानेकी कोई जरूरत है नही, क्योंकि मै और किसी कामका तो रहा नहीं। आज तो मेरा एक ही काम है और वही काफीसे ज्यादा है। ऐसा मै महसूस करता हू कि अगर वह सफल हो जाता है तो वह मेरा जीवनभरका कार्य है। हम सब एक मुल्कके है और सब एक बनकर रहें। यहा जो हिंदू-सिक्ख-मुसलमान, पारसी और ईसाई है वे अगर सब मिलकर रहें तो मुझे और किसी बातकी परवाह नही। वे सब हिंदुस्तानके है, उनको यही रहना है, फिर वे लडाईमे क्यो पडे?

जो आदमी वचपनसे ऐसा स्वप्न देखता आया है उसको इससे आघात पहुचता है। उसने आजादीके लिए मेहनत की और आजादी मिल भी गई; लेकिन उसके साथ यह जहर फैल गया। यह मुझे बुरा लगता है। इससे बुरा काम और क्या हो सकता है? मुझे इस बुरे कामको रोकना है। प्रयत्न मेरा काम है। अगर वह होना है तो हो, नही होना है तो न हो। भजनमे आया है 'कोई निंदो कोई वदो',

वह तो सब एक ही है; क्योंकि वह तो रामचद्रका भजन करना है, और सब उसको अर्पित कर दिया है; लेकिन प्रयत्न तो करना चाहिए, तब फिर उसमे सारा जीवन व्यतीत करना है।

हमेशाकी तरह आज भी कबल आ गए है। जिनको भेजना चाहिए उनको भेजा जाता है। जरूरत बहुत है, इतने कबल चाहिए कि सबको कैसे पहुचाए जाय? सबको पहुचाना बहुत बडा काम है। ईश्वर सबको पहुचा देगा। जो निराधार है और करोडपतिसे भिखारी बन गए है, क्या उनको नगा और भूखा रहना पडेगा? अगर हम मच्चे है तो ईश्वर खाना देगा और अगर हम नालायक बने रहते है तो भूखा और नगा रहना पडेगा।

जिनको कुष्ट रोग रहता है उनके बारेमें मैंने कल एक बात कही थी। जगदीशनका भी नाम लिया था। वे बडे विद्वान् आदमी है। उनको यह रोग था। वह बिलकुल नाबूद[1] तो नहीं हुआ है, लेकिन काफी अकुशमे आ गया है। वे इसमे काफी काम करते है, काफी दिलचस्पी लेते है, उनसे मिलते-जुलते है। मेहनती तो जबरदस्त है ही। वे मद्रासमे रहते है, वर्धामे नही, लेकिन कई दिनोंसे वर्धामें है। उन्होने इस बारेमे मुझसे खत-किताबत की थी। उनका पत्र मिले कई दिन हो गए। उसको आज मैंने पढ लिया। मैंने उसमे एक बात देखी है, जिसे मै यहा साफ कर देना चाहता हू। वे कहते है कि जिसको कुष्ट रोग हो गया है उसको कोढी मत कहो। लोग उससे बुरा अर्थ निकाल लेते है—उसको वे अछूतसे भी बदतर मान लेते है। अछूत बदी थोडा करता है। उनको छूनेसे हम पतित हो जाते है, ऐसा हम मान लेते है। मै कह चुका हू कि सच्चा कोढ तो मनकी मलिनता है। अपने भाइयोसे घृणा करना, किसी जाति या वर्गके लोगोको बुरा कहना, रोगी मनका चिन्ह है, और वह कोढ़से भी बुरा है। ऐसे लोग उससे भी बदतर है, तो फिर ऐसा नाम क्यो लेना चाहिए? कुष्ट रोगसे पीडित कहो, लेकिन कोढी मत कहो। अगर बुरा कहनेसे बुरा बन जाय

---

[1] नष्ट।

तो नही कहना चाहिए। गुलाबके पुष्पको आप चाहे किसी भी नामसे कहे, लेकिन उसमे जो सुवास या सुगध भरी है उसको वह कभी नही छोड़ेगा; बुरे-से-बुरा नाम दो तो भी नही। यदि यह जगदीशन ऐसा कहता है, ठीक है; पर जो छूतकी बीमारी है वह कोई एक तो है नही। किसीको खुजली हो जाती है, उसको जो स्पर्श करेगा उसको खुजली हो जायगी। सर्दी है, हैजा है, प्लेग है, इसी तरहसे कुष्ट रोग है। फिर उसके प्रति घृणा क्या करनी? एक आदमी जब सचमुच कुष्ट रोगी बन जाता है तो लोग उसका तिरस्कार करते है। वे कहते है कि वह तो कमजात है। कमजात तो वे हुए जो तिरस्कार करते है। यह घृणा करनेका जो कोढ है वह निकल जाना चाहिए। इसलिए मैने सोचा कि आज भी मै इस बातको तो दोहरा दू।

३० तारीखको वर्धामे जो सम्मेलन होनेवाला है उसमे राजकुमारी जानेवाली थी, जाना चाहिए, डाक्टर जीवराज भी जानेवाले थे, जाना चाहिए, लेकिन जाए कैसे? वे अपने काममे गिरफ्तार है। उसको छोडकर एक दिनके लिए तो जा सकते है। लेकिन उनको दो दिन लगेगे; क्योकि जिस दिन जायगे उस दिन तो लौट नही सकते। वर्धा हवाई जहाज तो जाता नही। नागपुर जाता है। वे दो दिनमे वापस आ सकते है।

हा, एक और जरूरी बात मै आपको कहना चाहता हू। ब्रजकिशनजीने तो कह दिया, कल मै जेलमे जाकर प्रार्थना करूगा। वहाके लोग चाहते है कि मै वहा प्रार्थना करू। मुझको अच्छा लगेगा और आपको भी अच्छा लगेगा; लेकिन आप लोग वहा नही जा सकेगे, वह तो कैदखाना है। वहा कैदी ही जा सकते है। मुझको तो वे बुलाते है, इसलिए जाता हू। परसों हम यहा फिर मिलनेवाले है।

: १२८ :

२५ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझको जब इस जेलमे कैदियोंके सामने प्रार्थना करनेका निमत्रण मिला और प्रार्थनाके बाद जो कहता हू वह कहनेको भी, तो मै राजी हुआ और मुझको वह निमत्रण बहुत मीठा लगा। शायद सब कैदियोंको तो पता नही होगा कि मै खुद बहुत पुराना कैदी हू। जनूबी[1] अफ्रीकासे। और यह मै कह सकता हू कि मेरी निगाहमे तो मै बेगुनाह था, लेकिन सल्तनतके नजदीक तो बेगुनाह नही कहा जा सकता था। कई किस्मकी जेल मुझको मिली है और कई जेले मैने देखी है। जनूबी अफ्रीकाकी जेल तो बहुत कडी रहती है, और पीछे हिंदी[2]की तो वहा कोई गिनती ही नही। वह तो चाहे बैरिस्टर ही क्यों न हो, तो भी क्या हुआ? सब-के-सब कुली ही माने जाते थे। तो वहां तो एक तरफ हिंदी, दूसरी तरफ वहाके हब्शी लोग और पीछे अग्रेज, सब अलग-अलग थे। जब सत्याग्रही कैदी चले, क्योकि सत्याग्रहमे एक-दो तो रहते नही, हजारोकी तादादमे भी चले जाय, और पहले पहल जब जेल हुई तो हम डेढ-सौ ही थे। शुरूमे तो ऐसा नही था; मै था और चार-पांच दूसरे थे। पीछे जब सत्याग्रहका सिलसिला शुरू हुआ तो हम डेढ-सौ हो गए और जहा हब्शी भरे जाते है उसी जगह हम लोग भर दिये गए। इसलिए वहा तो हम कुछ तग आ गए थे। तो मै वह बताता हू कि वहाकी जेल कैसी रहती है और कैसी सख्तीसे वहां काम लिया जाता है। यहां तो हम बस एक तूफान-सा मचा देते है कि हम तो राजनैतिक कैदी है और दूसरे अखलाकी[3]। जनूबी अफ्रीकामे तो कुछ ऐसा फर्क रहता नही है। वहा सब अखलाकी कैदी माने जाते है। मै तो यह मानता नही कि कैदियोंके बीचमे जो राजनैतिक कैदी है, वह तो अच्छा है

---

[1] दक्षिणी [2] हिंदुस्तानी [3] गैर-राजनैतिक।

और जो अखलाकी कैदी है वह बुरा है। कानूनके सामने तो जिसने कानून भग किया है वे सब एक ही तरहके अपराधी है। तो पीछे उन अपराधियोमे फर्क क्या करना? लेकिन यहा तो हम राजनैतिक कैदी बने और उसमे भी ए, बी और सी के कैदी बने, तो वह इसलिए न कि हमारा एक बहुत जबर्दस्त आदोलन था। करोडो-की तादादमे हम पडे है और उनमे बडे-बडे लोग भी है। लेकिन वहा बेचारे कौन बडे लोग थे! सब छोटे-छोटे ताजिर लोग थे और उनमे हिंदू, मुसलमान, पारसी सभी थे। वहा तो कोई यह फर्क भी नही करता था कि वह हिंदू है, वह मुसलमान है और वह पारसी है। सब कुली थे या ऐसा कहो कि सब हिंदू थे। तो वहा हम ऐसा दभ कर ही नही सकते थे कि हम बडे है तो हमारे लिए 'ए' वर्ग बनाइए, हमसे छोटे है उनके लिए 'बी' और जो सबसे छोटे है, उनका 'सी'। मै तो उसको मानता नही हू। लेकिन यहा हमने यह सब किया। मै तो यह माननेवाला हू कि जो कैदमे गया, वह कैदी है। लेकिन एक कैदी है तो उसने खसूसन[1] गुनाह किया है और जो बाहर सफेद कपडे पहनकर बैठे है, वे गुनहगार नही है, ऐसा मै नही मानता। मै तो दस दफा जेल गया, पूरा-पूरा तो याद भी नही, और काफी बरस उसमे काटे है, इसलिए मुझको तो इसका पता है। जो वहा जेलके सुपरिन्टेडेट वगैरा थे, वे तो मेरे दोस्त बन गए थे। तो वहा एक बडा दरोगा था, खासा आदमी था और बडा जेलर था। उसने मुझसे कहा कि देखो, मै तो इन कैदियोका अफसर बना हू, लेकिन दुनियाको क्या पता कि मैने कितना गुनाह किया है। ये या तो कोई चार-पाच सालकी जेल काटने आए है या फासीकी सजा पाकर आये है और पीछे फासी माफ हो गई है, लेकिन ऐसे कितने है जो यह जानते हो कि मैने क्या गुनाह किये है। शायद मेरा भगवान ही जानता हो। इसलिए मुझको यह अच्छा नही लगता कि मै तो चीफ जेलर रहू और वे कैदी हो। मै भी वही माननेवाला हू। इसलिए मैने सोचा कि

---

[1] खास करके।

मुझे आपके सामने किस तरहसे आना चाहिए। अब अंग्रेजी सल्तनत तो हट गई, उसने अपनेको उठा लिया। अच्छा किया। लेकिन अब हम अपनी जेलोमे क्या करे? जब अंग्रेजी सल्तनत थी तो उस वक्त जेलमे जो चलता था—कितना अच्छा था या कितना बुरा था, उसका तो मै गवाह हू, लेकिन अब चूकि हकूमतकी बागडोर हमारे हाथोंमे आ गई है, तो हमारी जेल, एक जेल न रहकर, अस्पताल बननी चाहिए। किसीने अगर खून किया है, चोरी की है या डाकू बना है या कानूनकी पुस्तकमे जितने गुनाह पडे है, उनमेसे कोई एक किया है, तो मै तो इन सबको एक किस्मकी व्याधि मानता हू। वह एक मर्ज है। कोई गुनाह करनेकी खातिर गुनाह थोडे ही करता है। अगर कोई व्यभिचार करता है या शराब पीकर कोई और अपराध करता है तो वह कोई शौकसे ऐसा नही करता। मै तो चूकि बूढा हो गया हू और मुझे अनुभव भी हो गया है, इसलिए मै तो यह सीख गया हू कि जैसा आदमीका स्वभाव बन जाता है वैसा ही वह करता है। कैदियोंको क्या करना चाहिए, वह उन्हे सिखाया जाय। यहा जो सुपरिन्टेडेट साहब है या डिप्टी कमिश्नर है, वे कैदियोकी देखभाल करते है या उनपर हुक्म चलाते है कि इसको कोड़ा मारो, इसको यह काम दो और उसको वह काम दो तो वे सजाके तौरपर ऐसा करते है। लेकिन मै तो यह कहूगा कि जो सुपरिन्टेडेट, डिप्टी कमिश्नर या दरोगा है, वे सब ऐसे बने कि जैसे अस्पतालमे सर्जन या वैद्य होते है। और वैद्य होकर उस आदमीका, जो शराब पीता है, मर्ज मिटानेकी कोशिश करे। उसको यह बताया जाय कि शराब पीनेमे क्या-क्या बुराइया है। अगर किसीने लडकीको उडा लिया है, यह तो बडा गुनाह हुआ न, लेकिन उसको भी बताना चाहिए, क्योकि यह भी एक किस्मका मर्ज है। अगर ऐसा जेलमें हो जाय तो बहुत अच्छा लगेगा और कैदी भी सब खुश हो जायगे। खुश होकर वे ऐसा थोडे ही मान लेगे कि हमेशा जेलमे ही रहना अच्छा है। अस्पतालमे जो व्याधि-ग्रस्त लोग चले जाते है, वे हमेशा वही रहना थोडे ही पसद करते हैं। फिर अस्पतालोके तो आली-

शान मकान होते है, यहा हमारी जेले तो ऐसी है भी नही। हम बनाए भी कहांसे? हमारा तो एक गरीब मुल्क पडा है। अगर हम अस्पतालों-जैसी जेले बनाने लगे तो हमारा दिवाला निकल जायगा। ऐसी जेले तो जनूबी अफ्रीकामे, जो सोनेका मुल्क है, वहा भी नही है। वहा जो अंग्रेज कैदियोंके लिए कोठरियां या कमरे बनते है, वे कोई महल-जैसे थोडे ही है। इग्लैंडके पास इतना पैसा है जो ऐसी जेले बना सके, क्योंकि वहांकी जेले तो मैंने देखी है। हा, अमरीकाकी जेले मैंने नही देखी। लेकिन इतना तो हो, कि हमारी जेले अस्पताल-जैसी हो, जैसे अस्पताल-मे डाक्टर रहता है और रोगियोंकी चिकित्सा करता है। जब एक रोगी स्वस्थ होकर अस्पतालसे बाहर जाता है तो वह हमेशाके लिए ऋणी हो जाता है। वैसे ही यहा हमारी जेलोमे होना चाहिए। जेलमे जो कैदी रहते है वे ऐसा न कहनेवाले हो कि यहा बडी सख्तिया और ज्यादतियां होती है, सुपरिन्टेडेट या दरोगा खराब है। सब खराब-ही-खराब है, ऐसा वे न कहने पाए। वे कहे कि अस्पतालकी तरह हमारी बड़ी देख-रेख रखते थे, हमको खाना देते थे, और यह सिखाते थे कि जीवन कैसे व्यतीत होना चाहिए। यह तो मैंने बताया कि उन लोगोंको क्या करना चाहिए जो जेलका कारोबार चलाते है। लेकिन उनको क्या, आखिरमे वह करना तो उनके हाथमे भी नही है। वह तो हकूमतको करना है। या तो पडितजीको करना है या सरदारजीको, या कहो, सारी हकूमतको, जिसे हम केबिनेट कहते है, करना है। लेकिन हकूमतको तो यही कहना है कि तुम्हे ऐसे चलना है। पीछे जो कानूनके बाहर जाकर जालिम बन जाता है वह दूसरी बात रही। कोई गुनहगार दरोगा, सुपरिन्टेडेट या कमिश्नर तो आजकल होगा नही। आखिर इतना तो हम सीख गए है, और वे हकूमतके मातहत काम करते है। हकूमतके पास कोई बड़ा लश्कर नही है, और न वह बाहरसे कोई मदद मगा सकती है जिससे कि वह उनको डरा सके। वे तो खुशीसे अपनी हकूमतका हुक्म मानते है। अगर खुशीसे न माने तो हमारा सारा तत्र विगड़ जाता है और मुल्कमे अधाधुधी हो जाती है। तो यह तो मैंने अमलदारोके लिए कह दिया कि वे गुनह-

गार तो न बने। और थोडा तो वे आप भी हकूमतके कहे बिना ही कर सकते है। जैसे कैदियोके साथ रहमदिल बनना है, तो उसमे उनको सीखनेकी क्या चीज है ? जेलको वे अस्पताल समझे और उसमे जो कैदी है वे रोगग्रस्त है, ऐसा माने। तो एक काम तो निपट गया।

दूसरा यह कि जो कैदी लोग है, उनको एक कैदीकी हैसियतसे मै सुनाना चाहता हूं। मै भी तो एक सत्याग्रही कैदी रहा हू। सत्याग्रही कैदी जान-बूझकर तो गुनाह कर नही सकता। जेलके जो सुपरिन्टेडेट या दरोगा है, उनको वह कभी परेशान नही करेगा और न कभी उनका अपमान करेगा। उसको तो आदर्श कैदी बनकर रहना है। तभी वह अपने सत्याग्रहको अच्छी तरहसे चला सकता है। जो कैदी सचमुच गुनहगार बनकर आए है, उनको भी यहा सत्याग्रही बन जाना चाहिए। उन्हे जेलके कानूनोसे कभी बाहर नही जाना चाहिए। जेलकी पाबदियोमे रहकर जो कुछ उसको मिलता है उसमे उसको सतुष्ट रहना चाहिए। अगर कोई कभी देखे तो सुपरिन्टेडेट या दरोगासे कह दे कि मुझको जो खाना मिलता है वह थोडा है या अच्छा नही रहता, या पूरा पकाया नही जाता या उसमे पत्थर रहते है या जतु होते है। यह सब रहता है, मैने तो अपनी आखोसे देखा है, क्योकि मै तो वहा रहा हू। लेकिन इसके लिए भी उनके पास क्या जाना था ? वह सब तो कैदियोके ही हाथमे रहता है, वहा कोई रसोइये तो होते नही। अगर रसोइये रखे तो जेल नही चला सकते। जो कैदी लोग है वे ही तो अपना खाना बनाते है। वे सच्चे दिलसे काम करे। जो चावल बनाए वह साफ करके बनाए और जो रोटी पकाएं वह कच्ची न रखे। यह सब तो आपके हाथमे रहता है। आप अपने घरका काम समझकर इसको करे, तब तो मै समझता हू कि आप लोग जेलमे आए और आपसे गुनाह भी हो गया—गुनाह तो सब करते है, किसीका गुनाह जाहिर हो जाता है, चलता है और कोई गुनहगार नही होता, तब भी उसको गुनहगार बनाया जाता है—तो आप इस तरहसे आदर्श कैदी बन जाते है।

एक काम आप कर सकते है। आप लोग जो यहा है उनमे हिंदू, मुसल-

मान, सिख सभी है, मुसलमानोमे भी कई किस्मके होगे, तो आप यहां सब भाई-भाई बनकर रहे। आज तो हमारे देशमे जहर फैल गया है। मेरी उम्मीद है कि कम-से-कम इस जेलमे तो वह जहर फैलेगा नही। तो यहासे आप लोग आदर्श शहरी बनकर निकले। तब तो जो डिप्टी कमिश्नर और जेल सुपरिन्टेडेट साहब है, वे मुझको सुनाएगे कि तुमने बड़ा अच्छा काम किया। उससे हमारा काम आसान हो गया है, कोई हमे दिक नही करता, जेलके कानूनकी सब पाबदी करते है और सारे कैदी रोज-ब-रोज अच्छा बननेकी कोशिश करते है। मै तो ईश्वर या खुदासे यही मागूगा कि आप लोग आदर्श कैदी बने और यहासे अच्छे शहरी बनकर निकले और बाहर निकलकर लोगोसे कहे कि यह क्या बात आप कर रहे है? हिंदू मुसलमानका दुश्मन है और मुसलमान हिंदूका, सब भूल जाय इन बातोको। गलतिया तो सबसे होती है।

कल चूकि ईद है, इसलिए यहा जितने मुसलमान भाई है, उनको मै ईद मुबारक कहता हू। मै चाहता हू कि जितने हिंदू और सिख कैदी है वे भी अपने मुसलमान भाइयोको, जितने भी वे हो, ईद मुबारक कहेगे। अतमे बस यही कहता हू कि हमेशा सब मिल-जुलकर रहो।

: १२६ :

२६ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो एक भाईने जो प्रश्न पूछा है, उसका मै उत्तर दे दू। वह पूछते है—"आप कहते तो है कि बदलेकी भावना अच्छी नही होती, परतु आपके राम-भक्त तो हर साल रावणका बुत जलाकर बदलेकी भावनाको उकसाते है।" इसमे दो गलतिया है। एक तो यह कि मेरे राम-भक्त कौन है, यह मै जानता ही नही। मेरा राम-भक्त अगर मैं हूं तो अच्छा है, उसका भी मुझको तो पता नही। राम-भक्त बनना कोई

मामूली काम थोड़े ही है। इसलिए आपके राम-भक्त कहना एक बडी' गलती है। मेरे रामभक्त तो कोई है ही नही। लेकिन ऐसा होता है कि लोग रावणका बुत बना लेते है और राम उसको परास्त करते है। अभी तो राम परास्त करते है रावणको, लेकिन हममे कौन रावण होगा और कौन राम बनेगा? अगर हर कोई आदमी राम बन सकता है तो पीछे रावण कौन बनेगा? यह तो कथा है, लेकिन कथामे भी ऐसा मानते है कि राम तो ईश्वर है और रावण उसका दुश्मन। इसीलिए तो उसको अशुभ कहा, राक्षस कहा और निशाचर कहा। क्योकि उसका काम ही यह था कि रामको न मानना और ईश्वरको न मानते हुए ही मर जाना। पीछे भगवानके हाथोसे ही उसकी मृत्यु हुई। यह तो एक कथानक है। इसका यह मतलब नही है कि रावणका बुत बनाते है तो वे बदला लेनेके लिए उकसाते है। मै तो उसमेसे यह सीखता हू कि वे यह बताते है कि आदमी दूसरोसे बदला न ले। मै यह न मान लू कि यहा जो भाई बैठे है, वे तो रावण है और मै राम हू। तब तो मेरे जैसा उद्धत और मूर्ख आदमी और कौन बन सकता है। मुझको क्या पता कि मै राम हू, कौन जानता है कि मुझमे कितनी दुष्टता भरी है। ईश्वरके दरबारमे मै महात्मा हू या दुष्ट हू, उसको कोई नही जानता। मुझको भी पूरा पता नही चलेगा कि मुझमे कितनी दुष्टता भरी है या कितनी साधुता है। वह जाननेवाला तो रामजी ही है। वह ऊपर पडा है और सबको देखता है। कोई चीज उससे छिपी हुई नही है। इन्सान किसीसे बदला ले नही सकता। अगर किसीसे बुरा भी हुआ है, तो भी उससे बदला क्या लेना? अगर एक इन्सान सम्पूर्ण है, यद्यपि इन्सान सपूर्ण कभी हो नही सकता, क्योकि सपूर्ण तो केवल ईश्वर ही हो सकता है, फिर भी माना कि एक इन्सान सपूर्ण है और अन्य अपूर्ण है, तो क्या वह दूसरोको सजा दे या उनका सहार करे? यह जो पुतला बनाते है विजयादशमीके रोज, उसका मेरी निगाहमे तो यही मतलब है कि बदला लेना इन्सान, मनुष्य या आदमीका काम नही है। उसको बदला लेना भी न कहा जाय तो भी जो सहार या हिंसा इत्यादि करनी है, वह ईश्वर ही कर सकता है। तो क्या ईश्वरमे ही

यह गुण है कि हिसा भी वही करे और अहिसा भी वही ? वह निर्गुण है और गुणातीत है। उसके लिए ये सब चीजे कुछ नही। लेकिन यह दृष्टात तो ऐसा है कि जितने रावण इस दुनियामे है उनका सहार करनेवाला केवल ईश्वर ही है। कुछ लोग ऐसा भी मान लेते है कि विजयादशमी तो यह सिखाती है कि वे तो पूर्ण और दूसरे अपूर्ण है। इसलिए कानून-को अपने हाथमे लेकर अपने-आप बादशाह बन जाते है और किसीपर आघात करना और किसीको कत्ल करना, यह सब करने लगते है।

वह हिदुस्तानमे हो भी रहा है; क्योकि हम पागल हो गए है। जो जवाब मैने दिया है उसको आप लोग तथा जिस भाईने प्रश्न पूछा है, वह भी समझ गए होगे कि राम-रावणका दृष्टात लेकर हम पापाचारी न बने। हमे पुण्यवान बनना चाहिए। एक ओर रामका नाम लेना और दूसरी ओर पापाचारी बनना, ईश्वरकी निदा करना है।

अभी आप लोगोंमेसे पूछ सकते है कि तुम इतनी लबी-चौडी बाते तो करते हो, लेकिन काश्मीरमे जो कुछ हो रहा है उसका भी कुछ पता है ? हा, पता है मुझको। लेकिन इतना पता है जितना कि अख-बारोमे आया है। अगर वह सब सही है तो वह एक बहुत बुरी बात है। यह मै कह सकता हू कि इस तरह तो न धर्मकी रक्षा हो सकती-है और न कर्मकी। उसमे इल्जाम तो पाकिस्तानपर ही लगाया गया है न, कि वह काश्मीरको मजबूर करनेकी चेष्टा कर रहा है। वह होना नही चाहिए। अगर कोई किसीको इसलिए मजबूर करे कि उसके पाससे कुछ ले ले, तो वह हो नही सकता, इसमे तो मुझे जरा भी सदेह नही है। आज तो काश्मीर है, पीछे हो सकता है कि हैदराबादको मजबूर करो, जूनागढको करो या किसी और रियासतको। मै कोई न्यायकी तुलना करना नही चाहता; लेकिन मै तो एक उसूल मानकर चलता हू कि कोई किसीको मजबूर नही कर सकता। पीछे, चाहे उसमे कुछ भी हो, मुझको तो कोई परवाह नही, चाहे काश्मीर हो, हैदराबाद हो या जूनागढ हो। कोई किसीको मजबूर न करे और किसीके साथ जबर्दस्ती न करे। लेकिन आजकी दुनियामे जो काश्मीरके महाराजा है, वे वहाके राजा नही है, यह बडे अदबके साथ कहना पडता है। दूसरी

रियासतोमे भी जो राजा माना जाता है, वह नही है। उसको तो बनानेवाले अग्रेज लोग थे, वे चले गए। वे नो इसलिए उनको राजा-महाराजा बना देते थे, कि उनकी मार्फत राजतत्र चलता था और राजदड मिलता था। काश्मीरको अभी अपने यहा प्रजातत्र स्थापित करना है। इसी तरहसे दूसरी रियासतोमे भी, हैदराबाद और जूना-गढ़मे भी। मेरे नजदीक तो उनमे कोई भेद ही नही है। रियासतकी असली राजा तो उसकी प्रजा है। अगर काश्मीरकी प्रजा यह कहे कि वह पाकिस्तानमे जाना चाहती है तो कोई ताकत नही दुनियामे जो उसको पाकिस्तानमे जानेसे रोक सके। लेकिन उससे पूरी आजादी और आरामके साथ पूछा जाय। उसपर आक्रमण नही कर सकते और उसके देहातो-को जलाकर उसको मजबूर नही कर सकते। अगर वहाकी प्रजा यह कहे, भले ही वहा मुसलमानोकी आबादी अधिक हो, कि उसको तो हिंदुस्तानकी यूनियनमे रहना है, तो उसको कोई रोक नही सकता।

अगर पाकिस्तानके लोग उसे मजबूर करनेके लिए वहा जाते है तो पाकिस्तानकी हकूमतको उन्हे रोकना चाहिए। अगर वह नही रोकती है तो सारे-का-सारा इल्जाम उसको अपने ऊपर ओढना होगा। अगर यूनियनके लोग उसको मजबूर करने जाते है तो उनको रोकना है और उन्हे रुक जाना चाहिए, इसमे मुझे कोई सदेह नही है।

काश्मीरकी बात तो मैने आपसे कह दी। लेकिन एक दूसरी अच्छी बात भी मै आपको सुना दू। कलकत्तामे मेरे पास एक तार आया है। मेरा ख्याल है कि मैने आपको यह बता दिया था कि कल-कत्तामे एक शान्ति-सेना, जब मै वहां था, तब बन गई थी। ईश्वरकी ऐसी ही कृपा हो गई थी। कलकत्तामे शाति स्थापित करना बडा कठिन-सा लगता था, लेकिन शाति-सेना बननेके बाद वह बडी आसानीसे हो गया और हिंदू या मुसलमान किसीको भी कोई खास नुकसान नही हुआ। उससे पहले तो जो बडे मुहल्ले थे उनमे मुसलमान जमकर बैठ गए थे और हिदुओंको वहासे भगा रहे थे। पीछे हिंदुओने भी कई जगह मुसलमानोंकी, जो झोपडिया थी या कुछ और था, उनको जलाया और उनपर अत्याचार भी किया। वह नही होना चाहिए था। इस

सारे किस्सेमे तो मै जाना नही चाहता। लेकिन जब मै वहा जाकर बैठ गया तो भगवानकी कृपासे वह शाति-सेना बनी और जो विद्यार्थी-गण या दूसरे लोग थे, वे उसमे शामिल हो गए। अब वे लिखते है कि यहा दशहरा और ईद दोनो बड़े मजेसे हुए है। हिंदू-मुसलमान आपसमे भाई-भाई बनकर रह रहे है। कलकत्तामें ईद कल मनाई गई थी, लेकिन दिल्लीमे आज है। तो दशहरा और ईद दोनोका जिक्र करते हुए यह तार मुझको भेजा है। वे लिखते है कि शाति-सेना सब जगह फैल गई थी। कही किसीका नुकसान नही हुआ, न हावडामे और न कलकत्तामे। कोई किसीको सता नही सका और दोनो दिन सब लोग आरामसे रहे। वे तो पूर्वी बगालमे भी ढाकाकी ओर चले गए थे।

तो मैने सोचा कि आपको यह बात भी सुना दू, क्योकि मुझको अच्छा लगता है कि जब हिंदुस्तानमे कही भी हिंदू-मुस्लिम-वैमनस्य दूर होता हो और एक-दूसरेके दुश्मन न रहकर सब भाई-भाई बनकर रहते हो। फिर कलकत्ता तो कोई छोटा-मोटा देहात थोडे ही है। वहा करोडोका व्यापार चलता है, उसमे बडे-बडे जहाज आते है, वहा हिंदू-मुसलमान दोनो रहते है और व्यापार करते है। अगर वहा हम एक-दूसरेके दुश्मन बन जाए तो क्या वह सारा व्यापार मटियामेट नही हो जायगा ? अगर शाति-सेनाने वहा सबको भाई-भाई बनकर रहना सिखा दिया तो यह बहुत ही अच्छी बात है। कलकत्तासे क्यो न हम भी सबक सीखे और यहा भी क्यो न एक शाति-सेना बन जाए? आज तो यहा ईद है न, इसलिए कुछ मुसलमान भाई मेरे पास आए थे। वे मुझको पहचानते है कि मै उनका दुश्मन नही, दोस्त हू। मै एक हिंदू हू और वह भी एक सनातनी हिंदू, इसलिए मुझमें मुसलमानपन भी उतना ही भरा है जितना कि हिंदूपन। इसलिए वे मुझको अपना दोस्त मानकर आ गए थे। मैने उनको ईद मुबारक कहा तो सही, लेकिन मैने कहा कि मै किस मुहसे आपको ईद मुबारक कहू। वे आज भी बेचारे भयभीत पड़े है। सोचते है कि न जाने हिंदू उनको रहने देगे या नही, या मारेगे कि नही। कोई सब थोडा ही मारते है। लेकिन चूकि काफी कत्ल हो गए, इसलिए भयभीत है। थोडी तादादमे है। तो क्या

जिस जगह जो लोग बड़ी तादादमे है वे थोडी तादादवालोपर आक्रमण और अत्याचार करे? इस अत्याचारको मिट जाना चाहिए। नही तो हमको मिट जाना है।

जो कलकत्तेमे हुआ, वही अगर हम यहा कर सके तो कितना अच्छा हो। मेरा दिल तो तब नाच उठेगा। आज तो मेरा दिल रोता है। आखोंसे आसू तो नही गिरा सकता हू, क्योकि अगर ऐसा करू तो मेरा काम नही चल सकता। मगर दिल तो रोता है। क्या आजादीमे हिंदू और मुसलमान ऐसे बनेगे? अगर बडी तादादवाले छोटी तादादवालोंपर हमला करे तो वह जालिमपन है। उससे कोई धर्म बच नही सकता। अत्याचारसे कभी कोई धर्म नही बचता। धर्म तो केवल धर्मकी मार्फत ही बच सकता है। और कोई दूसरा चारा है ही नही।

रतलामसे यह तार आया है कि यहाके जो महाराजा है उन्होने ऐसा ऐलान निकाल दिया है कि अब यहा जिम्मेदार प्रजातत्र स्थापित होगा और उसकी मार्फत राज्य चलेगा। राजा तो उसके एक ट्रस्टीकी तरह बनकर रहेगे। वहा जो हरिजन-सेवक-सघके मत्री है, वे मुझको लिखते हैं कि इस राज्यमे अब हरिजनो और दूसरे लोगोमे कोई भेद नही रहेगा। जो महाराजाका मदिर है, उसमें वे गए और एक बडी जमात तथा हरिजन लोग भी उनके साथ गए। राज्यके जितने मदिर है उनमे आजसे अस्पृश्यता नही रहेगी। जो कुए है उनसे हरिजन पानी भी भर सकते है। ये सब बाते जानकर मुझे बहुत अच्छा लगा। अगर हिंदू-धर्मको आगे बढाना है तो उसमे घृणा और अस्पृश्यता कैसे रह सकती है? अस्पृश्य तो वे है जो पापात्मा होते है। एक सारी जातिको अस्पृश्य बनाना एक बडा कलक है। अस्पृश्यताकी जड हरेक हिंदूके दिलसे निकल जानी चाहिए। जैसा रतलाममे हुआ है, वैसा और सब जगह भी, जहांपर कि हिदुओंकी तरफसे राजतत्र चलता है, अस्पृश्यताको मिटा देना चाहिए। तब तो हिंदू-धर्मको हम बहुत ऊचे ले जाएगे। अगर अस्पृश्यताकी जड़ चली गई तो क्या पीछे हम मुसलमानोको या दूसरे धर्मवालोको अस्पृश्य बताएगे? जो अस्पृश्यताका मैल

हममे भरा है, यह तो उसी मैलका नतीजा है जो आज हम भुगत रहे है। इसलिए रतलाममे जो हुआ है वह मुझको अच्छा लगा और मैंने सोचा कि कलकत्ता और रतलामकी दोनों अच्छी बाते भी मैं आपको सुना दू।